



চণ্ডীদাসের পদাবলী

শ্রীযুক্ত নীলরতন মুখোপাধ্যার বি এ কর্ত্তক সম্পাদিত।

লালগোলার রাজা

<u> বির্বাপ্ত যোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাতুরের</u>

অৰ্থাসুকুল্যে ংগ্রাচ অপার সাকুলার রোড, বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ মন্দির হইতে

শ্রীযুক্ত রামকমল সিংহ কর্ত্ত প্রকাশিত।

31. 3. 65. 1911-714139

10.m 891.441

১---১৮ ফর্মা উইলকিন্স প্রেসে,

হেয়ার

চেরী

৪১ --৪৪ ,. এবং ভূমিকা, স্ফী হেয়ার প্রেসে,

শব্দ তালিকা, পরিশিষ্ট, টাইটেল ও মলাট বিজ্ঞা প্রেসে মুদ্রিত।

3L.No 066608





			_		
বিষয় >। শ্রীরুষ্টের পূর্বরাগ ২। শ্রীরাধিকার পূর্বরাগ ত। শ্রীক্তকের স্বং দৌত্য ৪। শ্রম্ভিসার	 	পৃষ্ঠা। ১ ২৯ ৩৯	বিষয় স্থী-সংখাধনে স্থাত ১৩। রাসলীলা, ১৪। অকুরাগমন	•••	ুঠা। >২• > ৫ % ১৬৭ ২২৮
१। (गार्ष्ठ-नीमा			> ৫। অক্রের গোকুলযাত্র। ১৬। যশোদাবিলাপ	•••	२ १ २
(২) শীরাধিকার প্রেমোচ্ছ্রাস		. e2	১৭। গোপীবিলাপ	•••	280
(২) দান (৩) নৌকাৰও		eb	३५। वाशान-विना श	•••	₹ 81 ₹ 6 4
(৪) বন-ভোজন	••	98	১>। গোপীবিলাপ	•••	1.18
😽 (৫) ধেরু বৎস শিশুহরণ	•••	62	२०। क्रस्थननतात्मत मधूनाश्रमन २)। त्रक्षरकत नखहत्रन		२৮४
(৬) বশোদার বাৎসঙ্গ্র শুসভোগ-স্থতি	••	۵۰	२२। देशवकी वस्राम्यदेव कक्रमा	•••	267 287
भू नरकाश-वृद्धिः अस्य • नामक-भवाः		3.0 2.0	२७। नन-विषात्र	•••	285
४। विकास	 .s.	3.8	২৪। শ্রীরাধিকার শোক	••:	\$72
	••	>•9	২৫।	••	ن، ن جه دري
া দান গা ক্ষমান্ত্রিতা	•	>>>	२१। त्रांशकृत्कत्र मिनन		378
ই। আক্ষেপামুরাগ	* 、 *	>>=	৯৮. তাৰসন্মিলন ২৯ বাগান্তিক পদ	1	9)& : 9%
नात्रक-नार्याव्यन	• <i>je</i>	>>9	७०। विविध		00.

मृष्ठी ।

পদ-স্	ংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।	अप- ₹	াংখ্যা	श्रम		পৃষ্ঠা।
	•		Ì	862	আট রক্ষে	ুখাট .	•••	2>•
485	অ ার চর ণে		২৩৯	३७ २	আন জন	ৰত বলে	•••	63
• 600	খনল বেয়াধি সেই	•••	0.0	69.	আনন্দ ছ	াড়িয়া		२१५ ,
62.	অ ৪ক চন্দন চয়া	•••	৩৽২	>=0	আনন্দিত	হয়ে সবে	•••	>¢ `
	শঙ্গ পুৰকিত		૭૨	610	আনিল খ	ষ্ ৰিয়া পানা	•••	>41
895	चश्री पूत्रिया दाहे	•••	₹•৯	96	আপন ব	রণ খুচান তখন	•••	88 .
447	অতি আনাগোনা		285	२८४	আপন শি	ণর হাম আপন হাতে	কাটিছ	330
458	ু' ত দে আকুৰ	•••	ર ૨8	360	আপনা ৰ	वां भिन दिया देवनी	•••	28•
9.5	ত গুৱাগে রাধা		وو	085	আপনা ৰ	াইম্ব সোনা যে কিনি	नेञ्च	>«>"
64.	খনেক তপের ফলে	•••	226	960	আপনা ব	(ঝিয়া স্থজন দেখিয়া	•••	೨೨೪
181	অনেক সাধের		958	418	আমার বি	কশোরী কিছু না জা	नरम्र ••	262
843	অনাম সুসর		230	425	আমার গ	ात्रो न-পूथिन न हेशा	•••	086
	•	•••		129	আমার বি	পিয়ার কথা কি কহি	ব সই	>••
	অ			२১७	আনার ব	াসনা না হই ল তোৰ	191	3.6
~ # ₹•	আই সেই সধী ভেটে চন্দ্ৰী	• • •	939	₹₽8	আমার ম	নের কথা খন লো	न ज नि	>>>
>9>	व्यारेन धनी द्रांधा	•••	42	988	আমরা স	ারল পীরিতি গরল	•••	: e ર
4>•	অগিল শ্রম অতিভরে	•••	ર ર ર	680	আমি ভ	অবশা তাহে এত জ	ালা	>48
292	আ গুনি আলিয়া	•••	> २०	>>2	আমি যা	हे याहे विन वरन जि	ন বোল	. 24
26	व्यादम (बरन छनी		>9	8 • 8	আর এব	গোপী যাইতে বাৰ্	वेदा	34 9
506	क्यात्मा वड़ारे कि एएथ	•••	9>	266	আর এক	দিন স্থি শুতিয়া অ	াছিহ্	Mr.
89	আপো রাধার কি হল	•••	•	148	পার এব	বাণী খন বিনোদি	বি	~ 05 g
:50	খীগো সই কে জানে	•••	525	264	আর এব	, • ভন পরম নিভ′ণ	• ••;	40
`ર••	আছুকার নিশি 🍃 🚟	•••	>•0	>49	আৰু কৰি	ই শুন অদভূত কথা	•••	40
L 58.	আৰু কে গো সুবলী বাৰায়	•••	1000	467	আর কি	পরাণে ভীব	•••	280
300	, आई मान स्थात .	•	(63	233	পার কি	মিলব মোরে পিরা	গুণনিধি	> 4,
603	षाङ्क् वड़ सात्र उड़ित .	•••	२ ७२	643		খনব তার বাণী	•••	223
761	वाक्क नायरन महिना गरन		• ৯৬	24	আর খে	লে খেলা বাঞ্জিকর-ব	বালা	24

পদ	সং খ্যা	भिम		श्रृष्ट्या ।) পদ-	-সংখ্যা	পদ		পৃষ্ঠা।
>+•	আর ব	া কেমনে বর বাব মে	4	68	193		রুষ নিগুড় ধ্যু		৩৩৩ -
२ २७	_	শোর আরে মোর সোন		>>•	826		एक्ट एक्टइ अन्न		२३७
(6)		যোর বাছনি কানাই	١	: 386	8.0		পী ছিল পতির শয়নে	•••	279
२८७	আরে (মোর বিনোদ রায়		222	२३•		ना चरत रहेन चात जा	লাকাহ	رود
*9•	আরে (মোর যাত্যা তুলাল	•••	২৯৪	48>		কহিতে সব স্থিগণ		২৩৫
২8 ২	আদি য	गरहती करह शीति शीति		226	ಿಂ		জননী কিছুই না জানে		٤٥
480	আগিং	ত অকূর দেধি অদভুত		২৩৬	502	এ কথা	পরোকে যধন গুনল	•••	२৯२
२०१	আ্সিয়	৷ নাগর সমুখে দাড়াল	•••	>>>	484	এ কথা	যথন শুনিল যশোদা	•••	২৩৭
२ २१	আহা ৰ	মাহা বঁধু তোমার	•••	>>•	500	এ কথা	ভন ল শ্রবণ ভ রিয়া	•••	२३३
>99	আহা ম	রি মরি পরাণ-পুণলি	•••	20	993	এ কথা	ভনিয়া ক্লফা বলরাম	•••	२३∙
		ই			७२२	এ কথা গ	শিরা গদ গদ হৈয়া	•••	২৭০
>66	ইহার বি	বস্তার ভাগবতে আছে			613	এ কথা	গুনিয়া নন্দের বিরহ	•••	₹≽8
, ઇરર		পিত্ৰ গাছ যে হ ইল	•••	لا ر	1>8	এ কথা খ	9নিয়া নাগর- শে খর	•••	٥>•
ĭ,	12,64		•••	>80	676	এ কথা প	এনিয়া বিনোদিনী	• • •	২ ২৪
	_	ঈ			829	এ কথা ও	ছনিয়া রাধা বিনোদিনী	•••	740
94.	ঈষৎ হা	সিয়া রাই পানে চেয়ে	•••	७२७	806	এ কধা ং	ওনিয়া খ্রাম-মু ধ চে য়ে	•••	>
		উ	•		৩৮		নিয়া সহচরী আগে	•••	₹8
64.	উকি এ	তোমার উনমত চিত		₹18	,		গোচারণে	•••	>
670	रेड रेड	ভাই শ্ৰীদাম সুদাম	•••	२७৮	be		বর নাগর শেশর	***	8 >
966	উঠিতে (কিশোরী বসিতে কিশে	ারী	७२৮	16		মনে রভদ-ক†জ	•••	80 .
965	তার্টার্চ	কিশোরী বসিতে কিশো	ब्री	०२৮	>2€		गाँहेर्ड ननिनी मत्न	•••	25
909	উঠিতে বি	কিশোরী বসিতে কিশো	ারী	७२१	110		रन कति भूनः भूनः		૭૭૨
२७४	'উহার ন	াম করো না	•••	>>>	168		হি মায়ের পানে	•••	₹8 ७
		এ		1	\$20		पदि चाहिना समदी	•••	46
009	48 WAT	মান করে গোপীগণ	/		PC.	একা কাৰে		•••	७६३
- 1 - ·		यान करत्र रंगाचागव		. 282	990		देशन (भात्र नम्ननि (यो	বন	.>69
	_	নিতি কর গভায়তি	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	. > >>	> -		रणद्री कनक-भूठनि	•••	٠. ۴
808	्षेष्ठ अवग	াদ ব্যথিত হইলা	<i>J</i>	20 9			হব বনবাসী	•••	٥٠٤
₹ ₽ •	्र दें क्रम	াৰ ব্যাৰত হহল। উঠে মনে এই ভন্ন উঠে		>>6			हत्न (कार्यः	144	₹ \$ \$5 - :
392	এই যাক	ভতে মনে এই ভব্ন ভতে নিতি বনে বিহরম		254			वित्नापिनौ ब्राहे र्	•••	317
		ग्ना ७ परमा पश्चेत्र ग्रन (गांत्मित द्वमंगी	•••				ত বালকমণ্ডল	•\$•	₹98 ''
		গ্র গোলের রুম্না ন্ব নাগর রুধিক					নে ঈশ্বর গতি	•4•	. 880
		ব্য শাগর রাশক তত্ত্ব ক হিল বে কভ	•••				রব সই স্রলেশে হার		, >>F ,
	PIT SIT	~ र मार्चा (प्रक्र	•••	***	497	ज (नरमा	তি আই নাৰ কোৰ	g c'y	>0>

পদ-স	ংখ্যা · পদ		পৃষ্ঠা।	পদ-স	ংখ্যা পদ		शृक्षे।
459	এ দেহে দে দেহে একই রূপ	•••	005	66	কহিও বঁধুরে নতি কৃহিও বঁধুরে	•••	
	এ ধনি এ ধনি বচন শুন	***	৩৮	\$8•	কহিছে বড়াই শুন ধনী রাই		90
F:9	এ ধ नि गानिनि गान निराद	•••	૭ ૄ૨	992	ক্হিছে রঙ্গকিনী রামী	•••	೨೨೨
€•₹	এ নব নাগর গুণের সাগর	•••	२१३	>१२	কহেন করিণ নন্দের নন্দন	•••	۰.
83	এ বোল গুনিয়া বৃক্তাত্ম রাজা	•••	₹ 6	6)2	करहन वहन अ यङ्गम्बन्	•••	२७৮
> 9	এ বোল গুনিয়া স্থবল সান্ধাত	•••	>>	82	কহে পঞ্জন খনহ রাজন্	•••	২ 9
861	এ বোল শুনিয়া হাসিয়া হাসিয়া	***	२ऽ२	888	কহে ধনী রাধা কেন তুমি হেধা		>>>
245	এমন পীরিতি কভু দেবি নাই তা	નિ	۶۵	৬৬৭	কহে বলরাম এক নিবেদন	•••	२३३
\$28	এমন পীরিতি কন্তু দেখি নাই ভ	નિ	۵۵	09	करह वाक्षिकत्र (थिनना विखत	•••	₹.5
665	এমন বেশে গোকুল দেশে	•••	২৮৬	819	ক হে য ়ম ণি গুনহ স জনি	•••	:54
b •5	এমন মাধুরী যাঙার মনে	•••	98¢	२०१	करर स्वनभी खन भा नवनि	•••	>• 5
હર ે	এমন রূপের ছটা	•••	२৮७	ese	কংস নরপতি করিল আরতি	•••	२
२२६	এস এস বন্ধ করুণার সিন্ধ	•••	>•>	১৬	कांकनवज़नी (क वर्ष्ट (म धनी	•••	>>
86	এ সবি স্থলির কহ কহ মোয়	•••	• ≎	121	কাতরা অধিকা দেখিয়া রাধিকা		¢85
603	এ সব বচন ভাবিতে ভাবিতে	***	২৩৩	२१৮	কানড় কুমুম করে	•••	১২৭
>66	এস ভাই সধা দেহ মোরে দেখা	•••	F 6	२७•	কানড় কুসুম জিনি	•••	\$₹•
	<u> A</u>			614	কানাই করিয়া কোলে	•••	₹88
			• • •	644	কান্থ অঙ্গপরশে শীতল হব কবে	•••	0.>
8•€	উছন রমণী ম্বলী ভনিয়া	•••	390	8 ५ २	কামু কহে গুন আমার বচন	•••	>91
₹•8	ঐছন গুনইতে যুগধ রমণী	•••	>• ₹	>>0	কাহ কহে তন গোপি আমার বা	5ন	6)
	'9			292	কাম কহে শুন রাধাল যতেক	•••	• 5
৬৮৭	ও পারে বঁধুর ঘর বৈশে গুণনিধি		৩•১	२५३	काश्च अदिवान यटन हिल माध	•••	১২৮
1.1	ওহে ও কুবুজার বন্ধ	•••	۷۰ ৮	222	কাহ গে জীবন জাতি প্ৰাণ ধন	•••	>08
678	ওহে নাথ, কি করিয়া গেলে	•••	২২৩	668	কাহুর আদর পীরিতি ভাবিতে	•••	٥
9.6	ওহে বড়াই, তাহার বিষম নারা	•••	0.9	92	কামুর পীরি(ত কুহকের রীতি	•••	8 >
	•			983	কাহর পীরিতি চন্দনের রীতি	'	24.7
	· ক			859	কান্তর পীরিতি পাইয়া পরশ	4	* 2 ° 0
056	ৰুত খর বাহির হইব দিবারাতি	•••	>636	080	কামর পীঞ্জিত মরণের সাথি		>42
-60	কদম্বে বন হইতে	•••	૭૬	>>8	কান্তর বচন ভনি গোপীগণ	•••	47
	কনক বরণ কৃত্রিনা মনে	•••	538		কামুর বঁচন শুনি গোপীগণ		
"se	कनक वस्त्र किरत्र पत्रभग	••••		998	কাম আর মদন ছই প্রক্রতি পুরুষ কাল জল ঢালিতে কালিয়া পড়ে	٠	ა
, 396	কমলনমুনু ধেয়ান স্বর্ণ 🔈 🔈	•	. 41	२१६	কাল জল ঢালিতে কালিয়া পড়ে	यत्म	25 €
689	कत्रभूद्धिया भन भन छोद्		ঽ৽ঌ	269	काना भवरनव खाना	•••	. ३२३
45	कहिए बीराज् है। है	4.		688	कान धन जानाउँ कानिश गर्छ काना गत्राम्ब खानाः काना देशन पत्र चान देकन भत्र	***	£ 198

श्रम	সংখ্যা	পদ	পৃ	र्छ। । श	ন-সংখ্যা	পদ		পৃষ্ঠা।
884	কালা্র গ	জালাটি বড় উপজল	,	१३) २३	৯ কে ব	ল আমার তুমি সে রাধ	ার	309.
១ 18	কালার :	পীরিতি গরল সমান		365 (9		মি ষাবে কামিনী তেণি		282
266	কালার ব	লাগিয়া হাম হব বনবা	गौ	ऽ २२ ७७		` I কামুর সনে পীরিতি ব		>62
633	কালি ব	লি কালা গেল মধুপুরে	·	٥٠٠ ا	০ কেনৰ	৷ পীরিতি কৈলাম খ্রাম	ব্ধুর সনে	> 6 6
্তচ৫	কালিয়া	কালিয়া বলিয়া বলিয়	1	>65 68		। লইয়া আইলা মোরে	•••	२৮२
988	কালিয়া	কালিয়া বলিয়া বলিয়া	•••	Seb 091	৮ কেনে ব	কৈত্ব পীরিতির সাধ	•••	>6 0
३ २०	কালিয়া ব	वत्र ण स्त्रिरल ्	•••	68 63	• কেবা (ৰ প্ৰকৃতি পুকৃষ কেবা		085
6 2	কালিয়া :	বরণ হিরণ পিন্ধন	•••	७३ १२९	কশপা	শ দিয়া চরণ মুছায়ে		9,6
272		বরণে না ছুঁইও রাধার		e8 609	ে কেহ আ	ভিদ্ড কে শ নাহি বান্ধে	• • • •	₹৮•
७१२		কহিব হুখ কে জ্ঞানে হ	শন্তর	848 C#	' কেহ বে	হে পোণী যযুনার নীর	•••	२३२
6 52		কহিব মনের বেদনা		३३ ७ २३	কেহ বে	গ্রাধা রহে কাতুর বিরয়ে	· · ·	२१७
२৮२		কহিব মনের মরম	`	२४ ७७०	কেহ ব	ল ভাল মোরা যাব চল	•••	२ १ ७
CIP	কাহারে ব	কহিব মনের মরম		803		আছিল শিশু কোলে ব	•রি	३१२
8७१		দেশহ রাই		bb 353		ৰ দাম শ্ৰীদাম সু দাম	•••	\$ \$
650	কি আর		٠ ২	२१ ३७8	কোধাৰ	ধাছ ভাই ছিদাম সুদাম	•••	16
8 22		বিল্যে কাজ	٠ ٢	PP 699	কোথা ে	গলে পাব্রাম রুঞ ছ ই	•••	224
8•>		ত পারে গুরু হ্রজন	'	92 863	কোথারে	া সাজিয়েছ		२89
0.5	- •	শ্ৰুণ ব্যথা		۰۱۰ وو		ধি সির্জিল কুলবতী ন	ারী	>ۥ
₹€8	কি মোহি	নী জান বঁধু কি মোটি	हिनी कान >	>> >>.	কোন সং	भी यान जन तमस्त्री	•••	4.
699		শাইলে তু মি	, 8	29 692		ায়ে যাহ্মণি	•••	₹86
646		ক ভানি দাকণ বচন	به	89 >21		किष् मन नाथ निव	•••	es '
6 83		াকিণ কুলিশ যেমন		88 6.9	কণে কন্ত	শত ক্ষমা নাহি চিত	•••	२७१
250		ক হৈল মোর কান্ত্ র		800		ধা পথ পানে চাই		७ ४८
659		া ধনে কিবা করে জনে		460		নাড়ায়ে দেখ	•••	9 • 8
₹•>		ণজ করি কেন জাগি 🥻	াতি ১	8 601	কেণেক ট	নিড়ায়ে র ও	• • •	२१४
	কিয়ে 'ভভ	,	و	6		MF.		
662	श्रेष्ट्रामग्र श्री	হী ধায় বেগে অতি	२३	•		খ		48
		নে চরণে পড়িয়া	∖ २७	2 499	খলপণা ছ	िए पन पन कर	•••	२६७
98 P	কুৰুজা স্থন্দ	রী অতি মনোহারী	j sp	٦				خ م .
৩৮্৮	কুলের ধরম	ভেরম সর্ম	>ŧ	b .	\	श रे		• . •
२७०	কুলের বৈর্	ौ रहेन यूत्रनौ	58	> (60	गेगटन मां	কুণ নিশি	.*	۲8۶٬,
>65	ক্লফ বলরা	দ চলিলা ভুরিতে	ь	(0)	गम गम ८	প্রমে পথে যায় চলি	l≰.	२०8
		বিমুধ অন্তর	২৯	6 622	গদ গদ ে	বালে ভন্ বাণীধর		269
000	কৈশাছে	বুৰিয়া বলিবে স্থবিয়া	ور	5 348	. গায়ে-বার	। भें जिल्ला विकार		» s «

MA-3	শংখ্যা .	পদ		পৃষ্ঠা।	পদ-স	ংখ্যা প	Ħ		পৃষ্ঠা
80,	গিয়া এক জ	নে কহে কাণে কাণে	1	२३			ছ		.`
40	গিয়া সেই গু	ণী প্রকার করিল	•••	₹¢	eva	ছট্ফট্ করে ছা	য়া দরে গেল	;	₹6
696	শুণিত গোপ	ত পীরিতি	•••	२६७	35	ছাড়িয়া সে তহ	-		>
848	গুণী, না কহ	কামুর কথা	•••	२•३	৩৮৩	ছার দেশে বস্থি	•		>+
169	গৃহমাঝে রাগ	া কাননেতে রাধা	•••	७२१	₹81	ছি ছি দারুণ মা			>>
825	গেলা যত সং	ी रहन ना छनि	•••	> 8	283	ছি ছি মানের ল			>>
68.	গোকুল তেজ	ল নাকি কান	•••	২৮•	र२२	ছুঁও নাছুঁও না	-		>•
228	গোকুল নগৰে	র আমার বধুরে	•••	५७ २		× - 11 × - 11	12 - 11011		,
1>	গোকুল নগরে	ইজ পূজাকরে	•••	8•			G		
9 7	গোকুল নগ	র ফিরি খরে খরে	•••	88	640	कनम व्यविध शी		•••	>8
					049	জনম গেল পরত্	শে কত বা স	देव	>6
•		घ			919	জনম গোঁয়াত্ব হ	टर्ष	•••	>6
>.>	খনখাম শরী		•••	46	166	ৰূপতে তোমার	নাম	•••	৩২
86		দতে শতবার	•••	२৯	140	জর জর জর জা	রিল শতর	•••	20
699	বেরল আপদ	ঘুচিল বিবাদ	•••	₹18	6)	জলদবরণ কাঞ্		•••	•
					490	ৰাতি কু ল শীল	সকলি ম্জিল	•••	₹6
		Б '			>>4	জাতি জীবন-ধন	কালা	•••	>>
113	ह णीमान करः	চ তুমি সে গুরু	•••	ಌ೦೦			એ		
156	ठखीनात करव	ং ভনহ মাত।	•••	90 •		777 777 777 777	·		
56	চন্দন গঞ্জনা	ठाँक भगरन	•••	48		यंत्र यंत्र यंत्र वटः		•••	₹€
422		াজি ছাড়ি দেহ যোগ	র	>•9	૭ ૨	ঝরকাউপরে 💰	। ७०। युष्पत्र।	•••	2
২ ২•	চক্ৰাবলী সং	ন কুৰুম-শয়নে	•••	۶۰۶			ট্রে		
>>	চম্পক বরণী ব		•••	ъ	ere	ঞ বি মথুরা ঞ	কি চতুর।	•••	২ د
₹8		বৃক্তাহু রাজা		>4		1	हे		
425	ठन ठन योव	রাই-দরশনে	•••	७५२	>86	हेन हेन करते च			
(00	ুচলভ নাগর	কান	•••	২৩১	660	हेन हेन हेन परि		• • •	1
8>0	'চৰল গ মন হ		•••	396	1	हेन वन करतू है।		J	1
***		ভরিতে যাই	• • •	>->	440	वन नन कर्य क		• \	- (6
	চলিলা দ্বাধা		•••	২৩•		/	b	• (
660		হই শূন আসি		15.05	e ৮ ዓ	ঠালল র্মণ ঠম	क देवर्घन	***	٠. ૨
8.		নি কুরস-নয়ানে		1 34	>>6	ঠেকিছ দানীর ফ	হাতে	•••	•
>96		ৰ কপুরি তাদ্ধ ।	•	,			ড		•
642	চেতন হৰিছা	চলিল ছাড়িয়া	.,,	348	२१•	ডাকিয়া শুধাও	না প্ৰাণ আম	ান বাসি	. \$2
V)E	काक कराने	স্বন তিন্	1			डाहित्म मृशानी			

•

পদ-সং	ংখ্যা পদ	शृष्ठी ।	পদ-সং	थ्या श्रम .		পৃষ্ঠা .
•			૨ ૯૯	তোমারে বুঝাই বঁণু তোমারে বুব	াই	`
	্			ত্যজহ দারুণ মান	•••	२ •>
(4)	তর চর চর বহে অনিবার	: 306		থ		
	ত		৫৯২	থাকি থাকি থাকি ব্যথিত অন্তর		245
			ે ર	थित्र विश्र्त्रो वद्ग (गोत्रो	•••	৯
	তবে কৰে রাই দৃতীর গোচরে .	>>.		म		
	তবে কেন প্ৰীত বাড়াইলে হিত	. 263		4		
	তবে त रहेन औलाम चुलाम .	24	£20	मकिन नग्राम नांतिन यथन	•••	२७•
	•	9	৩২৩	मिरम दक्षनौ ७ नि ७ नि	•••	>80
२३१	ভাহারে বুঝাই সই পেলে তার লাগি	গ ১৩৩	685	ছুই করে ধরি অফুর গোহারি		266
9• 9	তাহে অপদ্ধপ কৃষ্ণ অবতার	>>	>>5	ছকাণ পাতিয়া ছিল এতক্ষণ	•••	5.6
४२२	তিনটি আখরে না জানি কি আছে	680	8 > 8	ছই সুধা লয়ে বিহি গেল ধেয়ে	•••	236
(9)	তুমি কি নিশান তাহা সে না জানি	२१३	810	দৃতী কহে শুন স্বামার বচন	•••	258
૨ (૧)	~	> 2•	889	দৃতি, না ক হ খ্রামের কথা	•••	>2 दर
. રહેવ	~	··· b9	88>	দৃতীর বচন গুনি স্থামুখী	•••	***
616	তুমি নন্দ বড়ই নিদয়া	২৯৬	२৮१	দূর দূর কলছিনী বলে সব লোং	ক গো	>0.
415	তুমি নিদারূণ নও	২৫∙	4	দেশ অপরপ সিয়া	•••	475
888	ত্মি বড় নিদয় নিদান	>>>	502	, দেখ দরশন করহ ভোজন	•••	re
859	তুমি বিদগধ রায়	>1>	86>	দেখ হুই রূপ অতি রুসকৃপ	•••	₹•8
856	ভূমি বিদেশধ স্থাবে সম্পদ	۰۰۰ _۱ ۶۹৮	4.5	(मर्थ (मर्थ व्यवज्ञात	•••	223
875	'তুমি বঁধু ব্ৰ ন্ধের জীব ন	\ >6.	620	(मथ (मथ नमतोग्र	•••	२२৯
>98	তুমি মোর প্রাণ-পুথলি সমান	ده (820	(नथ (नथ मिथ ठाहिया ह आँथि		216
>00	তুমি দে আঁথির তারা	/ 1•	4.5	দেখ নব কিশোর কিশোরী		२४४
6 2 •	তুমি দে নিদন্না নিঠুরাই পনা		P-> 6	দেখ বলগাম ভূবনমাঝে	•••	000
383	ज्यि (म (यमन कानित्य ज्यामता	60	8.9	দেখ সখি অপরপ মনোহর		398
138	তুমি হৈ নিদ্না বজি		869	দেখি নবরামা তুমি কোন জন	1	, 29A
168.	পুতুৰনে দেঁবল আর অপরপ	২১৭	9•3	(प्रिय (य प्रित चांशन नग़ार		308
२७७		>>>	193	(मिथित कलकीत मूथ कलक हो		324.
100	ভোমার পীরিতি কি শানি ভকতি	دره . ا	626.	দেখিয়া নাগর নাগরী সঞ্চল	•	229
262	•	=	1	্বদথিয়া মূরতি ক্লপের আ কাউ		9
•	ভোমার মহিমা বেদে দিভে সীমা		- 1	দেখিয়া ধুমুনা নদীর তরঙ্গ	1	98
165	ভোমার বরণ ছতি অনুপ্য	৩২৯	ł	- • • •	1	0.0
	ভোষারে ছাড়িতে নারিব কালিয়		1		बाय	. 86
0	PALLICE ALLACA ALLE ALLES		1		-	

° পদ	সংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।	পদ-সংখ্যা	Ohz		
. +>	(मन्नामिनी (तर्म यहरम श्राटक	- Net	38		পদ		পৃষ্ঠা।
٠ ١	দৈব যুক্তি বিশেষ গভি		>8>		নী বলে ওন গো সই		** €0
81-0	इंट राट मध्त म्त्रनी	•••	383 330		ना रंग निव मा रंग प		>80
230	বারের আগে সুলের বাগ	•••	>•8		ল মান দেখি চঙ্গ : কান - কিব		>>9
	HONN HET KEIN IST	***	, , ,		শোসিয়া বসিল আসি	या	8>
	र				ও বসুনার অলে	•••	৩৭
965	ধরণী উপরে ধরিবে ঢারি	•••	ઝ૭৮		ৰেন অতি সে কঠিন	•••	088_
918	ধর্ম কর্ম গেল গুরু গর্বিত	•••	>6%		বৈচিত ভেল কাহার	চন্ত	>•¢
428	ধরম করম সকলি মঞ্জিল	•••	₹6•		সাধন ভনহ লক্ষণ	•••	989
ર્ર	ধরি অন্থপম বাজিকর যেন	•••	>8		াসিয়া নাগর রসিয়া	•••	>>6
18	ধরি নাপিতানী বেশ	•••	83	· ·	ণাভিত কি রসকেলি	•••	२२•
015	ধাতাকাভা বিধাতার বিধানে দি	रिय का डे	340		হর সব গোপীগণ	•••	२५8
	थिक् थिक् थिक् তোরে রে কালি য়		5.2		দিয়া ভ জিতে পারে		৩ .৩ १
	षिक् षिक् षिक् निर्हेत्र कानिया	•••	202		লিয়া না পেল বলিয়া	•••	>60
	ধিক্ রহু কুলবতী কুল তেয়াগিয়	1	369		তন পীরিতি হজন	•••	>••
	थिक् तह कोवत्न (य श्रताशीन को		No.		ত শাদি যাও	***	(01
	বেহুগণ সব করি হাম্বারব	•••	344		নাৰেশে বাগুলী চলিফ	•	99÷.
					ন ভন বিনোদ নাপ্র	ī	৩২৩
	न		1		হথে কুঞ্জ-কুটার	•••	>4.
666 3	নন্দের করুণ শুনি		220		দ্র প্রভাত হইল	***	२२৮
126	ান্দের নন্দন চতুর কান	•••	1930	২১৪ নিশি প্রভ		•••	>•¢
	বীন কিশোরী মেঘের বিজ্রি		9	৯৬ নিশ্বস ছা	ড়িতে না দেয় খ রের '	গৃহিণী	>00
	বৌন নাগরী নবীন লোরেতে	•••	262		প		
841 =	য়ন-কাজল মুছিয়। ভারল		359	ং প্রেজ্ঞার	। দড়ি দেখিত্ব নাগরী		
	য়ন তরল বহে প্রেমবারি	***			ার আছেন সুবল	•••	8
	হ নিদাকণ নবল নাগর	•••			কোকিলের ভাক	•••	, २৮
~ হত•় ন	। কর না কর ধনি এত অপমান				पोवन में शिर्द्य	•	**
-	াগর আপ্নি হৈলা বণিকিনী	•••			में भरत्रत्र कथारत		ક ્ષ્ટ
	গ্র চভ্রমণি	•••			দ প্ৰসম কৰামে দ প্ৰপনে দেখিলু	··· A	
१०५ न	গর নাগরী শ্রেমের সাগরি	•••	. २२३ ७		নী খুচিবে কথনি	γ.	>1
	পর পাইম নাগরী সকল	/		৮ পশরা নামা		•••	7.8•
	বানি পীরিতি এমন বলিয়া		>88		ও সাধা গা ৰগর চাতরে	•••	0 pp
	লাক পারিতি দারা নাহি পার	ভাপ '	485 68		गा नगत्र ठाण्डल ग न्यम् त नग न	•••	380 4
২৪৯ না	পিতিনী করে ধবি রাই চলুমুখী	1	->>9 03		কত সহিবেক জাৰা		84 <i>5</i>

			N	/•	•			
পদ-সং	খ্যা পদ		शृष्ठी ।	পদ-স	ংখ্যা	श्रम		পৃষ্
219	পাশরিতে চাহি তারে পা <mark>শরা না</mark>	বার গো	221	22	প্রভাত কালের	কাক কোকিল ড	কিল	
	পাৰাণ্ নিশান ভোষার পীরিভি	•••	₹8₽	98	প্ৰভাত হইল স	বাই আগিল	•••	
	পিয়া গেল দুরদেশে হান অভা গিনী	1	٥٠١	48.	প্রভাতে উঠিয়া	वित्नांषिनौ ब्रांश	•••	:
	পিয়ার পীরিতি লাগি যোগিনী হই		202	>9•	প্রভূর আরতি	কি জানি কাকুভি	•••	
965	পীরিতি আনল ছুঁইলে মরণ	•••	>66	७२१	প্ৰাণনাপ, এক	বার চাহিয়া কহ ব	क्षा	
	পীরিতি উপরে পীরিতি বৈসমে	•••	430	626	প্ৰাণনাৰ বঁধুয়া	আদরে	•••	
166	শীরিতি করিয়া ভালয়ে যে	•••	999	474	প্রেম বাড়াইয়া	কেল উজটিয়া	•••	
	পীরিতি নগরে বগতি করিব	•••	>66	bt •	প্ৰেম যুবতী য	চ রয়া যুথে	•••	
	পীরিভি নগরে বস্তি করিব	•••	>69	3.4	(श्रंप छन छन	•	•••	
208	পীরিতি পসার লইয়া ব্যভার	•••	>७७	96.	প্রেমের আরু	ত দেখিয়া মুরতি	•••	
งาา	পীরিতি পীরিতি কি রীতি মুরতি		১৬২	969	প্রেমের পীরি	ত কিসে উপজিল	•••	
Øb•	পীরিভি পীরিতি মধুর পীরিতি	•••	360	965	প্রেমের যালন	ভন স্ক্ৰন	•••	
OF 8	পীরিতি পীরিতি সব জন কহে	•••) t c					
912	পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁপর	•••	365			यु		
998	পীরিতি বৰিয়া এ তিন আঁখর	•••	781-	526	ফটিক অবের	क नू	•••	
064	পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর		>61	421		হ ফিরি কথা কহ	•••	
909	পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর	•	585	4.5	ফুটল ফুল মাধ			
೨ ೦ ೯	পীব্রিতি বলিয়া একটি কমল		784	636		ন্দ হিব নাহি বা	¥	
916	পীরিতি বিষম কাল	•••	365					
0.6	পীরিতি-মূরতি কভু না হেরিব	•••	209			ভ		
019	পীরিতি রসের সাগর দেখিয়া		>69	402	ভাণ্ডীর-কান	ন চলে ধেহুগণে	•••	
२२६	পীরিতি লাগিয়া স্থামি সব তেয়া	গিতু	200	24.	कामद्र समित		•••	
059	শীরিতি লাগিয়া দিছ পরাণ নিছা		>6>	120	ভাবের অন্তরে	-	•••	
993	পুন আর বার আসি তরাতর	/	७७२	900		নী বঁধুরে পাইয়া	•••	
- 173	পুনঃ পুনঃ কহি রে	<i>{</i>	২৩•	222		ল কালিয়া নাগর	***	
	পুনঃ বলরাম রোহিণী-নন্দন	• • • •	39	623		্ভোমার পীরিতি		
	ধূনঃ শিল্পাণে করল হরণ	•••	, re	1		- বে বঁধু আসিলা স		
٠٠	र्ने त श्रीतन चिं मतारत		ે			হু ভাষিনীর প্রিফ	•••	
84.	भूनवर्ण बार मूत्रमी वाकार	\	२०३	1	ভূবন ছানিয়া	•	· ·	
976	भूतप्राण प्रार प्राण राजार	Z	633	1 1		,		
100	পুরব সে অবতারে		9.6	•		ম		
107 205	পুরব নে অবভাবে প্রথম প্রহর নিশি	•	3.5		্মগ্ন কবিষা	গেল সে চলিয়া	1.	
			080			ীতের আলাপে	}	•
P+>	প্রবর্ত দেহের সাধন করিলে প্রবৃত্ত সাধিতে বস্তু অনায়াসে উ	٠	086	-		কুচাঞ র্ডনহ বিশ	571	

.

			ų.v	•		
পদ-স	. था . भन		श्रृका ।	পদ-স	१२चेत्रा भन	शृष्ठी ।
. 400	মধুরা নাগরী রূপ হেরি হেরি	•••	२৮७	9 60	বধুনার ডট অতি রমা স্থল	59•
۴•	মধুরা পুরেতে ধাম	•••	84	344	যমুনার তীরে সবে যার নানা রবে	» ا
•••	শনের মরম মনেতে জানহ	•••	२७७	690	যশোদা বলেন খন পো রোহিণি	२8৫
864	মন্দ মন্দ গতি চলন-চাত্রী	•••	72F	P8	र्वाहेट जल कमच्छल	86
862	नश्त मश्ती नाति किति किति	•••	386	24	যাইতে দেখিল শ্ৰামে	08
124	মরম কহিতে ধরম না রয়	•••	985	७७३	যাবত জনমে কি হৈল মরমে	১৩৯
476	মরিব পরল ভবি	•••	٥٠٠	6.7	যাহার কারণে জগজন ভরি	२६७
5 24	মরি মরি যাই খ্রামের বাঁশীয়া ন	াগব্বে	১২৩	૭૬૬	যাহার সহিত যাহার পীরিতি	>eb
815	মাধবীতলাতে দৃতী পাঠাইয়া	•••	>>¢	598	যে জন না জানে পীরিতি মরম	>۴۶
846	মাধবীতলাতে রহে এক ভিতে	•••	166	826	ষে দিন হইতে তোমার সহিতে	১৮৫
840	মাধব তলার ফুলের সৌরভে		>>6	> 29	যে পদ যোগীরা জপে নিরস্তর	13
474	মাহৰ মাহৰ ত্ৰিবিধ মাহৰ	•••	O8F	452	যেবা জন জানে কহিতে না পারে	083
A>>	শানুৰ মানুৰ স্বাই বলয়ে	•••	485	১৮২	বোগমায়া পৌর্থমাসী সাক্ষাতে অ	াসিয়া ১৫
४२०	মাবাপ জনম নাছিল যখন	•••	96.		র	
	মিলা অমিল। ছুই রুসের লক্ষণ	•••	982			٠.
409	মুনিগণ যারে ভাবে নিরস্তরে	***	্২৩৩	२७१	त्रक्नी-विवान करात्र ताहे	50
168	भ् तनीत चरत त्रहिर्त कि ंपरत	•••	>>>	422	রতির কারণ রবির কিরণ	486
>9>	যোর অপরাধ কেম	***	49	₩89	রথ আরোহণ ক্লফ বলরাম	२৮
>62	মোর অপরাধ ক্লেম যত্নাথ	•••	44	649	র্থ চড়ি যান করয়ে গমন	₹₩
3 60	যোহন মুরতি কান	•••	>65	020	রমণী-মোহন বিলসিতে মন	>6
	ম			860	রমণীমোহন রমণী মোহিতে	>6
	য			6	রুমণীর মণি পেধিকু আপনি	•••
463	ষধন এ তত্ত তত্তান করে	•••	२२०	4.8	রসিক নাগর চতুর শেধর	\$>
676	ষ্পন করিলে বনে অভিসূপ	•••	245	899	রসিশ্বাগর বলে ওন বিনোদি	ने २०
२६७	ষধন নাগর পীরিতি করিল।	•••	774	116	রসিক নিগ্রী রসের মরা	
245	যখন পীরিতি কৈলা	•••	>>1	111	রসিক রাদ্যক স্বাই কংগ্নে	•••
639	ষতকণ নয়নে চাও	•••	212	424	্রদেতে আবেশ হরে 🤾	11 - 00
893	ৰত গোপনারী চলন অগোর	•••	₹•,¢	11>	রসের কারণ রসিকা রসিক	
	ষতন করিয়া বেদালি ধুইয়া		585		রসে রস্বাইয়া রমণী তেজিয়া	.). 20
	ৰত নিবারিয়ে চিতে নিবার না				রাই অভিসার করু	'. ર •
	যদি বা পীরিতিখানি স্কনের হ	N			ताहे, आकृ रकन रहन रहिं	`\$•
	বন্ধ তাল মান	•*			রাইএর দশা সধীর মুধে	°0;
	. रम्ना निकटि यथा वश्नीवि ।	·"			রাই কহে ভবে ক্বজিকার আগে	
84	वक्ता बाहेबा आत्वरत (कृषिण	' w,	1 23	994	রাই কৰে খন কে জানে পীরিছি	5 . 1 6. 40

1

.

•									
	পদ-স	रथा शह		शृष्ठी।	পদ-সং	খ্যা প	.		পৃষ্ঠা।
	160	রাই, তুমি সে আমার গড়ি	5 (0)	ળરહ	6¢ ¢	রূপ দেখি যত মধুর	া-নাগন্ত্রী	•••	264
	88•	ছাই, তুরিতে খামেরে দে	र्गात्रा	249	6 6 6	क्रभ (मिथ शिया (क	মন করে .	••	244
	96>	রাই, তোমার মহিমা বড়ি	•••	८२१	e>	রোঝা ওঝা আন বি	ায়া পেয়েছে বি	ভূতা	ره ر
	>04	वाहे वरण खन (वमनी वर्	ारे	12	68 6	রোদন শুমান সব গ	ারিহরি	•••	२५७
	>••	রাই বলে ভন হেদে গো	त्वननि	er					
	123	রাই, বড় সে দেশিল বিপ	রীত	9>9		7	7		
	100	दारे वित्न यत्न मकिन व	াধার	હરુ	२०५	শশিতা কহয়ে শুন	হে হরি	•••	>>>
	400	রাই মুখ হেরি নাগর মুরা	রি	২৭৮	(4)	ললিভার কথা শুনি		•••	₹85
	८७५	রাইয়ুৰে শুনল ঐছন বো	न	>>8	285	ললিতার বাণী ভনি	বিনোদিনী	•••	274
i	8 22	রাই রাই নাম আবে সব	শা ন	246					
	668	রাই ভাষ একই পরাণ	•••	२३৮			ব		
	>•8	রাই সুনাগরী প্রেমের আ	াগরি	49	592	বদন নেহারি চর চ	র বারি	***	25
	₹9•	রাইক ঐছন সকরণ ভাষ	•••	278	2	বদন সুন্দর বেন শ		•••	9
	२ 8७	त्राहेरब्रद्र वहन छनि नथीश	ণ	>>6	36	বদন হেরিয়া গদ গা	र टे रप्रा	•••	to
	b•9	রাগের ভবন গুনিয়া বিব	ч	988	932	বন্ধু কানাই, তোমা	র চরিত এত দ	্র	٠٤٥
	8 २ •	রাধা কহে শুন আমার ব	চন	>6-46	108	বন্ধু, কি আর বলি	ৰ্ আমি	•••	660
	>3	রাধা কহে গুন রসিক না	গর	4>	¢>	বরণ দেখিত ভাষ		•••	08
	898	রাধা কহে শুন গ্রাম স্থনা	গর …	₹•७	694	रैंग यन (मिश विक	ল পরাপ	•••	२ ७२
	328	রাধা বলে ভূমি কত চাহ	मान	44	6.8	वन वन मिथ विद्रम	হইলে	•••	₹68
	>>>	রাধা বলে মোরা জাগাত	वित्रा	6.	363	বলরাম আগে করি	ছে কানাই	• • •	13
	860	রাধা বলে খন আমার ব	চন	২۰ ১	२৮७	বলে বলুক মোরে	মন্দ আছে যত	ज न	>0•
	226	রাধা বলে গুন বিমোদ	বড়াই …	6 2	490	বহুক্ষণে তবে চেত	দ পাইয়া	•••	165
	62 €	রাধা বলে গুন রসিক না	াগর	२ १ 8	902	বহু দিন পরে বঁধুয়া	এলে	•••	७३५
	162	রাধা বিনে আর আন না	হি ভায়	৩২৯	>09	वष् व्यवकृष्ठ मिथ	শ বেকত	•••	• 1
ŗ	895	রাধারণ অতি দেখিয়া মৃ	রতি 🚣	٦•٩	9.	বাদীয়ার বেশ ধরি		•••	৩
	89•	রাধা-ভাষরূপ দেখিয়া মে	াহিত	₹•€	166	বাওলী কহিছে ও	न (र विक	····	90;
	8.3	শ্ৰশ্বার আর্ট পীরিতি (प्रविश्रा ···	. 598	488	বিচিত্ৰ স্বাসনে বৰি	ना मचत्न		201
	872	द्रारोदे आर्वटन गमन मह		>96	398	বিচিত্ৰ পালকে শয়	ন করায়ে	•••	24
•	>9€	রাধার সাকৃতি করিছে গ	লারতি …ূ	95	3.3	বিদগধ প্রেমরপ বি	নর থিতে		1
	826	স্থাধার চরিত দেখি সেই	त्रशी ्रा	>> 3	01=	विधित्र विधारन श	ম আনল ভেজা	2	366
	>.4	রাধার বেশে শোভা বনা	हिर्द रे	49	08 €	विक्या कृष्यं वर्ष	ন আনিয়া	,	>64
ŧ	૨ •૧ '	वादिका चारमत्न गरमव	रत्रदं	>•0	200	विश्रण किया का	ছিল শুভিয়া	•••	203
		৴ রামা হে∦কি আর বলিব	•	338	1.5	বিরহ-কাত্রা বিদ	गुणिनी बार्	•••	d.1
	63	রঞ্জে মোহিত হইল	কন্ত জনা '	२•	860	विष्ठ भावत चार	इन इन मिल	ing C	4.4
	_			_	•	1 6	٠, لا		

		-1	•			
े भन-म	: था	পৃষ্ঠা।	পদ-স	ংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।
ક્ષ્ય.	বিষম বাঁশীর কথা কহনে না যায়	રરર		. 201		
>48	বিষয় ভাবিলা বালক সকল	>>				٠
>6F	বেদ বেদ বর্ণ চারু সে পৃরিত	bb	123	শতেক বরষ পরে বঁধুয়া মিলল খা	ব	०७१
>>1	বেরাইতে রাধা নাহি পড়ে বাধা		269	मंडिनी धरनी राम ना পाईब्रा	•••	40
884	বেরি বেরি দৃতি বচন সরস	>>>	७३२	শারদ পূর্ণিমা নিরমণ রাতি	•••	>59
9	বেলি অসকালে দেখিত্ব ভালে	t	¢ 08	শিলা বেণু শুনি ৰশোদা রোহিণী	•••	ર ડર
421	বেশ বনাইছে মায়	२२४	090	শিশুকাল হইতে শ্রবণে শুনিম্	•••	262
894	বেশ বনাইছে খাম	২.9	૭ ୧૨	ওন কমলিনি চল কুল রাধি	•••	>44
026	বেশ সে স্থবেশ অতি মনোহর	>%>	622	গুন গুণমণি কহি এক বাণী	••	२२२
२७	বুকভাত্বপুরে গিয়া কুতৃংলে	>1	204	শুন গো বড়াই মোর	•••	12
>¢	বৰ্মানবালা রাজপথে আইলা	10	>09	তন গো বড়াই হেখা	•••	• 6
476	उन्दर्श, भरजनने भरत	034	978	গুন গো মর্ম-সৃ ই	***	>8 •
126	ব্ৰহ্মাণ্ড ব্যাপিয়া আছয়ে যে জন	৩8•	6.0	গুন গে৷ মরম-সই	•••	275
612	বঁধু, উলটি কহত এক বোল	215	७२७	ভূন গো মরম-স্থি	•••	386
228	বঁধু, কহ না রদের কথা শুনি	5.3	8	শুন গোমরম সবি	•••	>1>
216	বঁধু, কহিলে বাসিবে মনে হুখ	5२•	२७8	শুন লো রাজার বি	•••	275
824	वैश्, कि चात्र सदत्रत्र मार्थ	>>+3	b9	শুন গো রাধিকা চাঁপার কলিকা	•••	€8
909	ব্ধু, কি আর বলিব আমি	%.	၁၁၁	শুন ও গো সই আর <i>তো</i> মা বই	•••	>89
cor	বঁধু, কি আর বলিব আমি	৩২১	91/8	শুন গো সঞ্জনি আমার বাত	•••	೨೦೨
185	বঁধু, কি আর বশিব আমি	৩২২	953	শুন গো সঞ্চনি পরমাদ শুনি	•••	562
982	বঁধু, কি আর বলিব তোরে	৩২২	66	ণ্ডন গো স ন্ধ নি সই	•••	**
100	বধু, ছাড়িয়া না দিব তোরে	0>>	639	শুন গো সজনি সই কি বুদ্ধি করি	₹	२२६
812	বধু, তুমি কঠিন পরাণ	>৮>	१२०	শুন গোয়ালিনি উপমা দিয়াছ	•••	66
106	वंधू. जूमि निमाक्त नाम	660	624	ভন ধনী ৱাই কহি তুয়া ঠাঁই	•••	२१६
986	বঁধু, তুমি সে আমার প্রাণ	৩২৩	850	ভন ধনী ৱাই তান কিছু গাই	•••	445
	বৃধু, তুমি সে পরশ মণি হে	৩২৩	255	শুন ধনী রাধা রূপের গরব	•••	**
	বঁধু, ভাল সে বটহ তুমি		696	छंन नम (चार जामांत्र रहन	•••	y - 239
	वंधू यनि रंगन वरन छन १८गा नि		866	শুন নব রামা ঐ পরসঙ্গ	4000	2.2
	वैधूत व्यक्ति (पश्चिमानत	>>>	34	ওন প্রাণ-সধা আমি সে জানিয়ে	***	>3
	বঁধুর লাগিয়া শেক বিছাইত্ব	> 3	193	ওন রঞ্জিনী,রামি		ुः ७७३
	वैधू (इ, नृष्टन मुकारत्र (बांव	£ 018	358		•••	'6 5
805	4.	17 , 740	945			6:0
	বাঁশীর নিঃখান কাপে	1	192	ওন ওন বাছা জীবন-কানাই	٠.٤	, 386
₹30	नातात्र (नवसन् काटन	(2.	ঋন ঋন <i>ভোষ নক্ষ-মলালিয়া</i>	j .	52
			•			

পদ-ঃ	াংখ্যা পদ		शृ हा ।	পদ-য	দংখ্যা	अम		পৃষ্ঠা
ឧទទ័	खन खन दांश करर तिरे खनी	/	`૨∙∙	584	খামের জলদ	রপ হেরি হেরি	۲,,	264
ý••	খন খন খন আমার বচন	•••	**	०৮১	হামের পীরি	তি শ্রতি হইলে	•••	378
۵.۶	শুন শুন সই কহি তোরে	•••	204	6.	গ্রামের বরণ	-ছটার কিবা ছবি	•••	9
90>	ভন ভন হে রশিক রায়	•••	, 024	36.0	খ্যামলা বিষয়	শা মললা অবলা	•••	31
२२৮	শুন শুন স্থলরি আমার ধে রী	ठ	>>•	9.6	খ্ৰাম শুকপা	थी सम्बद्ध निद्विध	•••	9.1
509	শুন সহচরি না কর চাতৃরী	•••	२७१	409	খ্ৰাম খ্ৰাম ব	লি সদা খ্রাম হেরি	•••	26
980	খন স্থনাগর করি কোড় কর	•••	७ २२	6.5	খাম সুনাগর	া রাশ্ব	•••	२७
950	শুন সুনাগরী রাই	•••	938	982	গ্রাম-ছন্দর	শরণ আমার	•••	৩২
>>6	খনহ নাগর কাহ	•••	• 5	>.0	শ্ৰীদাম স্থদা	ম আর বলরাম	•••	ŧ
6 96	খনহ নাগর গুণের সাগর	***	289	494	≗ीगूर-পङक	চাহি গোপীগৰ	•••	₹€
७७७	ত্তন হলধর ভাই	•••	२ ৯ २					
889	শুনহ স্থলরী রাধা	•••	222			স		
456	ভনহ সজনি আর কি দেধহ	•••	२२¢	ಾ	সই, আর বি	ह इं देक ग्र ना (গा	•••	>8
8>0	ও ন হে কমল-আঁথি	•••	>11	२१७	সই, আর যে	কহিব কত	••	>\$
98•	খুন হে চিকণ-কালা	•••	৩২১	२৯२	সই, এ কি ফ	বহে পরাণে	•••	> 5
)8F>	খন হে নাগর খণমণি	•••	₹•5	28 9	সই, কাহারে	া করিব রোষ	•••	> 0
257	শুন হে নাগর গুণমণি	•	₹8৮	69	সই, কি আ	ছু দেশিল রঙ্গ	••	٠
8 7 8	শুন হে নাগর রায়	•••	>11	124	,সই, কি আ	ৰ শীবনে সাধ	•••	><
8>¢	শুন হে নাগর রায়	•••	>9 ৮	222	সই, কি আ র	বিলিব তোরে	•••	2
5.6	ত্তন হে নাগর শরণ যে লয়	•••	२५६	24	সই, কি আ ৰ	ব বলিৰ মায়	•••	•
>6>	चन (१ वनाई माना	•••	P-8	99)	সই, কি কা ণ্	৭ ছার ঘরে	•••	>8
868	খন হে অমর কেন বা ঝরারো	•••	১৯৬	७१8		ন কাৰার জালা	•••	> 8
१२१	শুন হে রসিক নাতি	•••	69	48		नहिल शाम नाम	•••	٠
122	ভনি ধনী যুরছিত ভেলি	• • •	e < c	210		कोर भा चात्र	•••	;;
FO	ভনিয়া মান্যুর কথা রসিক স্থ	ান	81	0.>	সই, কেমনে		•••	><
418	শুনিয়া রাধার বিনয়-বচন	•••	229	9.0	महे, क गांद	, ,	•••	9
403	৫৩ নিয়ে স্পৃ ভিরিণী চিতপত বো	ल	. 296	128		দিন স্থদিন ভেশ	•••	1
१२७	जिल्ला वांशांत्र वांनी	•••	978	0.0	সই, তাহারে			ર હે
116	नुकात वस वृतित्व (क	•••	998	99	সই, পশিল			>>
20/	্শাৰ কৰে ওন রাই বিনোদ্নি	١.,	42	100		আধর তিন্	•••	38 · سمر
	খ্যাম-পর দক বড়াই সহিতে 🕽		63	329	गहे, वहुँहै व		•••	36
843	খ্যাম-বামে বৈঠল কিশোরী	}	₹ >¢	513	7	ার এই ভয় উঠে	•••	३२
8.1	. श्राम भुज्ञभाना विटनानिनी वाश	. 	>1¢	00		হিয়ে তোকে		۰, ۱۷
488	্খায় মুখ হেরি আকাশের বিধু	(२४२.	رالورا	नहें, में प्रव	भड़्ड (परम	Sugar	> >8

			1	(a) o			
1) PF 7	्था भन		পৃষ্ঠা।	পদ-	সংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা
/	नहे, ब्रह्मिं नातिक पद	•••	>86	+2	স্থা ছানি্ধ্ কেবা	•••	96
ARA .	সই, সহজ মাহুৰ নিত্যের দেশে	•••	08•	>6.	স্বল বলিছে হাসিয়া হাসিয়া	•••	15
	সই, হের আসি দেশশিয়া	•••	₹•€	623	সুবলে কংহন কমললোচন	•	292
21	সই, হের না দেধহসিয়া	•••	€8	२७४	क्ष्मन कूषन (य बन ना बारन	•••	>0•
	সকল গোপিনী মোহিত হইল	•••	२३१	65	त्रहे कान् विधि चानि ऋधानिधि	•••	44
	সকল রাধাল ভোজন করিতে	•••	Þ٩	€8₹	শেই গোপনারী রাধার গোচর	•••	२७€
	ৰকলি আ মার দোষ হে বন্ধ	•••	>>>	७५५	সেই মুনি সেই হরিণী ছাওয়াল	•••	21>
	স ৰি, এ মন তোমারে কেন দেখি	***	২ ২৪	085	শেই হৈতে মোর মন	•••	>66
	দৰি, কহিও তাহার পাশে	***	٠٠٩	₽•8	দে কেমন যুবতী কুলবতী সভী	•••	088
	স্থি, কহিবি কামুর পায়	•••	0.9	8২8	সে নারী মরুক জলে ঝাঁপ দিয়া	•••	36 2
	স্থি রে, বর্ষ বৃহিয়া গেল	•••	७• २	66	শে যে নাগর গুণধাম	•••	40
	পৰি রে, মগুরামগুলে পিয়া	•••	۷•১	२५१	শে ৰে বৃৰভাত্ব-হুতা	•••	>• 5
	শবিগণ শঙ্গে যা য় কত ব্ৰকে	•••	۶۰	8 26	গে হেন রসিক কেলে রবি তথা	•••	>646
	শ্বীর বচন ও নল স্ক্রী	•••	٥٠٤	¢ •	সোনার নাতিনী এমন যে কেনি	•••	٥)
	দ্বী র বচন গু নিতে নাগর	•••	۰۲٥	8>	গোনার নাতিনী কেন	•••	۰.
	শতের শঙ্গে পীরিতি করিলে	•••	600	602	সোনার পুধ লা অ বনী উপরে	•••	44.
	ৰণা বল তত্ত্ব কত তত ্ ত্ৰ	•••	086	\$53	গোনার বরণথানি	•••	67
	नव (गाभी गन व्यादी तद्रम्यी	•••	98	००२	माँक निवारेण वाजि	•••	>59
	त्रव त्त्राभी गर्ग कमन-मन्नारम	•••	٠,٢	>0	यक्ति, ७ ४नौ (क कर वर्ष	•••	. >
	ৰব স্থী আসি মিলি রাধা পাশে	•••	२४२	49	খজনি, কি হেরিছ যমুনার কুলে	•••	•3
	পৰার করেতে ধরিয়া ধরিয়া	•••	२१७	२१8	चक्रि, ना कह ७ भव कथा	•••	۵،6
	নবে অর ধায় মাঝে যহ্বায়	•••	b 5	२७३	चक्ति ला मह	•••	156
	বহ্বী ধায় আনিতে চেত্ৰী	•••	२२	p • 3	বঙ্গনি, ওন গো মামুষের কাজ	•••	485
	শহৰ আচার সহৰ বিচার	•••	O31	41.	च्रभाव का निश्रा नग्रत को निश्रा	•••	485
	বহল আচার সহল বিচার	•••	ಕಿಂತಿ	b.>	वज्ञेश विश्त ज्ञातित्र सम्म 🗢 🦏	•••	oie
	नश्क नश्क नश्क कश्र	•••	აგ.	144	স্বরূপে আরোপ যার	••• ,	993
1	ष्ट्र कितारत्र धनी	•••	\$ \$8		* 1		س <i>د</i> و
	নাৰৰ শক্ট চৰল নিকট	•••	२३€		· •	أروعه مدنو	
	ণাত পাঁচ স্থী সঙ্গে	•••	24	499	इहेरन ऋगां छ भूक्तरात्र तोछि ^{है}	•••	082
	ব্ধুন শর্প এ বড় কঠিন		6.0	429	रनभद-एटंड माना नाहि भारत मिर	5	985
	(খের পীরিতি আনন্দ যে গীতি		;ed		হাত দিয়া দেশ বড়াই মোর কলে		
	হথের লাগিয়া এ খর বাঁধিত	البورين	:0;	"		• • •	o8';
	ংৰের লাগিয়া পীরিতি করিহা	4	>96	>81	হাসি কৰে ভবে সব গোপনারী		19.
003	र्यंत्र भूगिया तुष्ट्रन कतिश्	.4	ا پير			, J'	19

পদ-য	गः श्रा भक) পৃষ্ঠা	। भन-	সংখ্যা পদ		مراكبي المعارب
>88	হাবিয়া নাগর চতুর-শেধর 🧳		1	• •	١.	2 .81{
~ 8F¢	হাসিয়া নাগর চত্র-শেখর	··· 255	i	टरन ८२ नागन ४ ३५-८ नवन टर्म टर निलांक वँभू		13.5
>82	হাসিয়া হাসিয়া নাগর রসিয়া	96		टिए (र পরাণ-বদ্ধ	•••	
३२७	হাসিয়া হাসিয়া বড়াই রসিয়া		₹85	(क) (रुए (रु वॅथ्रा	•••	२१ ৯ >>e
4.5	হা হরি হা হরি হরি হরি হরি	২৬৬	848	द्राप दर मूत्रली धत	•••	233
976	হায় রে দারুণ বিধি	৩∙৪	७:३			•
087	হিয়ার মাঝারে যতনে রাধিব	>69	€89	(श्नक नगर व्यक्त द (म्थन	•••	२ ११ २ ७৮
282	হেথা কামু যত পার করি গোণী	16	65.	হেনক সময় এক সে রজক		242
629	ट्या जामा वित्नामिनी		eee	হেনক সময় প্রভাত হইল	•••	282
61.	হেণা সে অক্র রথ সাজাইয়া	২৬৭	120	হেনক সময়ে এক স্থী আসি		950
૭৬	হেদে গো চেতনী	২৩	185	হেন বেলে শিলা বেণু বাজাইয়া	•••	२०५
429	(श्राम किन मह	৩.8	696	হেন বেলে প্রবেশিল পুরে	***	225
P18	र्टिष (न। यत्रय-मह	२৮१	653	হেন বেলে যত রাধাল বালক		223
69	হেদে লো স্থন্দরি	٠٠٠ ا	. >89		•••	>>6
822	হেদে হে কমল কান	২২৭	-			

সাহিত্য-পরিষদ্ গ্রন্থাননী—সংখ্যা ৪৬]

চণ্ডীদাস-পূজিতা নামুরের ব'গুলী দেবী। ু (পদ্মাসনা চতুভূজা বীণাপাণি মূর্ত্তি)





চণ্ডীদাদের ভিটা—হন্তীর পার্ষের স্তৃপ—নান্নুর।







छ छोनारमत नमाधि-मन्तित---नाम् त ।

W.V. SEYNE & BROS

ठछौनारमत्र भनावली।

ভূমিকা।

छिनात्मत अनावनी अकानिक रहेन। जामात्मत दश्य वित्रमिनहे अत्रय देवक्षत; छाहा छाजा जामात्मत आत्मत्र ও চতুপাৰ্যবৰ্তী গ্রাবের সকলেই বৈশুব। স্থৃতরাং বাল্যকাল হইতে আমি স্থাপিত্র মনোহরসাহী কীর্ত্তন-গান্তক রসিক-দাস প্রাকৃতির কীর্ত্তন বংসরে অনেকবার শুনিবার স্থোগ পাইতাম। ব্রস্কভাবায় রচিত পদওলি ভাল বুঝিতাম না; किस शांत्रक शब वर्षन छ शोषारमञ्जल शां शिल, छथन श्वांनरम यन विर्छात शहेत्रा याहेत । अहे तथ वानाकान हरेरे छे চণ্ডীকালের প্রতি আমার একটা অকুরাগ অনিয়া যায়, তাহার পর বিদ্যা-শিকার কর আমাকে মুরশিদাবাক 🛸 ক্লিকাতার অনেক দিন অতিবাহিত ক্রিতে হর। ক্লেজ ত্যাগ ক্রার পরও ছর বংসর মুর্শিদাবাদ ও ক্লিকাতার শিক্ষকতা করি। ১৮৯৬ সালে আমি আমার অগ্নামের সন্নিহিত কীর্ণাহার হাই স্থলের হেডমাষ্টার হই। কীর্ণাহারে চঙীলাদের স্থাধিত প আছে; অদ্রে নারুর চঙীলাদের বাস্থান। ইহাদের প্রভাব আমার উপর আধিপত্য বিভার করিল-- আমি চভীদাদের পদাবলী-দংগ্রহের সংকল করিলাম। পদকলত্ত্ব, পদামৃত-সমুদ্র খুঁজিলাম 🕫 বাহা পাইলাম, তাহাতে তৃপ্তি হইল না। মুদ্রিত সংস্করণ কয়েকখানি কিনিলাম পড়িলাম, কিন্তু মনে হইল, সংগ্রহ কারগণ ঠিক সংগ্রহ করিতে পারেন নাই; সবই বে অসংলয়, ধারাবাহিকরণে ক্ল-চরিত্র-বর্ণনা কৈ ? আইবি পদাবলী-সংগ্রহের চেটা করিভে লাগিলাম। বিশালাকীর পূলকের পুত্র, আমার ছাত্র ত্রীমান্ মৃত্যুঞ্জর ভট্টাচার্যকে ৰিজাৰা করিলাম যে, তাহাদের গৃহে চঙীদাদের পদের কোন পুথি আছে কি না ? মৃত্যুঞ্জর বাটা গিরা অমুসন্ধাদ করিরা আমাকে রাস-সীলার একধানি পুথি আনিয়া দিল। সেই পদগুলি সম্পূর্ণ নৃতন; কথনও পুর্বের প্রকাশিত বর নাই। সেই পদওলি সাহিত্য-পরিবং-পত্রিকার প্রকাশিত হইল। অনেকটা ভর্সা হইল, প্রবল উৎসাহি ভাৰার অনুসন্ধান চলিতে লাগিল। এমন সময়ে কীর্ণাহারের অ্প্রসিদ্ধ বিদ্যোৎসাহী ভমিদার প্রীযুক্ত বাবু সৌরেশ-চল সরকার মহাশল্পের সম্পূর্ণ বাবে "বীরভূমি"নারী মাসিক পঞ্জিক। প্রকাশিত হইল। আমার উপরই সম্পাদম-ভার অর্পিত হইল। উৎসাহ বিএপ বৃদ্ধিত হইল। প্রথম সংখ্যা "বীরভূমি"তেই প্রচাব করিলাম বে, চণ্ডীলানের . অপ্রকাশিতপূর্ব পদাবনী সংগ্রহ করিয়া "বীরভূষি"তে প্রকাশ করিব। কেন হইয়াছিল বলিতে পারি না, কিছ चाबाद बातवें देश प्राहिन—त्याब रत्र, "ताननीना" विविद्यारे रहेबाहिन त्य, ठशीवान अक्रफ-ठतिक व्यवनवन कतिन्ता कान कादा निषित्र नित्राह्म।

এই সমরে অপীন ইপ্রমাণ বন্দ্যোপাধ্যার মহাশর কীর্ণাহারে গুভাগনন করেন। তাহার সহিত চণ্ডীহাসের সমাধি কানী করিয়া কিরিবার সমর ধলিলান,—"আমার বিখাস, চণ্ডীহাস ক্রম্নান্ত অবলখন করিয়া কোন কাব্য লিখিয়া বিশ্বিক শি ইপ্র বার্ তৎক্ষণাৎ উত্তর করিলেন,—"ও কথা আমি মানিব মা, প্রাচীন পদকর্ত্তারা বখন ইচ্ছা, বিশ্বিক শিপাই অসংগ্রহাবে পদ রচনা করিয়া বিশ্বাহেন, ক্রমণ্ড কাব্য লিখিবার চেট্টী ক্রেন নাই।" প্রনীর ব্যক্তির সমিধিক ক্রিবার করিয়া বিশ্বক ইব্যক্তির ক্রমণ্ড কাব্য লিখিবার চেট্টী ক্রেন নাই।" প্রনীর ব্যক্তির সমিধিক ক্রিবার নাই শিক্ত ক্রিবার বিশ্বক ক্রিবার বিশ্বক ক্রিবার বিশ্বক ক্রিবার বিটা, কিন্ত আমার পূর্ক-ধারণা গোল না। আমিপ্রহে গ্রহে প্রের্কিট

অফসন্ধান করিতে লাগিলান। বৈঞ্চবের আধরার আধরার বেড়াইতে লাগিলান। প্রবীণ বৈঞ্চবগণের নিকট সন্ধান লইতে ক্ষিলাম প্ৰকোশ লুৱে কীৰ্ত্তন হইলেও শুনিতে বাইভাম--ভরদা, যদি কীৰ্ত্তনপায়ক চণ্ডীদানেও কৌৰ বিদ্যালয় এবি চেষ্টার বে আৰি একেবারে বিক্লমনোরও হইয়াছি, তাবা নতে। অনেক স্থুত্তর স্থার প্র আন এইরপ স্থাপ্রান করিয়া পাইয়াছি। তাহার পর আমার ছাত্র কীণাহারনিক্টি শ্রীমান্ রাথেজ-ক্লফ রায় আমাকে একথানি চঙীদাসের পদাবলী পুথির সন্ধান দিল। পুথিখানি কীর্ণাহারের নিকটবর্ত্তী কোন ভদ্রলোকের গৃহে রক্ষিত ছিল। রামেজ আমাকে পুথিধানির ছুই একটি পাত। আনিয়া দিল, কিন্তু সমগ্র পুথি কি ইতেই পাই না। খেবে ভনিলাম বে, বাহার পুৰি, সে কীর্ণাহারের অমিদার এরুক্ত পৌরেশচক্র সরকার মহাশরের জনৈক কর্মচারী তাহাকে অসংরোধ করায় তিনি উক্ত কর্মচারীকে পুৰিধানি বিতে আদেশ করিলেন; পুৰি হল্পণত হইল। পুৰি দেখিয়া আমি বড়ই উৎকুল হইলাম। পুৰিখানিতে কেবল চণ্ডীদাসের পদ; পদসংখ্যা ৬০০ ছয় শতেরও অধিক। তাহার মধ্যে ৫০০ শত পদ নৃত্ন। দেখিয়া আরও আনন্দিত হইলাম যে, পূর্বর প্রাপ্ত 'রাসলীলা''র পদওলি ইহাতে সবই আছে ; তাহা ছাড়া রাস-লীলার আরও অনেক পদ আছে। ধীরে ধীরে পূর্ব্বরাগের অনেক ওলি পদ ''বীরভূমি'তে প্রকাশিত হইল। চঙীদানের পদাবলী প্রকাশিত হইতেছে দেখিয়। দাস্তল গ্রামনিবাসী প্রীমুক্ত পূর্ণচন্ত্র মুংগাপাগার মহাশয় তাঁহার গৃহস্থিত পুৰি হইতে অনেক নৃতন পদ আমাকে "বীরভূমি'তে প্রকাশের बक দিতে লাগিলেন। তাঁহার নিকট হইতে রাসলীলার একধানি পুথিও পাওয়া গেল। এইরপে আমি রাসলীলার তিন্থানি পুৰি পাইলাম। বাহা হউক, রানেজক্ত্রফ-প্রদন্ত পুৰি আমার প্রধান অবলম্বন। এই পুৰি আমি রামেজ वात. मीत्मच वात. त्यामरकच वात् ७ मात्रमा वात्रक सम्बाहेशहि। श्रीवश्यानि चरनक दिन चामात्र कारह हिन, কিন্তু পাহার পুলি, দে এমন তাগালা আরম্ভ করিল বে, শেবে ভদুতার সীমাও অতিক্রম করে দেখিয়া আমি পুরিধানি क्तित्र विनाम । तारमळ वातु मिथिए চाहित यात अकवात চाहित्राहिनाम ; उथन तम सामारक वन कथा स्थाहित्रा দিয়াছিল। তাহা হইলেও আমি তাহার নিকট চিরক্ত । পাকিব।

প্রথির পরিচয়। —পূর্ব্বেই বলিয়াছি, আমার মূল পুরিধানিতে ৫০০ শত নূতন পদ আছে। এখন ঐ পদগুলি কি কি বিষয় অবলম্বন করিয়া লিখিত, তাহার পরিচয় দিব। গ্রন্থারতে আমরা দেখিতে পাই, ভগবান এক অবল স্থার সহিত এক তরভাষার উপবিষ্ট। কিছুক্ষণ নীরবে থাকিয়া ঐক্বঞ্জ স্থবলকে বলিতে লাগিলেন বে, একদিন তাঁছার প্রের গাভী ধবলী সহসা কোধার চলিয়া গেল। পদ্চিত অন্তুপরণ করিয়া তিনি বুক্তামুপুরে উপস্থিত হইলেন। তথার নীল-নিচোল-পরিহিতা সর্বালভারভূষিতা এক রমণী তড়িতের ভার তাঁহার চক্ষু ঝলসিরা দিল। দর্শন অবধি তাঁহার মন সাতিশয় উন্মন্ত হইরাছে। তাহার পুনর্দর্শন ভিন্ন তাঁহার চিভন্থির হইবার উপায় নাই। সুবল ইক্সলাল-বিদ্যায় দিছবন্ত ছিলেন। তিনি প্রথমতঃ নানা বৃত্তি ধারণ করিয়া শেবে শ্রীরাধিকার বৃত্তি ধারণ করিলেন। শ্রীক্রঞ विभागम अवश विभागम (य, ता पृष्ठि मर्गन कतिया जिन साहित हरेगाहित्मन, अहे पृष्ठि ताहे। श्रीकृकतक आश्वाम हिम्रा ও বমুনাতীরবর্জী চম্পক-বনে অপেকা করিতে বলিয়া পুবল পঞ্চ শিশু সহ বৃক্তাস্পুরে উপস্থিত হইলেন। রাজা তাঁহাদের জীড়া দেখিতে ইচ্চুক হইলে, সুবল প্রভৃতি শিশুগণ মংখ, কুর্ব প্রভৃতি অবতার, বুরিষ্ট্রাদি পাঞ্ব-বংশ দেণাইয়া শেবে কিরীট-কুওল-পরিহিত, বনমালাশোভিত, পীভাষর, জলদ-নিশ্বিত-কলেবর 💐 কুফুর্স্তি ধারণ कशितन । वर्गक बात्व नकतारे स्मारिष्ठ रहेन । वाष्ट्राञ्चन-भार्य बाष्ट्रा । वर्गमित्व वर्गक केंगरनम कशिया প্রীরাধিকা এতক্ষণ ক্রীড়া দেখিতেছিলেন, <u>ক্রাণ</u>পম শীক্লকর্তি-দর্শনে তিনি মুদ্ধিতা হইলেন। সংবাদ প্রাধিবাত্তই ताका चलापूरत थारान कतिता क्वांत छाषुनी मना वर्नान चलीव गाकून रहेत्रा चरनक विकिश्तंक चानाहरूनर्थ। কিছ কাহারও চিকিৎসার কোন ফল হইল মা। শেবে সুবল অন্তঃপুরচারিণী এক দাসীকে বলিলেম বে, ছিনি वानक्षिकात श्रीकृ चारतांगा कतिरैंक गारतम । तानारनंत्न च्रतम चलःगूरत बारन् कतिता वृक्षिक। अतारिकात कर्र

কুক্ষনাৰ গুনাইয়া দিলেন। নাম "কাণের ভিতর দিয়া মর্মে পশিল।" রাধিকা লাগ্রত হইলেন; স্কল ব্যাধি দুরে পেল। স্বল তথন রালাকে পরামর্ল দিলেন দে, রাধিকাকে ব্যুনার সান করান হউক। শুনি শুনি শুনি চলিলেন। ব্যুনাতীরবর্তা চলাক-কাননে রাধা ক্ষের প্রথম মিলন হইল। শ্রীক্ষের এইরপ প্রথম শিলি প্রে প্রকাশিত হয় নাই। তাহার পর শ্রীরাধিকার প্রর্গাস, শ্রীক্ষকের স্বয়ং-দৌত্য। ইহা প্রে প্রকাশিত হইয়াছে। তাহার পর অভিসার, এই পদগুলি নৃতন। তাহার পর কুঞ্জেল স্বাধিকার প্রেমাছেন্দ। ২। দান। তাহার পর স্বাধিকার প্রেমাছেন্দ। ২। দান। তাহার পর বাহিলালা সম্পূর্ণ নৃতন। গোগুলীলার এই কয়েকটি বিষর আছে; — ১। শ্রীরাধিকার প্রেমাছেন্দ। ২। দান। তাহার পর রাই-রাধাল, সম্ভোগ-স্বতি, বিপ্রল্বনা, খণ্ডিতা, মান বর্ধাক্রমে বর্ণিত হইয়াছে। এগুলির মধ্যেও অনেক নৃতন পদ আছে। তাহার পর রাস-লীলার ১০০টি পদ। পরে অক্রুরাগ্যন, যশোদা, গোপীগণ ও রাধালগণের থেদ, শ্রীক্রকের মথুরাগ্যন, রলকের বন্ধহরণ, কুক্রার সহিত মিলন, কংস-বধ, নন্ধ-বিদার প্রভৃতি বিষর অতি মধুর তাবে বর্ণিত হইয়াছে। এই সমন্ত পদ সম্পূর্ণ নৃতন। তাহার পর মথুরায় দৃতীর গ্যন, শ্রীক্ষের ব্রেজে পুনরাগ্যন, আত্মনিবেদন প্রভৃতি। এগুণিতেও অনেক নৃতন পদ আছে। শেবে রাগাত্মক পদ। ইহাতেও অনেক নৃতন পদ আছে। ফল কথা, আমার সংগৃহীত পদসংখ্যা যোট ৮০০। এতগুলি পদ পূর্মের কথনও প্রকাণিত হয় নাই।

বানান।

কেহ কেহ বলেন বে, পুৰিতে বে বানান আছে, তাহাই বজায় রাখা উচিত। তাঁহাদের বুক্তি এই বে, এইরপ করিলে পুর্বে কিরপ বানান ছিল, তাহার একটা পরিচয় পাওরা বায়। তাহা ছাড়া প্রাচীন প্রকর্ত্গণ ভুর অরু∙ সারে বানানের ভেদ করিতেন। অর্থাৎ বেধানে কোন অকরে হব ইকার আছে, সেধানে একরূপ হুর হইবে, আর বেখানে দীর্ঘ দ্বকার আছে, সেখানে অন্ত হুর হইবে। সুতরাং তাঁহাদের মতে প্রাচীন অভদ্ধ বানান ভদ্ধ করিয়া লিখিলে অনেক পাপ হয়। আমি ইহাঁদের কথার সারবতা উপল্রি করিতে পারি নাই। আমি বানান-বুক্তির উত্তরে আমার বক্তব্য এই বে, প্রাচীন কালে কিরুপ বানান ছিল, প্রাচীন পুথি দেখিয়া তাহার নির্ণয় করা ছঃসাধ্য। কোন ছুইখানি পুথির বানানের এক্য নাই। কেছ 'ছামি' লিখিয়াছেন, কেহ বা 'মামী' লিখিয়াছেন। चर्वार यांदाता अर नकन कतित्राह्न, छांदाता चालन चालन देव्हान्यात्री यादा देव्हा, छादादे निवित्राह्म । এवनक चायता भन्नीरङ दिश्विष्ठ भारे, याँशाता आहीन वतान निक्रिक, छाँशाता वानात्मत निक्र चारते नका तार्थन मा। जिजाता कतिरन बरनन रव, निविवात त्रमण डाँशाता यादा ख्विधाननक विरविधन। करवन, त्रिहेत्रण वानानहे শিখিয়া থাকেন। পূর্ব্বে বাঁচারা পদাবলী নকল করিয়া পিয়াছেন, তাঁহারাও প্রাচীন ধরণে শিক্ষিত। তাঁহারা एव छोबाल्यत वर्षमान वरमंबत्रगत्वत्र नीिक व्यम्तादारे निवित्वन, छाबाक त्रत्यर कतिवात कान कात्रव নাই। এরপ হলে আমি কোন পুৰির বানানই রাখিতে পারি নাই। কোন্ পুৰির বানান রাখিব ? সবই ৰে ভিন্ন ভিন্ন ৷ বিদি সকল পুথির বানানের অনেকটা সমতা দেখিতে পাইতাম, তবে না হর বৃথিতাম, পূর্বে এরপ বানানই প্রচলিত ছিল। তাহা যথন দেখিলাম মা, তখন কাহারও বানান গ্রহণ করা উচিত নহে। তাঁ, বদি চণ্ডী-हारिनत चहत्त-निश्चिष्ठ কোন পুথি পাইভাষ, তবে সাদরে ভাষার বানান গ্রহণ করিতাম। তাহা বখন পাই নাই, ্ৰতখন আমার গভান্তর কৈ ? আর একটা কথা, আমি বৃদ্ধি পুথির বানান ব্রঞ্জায় রাখিতাম, তাহা হইলে মুদ্রিত পুত্তক কি বিকট মৃতিই বারণ করিত ৷ বর্তমান কালের পাঠক পুঝি পুলিয়াই বিভীবিকা দেখিতেন ও আর্থনাদ করিয়া ভাষা श्रुत मिक्कि कविष्ठम । जाशनि विष विष श्नियाँ दिश्यालन,-"विष दिन्याँ वृनादेश जामनाव", ज्यन जामारक

গালি দিতেন কি না ? তবেই দেখুন, বানানগুলি বর্ত্তমান কালের উপযুক্ত করিয়া আমি খুব অপরাধ করি নাই ।

ত কাল ছাতি দিখুন, সাহেবরা কি করিয়াছেন। তাঁবাদের মহাকবি সেক্ষপীররের প্রছের বে সকল আধুনিক সংকরণ
প্রকাশিত ইয়াছে, তাহাতে কি উক্ত কবির আমলের বানান রক্ষিত হইরাছে ? তাহা ত হয় নাই, সমস্ত শক্ষের বানান বর্ত্তমান পাঠকের বোধগম্য করিবার জন্ম আধুনিকর প্রাপ্ত হইরাছে। আমি বিলাতী নদীর অনুসারে কাজ করিয়াছি।

- আমার উপর আর একটা অনুযোগ এই যে, আমি স্থানে স্থানে কমা ও উদ্ধার-চিছ্ন (quotation mark) ব্যবহার করিয়াছি। আমার বক্তব্য এই যে, আজি কালিকার লোকে বে ঐ গুলা না থাকিলে ভাষা বৃথিতে পারে না। আমি যেথানে দেখিয়াছি যে, উদ্ধার-চিছ্ন ও কমা না দিলে আৰ্থ বৃথিতে কট্ট হইবে, দেইখানেই তাহা দিয়াছি। ইহাতে আমার ওক্তর অপরাধ হইয়াছে বলিয়াত বোধ হয় না।

শেষ কথা এই যে, পদকর্ত্বপ সুর-ভেদে বানান-ভেদ করিতেন। আমার জিজ্ঞাস্য এই যে, কে বলিল? কোথা হইতে এই অন্ত কথা আসিল? কোন পুথিতে লেখা আছে না কি? আমাদের দেশে যত উৎকৃষ্ট কীর্ত্তন-গায়ক আছে, তত আর কোথাও নাই। সকলেরই গান শুনিয়াছি, সকলের সংক্ষই আলাপ করিয়াছি, কিন্ত এমন কথা ত শুনি নাই। বলা বাছল্য, এই আপন্তিটা বড়ই হাস্যজনক।

পাঠোদ্ধার।

পাঠোছার বড়ই কঠিন বিষয় : নানা জনে চণ্ডীলাসের পদ নকল করিয়াছেন। বিনি বেমন ব্ৰিয়াছেন, তিনি তেমন লিখিয়াছেন। তাহা ছাড়া ওাঁহাদের ভূল-আন্তি ত আছেই। এইরপে "সাত নকলে আসল খাতা" হইয়া গিয়াছে। এ সব পুথির মধ্যে ঠিক পাঠোছার করা বড়ই কঠিন। যে সকল স্থানে ছুই তিনধানি পুথি পাইয়াছি, তথার পরপার মিলাইয়া বেধানির পাঠ সলত বোধ হইয়াছে, তাহাই গ্রহণ করিয়াছি। মুদ্রিত পুত্তক সম্বন্ধেও ঐ নীতি অবলম্বন করিয়াছি। তবে ইহাতেও যে আমার ব্রাক্তি হর নাই, এমন কথা বলিতে পারি না। আর বেধানে একথানির অধিক পুথি পাই নাই, সেধানে পুথির পাঠ গ্রহণ করা ভিন্ন উপারান্তর ছিল না। মনে করুন, একটা কথা আছে, বাহার কোন অর্থ ই হয় না। পড়িতে পারিতেছি না, তাহা নহে, অক্তর গুলি স্থপ্ত লেখা রহিয়াছে, অথচ কথাটির অর্থ হয় না। সে স্থলে ছুই একটা অক্তর বদল করিয়া একটা সলত কথা বসাইয়া দিবার প্রলোভন খুবই হয়। কিন্তু আমি সে প্রলোভন ইতে আত্মরক্ষা করিতে সমর্থ হইয়াছি। বখন দেখিলাম যে, কোন একটা কথার অর্থ কিছুতেই হইতেছে না, কথাটিকে কিছুতেই চিনিতে পারিতেছি না, তখন আর আমার নিজের সম্পাদকীয় বিদ্যার পরিচয় না দিয়া "বড়ইং তিরিখিতং লেখকস্য দোবে। নান্তি" করিলাম। উত্তরকালে বদি কথন ছিতীয় পুথি পাওয়া বার, তখন কথাটা শুদ্ধ করিয়া লওয়া হাইবে, অথবা আমা অপেক্ষা বিজ্ঞতর ব্যক্তি কথাটির চিকিৎসা করিয়া তাহাকৈ কথার মত করিছে পারিবেন।। এয়প কথা আযার "চেণ্ডীদান" পুত্তকে বড় কম পাওয়া ঘাইবে না।

পদ-বিচার।

একটা কথাউঠিরাছে বে, চণ্ডীদাসের ভণিতা থাকিলেই বে পদটা চণ্ডীদাসের হইল, ইহা বিবেচনা করা অস্তায়।
চণ্ডীদাসের একটা বিশেষত আছে, একটা 'চণ্ডীদাস্থ" আছে; বে পদে তাহা বেণিতে পাইব না, তাহা চণ্ডীদাসের
বিলিয়া কদাচ গ্রহণ করিব না। এমন লোক ক্ষেক ছিল, বাহারা নিজের রচিত পদ চণ্ডীদাসের ভণিতা দিরা
চালাইয়া দিয়াছে। আমরা আমাদের ভীকবৃদ্ধিরপ ক্ষিপাধ্যে খ্যিরা দেখিব, কোষ্টি আসল, কোষ্টি নকল।

কথাওঁলি বিজ্ঞ সমালোচকের মত বটে, আর আমিও বে তাহা না জানিতাম, তাহা নহে। কথাওলি নে স্তা, সে বিবরে মত-বৈধ থাকিতে পারে না। তথাপি আমি কটি পাথর লইয়া চঙীলাসের পদগুলি পরীক্ষা করি নাই কিরির করিবার সময় এখনও আমে নাই। এত দিন পর্যান্ত চঙীলাসের অলসংখ্যক পদই সংগৃহীত হইয়াছিল। আমি বহু চেটার ৮০০টি পদ সংগ্রহ করিরাছি। আরও বে পদ নাই, এমন বলা যায় না। আমার মূল পুবিতেই ত রাসলীলা সম্বন্ধে আটিটা পাতা নাই। ঐ আটিট পাতার সম্ভবতঃ ৪০টা পদ বাদ গিয়াছে। স্বতরাং ইহা বলা বোধ হয় অসকত হইবে না বে, চঙীলাসের আরও অনেক পদ কোথাও কোন বৈরাগীর আখড়ায় বা কোন গৃহস্তের তবনে স্বত্রে হা অ্যান্তে রক্ষিত হইতেছে। কালপ্রভাবে বোধ হয়, সেগুলি বিস্থু হইবে। তাহা ছাড়া একজন চঙীদাস ব্যতীত বিতীয় চঙীলাসের অন্তিই আমরা আজিও গুনি নাই। অতএব এখন চঙীলাসের নামের ছাপ দেখিলেই তাহা সংগ্রহ করিতে হইবে, অতটা বিচার করিয়া ত্যাগ করিবার সময় এখনও হয় নাই।

ৰিতীয় কথা, আমি যে একজন খব ভাল জহুৱী, এ বিখাদ আমার নাই। ক্টি-পাথরে ক্সিয়া খাঁটি দোনা ধরিয়া দিব, আর মেকি বাদ দিতে পারিবই, এমন স্পর্কা রাখি না। কোন গানটি চণ্ডীদাসের, কোন্টি নয়, অর্থাৎ কোন্টর ভিতর ''চণ্ডীদাসম্ব'' আছে, কোন্টির ভিতর নাই, এত বিচার করিবার শক্তি আমার নাই। আধুনিক কালের উপরুক্ত লেখা-পড়া কিছু শিখিরাছি, কিন্তু এই বিদ্যার লোরেই অনেক স্থানেই দেখিয়াছি বে, কোম বড় কবির সকল লেখা গুলিই সমান মহে। কোন কোন বড় কবির এমন কবিতা আছে যে, তাহা নিতান্ত অসার, (कान क्रायरे त्रिश्वनित्क डेक करित्र त्रिष्ठ विनिष्ठा शौकांत्र कतिए भाता यात्र ना। व्यथह व्यामता कानि (य, डेक्क्र অসার কবিতা উক্ত কবির রচিত। যে তাহা জানে না, সে যদি কবির কবিতা সংগ্রহের সময় তাহা বাদ দের, তবে कि त्र महाशाल लिख हहेत्व ना १ हशीमार्ग महत्वा कि छेशदाब खाशाल थाएँ ना १ जामाब विधान, कान कविहे नकन नमायहे छेरक्कडे कविका निश्तिष्ठ भारतम ना। अमन रय (य, नरमा कान चानिया छारात हारत ভরিয়া পেল; তখন যাহা লিখিলেন, তাহা খুব উৎকৃষ্ট হইল,— গাঁহার প্রতিচার উপযুক্ত হইল। আবার এমন সময়ও আবে, যে সময়ে মহান ভাবগুলি তাঁহার হৃদয় অধিকার করে না। সে সময়ে যে কবিতা লিখিবেন, তাহা कथनहै छेक्र मत्त्रत्र इरेट्स ना। প্রত্যেক কবির কবিতা আলোচন। করিলেই ইহা যে সভ্য, তাহা স্পষ্ট উপলব্ধি হইবে। চভীদাসও এই নিয়মের বহিভূতি হইতে পারেন না; অতএব বর্তমান সময়ে অতি সন্ম নিজি লইয়া চতীদাদের পদের ওজন করা উচিত নহে ;—অন্ততঃ আমার মত অন্তর্গ্ধিদশলর লোকের উচিত নহে। আমি যদি তাহা করিতে চেষ্টা করিতাম, তাহা হইলে নিশ্চয়ই বৃদ্ধি ও বিবেচনার দোবে অনেক আসল রক্স ছুভিয়া কেলিয়া ৰিতাম। আমি চঙীদাদের নামান্ধিত যত পৰ পাইয়াছি, বিনা বিচারে তাহা গ্রহণ করিয়া আমার ভাণার পূর্ণ करिवाहि। अथन वाशनात्वत मन करन्य समान ठारा (मनारेट अहि, वाशनाता हिनिया महेन, द्वान्ता मनि, वात কোন্টা কাঁচ। আমার মত কুল বাজির এত দায়িত লইবার আবশুকতা কি ?

পদ-পর্যায়।

পদের শ্রেণী-বিভাগ ও ক্রেমনির্দেশ করিবার সময় আমি একটি বিবয় ছাড়া আর সকল বিষয়েই প্রাচীন পদ-স্থায়াহকগণের পদা অন্নসরণ করিয়াছি। কেবল শ্রীরাধিকার পূর্বরাগ অগ্রে না দিয়া শ্রীক্রঞের পূর্বরাগ প্রথমেই দিয়াছি। কিন্তু বৈক্ষব আলভারিকগণ স্বীকার করেন স্বে যদিও শ্রীক্রফের, পূর্বরাগ প্রথমে হইয়াছিল, তথাপি শ্রীরাধিকার পূর্বরাগ প্রথমেই সন্নিবেশিত করাই নিয়ম। ইহাই বৈক্ষব অলভার লালের মত। কিন্তু আমি বে সাহস্করিয়া এই শাস্ম-বাক্য মানি মাই, তাহার কারণ বলিতেছি। চভীদাসের সময় বৈক্ষব অলভার শাল রচিত হর

নাই। স্বভ্রাং চণ্ডীবাদের পদ-সংগ্রহ ও ক্রমনির্দেশের সময় উক্ত শাল্প বে মানিতেই বইবে, এমন বলা বায় না।

স্ক্রান্ত ব্যক্তবিক দেখিতে গেলে শ্রীক্রফের পূর্বরাগ প্রথমেই বইরাছিল। শ্রীরাধানকের কথা ছাছিয়া দিয়া সাধারণ
ভাবিক থাটি বিচার করিয়া দেখা যাউক। বৈহুল পদাবলী ও অপরাপর সাহিত্য পাঠ করিয়া আমার এই ধারণা
ঘুদ্ বইরাছে বে, আমাদের শ্রীকৃষ্ণ দরাল ঠাকুর। তিনি জীবকে আলিক্রন করিতে, কোলে টানিয়া লইতে স্নাই
ব্যাক্র। তিনি অব্রহঃ ডাকিতেছেন,—"জীব! আইস, ডোমায় কোলে করি।" জীব কিন্তু এমনি মায়াবছ বে,
কিছুতেই এই ভগবদাহলান গুনিতে পাইডেছে না। কিন্তু বাহার সময় বইছেছে, সে আহলান গুনিতে পাইতেছে,
সে "সকল তেজিয়া একমন বইয়া নিশ্চয়" দাসী বইতেছে। যাহার সময় বইয়াছে, বাহার ক্রমর ভগবংপ্রের
আমাদন করিবার উপযুক্ত বইয়াছে, ভগবান্ তাহার কল্প বড়ই ব্যাকুল হইয়া ভাহাকে টানিয়া ক্রোড়ে লইতেছেন,
ভাই তিনি শ্রীরাধিকাকে বলিয়াছিলেন;—

রাই, তোষার মহিষা বড়ি। গোলোক তাজিয়া রহিতে নারিম্ আইল তথার ছাঙি ::

রুসভত্তথানি

পান অবতারে

বুৰিতে নাবিয়াছ।

ভাহার কারণে

নব্দের ভবনে

क्रम नहेश्राहि ॥-- १४> शक

আবার ;--

রাই, তুমি বে আমার গতিঁ। তোমার কারণে রসতন্ধ লাগি গোকুলে আমার ছিতি॥ নিশি দিশি বসি গীত আলাগনে

यूत्रणी गहेबा करता।

ষমুনা-সিনানে

ভোষার কারণে

বসে থাকি তার তীরে —েইত্যাদি ৭৫০ পদ

স্কুভরাং সাধারণ জীব সহকে ভগবানের বেরপ ব্যবহার, জীরাধিকার সহকে ভাহার ব্যতিক্রম ঘটে নাই। কেন না, তাঁহারা লোক-শিকার জন্ত, জগতে প্রেমতর প্রচারের জন্ত রুম্বাবনে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন। এই জন্ত আমি জীককের পূর্বরাগ প্রথমেই দিয়াছি। বাহা প্রকৃত ও বাভাবিক, ভাহাই করিয়াছি বাত্র। ভাহার পর বেরণে রুসপুষ্টি হয়, সেইরপ বার্গে বাইতে বাইতে "বহারাসে" রুম্বাবন-সীলা শেব করিয়াছি।

कवित्र कीवनी।

বর্ত্তবাদ কালের স্বালোচকগণের সত এই বে, কবির জীবনী ও তৎসাময়িক অবহা না জানিতে পারিলে কবিকে ঠিক বুঝা বার না। কবির জীবন বেরণে অতিবাৃহিত হর, ওাঁহার সমরে স্বাজের বাহা অবহা, তাহা তাঁহার কবিকে প্রভাব বিভার করিবেই। স্বতরাং কবির কবিতা বৃথিতে গেলে এ সব জানা অতীব আবস্তুত আমি বৃথি এ কথা না বানি, তবে আপনারা দশ লনে আবাকে বোরতর মুর্থ বনিবেদ, তাহাতে আর সংক্র নাই। এরণ একটা

লোজনীর খ্যাতি লাভ করিবার ইছো আবার না থাকিলেও আবাকে অগতা দীকার করিতে হইতেছে বে, চঙীদানের প্রকৃত জীবনী বা তংগাবরিক অবহা জানিবার কোন উপার নাই। চঙীদান ঠিক কোন্ সবরে জীরিত ছিলেন্, বিলতে গারি না। তাহা ছাড়া তিনি বে সমরে জারিরছিলেন বিলয়া আবরা অল্যান করি, দে সমরের ক্ষুত্রিক ইতিহাস নাই। স্কুতরাং তথনকার সাবাজিক অবহা প্রভৃতি সমরে আমরা সম্পূর্ণ জ্ঞ। অতএব আবাজিগকে ও সব আবার জলাঞ্জনি দিতে হইবে। তবে একটি জীবনী না দিলে কেহ ছাড়িবেন না; হয় ত বলিবেন, ভূমিকাই হয় নাই। কাজেই কিংবদন্তা হইতে বেমন তেমন করিয়া একটা জীবনী থাড়া করিয়া দিতেই হইবে। তবে পঞ্চম তাগ ভূতীর সংখ্যা সাহিত্য-পরিবং-পত্রিকার বে কয়টি কবিতা প্রকাশিত হইরাছে, তাহা হইতে চঙীদানের জীবনের একটা ভটনা পাওয়া বায় বাজ।

জীবিতাবস্থার সময়।

দীনেশ বাবু বলেন,—চণ্ডীদাস খুইার চতুর্দশ শতান্দীর শেষভাগ হইতে পঞ্চদশ শতান্দীর মধ্যভাগ পর্যন্ত ন্ধানিত ছিলেন। শিবরতন বাবু তাঁছার "বলীর সাহিত্য-সেবকে" লিখিরাছেন বে, চণ্ডীদাস অঞ্মান ১০০৫ শক বা ১০৮০ খুটাব্দে ব্দর গ্রহণ করেন। তাঁহার পিতা ভবানীচরণ, মাতা তৈরবী ক্ষরী; আতি ব্রাহ্মণ। ১২৮০ সালের ১০ই পৌষ তারিখের "সোমপ্রকাশে" একজন লিখিয়াছিলেন বে, চণ্ডীদাস ১০০৯ শকে ব্যৱহণ করিরা ১০৯৯ শকে পরলোকে গমন করেন। ইহাঁর পিভার নাম হুর্গদাস বাগ্তি; ইহাঁরা বারেক্তপ্রেণীর ব্রাহ্মণ ইত্যাদি। আবার ক্ষেত্র ক্ষেত্র বিষ্ণুপ্রিরা পত্রিকার চণ্ডীদাসের খানিকটা পদ প্রকাশিত হইরাছিল। সেটি এই;—

বিধুর নিকটে বসি নেত্র পঞ্চ বাণ।
নবহু নবহু রস গীত পরিমাণ॥
পরিরে সক্তেত অকেঁ নিয়া।
আদি বিধেয় রস চঞীদাস কিয়া।

আমার মনে হইতেছে, ইহা "চণ্ডে কেপার" লেখা নর, তবে চণ্ডীদাস পুনর্জয় গ্রহণ করিয়া বদি বিতীর শুভয়ররপে লম্মগ্রহণ করিয়া থাকেন, (মহাপুক্ষদিগের লীলা কিছুই বুঝা বায় না), তবে এ পদ তাঁহার হইতে পারে।
এ হেঁয়ালীর অর্থ করিছে আমাকে কিছুই কট পাইতে হইবে না; অনেকে দয়া করিয়া আমাকে সে কঠিন দায়
হইতে মুক্ত করিয়াছেন। তাঁহারা বলেন—বেশ গণ্ডীরভাবে বলেন বে, অর্থাৎ চণ্ডীদাস ১০৫৫ শকে
(১৪৩০ গ্রিঃ) তাঁহার পদাবলী সমাধা করেন। এই পদাবলীর সমাট ১৯৬ মাত্র। আর একটা কথা আছে।
পদক্ষতকতে একটা পদ আছে। সোট এই;—

চভীদাস তনি বিদ্যাপতি-ত্তৰ
দর্শনে তেল অস্থ্যাগ ।
বিদ্যাপতি তব চভীদাস-ত্তৰ
দর্শনে তেল অস্থাগ ।
দুহুঁ উৎকৃষ্টিত তেল।

স্কৃতি দ্বপ- নারাদ্রপ কেব্ল বিল্যাপতি চলি গেল।

চঙীলাস তব্ রহই শা পারই চজাল লয়শন লাগি।—ইডালি। তাহার পর আরও ছুই একটা পরে বর্ণিত হইরাছে বে, গলাতীরে উভয়ের সাক্ষাৎ হইল, কভ কথা হইল ইত্যাদি। ইহা হইতে বুঝা যার যে, চতীদান বিদ্যাপতির সমনাময়িক। কোন কোন সমালোচক বছ গবেষণা প্রিন্ধির করিয়াছেন, বিদ্যাপতির জন্ম হয় ২৪১ লক্ষণ সংবতে অর্থাং ১২৭২ শকান্ধার। দীনেশ বাবু জহুমান করেন বে, এটার চতুর্দশ শতাত্মীর শেষভাগে বিদ্যাপতি জন্মগ্রহণ করেন এবং সম্ভবতঃ পঞ্চলশ শতাত্মীর শেষভাগে উাহার জীবন শেষ হয়, এ পর্যান্থ বলা যাইতে পারে।

এখন দেখা বাউক, এই সব উক্তিঞ্জি কতটা ঠিক। প্রথম "সোমপ্রকাশে"র লেখক দৈববাণীর ভার একটা কথা বলিয়া দিলা নীরব হইয়াছেন। কোন প্রমাণ দিবার কল্পনাও মনে স্থান দেন নাই। সুতরাং তাঁহার কথার বিচার অনাবশ্যক। বিতীয়, বিফুপ্রিয়া পত্রিকার হেঁরালী—এ কবিতা পাঠ করিতে আমার আতকে শরীর শিহরিয়া উঠিতেছে। আমি ত চণ্ডীদাসের অনেক পুথি দেখিয়াছি, কিন্তু কোনটতেই ত ঐ ভীষণ কবিতাংশ পাই নাই। ইহা চণ্ডীদাসের লেখা বলিয়া আমার মনে হয় না। তবে চণ্ডীদাসের কবিতার ভার 🕹 কয় পংকির একটি ক্ষমতা আছে বটে, ইহা "কানের ভিতর দিয়া মরমে পশে"—কিন্তু শেলের জায়। ততীয়, দীনেশ বাবু ও শিবরতন বাবু বোধ হয়, পদকল্পতক্রর কবিতার উপর নির্ভর করিয়া চণ্ডীদাসকে বিদ্যাপতির শ্ৰণাম্য্ৰিক ধ্ৰিয়া লইয়াছেন। স্ত্তা তাঁহাৱা মীমাংসা ক্ৰিয়াছেন যে, বিদ্যাপতি গ্ৰীহীৰ চতৰ্দ্ধশ শতাব্দীতে জনাগ্রহণ করেন ও পঞ্চদশ শতাকীর মধাভাগ পর্যান্ত জীবিত ছিলেন। পদকল্লতকুর কবিতার প্রতি আমার मस्यष्ट नाहे। यामका (व करवको। करिका तृष्टिक इडेश (भन, भवकत्रकत्र मध्याहरकत छात्र शर्थिक লোকও তাহাদিগকে নিজ সংগ্রহে বিনা বিচারে স্থান দিলেন, ইহা আমি মনে করিতে পারি না। তবে একটা কথা আমি বুঝিতে পারিতেছি না। পদক্রতক্র কবিতাগুলি হইতে বঝা বার বে. বিদ্যাপতি ও চণ্ডীদাসের সাক্ষাৎ হইয়াছিল। মানিলাম-হইয়াছিল: কিন্তু মিলনটা হইল কোধায় ? না, গলাতীরে। আচহা, চতীদাস নার রে হিলেন, নার র গলাতীর হউতে আট ক্রোল পশ্চিমে। বিশাপতি মিধিলা হইতে চঞ্চীদাসের সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিতেছিলেন। তাহা হইলে তিনি নারুরের পশ্চিম দিক হইতে আসিবেন। পলাতীরে বদি উভরের মিলন হয়, তবে চঞ্ডীদাস নায়ুর হইতে নিশ্চয়ই পুর্বাভিমুধে যাইতেছিলেন। পশ্চিম দিক হইতে বিদ্যাপতি আসিতেছেন, আর চণ্ডীদাস তাঁহার সঙ্গে দেখা করিতে পুর্বাভিছুখে রান্তা ধরিলেন—এটা কেমন কথা হইল ? विमार्गाणि यनि गनात भूजीकन व्हेट मा चारमन, जर्द ह श्रीनारमत भूजी विमार वाध्या ज मछत व्य ना। हश्रीनाम পাণৰ ছিলেন বলিয়া যে তাঁহার 'ভিতর-পূর্ব জান' ছিল না, ইহা ত মনে হয় না। বাহা হউক, গলাতীরে ' शिनात्तत कथांठी कुन पतित्रा नहेला बढ़ी चौकांत कतिए शाता यात्र ए, ठशीमान ए विमार्शिक नान्नार হইরাছিল ও তাঁহারা সমসাময়িক। স্মৃতরাং সকলেই ঘণন বলিতেছেন যে, চণ্ডীদাস এটার চতুর্দশ শতাব্দীর শেব हरेट प्रथम नामीत मधालान प्रशास की दिल किरनत, एक ने सामात जावा मानिया नथा कि न नजासत नारे। শার ক্লেচ্ছ কবি Carlyle বলিয়াছেন,—"In the multitude of councellors there is wisdom"; সুতরাং আর (कान कथा नाहै।

চণ্ডীদাস যে শ্রীচৈতক্ত মহাপ্রভুর পূর্বের লোক. তাহার অকাট্য প্রমাণ আছে। চৈতন্যানের বে চণ্ডীদাসের পান গাইতেন, তাহা অনেক বৈষ্ণৰ গ্রন্থে উল্লেখ আছে। চৈতক্ত-চিত্রভায়ত গ্রন্থে আছে;—

চণ্ডীদাস বিদ্যাপতি 'রারের নাটক গীতি কর্ণামৃত শ্রীগীতগোবিন্দ। স্বরূপ রামানন্দ সনে মহাপ্রভু রাত্তি দিনে গায় ভবে পরস্থানন্দ। ্ৰৈতক্তদেব ১৪৮৫ এতিকে জন্মগ্ৰহণ করেন। স্বতরাং তৎপূর্বেযে চণ্ডীদাস প্রার্ভুত হইয়াছিলেন, তাহাতে '
শার সব্দেহ নাই।

শীৰ্জ এক ক্ষাৰ সন্থাল মহাশয় তাঁহার "চণীদাস-চরিতে" এক স্থানে লিপিয়াছেন,—"ক্ষামি ১৩৭০ শব্দেশে লিপিত এক শ্বানি প্রাচীন পুত্তক সংগ্রহ করিয়াছি। তাহাতে এক স্থানে পাওয়া যায়, তবানীচরণ নামক এক প্রাক্ষণের ঔরসে তৈরবী নামী এক কামিনীর গর্ভে চণ্ডীদাগের জন্ম হয়।" শুন্ধ ইহাই নহে, তাঁহার বীরভ্নের নােন বন্ধ পুথির এই কথা সমর্থন করিয়া তাঁহাকে তৃপ্ত করিয়াছেন। কিন্তু আমিরা ত নামুরের নিকটে আজন বাস করিয়া স্থানিতেছি, নামুরের অনেক ভন্তলাকের নিকট বহদিন পরিচিত আছি, কিন্তু চণ্ডীদাগের মাতা পিতার সন্ধান ত কোন প্রকারেই করিতে পারি নাই। স্থতরাং এজ ক্ষাল্য বাবুর কথাটা সত্য বলিয়া গ্রহণ করিতে পারিতেছি না। আর ও কথা জানিয়াও বিশেষ লাভ নাই। চণ্ডীদাসের কুল-পরিচয় জানিতে বর্ত্তনান কালের ক্লাদায়গ্রস্ত কোন লোক বোধ হয়, বিশেষ উৎস্ক হইবেন না। তবে ইহা নিশ্তিত যে, চণ্ডীদাস প্রাক্ষ ছিলেন, ইহা তাঁহার পদের ভণিতা হইতেই বুঝা যায়। "বড় চণ্ডীদাস", "বিজ চণ্ডীদাস" ইত্যাদি তাঁহার পদাবলীতে পুনঃ পুনঃ পাওয়া যায়।

জনাস্থান |

দীনেশ বাবু তাঁহার নবপ্রকাশিত "Bengali Language and Literature" পুস্তকে লিখিয়াছেন যে, চতীদাসের জন্মস্থান নার,রের নিকটবর্তী ছাতনা গ্রামে ছিল। এই কথাট সাহস করিয়া তিনি যে কেন লিখিলেন, তাহা আমি বলিতে পারি না। ষখন দীনেশ বাবু উক্ত পুস্তকের পাগুলিপির ঐ অংশ আমাকে পড়িয়া ভনান, তখন আমি বলিতে পারি না। ষখন দীনেশ বাবু উক্ত পুস্তকের পাগুলিপির ঐ অংশ আমাকে পড়িয়া ভনান, তখন আমি তাঁহাকে বলিয়াছিলাম যে, ছাতনা নামক কোন গ্রাম নার,রের নিকট নাই। তবে বাঁরুঙা জেলায় এক ছাতনা আছে বটে। বোধ হয়, দীনেশ বাবু এই অম সংশোধন করিতে ভূলিয়া গিয়াছেন। ছাত্না গ্রামে বিশালাকী নামী এক দেবীও আছেন। কিন্তু তাহা বলিয়া ছাত্না গ্রামে যে চঙীদাসের জন্ম হইয়াছিল, থমন কোন প্রমাণ নাই। পক্ষাম্বরে চঙীদাস বে নারুর আমে বাস করিতেন, তাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ রহিয়াছে। ১৯০৯ সালের প্রাবণ মাসের "বারভ্মি" পত্রিকায় আমি লিখিয়াছিলাম যে, চঙীদাস মজঃফরপুর জেলার উচ্চৈট্ গ্রামে জনিয়াছিলেন। আমি খেমন শুনিয়াছিলাম, সুধী জনের বিচারার্থ তাহাই লিথিয়াছিলাম। তাহার পর বিখ্যাত "বিখকোয়"-প্রবর্ত্তক ৮ রঙ্গলাল বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়ের সহিত চঙীদাসের জন্মখন সম্বন্ধে আমার অনেক আলোচনা হয়। তাহার প্র ধারণা ছিল যে, চঙীদাস মিথিলাবাসী, তাহার মত পণ্ডিতের কথা আমি অগ্রাহ্ করিতে পারি নাই। তবে চুঙীদাস যে মিথিলাবাসী, তাহার বিশেষ কোন প্রমাণও পাই নাই। স্বতরাং অন্ত প্রমাণাভাবে নারু ই যে চঙীদাসের জন্মখন ছিল, ইবা খীকার করিতেই হইবে।

চণ্ডীদাসের সম্বন্ধে কিম্বদন্তী।

নারুর অংগলে চণ্ডীদাস সম্বন্ধে এইরপ কিংবদন্তী শুনিতে পাওয়া যায়;—চণ্ডীদাস ব্রাহ্মণ, নারুরে বাস করিতেন। তাঁহার পিতা বা তিনি যে বিশালাফীর 'পুলক' ছিলেন, এ কথা কেহ বলে না। তবে যেমন তারাগ্রের বামা কেপা তারা মারের মন্তিরের নিকটে শ্রশানে থা কুটীরে বসিয়া তারা তারা ডাকিতেন, 'চণ্ডে কেপাও' তেমনি বিশালাফীর মন্তিরেই হউক বা নিক্টবত্তী কুটীরেই হউক, থাকিয়া বিশালাফীর শারাধনা করিতেন। স্কুতরাং চণ্ডীদাস যে গোরতর বামাচারী ভামিক ছিলেন, তিথিয়ে সন্দেহ নাই। একদিন চণীদাস নদীতে মান করিতে সিয়াছিলেন। লেখেন, স্রোতে একটি উত্তম পদ্ম ভাসির। যাইতেছে। চণ্ডীদাস সুমুটি ধরিদেন এবং ভাবিলেন, ইহা বিশালাকীর পাদপদ্ম অর্পণ করিবেন। স্থানাস্তে গৃহে ফিরিয়া যথন ভিনি ভজি-ভরি মারের চরণে ঐ পদ্ম অর্পণ করিতে যান, তথন বিশালাকী সাক্ষাৎ হইয়া (হিন্দু আমরা, এ কথার পুব বিশাস করি) বলিলেন যে, "এ কাজ করিও না; ঐ পদ্মে আমার গুরুর পূজা হইয়াছে, উহা আমার চরণে দেওয়া হইতে পারে না।" চণ্ডীদাস জিঞাসিলেন,—"মা! তোর আবার গুরু আছে নাকি?" বাগুলী দেবী উত্তর করিলেন,—"গ্রীকৃষ্ণ আমার গুরু ।" বিশ্বিত চণ্ডীদাস বলিয়া উঠিলেন,—"তবে আমি তোর আরাধনা করিব কেন? তোর শুরুর আরাধনা করিব।" দেবী সম্বন্ধ ইইয়া চণ্ডীদাসকে কৃষ্ণ উপাসনা করিতে আদেশ দিলেন এবং পরকীয়া-ভজ্জর সাধন করিতে বলিলেন। চণ্ডীদাস পরকীয়া নামিকার উদ্দেশ্যে বাহির হইলেন। দেখিলেন, নদীতে এক রন্ধ কিনী কাপড় কাচিতেছে। চণ্ডীদাস প্রত্য ছিপ্ লইয়া তথায় মৎস্য ধরিতে যাইতে লাগিলেন। ক্রমে রঞ্জিনীর সহিত্ব তাহার প্রণয় হইল। তাহার ভল্লন-সাধন আরম্ভ হইল।

রামীর বাড়ী যে 'তেহাই' গ্রামে ছিল বা রজকিনী যে বিশালাকীর গৃহ মার্জনা করিত, এ কথা ত আমরা । শুনি নাই। নার রে এখনও লোকে রামীর তিটা দেখাইয়া থাকে, ইহাতে বোধ হয়, রামীর বাড়ী নার রেই ছিল। আর বিশালাকীর পুরোহিত বা পূজক যে এত জাতি থাকিতে স্থপবিত্র রজককুল হইতে বিশালাকীর গৃহমার্জনের জন্ম একজন পরিচারিকা নির্বাচন করিবেন, ইহা আমরা অনুমান করিতে পারি না। থোপার জল যে অপ্রান্ত বেবার গৃহমার্জনের জন্য বে থোপানী নিযুক্ত হইতে পারে না, ইহা যে এ কালের লোককে বুঝাইতে হইতেছে. ইহা অপেকা তঃথের বিষয় আর কি হইতে পারে ?

চণ্ডীদাস ধোপানীর প্রেমে মজিল, উত্তম (ব্রাহ্মণ) কুলে জন্মগ্রহণ করিয়া নীচ সহ সহবাস করিতে লাগিল, ইহাতে প্রামের ব্রাহ্মণপণ বিরক্ত হইলেন। তাঁহারা চণ্ডীদাসের সহিত ক্যবহার বন্ধ করিলেন, তাঁহাকে পতিত করিলেন। চণ্ডীদাসের কিন্তু ক্রন্ধেন নাই। তিনি "সকল তেজিয়া একমন হইয়।" রক্ষকিনীর সহিত প্রেম করিতে লাগিলেন। জ্বনে তাঁহার আত্মীয়বর্গ তাঁহাকে লাতিতে উঠাইবার উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা চণ্ডীদাসকে ব্যাইলেন যে, রক্ষকিনীকে ত্যাগ করিতে হইবে। ব্রাহ্মণগণকে বলিলেন যে, চণ্ডীদাস রক্ষকিনীকে ত্যাগ করিবে, তাহাকে লাতিতে উঠাইয়া লও। চণ্ডীদাস সম্রত, ব্রাহ্মণগণও সম্রত। ব্রাহ্মণগণ চণ্ডীদাসের গৃহে ভোজনে বসিয়াছেন, চণ্ডীদাস পরিবেশন করিতেছেন, এমন সময়ে কোথা হইতে রক্ষকিনী রামী উন্মন্তার ক্লার আরিমা বলিল,—'কি রে চণ্ডে, তুই নাকি আমাকে হাড়িয়া লেতে উঠ্ছিস্ণ" চণ্ডীদাস বিহলে—নিশ্চন প্রত্তরমূর্ত্তিব ভাতের থালা হাতে করিয়া দাড়াইলেন। সবিষ্মের ব্রাহ্মণগণ দেখিলেন, তিনি আর ছই হন্ত বাহির করিয়া রহ্মকিনীকে আলিলন করিলেন। তথন তাঁহারা বৃক্ষিলেন, চণ্ডীদাস সামান্য মহায় নহেন। তাঁহারা তাঁহাকে পভিত করিবার কথা আর হ্বাহ্মণণও প্রত্তা প্রকাশ করিয়াছেন, তাহার বর্ণিত বিবরের সহিত উপরিউক্ত গল্পের বিল আছে। তবে উক্ত কবিতাগুলিতে এইটুকু বেণী আছে যে, চণ্ডীদাসের নকুল নামে এক ভ্রাতা ছিল।

মৃত্যু।

চণ্ডীদাস নালুবের দেড় ক্রোশ উত্তরে কীর্ণাহার গ্রামে কীর্ত্তন করিতে বান। রামীও সক্ষে যায়। কোন দেব-মন্দিরে কীর্ত্তন করিতেছেল, এমন সময়ে কোন কারণে যন্দির তাকিয়া পড়ে। চণ্ডীদাস ও রামী উভয়েই '

^{*} নালুরের নিত্টে এখন নদী দেখিতে পাওলা বাল না।

অপরাপর লোকসহ চাপা পড়িয়া মারা যান। আজিও লোকে সমন্ত্রমে সেই প্রকাণ্ড স্তুপকে চণ্ডীদাসের সমাধি বিলিয়া নির্দেশ করে। স্তুপের নিরে রমণদাস বাবাজীর আশ্রম। স্তুপপাত্রে একটি ক্ষুদ্র মন্দির। তীহার ডিডুর্ একটি ক্ষুদ্র বেদিকা, নামাবলী-আচ্ছাদিত। স্তুপে প্রাপ্ত একটি ত্রিশুল মন্দিরমধ্যে রক্ষিত। বাবাজী ঐ মন্দিরে নিতা চণ্ডীদাসের পুজা করেন। স্তুপের উপর শিরীব প্রস্তৃতি নানাশ্রেণীর রক্ষ জ্মিয়াছে। তথায় পুঁজিতে পুঁজিতে আমরা একধান থ্ব বছ ইউক পাইয়াছিলাম। ইট্থানি এখনকার ইটের মত উঁচুনয়, তবে থ্ব লভাচ্চঙা। এত বড়ইট এখন দেখা যায় না।

চৌদ্ধ ৰংগর কাল কীর্ণাহার স্থল-গৃহে বসিয়া সোৎস্থকনেত্রে এই স্তৃপ দেখিয়াছি। কভ বাসনা-কেমন कतिया छश्रीमात्मत्र भगावनीत छिक्कात इहेरन, दकमन कतिया श्रुणितका इहेरन-धेशान मार्क्सन भाषरत "छश्रीमारमत সমাধি" বলিয়া শিখিয়া দিলে হয় নাণু প্রতি বংসর এখানে চণ্ডীদাসের সম্মানের জক্ত একটা মেলা করিলে হয় मा ? अहे रमनाम्र कीर्खनीयाता छ्छीपारमत भव गाहिरत, तरबत माहिष्ठिक गण अहेथारन अकल हहेबा छ्छीपारमत छन গাহিবেন – কবি চরণে ভক্তি-পুলাঞ্জলি দিবেন—কত আনন্দ হইবে। কিন্তু 'ভিখায় হুদি লীয়ন্তে দ্বিদ্রাণাং মনো-রধাঃ।" স্বাস্থ্যভন্ন হওয়ায় আমার অত স্নেহের কীর্ণাহার ত্যাগ করিয়া রামপুরহাটে আসিলাম; কিছ চণ্ডীদাসকে ভূলিতে পারিলাম না। রামেজ বাবু চঙীদাদের পদাবলী ছাপাইবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। এ দিকে স্থকবি শ্ৰীযুক্ত ব্য়লাচৱণ মিত্ৰ এম এ মহোদয় বীর্ভুমের জল ও অধুনা প্রলোক্গত রায় অমৃতলাল মুখোপাধ্যায় বীর্ভুমের ম্যালিট্রেট্ হইরা আসিলেন। বেন মণিকাঞ্চনের বোগ হইল। কবি বরদাচরণ কি কবির সম্মান না করিয়া থাকিতে পারেন ? তিনি একবার কেন্দুলী ও নারুরে তীর্থাতা করিলেন। কীর্ণাহারে চণ্ডীদাদের স্থাধি দেখিলেন। আসিয়াই স্থির করিলেন, বেমন করিয়াই হউক, জয়দেব ও চণ্ডীদাসের স্বতিরক্ষা করিতে হইবে। মাাজিট্রেট্ অমৃতলাল লোৎসাহে তাঁহার সহিত যোগ দিলেন। এক কমিটা গঠিত হইল। বরদা বাবু বলিলেন,—লক্ষ টাকা সংগ্রহ করিতে হইবে। ম্যাজিট্রেটের চেষ্টায় সাঁকুলীপুর থানার নাম ঘুচিয়া "নায়র থান।" নাম হইল। কিন্তু আমাদের তুর্ভাগ্যবশতঃ আর কিছু হইল না। মিত্র মহাশয় হুগলীতে স্থানান্তরিত হইলেন, আর বলিতে বিষম কট্ট वहेराज्य, पूर्वाभाषाात्र महायत्र वीत्रज्यवागीरक काँचाहेत्रा मञ्जीक वर्गारताहर कतिराम । पर व्यामा राज-व्याद किছ रहेन मा।

চণীদাদের মৃত্যু সম্বন্ধে আর একটি গল্প প্রচলিত আছে। বিশালাকীর বর্তমান মন্দিরের দক্ষিণে বে প্রকাশু ন্তুপ আছে, তাহাই বিশালাকীর প্রাচীন মন্দির। কোন কারণে মন্দির পতিত হওয়ায় দেবীসহ চণ্ডীদাস সমাহিত হল। বহু দিন পর্যান্ত দেবী এই অবস্থার থাকেন। পরে নায়ুর গ্রামের একজন তিলি অপ খনন করিয়া দেবীকে উদ্ধার করে। সেই তিলির বংশধরপণ আজিও বর্জমান জেলার অন্তর্গত কেতুগ্রামে বাস করিতেছে। বাশুলী দেবীকে উদ্ধার করিয়াছিল বলিয়া আজি পর্যান্তও শারদীয়া নবনী পৃশার দিন তাহাদের প্রদন্ত ছাগ দেবীর সম্বন্ধ প্রথমেই বলি হয়।

কীর্ত্তন।

এখন কথা ছইতেছে, চণ্ডীদাসের এই গীতগুলি কোনু সুরে গীত হইত ? আমাদের দেশে তিন রকম কীর্ত্তনের সূত্র প্রচলিত আছে;—১। মনোহরসাহী, ২। গরাণহাটী, ° ৩। রেণেড়ি। মনোহরসাহী বর্জমানাধি-পুতির জমিদারীর অন্তর্গত বিশ্বত প্রগণা। ইহা বীরভূষের কিয়দংশে ও বর্জমান জেলার অবস্থিত। এই মনোহরস্রী প্রগণাতেই যে সুরের সৃষ্টি ছইল, তাহাকেই মনোহরসাহী কীর্ত্তন বলে। অসুসন্ধানে জানিরাছি বে, বর্জমানের বেওজুর্গাধানে এই সুর প্রথম সৃষ্ট হর। তাহার পর সুর্বিদাবাদ কেলার অন্তর্গত টেরাগ্রামে ইহাক কিছু উন্নতি হর।

কিন্তু বর্জমান জেলার কালরা গ্রামে ইহার পরিপুষ্টি ও চরম উৎকর্ব সাধিত হয়। কাল্মরা ও পাঁচপুপীর কয়েক জন প্রতিভাশালী গায়ক ইহার অনেক উন্নতি করেন। এখন বৈঞ্চব পদাবলী মাত্রেই মনোহরসাহী স্থরে গীত হইরা পিটকে। গরাণ-হাটী উত্তরবঙ্গে ও রেণেড়ি উড়িয়া অঞ্চলে প্রচলিত আছে।

এই তিন প্রকার প্ররই চণ্ডীদাদের, এমন কি, চৈতক্সদেবেরও পরে স্ট হয়। স্থতরাং চণ্ডীদাস কি প্ররে নিজের পদ গাহিতেন, তাহা স্থানিবার উপার নাই।

ठछीमारमत मगरय वान्नामा खाया।

দীনেশ বাবুর মতে খনার ও ডাকের বচন, মাণিকচাঁদের গান ও রমাই পশুতের শৃত্যপুরাণ, চণ্ডীদাসের সময়ের পূর্বের বিচত হইয়ছিল। খনার বচন লোকয়্থে বছল প্রচার হওয়ায় অনেকটা আধুনিক ভাব বারণ করিয়ছে বটে, কিন্তু অপর ওলির ভাষা চণ্ডীদাসের ভাষা হইতে অনেকটা পৃথক। চণ্ডীদাসের ভাষা আনেকটা আধুনিক ভাষার ভায়। কেহ কেহ অনুমান করেন বে, চণ্ডীদাসের কবিতা ওলি লোকয়ুথে বছল পরিমাণে গীত হওয়ায় আধুনিকত্ব প্রাপ্ত হইয়ছে, এ কথাটা আংশিক সত্য হইলেও সম্পূর্ণ সত্য নহে। চণ্ডীদাসের যে সকল পদ সচরাচর গীত হইয় থাকে, তাহাদের কিছু কিছু পরিবর্ত্তন হওয়া খ্বই সন্তব। তবে বে সকল পদ এতদিন অনাবিত্বত ছিল, সেগুলি গীত হইতে কথনও কেহ শুনিয়াছেন কি? সেগুলি ত অবিকৃত রহিয়াছে, স্বীকার করিতেই হইবে। রাসলীলার কোন কোন পদের ভাষার চমৎকারিত্বে আধুনিক কবিগণকেও বিশ্বিত হইতে হইবে। স্থতরাং মানিয়া লইতে হইবে বে, চণ্ডীদাসের পদের ভাষা এখন বাহা দেখিতেছি. চণ্ডীদাসের আমলে প্রায় ভাষাই ছিল। তাহা হইলে সিরান্ত এই দাঁড়ায় যে, আমরা ইংরাজি শিক্ষার যত অভিমানই করি না কেন, কবিভা-রচনায় আমরা কিছুমাত্র অগ্রসর হইতে পারি নাই। ভাষার মাধুর্যে, শক্ষ-যোজনার পারিপাটো, ভাবের গণ্ডীরতায় পরবর্তী কোন কবিই চণ্ডীদাসের নিকটবর্তী হইতে পারিয়াছেন, ইহা আমার মনে হয় না।

চণ্ডীদাসের শিকা।

কেহ কেহ বলিয়াছেন যে, চণ্ডীদাস পেখাপড়া জানিতেন না। এত বড় একটা কথা না বুৰিয়া বলা ভাল হয় নাই। কথাটা যে সত্য নয়, ইহা আমাকে প্রমাণ করিতে বড় কট পাইতে হইবে না। বিনিই চণ্ডীদাসের কবিতা একটু মনোযোগের সহিত পাঠ করিবেন, তিনিই বুঝিতে পারিবেন যে, যদি চণ্ডীদাসের সংস্কৃত ভাষায় অবিকার না থাকিত, তাহা হইলে কি তিনি অমন স্ক্রুম্ব সংস্কৃত কথা অত হিউ করিয়া ব্যবহার করিতে সমর্থ হইতেন ? সংস্কৃতে জ্ঞান না থাকিলে কি তিনি ব্রহ্মার গোবংস-হরণ, রাসলীলা প্রভৃতি ভাগৃবত-বাণত বিষয় অমন স্ক্রম্বভাবে গাহিতে পারিতেন ? তবে ভাগবতের উপাধান তিনি কোথাও বাড়াইয়াছেন, কোথাও ক্রাইয়াছেন, কোথাও ক্রাইয়াছেন, কোথাও অক্রমণ করিয়াছেন। সে ঘোষ ভাঁহার অজ্ঞতার নহে, সে দোষ কবিছেয়। কবি হইলে সে নিজের কল্পনা চালাইবেই। কেন, আমাদের এ কালের সংস্কৃত ইংরাজী জানা কত বড় বড় কবি কল্পনা চালাইতে সিয়া লিব ভালিয়া যে বাছর গড়িয়াছেন। ভালিগকে ত কেহ আমরা বুর্থ বিলতে সাহসী হই নাই। আমার বিশ্বাস, চণ্ডীদাস বেশ ভালয়পই সংস্কৃত জানিতেন। তয়্ম ও ভাগবত উভয়ই ভাঁহার উত্তযন্ত্রপ আয়ত ছিল। আপনার্যাও চণ্ডীদাসের পদাবলী পড়ুম, উহাই বলিবেন।

हखीमारमद मगरय वीक्ष्णरमत धर्मात व्यवश् ।

বৈষার করিয়াছিল, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কিন্তু তাহা হইলেও হিলুধর্ম একবারেই ফ্রংস প্রাপ্ত হয় নাই। বঙ্গের করিয়াছিল, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কিন্তু তাহার পর মুসলমানাধিকার পর্যন্ত ঘাঁহারা বঙ্গের প্রাপ্ত বর্ষা ছিলেন বটে, কিন্তু তাহার পর মুসলমানাধিকার পর্যন্ত ঘাঁহারা বঙ্গের লেক বলির ছিলেন বটে, কিন্তু তাহার পর মুসলমানাধিকার পর্যন্ত ঘাঁহারা বঙ্গের লেক বলির ছিলেন, তাঁহারা সকলেই হিল্পু। এই সকল হিল্বাজগণ হিল্পুধর্মের পুনঃ প্রতিষ্ঠার জল্প যরের ক্রাট করেন নাই। তাঁহাদের আবিরাম চেন্তার বৌদ্ধ-বিহারগুলি হিল্পু-দেব-মন্দিরে পরিণত হইয়াছিল। লোক শৃত্য-উপাসনা ছাড়িয়া আবার হিল্পু-দেব-দেবীর উপাসনায় রত হইয়াছিল। কাত্যকুল হইতে আনীত আমাদেরই পুর্বপুক্ষগণের চেন্তায় আবার বেদাম্যোদিত ক্রিয়াকাণ্ড প্রবিত্ত হইয়াছিল। কাত্যকুল হইতে আনীত আমাদেরই পুর্বপুক্ষগণের চেন্তায় আবার বেদাম্যোদিত ক্রিয়াকাণ্ড প্রবিত্ত হইয়াছিল। কাত্যকুল হরতে আবার "হর হর বাোম বোান্" শক্তে বঙ্গলেশ মুধ্রিত হইয়াছিল। আবার ব্রাহ্মণাগ হিলুর ধর্মানাল্ল অধ্যয়ন করিতেছিলেন। বৌদ্ধপ্রের ছই একটা পুলা-গন্ধতি সমান্দের উচ্চ গুর হইতে দুরীভূত হইয়া নিয় স্তরে আশ্রয় গ্রহণ করিলে, হিল্পুগণ তাহাতে বড় আপত্তি করেন নাই। তলাহ্যমাদিত শিব ও শক্তিপুলা বলে—বিশেষতঃ বীরভূমে বিশেষভাবে আধিগত্য বিস্তার করিয়াছিল। বীরভূমের পীঠস্থানগুলি বক্রেরার, অট্রাসা, লাভপুর, তারাপুর, নলহাটী প্রভৃতিতে আবার মদ্য-মাংস হারা দেবীর অর্চনা হইতে লাগিল। বীরভূমবাদী খোর বীরাচারী হইল। এইরূপে বীরভূমবাদী ভারোক্ত ধর্মের অতীব ব্যভিচার করিয়া অসংযতভাবে পশ্তর ও ফাগুণান করিয়া "অহিংসা পরমো ধর্মাং" যে ধর্মের মূল স্বত্ত, সেই বৌদ্ধধর্মের প্রতি প্রতিহিংসা লইল কিন্তু ত্রবান্ধ ধর্মের য়ানি অধিক দিন সহু করেন না।

শ্বগংপ্রকাশক স্ব্যদেবের উদয়ের পূর্বে যেমন অরণের আভা প্রকাশ পান্ন, তেমনি বীরভূমের আকাশে জয়দেবের গীতগোবিন্দের তান উঠিল। জুন্নদেব মধুরখরে রাধারুফের লীলা গাহিলেন। মদ্যপানী বীরভূমবাসী নেশার বোরে সে গান শুনিল না। প্রায় তিন শত বংসর অতিবাহিত হইলে বোর তান্ত্রিক চণ্ডীদান নামুরে আবার ক্রঞ্জনীলা গাহিলেন। কিন্তু তাহাতেও কিছু হইল না। তথনও ক্ষেত্র প্রন্ত হন্ধ নাই, তথনও তিমিরপ্রংস্কারী মহাম্ব্যের উদয় হয় নাই। বীরভূমি ঘেমন তান্ত্রিক, সেইরপ ভান্তিকই রহিয়া গেল। চণ্ডীদাসের তিরোধানের কিঞ্দিন অর্ক্ষণভানীর পর প্র্কাকাশে নবীন স্ব্রোর উদয় হইল। ক্রীচৈতক্তদেব প্রান্ত্র্ত হইয়া হয়দেব ও চণ্ডীদাসের গীত গাহিয়া মানব-হদয়ে মধা সেচন করিলেন।

কৈতল্পৰে একবার বীরভ্যের বক্ষের তীর্থ দর্শনের উদ্দেশ্যে যাত্র। করেন। কিয়দূর অগ্রসর হইয়া তিনি কোন লোকের মূথেই হরিনাম গুনিতে পাইলেন না; সুতরাং বিরক্ত হইয়া ফিরিয়া যান। ইছা হইতে বৃঝা যার বে, চঙালাসের স্ময়ে বৈফ্যবধর্মাবল্দী কোন লোকই বীরভ্যে ছিল না। বীরভ্যের যথন এইরপ অবস্থা, তখন চঙীলাস রক্ষনাম গাহিলেন। সে নাম কাহারও "কাণের ভিতর দিয়া মর্মে" পশে নাই। সে যাহা হউক, বীরভ্যের গোরবের কথা এই যে, এইখানেই জয়দেব-পাপিয়া ভাকিয়াছিল—এইখানেই চঙীলাস কোনিল গাহিয়াছিল—এইখানেই বিত্তা-তপন প্রকাশিত সমুজ্জল দিবার উষা দেখা দিয়াছিল।

চণ্ডীদাদের ক্বিত।

আমার একটা ধারণা হইয়া গিয়াছে যে, কবি হইতে গেলে যোগী হওয়া চাই। সমস্ত মনটাকে টানিয়া একটা বিষয়ে লাগাইতে না পারিলে প্রকৃত কবি কেহ হইতে পারে শা। আর একেপ না করিতে পারিলে একটা রসে মজাহুর না। রসে না মজিলে মন-মাতান কথা বহা খার না। বিস্তুমাঞ্চ কাল যে দিনুপড়িয়াছে, তাহাতে িলোকে মন স্থির করিতে পারে না। এখন চারিদিকেই বিষম কোলাহল। লোক অর্থের জন্ম ছুটাছুটি করিতেছে।
নুন্ধি ছতুপে লোকের মন নানা দিকে আকৃষ্ট হইতেছে। রাজায় প্রসায় হল, সমাদে অশান্তি, গৃহে গোলবোর্গ।
সংবাদপদ্ধেলা মেক্সিকোর যুদ্ধের থবর দিয়া বীরভ্মের নিভ্ত পদ্ধীর মাহুবের মনে ছতুপ বাধাইয়া দিতেছে।
বেল গাড়ীতে চড়িয়া খবরের কাগল পড়িতে পড়িতে, চুকট টানিতে টানিতে রাজনৈতিক সভায় বক্তা করিতে গেলে
কবিত্ব থাকে কি না, আমার ঘোরতর সন্দেহ হয়। পূর্বে মন লইয়া এত টানাটানি ছিল না। লোক একটা কিছুতে
মজিতে স্বিধা পাইত। সংসারে এত হটুগোল ছিল না। এখন লোকে কবিতা লেখে বাহাছ্রী লইতে, তখন
লোকে লিখিত মজিয়া মজাইতে। এখন লোকে সমুদ্রের ধারে চক্চকে পাধর কুড়াইয়া মাণিক বিলিয়া বাজারে
বিক্রেয় করে; তখন লোকে রয়াকরের অগাধ সলিলে ডুবিয়া রয় তুলিয়া আনিয়া লোকসমাজে ফেলিয়া দিয়া
আবার ডুব দিত।

আমার মনে হর, চণ্ডীদাস এইরপ একজন ডুবুরী ছিলেন। তিনি সংসারের কোন সংবাদই রাখিতেন না। দিবানিশি ভাব-সাগরে ডুবিয়া যে সকল অমূল্য হর সংগ্রহ করিতেন, লোকের মধ্যে তাহা বিলাইয়া দিতেন। স্কুতরাং চণ্ডীদাসের স্থার কবিরা আমাদিগকে যাহা দিয়াছেন, তাহা ভাবসাগরের মহামূল্য রক্ত। "ব্রজান্ধনার" স্থার সমুদ্রের ধারে কুড়াইয়া পাওয়া গুজির মুক্তা নহে।

চণ্ডীদাস রাধাক্তকের প্রেমে একেবারে মজিয়া গিয়াছিলেন। বোগীর স্থায় মানসনেজে রাধার্থের দীলা প্রত্যক্ষ করিতেন। যাহা দেখিতেন, তাহাই গাইতেন। কল্পনার কথা নয় যে, সাজাইয়া গুছাইয়া তোমার মনে চমক লাগাইতে হইবে। চণ্ডীদাস কুত্রিমতা জানিতেন না। খাঁটি জিনিব যেমন পাইলেন, আনিলেন; লোকে লউক আর না লউক, সে দিকে তাঁহার ক্রকেপ ছিল না। তাই তাঁহার ক্রবিতা সরল ও অলগারবিহীন। বর্ণনীয় বিষয় হইতে মনটাকে দ্রে না আনিলে ত আর উপমা গোঁজা হয় না। স্তরাং বিষয়ে তন্ময়তা জনিলে উপমা প্রভৃতির দিকে লক্ষ্যথাকে না।

চণ্ডীদাস রাধার্মফের লীলা বর্ণনা করিয়াছেন অর্থাৎ ক্ষণ্ণ যাহা করিয়াছেন, রাধা যাহা করিয়াছেন, তাহাই লিথিয়াছেন। স্থতরাং তিনি রাধা ও ক্ষফকে কিব্লপ চিত্রিত করিয়াছেন, তাহা জানিলেই ভাঁহার কবিছের পরিচয় পাওয়া যাইবে। এক্ষণ্ডের স্থ-ছঃখ নাই। এমতীই স্থ-ছঃখ যাহা কিছু ভোগ করিয়াছেন, স্তরাং কেবলমাত্র রাধিকা-চরিত্র বর্ণনা করিলেই আমাদের উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে। তাহা হইলেও আমরা রাধিকা-চরিত্র ছাড়া এক্ষণ্ণ ও যশোদা সম্বন্ধে কিছু কিছু বলিব।

প্রথম হইতে একটা কথা বৃথিয়া রাখিতে হইবে। চণ্ডীদাস যে রাধাক্ষণ-প্রেম বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা প্রাক্ত নায়ক-নায়িকার প্রেম নহে। "মাকুষে এমন প্রেম কোথা না গুনিয়ে।" ইহাতে "কামগন্ধ" নাই। এই "কুফপ্রেম স্থনিশ্বল, যেন গুদ্ধ করিবেন না। কিসে নায়কের প্রীতি হইবে, তিনি সর্কাদাই এই ইচ্ছা করিবেন। শ্রীচৈতক্ত-চরিতামৃতকার কবিরাক্স গোস্বামী বিশিয়াছেন;—

''আংদ্মেন্তিয়প্রীতি ইচ্ছা তারে বলি কাম। ক্লেন্তিয়গ্রীতি ইচ্ছা ধরে প্রেম নাম। কামের তাৎপর্যা নিজ সম্ভোগ কেবল। কুলুক্ত্ম তাৎপর্যা হয় প্রেম মহাবল।। বেলধর্ম লোকধর্ম দেহধর্ম কর্ম 'লজ্জা ধৈর্যা দেহস্কা আত্মস্থা মর্মা। ছক্তরা আর্থ্যপথ নিজ পরিজন।
স্বন্ধনে করয়ে কর ডাড়ন ভংগিন ॥
সর্ব্বত্যাগ করি করে ক্রুণ্ডের ভজন।
কুফসুথ হেড়ু করে প্রেমের সেবন।।
ইহারে কহিয়ে কুফে দৃঢ় অমুরাগ।
ভব্র থেতি বক্রে থৈছে নাহি কোন দাগ।।"

এই প্রেম রাধিকাকে-

"সৰ সমৰ্শিয়া একমন হৈয়া নিশ্চয় হইলাম দাসী"—৭০৯ পদ

ইহাই ভাবাইয়া দেয়। এই প্রেম করিতে হইলে পার্বিব ভাবের সীমা ছাড়াইয়া উঠিতে হইবে ;—

'ধরম করম লোকচরচাতে এ কথা বৃথিতে নারে। এ তিন আঁধর যাহার মরমে সেই সে বৃথিতে পারে॥''—৩৩৫ পদ

এই প্রেমে মজিলে বাহজান থাকে না। পার্থিব কোন পদার্থের অন্তিত্ব অনুভূত হয় না। রাধিকা সকল ভূলির।
আক্রিফে আত্মসমর্পণ করেন। তিনি আহনিশি শীক্রফ ভিন্ন অপর কিছু দেখেন না, অপর কিছুই তাঁহার মনে
উলম্বর না। এরপ ভক্ত ভগবানের কাছে কিছুই প্রার্থনা করেন না, কেবল ছুইটি কমল-চরণ তাঁহার প্রার্থনীয়।
ইহাই প্রক্লত প্রেম; চন্তালাস এই প্রেমই বর্ণনা করিয়াছেন।

শ্রীমতী রাধিকা।

বৃক্তাহপুরে পিতৃগৃহে আমরা শ্রীমতী রাধিকার প্রথম সাক্ষাৎ পাই। রাধিকা মাতা ও সধী সহ বাতায়নে উপবিষ্টা, নীচে স্থবল সদলে নানা ধেলা ধেলিতেছেন। দেখিলাম, স্থবল যথন প্রীকৃষ্ণমূর্ত্তি দেখাইলেন, তখন সেই অস্পম মূর্ব্তি দেখাইলোর মূর্ছ্য হইল। কিছুতেই সে মূর্ছ্যার অপনোদন হয় না, পিতা কত চেষ্টা করিলেন, চিকিৎসকে কত চেষ্টা করিল। কিছু স্থবল যখন রাধিকার কর্ণে কৃষ্ণনামায়ত সেচন করিলেন, তখন তিনি নয়ন উন্মীলন করিলেন। তাঁহার সকল ব্যাধি দূরে গেল, তিনি প্রকৃতিস্থা হইলেন। প্রীকৃষ্ণের রূপদর্শনে তাঁহার যে সম্মোহ হইয়াছিল, কৃষ্ণনামের অভ্ত শক্তিতে তাহা তিরোহিত হইল। চঙীদাস এইরণে কৃষ্ণনামের শক্তি প্রদর্শন করিয়াছেন।

তাহার পর আমরা প্রেমবিহ্নল। রাধিকার অবস্থা দেখিয়া বিমোহিত হই। তিনি কখন বা, "দণ্ডে শতবার" বরের বাহির হইতেছেন। মন সর্ব্বদাই উদ্বিয়, বন বন কদ্ম-কানন পানে চাহিতেছেন। তাহার অক্সের বসন শিধিল হইয়া পড়িতেছে, তাহা সম্বরণ করিতে ভূলিয়া যাইতেছেন। চিকুররাশি এলাইয়া পড়িতেছে, তাহাও সংযত করিতেছেন না। বন বন নিখাস বহিতেছে। আবার কখন বা করতলে কপোল বিভান্ত করিয়া মহাযোগিমীর ভার কি ভাবিতেছেন। লোকের সক্ষ ভাল লাগিতেছে না; বির্কো বিসয়া অঞ্পশ্নত করিতেছেন। নীল নিচোল ত্যাগ করিয়া, "রালা বাস" পরিধান করিয়াছেন। আহার ত্যাগ করিয়াছেন, শরীর ক্রশ হইয়াছে। কখন মেদ পানে,

কখন বা গ্রামকণ্ঠ মনুরের প্রতি, আবার কখন বা বেণী এলাইয়া আবানার ভ্রমর-ক্রফ কেশরাশির প্রতি এক**ণ্টতে** চাহিয়া আছেন। আবার কখন জান হারাইয়া ধ্রণীতে লুন্তিত হইতেছেন। অপর কোন কবি কোন নায়িকার ক্রিনাবের এরপ অবস্থা চিত্রিত করিতে পারিয়াছেন কি না, আমরা জানি না।

রাধিকা যে ক্লফপ্রেনে মজিয়াছেন, তাহার গভীরতাই বা কত! দিবারাত্রি তাঁহার ক্লফরপ িন্ন অপর কিছু চিন্তা নাই। ক্লফের রূপের সহিত যে কোন বন্ধর সামান্ত সাগৃত্য আছে, তিনি তাহা দেখিয়াই বিমোহিত হইতেছেন। কালিনার জল, কাল কেশ, নীল শাড়ী, এ সকলই ঠাহাকে আকুল করিতেছে। এই ক্লফপ্রেম তাঁহার ক্লমের এমন দৃড়ভাবে সংলগ্ধ হইয়াছে যে, তাহা এক তিলও তাঁহাকে ছাড়িতেছে না। ক্লফরপ তাঁহার নিখাদ, ক্লফেপ তাঁহার আহার। ক্লফেপ চিন্তা তিল তাঁহার ক্লামাত্র বাঁচিবার সভাবনা নাই। ক্লফে তাঁহার এত প্রিম্ন যে, সদাই হারাই ছারাই মনে তাইতেছে। হার! তাঁহার মনের ভাব কে ব্বিতে পারিবে দ কাহার সাধ্য যে, এ পেনের গভীরতা বুমে দ রাধার ভয়, পাতে নিছার অচেতন হইলে খামকে বিশ্বত হন; তাই সারা নিশি আগিয়া থাকেন। আবার কখন বা পীরিতির প্রতি আক্লেপ করিয়া কত বলিতেছেন। পীরিতি ক্রিলেন, খামকে পাইলেন না। কিন্তু তাহা বিল্যা সেই পীরিতি ত্যাগ করিতে ইচ্ছুক নহেন, ত্যাগ করিবার উপায়ও নাই।

প্রেমে বাহার এত তন্ময়তা, যাহার প্রেম এত মধুর, এত গভীর, এত বিশুদ্ধ, ক্রীভগবান্ কি ভাহার আশা পূর্ব না করিয়া থাকিতে পারেন? মহারাদে রাধারুক্ষের নিলন হইল। রন্দাবন-লীলার অবসান হইল। জ্রীক্ষণ মথুবায় যাইবেন, এই কথা বখন কোন সধী রাধিকাকে বলিল, তখন রাধিকা তাহা বিখাস করিতে পারিলেন না। শ্রীক্ষণের মথুরা যাওয়া অসম্ভব। ভাহাকে ছাড়িয়া জ্রীক্ষণ কি মথুরায় যাইতে পারেন ? রাধার হৃদয়ে বে ঠাহার আসেন। তিনি যে রাধিকার হৃদয়ে বাঁধা আছেন। কেমন করিয়া কোন্পথে থাইবেন ?

"এ বুক চিরিয়া যবে বাহির করিয়া দিব তবে ত খাম মধুপুরে যাবে।"

কিন্তু হায়! যখন শুনিলেন, নিশ্চয়ই খ্রাম মধুপুরে যাইতেছেন, তখন যেন তাঁহার মাধায় বজাগাত হইল। তিনি ক্রিফাকে কত অফুনয় করিলেন, কত অঞ্পাত করিলেন। নিষ্ঠুর কানাই তাঁহার কথা শুনিলেন না, মথুরা চলিয়া গেলেন। তখন—

"পোনার পুতলি অবনী উপরে
যেন খন গড়ি যায়।
নিখাস হতাশে নাসার মুকুতা
ধেলিছে ছলিছে বায়॥"

শ্রীক্লফ মপুরায়, আর শীমতী রাধিকা রন্দাবনে। রাধিকা ধাঁহার বিরহ ক্ষণমাত্রও সহু কঞ্চিত পারিতেন না, তিনি আবা "গিরি নদী আঁতর ভেলা।" এই নিদারণ বিচ্ছেদে রাধিকা বড়ই মর্মপীড়ি তা হইলেন। কাহারও মুখে কুঞ্চনাম শুনিলে তিনি তাহার চরণে ধরিয়া রোদন করিতে লাগিলেন। সে যখন কুঞ্চনাম করিতেছে, তখন অবশ্রই কুঞ্চের সংবাদ দিতে পারে। হায়় বিষম শোঁকের আবাতে বাণবিদ্ধা কপোতীর ভায় রাধিকা ধ্লায় পড়িয়া আছেন। "সোনায় পুরলি যেন গ্লায় লোটায়।" বিষম বিরহজ্বে তাঁহার আঁথি ছল-ছল। স্বীগণ তাঁহারক চড়্দিকে বসিয়া আছেন। তাঁহারা এক একবার শ্লাম-নাম করিতেছেন, অমনি রাধিকা চমকিয়া উঠিতেছেন শি

আবার তখনই বৃদ্ধা হইতেছে। স্থীপণ ব্যক্ষম করিতেছেন, চন্দন লেগন করিতেছেন, কিন্তু যে অগ্নি অন্তরে আনিতেছে, তাহা বাহ্ লৈত্যে নির্কাণিত হইবে কেন ? রাধিকার দলনী দলা উপস্থিত। স্কলেই তাবিল, বুলাবন-বিলাসিনী বৃথি বুলাবন ত্যাপ করিয়া বান । স্থীপণ বৃত্তি করিয়া রাধিকার এই অবস্থা লানাইতে মধুবার একক্ষের নিকট দ্তী প্রেরণের সংকল করিলেন। রাধিকা গুনিলেন। গ্রামিকার চৈত্ত হইল। তিনি স্থীকে একটিমাত্র তির্কারের কথা বলিলেন ;—

"এ কথা কহিও ভারে। সে গুল বুঝিয়া থে জন মরিবে সে বধ লাগিবে ভারে॥"

পরক্ষণেই আবার সধীকে মিনতি করিয়া বলিলেন ; —

"পৰি, কহিবি কামুর পার।
সে স্থ-সান্তর দৈবে শুকারল
তিয়াৰে পরাণ যায়॥
স্থি, ধরিবি কামুর কর।
আপনা বলিরা বোল না তেজবি
যাগিয়া লুইবি বর॥"

चाव त्राधिकात मत्न ভावास्त्र डेशिष्ट्र । चाव कृषिन श्रुषिन श्रेण दिशा (वाद हरेएछह। चाव,---

"চিকুর ফুরিছে বসন খণিছে
পুনক খোবনভার।

খাম অৰু জাঁথি সখনে নাচিছে
ছলিছে হিয়ার হার।
প্রভাত সময়ে কাক কোলাকুলি
আহার বাটিয়া ধায়।

পিরা আসিবার নাম সুধাইতে উডিয়া বসিল তায়॥

মূৰের তাব্দুল প্ৰিয়া পড়িছে দেবের মাধার স্থল।"

আৰু সৰ সুৰক্ষণ। আৰু প্ৰীকৃষ্ণের আগমন হইবে। রাধিকার মনে উল্লাসের সীমা নাই। সধী আসিয়া সংবাদ দিলুবে, স্কিক্ষ আলিয়াছেন। অমনি---

> "চকিত-নয়নে চাহিতে স্থনে ্ৰসমূৰে দেশল শিলা ৭'

ি সকল দুঃখ, সকল অভিযান দুরে গেল।

''এস এস বলি হুটি বাহ তুলি হাসিয়া কহয়ে কথা।"

জীক্ষাকে নির্জ্জনে পাইয়া রাধা স্থ্রাসিত বারি দিয়া তাঁহার চরণ ধৌত করিলেন। নিল কেশরাশি দিয়া তাঁহার চরণ মুছাইয়া তাঁহাকে বিচিত্র পালকে বসাইলেন। এইবার মনের কথা বলিতে লাগিলেন,— "বঁধু, বহুদিন পরে আসিলে, প্রাণ গেলে ত আর দেখা হইত না। অবলা বলিয়া তোমার বিরহ-বন্ধণা স্থ করিতে পারিয়াছি। পাষাণ হইলে গলিয়া যাইত। বড করেই আমার দিন কাটিয়াছে, কিছ ভাছাতে হঃৰ করি না, তুমি ষধুরায় ভাল ছিলে জানিতে পারিলেই আমি স্থবী। আমার আর স্থব-চঃৰ কি । তোমার স্থাবট আষার সুখ। এখন তোমাকে পাইয়াছি; আর আমার কোন গুঃখ নাই। এখন কোকিল গান করুক, ভ্রমর তাহাতে ए। न धक्क, मनग्र अवन सम्म सम्म वहक, अवान हत्य छेनिछ इछक। हेहादा छामाद विदृष्टमसाग्र वह कहे निग्नाहिन. এখন ত আর কিছ কষ্ট দিতে পারিবে না।" প্রথম মিলনের আবেগ শাস্ত হইলে রাধিকা বলিতে লাগিলেন;—

বঁধু, কি আর বলিব আমি।

মরণে জীবনে कन्य कन्य প্রাণনাথ হৈও তুমি॥ তোমার চরণে আমার পরাবে বাঁধিল প্রেমের ফাঁসি। সব সমর্পিয়া একমন হৈয়া নিশ্চয় হইলাম দাসী॥ ভাবিয়া ছিলাম এ তিন ভুবনে আর মোর কেহ আছে। রাধা বলি কেহ খুধাইতে নাই দাঁড়াব কাহার কাছে। এ কুলে ও কুলে ছকুলে গোকুলে আপনা বলিব কার। শীতল বলিয়া শরণ লইফ ও হটি কমল-পায়॥ না ঠেলহ চলে व्यवना व्यवतन যে হয় উচিত তোর। ভাবিয়া দেখিক প্ৰাণনাথ বিনে গতি যে নাহিক মোর ৷ আঁৰির নিমিথে यपि नाहि (पवि তবে সে পরাপে মরি।

পরশ-রতন

গলায় গাঁথিয়া পরি।-- ৭৩৯ পদ

চণ্ডীদাস কহে

এমন পৌরতি কন্তু দেখি নাই শুনি।

পরাণে পরাণ বাঁধা আপনা আপনি॥

হুঁতু কোড়ে ছুঁতু কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিয়া।

তিল আধ না দেখিলে যায় যে মরিয়া॥

জল বিনে মীন জন্ম কবত্ত্বা জীয়ে।

মানুহে এমন প্রেম কোধা না শুনিয়ে॥
ভাস্থ কমল বলি, সেও হেন নহে।

হিমে কমল মরে, ভান্থ সূথে রহে ॥

চাতক জলদ কহি, সে নত্ত্েলনা।

সময় নহিলে সে না দেয় এক কণা।

সুসুমে মগুপ কহি, সে নহে তুল।

না আইলে ভ্রমর আপনি না ধায় সূল॥

কি ছার চকোর চাঁদে, ছুঁতু সম নহে।

ত্তিপুস্বনে হেন নাই চণ্ডীদাস কহে॥

শ্ৰীকৃষ্ণ।

যিনি ক্লপাপরবশ হইয়া ঐবের উদ্ধাব্দের জন্ম গোলোক ছাড়য়া ভূতলে আসিয়া, রুলাবন-লালা প্রকট করিয়ং-ছিলেন, বাঁহার রূপ-গুণ ও কার্য্যকণাণাদি বর্ণনা করিতে মানব-লেখনী অক্ষম, সেই অচিন্তা, অব্যক্ত শ্রীকৃষ্ণ চণ্ডীদাদের প্রস্থের নায়ক। এরূপ নায়ককে চিত্রিত করিতে চেটা করা কম সাহসের কর্ম নহে। কিন্তু চণ্ডীদাদ সে সাহস করিয়াছেন এবং সেই অসীম গুণাধারের মহিমার কথিকিৎ কর্মনা করিতে ক্রুত্যার্য্যও হইয়াছেন। শ্রীকৃষ্ণ রুল্মাবনে প্রেমময়। তিনি বশোদার বাৎসল্য-প্রেম, গোপীগণের পতি-প্রেম, রাখালগণের স্থা-প্রেম সম্পূর্ণরূপে অধিকার করিয়াছেন। বেগবতী উন্নাদিনী স্রোত্মগুলী যেমন কোন দিকে লক্ষ্য না করিয়া কেবলই সাগর-সঙ্গমে ছুটিতেছে, তেমনই ইহাদের সকলেরই বেন অন্ত কোন লক্ষ্য নাই, সকলেরই ক্ষ্মের প্রেম মহাবেগে একমানে কেন্দ্র শিকে আকৃষ্ট হইতেছে। তাই আমরা রুল্মাবনে প্রেমের খেলা ভিন্ন আর কিছু দেখিতে পাই না। রুল্মাবনে শ্রীক-জন্ত বৃন্ধ-লতাদি সকলেই শ্রীকৃষ্ণকৈ ভালবাসে। তাই তিনি যথন বুন্ধাবন ত্যাগ করিয়া মথুয়ায় গমন করেন, ভ্রম বৃন্ধাবনে বে শৌকপ্রবাহ বহিয়াছিল, তাহার তুলনা জগতে কথন দেখা যায় নাই।

"(ধহুগণ সব করি হাখা রৰ
মণ্রা মুখেতে ধার।
ধহুর বাছুরি বিমোগ পাইয়া
সেহ হুধ নাহি খার॥
পুদ্ধ উচ্চ করি হারে পরিহরি
মণ্রা গমন দিপে।
বুধা সে রসিক নাগর-শেখর
সে দিক গমন ভাগে।

রোদ্ধ বেদন 역의 필위기이 আহার নাহিক পার। ডালে বসি ধগ ভাষ ভাষ করি ব্রাতি দিন নাম লয়॥ মুগগণ অতি েয়ে আছে কভি नग्रान वरात्र (नात्र। ক্ষের বিরহে পেরে শতি মোহে এ দব হইলা ভোর। সেই পিকরবে **७ १** भगरा শুনিতে আনন্দ বড়ি। নাহিক আগদ সে সৰ শ্বদ সে ভাল চলল ছাডি॥ ভ্ৰমন্ত ভ্ৰমন্ত্ৰী সদাই ওঞ্জির সে নাহি শবদ করে। চকোর ডাত্তকী চাতক চাতকী তাহা ना भवन वरन ॥ শুক শারী গণি হংস হংসিনী **छादा ना भवन ५८क ।** নিশ্বদ হই নিরস্তর রোই না জানি কোথার থাকে # পুরবাসী বত বুবা ৰুদ্ধ বাল ৰত। শোকেতে আকুল বিয়োগ স্কল তাহা বা কহিব কভ।"

যাঁহার অনন্ত প্রেমের শতাংশের একাংশও চিত্রিত করিতে চণ্ডীছাস সমর্থ হয়েন নাই, আমি তাঁহার কি পরিচয় দিব ? যাঁহার মহিমা কীর্ত্তন করিতে ঝবিগণেরও জিলা অক্ষম হইয়াছে, আমি সেই মহাপুরুষকে নময়ার করি।

> নমঃ পুরতাদধ পৃষ্ঠতন্তে নমোহত তে সর্বাত এব সর্বা। অনতবীর্ব্যামিতবিক্রমত্বং সর্বাং স্থাপ্রোবি তত্যেসি সর্বাঃ॥

যশোদা।

বশোদা-চরিত্র অভণেও চণ্ডীদাস কম কৃতিও দেখান নাই। বাংসল্য-প্রেম বৃত্তিমান্ হইয়া বেন তাঁহার বশোদাকে আশ্রম করিয়াছে। শীক্ষ রাখাল-বালকগণের সলে ধেমু চরাইতে বনে বাইবেন, বশোদার মনে সানা ভর হইতেছে। ছুট কংসের চর স্থাই ক্লের অনিষ্ট-সাধনের লগু ফিরিতেছে; না লানি, কখন কি বিপত্নটায়। ভাগার ক্লফ অতি শিশু, পদ্মুগ স্থাতি কোমল তুল্ছিয়ে ক্লত হইতে পারে। ক্লেকর শ্রীর নবনীত তুল্য কোবল, ভাত্বর, ভাগে পাছে বা পলিয়া যার। কিন্ত রাথাল-বালকপণ ছাড়িবে না, ক্লঞ্চকে সলে লইবেই। অগত্যা বনোষতী প্রীক্রককে গোর্চে বাইতে অহমতি দিলেন। কিন্ত তাঁহার ক্লঞ্চের প্রতি যন্ত লইবার কল্প বল্রামকে কতা অহমর, কত বিনয় করিলেন। বলরাম বর্নে বছা, ক্লঞ্চ শিশু। তাই বলরামের করে ক্লঞ্চকে সমর্পণ করিলেন। ক্লেম্ব অঞ্চলে ননী ছামা বাঁধিয়া দিরা বলরামকে অহরোধ করিলেন যে, বেন ক্লগার সমর ক্লফকে থাওয়ায়। বলরাম বেন সর্কার কাছকে সল্পুথে রাখে। গোর্চবিহারী ক্লফের বেণুর রব গুনিতে না পাইলে যশোলার প্রাণ ব্যাহ্ল হয়। তাই বলিয়া দেন, বেন রাখালগণ গোধন লইয়া দুরে না যায়, বেন যমুনার নিকটেই থাকে। প্রক্লম বন হইতে প্রত্যাগমন করিলে বণোলার আনন্দের সীমা থাকে না।

"সোনার পুতলি বনে পাঠাইর।
আছিল চেতন হরি।
মরা তরু বেন বরুব পাইলে
সে বেন মঞ্জরি সারি।।
কতক্ষণ হেরি সে চাঁদ-বদন
তবে সে জুড়াই প্রাণ।
আঁথির তারাটি খসিয়া গেছিল
পুন সে বৈঠল ঠাম।।"—৫৩৪ পদ

ৰন হইতে বৰ্থন প্ৰীক্লঞ্ ওছমুৰ্থে ফিরিয়া আসেন, তখন বশোদার ভদয় ফাটিয়া বায়।

"আহা মরি মরি পরাণ পুথলি বাছনি কালিয়া সোনা। কত না পেয়েছ ক্ষুধায় পাঁড়িত বনে ষেভে করি মানা।।"— ১৭৭ পদ

ৰে ক্লককে রাজি কাগরণ করিয়া তিনি ক্লীর-ননী থাওয়ান, তাঁংার সেই ক্লফ বনে গিয়া ক্লুখায় পীড়িত চ্**ইরাছেন, ইহা ভাবিতে য**শোদার বড়ই কট্ট হয়। তথনই মনে মনে প্রতিজ্ঞা করেন, ক্লফকে কার বনে যাইতে দিবেন না। যদি নন্দ যোব আপত্তি করেন, তবে তিনি ক্লফকে লইয়া কোথাও চলিয়া যাইবেন।

> "ভোমারে গই। আন দেশে বাব না রব নক্ষের ঘরে। ভোমা হেন ধন আর কোধা পাই বিধাতা দিয়েছে মোরে।।"

ৰ বেন স্বেৰ্ময়ী মাতা বখন গুনিলেন যে, তাঁহার ক্লঞ্চ তাঁহাকে ছাড়িয়া মথুরা ৰাইতেছেন, তখন তাঁহার কি দাৰা হইল, তাহা সহজেই অল্পনেয়। বে ক্লঞ্চ বনে পেলে তিনি স্থা্যের নিকট প্রার্থনা করেন, বেন তিনি প্রধার ক্রনে তাঁহার কানাইকে ক্লিট না করেন, বনদেবতার নিকট কাতক্রতাবে কানাইকের কুশল যাক্লা করিতেন, পবন-দেবকে মিনতি করিয়া বলিতেন, খেন তিনি মূহ্মল বহিয়া তাঁহার কানাইকে ব্যক্তন করেন, সেই ক্লঞ্চ তাঁহাকে ত্যাগ করিয়া চলিতেছেন, এ হুঃধ কি রাধিবার স্থান আছে গ্রহার, তাঁহার অক্টিটে এমন কেন ঘটল ? দেবী আনাধনা

করিয়া তিনি ক্লফ হেন ধন পাইয়াছিলেন; হয় ত পূজার কোন ক্রটি হইয়া থাকিবে, তাই তাঁহার কপালে এই ্বিড়খনা ঘটল। রাণী আকুলহাদয়ে কাঁদিতে লাগিলেন,—

> ''কোলে লয়ে যাহ্মণি বদন চুম্বয়ে রাণী দর দর বহে প্রেমবারি।

> ধরিয়া গোপাল-করে কাতর হইরা বলে

इरे वाह धतिश्रा भगति॥

শ্রীমুধমণ্ডল দেখি তাহাতে নয়ন রাখি

পড়ে ব্লাণী মুরছিত হয়ে।

যশেদা রোহিণী কান্দে স্থির নাহিক বান্ধে

(गाभी द्रार हाँ प-मूथ (हरद्र ॥"- १६० भन

আবার যখন মধুরা হইতে নদ্দ খোষ ফিরিয়া আসিলেন, কিন্তু ক্লঞ আসিলেন না, তখন যশোদার সকল তরসা গেল। কাতর্ম্বরে রাণী কাঁদিতে লাগিলেন;—

> ''অনেক তপের ফলে বিধি আনি দিল মোরে সে হেন আদর নটরায়।

> কোন অপরাধ হল জননী ছাড়িয়ে গেল

হেনক আমার ভায়।।

সে হেন নবীন তমু বেন পদ কর ভাতু

হিৰুলে গঞ্জিত বিষধন্তে :

নৰ্থন তহুখানি অঞ্জনে দণিত শ্ৰেণী

नश्न-क्यम भग्रद्र।।

কিবা দে মধুৰ হাসি মধু ঝরে রাশি রাশি

নবাঁন কোকিল জিনি বোলে।

করিওও হল জিনি বাহর সে সুবলনি

তা দেখি সদাই মন ঝুৱে॥

(त्र (इन यानव थरन व्यक्ति काहेरल (कान्थारन

नमारे (न जूबरा व्यत्रता

বে মোর গরেছে মন এ কথা জানিবে কোন

এ কথা সে কহিব কাহারে॥

কর ভরি দিতে সর সুখ দেখি শশধর

বদন চাহিয়া যবে আদি।

ভাবিতে খণিতে দেহ মলিন হইল দেহ

মনে মোর পড়ে নিশি দিশি ⊪—৩৮০ পদ

कुन्म ।

চঙীদাসের অধিকাংশ পদই শগ্-এিপদী ও দীর্ঘত্তিপদী ছব্দে লিখিত। মধ্যে মধ্যে চতুর্দশ অকর, অষ্টাকর.
স্থাকর ও একাদশ অকর প্যারও আংছে। কথন কথন নৃত্ন ছন্দও ব্যবহার করা ইইয়াছে। ৪১০,৫০২,৫০৭,৬২০,৬২১,৬৫২ সংখ্যক পদ দেখুন। কোন বৈহুত্ব-কবি এতগুলি ছন্দ ব্যবহার করিয়াছেন বলিয়া মনে হয় না।

রাগাত্মিক পদ।

চঙীদাদের সাধন-প্রণাদী যে কি ছিল, তাহা বলিবার সাধা আমার নাই। সে সাধন-প্রণাদী গুরুর উপদেশ ভিন্ন বৃথিবার কাহারও ক্ষমতা নাই। তবে চণ্ডীদাদ যে তান্ত্রিক প্রণাদী অনুসারে রাধারুফের ভন্ধনা করিতেন, তাহা আনেকটা বৃথা যার। তাঁহার রাগান্ত্রিক পদগুলিতে এর সাধন-প্রণাদী অতি সাবধানে বর্ণিত হইয়াছে। আমি বে এই পদগুলির টীকা করিতে বা এই সাধন-প্রণাদী কি, তাহা বলিবার আদে। চেষ্টা করিলাম না, তজ্জু আমি পাঠকগণের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিতেছি। আমি অক্ষম।

চণ্ডীদাস-আরাধিতা বিশালাকী।

চ তীলাস গাহিয়াছেন ;---

"নালুবের মাঠে

গ্রামের নিকটে

বাঙলী আছুরে যথা।"

এখন আর বিশালাক্ষীর মন্দির প্রামের মাঠে নাই। এখন তাঁথার মন্দিরের চহুপার্থে লোকের বস্তি হইরাছে। প্রামটা দেবী-মন্দিরের পশ্চিমে ছিল, ক্রমে প্রধারে সরিয়া আসিয়াছে, ইহার প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে। বিশালাক্ষীর মন্দির প্রাচীন নহে, আধুনিক ধরণের সামান্ত একতলা ইউকালয় মাত্র। মন্দিরের সন্মুথে প্রবেশবারে করেকটি শিবমন্দির আছে; সেগুলিও খুব প্রাচীন বলিয়া মনে হয় না। ডবে দেবীর বাড়ীর সন্মুথে প্রকাশ মৃত্তিকাল্ড প্রথাছে। লোকে ইহাকেই চণ্ডাগাসের ভিটা বলিয়া থাকে। কিন্তু চণ্ডাগাস ধনী লোক ছিলেন না যে, তাঁহার বাড়ীর ভ্যাবশেষ এত বড় হইবে। আমার মনে হয় বে, ঐ ভুপটিই বিশালাকী দেবীর প্রাচীন মন্দিরের ভ্যাবশেষ।

দেবীমূর্ত্তি।— স্বাড়াই পোয়া পরিষিত একখানি কাল পাথরে খোদিত। মহাদেব বসিয়া আছেন; তাঁহার নাভিদেশ হইতে একটি পদা বাহির হইরাছে, সেই পদোর উপর চতুর্ত্তা দেবী মৃর্ত্তি আসীনা। দেবীর বাম পদ পদোর উপর ও ছক্ষিণ-পদ মহাদেবের উরুদেশে স্থাপিত। দেবীর তিন হাতে বীণা ও দক্ষিণের ছইট হাতের মধ্যে একটিতে স্বপমালা।

পূজাপদ্ধতি :---ধ্প, দীপ, গন্ধ, নৈবেদ্য, পূষ্প এই পঞ্চোপচারে দেবীর নিত্য পূজা হয়। দিবাভাগে আরভোগ • হয় এবং সন্ধার সময় আরতি ও শীতল হয়। ভোগে মংস্য দেওয়ার রীতি আছে। পূজা আমুমত। শারদীয়া নবমী পূজার দিন বোড়শোপঠারে দেবীর পূজা হয় এবং ছাগ, মেষ ও একটি মহিষ বলি হয়। কিন্তু সাধারণতঃ বলি হয় না।

(मरीत धान।

ঁ তব্ৰসারে বিশালাকীর এই ধ্যান লিখিত আছে ;—

"ধ্যানেদেবীং বিশালাকীং তথকাৰ নদপ্ৰভাম । ;

বিভূজামখিকাং চতীং ৰড়গ-ৰেটকধারিশীম্ ॥

নানালকারস্কাণ রক্তাকরধরাং গুডান্।
সদা বোঙশব্দীয়াং প্রসন্নান্তাং ত্রিলোচনান্।
মৃত্যালাবলীরমাাং পীনোরতপ্রোধরাম্।
শবোপরি মহাদেবীং জটামুক্টমণ্ডিতাম্।।
শক্রক্ষমকরীং দেবীং সাধকাভীইদান্নিকাম্।
সর্ক্বেনিভাগ্জননীং মহাসম্পৎপ্রদাং স্মরেও।।

किछ (य शानि नाम त्यत (नवीत शृका रस, णारा अहे ; -

''ধাত্যেদেবীং বিশালাক্ষীং শারদবদনাং
চতুর্ভাং বীণা চণ্ডিকা দেবীং স্প্রসন্নাং বর প্রদাং
ত্রিহন্তে বীণা চৈব এক হত্তে জ্বপায়িনী
বামপদ পদাসনে দক্ষিণপদ শিবোপরি
সচন্দনবিত্বপত্রং পুপাং ওঁ হাং বিশালাক্ষীদেবৈর নমঃ।''

মুর্থ পূজকের দারা খ্যানটি বিক্বত হইরাছে, কিন্তু উপায় নাই।

চণ্ডীদাদের অপর গ্রন্থ।

চণ্ডীদাস-প্রণীত ''রাধিকার মানভঞ্জন''ও '' জীক্ষ-কীর্ত্তন'' এই হুইখানি পুলির সংবাদ পাওয়া পিয়াছে। প্রথম পুলিখানি এখনও মুদ্রিত হয় নাই। বঙ্গায়-সাহিত্য-পরিষং '' জীক্ষফকীর্ত্তন'' পাইয়াছেন এবং ছাপিতেছেন। উহার মূলাংশ ছাপা ইইয়া গিয়াছে এবং পরিশিষ্টাংশ ছাপা ইইতেছে। শীঘ্রই প্রকাশিত হুইবে।

बीनोनद्रश्न मुस्थानायाय ।

চণ্ডীদাস।

শ্রীকৃষ্ণের পূর্বরাগ।

াগ—অক্তাত।

এক দিন গোচাবণে সকল সুখা সুনে বসি এক ভরুয়ার ছায়। নন্দের নন্দন হরি কহে কিছু মৌন ধরি স্থবল স্থার পানে চায়॥ স্থা তে, কহ দেখি কি করি উপায়। ৫ হিয়া কৰে কেন মত সহিতে না পাৰি এত নিরম্বর জলিছে ঠিয়ায়॥ সদয়ের কথা জান আমার বচন শুন কহ দেখি আমার মবম। মবম বাথিত তুমি বি আর বলিব আমি ১০ নয়ানে হয়েছে এক ভ্রম॥ অপূর্ব্ব সে অক্সাতে দেখিল নয়ানভিত্তে পূর্ববাপরে যা দেখিল ভাই। শুন স্থামন দিয়া যেমন করিছে হিয়া শ্রবণ-পরশ কিছু কই। পূর্ব্বাপর যা দেখিল তাহা কিছু রাগ হইল সেই রূপ পুর্বরাগ হল : পূর্ববরাগ আগি হেন জ্বলিয়া উঠিছে যেন ইহার উপায় কিছু বল। ্বৈই হৈ<mark>তে তমু মো</mark>র মরমে হয়ে*ছে ভোব* ১০ ्**ञ्यू भन म**न देशम हल ॥

গাচন্দ্রিতে পর দিনে ধবলী চলিলা বনে গেল বৃকভান্তপুর দিয়া। দেখিল ধবলী নাই খুঁজিল অনেক ঠাই অনুসারে চলিল পাঞ্জিয়া॥ দেখি সে খুরের চিচ্চ রতি যাই ভিন্ন ভিন্ন পদ অমুসাবে গেল চলি। রকভান্তপুর বনে আনের ধেমুর সনে ধবলা মিলিয়া গেল ভালি॥ তাঁহা যে দেখিল ভাই সক্থা কথন এই ৩০ কহিতে উঠয়ে মনে রাগি। ছায়া সম[্]তা দেখিল বাহিব হইয়া গেল বুকভান্ন মহলেতে উগি॥ মহল ছাড়িয়া আসি সঙ্গে সহচরী দাসী কনক গাগরি লই কাঁথে। ধনীর রূপের ছট। কোটী চাঁদ জিনি ঘট। কত হ্রধা বরিখয়ে মুখে॥ স্বপ্ন সম দেখি তারে ছায়ার সমান পুবে মোর অঙ্গে মাভা আসি বাজে। চণ্ডীদাস কহে ভাগে শুন প্রভু যুদ্ধনাথে ৪০ এ কথা বুঝিবে মান কাজে॥ ৬। হিয়া[°]করে কেন মত-মন কেমন করিতেছে। , , अथम अनुष्रमकारङ कर्मा (य किन्नभ हाक्स)

্উপস্থিত হয়, প্ৰণ্ড্বী তাহা বৃ'কতে পানে। বা

২ং। শ্ৰবণে অৰ্থাৎ কৰে স্পৰ্নবোগ্য কিছু বলি অৰ্থাৎ ভোমাকে কিছু গুনাই।

১৮। আগি অগ্নি।

২০। মর্মে --- স্থদ্পত ভাবে। ভোর - বিহ্বল।

२>। हन--- हक्षन्।

२৪। দেখিল, খুঁজিল—দেখিলাম,খুজিলাম। এরপ প্রয়োগ প্রাচীন গ্রন্থে বিরল নহে।

२८। पाँकिया-पाँक वर्षा प्रपिष्ठ व्यक्ष्मवन कविशा।

১৬। রহি ধাই ভিন্ন ভিন্ন—পৃথক্ পৃণক্ **অর্থাৎ** এক একটি পদচিহ্ন অফুসরণ করিয়া চলিলাম।

৩>। রাগি - অমুরাগ, প্রেম।

৩০। উগি—উপস্থিত হইয়া।

ot । गामति--कनमी ।

৪১। আন কাজে—অফ কোন ঘটনায়।
ইহাতে স্বল কর্ত্ত মিলনের আভাগ দেওয়া
ইইতেছে। ৪৪ পদ দেখন।

ৰ কানজা।

মগন কবিয়া গেল সে চলিযা

সোনাব পুতলি কায়া।

তাতে নীল শাড়ী ভেদিয়া মাচল রূপ অনুপম ছায়া॥

বসন ভেদিয়া রূপ উঠে গিয়া যেমন ভডিং দেখি।

লখিতে নারিম্ব কেমন বন্ধন লখিয়া নাহিক লখি॥

কি মার কহিব নয়ান চঞ্চল নানা আভেরণ গায়।

নানা পরিপাটী রসের সৌরভে লাখ লাখ অলি ধায়॥

চলিল যখন ্দেখিল ভখন

গমন হংসিনী প্রায়।

আপন গেয়ানে না দেখি নয়ানে . ১৫ এমন রূপের কায়॥

ه ډ

সোনার নূপুর বাজয়ে মধুর পঞ্চম শবদ করে।

চলিয়া যাইতে সে মন্দগামিনী হেলিয়া হেলিয়া পড়ে॥

থেমত কেশরী নিতম্ব মাঝারি ঘটের মটকে পাই।

ঐছন দেখিফু মধুর মূরতি আপন ন্যানে চাই॥

হাসিতে অমিয়া পড়ে কত শত ২৫ দেখিলাম নয়ান কোণে। যেমত দেখিল্য নাজার কুমারী

২-২ : রমণী দেখিতে ঠিক সোনার পুত্লের স্থায়;
 দে আমাকে অফুরাণে তুবাইয়া. অর্থাৎ
আমার স্থামে প্রবল অফুরাণ সঞ্চার কনিয়া
দিয়া চলিয়া গেল।

০ চ তাহার পরিধানে নীল শাড়ী; সেই শাড়ীর আঁচল খেদ করিয়া তাহার অফুপম রূপের ছটা বাহির হইতেছে।

গ। লিখিতে – শক্ষা করিতে; দেখিতে ।
লিখিয়া নাহিক ল'গি— দেখিয়াও দেখিতে পাই
লাম না।

: १। (श्रांत--काता

50

২০ ২২। "নিতম মাঝারি" অর্থে কটা না করিলে উপায় নাই। তাহার কটা সিংহের কটার জায় ক্ষীণ। ঘটের মুঁটকে অর্থাৎ শিরোদেশে ' বিদ্ধাপতা দেখিতে পাওয়া যায়। 'মুটক' বোধ হয় মুকুট শব্দের অপত্রংশ। কিম্বাপটের থে অংশ মুটকে (মুষ্টিতে) ধরিতে পারা যায়, বিষ্কাশ্যক অংশ মুটকে (মুষ্টিতে) ধরিতে পারা যায়, ব

৵ १ है।

দেখিয়া মুরতি রূপের আকৃতি মরমে লাগিল ভাই। যেই সে দেখিল তথন হইতে কিছু না সন্ধিত পাই॥ भवनौ लहेगा আইফু চলিয়া শুনত সুবল স্থা। দেই নবরামা আর পুনবেরি কখন হইবে দেখা॥ কহিল মরম তোমার গোচ্যে শুন হে সুবল তুমি। > ~ মর্ম বেদন জানে কোন জন বিকল হটল সামি॥ সেই কথা মোর মনে পড়ি গ্লেষ কহিব কাহার আগে। কালি হতে মন 🥒 কেমন করিছে ১৫ হৃদয় ভিতরে জাগে॥ শুইতে নাহয় নিঁদের আলিস क्षा क्या रान पृत्त । নিরবধি হন্দে **সে**ই সে ভাবনা थाकि थाकि मन बुद्ध ॥ 🛷 🐎 💛 ३० कि इन अस्टर् হিয়াজর জর বিঁধল সন্ধান শরে ৷ জর জর কৈল **ারাণ পুতলি** মন সতঁহাতী বুরে ॥ ় চণ্ডাদাস বলে শুনহ রসিক 20 মাগর চতুর কান। **२**इटव एउम করিবে পরশ ইহাতে নাহিক আন॥

পুনবেরি--পুনর্কার
 ১৭। নিদের আলিস--নিদ্রার আলস্ত । বুম্ হয় না ।/
 ২১-২৪। মন্থের শ্রবিদ্ধ হইয়া আমার ১৮য় ও মন
কজ্জিরিত হইয়াছে। আমার মন মৃত হতীর
ভায় উল্কুঅল হইয়াছে।

8

9151

নবান কিশোরী মেংহর বিজ্ববি চমকি চাহিয়ে গেল। সঙ্গের সঙ্গিনী সকল কামিনী ততহি উদিত ভেল। मरे. জनमिएए एमि नांग्रे (श्न नांती। a রঙ্গিম ভঙ্গিম ঘন সে চাহন গলে সে মোডিম হারি॥ গ**ঙ্গের** সৌরভে ভ্ৰমরা ধাওয়ে ঝন্ধার করয়ে যাই। অঙ্গের বসন ঘুচায়ে কখন ১০ স্বনে ঝাঁপয়ে তাই। মনের সহিতে মরম কৌতুকে স্থীর কাছেতে যাই। গ্রাসির চাহনি দেখালে কামিনী পরাণ হারামু ভাই॥ চলন ভক্তিম অতি স্তরঙ্গিম চাপটিলে জীবন মোর। অঙ্গুলির আগে ठांप (य असारक পড়িছে উথলি জোর॥ চাহে যাহা পানে वधर्य भन्नार्ग २० দারুণ দরশি ভার। হিয়ার ভিতরে কাটিয়া **পাঁজ**রে विंधिता वांग (व कांत्र॥

কর কর হিয়া রহিল পড়িয়া

' চেন্ডন নহিল মোর। ২৫

চণ্ডাদাস করে ব্যাধি সমাধি নহে

দেখিয়া হইলাম জোর॥

১। विकृति-विद्यार।

৩-৪। সঙ্গের সহচরী কামিনীগণের মধ্যে উপস্থিত হইন। শ্রীকৃষ্ণ দেখিতেছেন, রমণী বিজ্ঞার গ্রায় তাঁহার চক্ষু কলসিয়া স্থীগণের সহিত মিলিত হইলেন। ততহি — তাহাদের মধ্যে।

१। महे-मथा; जीत्मात्कत्र मत्यायन नत्र।

७। नाना व्रक-छश्न कविशा चय घन চাহিতেছে।

৭। মোতিম হারি--মতির হার।

১>। 'সখন' এই শব্দের পরিবর্তে কথন' এই পাঠও আছে। কিন্তু 'সখন' পাঠই সঙ্গত। কথন গায়ের কাপড় গুঢ়াইতেছে, আবার তাড়াতাড়ি চাকিতেছে।

১২-১৫। মনের সহিতে মরম কৌতুকে স্থির কাঁথেতে বাচ। হাসির চাহনি দেখালে কামিনী প্রাণ হারাস্কু তছ॥--পাঠাস্তর।

১৬। পাঠাস্তর-চলন ভঙ্গা অতি সুরঙ্গা।

১৯। উथानत পরিবর্তে উছলি পাঠও আছে।

२>। চাহনি--পাঠाश्वतः, प्रति- पृष्टि।

২৩। জার---বাহাতে জজর করে--মার---পাঠান্তর।

२७। नगाधि-(भर।

২৭। ভোর-বিহবল।

nimia :

পথে জড়াজড়ি দেখিমু নাগর) স্থির সহিতে যায় ^ট

সকল অক মদন তরক হসিত বদনে চায়॥ সই, কেমন মোহিনী সে। যদি পাই সহায় এমনি হয তা সনে করি যে লে॥ দীল মুকুতার হার লম্বিত শোভিত দেখি যে ভাল। যেন ভারাগণ উদ্ধিত গগন ১০ **है। एक्ट्रिया काम ॥** কুচ যে মণ্ডলী কনক কটোরি বনালে কেমন ধাতা। হাসির রাশি মনের খুসি দান করে যদি দাতা॥ চণ্ডীদাস কচে मान यमि नार्थ কি জানি মাগিবা ভাষ। তাহা না পাইয়ে অপ্যশ রহি যায়॥

०। यमनत्रत्र-भाठास्त्र।

१। (न-(नह. (श्रेय।

४-२। शार्शाश्त-

(क) নীলমুকুতা হার বেক হা শোভিত দেখিছু ভাল।

(খ) এলিত আকার মুকুতা হার শোভিত দেখিত্ব ভাল।

১০। তারাগণ যেন জালের ন্থায় চাঁদকে বেভিয়া আছে; অথবা, জাল লম্মৃত। নীল মুজ্জার আহার গলদেশে লখিত রহিয়াছে, এই মুক্তাগুলি নক্ষরের ন্থায় তাহার মুখশশীকে বেইন করিয়া আছে।

२२। कछोत्रि—वाही।

अर्ग वनारम-निर्माण कतिरम।

১৬-১৯। চঙীদাস বলিতেছেন, ভূষি ত , যাজ্ঞা করিবে; কিন্তু কি জানি, যদি গে দান না করে, তাৰা হইলে ত বড় অপৰণ থাকিয়া যাইবে। পাঠান্তর ঃ-- চণ্ডীদাস কহে বদি দান হরে

কি প্রানি মাগিবে তার।

ঠটার ঝলকে পরাণ চমকে

তিমিরে লাগরে ভর॥

b

আবাবার।

পেখিমু আপনি রুষণীর মণি ভূষণ সহিতে গায়। দেখিতে দেখিতে বিজুরি ঝলকে रिधत्रय रिधत्रय नग्न ॥ সই, চাহনি মোহিনী থোর। হেরিয়া বুঝিল মরমে লাগিল ক্লপের নাহিক ওর॥ কামের ফাঁদ বদন ছাঁদ क्तिया क्तिया काल। চুম্বয়ে টাগ ১০ কেশের আগ कितिया कितिया वाँदिश ॥ অঙ্গুলি চাপয়ে বসন খসয়ে কর সে করচে থুইয়া। মদন ক্ষোভয়ে দেখিয়া লোভয়ে কেমনে ধরিব হিয়া॥ জলের কান্ধারে কেন্দের জাধারে সাপিনা লাগিল মোয়।

এমন মাগিনী থোয়॥

হাসিতে উগারে শশী।

মরমে লাগিল পশি॥

আছুয়ে আপনি

হইল পাগলী

মুকু**ভার পাঁ**তি ২০

কেমনে কামিনী

দশনের কাঁতি

পরাণ পুতলি

্তপু যে হিয়া রহল পড়িয়া বস্তু যে চলিল তায়। ' ' চগুীদাস কয় ফিরি দেখা হয় তবে সে পরাণ রয়॥

- ৪। বৈর্ঘ্যে বের্ঘ্য থাকে না, অর্থাৎ আলে বৈর্ঘ্য থাকে না, এফনত আমরা বলিয়া থাকি।
 পদকল্পতকতে পাঠ আছে,—"বৈরজে বৈরজ হয়" ইহার সঙ্গত এর্থ হয় কি ৽
- ে। খোর—ঈষৎ, অল্প।
- ৬ পাঠান্তর—মরমে বাধ**ত্ব ধেরি**য়া **ভূলিত্**।
- ৮। স্থানর মুখথানি যেন কলপ ধরিবার কাঁদি বিশেষ: কলপ ঐ মুখে বাধা রহিরাছেন, পণাইবার যো নাই, সেই জন্ম বেন কাঁদিতেছেন। অর্থাৎ মুখ্থানি এত স্থান যে, দেখিলেই প্রেমের উদয় হয়।
- ১ । টাগ জন্ম।
- ১৩। করচ—কটীদেশ। কাপড় ধসিয়া যাইতেছে, রমণী কটীদেশে হাত গ্রাধিয়া অঙ্গুলি ধারা চাপিয়া গাধিতেছে।
- ১४। (ऋष्टिय़--- फूक दश्र, ठकन दश्र।
- ২০। কাতি-কান্তি।
- ২>। উপারে—উল্পীরণ করে, বাহির করে। হাসিলে দম্বপংকি হইতে চল্লের ক্সায় শোভা বাহির হইতেছে।
- ২৪। পাঠান্তর ---শূন বে হিয়া রংল পদ্ধিরা বস্তু রহল তার:

তুড়ি।

বেলি অসকালে দেখিতু ভালে পথেতে যাইতে সে।

নয়ন যুগল জুড়াল কেবল চিনিতে নারিমু কে॥ সই, সে রূপ কে চাহিত্তে পারে। বসন শোভা অঙ্গের আভা পাসরিতে নারি তারে॥ বাম অঙ্গুলিতে মুকুর সহিতে কনক কটোরি হাতে। সি থায় সিন্দূর ন্য়ানে কাজর ১০ মুকুতা শোভিত নথে॥ নীল শাড়ী মোহনকারী উছলিতে দেখি পাশ। স'পিত্ব চরণে কি আর পরাণে দাস করি মনে আশ। কুচযুগ গিরি কনক কটোরি শোভিত হিয়ার মাঝে ৷ চমকিয়া যায় ধীরে ধীরে চায় ঘন না চাহে লোকলাজে॥ कि पिव छेलमा २० কিবা সে ভঙ্গিমা চলন মন্থর গতি। কোন ভাগ্যবানে পাইয়াছে দানে ভজিয়া সে উমাপতি ॥ চণ্ডীদাসে কয় মূরতি সে নয় বধিতে নাগর জনে। অমিয়া ছানিয়া যতন করিয়া গঠিল বুঝি অনুমানে।)। (र्वाम---(रामा। अमकारम-- अवमारन। ভাবে—ভাগ্যক্রমে ৷ । सिचित्रा (केवल ठक्कू क्लाइँगा (गम माल), किल চিনিতে পারিলাম না। ৬। অঙ্গের জ্যোতিতে 'বসুনধানিও শোভাষয় হইয়াছে ৷

১১। মাবে পাঠান্তর।

১৩। যথন শাড়ীট দরিয়া যাইতেছে, তথন ভাহার শরীরের পার্যদেশ দেখা যাইতেছে।

> । তাহার রূপে মৃদ্ধ হইয়া মনঃ প্রাণ তাহার চরণে সমর্পণ করিয়া মনে মনে ইচ্ছা করি**লাম যে.** তাহার দাস হইব।

১২ দানে পাওয়৷ ভি

র কিনিয়৷ পইবার সাধ্য

কাহারও নাই

— জিনিসটি যে অমূলা !

২৪-২৭। চণ্ডীদাস বলিতেছেন, এটি সাধারণ স্ত্রীমূর্ত্তি নংছ

---রক্ত-মাংসের শরীর নহে। থাঁটি অমৃত দির।
বিধাতা ইথাকে সঠন করিয়াছেন—উদ্দেশ্য ৭
নাগর-বধ।

তুঙি।

ডড়িং ববণী হরিণী নয়নী দেখিতু আঙ্গিনা মাঝে। কিবা সে দিয়া অমিয়া ছানিয়া গড়িল কোন বা রাজে॥ সই, কিবা সে স্থল্ব রূপ। চাহিতে চাহিতে পশি গেল চিতে বড়ই রসের কুপ॥ সোনার কটোরি কুচযুগ গিরি কনক-মন্দির লাগে। চূড়াটি বনালে ভাহার উপর সে আর অধিক ভাঁগে॥ কে এমন কারিগর ় বনাইলে ঘর দেখিতে না পান্ত ভারে। দেখিতে পাইথু শিরোপা যে দিথ এমতি মন যে করে। এছন মন্দিরে শয়ন করয়ে

সে মেনে নাগর কে।

30

স্ক্রদয়ে আছিল বেকত হইল 'দেখিতে পাইস্কু সে॥

হিয়ার মালা থোবন ডালা ২০ পশারী পশারল যেন। চাঁদ যে কাটিয়া চাকা যে গড়িয়া ভাহাতে বৈসাল হেন॥

মধর-স্থা পড়িছে জুদা

দশন-মুকুজা শশী। ২৫ মোর মনে হয় এমতি কর্য

মোর মনে হয় এমাও কর্য ভাহাতে যাইয়া পশি।

চণ্ডীদাসে কয় ও কথা কি হয় মরম কহিলে বটে।

সার কার কাছে কহ যদি পাড়ে তবে সে কুৎসা রটে॥

১। তরুণী বৰণী-পাঠান্তর।

দ-১১। উগ্রত স্তন দোনার মন্দিরের আয়—স্তানের উপর চুচুক (বোটা) মন্দিরের উপর চূড়ার আয় অধিকতর শোভা পাইতেছে। লাগে—বোধ হইতেছে।

১৪ ৷ শিরোপা -পুরস্কার ·

১৮। তাহার সুন্দর রূপ "চাহিতে চাহিতে পাশ গেল চিতে"; সুতরাং বাহুজ্ঞানশুত্র হইয়। তাহাকে কেবল অন্তরেই দেখিতেছিলাম, এখন বাহুজ্ঞান হইয়াছে—এখন বাহিরে দেখিতেছি।

২০-২০। পশারী - দোকানদার পশারল - বিছাইয়া রাখিল।
রমণীর গণায় মালা রহিয়ছে — দেখিয়। বোধ
হই তেছে থেম, কোন বিক্রেতা চাঁদ কাটিয়া খণ্ড
খণ্ড করিয়া ধৌবনের পণ্য সাজাইয়। রাখিয়।
দিয়াছে। হিয়ার মালা অর্থে স্তন্ত হইতে
পারে। পাঠান্তর— চাকুতে কাটিয়া চাক যে
কবিয়া।

শীগান্ধার।

ৰদন স্থানর যেন শাশধর উদিত গণনে হয়। ভটার ঝালকে প্রাণ চমকে

ভটার ঝালকে পরাণ চমকে ভিমির পাইল ভয়॥

নয়ান চাহনি বিষের গায়নি তিখিন তিখিন শর।

দেখিয়া অস্কর উপজিল জ্ব মদন পাইল ডর॥

महें, (क त**्ल कूठ्यूग (वल**।

সোনার গুলি শোভিছে ভালি ১০ যুবক বধিবার শেল॥

সাজানু লম্বিত করিবর শুণ্ডিত কনক ভূজ যে সাজে।

হেরিয়া মদন গেল সে সদন

মুখ না তুলিল লাজে॥ মাজা যে ডম্বরু সিংহিনী আক'ব ুনিতম্ব বিমান চাক।

চবণ কমলে ভ্রমরা দোলয়ে

চৌদিকে বেড়িয়া ঝাঁক॥

স্থালির মাঝে যাবক সাজে ২০
মিহির শোভিত জ্ঞন্ত ।
চণ্ডীদাসে কয় কি জানি কি হয়
লখিতে নারিফু ভন্তু ॥

तिरवत शावि - विषय भाषान ।
 विख्यी रत्र यनि - शांशिखत :

৬। তিখিন-তীক্ষ

৭-৮ দেখিয়া স্নদরে জালা উপস্থিত হইল। মদন
দৈখিল যে, তাহার ফুলশর অপেকা ইহার দৃষ্টি
অধিকতর প্রশার; স্থতরাং নিজের প্রতিপত্তি
লোপ হইবে, এই ভয় হইল।

১২। করিবর শুণ্ডিত হাতীর শুঁড়ের কায়।

১০: কনক চুডি যে সা**লে** – পাঠান্তর।

১৭। বিমান চাক — বিমান গর্বে র**ং;** চাক – চাকা। রথচক্তের স্থায় গোলাকার নিতম

শীপান্ধার ৷

একে যে স্থব্দরী কনক পুতলি খঞ্জন লোচন তার। বদন কমলে ভ্ৰমরা বলয়ে তিমির কেশের ধার॥ महे, नतीन वालिका (म। দৈবে উপজিল দেখিতে না গাইল শ্বমতি না দিল কে ॥ নঘন উজরে পরাণ ছটয়ে रिधत्रय छेत्रान (य) সঙ্গে কেহ নাই শুন কঠি ভাই কাহারে স্থগাব কে॥ দন্ত দিজ দাডিম্ব বীজ ওষ্ঠ বিশ্বক শোভা। দেখিয়া যুবকে মদন কোপে মনেতে হইল লোভা। 30 গলায় মাল শোভিত ভাল তামুল বদনে তার। পড়িছে বদনে চৰ্ব্বিত চৰ্ববৰে বহিছে পিঙ্গল ধার॥ গিয়াছিল জলে চণ্ডীদাস বলে আইল আপন ঘরে। বাজার ঝিয়ারি स्रन्पत्री नागती তৃমি কি করিবে তারে॥

- । वृत्राय-ज्यम् करत्।
- ७: (मर डेशिक्क भागास्त्र:
- ৮। নজবে নজবে পরাণে পরাণে পাঠান্তর।
 আমার পুথির পাঠের এইরূপ অর্থ হয়;—
 ভাহার উজ্জল দৃষ্টিতে প্রাণ ছট্ ফট্ কণিভেছে
 ও বৈধ্য লোপ পাইতেছে।
- ১১ দন্তবিগ-নন্ত তৃইবার হয়, তাই দিজ। দশুটি যে পাঠান্তর।
- ১৪। যুবতীকে দেখিয়া মদনের উদ্রেক হয়। কোথাও এই বিকট পাঠ আছে, - দেখিয়া জ্লুফে মদন ক্লুফে...
- ১৯ শোভিত পিঙ্গল ধার- -পাঠান্তর। পিঞ্গল ধার—পিঞ্গল বর্ণের ধারা।
- ২১। আইল পরাণ ঘরে পাঠান্তর।

চম্পক বর্ণী

>>

তুড়ি।

বয়ুসে তরুণী

হাসিতে অমিয়া ধারা। স্থচিত্র বেণী তুলিছে জনি কপিলা চামব পারা॥ সখি, যাইতে দেখিমু ঘাটে জগত-মোহিনী হরিণ-নয়নী ভান্তর ঝিয়ারি বটে ॥ হিয়াজর জর খসিল পাঁজর এমতি করিল বটে। বঙ্কিম চাছনি চলল কামিনী विधिम भन्नान करहे ॥ না পাই সমাধি কি হৈল বেয়াধি মরম কহিব কারে। ব্যাধি সমাধি হয় চণ্ডীদাসে কয় পাইবে যবে তারে॥ >0 . ৪। **জনি—**যেন। ৭। ভামুর—বৃষভামুর।

>२। **नगांधि**-माखिः।

কানড়া ছাঁদে

আড় নয়নে

চরণ কমলো

>। থির-–স্থির।

৮। গেরুয়া—গুচ্ছ, স্তবক।

১২। মলতোড়ল-ভোড়া-এক রকম মল।

• %।

(বিন্দী।

' স্বন্ধনি, ও ধনী কে কহ বটে।

গোরচনা গোরী নবীনা কিশোরী

নাহিতে দেখিমু ঘাটে॥

১১.। পরাণ তটে—প্রাণের অ**স্তন্ত**লে, ভিতরে।

>২। তুড়ি। তুড়ি। থির বিজুরি বরণ গৌরী পেথিসু ঘাটের কুলো।

> নব <u>মল্লিকার মালে</u>॥ সই মরম কহিয়ে তোরে।

বিকল করল মোরে। ফু**লের গেরু**য়া লুফিয়া ধরয়ে

মুচকি মুচকি হাস॥

স্থানর যাবক রেখা। কহে টণ্ডীদাস স্থানয়ে উল্লাস পালটি হইবে দেখা॥

স্মতনে দেখায় পাশ। : উচ কুচ্মুগ বসন ঘুচায়ে ১০

কবরী বাঁধে

ঈষৎ হাসিয়া

মল্লতোড়ল।

36

-1			9
	শুন হে পরাণ	স্থ্যৰ সান্ধাতি	
	কো ধনী মাজিছে গা। •		
	যসুনার তীরে	বসি তার নীরে	
	পায়ের উপরে পা॥		
	গঙ্গের বসন	করেছে আসন	
	এলায়ে দিয়াছে বেণী।		
	উচ কুচ মৃলে	হেম হার দোলে	٥ د
	স্থমেরুশিখর জিনি॥		
	সিনিয়া উঠিতে	নিতম্ব তটাতে	
	পড়ে'ছে	চিকুর রাশি।	
	কাদিয়ে অ'াধার	কলঙ্ক চাঁদার	
	শ্রণ ল	ইল আসি॥	>¢
	কিবা সে ছগুলি	শ্ভা কলমলি	
	শ্রু শর	- শশিকলা।	
	সাঁজেতে উদয়	· স্থপু স্থ ধাময়	
	দেখিয়ে	হইনু ভোলা॥	
	ьरम नीम भा ड़ी	নিঙ্গাড়ি নিঙ্গাড়ি	₹ 0
	পরাণ স	াহিত মোর।	
	সেই হৈতে মোর	হিয়া নহে থির	
	মনমথ ৰ	ছরে ভোর॥	
	কহে চণ্ডীদাসে	বাশুলী আদেশে	
	শুনহে :	নাগর চন্দা।	२७
	সে যে বৃষভামু	রাজার নন্দিনী	
	নাম বি	নোদিনী রাধা॥	
> 2	। সিনিয়া—স্নান ক	রিয়া।	
38,30	। তাহার কেশ গে	বার কৃষ্ণবর্ণ। বর্ণে পর	া ভত
		লাইয়া চল্কের শর্ণ লইয়	
	ভাই চাঁদে কলন্ধ	। কণক চাঁদার—পাঠাৰ •	ছর।
36	। ছুঙ্গি—জোড়া। ১ জুড্গি—জোড়া।	। ম তিপিগুলিতে ক্ষীণ চয়	। भारक स
10-16	או האיזו אים ויי	7 101791-169 411 00	- 7 -11

ভোগা--বিহবণ।

' মাজিতে উনয়—পাঠাপ্তর।

২৪। কোন মুদ্রিত পদকল্পতরতে আছে,— দাস গোচন কহয়ে বচন - ইত্যাদি। ইহা সম্পূর্ণ ভুল। এদেশের আবান বৃদ্ধ বনিত । জানে এ পদ চণ্ডী-দাসের। আর চণ্ডীদাসের সঙ্গে গাঁহার একটু পরিচয় আছে, তিনিই বলিবেন যে চণ্ডীদাস ভিন্ন এ পদ অপর কাহারও হইতে পারে না। এ যে ওতাদি হাতের লেখা।

58

otate i

স্থীগণ সঙ্গে যায় কত রঙ্গে যসুনা সিনান করি। অঙ্গের সৌরভে ভ্ৰমরা ধানয়ে নঙ্কার করয়ে ফিরি॥ নানা আভরণ মণির কিরণ সহজে মলিন লাগে। নবীন কিশোরী বরণ বিজ্বরি সদাই মনেতে জাগে॥ সই সে নব রমণী কে। চকিতে হেরিয়া দ্বশত এ হিয়া ধরিতে নারি এ দে॥ পুন না হেরিলে না রহে জীবন তোমারে কহিন্তু দড়। কহে চণ্ডীদাস পুরাহ লালদ নাগ্র আতুর বড়॥ 30

३३। (म-(मर्।

১०। पंष - मृष्डात-श्रितः

>৫। আতুর—কাতর।

>6 |

ভূড়ি।

কিয়ে দরপণ কনক বরণ নিছনি দিয়ে যে তার। কপালে ললিত চাঁদ শোভিত স্থন্দর অরুণ আর॥ मंहे, किवा म गूर्थंद्र शिम । পাঁজর কাটিয়া হিয়ার ভিতর মরমে রহিল পশি II গলার উপর_____মণিমত্ত হার গগন মণ্ডল (হরু। কুচযুগ গিরি কনক গাগরি 20 উলটি পড়য়ে মেরু॥ গুরু যে উরুতে লম্বিত কেশ হেরি যে স্থন্দর ভার। বহিয়া ছুকুল বরণের ফুল

কহে চণ্ডীদাসে বাশুলী আদেশে হেরিয়ে নখের কোণে। জনম সফলে বিহি আনি দিল এমন কোন বা জনে॥

>0 .

জলদ শোভিত ধার॥

া কিয়ে—কিবা; কিবাদপণের ৠয় বছঃ।
 নিছনি—বাশাই। নিছনি ঘাই যে তার—
পাঠান্তব।

ত, 5: কপালে চক্রের ভার সিন্দ্রের ফোটা।
৮, ৯। নীল শাড়ীব উপর মশ্বিষ হার, ভারকাথচিত
শ গগনমগুনের ভার শোভা পাইতেছে।

১০,১১। স্থৰণেৰ কলসীর স্তায় স্তনস্পাল দেখিরা, স্থমের পর্বত পরাজিত হইলাম ভাবিয়া ছ:খে ,উলটিরা, পড়ে।

১২,১৫। গুরু উরুতে সুন্দর কেশভার স্বিত হট্যা আছে।

ছেরি যে লম্বিত ভার। চরণ ফুল হেরিয়ে ছকুল व्यवि (गांडवि शात । (২) উক্ষেউকতে লখিত কেশ হেরি যে স্থন্ত তার। চরণের ফুল হেরিয়া ছুকুল জনদ শোভিত ধার। কোন পাঠেএই ভাল মর্থ হয় না। b, ১৯। বিহি—বিধি । পাঠा खन्न- बनम जकरन वम्नान कृत्व भिनायन (कान घरन। 361 कृष्टि । काश्वनवत्री (क वर्षे (म धनी **धीरत धीरत हिंग गा**रा। হাসির ঠমকে চপলা চমকে নীল শাড়ী শোভে গায়॥ মোহিত মদন দেখিতে বদন নাসাতে ছুলিছে হুল। মানস ভাবিয়া স্থাবিশাল আঁখি ছুটিছে মরালকুল। সাঁখিতারা ছটি বির্দে নসিয়া স্ঞান করেছে বিধি। নীলপদ্ম ভাবি লুবধ ভ্রমরা 🗽 ুটিতেহে নিরবধি ॥ কিবা দম্ভভাতি মুকুভার পাঁতি किनिया कुम्मक कुँ छि। 🏄 निं थाग्र निन्मूब জিনিয়া অরুণ कारन कर्नना ए हि॥

শঠোন্তরঃ -(>) উরু বে লখিত কাম যে সন্থিত

শ্ৰীকল যুগল জিনি কুচযুগ পাতলা কাঁচলি তাহে. তাহার উপরে মণিময়হার উপমা কহিব কাহে ॥ কেশরী জিনি কুশ মাজাখানি মুঠে করি যায় ধরা। গজ কুম্ব জিনি নিতম বলনি উরু করিকর পারা॥ জিনিয়া কনল ২৫ চরণ যুগল মালতা রঞ্জিত তায়। মঝ মন তাহে কাহে না ভুলন মদন মূরছা পায়॥ কাহার নন্দিনী কাহার রমণী গোকুলে এমন কে। বল বল সখা কোন পুণ্যফলে সে রামা পাইল সে॥ ভেব না ভেব না চণ্ডীদাস বলে ওহে শ্যাম গুণমণি। তুমি ক্ষেতাহার সরবস ধন তোমারি আছে সে ধনী॥ १। मानम-मानम भरतावत्र। २०। वननि-गठेन। ৩৫। সরবস-ন্স্রা 186 শ্বল মিলন--রাগ অজ্ঞাত। এ বোল শুনিয়া স্থবল সাঙ্গাত কহেন উত্তর বোল। "ইহার বচন জানিয়ে সকলি করিব এখন ওর॥ ¢ करहत स्वयन मथा।

ভোমার চরিভ ঁ করিব বেকড তা সনে করাব দেখা॥ বুঝিসু করম তোমার মরম अन तममग्र कान। ভা সনে মিলন করাব যতনে ইহাতে নাহিক আন। তোমার মরম আমি ভালে জানি अनश् मत्रम-मथा। বুঝিব চরিত জানিব বেকত ভোমারে করাব দেখা। 20 ভাগ সে জানিল मरनत खमान আমি সে করিব তাই।" অতি কুতৃহলে স্বলের বোলে . আনন্দ হইল তাই॥ মশ্মস্থাগণ বসি পঞ্জন স্থবল ত্রিবিট তপা। निष्यक प्रव এ সধুসঙ্গল कर्डन भत्रम कथा॥ এপিচ মদন তেঁইদে স্কলন কহিতে লাগিল ভায়। 20 মৰ্ম্মত বেকতা স্থবল বচন কহন নাহিক যায়॥ কমলনয়ন কহেন বচন শুনহ বচন মোর। অতি সে স্বরায় চণ্ডীদাস যায় রুকভামুপুর ওর॥ ७व-- नौयां, योषांश्ना । (र १ छ - गंडर । (छामात्र চরিত তাহার निक्षे বাজ্ঞ করিয়া ভাহার সহিত ভোমার দেখা क ब्राहेशा निव। शांठक शत्व (मश्चित्वन, श्रूवन ত্রীবাধার সমক্ষে ত্রীক্রকের যুর্ত্তি প্রকাশ করিয়া

তীহার মনোহবণ করেন।

১৬। গুমান – গুপ্ত ভাব। ২৬। মৰ্ম্মত বেকতা— মৰ্ম্ম ব্যক্তকারী।

761

কানড়া।

"শুন প্রাণসখা আমি সে জানিয়ে অনেকু টোনার খেলা। যাইব ত্বরিতে তাহাই খেলিতে শুন পরাণের কালা।" সেই যতুরায় কহে তবে তায় "কিবা সে খেলিবে ভাই। দেখি তাহা আমি আপন নয়ানে তবে সে প্রতীত যাই॥ স্থাহে স্থ্ৰল এইখানে খেল কোন্সে করিবে টোনা। যদি মনে লাগে এই হিয়া জাগে তবে সে যাইব জানা॥" "বৈদহ আনন্দে তরু আশানন্দে আমি সে ধরিব ছলা।" কাসুর গোচরে স্থ্যল সাঙ্গাত করিতে লাগিল খেলা॥ আবেশ করিল আগে সে ধরিল পূর্বর অবতার লীলা। শ্ৰীরাম ধাসুকী সহিতে জানকী করিতে লাগিল খেলা॥ তাহাই ছাড়িয়া ুশিশুপাল হয় मखवक जामि कर्ति। এই সব খেলা করেন স্বল प्राप्त श्रीति इति ॥ তাহা ছাড়ি পুনঃ ধরেন তখন

নূসিংহ রূপের কারা।

ছাতে অন্ত্র টাঙ্গি প্রচণ্ড মূরতি >७। थाय---निकटि। **छिनाम (मर्ट्य (ह्या ॥** २৮ २०। बात कान मृति (प्रश्वित बाह्य कि नान २.। (होना-विशेषद्रवस्त्र, हेळकान। >६। व्यादनम— अहे मक छ छोनादन व भएन नाना व्यदर्श ₹ 1 ना १ इंड इरेशारह। अधारन व्यर्थ, अकाष। ৰয়াড়ি। পুন সে ধরিল অতি মনোহর 166 এ নব মূরতি বেশ। वक्रांष्ट्रि । ছাড়িয়া সে তমু দেখাইল জমু পরিধান নীল বসন ভূষণ ধরি হলধর রূপ। অতি সে চাঁচর কেশ॥ কাঁথেতে লাক্ষল দেখি তাহা ভাল नव (म निमन ভুবনমোহন বড়ই রসের কৃপ॥ চিত্রের পুত্তলি থৈছে। তেজি সেই কায়া আর ধরে মায়া कनक मञ्जीत স্থচাৰু গঠন ধরিলা মৎস্তের তমু। বেকত দেখিল তৈছে ॥ সোণার প্রতিমা শৰ্ম চক্ৰ গদা পদ্ম বিরাজিত বিজুরি উজর মূরতি হইলা তমু॥ নয়ান ভক্তিমা তায়। তাহা ছাড়ি সখা আর দিল দেখা কনক কটোরি বদরী সমান কুর্ম্মের আকৃতি অতি। দেখি মন মূরছায়॥ >0 বরাহ বামন আদি আর যত নীল শাড়ী তাহে ওড়নী ভক্তিমা অবভার ভথি॥ চাহনি কটাক্ষ বাঁকে। তাহা দেখাইল ভাই সে স্থবল মদন কম্পিত হয়শ বেকত 20 "দেখহ কালিয়া শ্যাম : সেই সে মূরতি দেখে॥ এ সব মৃরতি তাহার পীরিতি মধুর মূরতি হেরি যত্পতি কহত আমার ধাম॥" হর্ষ পাইল ভায়। বরাহ মূর্তি দখায়ে আকৃতি পুরবে দেখিল যেমন মূরতি দেখিতে স্থা । সেই মত অভিপ্রায়॥ ম**নম**ত্তহাতী সকল মূরতি 🗼 (मिथ खरन खरन ধরিতে না পারি মরমে লাগিল তাহা। আর কোন আছে দেখা॥ করি নিরীক্ষণে এই অসুমানে, চণ্ডীদাস বলে মনেতে না লাগে श्रुणक भानिण प्रशा যতেক দেখিল খেলা। ক্ষেন স্থ্ৰল কেন দেখাইসু চাহি স্থা পানে কমলনয়ানে মনেত্রে লাগিল ভাহা। আর কোন আছে দীল।॥ ` ₹8

কহ কহ ভাই প্রাণের কানাই
' এই সে কেমন দেহা ॥

ছাড়িয়া মৃতির স্থবল আকৃতি

হইল যেমন স্থা। ৩০

নন্দের নন্দন মোহিত মানস

চণ্ডীদাস দেখে একা ॥

৫-৬। গৈছে—যাহাতে। সেই কামিনী নবপ্রক্টিত

নলিনীর ভায় অথবা চিত্রাজিত অতি স্থন্দর মৃর্টির

ভায়।

৭। মঞ্জার—নৃপ্র।

৮। তৈছে - তাহাতে।

১। উজর—উজ্জ্ব।

551

যাগ নেপাইলাম তাহা মনে লাগিল কি ?

২০। অভিপ্রায়—সর্বতোভাবে সেইরূপ।

२८। (कन - (कमन।

নন্দ তুলালিয়া "শুন শুন ভেয়ে (य मिथिन (इन (थिन। দেখাইসু এত মনেতে লাগিল কহ দেখি বনমালী॥" ক্ষে নন্দস্ত তায়ে "আমার মর্ম ভেয়ে ৫ যে দেখিতু বৃকভাত্মপুরে। তাহাতে ইহাতে খেদ কিছু নাহি বৰ্ণভেদ পশি পুন রহল অন্তরে ॥ সেই যেন কমলিনী দেখিল তেমতি খানি শুদ ভাই স্থবল সাঙ্গাত। ও জন যতন করে দেখাহ আমারে বেরি কেমনে ইহারে দেখি সাত ॥" ' ক্ষেন স্থবল তাহে "আমি মিলাইব তোহে ইহাতে অশ্বথা নাহি কিছু।

গিয়া বৃকভাদুপুরে ধেলাইব কুতৃহলে ১৫
মোহিত করি তাহে পিছু॥"

যাব পঞ্চশিশু সনে সবে হৈয়া একমনে
ধেলাব বিনোদ ধেলা অভি।

মায়া হলে মুগ্ধ করি মোহন মূরতি ধরি
তানায়াসে দেখাব যুবতী॥ ২০
এই যমুনার তটে বৈস ভাই স্থানিকটে
চম্পকের বন অমুপাম।

চণ্ডীদাস সুথ চিতে দেখে তাহা একভিতে
গভরেত বংশীগুণ গান॥ ২৪।

ভাই, আমার মনের কথা এই।
 প্রক্রিক স্বর্গনার ।

৭। থেদ—স্ত্ত—সামান্ত।

२४। वर्षताध इडेन ग।

২২। কানড়া।

ধরি অসুপম বাজিকর যেন খেলায় কতেক তানে। স্থবল ত্রিবিট এপিচ মদন मधु-मञ्जरनत मत्न॥ কহে বিদূষক "শুনহে স্থবল नाना यख त्वर मत्त्र। তবে সে খেলিব নানা মত খেলা গাহিব নাচিব র**ঙ্গে**॥" নানা যন্ত্ৰ নিলা নানা সে প্ৰতিমা কাঠের পুতলি লৈয়া। আর যত নিল মধুর মধুর वाणिया वाणित हाथा॥ নানা বেশ ধরি যেন বাজিকর নাচায় পুতলি কায়া। বহু তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ বার নাহি অস্ত

कराइक कानरत मात्रा॥

্চাৰে পঞ্চজন হয়ে একমন

ব্ৰুজামুপুর যায়।

পথে যায় ভথি খেলা খেলে অভি
চণ্ডীদাস সুখী তায়।

২০

বিদ্যক—মধুমকল, ব্রাহ্মণ ও হাস্তরদপটু ছিলেন;
 সেই জন্তে গহাংকে 'নিদ্যক' বলা ইইয়াছে।

১২। বাজীকরের ঐক্রজালিক মূর্ত্তি।

১৯। তথি—তথায়।

२०। जन्मका

ৰরাড়ি।

বৃক্তামুপুরে গিয়া কুতৃহলে
স্থবল এ চারিজনে।
রাজার ছুরারে এ গান বাজন
করেন আনন্দ মনে॥
কেই গায় অতি কেই বায় তথি। ব

বৃকভামু রাজা শুনি স্থললিত অতি সে মধুর তানে॥

রাজা কছে "কোন গুণীর গমন জান একজন ঘারে। ১

নেহত খবর আনহ গোচর ভেজিয়া দিল সে চরে॥

গিয়া একজন বুঝল কারণ "কেন বা আইলে ভোরা।

কোন দেশে ঘর কছত সম্বর ১৫ কি বটে তোদের ধারা॥

রাজা বৃকভামু পাঠাইল পুন লইতে ভোদের তরে।

কোন জন মোর ছয়ারে প্রবেশি 🗸 ২ গায়ন বাজন করে ॥" কহে বাজীকর "শুনহে উত্তর বিদেশে মোদের ঘর। . গুণিজন হই আইনু হেথায় লই আমাদের সর॥

এই সে লালসে হইল মানসে ২৫ আইল পঞ্চম বালা।

রাজার গোচর কহে বাজীকর দেখাব বাজীর খেলা॥

কিছু গুণগ্রাম করিব সন্ধান খেলিতে বাজীর খেলা।

এই সে কারণে আইল যতনে এ পঞ্চ করিয়া মেলা॥"

ভাল ভাল বলি আইল সে চর আইল রাজার পালে।

চণ্ডীদাস কহে শুন মহারাজা ৩৫ বড গুণিজন সে॥

ে। বায়---বাজায়।

১২। ভেজিয়া--পাঠাইয়া।

১৬। ধারা—ব্যবহার—অর্থাৎ তোমরা কি কর १

২৪। সর পাঠ করিলে মিল হয় বটে কিন্তু অর্থ হয় না। আবার 'সব' পাঠ করিলে মিল হয় না, কিন্তু অর্থ হয়।

२६। **मान्या -** इच्छा-सत्न এह हेन्हा इहेन।

२७। भक्तम-भक्ष।

৩২। মেলা-মিলন। পাঁচজন মিণিয়া আসিলাম।

₹8 |

ৰরাডি।

চরকে পুছিল বৃকভানু রাজা

কোন গুণী এই বটে।
কেন বা আইল কোন প্রয়োজন
কহওঁ বচন ফুটে॥

কর জোড করি কহে বরাবরি "শুনহে নৃপতি তুমি। বিদেশ হইতে পঞ্চ বাজীকর আইল বালক গুণী॥ বাজীর পুতলি অনেক আছয়ে নানা যন্ত্ৰ দেখি তথি। বহু গুণ জানে গায়ন নাচন শুন মহা নরপতি॥ কহে গুণিজন শুনহ রাজন 'খেলিব কিছুই খেলা'।" "ভাল ভাল" বলি বুকভামু রাজা স্বরায়ে বাহির হৈল।॥ বাহির ছুয়ারে বিচিত্ৰ বিছানা পড়িল সকল জনে। তাহে त्कछ. । तिर्वेश श्रीतर्थ ডাকি আনি গুণিজনে। 20 नृत्भ जाड्या निम मश्म जाउँ त রাণীবর্গ আদি করি। ঝরকা উপরে বসিলা হরিষে সব সহচরী মেলি॥ কুত্তিকা মোহিনী রাধার জননী देवर्य अंत्रका भरत्। विद्नापिनौ त्राधा স্বন্দরী অগাধা ী বৈঠল মায়ের কোড়ে॥ ললিভা সুন্দরী অনক্তমঞ্জরী रेकिन जाधात भारम। 90 ণত সহচরী চামর ঢুলায় 'পাখা ঝুলে প্রতি আশে॥ নানা সেবা করে প্রতি সহচরী আনন্দ কৌতুক বড়ি। म्नक भात्रिए বারি পূরি করি थरत थरत भव अपि॥

তাম্বুৰ বাটাতে রেখেছে ছরিভে কর্পুর মিশান করি। চণ্ডীদাস বলে নানা উপহার থাপিত যে সারি সারি॥

२१। वशाधा-याहात शतियां हम ना। ०२। ভाग व्यर्थां वह म ना। ৩৬। এড়ি-রাশিয়া দিয়াছে। e । থাপিত—স্থাপিত।

₹ 1

গরা।

একি এ দেখিতে দেখি। কহেন জননী "छन विरनामिनि বাজিকর উহ পেথি॥ কোন দেশ হৈতে এই পঞ্চ শিশু **এই সে করিবে বাজি**। ভোমার পিতার আবেশ হইল বাজিয়ার দেখিতে বাজি॥ তথির কারণ বাহির ছুয়ারে বসিল ভোমার পিতা। বাজিকর আগে দেখহ চাহিয়া এমত না দেখি কোথা ॥" রাজা আজ্ঞা দিল खगी शक्करन কি গুণ জানহ ভোরা। খেলহ আনন্দে মূনের কৌতুকে কেমন বাজির ধারা॥ "শুন মহারাজা কি গুণ খেলিব कर ना उखत वानी। এই পঞ্চলনে গুণ গুণ ভেদ

व्यत्नक श्विताल कानि ।

অবধান কর ব্ৰভামু রাজা খেলাতে করহ মন।" · চণ্ডীদাস কৰে রাজার গোচরে খেলায় সে পঞ্চজন॥ छ उट-छेहाताः (पवि—(पविट्राइ) १। चारवर्ष-हेळ्।। ১৯-२ । আমরা পাঁচজনে বিভিন্ন প্রকার খেলা জানি। पाञ्ची । আগে খেলে গুণী দশ অবতার দেখহ নয়নে চাই। খেলে নানা খেলা সেই পঞ্চবালা এক দিঠে দেখে তাই॥ মৎস্থ অবতার চারি ভুজধর শন্ত চক্র গদা পদা।

তার পর আর দেখায়ে গোচর কুর্ম্মরূপ অনুসঙ্গ ॥ তার পর আর **इ**टेन मञ्जू বরাহ আকৃতি কায়া। অস্তর হইল আনন্দে মগন

(मिथिरंग वाकित होगा। নৃসিংহমুরতি হইল আকৃতি

শ্রবণ প্রভাপ বড়ি।

হিরণ্যকশিপু জামুতে ধরিয়ে विषात्रण नत्थ हिँ ज़ि ॥

হৃদয় ভিতর नत्थर७ हिमिन, होनिन वकून नाड़ी।

কম্পিত মেদিনী হুহু হুহু স্বরে দীঘল নিশাস ছাড়ি ॥

ভবে সে হইল বামন মূরতি ত্রিপদ হইল কারা।

বলিরে লইল পাতাল ভূবনে দেখায়ে এ সব মায়া॥

তার পর হয় শ্রীরাম মূরতি কাঁধেতে ধনুক শর।

সুঙ্গেতে মৈথিলী अनकनिमनी দেখি অতি মনোহর॥

তা দেখি রাজার মনে অতি স্থ এ বড়ি মুরতি স্থখ।

দেখিতে দেখিতে আর নহে চিতে দূরে গেল অতি ছখ।

পুন তা তেজিল আবেশ হইল ভৃগুরাম অবতার।

বস্থমতী কাঁপে ৩৫ শ্রবণ প্রতাপে মাথায় জটার ভার॥

টাঙ্গীর বাখান অতি খরশান নিঃক্ষেত্রি করিল এতে।

অতি কুতৃহলে চণ্ডীদাস বলে দেখি স্থখ লাগে তাতে॥

२। ठाइे—ठाँहिन्ना

৪ ' দিঠে - দৃষ্টিতে।

) हा अद**्रा-भका**

२०। मीचन-मीर्घ।

৩•। 'সুধ—সুধকরী।

৩৩। আবেশ হইল-রূপ ধারণ করিল।

७१। वाषान-वर्गना, व्याध्या।

२०

21 अवह ।

রোহিণী-নন্দুন পুনঃ বলরাম ধরিল ধবল কায়া।

হল কাঁধে করি আনন্দে মগন

ক্রিল বালির হারা।
31. 3.64. শ্রাক্তির চিন্ত See : " Pro ; al.

পুনঃ তা তেজিয়া বৌদ্ধ অবভার ৫ হইল মুরতি তিন। ভগ্নী সহোদর জগন্নাথ আর স্বভদ্রা তাহাতে চিহ্ন ॥ বলরাম পুনঃ হইলা তখন দেখি বৃকভান্ম রাজে। >0 দেখিয়া মুরতি পরম পিরিতি পাওল সে সভামাঝে॥ পুনঃ তা তেজিয়া কন্দী অবতার ধরেন মূরতি কায়া। অশ্বের উপরে ধরি ছুইকরে 20 সংহার অমুপ ছায়া॥ 🔹 নানা অবতার করিল সত্তর দেখিয়া মোহিত মন। দশ অবতার ভেদ দেখাইল দ্বিজ চণ্ডীদাস কন। २०

> >৮ কাৰডা।

১৬। অমুপম সংহার-মৃতি।

আর খেলে খেলা বাজিকর-বালা

দেখার পাণ্ডব বংশ।

ধর্ম ধুধিষ্ঠর ভীম সহোদর

অর্জ্জুন ধরিল অংশ॥

নকুল আকৃতি ধরিলা মূরতি ৫

সহদেব রূপ প্রায়।

দেখিতে রাজার চিত মন হরে ,

নয়ানে দেখিল তায়॥

তৈজি আনরূপ ুধরিল তখনি ক্

় শিশুপাল রূপ হয়।

সূর্য্যবংশ কুল ভগীরথ-গণ অজ আদি করি নয় ॥ নানা রাজকুল নানা অবভার प्रिथमा व्यानक (थमा। "আর কিবা জান কহেন রাজন্ कर वाजिकत्र-वाना॥" "আর খেলা আছে বৃকভামু-রাজে কহি যে ভোমার কাছে। একমন করি দেখহ রাজন্ খেলি এ সভার মাঝে॥" Ş٠٠ পুনঃ সে ধরিল চণ্ডীদাস বলে নন্দ উপনন্দ যত। যশোদা রোহিণী বরজ-রমণী তাহা দেখাইল কত। ২৩। বরজ--ত্রদ।

> **২**৯ সি**লু**ডা।

তবে সে হইল শ্রীদাম সুদাম স্তোক-কৃষ্ণ বলরাম। অর্চ্ছন স্বল অংশসেন কোকিল বসস্ত প্রধান রাম॥

কিৰিনী ঝ্ৰার অতি মনোহর ৫
ধরল বালক-মূর্তি।
করে কোন গুণ গুণের আখ্যান
করে হয়ে নানা শক্তি॥
দেখিয়া মূরতি বিলক্ষণ জ্যোতিঃ
নানা সে বন্ধান বৈশে। ১০
অনুপ স্থন্দর মূরতি কিশোর
বিনোদ বন্ধান কেশে॥
নানা সে কুমুম গাঁথিয়া সুষ্ম

विरनाम वकान हुए।।

ত্রেম্ব অনুক্ত তলে আরোপিত ১৫

তবজ অনুক্ত গাঢ়া ॥

কেরপ ত্যজিয়া নদনমোহন

মুরতি কৈশোর হয় ।

চণ্ডীদাস বলে বৃকভালু রাজা

দেখি পাছে মুরছায় ॥ ২০

৭-৮। নানা মূর্ত্তি ধারণ করিয়া নানা গুণ প্রকাশ
করিতে লাগিল।

১৫-১৬। অর্থ করিতে পারিলাম না।

——

೦ಂ

বিশ্বড়া

ভাহে অপরূপ কৃষ্ণ অবতার रहेन ख्वन मथा। অভি অমুপম যেন নবঘন ় জলদ সমান দেখা॥ যেমত অঞ্চন ললিত রঞ্জন কিবা অতদীর ফুল। বেন কুবলয় मल मह्यां कर যেমত কানড় ফুল। যেন নিরুপম কোনরূপ হেন দেখিয়াছে বছরূপ। >0 বিবিধ বন্ধান করিয়া সন্ধান গড়ল রসের কুপ॥ যাবক নিন্দিয়া চরণ যেমত श्त्रिम प्राचित्रा रेयरछ। তাহাতে অধিক বিস্থফল সম দেখিতে না পারে কৈছে। তাহাতে রঞ্জিত म्यन्थ ठाँप চরণে শোভিত ভাল। দশদিক শোভা ভাহার শোভাতে • मकन करत्र ए व्यारना॥ २० কনক কিন্ধিণী কলহংস জিনি পীতের বসন সাজে। এ চ্য়া চন্দন অঙ্গে স্থলেপন মৃগমদ আদি রাজে॥ কিবা শোভা করে বনমালা গলে শোভিত কৌস্তুভ তায়। চাঁদ ঝলমল যমুনাতে যেন দেখি যে তেমতি প্রায়॥ ៌ অধিক স্থুন্দর শিখী মনোহর শিরে পুচ্ছ শোভে তায়। কৃণ্ডল দোলয় প্রবণে মকর যেমতি রবির প্রায়॥ অধর বান্ধুলী স্থন্দর উপমা मभन माजिम वौद्या। ভা**লে** সে শোভিত চন্দনের চাঁদ তাহে গোরচনা সাজে। অতি নিরমল নয়ন কমল তাহে **কাজরে**র রেখা। মেঘের ধারাটি যমুনা ক্লিনারে অধিক দিয়াছে দেখা। 80 তাহার উপরে নবগ্ৰহ বেড়ি মুকুতা হুসারি সাজে। মণির মালায়ে প্রবাল মাণিক বেড়িয়া তাহার মাঝে॥ কেশের অ'টিনি ৪৫ বিচিত্র চামর वाँिधश वित्नाम हुड़ा। নানা সে কুসুম স্থাত সে সুষ্ম তাহা মালা দিয়া বেড়া॥ শিখণ্ড আরোপি তা পরে ময়ুর করেতে মোহন বাঁশী। ত্রিভঙ্গ ভঙ্গিমা কটাক্ষ চাহনি অমিয়া₎ মধুর হাসি ॥

দেখিয়া সেরপ মদন ম্রছে

 কুলের কামিনী যত।

ম্নির মানস জপতপ ছাড়ি ৫৫

 ওরপ দেখিয়া কত॥

বৃকভামুপুর নাগর-নাগরী

 পড়িছে ম্রছা খাই।

চলিয়া পড়ল বৃকভামুরাজা

দ্বিজ চণ্ডীদাসে গাই॥ ৬০

৪। দেখিতে নেখের ন্থায়।
২৫। বনমালা—বনফুলের মালা নহে।
"আলায়ুলখিনী মালা সর্বর্ডুকুসুমোজ্জলা।
মধ্যে খুলকদম্বাতাা বনমালেতি কীর্ত্তি।"
মালাটি জায়ু পর্যান্ত বিস্থৃত, সকল ঋতুজ ফুলে গাঁখা ও
মধ্যে একটি বড় কদম্বপুশ আছে।

0)

সিক্ষ্ডা

রূপ দেখি মোহিত হইল কত জনা।
নগরে চাতরে সব পড়িল ঘোষণা॥
রূপবতী কুলবতী ছাড়ে নিজ পতি।
জনমিয়া হেন রূপ নাহি দেখি কতি॥
বৃক্তানুপুরে যত পুরবাসিগণ।
এ বড় বিষম বাজি কখন না দেখি।
কি আনন্দ দেখিয়া মজিল যেন আঁখি॥
সাগিল মোহ নিগড়া রহে এক চিতে।
১০
মদন-ম্রতি দেখি রাজা বৃষ্ভান্থ।
দেগদ সর্ব্ধ ভেল পুলকিত ভক্ম॥
দেখিল নয়ান ভরি রূপ কুমধ্রে॥

প্রাণ কাঁদে চাহিতে মধুর মূরতি দেখি। ১৫ চণ্ডীদাস রহে তথা সে রূপ উপেখি॥

২। চতরে--চছরে।

১। মোহনিগড়া—মোহশৃষ্থল, রূপ দেখিয়া কেহ কেহ মোহশৃষ্থলে আবদ্ধ হইল অর্থাৎ একেবারে মুয় ভইয়া গেল।

১৬! উপেখি--দেখিয়া।

•૦૨

কাৰভা

ঝরকা উপরে কৃত্তিকা স্থন্দরী তা সনে স্থলরী রাধা। দেখিতে সে খেলা মন ভেল ভোলা সকলি মানিল বাধা॥ হৃদয় ভিতরে এ মহীমগুলে কভুত নাহিক রহে। "এমন মুরতি এ মহীমগুলে কভুত নাহিক হয়ে॥ হেনরপ স্থি কোথা বা আছিল কে হেন আনিল নিধি। কেমন করিয়া বসিয়া গড়িল বিধি ॥" পশিল ওরাপ হৃদয় মাঝারে বিদগধি রাই। মানস পুরিয়া मत्ल छप्र 30 মগন হইল তাই। কহিতে না পারে ু মনের বেদন মনের পোড়ান ভেল। হাদয় ভিতরে ভরল অন্তর জর জর হৈয়া গেল। দেখিতে দেখিতে তুলল নাগরী भूपण नशान छुछि।

্রসের আবেশে ঠেকিলা সুন্দরী

কুলের ভরম ছুটি॥
এই সে পুরুষ রতনে যতনে ২০
যদি বা মিলয়ে মোরে।
তোমাকে কি দিয়া তুষিব হরিষে
কিনিয়া লইবে মোরে॥

জনমে জনমে তোমারে তৃষিব ঘোষিব তোমার গুণে। ৩০ এ বোল বলিয়া পড়িল চলিয়া দ্বিজ চণ্ডীদাস ভনে॥

৪। বাধা—ব্যাঘাত।

১৪। বিদাধি-প্রেমমৃশ্ধা।

১৮! পোড়ান বিশেষ্য; অর্থ-দত্তন,মন পুড়িয়াগেল ২২। মুদল, বিশেষণ; অর্থ, মুদিত।

८७

11ৰড়া

এ কথা জননী কিছুই না জানে সঙ্গের সঙ্গতি গুণে। গোপত আখ্যান ইহা কে জানিব কেহ সে নাহিক জানে॥ মূর্চ্ছিত কেশরী আপনা পাসরি পড়শ ধরণী মাঝে। যেমত সোণার প্রতিমা পড়ল অবনী মণ্ডল মাঝে॥ স্বল মোহিনী কাঞ্চণ বরণী मामिनों हमत्क (यन। সুধী নাহি রহে অগেয়ান হৈয়া পড়ল কিশোরী তেন॥ বিশ্বিত হইলা ললিতা স্থন্দরী অনক মঞ্জরী কহে।

"আচন্বিতে হেন রহি অচেতন কেন বা এমন হয়ে। এই মাত্র খেলা দেখিতে দেখিতে কেন বা এমন হ'ল। কি হেতু ইহার ব্ঝিতে নারিয়ে সবাই হইল ভোল॥" কৃত্তিকা কহেন "রাধা কেন হেন मुनिया नयान इते। চেতনা নাহিক কাঠের পুতলি পড়িয়া রহল রাই॥" কাঁদিয়া বিকল মায়ের অন্তর কহেন সবার আগে। বিষম বিষাদ একি পরমাদ বালিকা দেখিয়া লাগে॥ এক সহচরী আন ডাক দিয়া কহত রাজাব আগে। আচ্বিতে রাই পড়িল অথাই

১-২। রাদিকার স্থীর কৌশলে একণা অর্থাৎ রাধিকা কেন মুচ্ছিত হইলেন, তাহা কেই জানিতে পারিল না।

চণ্ডীদাস যায় নগে॥

.>। সুধী--জান।

১২। তেন--সেইরূপ। ৩১। অধাই--অস্থির।

68

নটনারায়ণ

গিয়া এক জনে কহে কাণে কাণে

 বৃকভামু রাজা কাছে।

অপরপ এক অন্তঃপুরে দেখ

অদ্ভূত কথা আছে॥

আচন্ধিতে হেদে বারকা উপরে কুত্তিকা বেঠল ভায়। রাধিকা স্থন্দরী সঙ্গে সহচরী বসিলা মায়ের ঠাই ॥ দেখিতে লাগিলা বাজিকার ছায়া তোমার ননিদনী রাধা। আচন্বিতে কেন মুরছা খাইয়া সে তমু হয়েছে আধা॥ তুরিত গমন করহ রাজন বিলম্বে নাহিক কাজ। এ কথা শুনিয়া বুকভানু মাথে 20 পড়িল আকাশ বাজ ॥ যেমত আছিল সভাতে বসিয়া তেমত উঠিয়া গেলা। বিয়োগ অস্তরে গেলা অন্তঃপুরে দেখিতে আপন বালা॥ २० কি হৈল কি হৈল বলি বুকভানু আচন্ধিতে কিবা শুনি। আন কোন জন দেখাত এমন কো কহে কেমন বাণী। িকেন দেবঘাত দেবের নির্শ্মিত কেন বা দেবের বায়। 🐈 আনহ চেত্নী 🛮 কোন বা গোপিনী দেখহ তুরিত তায়॥ চণ্ডীদাস কহে শুন মহারাজা আনহ চেতনী কেই। নাটিকা ধরিয়া দেখহ বৃঝিয়া নিবিষ্ট করিয়া দেহ॥ ় ১৯। বিয়োগ—ছঃপিত। २०-२८। कान ख्वी लाक चानिश एंपाउ एम কি বলে শুন। ২৫। নির্শ্বিত-কৃত।

২৬। বায়—বাতাস। কোন উপদেবতা অর্থাৎ ভূতের বাতাস লাগিয়াছে। ২৭। চেতনী— চৈতক্ত করাইতে পারেন এমন ন্ত্ৰীলোক। ৩১। নাটকা--নাড়ী। সহচরী ধায় আনিতে চেতনী আনি আহীরিণী এক। দেখিয়া নাটিকা করে কর ধরি বুঝিল যে পরতেক॥ নহে জ্ব জ্বালা দেব অপঘাত কোন বা বাযুর জোর। বুঝিতে নারিল কি হেতু ইহার মনেতে হইল ভোর॥ বঝিতে নারিল নাটিকা চঞ্চল না হয় এ জর জালা। নহে দেবঘাত নহে সন্নিপাত নহে উপদেশ খেলা॥ "নাটিকা ভিতরে কিছু না পাইল শুন বুকভানু রাজে। ঝারিয়ে স্বতন্ত্র দেখি তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ বুসিয়ে ঘরের মাঝে ॥" আনি স্বর্ণ ঝারি তাহা করে ধরি পড়ে মন্ত্র বারে বার। ঝারি অনিবার ত্তম করি সার চৈত্রতা না হয় তার॥ তার পর গলে বাঁধি কুতৃহলে

खेषि वाँधिल तामा।

তাহে কিছু নাহি ক্ষমা॥

দ্বিগুণ বাড়ল

নহে নিবারণ

9.

ভানেক প্রকার প্রবন্ধ করিল ২৫
তাহাতে না হয় ভাল।
আর কোন মন্ত্র কারিয়ে স্কৃতন্ত্র
কাণে শুনাইল তান॥
জ্বালিয়া আনল তাহে ধূণা দিল
মায়ের নির্মিত বাণ।
উপদেব হ'ত তথনি চাড়িত
দিজ চণ্ডীদাস গান॥

৩। নাটক-নাড়ী।

৪। পরতেক—প্রত্যক্ষ, ম্পষ্ট।

२८। ऋगा— উপশ্য।

क्री उठ कि

"হেদে গো চেতনী বুড়া আহারিণী ঝাড়হ লভার ছলে।

কি জানি দংশিল আসি কোন ঘাতে জানি বিষকরে বলে॥

দেহ পানি পড়া ু দেহ নাড়া ঝাড়া যদি বা ছুইল অঙ্গ।

বাঁধহ ধরণী শুন গোয়ালিনী

তিলেক না কর ভঙ্গ।

ঝাড়হ চৌসাপা বলি ধর্ম বাপা চন্দ্র সূর্য্য করি মেলা।

নিদান বিদান পানী সার আন-

ঝাড়হ আমার বালা ॥"

নাহি সম্বরণ পাই॥

তথাপি না হয় তিলেক চেতন তৈছন বহল বাই।

পানীসার ভালে বিষ নাহি জালে

নানা সে উপায়ে ঝাড়িল সবাই না হয় কণ্ঠহি বোল। মুদিত নয়ন বহন

মরমে আছয়ে ভোর॥ • ২০

কোন সহচরী চামর ঢুলায়

শীতল বলিয়া গায়।

সবোরুহ দল আনি বিছাওল রাই শুতায়ল তায়॥

মলয় চন্দন করয়ে লেপন ২৫

শীতল হইবে বলি।

অঙ্গে উঠে জ্বালা শুখাইছে স্বরা

গরল সমান ভেলি॥

∖বহুমন্তভন্ত করিলাবন্ধন

চেতনা নাহিক মানি।

'এ কথা কেহ সে জানিতে না পারে

চণ্ডীদাস কিছ জানি॥

২। লতার ছলে—সর্পে দংশন করিলে যেমন করিয়া ঝাড়িতে হয়, সেইরূপ ঝাড়। স্ত্রীলোকেরা ক**খ**ন কথন বিশেষতঃ রানিকালে সাপকে লতা বলিয়া থাকে।

৩। ঘাতে—সুযোগে

৫। পানি ১পড়া— যে জলে মল্প উচ্চারণ করা
 হইয়াছে।

৭। বাধহ ধরণী—মন্ত্র বারা পুণিবী রক্ষা কর, যেন কোন ছুই লোক বিরুদ্ধ মন্ত্র পুণিবী দিয়া চালাইয়া রোগিনীর অনিষ্ট না করিতে পারে।

১০। মেলা—মিলন।

১৫। काल-कारत, कीर्व रय, नष्टे रय।

৩৭

গড়াধানসী

কহে বাজিকর খেলিলা বিস্তর
, রাজা গেলা অস্তঃপুরে।
গুণীর সম্মানু না করিয়া কেন
ভুরিতে চলিলা ঘরে॥

এই সব কথা কহে বাজিকর সভার মাঝারে বসি। গুণীর গোচরে কহিল সত্তর এক সহচরী দাসী॥ কহিল সত্বর "শুন বাজিকর" "দেখিতে ভোমার খেলা। বিষম হইল অন্তঃপুরে বড় এক বৃকভামু বালা॥ তার নাম রাধা সুন্দরী অগাধা ভূবনমোহিনী রূপে। তুলনা নাহিক তাহার স্থবেশ 30 দেখিতে চলিলা ভূপে॥" দাসীর বচন শুনিয়া শুধায় যত বাজিকর-বালা। "কিরূপ দেখিল নয়ান গোচরে কাহার হইল খেলা। 20 িকান দেব বটে নিশাচর ফুটে যোগিনী ডাকিনী হয়। বুঝিলা কি হেডু কাহার পরশ কেমনে লাগিল ভয়॥" ্আনিয়া চেত্ৰী এক গোয়ালিনী ধরিল নাটীর টান। অনেক নিঘাত নহে দেবঘাত না পাইল কিছু জ্ঞান।" ठखौमान वटन দেখিল যেমতি বড়ই দেবের খেলা। যেমতি দেখিল উঠিল তৈছন অস্তর ভিতরে জালা। ২৬। নাটীর টাম-নাড়ীর গতি। २৮। किছू वृक्षिए भाविन ना।

এ কথা শুনিয়া সহচরী আগে কহে বাজিকর রায়। "আমি কিছু জানি তম্ভ মন্ত্ৰ যত, দেব ঘাত আছে গায়॥" সহচরী দাসী কহিতে লাগিল "শুন বাজিকর ভোরা। ভাল করিবারে যদি বা পারব পাবে খাসা জামা জোড়া॥ রন্তরত্ব পাবে রাজার গোচরে কনক রঞ্জত দান।" 50 "অনেক জানিয়ে কহে বাজিকর সন্ধান বিধান আন॥" · माभी शिन हिन ভাল ভাল বলি কহিতে রাজার কাছে। করিছে গোহরি ১৫ কর জোড় করি "এক নিবেদন আছে। যেই বাজিকর ভোমার ছুয়ারে খেলায় নাটের ছায়া। সেই জন কহে বহুমন্ত্রজানি নাটিকা দেখিতে কায়া। ২০ সেই কোন দেব দেখিয়া অস্তরে

ভয় **সে মানিল চিতে**।

পাইল ঝরকা হৈতে॥

ইহাতে নাহিক আন।

কহিমু ভোমার স্থান।

"আনত সেই সে গুণী।

দেব অপহাত

শ্ভাল করি দিব

বোলহ আমারে

পুলকিত তমু

সেই সে নিম্বাত

ভাহারে দেখিলে

রাজার গোচ্রে

শুনি বৃকভামু

न्यानानने

ৰুকুক গেয়ান যে হয় বিধান তারে ডাক দিয়া আনি॥" . গিয়া সেই দাসী বাহিরে প্রবেশি ডাকিয়া আনিল তারে। অতি কুতৃহলে স্থবল চলিল नरा राम जन्धः भूरत ॥ গিয়া সে স্থবল রাধার গোচরে ধরিল তাহার নাডী। নানা সেই তন্ত্ৰ মন্ত্র আরোপিয়া প্রকার প্রবন্ধে ঝাড়ি॥ 8. ৮ণ্ডীদাসে কহে শুনহে স্থবল আর আছে কিছু দোষ। বীজ মন্ত্ৰ কহ শ্রবণ ভিতরে 🤅 তবে হবে পরিতোষ॥ ১৫। গোহরি--নিবেদন। रण। নাড়ী ও শরীর উভয়ই দেখিতে জানি। নাডী ও শরীরের লক্ষণ দেখিয়া রোগ নির্ণয় করিতে পারি।

> शाननी গিয়া সেই গুণী প্রকার করিল স্থমন্ত্ৰ কহিল কাণে। কুক-মন্ত্ৰ জপ করিতে লাগিল শুনায় রাধার স্থানে ॥ "সেই কৃষ্ণ দেহ দেখিলে যে তেঁহো হয়েন রসিক রাজ। ষে পাঁহু নাগর সুগড় মূরতি বসতি গোকুল মাঝ। , कृषः (पर। এই কুড়ি বর্ণ ভেদ জানাইল পরম স্বরূপ সেই॥

সেই কৃষ্ণ হয় পরম রভন সেই কৃষ্ণ প্রাণপতি। সেই কৃষ্ণ হয় ব্ৰঞ্জের জীবন 14 গোকুলে গোপীর পতি॥ সেই কৃষ্ণ হয় অখিল শক্তি এই কৃষ্ণরূপে দেহা। এই কৃষ্ণ হয় (शाकूल कौरन যেই জন রাখে লেহা॥" যবে প্রবেশিল কৃষ্ণনাম কর্ণে তখনি হইল ভাল। আখি ছুই মিলি করেতে কচালি ত্থ অতি দুরে গেল। চণ্ডীদাস বলে চেতন হইল ₹# সেই বৃকভামু বালা। অঙ্গ মোডা দিয়া উঠিল চাহিয়া দুরে গেল যত জ্বালা।

এই পদে রুঞ্চ-নামের অন্তুত শক্তি বর্ণিত হইয়াছে।
নাম-শক্তি বোধ হয় চণ্ডীদাসই প্রথমে প্রচার করেন।
রুঞ্চ-নাম কর্ণে প্রানিষ্ট হইয়া মাত্র রাধিকার চেতন হইল
এবং তিনি বলিয়া উঠিলেন;—

"দবি কেবা শুনাইল শ্রাম নাম! কানের ভিতর দিয়া"—ইত্যাদি পরে দেখুন। ৭। স্থগড়—স্থগঠিত। ১০। যিনি প্রেমের স্বাধার।

Яo

युष्ट

চাহে চারি পানে কুরক নয়ানে দেখিল স্থবল স্থা।

যেমত তড়িং দামিনী চমকে

তৈছন পাইল দেখা।

সে ছটি নয়ান স্থবল মুদিল চাহিতে নাহিক পারে। নয়ন বারিল রূপের ছটায় দেখি অতি মনোহরে। দেখিয়া নয়ন ভরিলা তখন সেই বাজিকর শিশু। কহিতে লাগিল বুকভানুরা**জ**া গুণীরে ডাকিয়ে কিছু॥ ''তুমি আসি মোর নন্দিনী জিয়ালে কি দিব তোমারে দান। ভিতরে আনিয়া আপন হৃদয় যবে দিয়ে তোরে প্রাণ॥" ভবে কহে শিশু "শুন মহারাজা গুণীর এ কাজ হয়ে। পর উপকার বড়ই চুল্ল ভ সকল জনেতে কহে। 20 প্রহিংসা সম নাহিক পাতক এ তিন ভূবন লোকে। ধিক রহু তার জীবন অসার কি আর বলিব তাকে॥ যদি কোন ছলে করে উপকার ₹ @ যেমত বন্ধুর প্রায়। ইহ লোক তরে উহ লোক তরে" দ্বিজ চণ্ডীদাস গায় ॥

৯->৽। প্রথমে রাধার রূপ দেখিয়া বাজিকরের
নিয়ন ঝল্সিয়া গিয়াছিল। তাহার পর যথন সে দেখিতে
সমর্থ ইইল, তথন তাহার নয়ন ভরিয়া গেল।
১৫-১৬। তোমাকে ক্লম-ভিতরে আনিয়া যদি
নিজের প্রাণ দিতে পারি তবেই তৃপ্তি হয়।

8 > কান্ডা

এ বোল শুনিয়া বুকভান্মরাজা মগন হইলা চিতে। "ভোমারে কি দিয়া আমি সে তৃষিব কি ভোরে আছয়ে দিতে। পরাণ কাড়িয়া দিই ভোমা হাতে তবু সে শোধন নয়। কোন বস্তু দিয়া তোমা সুখী করি হেন মোর মনে হয়॥" করেতে ধরিয়া বাহির হইলা সেই শিশু লই সঙ্গে। 50 কনকের মালা নানা রত্ন আদি দিল হরষিত রঙ্গে॥ মণি মাণিকের মালা অভি শোভা **मिण** এ পঞ্চ জনে। দোহারিয়া দিল মকর কুগুল 20 অতি আনন্দিত মনে॥ সোণার পদক্ অতি মনোহর তাহে তাড়বালা শোভে। বিচিত<u>্র বৃস্</u>ন **সোণায়_জ**ড়িত দিল মহারাজ তবে। ব্ৰেছত পূরিয়া বহুত্ কাঞ্চন যুতে যুতে দিল যত। হর্ষ বদনে তৃষি পঞ্জনে আদর করিল কত। চণ্ডীদাস তাহা • দেখে দাঁড়াইয়া বৃকভামু ধরি করে। আদর করিয়া ভক্ষ্যের সামগ্রী . কত আনি দিল তারে।

>৫। দোহারিয়া—জোড়া জোড়া। ২২। বুতে বুতে—বহু সংখ্যার। 82

वीनह

ক্ৰে পঞ্জন "শুনহ রাজন এক নিবেদন আছে। ভোমার নন্দিনী সঙ্গে একজন নিরবধি থাকে কাছে। দেবের নির্ঘাত হয়েছিল অঙ্গে এবে জানি কোন দোষ। যমুনাতে স্নান করাহ যতনে বুচুক দেবের রোষ॥ প্ৰিত পাবনী এক ভীর্থ হয় করিলে ভাহাতে স্নান। 50 যত দোষ ঘুচে তবে অন্ন রুচে ইহাতে নাহিক আন॥" তবে সহচরী এক সঙ্গে দিল - যমুনা সিনান লাগি। চলে সহচরী রসের নাগরী রসময় ধনী সাগি॥ চলিতে গমন মন্তর স্থচারু ভূবন করেছে আলা। সেই পঞ্চ শিশু বুনদাবন বনে আগে সে চলিয়া গেলা॥ নাগর শেখর যথা নটবর চতুরের চূড়ামণি। বিশেশ দেখিয়া সেইখানে গিয়া রহিলা সুবল জানি॥ চণ্ডীদাস কৰে 🔭 শুনহে সুবল 20 গমন করল রাই। যমুনা সিনানে সহচরী সনে দেখিমু পথেতে যাই॥

৩-৪। ভোমার ক্সার নিকটে কোন দেবতা সর্বাদ।

भाकिन।

৫-৬। নির্বাত—আবাত—আবেশ।তোমার কন্সার উপর কোন দেবতার আবেশ হইয়াছিল। এখনও কিছু দোব থাকিতে পারে।

১১। তবে আন কচে—ব্যাধি সারিয়া গেলেই আন্নে কচি হইবে।

১৬। রসময়ী শ্রীরাধিকা অথ্যে বাইতেছেন।
২০২৪। যেখানে শ্রীকৃষ্ণ আছেন, সুবল সেইখানে
গিয়া তাঁহাকে সকল কথা বলিলেন। তিনি ত পূর্ব হইতে
সকল কথা জানিতেন, সুতরাং সেইখানেই রহিলেন।
২৪। জানি --বিশেষণ। যিনি ভাত সাছেন।

80

বৰাগী

যমুনা নিকটে যথা বংশীবট অতি সে সুন্দর থল। নানা পক্ষিগণ তরুগণ তাপে ধরে নানা ফুল ফল। নানা পুষ্প ফুটে পরিমল উঠে কেতকী চামেলি কুন্দ। নাগেশ্বর আদি নানা সে কুহুম চাঁপা পারুলীর গন্ধ॥ ঝঁ।টি গজকুন্দ গুলাল ছুলাল কিংশুক আমলা কত। 30 কদম্ব দোসারি শোভা অতি বড়ি লাথে লাখে ফুল কত॥ হংস হংসিনী চক্ৰবাক আদি চকোর চকোরী ডাকে। ক্তেক চামরী ভ্ৰমরা ভ্ৰমরী 30 शक्षितिए लाख लाख । · তুরুলতা আর লবঙ্গ লতায়ে বেষ্ঠিত মাধ্বী তরু। নাগর কালিযা সেইখানে নব

মোহন সুরতি ধরু ॥

পথের মাঝারে

হেনই সময়ে রাই।

আছেন স্বৰ

সে হেন মুরতি জলধর অতি সহচরী সনে তুরিতে মিলল হেলিয়া মাধ্বীভলা। যমুনা সিনানে যাই॥ চূড়ার টালুনি_ বন্ধিম চাহনি কহেন স্থ্ৰৰ অপরূপ আছে ভূবন করেছে আলা। ख्ल बल (महे पिरा)। वित्नामिया हुए। याम जिया द्वण যে রূপ ছায়াতে দেখিয়ে মূৰ্চিছত मয়्त <u>শিখণ্ড</u> উড়ে। সহজ মূরতি আগে॥ চাঁদ বিরাজিত ভালে সে চন্দন না কর বিলম্ব এ পথে গমন কে হেন বাঁধিল চূড়ে ॥ আগে দেখ নটরায়। নাসিকার আগে ময়্রের চুলি হংসগমনী রাজার নন্দিনী গৰুমতি তাহে দোলে। প্রবেশ করল তায়॥ ভঙ্গিমা হইয়া ত্রিভঙ্গ ভঙ্গিম সহচরী রহে পথের মাঝারে দাঁড়ায়ে মাধবীতলে। স্বল সঙ্গেতে তথা। কিবা করে আলা গলে বনমালা দেখিতে নাগরে নাগরীর রূপ দোলই হিয়ার মাঝে। মূরছিত ভেল তথা॥ অলিকুল মত্ত লাখে লাখে কত অবশ পরশ नग्राटन नग्रान সতত ভাহে বিরাজে॥ হেরিয়া নাগরী পানে। পীত প্রিধান বিনাদ বন্ধান নাগরী নাগরে হৃদয়ের পরে वाँधिन तम कुटे करन ॥ চরণে নৃপুর বায়। পঞ্ধবনি শুনি মগন মেদিনী কেবল দ্রশ হইল পরশ **मध्**त्र भूतनी शांत्र ॥ 8. नग्रात्न नग्रात्न (थला। বচনে মিলন চণ্ডীদাস কহে অমুপ অপার হইল যভন সুখের নাহিক ওর। হৃদয় ভিতরে মেলা॥ এবে সে এ বেশে যুবতী ভূলিল বুকভা**মুস্থ**তা চরণ হইতে মরমে হইল ভোর॥ নিরীক্ষণ করে চূড়া। २। थन---हन, इनि। আপনার চিত্তে মনের মানসে · ¢। পরিম**ল—কুগন্ধ**। হৃদয়ে বাঁধল গাঢ়া॥ > । ভক্লতা—এক রক্ম লতা। মনে মনে বন- 🕟 ফুল তুলি রাধে পূজল চরণ ছই। নহিল পরশ কেবল দরশ 88 মানস ভিতরে থুই॥ শিশুড়া

२०

20

"সূৰ্যা-পূজা ছলে আনি মিলাইৰ

তবে সে পরশ হব।

ললিতা বিশাখা সব সখী সক্ষে
আনিয়া মিলায়া দিব ॥"
এ কথা অনেক বিচার করিতে
রসের মাধুর্যা বড়ি।
মুগন্ধ হইলে এ সব জানিলে
বৃঝিব চাতৃরী তাবি॥

চণ্ডীদাস বলে এ সব জানিলে
চাতুরী রসের সার। '
রসিক হইলে জানিভে পারয়ে
কিবা সে কি রস ধার॥

৬। বোধ হয় লিপিকর-প্রমাদ---"চল চল সেই ৪০ দিগে" হইতে পারে।

শ্রীরাধিকার পূর্বরাগ

84 ধানশী শমুনা যাইয়া শ্রামেরে দেখিয়া ঘরে আইল বিনোদিনী। বির্লে বসিয়া काॅं निया काॅं निया ধেয়ায় ভামরূপ থানি ॥ নিজ করোপর রাখিয়া কপোল মহাযোগিনীর পারা। বহিছে সঘনে ও ছটি নয়ানে প্রাবণ মেঘেরি ধারা॥ হেন কালে তথা আইল ললিতা রাই দেখিবার তরে। সেদশা দেখিয়া বেথিত চট্যা जूलिया लहेला करत ॥ निक वान् पिया মুছিয়া পুছয়ে মধুর মধুর বাণী। "আজু কেন ধ্নি হয়েছ এমনি কহবা কি লাগি শুনি॥ আজনম স্থা হাসি বিধুমুখে क्षू ना श्रित्र यान। আজু কেন বল কাঁদিয়া ব্যাকুল . কেমন করিছে প্রাণ॥ ٥ \$ চাঁচন চিকুর কিছু না সম্বর
কেনে হৈলে অগেয়ান।"
চণ্ডীদাস করে বৈজ্ঞেছে হৃদয়ে
শ্রামের পিনীতি বাণ॥
৪। ধেয়ায়—ধ্যান করে।
৬। পারা—ক্যায়।
১৮। শান—অভা

86

শখীর উক্তি

ধাৰণী

ঘরের বাহিরে দত্তে শতবাৰ जित्न जित्न जारम याय। মন উচাটন নিশ্বাস সঘন কদম্ব কাননে চায়॥ রাই এমন কেন বা হইল। গ্ৰক্ষ ত্ৰকজন ভয় না মানিল কোথা কি দেবতা পাইল.॥ मनारे हक्क বসন অঞ্চল সংবরণ নাহি করে। বসি থাকি থাকি উঠয়ে চমকি ভূষণ খুসিয়ে পড়ে।

রাজ্ঞার ঝিয়ারি বয়সে কিশোরী

ত ভাহে কুলবতী বালা।

কিবা অভিলাষ বাড়য়ে লালস
বৃঝিতে নারি এ ছলা ॥ ১৫
ভাহার চরিত হেন বৃঝি রীত
হাত বাড়াইল চাঁদে।

চণ্ডীদাস কয় করি অমুনয়
ঠেকিলে কালিয়া ফাঁদে ॥

৬। ৬য় নাহি মনে—পাঠাগুর। হৃক্জন অর্থে ফুর্জ্জন হইতে পারে না। বোধ হয় অর্গ এই—গুক্জন প্রভৃতি।

। দেবতা পাইল--দেবতার আবেশ হইল--ভূতে
 পাইল।

১২। বিয়ারি—কুমারী পাঠও আছে।

>৪-১৫। লালস— আকাজ্ঞা, অনুরাগ। সে যে কোন্ বন্ধকে অভিলাষ করিয়া অনুরাগ দেখাইতেছে তাহা বুঝিতে পারা যায় না।

১৬-১৯। পাঠান্তর:---

তাহার চরিতে হেন বৃঝি চিতে হাত বাড়াইল চাঁদে।

চণ্ডীদাস ভণে করি অকুমানে ঠেকেছে কালিয়া কাঁদে।

অন্ধনয়—অন্ধান; তাহার কার্য্যকলাপ দেখিয়া বোধ হইতেছে যে, সে কোন অপ্রাপ্য বস্তু পাইবার ইচ্ছা করিয়াছে।

81

সিন্ধুডা

আগো রাধার কি হলো অন্তরে ব্যথা।
বঙ্গিয়া বিরলে থাকই একলে
না শুনে কাহার কথা।
সদাই ধেয়ানে চাহে মেঘপানে
না চলে নয়নের চোরা।

বিরতি আহারে রাজা বাস পরে যেন যোগিনীর পারা॥ এলাইয়া বেণী খুলয়ে গাঁথনি দেখয়ে আপন চুলি। **গ্রস**ত ব্য়ানে চাহে মেঘ পানে কি কহে ছ'হাত তুলি॥ এক দিঠ করি ময়ুর ময়ুরী কণ্ঠ করে নিরীক্ষণে। চণ্ডীদাস কয় নব পরিচয় कालिया वंधूत्र मत्न ॥ 30 -41 ৩। ধরম কথা-পাঠান্তর।

৭। যেমন যোগিনীর পারা-পাঠান্তর।

৮-৯। **ফুলের গাঁধনি দেধ**য়ে <mark>থসায়ে চূলি— পাঠান্তর</mark>।

>>। কি চাহে তু'হাত তুলি—পাঠান্তর। নিচ্ছের কেশ, মেঘ ও ময়ুরের কণ্ঠের বর্ণের সহিত জ্রীক্লাঞ্চর বর্ণের সাদৃত্র আছে বলিয়া রাধিকা সেগুলি দেখিতেছেন। রাধিকার এই উদ্ভণিস্ত ভাব বড়ই কমনীয়।

> ৪৮ বালা ধানশী

এ সখি স্থালরি, কহ কহ সোয়।
কাহে লাগি তুয়া অঙ্গ অবশ হোয়॥
অধর কাঁপয়ে তুয়া ছল ছল আঁখি।
কাঁপিয়া উঠয়ে তন্ম কন্টক দেখি॥
মৌন করিয়া তুমি কি ভাবিছ মনে।
এক দিঠি করি রহ কিন্সের কারণে॥
বিজু চণ্ডীদাস্যকতে বৃঝিলাম নিশ্চয়।
পশিল প্রবণে বাঁশী অ্তত্ব সে হয়॥
৭। বড়ু—বট্, বান্ধণ-বালক। এখানে বান্ধণ।

৪৯ কামোদ

সোণার নাতিনী কেন আইস যাও পুন: পুন: না বৃঝি ডোমার অভিপ্রায়।

সদাই কাঁদনা দেখি অঝক ঝরয়ে জাখি · জাতি কুল সব পাছে যায়॥ ষমুনার জলে যাও কদমতলার পাশে চাও ৫ ' না জানি দেখিলা কোন্জনে। শ্যামল বরণ হিরণ পিঁধন বসি থাকে যখন তখন সে জন পড়েছে বুঝি মনে॥ ঘরে আসি নাহি খাও সদাই তাহারে চাও বুঝিলাম ভোমার মনের কথা। এখনি শুনিলে ঘরে কি বোল বলিবে তোরে বাড়িয়া ভাঙ্গিবে তোর মাথা। একে তুমি কুলনারী কুল আছে তোমার বৈরী আর তাহে বড়ুয়ার বধু। কহে বড়ু চণ্ডীদাসে कुन भीन मत जारम ১৫ লাগিল কালিয়া প্রেম মধু॥ ৩। অবকু--অভ্না ৭। হিরণ পিঁধন—পীতবর্ণের কাপড় পরা।. ১৪। বড়ুয়ার--বড়লোকের।

> ८० धाननी

সোণার নাতিনী এমন যে কেনি হইলি বাউরি পারা। मनाइ द्यानन বিরস বদন না বৃঝি কেমন ধারা॥ যমুনা যাইতে, কদস্বতলাতে দেখিয়া যে কোন জনে। যুবতী জনার ধরম নাশক বসি থাকে সেই খানে॥ সে জন পড়ে তোর মনে। সভীর কুলের কলক রাখিলি চাহিয়া ভাহার পানে॥ একে কুলনারী কুল আছে বৈরী • তাহে বড়ুরার বধু।

কৰে চণ্ডীদাসে কুল শীল নাশে কালিয়া প্ৰেমের মধু॥ • ১৫

>। কেনি-কেন।

২। বাউরি--পাগলী।

¢> sta¥t

্রোঝা ওঝা আন গিয়া পেয়েছে 奪 ভূতা। ়কাঁপি কাঁপি উঠে ঐ বুকভামুস্থতা॥ ' কানাই কোঙর চিকণ যবে পড়ে মনে। মুরছি পড়িয়া ধনী কাঁদে ভূম খানে॥ রক্ষা অক্ষা পড়ে মন্ত্র ধরি ধনীর চুলে। কেহ বলে আনি দেহ কালার গলার ফুলে। কালিয়া কোঙর থাকে কদম্বের ডালে। বা**লিকা দেখিয়া পাইয়াছে শিশু কালে**॥ চেত্ৰ পাইয়া তবে উঠিবেক বালা। ভূত প্রেত ঘূচিবেক যাবে অক্সের জালা। ১০ চণ্ডীদাস কৰে সবে যারে কহ ভূত। সে শ্যাম কালিয়া চিকণ নন্দ ঘোষের পৃত। ১। রোঝাম্মানি গিয়াপাছে আছে ভূতা—পাঠান্তর। ৩-৪। চিৰূণ বর্ণের কানাই কুনার। কালিয়া কোঙর হিরণ পিঁধন যবে পড়ে মনে। **य्त्रष्टि** পড়িয়া কাঁদে ধরি ভূম খানে॥ — পাঠাপ্তর। ে। রক্ষা-মন্ত্র—যে মন্ত্র উচ্চারণ করিলে ভূতের হাত হইতে রক্ষাপাওয়া যায়। অক্ষা কথাটার ক্রোন অর্থ নাই।

১২। খ্রাম চিকনিয়াসে নন্দ খোবের পৃত।
-- পাঠারর ।

(2 -----

কালিয়া বর্ণ হিরণ পিন্ধন _ `
বখন পড়য়ে মনে।

মুরছি পড়িয়া কাঁপয়ে ধরিয়া সব সখী জনে জনে॥ কেহ বলে মাই ওঝারে ঝাড়াই রাইয়েরে পেয়েছে ভূতা। ু কাপি কাপি উঠে কহিলে না টুটে সে যে রুকভানুস্বতা॥ ৰক্ষা-মন্ত্ৰ পড়ে निक চूटन सार्७ কেহ বা কহয়ে ছলে। ١. "নিশ্চর কহি যে আনি দাও এবে কালার গলার ফুলে॥ পাইলে সে ফুল চেতন পাইয়া তবে উঠিবেক বালা। ভূত প্ৰেত আদি ঘুরিয়া যাইবে 50 যাইবে অক্সের জালা॥" কহে চণ্ডীদাসে আন উপদেশে कूटनत रेवती (य काला। দেখাও যতনে পাইবে চেডনে घूिति अक्टा कामा॥ ১৭-২০। চণ্ডীদাস কিন্তু অক্স উপদেশ দিতেছেন। কুণ আনিলে হইবেনা, প্রং <u>আ</u>কৃষ্ণকে আনিয়া দেখাও সৰ ভাল হইয়া যাইবে।

> **૯૭** ષ્રુષ્ટિ

অক পুলকিত মরম সহিত

সকরে নয়ন করে।

বৃকি অমুমানি কালা রূপ খানি

তোমারে করিয়া ভোরে॥

দেখি নানা দশা অক্স যে বিবশা

লা হত এমন ভারে।

সে বর নাগর গুণের সাগর

কিবা না করিতে পারে॥

তান শুন রাই কহি তব সাঁই
ভাল না দেখি যে ভোরে। ১০
সতী কুলবতী তুয়া যে খেয়াতি
আছ্য় গোকুলপুরে॥
ইহাতে এখন দেখি যে কেমন
নাহি লাজ গুরুতরে।
কহে চণ্ডীদাসে শ্রাম নবরসে ১৫
বৃঝিলে বৃঝিতে নারে॥
১০ অঙ্গ ও প্রাণ উভয়ই পুলকে পূর্ণ।

€8

কাৰোদ

🦯 সই, কেবা গুনাইলে শ্রাম নাম। কাণের ভিতর দিয়া মরমে পশিল গো আকুল করিল মোর প্রাণ॥ না জানি কতেক মধু শ্রাম নামে আছে গো বদন ছাড়িতে নাহি পারে। জপিতে জপিতে নাম অবশ করিল গো কেমনে পাইব সই তারে॥ নাম পরতাপে যার এছন করিল গো অঙ্গের পরশে কিবা হয়। যেখানে বসতি ভার নয়নে দেখিয়া গো ১• यूवजी धत्रभ देकरह त्रग्र ॥ পাশরিতে চাহি মনে পাশরা না যায় গো কি করিব কি হবে উপায়। কহে দ্বিজ চণ্ডাদাসে কুলবতী কুল নাশে আপনার যৌবন যাচায়॥

। রক্ষনাম এড মিষ্ট লাগিয়াছে য়ে, অনবর ৬
 উচ্চারণ করিতেছি।

ন। পরতাপে প্রতাপে, শক্তিতে।

> । নামের বাসস্থান শরীর; শ্রীক্লফের সেই শরীর
দেখিলে কি কাহারও ধৈর্য্যাকে ?

>৪— ১৫ শ্রীক্তঞ্বে রূপে মুগ্ধ হইয়া কুলবতী নারী কুল ভাগা করিয়া আপনার যৌধন দান করে ।

Ċ 6

ভিরোভা

হৃদয় অখলা হাম সে অবলা ভাল মন্দ নাহি জানি। বিরলে বসিয়া পটেতে লিখিয়া বিশাখা দেখালে আনি॥ হরি, হরি এমন কেন বা হ'ল। বিষম বাড়ব অনল মাঝারে আমারে ভারিয়া দিল। বয়সে কিশোর রূপ মনোহর অতি সুমধুর রূপ। নয়নযুগল করয়ে শীঙল বড়ই রসের কুপ॥ সে নহে আপন • নিজ পরিজন বচনে বিশ্বাস করি। চাহিতে তা পানে পশিল পরাণে বুক বিদরিয়া মরি॥ 32 চাহি ছাড়াইতে ছাড়া নাহি চিতে এখন করিব কি। কহে চণ্ডীদাসে শ্রাম নবরসে ঠেকিলে রাজার বি॥ ৬। বাড়ব - অনুলু, দাবানল। ৭। ডারিয়া—ফেলাইয়া।

> ু **৫৬** গা**ন্ধা**র

সই, কি আজু দেখিল রঙ্গ। আজু গিয়াছিত্র যমূনার কুলে তুই চারি জন সঙ্গ॥ এক কালা দেহ, বসন ভূষণ চুড়াটি টলিয়া বামে। • ৫ ভাহে আরোপিত হেরম্ব অমুজ বেড়িয়া কুস্থমদামে॥ তার মাঝ দিয়া ময়ুরের পাখা दिनिष्ट जूनिष्ट वारा। যেমন রবির স্থতার ভরঙ্গ ১০ লহরী ভেমতি প্রায়। তাহে শশধর यनग्र ठमन তার মাঝে গোরোচনা। পেয়ে অলিকুল তাহার সৌরভ করে আসি আনাগোনা॥ নাসা খগ জিনি * * * * এই হুই নখিলে নয়। আকর্ণ পুরিত সে ছটি লোচন চঞ্চলে শোভিত তায়। কটাক্ষ মিশালে হাসির হিল্লোলে ২০ অমিয়া বরিখে রাশি। দেখিয়া দে রূপ হেন মনে করি সদা থাকি নিশি দিশি॥ কিবা করে আলা গলে বনমালা যমুনা তৃকুল ভরি। পীতবাস অতি কাঞ্চন মুরতি করেতে মুরলী ধরি॥ এত দিন বসি গোকুল নগরে ना प्रिथ ना छनि कार्। এমন মুরতি গড়ে কোন বিধি ৩• দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণে॥

৬। হেরম অমুজ—কার্ত্তিক; কিন্তু অর্থ হয় কি?

১০। রবির স্থভার-রবির কিরণের-কিরণ হত্তের

कांग्र ।

কামোদ

সঞ্জনি, কি হেরিপু যমুনার কূলে। ব্ৰজকুলনন্দন হরিল আমার মন ত্রিভঙ্গ দাঁড়ায়ে তরু-মূলে॥ গোকুল নগরমাঝে আর যে রমণী আছে তাহে কেন না পড়িল বাধা। নিরমল কুল খানি যতনে রেখেছি আনি বাঁশী কেন বলে রাধা রাধা॥ মল্লিকা চম্পকদামে চড়ার টালনি বামে তাহে শোভে ময়ুরের পাথে। আশে পাশে চলে ধেয়ে স্থন্দর সৌরভ নিয়ে ১০ অলি উডি পডে লাখে লাখে॥ দে শিরে চূড়ার ঠাম কেবল বৈছন কাম নানা ছাঁদে বাঁধে পাক মোডা। সে শিরে বেনানি জালে নব গুঞ্জামণি মালে চঞ্চল চাঁদপরে পারা॥ 30 পায়ের উপরে থুয়ে পা কদম্ব হেলন গা গলে দোলে মালতীর মালা। দ্বিজ চণ্ডীদাস কয় না হইল পরিচয় রসের নাগর বড় কালা॥ ৪। আর কত নারী আছে--পাঠান্তর। ৫। वाश-विश्वन। ৮। চালনি--পাঠান্তর। ১০। আশে পাশে ধেয়ে ধেয়ে স্থনর সৌরভ পেয়ে— ৈ ২২। সে কি রে চূড়ার ঠাম কেবল যেমন কাম— - পাঠান্তর। >8। भित्र (वड्न देवनान कारन-भाठाखन।

্তিঞ্জামণি মালে - কুঁচ ফলের মালায়।

১৫। ठक्षन ठाम छेभरत ब्लाफ़ा-भाष्टां ।

&b

PIFTO

যাইতে দেখিল শ্যামে কি করিবে কোটী কামে. ভাঙ ভঙ্গিগ স্থঠাম। চাঁদ বদনে চাহে যাহা পানে সে ছাড়ে কুল অভিমান। সই এমন স্থানর কান। হেরি কুলবতী ছাড়ে নিজ পতি তেজি লাজ ভয় মান। অতি সে শোভিত বক্ষঃ বিস্তারিত দেখি যে দর্পণাকার। তাহার উপরে মাল শোভিয়াছে ভাল ১০ উপজে মদন-বিকার॥ নাভির উপরে জমু তমাল জিনিয়া তমু দলিত অঞ্চন জিনি আভা। বও কারিকর কুঁদিয়াছে ভাল রামকদলি শোজা॥ চরণনথর-কোণে রঞ্জিত শোভিত মেনে মণিময় নূপুর ভায়। চণ্ডীদাসের হিয়া ও রূপ দেখিয়া চঞ্চল হইয়া ধায়॥ ২। ভাও-ভাব। भंडे, किवा (म क्राध्यत क्रमा--भाशिखता >२। अञ्च- -(यन। ১৬। মেনে-কোন অর্থ নাই। '

60

কামোদ

বরণ দেখিতু শ্যাম জিনিয়া ত কোটী কাম বদন জিতল কোটী শশী।

ভাঙ ধমু ভঙ্গী ঠাম নয়ানকোণে পূরে বাণ ় হাসিতে খসয়ে সুধারাশি॥ · সই, এমন স্থল্পর বর কান। হেরি সে মূরতি সতী ছাড়ে নিজপতি তেয়াগিয়া লাজ ভয় মান॥ এ বড় কারিকরে কঁদিলে তাখারে প্রতি অঙ্গে মদনের শরে। যুবতী ধরম रिधरा जुकक्रभ 🐤 দমন করিবার তরে॥ **শতি স্থােভি**ত বক্ষঃ বিস্তারিত দেখিমু দর্পণাকার। ভাহার উপরে মালা বিরাজিত কি দিব উপমা তার॥ 20 নাভির উপরে **লোমল**তাবলী সাপিনী আকার শোভা। ভুরুর বলনি কামধন্ন জিনি ইন্দ্রধন্তকের সাভা॥ চৰণ-নখৰে বিধু বিরাঞ্জিত ১০ মণির মঞ্জীর তায়। চণ্ডীদাস-হিয়া সে রূপ দেখিয়া 🕶 চঞ্চল হইয়া ধায়॥

গাঁহাতেও এই উপদেশ দিয়াছেন। ১৮। বশনি –গঠন।

ে। বা, ধহুক ; দৃষ্টি, শর।

धानमी

५ १। त्कर विक्रक जाव यत्न यानित्वन ना। भ्रमश्र

🐣 ্যাগ করিয়া শরণাগত ন্যু হইলে ভগবান্কে পাওয়া যায়

ना। हकीनाम भूनः अपूनः এই कथा विनिष्ठा छन । बीक्रक

ৈ শ্রামের বরণছটার কিবা ছবি।
কাটী মদন জমু নিন্দিয়া শ্রাম তুমু
উদইছে যেন রবি শশী॥

কিবা সে শ্রামের রূপ স্থাময় রসকৃপ নয়ন জুড়ায় যাহা চেয়ে। হেন মোর মনে হয় যদি লোকভয় নয় কোলে করি যেয়ে ধেয়ে॥ তরুণ মূরলী করিল পাগলী রহিতে না দিল ঘবে। সবারে বলিয়া विनाय लाहेव ১० কি কবে সোদৰ পরে॥ দূরে ভেয়াগিল মরমে লাগিল যে। চণ্ডীদাস ভণে আপন প্ৰাণে বুঝিয়া করিবে সে॥ 🛅 আমের বরণ—ভামের বদন পাঠান্তর। उ उ न रे छ -- उ न प्र र रे ए उ । >१। ठिक कथा। जगवान् यनि "मद्राय नाशिया"

>৫। ঠিক কথা। ভগবান্ যদি "মরমে লাগিয়া" থাকেন, ওবেই তুমি ''ধরম করম" সব ত্যাগ করিতে পারিবে। নচেৎ ত্যাগ সম্ভব নয়।

भागाम

জলদবরণ কান্য দলিত অপ্তন তমু

উদইছে শুধু স্থানয়।

নয়ন চকোর মোর পিতে করে উতরোল

নিমিখে নিমিখ নাহি সয়॥

সই, দেখিমু শ্যামের রূপ যাইতে জলে। ৫
ভালে সে গোকুলনারা হইয়াছে পাগলী

সকল লোকেতে বলে॥

কিবা সে চাহনি ভ্বনভূলনী

শোভিত গলের মাল।

মধুর লোভে শুকি রুসাল॥

ছুইটী লোচন মদনের বাণ
দেখিতে পরাণ হানে।
পশিয়া মরমে ঘুচায়ে ধরমে
পরাণ সহিতে টানে॥ ১৫
চণ্ডীদাস কয় ভুবনে না হয়
এমন রূপ যে আর।
যে জন দেখিল সেই সে ভুলিল
কি ভার কুবুলবিচার॥

১। অঙ্গন জন্ব--পাঠান্তর।

২। উদয় হয়েছে সুধাময় পাঠাওর।

৩। উতরোল ব্যগ্রহা।

৪। নিমেৰপাতও অস্ত্নীয়। নিনিমেধনেক্রে দেখিতে ইচ্ছা করে।

৮। লমরভঙ্গিমা - পাঠান্তর।

১০। 1লে- এমণ করে।

১১। তাঁই সেই।

১২। ছুইটি মোহন মদনের বাণ- পাঠান্তর।

હર

কামোদ

স্থা ছানিয়া কেবা ও স্থা চেলেছে গো
তেমতি শ্যামের চিকণ দেহা।

অপ্তন গঞ্জিয়া কেবা অপ্তন আনিল রে

চাঁদ নিঙ্গাড়ি কৈল থেহা॥

থেহা নিঙ্গাড়িয়া কেবা মু'খানি বনা'ল বে ৫

জবা নিঙ্গাড়িয়া কৈল গণ্ড।

বিশ্বফল যিনি কেবা ৬৯ গড়ল রে

ভুজ, জিনিয়া করিশুণ্ড॥

কন্মু জিনিয়া কেবা কণ্ঠ বনাইল রে

কোকিল জিনিয়া সুষর। ১০

থারজ মাথিয়া কেবা সারজ বনাইল বে

এছন দেখি পীতাম্বর ॥

বিস্তারি পাষাণে কেবা রতন বসাইশ রে

এমতি লাগয়ে বুকের শোভা।

দাম কুসুমে কেবা সুষমা করেছে রে :৫

এমতি তন্তুর দেখি আভা॥

আদলি উপরে কেবা কদলি রোপিল রে

এছন দেখি উরুযুগ।

অঙ্গুলি উপরে কেবা দর্পন বসাইশ রে

চণ্ডীদাস দেখে মুগে॥

১০
৪। থেখা--ইছুর্যু গান্ডীর্যা।

১১। আরদ্ধান ভবিদ্রা; সার্দু—পীত্রবর্ণ।

50

শুভই

কদম্বেৰ বন হইতে কিবা শব্দ আচ্থিতে ়ু আসিয়া পশিল মোর কাণে। অমৃত ভিনিয়া ফেলি কি মাধুষ্য পদাবলী কি জানি কেমন করে মনে॥ সখি রে, নিশ্চয় কহিয়া কঠি তোরে। হাহা কুলাঙ্গনাগণ প্রহিবারে ধৈর্যাগণ यादश दश्न मना देशन त्यादत ॥ শুনিয়া ললিতা কহে অন্য কোন শব্দ নহে মোহন মূরলীধ্বনি এহ। সে শব্দ শুনিয়া কেনে হৈলে তুমি বিমোহনে ১০ রহ নিজে চিত্তে ধরি থেই॥ রাই কচে কেবা কেন মুরলী বাজায় হেন বিষামতে একত্র কনিয়া। দল নহে হিমে জমু কাঁপাইছে সব তমু শীতল করিয়া মোর হিয়া॥ श्रञ्ज नरह मन कुर्छ कार्षे विरु (यन कार्षे ছেদন না করে হিয়া মোর।

তাপ নহে উষ্ণ অভি পোড়ায় আমার মতি চণ্ডীদাস ভাবি না পায় ওর॥

৬। কুলাঙ্গনাগণের ধৈর্য্য নত্ত করিবাব জ্ঞান্ত এই • বাণী বাজিতেছে।

২৩। শুনিতে মিষ্ট, কিন্তু শরীর জ্বলিয়া যাইতেছে।

٤8

দগীর উক্তি

453

না যাইও যমুনাৰ জলে তক্ষা কদম্বমূলে চিকণকালা করিয়াছে থানা। নবজলধর রূপ মুনির মন মোহে গো, তেঁই জলে যেতে করি মানা॥ এিভঙ্গ ভঙ্গিমা ভাতি রহিয়া মদন ভি**তি** ৫ চাদ জিতি মলয়জ ভালে। ভ্ৰনবিভয়া মালা মেঘে মোদামিনী কলা শোভা করে শ্রাম-চাঁদের গলে॥ নয়ান কটাক্ষ ছাঁদে হিয়ার ভিতরে হানে আর তাহে মুরলীর তান। শুনিয়া মুরলীর গান ধৈরজ নাধরে প্রাণ নিরখিলে হাদাবি পরাণ॥ কানড়া কুস্থম যিন্দ্ৰ শ্যামের বদনখানি হেরিবে নয়ানের কোণে যে। দ্বিজ চণ্ডীদাস্ভণে চাহিয়া গোবিন্দ পানে ১৫ পরাণে বাঁচিবে স্থি কে।

্ ধানা—আড়া।

40

বড়াইর উল্লি-

ারুষ্ণের প্রতি

5 M 17

নিভি নিভি আসি যাও বাধাসনে কথা কণ্ড শুনিয়াছিলাম পরেব মুখে। মনে করি কোন দিনে দেখা হবে তার সনে ভাল হ'ল দেখিলাম তোকে॥ ¹ চেটো নেটো যায় জলে তার নাকি ধর চুলে ৫ এমত তোমাব কোন রীত। $^{lat}$ যাব ভূমি পর চুলে ়ু সেই এসে মোরে বলে নহিলে নহিতাম প্রতীত ॥ সুজন কখন ন্ত প্ৰ-নারী নিতে চাও এমনি তোমার অভিলাষ। খামিত শুনিলাম ভালে যদি শুনে তার কুলে শুনিলে ১ইবে অপভাষ ৷ নিশ্বাস ফোপাশ ছাড় আছাড় খাইয়া পড় বুঝিলান তোমাব মনের কথা। नरङ (कर धार् मार् তো जभगन तरहे ১० শুনিতে পাই এ সৰ কথা ॥ আমার কথাটি শুন না করিছ ইছা পুনঃ না মজে নন্দের কুলগারি। 'দ্বিজ্ চণ্ডীদাস**ুক্**য় ও কথা কি মনে লয় নাগ্রীর পিরিত তৈল বৈরী। ा (ठ८छै। (न८छै।—अञ्चरप्रश्व सीलाक। ঃ । ভালে--ভাগ্যে। । অপভাধ—অপ্যান, অপ্রাদ।

शानि—(भोत्रव)

শ্রীক্ষরে উল্লি

বিভাষ

সেই কোন বিধি সানি সুধানিধি থুইল রাধিকা নামে। শুনিতে যে বাণী অবশ তথনি মূর্ছি পড়ল হামে॥ সই. কি আর বলিব আমি। সে ভিন আঁখর रेकल कर कर হইল অন্তরগামী॥ সব কলেবর কাঁপে থর থর ধরণ না যায় চিত।

কি করি কি করি 📑 বুঝিতে না পারি ১• শুনহ পরাণ মিত॥

কহে চণ্ডীদাসে বাশুলী আদেশে সেই যে নবীন বালা।

বাডিল দ্বিগুণে তার দরশনে পরশে যুচৰ জ্বালা॥ ৮। হইল অন্তরগামী--অন্তরে প্রবেশ করিল। "মরমে পশিল" i

১০। চিত্তে ধৈৰ্য্য থাকিতেছে না।

বডাই-বচন—শ্রীরাধার প্রতি ্ শুঙ্ই

হেদে লো স্থন্দরি প্রেমের আগরি শুনহ নাগর-কথা। নিকুঞ্জে আসিয়া ় ভোহারি লাগিয়া - কাঁদিয়ে আকুল তথা।।

তাই রাই করি ফুকারি ফুডারি ৫

পড়ই ভূমির তলে।

ধরি মোর করে

ক্হয়ে কাডারে

30

কেমনে সে ধনী মিলে॥ রাই, অভএ আইমু আমি।

কামুর পিরিভি যতেক আরতি ১০

याहरण कानिवा जूमि॥

প্রেম অমিয়া বাড়াও উহারে

তোহারে কে করে বাধা।

চণ্ডীদাস করে রাখি কুলশীল

পুরাহ মনের সাধা॥ ন। মত্র—অতএব।

১৪। রাখি—ত্যাগ করিয়া।

তিরোতা ধানশী

উলট করয়ে পানি॥

কহিয়ে ভোহারি রীতে।

আন না বুঝিবি চিত্তে।

বড়ু চণ্ডাদাসে গায়॥

এ ধনি এ ধনি বচন শুন। নিদান দেখিয়া আইমু পুন: ॥

সে যে নাগর গুগধাম।

জপয়ে তোহারি নাম।

্ শুনিতে জোহারি বাত।

পুলকে ভরয়ে গাত॥ স্বন্ত করি শির।

लाहरन अंतरम नीत्।

यि वा श्रृष्ट्रा वानी।

ধৈরয নাহিক তায় 🖟

৪। গাত, গা - শরীর।

20

ं ना वाँरथ हिक्त ना भरत होता। **ं ু** শা খায় আহার না পীয়ে নীর । দেখিতে দেখিতে বাডল ব্যাধি। যর্ত তত করি নহিয়ে সুধী। সোনার বরণ হইল খাাম। সোঙরি সোঙরি ভোহারি নাম। ना हित्न मायुष निमिथ नाई। কাঠের পুভলি রহিছে চাই॥ जुना थानि फिल्म नामिकामात्व। তবে সে বৃঝিসু শোয়াস আছে। আছয়ে খাস না বহে জীব। বিলম্ব না কর আমার দিব ॥ চণ্ডীদাস করে বিরহ বাধা। কেবল মরমে ঔখদ রাধা। >। निर्मान—(भव प्रमूर्ग >६। वाश-वाशि।

> জ্রীকুফের স্বয়ং দৌত্য (বাদিয়াবেশে)

> > বরাড়ী

বাদীয়ার বেশ ধরি বেড়ায় সে বাড়ী বাড়া
আইলেন ভাপুর মহলে।
খুলি হাঁড়ী ঢাকুনি বাহির করে সাপিনী
ডুলিয়া লইল এক গলে॥
বিষহরি বলি, দেয় কর।
ভেনিয়া যতেক বালা দেখিতে আইল খেলা
খেলাইছে মাল পুরন্দর॥
শাসিনীরে দেয় থাবা নাগিনী যে হয় কোপা
দম্ভ করি উঠে ধরি ফণা।

অঙ্গুলি মুড়িয়া যায় নাগিনী ফিরিয়া চায় ১০ ছু য়ে যায় বাদীয়ার দাপনা॥ খেলা দেখি গোপীগণ বড় আনন্দিত মন কহে "তুমি থাক কোন স্থানে।" "থাকি বনের ভিতরে নাগদমন বলে মোরে মোর নাম জানে সব জনে। বসন মাগিবার তরে আইমু তোমার ঘরে কুপা করি দেহত আপনি। ছেঁড়াবস্ত্ৰ নাহি লৰ ভাল একখানি পাব ভালবেসে দেহ অঙ্গের খানি" ॥ "বটের ভিখারী হও বছমূল্য নিতে চাও ২০ নহিলে শোভিতে চায় বটে। বনে থাক সাপ ধর তেনা পরিধান কর সদাই বেড়াও নদীতটে॥" "তোমার বস্ত্র শিরে ধরি আনন্দিত হব বডি বহুত বাসিবে মনে স্থা। তোমা অঙ্গ পরশিতে সুখ হয় মোর চিতে তুমি যদি না বাসহ ত্থ।" "চুপ করে থাক বেদে যা পাও তা লও সেধে ভরমে ভরমে যাও ঘরে।" "চুরি দারি নাহি করি ভিক্ষা মেগে পেট ভরি ৩০ আমি ভয় করিব কাহারে॥ ভোমা লয়ে করি ক্রীডা মনে কেন দেহ পীড়া यूशी कत এই इशी करन।" দ্বিক চণ্ডীদাসে কহে বাদীয়া যে এহ নচে মনে বুঝে দেখহ আপনে॥ विष्ट्रि—यनग (म्वी। ৮। কোপা—কুপিত। >>। माथना—कड्या। ১৭। ^{*}বস্ত্র দেহ আনিয়া—আপনি, পাঠান্তর। ১৯। দেখি দেও জীঅঙ্গের খানি—পাঠান্তর।

२•। वर्ष--कि । ২২ ়া ভেনা---ছেঁড়া কাপড়। २8-२१। त्राम करह शीरत शीरत राज्यात वज्र निव भिरत মনে মোর হবে বড় সুধ। তোমার সঙ্গ করিতে অভিলান হয় চিতে তুমি যদি না বাসহ হুখ॥ পাঠান্তর। ২৮। **সেধে—ভিক্লা ক**রিয়া। ২৯। ভরমে ভরমে—মানে মানে। ৩২। তুমি কেন মান পীড়া—পাঠান্তর। (माकानी-(वरभ ৭১ বালাধানশী গোকুল নগরে ইন্দ্ৰ পূজা করে দেখি আইল যতেক নারী। নগর ভিতরে মহাকলরব নাগর হই**ল পদা**রী॥ দোকান দাকান মেলিলা তখন দেখিয়া গাহকীগণ। "বহুদ্রব্য আছে কহয়ে পশারী যে চাহে নিতে যে ধন। মুকুতা প্ৰবাল মণিময় মাল পোতিক মাণিক যত। বছদিন মনে আনিল যতনে ভোমাদের অভিমত॥" মুকুতা ঝুলায়া কহয়ে গাহকী আগে। শুনি গাহকিনী আসিয়া আপনি ১৫ **(ला**कान निकरणे लाला। হ্মধুর বাণী বলে সে দোকানী ं किरमत गहरव हुए।। মুকুতার মাল नशेख (य जान

কড়ি যে লাগিবে বাড়া।

শুনি নারীগণ বলয়ে বচন গাহকী নহিয়ে মোরা। "কিবা ভাগ্য মেনে দেখেছি জ্নমে এমন ধন যে তোরা ॥" 🍈 নিল এক মাল ২৫ যুবতী রসাল দিল এক সখী গলে। পরিমাণ হল আনন্দ বাড়িল कराजक महेरव वराम ॥ আর এক জনে সাধ করি মনে লইল সোনার সূচ। लहे हिल यांग्र (वंडन ना (प्रय পসারী ধরিল কুচ। কহে মূল্য দেহ মোর। भधन वहन १ र र कत्राप्त हुन्दन ७৫ ় এমতি কাজ যে তোর। কাড়া কাড়ি ঘন না মানে বারণ অরাজক হল পারা। যাহার যে বন ় কাটে সেই জন রক্ষক হইবে কারা॥ চণ্ডীদাস গীভি রজক সঙ্গতি त्रिक स्थानम्ब वर्षे । হৈল সমাধান দোকান দাকান সকলি গেল **ये** नूरि ॥ ७+१। आंश्का (मिश्रा रेलाकानमात्र विलाख माशिम। > । পোতিক—একরপ মৃক্তা। १४। इड़ा-माना। ২৭। পরিমাণ হলো— মাপে ঠিক হইল, গলার মত र्हेन।

পাইল।

বাজিকর-বেশে। 92 ভুড়ি। কামুর পারিতি কুহকের রীতি সকলি মিছাই রক্স **न्डाम**िं **ग**रत्र গ্রামেতে চড়িয়ে कित्रद्य कतिदय मक्र ॥ সই কামু বড় জানে বাজি। বাঁশ বংশী ধরি মদন সঙ্গে করি ঢোলক ঢালক সাজি॥ মদন ঢুলিয়া বেড়ায় ফিরিয়া যুবতী বাহির করে। তুইটি গুটিকা लूकिया (कनार्य ১० বুকের উপরে ধরে ॥ গায়ে দড়ায়ে পায়ে **डे**ठेरय তार्ट ' থাকি থাকি দেই ঝেঁাকে। थीति भौति याग्र ভঙ্গা করে তায় র**ঙ্গ** দেখে সব লোকে। 26 পুরাটি আনিয়া ডিমটি খুলিয়া দেখায় যাহাকে ভাকে। উড়াইয়া দিয়া পুরাটি ঝরিয়া ঝুলির ভিতরে রাখে। মুকুতা প্রবাল উগারে সকল २० আর বৃহ্নুদ্রা হীরা। একবার আসি উ উগারয়ে রাশি নাচিয়া বেড়ায় ফিরা॥ কতক্ষণ বই 🔭 হাতে বাঁশ লই যুবতী হিয়ায় গাড়ে।

्र द्वीरक काटक निया । शारयरा इनिया

হেলিয়া যুবতীমুখে।

বাঁশের উপরে

রাইএর অঙ্গিনায় পড়ে॥

ঝুলিয়া পড়য়ে

মুখে মুখ দিয়া নৈছে গুয়া দিয়া ৩০
বুরিয়া বৃলয়ে স্থাখে ॥
এ মদ মদন জানিয়া কদন
তারে ডাকে আঁথির ঠারে।
মোর মনোহিত নহে কদাচিত
ফুকারী ডাকয়ে তারে॥ ৩৫
লোকে নহে রাজি কেমন এ বাজি
রমণী ভূলাবার তরে।
চণ্ডীদাস কয় বাজি মিছা নক্স

২৭। বাশের উপরে চড়ে—পাঠাস্তর। ২৮—৩১। চড়িয়া উপারে ঝুলিয়া পড়য়ে চুম্বই যুবতী মুখে। মুখে মুখ দিয়া পান গুয়া নিয়া-মুরিয়া বেড়ায় স্কুখে॥ পাঠাস্কুর। ..

> ৭০ কা**মো**দ।

নামিয়া আসিয়\ বসিল আসিয়া কহয়ে বেডন দায়।

বেজনের কালে তাত দিয়া গালে সকল যুবতা কয়॥ সই বাজিকর নিবে কি। ষত কিছু দিয়ে কিছুই ন। নিয়ে বলে "মোর মোগা কি॥ এই মনে কবি দেহ কুচগিরি সার তব মুখ-স্থা। আর এক হয় ্মার মনে লয় ১০ ভাষা গোরে দেহ জ্লা॥" স্থানরী গণে ববিদ্যাল মনে ইহাব গ্রাহক ভূমি। টীটের টাটানি থেতের মিঠানি দকলি জানিয়ে আমি॥ . ১৫ চণ্ডীদাসে কয় ভাবে কেন হয় জানিহ চতুরপণা। বুঝালে না বুঝে কহিলে না স্থানো তাহারে বলিয়ে কাণা॥ া আমারে কিজাস কি। পাঠাওর। ५०। जुना--श्रक्। ২৭। তবে কেন নয় জানিয়া চতুর। পাঠান্তর। ে। 'কাণার' পরিবর্ণে 'কালা' পাঠও আছে।

> নাগিতানা বেশ .

> > भ 🛊 हा ब्रीह

ধরি নাপিণিনী বেশ সহলতে প্রবেশ ধ্যানে বসিয়া হাছে বাহ হাতে দিয়া দরপণি খোলে নথ বঞ্চিনা বলে বৈঠ দেই কামাই॥ বসিলা যে রসবতী নারী। ৫ পুলিল কনকবাটী আন্লিজ জলের ঘটী ঢালিল সুবাসিত বারি॥

করে নখরঞ্জিনী চাঁচয়ে নখের কণি শোভিত করন্ত যেন চাঁদে॥ সালসে অবশ প্রায় বুম লাগে আধ গায় ১০ হাত দিলা নাপিতিনী কালে॥ নাপিতিনী একে স্থামা, ননীর পুতলি ঝামা बुलाई एक गत्नत आनत्न। ঘদিয়া ঘদিয়া পায় আলতা লাগায় তায় বচয়ে মনের হর্ষেতে॥ 30 রচয়ে বিচিত্র করি ১রণ হৃদরে ধরি ্তলে লেখে নাম সাপনার। নাপিতিনী বলে "ধনি দেখঞ চরণ খানি , ভাল মন্দ করত বিচার॥" গবে শুনি তার বাণী দেখ্যে চরণ থানি ১০ ভাহাব হৈটে গ্রামের যে নাম। ব্ৰি আন-মনে চাহে নাপিতিনা পানে ক্ৰে "বোল কচ গাপনার নাম।" "খ্যাম নাম কং মোরে জগং মোহিবার তরে ফিবি আমি নগরে নগরে ৷" ২৫ দিজ চণ্ডাদাসে কতে নাপিতিনা এচ নচে কামাইয়া যাহ নিজ ঘরে॥

১৬-২৫। বচয়ে বিচিত্র কবি চরণ সদ্যে ধরি
তলে লিখে আপনার নাম।
কত রস পরক।শি ্হাসয়ে ঈশং হাসি
নির্লি নিরপি-কিবুর্ম॥
নাগিতিনী বলে "ধনি দেখহ চরণ খানি
ভাল মন্দ কর্ছ বিচার।"
দেখি স্বদনী কহে, "কি নাম লিখিলে ডংহ
পরিচয় দেহ আপনার॥"
নাপিতিনী কহে ধনি. "গ্রাম নাম ধরি আন্ত ্র

30

÷ 0

30

- 412141

अंडियी

নাপিতিনী বলে খনগো সই। পানাথিনী লোকের বেতন কই।। কহ ভূমি থেয়ে বাইএর কাছে। বেতন লাগি সে বসিয়া আছে ॥ यिष कर्ड उर्त निकरि याहै। যে ধন দেন তা সাক্ষাকে পাই। পুনি স্বি ক্রে রাই এই কাছে। নাপিতিনা বসি আছুয়ে নাছে॥ বাই কহে তবে আনহ ভাষ। কতেক বেতন আখায় চায়॥ স্থী শাই ভবে ডাক্ষে "আইস। আসিয়া রাইএর নিকটে বৈস।" আসি নাপিতিথা কছুয়ে ভায়। "কেচন কৈনীনা দেহ আমায়॥" হাসিয়া কহয়ে স্থন্দরী রাই। "হেন নাপিতিনী দেখিয়ে নাই॥ এনতে ধন যে করেছ কভা" সে ক*তে,* "ভ্ৰৰণে আছায়ে যত। এক ধন আছে লোমাৰ ঠাই। সে ধন পাইলে ঘর**ে**ক মাই॥ ফদয়ে কনক কলস আছে। মণিময় হারগভাহার কাছে ॥ ভাষার বার্থ-রভন দেই। দবিদ্র জনারে কিনিয়া লঠ। দ্যা করি দেত দরি দ জান। **ठा डेरल** ना (परा क्षा कात्। সাবি যে বেতন দেহ আমার। পরশ-রতন পাই তোমার॥" হাসিয়া কহয়ে স্থলরী গোরী। '"ভাবে নাপিতিনী প্রাণে ছরি॥

পাৰশ-রভেন পাইবা বনে এখন চলছ নিজ ভবনে ॥" চণ্ডাদাস কচে না কর লাজ। নাপিতিনী নহে, বসিকবাল॥

>> ১৪ । বাই বলে ঐ জলিচায় বৈস্। ট্ৰলা ছুল্বনা নাপিতিনা ভূমি। চতে দেৱৰ চেতৰ লগেয়

७०। जीन जीन। भागायनः

٠...٠

একদিন মনে বভদ-কাজ। মালিনী হৈল। বসিকরাজ ॥ ফুল মালা গাঁথি ঝুলায়ে হাতে। "কে নিবে কে নিবে" ফুকাবে পথে॥ হরিতে আইলা ভাতৰ বাড়ী। কাই কেছে, "কত লাইবে কডি॥" মালিনী লইয়া নিজতে বসি। भाला भूल करत देख आणि॥ মালিনী কহয়ে, "সাজাই আগে। পাছে দিবা কভি মতেক লাগে॥" ! এত কঠি মালা পড়ায় গলে। পুৰ চম্মন করিল ছলে। ⁴ ববিষা নাগরী ধরিল করে। এত টিটপণা আসিয়া গবে॥ নাগৰ কছয়ে মহি যে পৰ : " চণ্ডাদাস করে কি কর ছব॥

১। রভ্স-কাজ—প্রেমের কাঞ্।
 ৮। মুল করে — মূল্য স্থির করে।
 ১৪। বিটিপরা চিব্রা।

38

চিকিৎসক-রূপে

ভাটিয়াবী

গোকুল নগরে ফিরি ঘরে ঘরে বেড়াই চিকিৎসা করি। যে রোগ যাহার দেখি একবার

যে রোগ যাহার দেখি একবার ভাল যে করিভে পারি। শিরে শিরশূল পিরিভির জ্বর ৫

হয়ে থাকে যে রোগীর। সাঁথি নাহি মেলে অস্তরে সে জলে

তাহারে পিয়াই নীর॥ কেবল একান্ত ধন্বন্ধরি।

নাহি জানে বিধি এমন ঔষধি ১০ পিয়াইলে যায় জুৱি॥

ওৰধ খাও ভা**ল** যে হও

বট দিও তবে পাছে।

এক জন তথা শুনিয়া সে কথা কহিল রাধার কাছে॥ ১৫

পরের মুখে শুনিয়া সুথে

হর্ষিত হ'ল মন।

বলে সে যাইয়া আনহ ডাকিয়া দেখি সে কেমন জন॥

এ কথা শুনিয়া বাহির হইয়া ২০ বলে সেই স্থী ধাই।

আমাদের ঘরে রোগী আছে জ্বরে দেখ একবার যাই॥

শুনিয়া নাগরে ভাগিল সাগরে

্, আপন মনেতে খুসি। ২৫ এই বাড়ী হতে আসি যে তুরিতে

এখানে থাকহ বসি ॥ ্

সাজ যে সাজিতে চুলিল। ত্রিতে বাজ যে হইলা মনে। চণ্ডীদাসে কয় ধাতু জ্ঞান হয় ৩ গু ভবে সে চিকিৎসা জানে॥

৯ ২ > । ধরস্তারি ভিন্ন এ ঔবধ কেছ জানেন না, এমন কি বিধাতাও জানেন না। এমন ঔবধ যে প্রতিশাইলেই জর যায়।

২>। ধাই--ধাবমান হইয়া, ক্রত ঘাইয়া।

२२। याक- हलना।

ভাটিয়ারী

আপন বরণ ঘুচান তথন
লেপেন কেশেতে মাটী।
তকল্লবি ছ'াদে বসন পিঁথে
রক্তে যে চলফে হাঁটি॥
মনোহর ঝাল কাঁথে।

তাহার ভিতর শিকড়-মিকড় যতন করিয়া বাঁধে॥ ঘুচাইয়া লাজে চিকিৎসক-সাজে

বসিলা রোগীর কাছে।

ঘুচায়ে বসন নিরখে বদন

"রোগ যে ইহার আছে"। বাম হাত ধরি অঙ্গুলি মোড়ি দেখে ধাড়ু কিব্†ু বয়।

"পিরিতের রসে জারিয়াছে বিষে প্রাণ রহে না রয়॥"

হাসিয়া নাগরী উঠে অঙ্গ মোড়ি "ভাল যে কহিলা বটে।

বল কি খাইলে হইবে সবলে বেয়াধি কিসে বা টুটে ॥''

" ঐবধ যে হয় মনে করি ভয় ২০
এখনি খাওয়াইয়ে যেতেম।

ভাল সে হইত জ্ব যে যাইত
সময় যদি সে পেভাম ॥''
খন নাগরী বৃঝিল চাতুরী
টীট নাগররাজ। ২৫
বাশুলী নিকটে চণ্ডীদাস রটে
এমন কাহার কাজ॥

 তকল্পবি অর্থে চলিত ভাষায় চাতৃরী, এখানে বোধ হয় কৌশলময়।

৮। ঘুচাইয়ালাকে—রাধার লজ্জা ঘুচাইয়া।

১৪-১৫। পিরিতের জরে জরেছে ইহারে

পরাণ রহে কি নারয়।—পাঠাতার।

১৬। রটে—কহে।

(मग्रामिती (उध

বরাডী

ব্যাশিনী বেশ সাজি বিনোদ রায়।
ধীরে ধীরে করি চলে হরষ অন্তর ॥
গোকুল নগরে এই শবদ উঠিল।
এক জন দেয়াশিনী ব্রজেতে আইল॥
ভাহারে দেখিবার তরে লোকের গহন।
ধব ব্রজবাসী চলে হরষিত্ত মন॥
প্রণমিল দেয়াশিনীর চরণ কমলে।
বয়ান ভাসিল প্রেমি ন্যানের জলে॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসের মনে আনন্দ বাড়িল।
কোণা হইতে আইলে তুমি এ ব্রজমণ্ডল॥ ১০

ু । গ্রহন—ভিড়। ু হ'। ব্রহ্মবাসিগণ দেয়াশিনীকে শ্রীকৃষ্ণ বলিয়া চিনিতে বিরে নাই। কিন্তু ভগবৎসায়িধ্যের এমনি গুণ যে, হাহারা সকলেই প্রেমাশ্রবর্ণ করিতে লাগিল। Batn

"মথুরা পুরেতে ধাম" কপটে বলয়ে শ্যাম "আইলাম এই বৃন্দাবনে। মনে মনে বাঞ্চা এই সকল তোমারে কই শুন শুন বলি তোমা স্থানে॥ দেবী আরাধনা করি ভিক্ষার লাগিয়া ফিরি ৫ আর করি তীর্থেতে ভ্রমণ। হই আমি ভীর্থবাসী সদাই আনন্দে ভাসি এই সতা বলিছে বচন ॥ জিজাসা করিলা যেই ভাহাতে ভোমারে কই ব্ৰজমাঝে রব কিছু কাল।" ইহা বলি দেয়াশিনী চলে পুনঃ একাকিনী ঘন ঘন বাজাইয়া গাল ॥ দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণে আনন্দিত হয়ে মনে किछानिन "কোপা ভামুপুর। দেখিব তাহার ধাম" কপটে বলয়ে শ্রাম ১৫ রস লাগি রসিক চতুর॥

প্রীরুষ্ণ কপটিতা করেন নাই—সতাই বলিয়াছেন।
তাঁহার জন্মস্থান মপুরা, রাধা তাঁহার আরাধ্যা দেবী,
রন্দাবন তীর্প।

শিক্ষরা

দেয়াশিনী বেশে মহলে প্রবেশে রাধিকা দেখিবার তরে।

সুরক্ত চলন কপালে লেপ্ন ক্থল কাণেতে পরে ॥
সাজি ধরল বাম করে।
প্রিয়া বিভূতি সাজল মূরতি

ক্রডাক জপুরে করে॥

करह "अग्र (परी अअभूतरमरी • গোকুল-রক্ষক নিভি। গোপ গোয়ালিনী স্ভগদায়িনী ১০ পূজ দেবী ভগবতী॥" আশীর্কাদ শুনি গোপের রমণী वाहेमा (मग्राभिनी कार्छ। ক্ষিজ্ঞাসা করয়ে যত মনে পায়ে, বলে "গোপ ভাল আছে॥ ১৫ স্বাকার জয় শক্র হবে ক্ষয় মনে ভয় না ভাবিবে। তোমাদের পতি স্থন্দর স্থমতি সবাকার ভাল হবে॥" সক্ষেতে কুটিলা আসিয়াজটিলা ২০ পড়িলা চরণে ধরি। পতির **মঙ্গল** "গামাব বধুর বর দেহ কুপা করি॥" শুনি দেয়াশিনী হরষিত বাণী জটিলা সমুখে কয়। 20 "নর যে লাইনে জালাই হইনে নিকটে আসিতে হয়॥" छिना यादेश **খানিল ধরি**য়া আপন বধুর হাতে। দেয়াশিনী পাশে ৩০ বসিলা হরষে খুচায়ে বসন মাথে॥ আনন্দে দেয়াশিনী বলে শুভবাণী "**স**ব স্থলকণযুতা। গন্ধর্বন পাবনী জগতভারিণী ৈ, 'রাধা নাম ভামুস্কুতা॥" ধরি ধনীর হাতে ননের সাকুতে নিরখে বদন তার। দেখিতে দেখিতে স্মানন্দিত চিতে मनन केन विकार्त ॥

मां किंটि श्रृं निश्र वाँरथन नागती हुरण। "ञानरम थाकित मकिन भारित 📝 কলঙ্ক নচিবে কুলে॥" 🗼 🖟 শুনিয়া স্থন্দরী কহে ধীরি ধীরি "এ কথা কহবি মোয়। 8¢ আমার হিয়ার ব্যথাটী ঘুচয়ে তবে সে জানি যে তোয়॥'' "একটি শপথি রাখহ যুবতী কহিতে বাসি যে ভয়। পর পতি সনে বেঁধেছ পরাণে ৫০ ইহাই দেবতা কয়।" হাসিয়া নাগরী, চাহে ফিরি ফিরি "দেয়াশিনী ঘর কোথা।" "আমার ঘর 🧻 🍾 চয় যে নগর কহিব বিরল কথা॥"' 🚅 🧠 ৫৫ সক্তে বৃঝিয়া . নয়ান ফিরিয়া ভাক করে এক দিঠে। নির্থি বদন চিনিল তখন শ্যাম চিকণ টীটে॥ ধারি ধারি করি বসন সম্বরি ৬০ মন্দিরে চলিলা লাজে। ऋवृिक (य इय চণ্ডীদাস কয় বেকত না করে কাজে॥

- ৬। বিভূতি—ভশ।
- >> वरम-कर्छ।, प्रश्नामुनी।
- ৩৮। আকুতে-আগ্রহে।
- ৫৭। তাক করে- লক্ষ্য করে।

299

विविक्ती (वर्ष সিপুডা নাগর আপনি হৈলা বণিকিনী কৌতুক করিয়া মনে। ह्या (य हुन्मन अमला वर्ष्ट्रेन যতন করিয়া পানে॥ কন্তুরী দ্রাবক ৫ কেশর যাবক আনিশ বেণার জড়। সোদ্ধা স্থকুম্কুম্ কপূর চন্দন আনিল মুখা শিকড়॥ থালিতে করিয়া আনিল ভরিয়া উপরে বসন দিয়া। মিছামিছি করি ফেরে বাড়ী বাড়ী বৈৰে ভান্ত দ্বাৰে গিয়া॥ "চুয়া কে লইবে" ফুকরি কহয়ে আইলা দাসী যে তবে। "মোদের মহলে আনি দেহ" বলে ১৫ "অনেক লইতে হবে॥" থালিতে ধরিয়া আসিল লইয়া যেখানে নাগরী বসি। চ্য়া যে চন্দন করয়ে রচন বেণানী মনেতে খুসি। "हन्मन हूरक नहेर्र कर्छक জানিতে চাহি যে আমি॥" "সকলি লইব 🏸 ' বেতন সে দিব ≀ ≀্যতেক আনহ তুমি ॥"

্রিশ্মলকী হাতে দিল সে মাথে ২৫

শ্রম যে হইল

যসিতে লাগিল কেশ।

ঘর্দ্দিতে ঘসিতে

স্থমধুর বাণী ক্রে সে বেণানী "হামি যে মাধায়ে ভালে। মোরে বল সখি খানিক আমলকী মাখায়ে দিয়ে ত চুলে॥" ব**লি**য়া বেণানী বসিয়া আপনি চুয়া মাখাবার তরে। চুল যে ছাড়িয়া তাত নামাইয়া ৩৫ মাখায় কুচের পরে।। পরশে নাগরী হট**লা** আগরী পড়ি**লা বেণা**নী কোড়ে। নিদ যে আইল মতি সুখ হইল সব শ্রম গেল দুরে॥ বেণানী বলে "গেল সে বেলে যাইতে চাহিয়ে ঘরে।" উঠিয়া নাগরী বসন সম্বরি বলে "কি **লাগিবে** মোরে॥" বট আনিবারে কহিলা সখীরে ৪৫ শুনিয়ে নাগররাজে। কহে, "না লইব সার ধন নিব না কহি তোমারে লাজে॥" "কহনা কেনে কি আছে মনে ্ শুনিতে চাহি যে আমি। নহিলে যাইবে থাকিলে পাইবে নিশ্চয় কহিল বাণী॥" "হিয়ার ভিতরে রেখেছ যতনে বড়ই ধন যে **সে**হ। কুপা যে করিয়া বাস উবারিয়া ৫৫ সে ধন আমারে দেহ॥" তখন নাগরী বুঝিল চাতুরী হাসিল আপন মনে। গন্ধের বেতন ্ হইল এমন

"কর সমাধান বুঝিলাম কান আর না বলিহ মোরে। এতেক কংগে রাখহ প্রাণে কেবা শিখাইল ভোরে॥ পরের নারী আশ যে করি ৬৫ ফিরয়ে আপন মনে। কোথা বা হয়েছে কোথা বা পেয়েছে ना एमिश एय दकान जारन॥" চণ্ডীদাস কয় কত ঠাঁই হয় যাহাতে যাহাতে বনে। যৌবন ধনে কেবা বা মানে সোঁপে যে প্রাণেতে প্রাণে॥

थाभनकी वर्त्तन—शांशासतः।

७। अप् -- मूल।

৫২। ধির হইয়া কং তুমি --পাঠান্তর।

৫২। বেণানী কহয়ে হিয়ার ভিতরে—ইত্যাদি
 পাঠাস্তর।

नमाधान—(नव; चात्र ७ नव कथा विनिध ना।

१०। त्रा-शिवन इग्र।

গ্রহবিপ্র-বেশে

৮৩ ধানশী

শুনিয়া মালার কথা রসিক সুজন।

গুৰবিপ্র বেশে যান ভাফুর ভূবন ॥

পাঁজী লয়ে কক্ষে করি ফিরে দ্বারে দ্বারে।

উপনীত রাই পাশে ভাফুরাজপুরে ॥

বিশাখা দেখিয়া তবে নিবাস জিজ্ঞাসে।

শুমল সুন্দর লছ লছ করি হাসে॥

বিপ্র কহে দ্বর মোর হক্তিনানগর।

বিদেশে বেড়ায়ে খাই শুন্ধ উত্তর ॥

প্রশ্ন দেখাবার তরে যে ডাকে আমারে।
তাহার বাড়ীতে যাই হরিব অন্তরে।
দিক চণ্ডীদাস বলে এই গ্রহাচার্য্য।
প্রশ্নেতে পারগ বড় গণনাতে আর্য্য।
তোমাদের মনেতে যে আছে সে বলিবে।
ইহারে কডায়ে ধর উত্তর পাইবে।

७। नह नह-मृद् मृद् ।

ধানশী

যাইতে জলে ছলিতে গোপের নারী। কালিয়া বরণ ' হিরণ পিঁধন वाँकिया बहिने ठावि ॥ মোহন মুরলী হাতে। যে পথে যাইবে গোপের বালা माँ ज़ारेन मिरे भरिष ॥ "যাও আন বাটে গেলে এ ঘাটে वर्ड वाधित (लर्श।" সখী কহে ''নিতি এই পথে যাই আজি ঠেকাইবে কেটা॥" হয় বলাবলি करत्र ठिमार्छिन হৈল অরাজক পারা। চণ্ডীদাস কহে কালীয়ানাগর ছি ছি লাজে মবি মোরা॥

৮। আন বাটে—অক্ত পথে।

১৩। অরাজক পারা—অরাজকের ক্রায়।

এক দিন বর নাগর শেখর কদম্ব ভরুর তলে। রুক্**ভামু-স্থতে** স্থীগণ সাথে যাইতে যমুনা জলে। রসের শেবর নাগর চতুব ৫ উপনীত সেই পথে।

শির পরশিয়া বচনের ছলে সঙ্কেত করিল তাতে।

গোধন চালায়ে শিশুগণ স্বয়ে গমন করিলা ব্রংজ।

নীর ভরি কুন্তে স্থীগণ সঙ্গে রাই আইলা গৃহমাবে ॥ কহে চণ্ডীদাসে বাশুলী আদেশে

শুনলো রাজার ঝিয়ে!

তোমা অনুগত বঁধুর সংক্ষত ১৫ না ছাড় আপন হিয়ে॥

চন্দ্রের প্রতি আক্ষেপ

69

চন্দন গঞ্জনা চাঁদ গগনে যদি তোর পাই লাগি। লোহার মৃষলে ভাঙ্গিয়ে ভোমারে ক্রিমু শতেক ভাগি॥ শিখি সব তন্ত্র 📭 💮 রাজ গ্রহ মন্ত্র ৫ ; সাঁধন করিয়া আগে। চাঁদ ঘুচাইয়া উगाद्ध ना मिया তবেই গরব ভাঙ্গে॥ পৃ**জি দেবরাজ সাধিব** এ কাজ

> 0

ি ' ঢাকিয়া রাখিব মেঘে।

অমাবস্থা ভিপি আধারিয়া রাভি তেমতি সদাই লাগে॥

পরাশর তাথে মংস্থান্ধা সাথে কৃহায়ে স্থরতি রঙ্গ।

রাধিকার সনে ১৫ চণ্ডীদাস ভণে এছন খ্যামের রঙ্গ।

চল্ডোদরে অভিসার-গমনে বিদ্ন পটিয়াছে বলিয়া চন্দ্রের প্রতি রাধিকার ক্রোধ। >। ठन्मन गञ्जना— (य ठन्मनतक वर्ष गञ्जन करत्-গদের বিশেষণ।

চন্দ্রের উক্তি

17 1

য় ত

শুনগো রাধিকা টাপার কলিকা অধিক উজার কে। কত কোটী চাঁদ উদ্য: করেছে একলা ভোমার দে॥ তুয়া এক পাদৈ । চাঁদ শত নিদেদ ৫ দস্ত অধিক শোভা।

<u>তোমার তরাদে</u> উছলি আকাশে দেখিয়া ও রূপ আভা।

কেবা তোমার অধিক উজর তোমাব অক্লের মলা।

বিধি আগে আনি ভাঙ্গি খানি খানি ধরে মোর যোল কলা।।

সিন্দুরের ফোঁটা অধরের ছটা অরুণ কাঁপিতে থাকে।

অরুণ সাহসে লক্ষাস্তরে থাকে 💥 তামি **পক্ষান্ত**র নাথে।

ও যুগ নয়ন নাসা জিনি তি**ল ফুল**।

æ

হেরিয়া বদন আকুল মদন কি আর দিব সে তুল। গৃধিনী জিনিয়া শ্রবণ যুগল নয়ান বয়ান ভ্রসা। নতে নিরীকণ রূপের কথন চণ্ডীদাস করে আশা॥

२२। लगा छ। ২৩। এরপে রপ আর দেখা যায় না।

পট্মগুরা

কহিও বঁধুরে নতি কহিও বঁধুরে। গমন বিরোধ হৈল পাপ শশধরে॥ গুরুজন সম্ভাষিতে কৈল যত ভাতি। নিজ পতি সম্ভাবিতে গেল আধ রাতি ॥ যদি চাঁদ ক্ষমা করে আজুকার রাতি। তবেত পাইব আমি বঁধুর সংহতি॥ অমাবস্থা প্রতিপদে চাঁদের মরণ। সে দিনে বঁধুর সনে হইবে মিলন। চণ্ডীদাস বলে তুমি না ভাবিহ চিতে। সহজে এ কথা বটে কেন পাও ভাঁতে॥

১। নতি-প্রণাম। : । ভীতে--ভয়।

ধানশী

কহিও ভাহার ঠাই যেতে অবসর নাই অফুরাণ হ'ল গৃহ কাজে। শাশুড়ী সদাই ডাকে ননদী প্রহরী থাকে তাহার অধিক দ্বিজরাজে॥ স্বজনি কোপ করেন চুরস্ত।

বিপিনো যাইবার বেলে গৃহকর্ম করি ছলে আকাশে প্রকাশ ভেক: চন্দ্র ॥ যে কুলে বিচেছদভয় একুলে নহিলে নয় স্বসারিতে নিশি গেল আধা॥ আসিয়া মদন স্থা হেন বেলে দিল দেখা১ কহ দৃতি কি করিবে রাধা॥ লোহার পিঞ্জরে থাকি বেরাইতে চাহে পাখী তার হৈল আকুল পরাণ। দিজ চণ্ডীদাসে কয় আর কি বিরহ সয় তুরিতে মিশ্ব বর কান॥

১। অফুরাণ—গৃহ কাজ করিয়া শেষ করিতে পারি না।

৪। শাশুড়ীননদী অপেকাচন্দ্র প্রবলতর শক্ত।

৯। সুসারিতে—বোধ হয় সুসার করিতে, অবসর

>•। মদনস্থা—ংকোকিল; কোকিল ডাকিল,রাতি পোহাইল।

কঞ্জভঙ্গ।

of Calle

কোকিলের ডাক পদউধ কাক জাগিয়ে যামিনী শেষ। গেলা নিজ ঘরে তুরিতে নাগর বাঁধিতে বাঁধিতে কেশ। অবশ আলিসে • क्रमना वानिएम ঘুমে চুলু চুলু অাথি। বসন ভূষণ তখন উঠিয়া দেখি। ঘরে মোর বাদী শাশুড়ী ননদী

মিছা তোলে পরিবাদ।

কানিলে এখন হইবে কেমন
বড় দেখি প্রমান ॥

চণ্ডীদাস কছে শুনলো ফুন্দরী
তুমি যে বড়ুয়ার বহু ।
শ্যামের মোহন মায়ার কারণ ১৫
লখিতে নারিবে কেহু ॥

। পদউধ— দৈরাল।
 । জাগিয়ে—জানাইল পাঠান্তর।
 । পরিবাদ— নিন্দা।
 ১৪। বড়ুয়ার বছ বড়লোকের বর্।
 ১৫—১৬। শ্রীকক্ষের মোহিনী মায়া, সকলের চক্ষু

আরত করিয়া রাখিনে। কেত তাহাকে দেখিতে
পাইবে না।
 পাঠান্তর শুনামের মোহন গুণের কারণ
 রাখিতে না পারে কেত।

ধানশী

প্রভাত কালের কাক কোকিল ডাকিল प्तिथिया तकनी (भव। উঠিয়া নাগর তুরিতে গেল যে বাঁধিতে বাঁধিতে কেশ। সই, ভোরে সে বলি যে কথা। সে বঁধু কালিয়া না গেল বলিয়া মরমে রহল ব্যথা ॥ রছিয়া আলিসে , ঠেসনা বালিসে हुन हुन इहि वासि। ब्रमरन वमरन বদল হয়েছে ১০ এখন উঠিয়া দেখি॥ घटत भात वामी শাশুড়ী ননদী মিছা করে পরিবাদ।

ইহাতে এমন করিব কেমন
কি হৈল পংমাদ॥ . ১৫
চণ্ডীদাস কহে মনের আফলাদে
শুনহে রসিক জন।
সদা জালা যার তবে সে ভাহার
মিলয়ে পিরিতি ধন॥

এ পদটি পূর্ব্ব পদের পাঠান্তর মাতা।
১৮--->৽। বাধা বিল্প না থাকিলে প্রেম গাঢ় হয় না।
সেই জ্বান্তে সেই সে আরতি
সেই সে ভ্রুন সার।"

> 4

3

রাধা করে শুন বসিক নাগর পিরিতি বিষম বডি। পিরিতি করিয়ে মরিয়ে ক্রিয়ে কেমনে পিরিতি ছাড়ি॥ নিশি পোহাইল দিবস হইল ৫ মন্দিরে চলিয়া যাও। উঠিয়া বৈঠব শাশুড়ী ননদী তুরিতে তামুল খাও। চূড়ার বন্ধন এলায়ে পড়েছে বাঁধহ যতন করি। শ্রীমুখন ওল মলিন হয়েছে আহা মরি মরি মরি॥ মুখে দিয়া কর হাসিয়া নাগর মুছিতে মুছিতে কামু। 🕠 পড়েছিল সে যে ১৫ অতি প্রিয় তথা ॰ লইল মোহন বেণু॥ নিজ পীতবাস , পরিতে পরিতে

চলিক্রনাগর রায়।

হাসিয়া নাগর চতুর শেখর
. রাধার পানেতে চায় ॥ ২০
চণ্ডীদাস কহে শ্যাম চলি গেল
মার দশা উপজিল।
শুন স্থনাগর কি হবে রাধার
ইহার উপায় বল ॥

২২। আর দশা—অন্ত অবস্তা।
আর দশা উপজিল—অর্থাৎ শ্রীরুফ্য চলিয়া গেলে
রাধিকা গুছার বিরহে কাতর ১ইলেন।

বিভ†ণ

শ্রাম কহে শুন বাই বিনোদিনী তুলিয়া বদনে চাহ। সরস বদনে হাসি নির্থিয়া আমারে বিদায় দেহ॥ এ বোল শুনিতে বুকভানুস্থুতে ৫ পুলক স্বেদ অঙ্গ। আর কি স্বজন শুনিব বচন করিব রদের রঙ্গ॥ গদ গদ বোলে অভি প্রেমছলে কহে বিনোদিনী রাধা। কি বলিব আমি ভোমার চরণে मक**िंग** इंटेल वाक्षा॥ 🕻 মুখে না নিঃস্বরে তোমারে বলিতে কি ঝাঁলব আমি বাণী। বলহ আমারে কি বোল বলিব ১৫ কহিতে নাহিক জানি॥ 🔪 😁 (ভোষা হেন ধন . অমূল্য রতন

সদাই বেড়িয়া থাকি।

তাহে যেতে চাহ নিজ বশ নহ
ত্তনহ কমল আঁখি॥) ২০
ত্তিত গমন করিলা তখন
ত্তাম স্থনাগর রায়।
ঐছন পিরিতি করি গতাগতি
দিজ চণ্ডীদাস গায়॥
০। তোমার মুধে হাসি দেখিয়া আমি চলিয়া যাই।
১০। গতাগতি—গমনাগমন।

(गार्ष्ठ नीना।

শ্রীরাধিকার প্রেমোচ্ছ্যাদ।

কাফি

প্রভাত হইল স্বাই জাগিল গুরুবিত জনা। গৃহঁ কাজ যত সৰ সমাধিয়া আন পথে আনাগোনা॥ সৃহ নাঝে গিয়া দেখি এল ধেয়া ৫ স্থামের চূড়ার মালা। ফু**ল** তাহে ছিল নীল অতসীর তা দেখি হইল জালা॥ আর কাল জাদ তা দেখি বিষাদ উঠিল বিরহ আগি॥ নয়ন অঞ্চল তখন হইয়া বিরহ রাগি॥ খেলে শ্রাম রায় . পথ পানে চায় গৃহ কাজে নাহি মন। কখন হরষ কখন বিরম ১৫ কি বলিতে কিবা কন॥ সময় হইল গোঠে যায় পাল

মনেতে পড়িয়া গেল।

পুরুষ রঙ্গেতে করিতে বেকত তাহার লাগিয়া ভেল॥ রাই বিনোদিনী কল কল শুনি গবাক্ষে বদন দিয়া। চণ্ডীদাস কহে কান্থ হেমমালা তুরিতে দেখহ গিয়া॥ ৮। বর্ণদাদৃশ্য হেডু শ্রীকৃষ্ণকে মনে পড়ায় বিরহজালা

বাড়িল।

तानकाम – कृष्णवर्णत व्यक्तावत् ।

क युंडी

ব্রজরাজ বালা বাজ পথে আইলা লইয়া ধেমুর পাল। সঙ্গে স্থাগণ ভাই বলরাম हिनाम स्नाम जान ॥ স্বল সঙ্গাত তার কাঁধে হাত ৫ আরোপি নাগর রায়। সঙ্কেত বাঁশীতে হাসিতে হাসিতে এ তুই সাঁখর গায়॥ কিছুই না জানে এ কথা আনেতে স্থ্বল কিছু সে জানে। ১০ হৈ হৈ বলি রাজপথে চলি গমন করিছে বনে। দিয়া প্রেমময়ী গবাক্ষে বদন রূপ নিরীক্ষণ করে। দোঁহার নয়নে , নয়ন মিলল ১৫ क्तरत्र क्तरत्र धरत् ॥ দেখিতে শ্রীমুখ---মণ্ডল স্থুন্দর বেধিত হইল রাধা। বনে পাঠাইতে এ হেন সম্পদ

• जित्नक ना करत वांधा॥ २०

কেমন যশোদ। নায়ের পরাণ পুতলি ছাড়িয়া দিয়া। কেমনে রয়েছে গৃহমাঝে বসি **ठ** जीमांग करह देश ॥ ৮। এ ছই আঁখার—'রাধা' এই ডুই অকর।

গুপ্তরী

বদন হেরিয়া গদ গদ হৈয়া করে বিনোদিনী রাই। শুনলো স্বজনি হেন মনে গণি আন ছলে পথে যাই। হেরি শ্যামরূপ নয়ন ভরিয়া ৫ অাথির নিমিষ নয়। এক আছে দোষ গুরুজন রোষ তাহাই বাসিয়ে ভয়॥ আঁথির পুঞ্চলি ভারার মণি যেমন খসিয়া পড়ে। শিরীষ কুসুম , জিনিয়া কোমল পাছে বা গলিয়া পড়ে॥ ননীর অধিক শরীর কোমল বিষম ভানুর তাপে। জানি বা ও অঙ্গ গলি পানী হয় ১৫ ভয়ে সদা তমু কাঁপে॥ কেমন যশোদা নন্দ ঘোষ পিতা হেনক সম্পদ ছাড়ি। ধরিয়া আছয় কেমনে হৃদয় ৈ এই ত বিষম বড়ি॥ ছারে খারে যাকৃ. এ সব সম্পদ

এ হেন ছাওয়ালে শেমু নিয়োজিয়া · পায় কত সুখ পাকু 🛭 চণ্ডাদাস বলে শুন ধনি রাধা ২৫ সকল গুপত মানি। কোন কোন ছলা জিসের কারণে আমি সে সকল জানি॥ ২৬। গুপত--গুপ্ত রহস্য।

চণ্ডীদাস হেরি মোহিত হইশ ২০ নটবর বেশ দেখি। হেন মনে করি রূপের মাধুরী সদাই দেখিয়া থাকি ॥

। गरे, जानिया (मचर । ৭। ঠারি—সঙ্গেত করিয়া। ১৩। ধেফু নিয়োজিয়া- ধেফু রক্ষায় নিযুক্ত করিয়া। ১৩। মেন-"মেনে"—পাদ পুরণে, কোন অর্থ नाई।

२९

२१। किरमत--याशात ।

বড়ারি

স্ট হেরনা দেখহসিয়া। আমার নাগর বদের সাগর করেতে মুরঙ্গী লয়া॥ ঐ যায় কামু রাম বাম পাশে স্বলের কর ধরি। ৫ রাই স্থনাগরী মরম স্থীরে দেখান অঙ্গুলি ঠারি ॥ বিনোদ চূড়াটি . নালমল করে বেড়িয়া কুস্থমদাম। তার মাঝে মাঝে মুকুতা তু' সারি ১০ সাজে অতি অমুপাম॥ ময়ুর শিখণ্ড বিনি বায়ে চেদে (হলন দোলন করে। তা দেখে মো মেন নর্ন চকোর 'পিতেঁচাহে স্থাকরে॥ ১≀ কিবা ভুরু ত্ই নয়ান নাচনি কটাক্ষ ভঙ্গিমে চায়। চপল পরাণে 🌛 স্থির নাঠি মানে সদা মন আছে তার॥

5151

महें कि जात विनव मायू। তিলে দয়া নাতি তাহার শরীরে ় এ কথা কচিব কায়॥ মাঁয়ের পরাণ এমনি ধবণ তার দয়। নাহি চিতে। এমন নবীন-- কুস্থম বরণ বনে নহে পাঠাইতে॥ ়কেমনে ধাইব ধেমু ফিরাইব এ হেন নবীন তনু। বিষম উদ্ভাপ ১০ অতি খরতর প্রথর গগন ভামু ॥ বিপিনে বেকত ফণী শত শত কুশের অঙ্গুশ তায়। সে রাঙ্গা চরণে • ছেদিয়া ভেদিব · মোর মনে হেন ভায়॥ ১৫ আর এক আছে কংসের আরভি कानि वा धतिरय गरा।

সঘনে সঘনে বয় মোর মন

সদাই উঠিছে ভয়॥

চণ্ডীদাসে কয় না ভাবিহ জ্ঞয় ২০ সে হরি জগত পরি। তারে কোন জ্ঞন করিব তাড়ন নাহি হেন দেখি কতি॥

:৬। আরতি এই কথা নানা অর্থে ব্যবজত হই-য়াছে। এখানে বোধ হয় চেষ্টা অর্থাৎ শত্রুতার চেষ্টা।

22

ଜସ୍ମ

শুন গো স্বন্ধনি সই। কেমনে রহিব কান্ত না দেখিয়া নিশি দিশি হেদে রোই। হের দেখ রূপ নয়ান ভরিয়া করেতে মোহন বাঁশী। হাসিতে ঝরিছে মতিম মাণিক ° সুধা ঝরে কত রাশি॥ হেন মনে করি আঁচল থাপিয়া অ'াচলে ভরিয়া রাখি। পাছে কোন জনে ডাকা-চুরি দিয়া পাছে লয়ে যায় স্থি॥ এরূপ লাবণ্য কোথায় রাখিতে মোর পরতীত নাই। হৃদয় বিদারি পরাণ যথায় সেখানে করেছি ঠাঁই॥ 30 স্বার গোচর 🔒 নাহি করে কঙ রাখিব যতন করি। পাছে দিয়া সিঁদ যবে যাই নিঁদ কেহ বা করয়ে চুরি॥ চিণ্ডীদাস বলে হেনক সম্পদ २० গোপনে রাখিবা বটে।

মাছে কভ চোর তার নাহি ওর জানি সিঁধ দিয়া কাটে॥ .

ও। রোই—কাদি। ৮। থাপিয়া—স্থাপিয়া, রাথিয়া। ১০। ডাকা চুরি দিয়া – চুরি ডাকাতি করিরা।

স্থীর উক্তি।

> • •

অস্পতী।

ঙৰ শুৰ শুৰ আমার বচন কহিছে মরম স্থী। গাঁখি আড় কভু না হও তাহার শুনহ কমলমুখি॥ রাই বলে বড় আছে ওই ভয় পরাণ না হয় স্থির। মনের বেদনা বুঝে কোন জন এ বুক মেলয়ে চির॥ পতস্তর নুই গুরু পরিজনা ভাহারে আছয়ে ডর। 30 যেন বেড়াজালে সফবি সলিলে তেমতি আমার ঘর॥ নহে বা খ্যামের অতি কুতৃহলে হেরি ও বদন সদা। সবার মাঝারে কুলকলিখনী সব জন বলে রাধা॥ সে সেব কলক পরিবাদ যত সৌরভ করিয়া নিমু। এত দিন যত পাড়ার পরশী • তাতে তিলাঞ্জলি দিয়॥ ۶, চণ্ডীদাস কছে. সে খ্যাম ভোমার 👉 ৃমি সে তাহার প্রিয়া।

মিছাই বচন লোকের সূচনা আমি ভাল জানি ইহা।।

৮। এ বুক চিরিয়া দেখাইলে মিলিবে অর্থাৎ দেখিতে পাইবে।

>७। एटना--(मांटना।

>.>

শ্রীরাগ।

ঘন শ্রাম শরীর কেলি রস যমুনাক তীর বিহার বনি। শ্রীদাম স্থদাম ভায়া বলরাম সঙ্গে বস্তুদান রঙ্গে কিন্ধিণী॥ [!] খন চনদন ভাল কানে ফুল ডাল ৫ অঙ্গে গিরি লাল কিয়ে চলনি। লুফিছে পাচনি বাজিছে কিঙ্কিণী পদ নৃপুর ঝুমু ঝুমু শুনি॥ কত যন্ত্র স্থতান কলা রস গান বাজায়ত মান করি স্থমেলে। >0 যব বেণু পূরে মৃগ পাখী ঝুরে পুলাকে তেরু পল্লব পুষ্প ফলা। কেহ রূপ চাহে কেহ গুণ গায়ে কেহ প্রেমক আনন্দে বোল কহে। চণ্ডীদাস মনে অভিলাষ ১৫

২। দান।

স্বরূপ অন্তরে জাগি রহে॥

>०। ठार्ड-- (मर्

১•২ বড়ারি।

বিদগধ প্রেম ক্লপ নিরখিতে প্রেম রসমই রাই।

কামুর মরমে রাধার নয়নে সঁপিয়া পশিলা দুই॥ ইঙ্গিত কটাকে তরল চাহনি দে । বে দোহা দোহে রীভ। আন নাহি জানে সন্ধেত বেকত গোঠেতে চলিলা চিত। সঙ্কেত ইঙ্গিতে কহিয়া চলিল রসিক নাগর কান। 50 মথুরার পথে বিকি অনুসারে সাধিতে চলিলা দান ॥ দোহে ঠারা ঠারি আঁথি ফিরি ফিরি গোঠেতে গমন কেলি। হই হই বলি **टरन** रनमानी १० (थ्यू नर्य (गना हिन ॥ সব ব্ৰজবালা করি নানা খেলা গোঠ মাঝে চলি যায়। কান্তু আন ছলে মথুরার পথে দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥ 20 ২-৩। শ্রীকৃষ্ণের রূপ দেখিতে দেখিতে রাধিকার ় হুইটি চক্ষু শ্রীক্ষের চক্ষুতে পতিত হইয়া তাঁহার মর্মে

প্রবেশ করিল।

>:--->২। শ্রীরাধিকা দধি হৃদ্ধ বিক্রয় করিতে
যাইবেন, শ্রীকৃষ্ণ সেই পথে দান সাধিতে চলিলেন।

>00

শিশ্বড়া।

শ্রীদাম স্থদাম , আর বলরাম
স্থবল চলিয়া গেল।
ইঙ্গিত জানিয়া স্থবল ব্ঝিল প
পাতিতে দানের ছল॥
কুমুদ কাননে চলিলা সঘনে
ধেমুগণ নিয়োজিয়া।

চণ্ডীদাস

মথুরার পথে চলে যতুনাথে বাজপথ খানি বেয়া॥ তুসারি কদম্ব তরুবর মাঝে বসিলা রসিক রায়। 50 মধুর মুরলী পূরিলা তখনি আন ছলে কিছু গায়॥ নাগরশেখর নটবর বেশ দান ছলে আছে বসি। ক্ষণেক ক্ষণেক রহি পথ চেয়ে ১৫ । সুধের মিলন—সকলে মিলিয়া একটা দল পূরত মোহন বাঁশী। চণ্ডীদাসে কহে ত্রিত গমন কর রসময়ী রাধে। তোমার কারণে বসি বিনোদিয়া **হটল**। গোঠ রম করি বাধে॥ ₹ 0

क्यूफ कानन-- इन्हांवरनंद्र कान वरनंद्र नाम।

১। বেয়া—বাহিত করিয়া।

জয় 🗐 ।

রাই স্থনাগরী প্রেমের আগরি সক্ষেত পড়ল মনে। বড়াইয়ে ডাকি কহে চন্দ্ৰমূখী যাইব মথুরা পানে॥ আনি গোপীগণ যুথের মিলন ৫ **ठल ठल यांव विदर्क।** দধির পশরা সাজাহ তোমরা বিলম্ব না কর মোকে। সব গোপীগণ চলিলা ভবন, **माका**रत পশরা লই। ১০ 'যুত ছেনা ছ্ধ ঘোল বিবিধ ভাণ্ডে সাজাইছে দই॥

সাজায়ে ছুসারি সোণার গাগরি ওড়নি বিচিত্র নেত। করে অতি শোভা যেন শশী আভা ১৫ বরণ কালিয়া সেত। পরে গোপীগণ নানা আভরণ পশরা লইয়া মাথে। চণ্ডীদাস বলে সব গোপী মিলে সব গোপী মিলে রাধে॥ ২০ १३म । :৩। (নত—বস্ত্র। ১৬। গোপীগণের রূপের তুলনায় চন্দ্র ম**লিন বোধ**

> 4

আশোয়ারি

রাধার বেশে শোভা বনাইছে চিকুর আঁচরি চুল। তাহে স্থান্ধিত অগৰু চন্দন বেড়িয়ে মল্লিকা ফুল। বেণীর স্থর্ছাদ দৃঢ় করি বাঁধে কি কব ভাহার কথা। অতি শোভা দেখি কাল-জাদ সাথী দেখিতে হিয়াতে ব্যথা। চাঁদ ঝল মল <u>শ্রীমৃখমণ্ডল</u> ভালে সে সিন্দুর ফোঁটা। ১ ১০ ভার মাঝে মাঝে চন্দনের বিন্দু আঙ্গুলি বিধুর ঘটা ॥ নয়নে অঞ্চন শোভে বিলক্ষণ ় . অধর রাতুল দৈখি।

গলে গজমতি লম্বি আছে তথি 36 কাচুলি তাহাতে সাখী॥ নিতম্বমণ্ডল ঘাঘর কিন্ধিনী চলিতে বাজয়ে ভাল। বিবিধ ভূষণ নানা আভরণ মোহিত সকলি ভেল॥ সোণার বরণ তাহে আরোপিত পীতের বসন ভালি। সোণার নূপুর চলিতে মধুর বাজ্বয়ে পঞ্চম তালি॥ রাধা মাঝে করি চ**লে** ব্রজনারী পশরা লইয়া মাথে। চণ্ডীদাস বলে রাই বিনোদিনী চলিলা মথুরা পথে॥

9-৮। কালজাদ—কৃষ্ণবর্ণের পৃশ্ব বস্ত্র। সাক্ষাতে কালজাদধানি দেধিয়া শ্রীকৃষ্ণকে মনে হওয়ায় অদর্শনে ব্যধা পাইলেন।

১২। প্রতি **অমূলিতে** চন্দ্র বিরাজ করিতেছে।

406

বড়ারি।

রাই বলে শুন ' হেদেগো বেদনি
ঘাটের জানহ পথ।
বড়াইরে রাধা করে এক কথা
"বড় দেখি অমুরথ॥
আর কত দূর আছে মধুপুর ৫
. কহনা বেদনী বৃড়ি।
সহজে আগল পথ নাহি চলে
চলিয়া ঘাইতে নারি॥ '
কামু পরসঙ্গ অলপ ইন্দিতে
শুধাই যন্তন করি। ১০

কহিতে কহিতে
কহ কহ আগো বৃড়ি ॥

কহিছে বড়াই আপনি ডরাই
মাঝেতে যমুনা এ।
ও পার হইলে যা চাহ তা পাবে ১৫
এ পারে নাহিক সে ॥
হাসি কহে রাধা বলে আধা আধা
ও পারে কে আছে বল।
বড়াই বলিছে কহিলে কি হয়
আগেতে দেখাই চল ॥ ২০
হর্ষ বদনী রাই বিনোদিনী
পুনঃ সে সুধায় তায়।
সে জন কেমন কিবা তার নাম
দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥

৪। অহুরগ--সৃষ্ট।

৭! আগল—বোধ হয় হুর্বল।

ন । পরসঙ্গ---প্রসঙ্গ।

3.1

বড়ারি

শুন গো বড়াই হেথা।

কহ কহ শুনি সে জন কেমন

তার পরসঙ্গ কথা॥

কোন নাম তার সে কোন দেবতা

সে কেনে ঘাটেতে বসি। ৫

বড়াই কহিছে ৃ এখনি জানিবে

সঙ্গে আছে তার বাঁশী॥

বাঁশীর নিশান জানিয়া তখ্ন

হাসি বিনোদিনী রাধা।

"তাসনে কিসের পরিচয় মোর ১০

কি আর করহ বাধা"॥

"সে জন চাতুরী তাহার মাধুরী তার নাম কালা কাসু॥ বা চাহে তা দেই ইথে আন নাই অভি সে রসের তমু॥" ১৫ রাধা বলে শুন "বড়াই বেদনী চলিতে না চলে পা।" বড়াই বলিছে রাই পানে চেয়ে "তোমার রসের গা॥ य वन भ वन २० ব্ড়ীরে কি বল বৃড়ীর নাহিক লাজ। যুবতী জনারে পরশিতে তফু চলট দানের মাঝ॥" গিয়া দান ছলে চণ্ডীদাস বলে ভেটহ নাগর রায়। ₹ @ শ্রাম স্থলাগর বসের সাগর ক**দস্ব ত**রুর ছায়॥ ৮। বাঁশীর নিশান—বাঁশীর কথা বলাতেই বাধিক।

া গ**লেন যে বড়াই শ্রীক্নঞ্বে** কথা বলিতেছে।

প্রেমে চল চল নয়ন কমল
প্রেমময়ী ধনী রাই।
খ্যামচাঁদ মালা জপিতে জপিতে
আনন্দে চলিয়া যাই॥
রাই বলে শুন, "রসিয়া বড়াই ৫
কত দ্র মধুপুর।
নরান ভরিয়া তাকে দেখি গিয়া
তবে মনোরথ পুর॥"
হাসিয়া বড়াই কহিছে দড়াই

"ও পারে দানের কাজ। ১০

পিয়ক্ডা।

তোমার কারণে বিসি আন ছলে
আছয়ে রসিকরাজ ॥"

কলে বলে রাধা কণে করে বাধা
"তা সনে কিসের কাজ।
কো জানে তারে দানী বসিয়াছে ১৫
এই রাজপথ মাঝ॥
আমরা কংসের যোগানী হইয়ে
তারে বা কিসের ডর।"

চণ্ডীদাস বলে গিয়ে মিল রাধে
সে হরি রসিকবর॥
২০

৯। দড়াই---দৃঢ়ভাবে।

১)। করে বাধা--বিরন্ধ কথা কয়।

১৭। যোগানী—থে প্রতিদিন জিনিষ যোগায়।

, . . .

কুড়ি

শ্যাম পরসঙ্গ বড়াই সহিতে
কহিয়ে চলিয়া যায়।

সব গোপীগণ হাসিতে হাসিতে
গমন করিছে তায়॥

কোন সম্বি বলে ' নিকটে মথুরা ৫
নিকটে চাহিয়ে দেখ।

মেঘের বরণ দেখিয়া সঘন
কণেক এ পারে থাক॥

বড় অদভুত দেখি যে বেকত

মেঘ নামে আচন্ধিতে। ১০

কি হেডু ইহার বুঝিতে না পারি
ভাবনা হইল চিতে॥

তাহাতে বড়াই কহিছে ওথায়

ও নহে দেবের মেহা!

১১২ কাৰড়া

• "শুন রসমই রাধা। চল সব গোপী বিলম্ম না কর কেন বা করিছ বাধা॥ দেখ আগে হৈয়া পশরা লইয়া দানী আগে কিবা চায়। জানিব কহিতে তবে সে সকল হেন আছে অভিপ্ৰায় ॥" বড়াই বচনে যত গোপীগণে চলিলা কদম্ব তলে। "রহ রহ বলি শুন গোয়ালিনী" ১০ দানী সে ডাকিয়া বলে॥ "বহুদিন রাধে পলাইছ সাধে আজু সে পাইয়াছি লাগি। যত এমুডাপ তাপিত আছয়ে উঠিছে দারুণ আগি ॥" বিপাকে পড়িলে চণ্ডাদাসে বলে ঠেকিলে দানীর হাতে। একে আছে তাই সঙ্গেতে বড়াই অপ্যশ তার মাথে।

১২-১৫। অনেক দিন এই পথ দিয়া গিয়াছ, কিছ দান দাও নাই। সেই জ্ঞে আমার মনে বড় ক্ট আছে। আৰু তাহার শোধ লইব।

, ____

কান্থ কহে শুন গোপি আমার বচন।
দান দিয়া মথুরাতে করহ গমন॥
কড়ি নিব আজি বুঝি কড়া কড়া।
রাজার হাসিল কড়ি নাহি যায় ছাড়া॥

বছদিন গেছ তোরা দানী ভাণ্ডাইয়া।
আজি সে লইব দান পশরা লুটিয়া॥
যাবে যদি বিকি কিনি করিছে মথুরা।
রাজার হাসিল কড়ি দিয়া যাহ তোরা॥
চণ্ডীদাস কহে শুন রাধা বিনোদিনী।
কতদিন গেছ পথে তাহা আমি জানি॥ ১০

- ু। আজ কড়ায় গণ্ডায় প্রাপ্য বুঝিরা লইব।
- । ভাखाইয়ा—ठकाইয়।
- ৮। शिमन-- श्राभा

> > 8

এইগ

শুনি গোপীগণ ্রাপ্তব বচন কহিতে লাগিলা তায়। "কে জানে কিসের দানের বিচার মোর মনে নাহি ভায়॥ এই পথে মোরা করি আনাগোনা ৫ क्षाति मात्नत्र कथा। আচম্বিতে শুনি দানের বিচার क्ति किए मिट्ट (इथा ॥ গো**কুলে** দিয়াছি রাজকর মোরা . মো সবার পতি জনা। কখন এ পথে তরুণী যাইতে কেহ নাহি করে মানা"॥ তাহে কহে বাণী "अन वितामिनौ কে তোমা রাখিতে পারে। পশরা সুটিব ১৫ আজু সে লইব কে কি বা করিতে পারে"॥ চতীদাসে কহে শুন ধনী রাধে সুখেঁ কর ক্রিনি বিকি।

সরল বচন অমিয়া রচন . বিকি কর সুধামুখি।

১৪। রাখিতে—রকা করিতে।

३३। त्रठन---छावा।

224

ভুড়ি

"বিনোদ বড়াই রাধা বলে শুন বড়ই বিষম শুনি। এ পথে জাগাত ঘাটে ঘাটীয়াল কখন নাহিক শুনি ॥

रय इय रम इय कारह नाहि ख्या व কহিব কংসেরে গিয়া। তোমার যোগানী তার হেন গতি

त्रांचिटव धतिया नयां^थ ॥ "শুন বিনোদিয়া বড়াই বলিছে

তরুণী আগুলি পথে। এ কোন বিচার নহে ব্যবহার

বড় হব অমুরথে॥

একে সে অবলা ভাছে সে গোয়ালা ष्ट्ररेल क्लित खत्र।

জাতি কুলশীল সকলি মঞ্জিব ১৫ এ তোর উচিত নয়"॥

কান্নু কহে তাই "শুনহ বড়াই

রাজকর নিব বৃঝি।

त्य ह्य त्म मिया जूमि याह मया

চণ্ডীদালে কয় : শুন রসময় এবার ছাড়িয়া দেহ।

পুন বাহড়িয়া চ পথে আসিলে

(व इय वृत्रिया निरु ॥

২৩। বাছড়িয়া--- শুগ্রাসর ইইয়া।

>>6

রাগ ৰতি

"ঠেকিমু দানীর হাতে।

বছদিন এই পথে আসি যাই পশরা লইয়া মাথে।

যে বলে জাগাভি যায় ভার জাভি

কুলের বজর পড়ি। যত করে নাট আসি এই ঘাট এই সে বড়াই বৃড়ি॥

বুড়ির বচনে এ পথে আসিয়া

ঠেकिन मानीत्र ठाँरै।

কেমনে ও পারে গেলে সে আমরা ১০ আর সে আসিব নাই॥

কে জানে এমন হবে পরিণাম তবে না আসিতাম মোরা।

হেন বুঝি কাজ কুল শীল লাজ

এ দানী নিবেক পারা॥ ভালে ভালে বড়াই দুরে আওবিক্

ও পারে লইয়া যা।

শুনি হিয়া কাঁপে দানীর বচন

থর থর করে গা"।

চণ্ডীদাস বলে শুন ধনী রাধে ২০

কেন বা করহ জয়।

আদর পিরিভি কর বিকি কিনি

হেন মোর মনে লয়॥

৪-৫। ৰাগাত বাহা বলিওৈছে তাহাতে ৰাভি कुन नहे हरेशा गारेष ।

>৫। পারা- বোধ হয়।

222

বড়াড়ি

বেরাইতে রাধা নাহি পড়ে বাধা পশরা লইতে মাথে। ভবে ቖ এ পথে 🦷 পশরা লইয়া আসিথু বড়াই সাথে॥ সব গোপীগণ বিরস বদন ৫ কহিছে কামুর কাছে। "বিকি গেল বয়ে বেলা সে উচর অমুরথ হয় পাছে॥ অবলা দেখিয়া পথের মাঝারে এত পরমাদ কর। বৃঝিতে না পারি ভোমার চরিভ কুবুদ্ধি ছাড়িতে নার"। রাই বলে "তুমি গোকুলে বসতি ওনেছি ভোমার রীত। যমুনার জলে কেহ যেতে নারে ১৫ ভাহার হর**হ** চিত ম বসিয়া থাকহ কদম্ব কাননে পরিয়া কদম্ব ফুল। অবলা দেখিয়া वाँनी वाकारया স্বার হরহ **কুল**" ॥ শুন বিনোদিনী চণ্ডীদালে বলে কান্ত্র চরিড বাঁকা। কে ধনী আসিব যমুনা ধাইয়া ভাহার যৌবনে ডাকা॥

১—৪। বেরাইতে—বাহির করিরা আনিতে। রাধাকে দাইরা পশরা মাধার বাহির হইরা আসিবার সমরও কোন বাধাবির (হাঁতি টিকটিকি ইত্যাদি) উপহিত হর নাই;ভাহা হইলে কি বড়াইএর সলে আসিতার ? १। উচর--উচ্চ, অনেক।

। अञ्चल-विवाह, विशृह ।

২৪। ডাকা-- ডাকাভি।

222

বড়াড়ি

"শুনহ নাগর কামু। কে ভোমা এ মাঠে দানী করিয়াছে ধরিয়া মোহন বেণু। হাসি হাসি চাহ কুল নিডে চাহ আপন বড়াই রাখ। তিলেকে ভাঙ্গিবে ঠাকুরালি পণা আপনি দাঁড়ায়ে দেখ"। কামু বলে "আগে বাহাই করিবে তাহা আগে তুমি কর। ভবে দে ভোষাৱে ছাড়ি দিব আমি ১০ যাহার ভরসা কর। কংশের যোগানী বলিয়া ভোমার वर्ष व्यश्कात प्रि । কোটা কোটা কংস করিয়াছি ধ্বংশ · শুনহ কমলমুখি ॥" রাই বলে "ভাল कानिएत्र खामादत রাখাল হইরে এত। গক্ন না রাখিতে হাতে বাড়ি করি তবে সে হইত কত॥" এই ব্যবহার ১০ কান্থ বলে "মোর রাখি বে ধেছুর পাল। গোপের গোধন ভূষণ চন্দন তাহার জীবিকা যার॥" "পরিরাছ মালা শুঞা আছে গলা

গাঁথিয়া পরৰ মালা।

এ বেশে এদেশে রমণী ভূলিব যাহাই বরণ কালা ॥ বনফুলে তুমি চুড়াটি বেঁধেছ এই সে নাগরপণা। যত বড় ভূমি ঠাকুর বটহ 90 এবে সে গেলই জানা"॥ চণ্ডীদাসে বলে শুন গুণনিধি অবলা না দিহ ছুখ। মথুরা যাইতে দে**হ আন ভি**তে যে নিকৰ সোণা পাওয়া যার। করিতে বিকির সুখ। 90 ১৮। বাড়ি--পাঁচনি।

৩। রঙ্গ--বর্ণ।

> । লবে—লভে নয়ত ?

"কালিয়া বরণে না ছুঁইও রাধার অঞ্চ। কালিয়া হইব সোণার বরণ তোমার কালিয়া রঙ্গ ॥ লাখবান সোণা মোর নিজ দেহ কালিয়া হইয়া যাব। দূরেতে থাকহ কাছে না আসিহ শিরে দধি ঢালি দিব ॥" "কালিয়া বরণ নাহি কোন জন कानिया ना वन त्रार्थ। कानिया नायरत निमान कतिया ১० कानिया श्राइ जार्य ॥ কালিয়া বরণ এ জিন ভূবন এ সর্ কালিয়া ভাবে। কালা করে আলা কালা জপ মালা জগত জীবন লবে॥ কাল হু আঁখির ভাঙ ভঙ্গিনীর

(यांगीत (थशान कांना।

ক গ্ৰছ। কালিয়া বরণ ধরিলে যভন মেলহ নয়ান ছটি। পুথলি উপরে ধরহ কালিয়া তার তেন মুছি হুটি॥ নোটন বন্ধান কুণ্ডল করিয়া তাহা বা পরেছ রাধে। কালজাদ কাল তাহা কেনে ধনি পরিয়াছ নিজ সাধে। নয়নে পরিলে কাজল কালি মৃষ্ডিয়া করহ দূর। হিয়ার কাঁচলি কালিয়া বরণ কেন বা ধরেছ ওর॥ ভাঙ ভূক হুটি উপরে ধরিলে व्यक्तित रामन कान। নিরবধি ভর যমুনার নীর ১৫ তাহা নিভি আন ভাল॥ ভোষার অঙ্গের নীল নব বাস [ূ] তাহা বা পরিলে কেনে। ,

যোগ অমুরাগ রাগীর অস্তরে সকলে কালিয়া সারা ॥

ভব বিরিঞ্চির ভলে নিরস্তর ২০

। লাৰবান লক পোড়ের—লকবার পোড়াইয়া

कानिया वत्रण थानि।

পরিহর কালা ধনি ॥

চণ্ডীদাসে বলে ডাকি কুতৃহলে

এ সব চাত্রী অপার বচন বিজ্ঞ চণ্ডীদাস ভগে॥ ২০

>-৪। দেখিতেছি, তুমিত যত্ন করিয়া কাল বর্ণ ধারণ করিয়াছ, তাহার প্রমাণ তোমার চক্ষুর তারা। কাল বর্ণকে যদি এতই দ্বণা কর, তবে সে চুটিকে মুছিয়া ফেল।

252

চণ্ডীদাসে বলে শুন বিনোদিনী

মুখেতে করহ বিকি। ২০

যে হয় উচিত দান সমাধিয়া ,

চলি যাহ যত সধী॥

323

এপট বস্তুরী

মুট্ট জানিয়ে আমরা "তুমি সে **বে**মন রাখাল হইয়া বনে। গোপের গোধন রাখহ বাগাল বোলহ বালক সনে। স্থরভি হারায়ে ৫ একদিন বনে কাঁদিয়া বিকল তুমি। নাহি পড়ে মনে সে সব পাশরি সকল জানিয়ে আমি॥ একদিন মায়ে शारत्र मिष् मिरत्र রেখেছিল উত্বখলে। কাঁদিয়া বিকল বালক সকল তাহা বা পড়য়ে মনে॥ নবনী কারণে বাঁধিয়া যতনে त्रांथन नटन्द्रत तानी। দেখিয়া বিকলি **२**इंड भागनि ১৫ তাহা সে সকলি জানি॥ এবে সে জানিব '' যত বড় দানী কখন নাহিক ঠেক ॥"

"শুন ধনী রাধা রূপের গরব কহনা আমার কাছে। গুণ নাহি যার কিবা রূপ তার শুন কহি তোর কাছে। দেখিতে স্থন্দর সোণার বরণ ৫ উত্তম সোণের ফুল। রূপ আছে তাথে গুণ নাহি তার কেলায় করিয়া দূর॥ কেহ নাহি পরে নাহি বাস গন্ধ তার বা ঐছন রীত। নিগুণি কে দরে গুণকে আদর বুঝহ আপন চিত 🛭 দেখি যে স্থন্দর ভাল ফল যেন খাইতে লাগয়ে ডিতা। কটার বরণ নহে স্থশোভন ১৫ কি কহ রূপের কথা" শুন বিনোদিনী চণ্ডীদাস বলে দোঁহার আরতি রীত। কে ইহা বুঝিব কাহার শক্তি দোঁহে সে দোঁহার চিত। ১৫। কুটা—গৌর।

৩। বাগাল—বাধাল। ' >৫। কুটা—গৌর।

৪। বোলহ—বেড়াও।
১৮। স্বারতি—প্রেম।

১০। উত্থল—উথ্লি।

১২৩ শ্রীপট্যপ্ররী।

"শুন গোয়ালিনী . উপমা দিয়াছ
কংসের আরজিপ্না।
ছাওয়াল বেলাতে পুতনা বধিল
ভার রীভ আছে জানা।
কি করিতে পারে ভোর কংস রাজা ৫
পুতনা বধিল যবে।
ভারে কি দেখাসি যোগানী বলিয়া
ভাহারে বধিব করে॥"
চণ্ডীদাস বলে দোহার পীরিভি
অমিয়া রসের সার। ১০
ছ'ছ রসসিক্ষু দানছলা রস
অপার মহিমা সার॥

- C- S

৭-৮। তুমি কংসের ছুধ যোগাও বলিয়া কি ভয়

(मर्थार्टेएक् ? তোমার কংসকেই কোনদিন বধ করিব।

যতি 🕮

রাধা বলে "তুমি কত চাহ দান বলহ কি নিতে চাহ। যা নিবে তা দিব নাহি ভাঙ্গাইব সবারে ছাড়িয়া দিহ॥" কামু বলে "ভাল বলিলে আমারে বুঝহ আমার কাছে। উচিত হইলে তাহা দিয়া যাবে . আন কথা হয় পাছে॥ অমূল্য রতন নিবত এখন বেণীর যে হয় দান। • ১০ এক লাখ নিব ু ইহার উচিত ইহাতে না হয় আন॥

সিঁথার সিন্দুরে ছুই লাখ নিব নাসার বেশরে রাই। তিন লাখ নিব মুকুতার দান ১৫ বেশের উপমা নাই॥ পাঁচ লাখ পর হাসির সোসর নিব সে এখনি গণি। যাহার হাসির মিশালে পড়য়ে কত মাণিকের কণি॥' কহে চণ্ডীদাস শুন রসময় এত কি দানের লেখা। এ ঘাটে তরুণী গোপের রমণী আর কি পাইব দেখা॥ ০। ভাঙ্গাইব--কম দিব। ১৪। রাই—বোধ হয় 'তাই' হইবে। ১৭। সোসর—স্থান।

1986

বড়ারি।

"কাঁচুলির কড়ি দশ লাখ নিব হারের বিংশতি লক্ষ। নয়ানের কোণে আছে কত ধন বঙ্কিম যার কটাক্ষ॥ সাত লাখ নিব ৫ নিতম্ব মণ্ডল নৃপুর সহস্র পর। অমৃশ্য রতন যাহার নাহিক ওর॥ নীলবাস পর শোভিত স্থন্দর ইহা বা কিসের লেখা। मण माथ निव কে ভোমা রাখিব পেয়েছি ভোমার দেখা॥ .

কিছিনী নূপুর কোটি লাখ নিব অমূল্য ভাণ্ডার লেহত জাগাত যাহার উপমা নাই। বুঝিলে যে ইয় লাভ।" নাহি যায় রাখা ১৫ **ठ** छीमारम वरन . य वन रम हय যত হয় লেখা লইব তোমার ঠাই ॥" এ কত বুঝিয়ে ভাব॥ এত শুনি রাধা কহে আধা আধা >। রসিয়া--রসিকা। বসিয়া নাগর পাশে। ৮। ভাঙ্গাইয়া লহ-কোনটায় কত লইবে হিসাব এত কিবা সহে দানের বিচার করিয়া লও। কহে দ্বিজ চণ্ডীদাস॥ ٥ ډ ১৮। यृ**ल**-य्ना। १। भूँ थित এই यश्म की छेम्छे। ১১। রাখিব—রাখিবে। >29 ১৫। যে অঙ্ক পাত করিতে পারা যায় না। **কাডারি**

হাসিয়া হাসিয়া বড়াই রসিয়া ধরিয়া রাধার করে। হাসনি রসিয়া রাই পানে চেয়ে হরষে কহিছে তারে॥ "কত সুধানিধি আমার আঁচ**লে** ৫ করে সে পরশি লেহ। কিবা চাহ দান রসাল মিশালে আসি ভাঙ্গাইয়া লেহ॥ এক শত লাখ হাতে গণি পাবে বচন আমিয়া কণি। আর লক্ষ লক 🇼 চাহনি মধুর লেহত আসিয়া গণি॥ আর কোটী লক্ষ লেহত অধর ञ्चन कनक कृत्न।

যার নাহি ভুল তার সমতুল ১৫

. যার নাহি দিতে মূলে॥

256

"শুনহে রসিক নাতি। জাতি মিলায়ব ধন বিলায়ব নেহত আঁচল পাতি ॥" হাসিয়া হাসিয়া রসিয়া বড়াই কহিছে রাধার ঠাঁই। "কি শুন নাতিয়া বচন সচন কেমনে শুনহ রাই॥ কুলশীল পনা 🦈 নহ নাতিনা নিতে চাহে ও না দানী। ভার কিবা ভয় কিদের সংশয় ১০ এই কর বিকি কিনি॥ অমূল্য রতন যাহার বচন কিবা সে লোকের ভয়। যে চাহে তা দিয়ে এই আন লয়ে ' হেন সে মনেতে ভায় 』" রাই পানে বলে বুড়ি কোন ছলে কাণে কাণে কহে কথা। বারি হাতে করি শুাম বরাবরি যাইয়ে নাড়য়ে মাথা।

"নাতিনী নাতিরা ছুইসে মিলন ২০
করিয়া দিব সৈ ভালি।

রসের প্রশে অংশর লালসে
করহ রসের কেলি॥"

চণ্ডীদাসে সুখী এ কথা শুনিয়া
গ্রামের বাজারে বিকি। ২৫
হরষ বদনে পশরা মাথায়
হাসি বসে সব সখী॥

১২৮ সুই।

🛮 । বচন সচন-কথাবার্তা।

"পশরা নামাও রাধা। বিকে পাঠাইতে এ নব বয়সে তিলেক নহিল বাধা॥ তোর নি**জ** পতি তার হেন রীতি তোরে পাঠাইল বিকে। কেমনে ধৈর্য ধরিয়া আছয়ে সে হেন পাষাণ বুকে॥ যাউক ভাহার ধনে পড়ু বাজ এ হেন সম্পদ ছাডি। তাহার নাহিক মায়া দয়া মোহ ১০ সে অতি কঠিন বডি॥ विम विम बार्य রদের মোহিনী वमत्न कति (य वाय । রবির কিরণে · সোণার বরণ পাৰ্ছে মিলাইয়া যায়॥ উঠিছে সঘনে ভয় অতি মনে শুনহ সুন্দরী রাই। हाँ। यूथशानि মলিন হয়েছে" চণ্ডীদাস গুণ গাই॥

এই পদাও পরবর্তী কয়েকটি পদা রাধিকার প্রতি । শ্রীক্ষেত্র উচ্চি ।

>-৩। তোমার নবীন বয়স; তোমাকে দধি ছ% বিক্রয়ে পাঠাইতে কি তোমার স্বামীর কোনরূপ দিধা বোধ হইল না?

353

বড়ারি।

"সোণার বরণখানি মলিন হইয়াছ তুমি হেলিয়া পড়েছ যেন লতা। অধর বান্ধলী ভোর নয়ান চাতক ওর মলিন হইল ভার পাতা 🛭 বরণ বসন তায় ঘামে ভিজে এক ঠায় ৫ চরণে চলিতে নার পথে। উতাপিত রেণু তায় কত না পুডিছে পায় ['] পশরা বাজিলে তায় মাথে ॥ নিকটে বৈঠহ তুমি রাখহ পশরাখানি শীতল চামর দিয়ে বা। শিরীষ কুস্থম জিনি স্থকোমল তমুখানি বসিয়া রসিক রায় বলয়ে বৃটিয়া ভায় হাসি রাধা বলিছে বড়াইয়ে। চণ্ডীদাস শুনি দেখি শুনহ কমলমুখি :৫ বৈস ক্ষেণে কদম্বের ছায়ে॥

- विक्रीय-अक्वादि।
- ৭। উতাপিত—উত্তপ্ত। '•
- ৮। তাহাতে আবার পশরার ভারে মাধার ব্যধা হইয়াছে।
 - ১৩। বৃটিয়া—বোধ হয় রাধিকা।

حبا

কাৰড়া।

"আজু দান মোর रहेल मकल পাইল তোমার সঙ্গ। বিহি মিলাইল ভাল ঘটাইল বিকি কিনি হল রক্ত ॥ ভোমার কারণে দান সিরজিল ৫ বিসল ক**দশ্ব তলে**। দিনে কভ বেরি বুলি ফেরি ফেরি থাকিয়ে কতেক ছলে॥ বাঁশীতে সক্ষেত नना नाम निरय গোঠেতে গোধন রাখি। তোমার কারণে এ পথে ও পথে সদাই ছলেতে থাকি ॥" আদর পিরিতে রাই মন তুষি নাগর রসিক রায়। দধির পশরা লয়ে দধি ছগ্ধ পিয়ল ১৫ চণ্ডীদাসে ভেল তায়॥ ৩। বিহি--বিধি।

202

৭। বুলি—ভ্রমণ করি।

"আইস ধনী রাধা

কাৰ্ড়া!

তুমি তমু আধা

অনস্ত ভাবিয়া ভাবে।
ভব বিরিঞ্চি তারা নিরস্তর
যে পদপল্লব লবে॥
শুক সনাভন পরম কারণ ৫
ও পদ আশে।
বিশ্বস্থার হেতা হয়ে গুল্ম লতা
ইহাতে করিয়ে বাসে॥

কেনে তরু লভা হইব দেবছা কিসের কারণে হেন। ও পদ-পকজ · বেণুর **লা**গিয়া এ হেতু ভাহার ওন। ধেয়ানে না পায় যাহার চরণ (म जना पात्र इला। আজু শুভদিন পেয়ে দরশন ১৫ তোমারে পেয়েছি কোড়ে॥ তুমি সে পরম আমার মরম ভোমারে ভাবিয়ে সদা। হৃদয় ভিতরে ভাবিয়ে তোমারে मनारे वाहरत्र वाँधा ॥ কত ছলা কলা তোমার কারণে দানের আরভি ভাই।" চণ্ডীদাস বলে ঐ ছন পিরিতি খুজিয়া পাইবে নাই॥ 8! नत-नहरा हेक्कूक।

8! লবে—লইতে ইচ্ছুক।9। হেতা—এখানে।

৯ ১২। দেবতারা তরুলতা হইয়া এখানে থাকেন, ভাহার কারণ শ্রীরাধার পদরেণু পাইবার আবাশা।

205

श्रृहें।

"আন জন যত বলে।
সে সব সৌরভ এ চ্য়া চল্দন
করিয়া লইয়াছি হেলে॥

তুমি মোর ধনি নয়ন অঞ্চন
• ছটি সে অাথির আথি।
ববে ভিল আধু ভোমারে না দেখি
মরমে মরিয়া থাকি॥

। শয়নে ভোজনে नग्रदन नग्रदन অাখির গোচর যবে। তৰে কি পরাগ়ে **को वर्ड को वर**न 20 পরাণ না রহে তবে॥ তেজি আন পথ গোপত আরোপি সকল তোমার পায়। সঘন সঘন নিরস্তর মন তুয়া পথ পানে চায়॥ 58 গোলক বিহার পরিহরি রাধা গোকুলে গোপের ঘরে। পরশ লাগিয়া তুয়া আশ বাস, আইমু ভোমার তরে॥ ভোমা হেন নিধি মোরে দিল বিধি শুনহ কিশোরী গৌরী।" চণ্ডীদাসে কয় হেন মনে লয় কাহে আড় করি॥

১।৩। লোকের নিন্দা চ্য়া চন্দনের স্থায় পৌরভষয় বিবেচনা করি।

> । তেজি আন পথ—অন্ত সকল ধর্ম পরিত্যাগ করিষা।

200

কাৰড়া।

"তুমি সে আঁখির তারা।
আঁথির নিমেথে কত শতবার
নিমিখে হইয়ে হারা॥
ভোমা হেন ধন অমূল্য রজন
পাইল কদম্ব তলে।
বৈস বৈস রাধা কত না বেজেছে
ও রাঙ্গাচরণ তলে॥
শিরীষ শরীর ছটায় রবির
মলিন হয়েছে মুধ।

আহা মরি মরি বিষম গমনে কত না পেয়েছ ছুখ।।" আপনা পীতের বসন আঁচলে রাই মুখ মুছে শ্যাম।, শ্রম দূরে গেল বসন বাতাসে মিটিল অক্সের ঘাম॥ 26 নীপ কদম্ব ভরুয়ার ভলে সহচরী গোপীগণে। রস সরসিজ সরস বচনে 🕛 চাহিয়া শ্যামের পানে॥ কহিছেন ভঠি রসিয়া বড়াই "শুনহ রমণী যত। কর সমাধান' প্রেমরসদান তাহা না বুঝায়ে কত। ইঙ্গিতে ইঙ্গিতে কহে এক ভিডে সেই সে চতুর বুড়ি। 20 উগি দিয়া চাহে আনপথে রহে পড়িল হাতের বারি॥ কান্ন করে লই ছেনা হুধ দই वनत्न जिल्ला (नय् । লইল যতন কার বা বসন কার অঙ্গে হার লয়॥ ঐছন কি রীতি ধরিয়া পিরীতি ধরিয়া রাধার করে। কদম্বের তলে গুপ তরুবর देवर्रम नागतवात ॥ 90 চণ্ডীদাসে দেখি '' ছ'ছ রূপখানি মনেতে লাগিল ভাল। যমুনা কিনার একুল তুকুল সকলি করিল আলো॥ > । विषय अयान-- छेळनीठ शांत अयान।

७८। मिडिन-मिनिहा (भन, एकारेहा (भन।

. 598		চণ্ডীদাস ব লে	
বড়াড়ি।		বেকত বুঝিং	
বড় অদভুত দেখিল বেকত		এই পদে রাধাক্ষের	
নবঘন আসি নামে।		যেখানে সাধন-তত্ত্ব বলিবার ভ	
সে জন জলদ পুঞ্জ ঘোর অতি		চণ্ডীদাস প্রহেলিকার ভাষ	
বসিয়া কুস্কম দামে।		সাধারণে জানিতে পারুক, ই	
মেঘের উপরে চাঁদ ফলিয়াছে	¢		
হের না আসিয়া দেখ।		তবে সাধক ভক্তগণের নিকট	
এই সব গোপী প্রেমের নবরূপী		চণ্ডীদাসের এরপ পদ অনেক	
(कमरन कला (त्रथ ।			
মেঘে চাঁদ ফলে নাহি কোন কালে		20	
নাহি তার পাতা ফুল।	٥٥		
চারু শাখা তায় দেখিল তথায়		"আগো বড়াই কি	
মেঘের গঞ্জন দূর॥		- দেখি অদভুত, নয়	
শাখায় শাখায় তার সরু ডালে		্ কিরূপ করিব	
বিংশতি চাঁদের খেলা।		দেখাইয়া দি	
আর চারু মূলে বিশ শশধর	50	মেঘে উপজ্ঞ	
ठाञ्चिम ठाँदम्ब (मला ॥		না জানি কে	
মেখের উপর নাচিছে ময়ুর		হাসিয়া বড়াই	
তাহার গর্জন শুনি।		ও মৈঘ ও চাঁ	
সহস্ৰ গো ভূষণ মুখেতে		চাঁদ আর পি	
নাচত একহি ফণী।	২৽	ছুই তন্তু এক	
ফ ল যুগল তাহে শশধর		কো কন্থ আ	
বেড়িয়া রহেছে ওই।		ওরা মনমথ	
এ রস মাধুরী চতুর চাতুরী		আজু যুগল-	
বৃৰিতে না পারে কই।		কালিন্দী কৃষে	
কুলিশ যুগল তার পরে ফ্ল	20	দেখ রাধা বি	
তাহে সে চাতক আশে।		কদম তরুর	
চাতক বাদর মেঘ রসালিয়া		ছুঁহ তহু আ	
সে জন আছয়ে শেষে॥		, ठछीमांत्र दर्गः	
এই ছুই আদর পাইয়া বাদর		২। নয়নে নাধরে—চা	
দেখিয়া গোপের নারী।	•	১৪। উলোর—উর্জন।	
•			

पुत्र**को** ।

রাই বলে "শুন বেদনী বড়াই মোর ঘরে शিয়া বল। কামুর চরণে শরণ পশিক মনের মানস ভেল॥ ব্ৰহ্মা আদি দেবে যেই পদ সেবে ৫ ধেয়ানে নাহিক পায়। অনসে পাইন হেনক সম্পদ कि कत्रिय कून अव यां भृत याशद्य (पश्चित कि। এ সব ছাড়িয়া কি আর · · · ••• कि॥ যার জাতি কুল সেও মোর ভাল ছাড়ে ছাড়ু शुक्क बना। শরণ লইলাম ১৫ ও রাঙ্গাচরণে কি আর কুলের পণা॥" শুন সৰ সৰি তোমরা যাইয়া কহিও রাধার ঘরে। দিল সে রাধারে স্থামের বাজারে চণ্ডীদাস জ্ঞানে ভালে॥

४। यत्नत्र हेक्टा शृर्व हरेन।
 १। व्य-व्यान शाहे।
 १०। कृत्नत्र श्री-कृत्नत्र शोत्रव।

100

"যে পদ বোগীরা স্বপে নির্নন্তর অনস্ত না স্থানে রীতি।

মুনি অগোচর যে ত্রখ সম্পাদ তাহা না পাইল ইভি॥ আর কি ইহাকে আছে কত ধন ৫ বিকাল পশরা মোর॥ দধি ছগ্ধ যভ ও রাঙ্গা চরণে বিকাইল সব মোর॥ কামনার ফল এই নীপ মূলে मकल इंडेन विकि। আমার করমে এই সে সকলি ে তোরা যাহ যত সখী॥" গদ গদ বাণী কহে বিনোদিনী नग्रत्न भन्तरम् थाता । क्मक्म हन्सन যে ছিল লেপন ১৫ ভাসিয়া চলিল তারা॥ মোহে লোহে जांचि পুলক कम्य, (यमन यमूना वरह। ভেন আঁখি ভরি লোর বহি চলে দ্বিজ চণ্ডীদাস কহে॥ ৪। এখানে তাহা পাইলাম। हेश व्यापका कान् धन व्यक्ति मृत्रावान ? ১৯। তেন-সেই রূপ।

তুঞ্জি

"শুন গো বড়াই মোর।
আৰু শুভদিন হইল আমার
বঁধুরা পাইস্থ কোঁড় ॥ "
বাহার লাগিয়া এত প্রমাদ
সে সব সফল মানি।
মনের বাসনা প্রিল আমার
বাটে পাকু যাকুমণি॥

,আয়ানে যাইয়া এই কহ গিয়া রাধারে স্থ'পিল খ্যামে। त्राश तरहे त्राश ভার রাঙ্গা পায়ে পশিল মনের সনে ॥ আর কিবা মোর সে ঘর করণে ध्रम अत्रम कांच्य । • কুল শীল মোর যে হকু সে হকু পড়িয়া যাউক বাব্দ ॥ 50 বছ পুণ্য দশা পাই ফল ভাসা সকল করিয়া মানি।" চণ্ডীদাল স্থাী দোঁছার পিরিতি এমন নাহিক শুনি॥

> --- >> নিশ্চরই রাধিকা তাহার চরণে আত্মসমর্পণ করিল।

209

পিকুড়া।

হাসিমুখ ধনী রাধা বিনোদিনী চাহিয়া খ্যামের পানে॥ পূৰ্ণ হল কাম যতেক কামনা যে সুখ আছিল মনে॥ ভাহা বিধি আনি ভালে মিলায়ল ৫ কামনা পূরল আজি। প্রেম পরশিয়া লালস পাইয়া পশরা জানিতে সাজি। বিকি কিনি হল कमय जनारज মনোরথ হল সিধি। বেলা লে হইল খরে লে যাইতে কহি শুন গুণনিধি। ∙পুনঃ কালি মোরা পশরা সালায়ে আসিব মথুরা পথে।

গৃহ দূর পথ আছে অমুদ্রও ১
গুরু জনা বলে তাতে॥

হরম বদনে কহ না সদনে

যাইতে গোকুল পুর।

চণ্ডীদাস বলে চলহ ভূরিতে

পথ আছে বহু দূর॥

২০। সিধি—সিদ্ধি।

১৫। অমুরণ—সকট, বিপদ্।

l atam

শীকানড়া কহিছে বড়াই "শুন ধনী রাই . বেলা সে উচর হল। তোলহ পশরা অতি রবি খরা তুরিত করিয়া চল। গৃহপতি তারা অতি দে মুখরা গঞ্জিব কতেক গালি।" শুনি উঠে তাপ বিষম সন্তাপ গমন তুরিতে ভালি ॥ শোক চরচাতে হেন মনে করে সকল বুড়ির দোষ। আমি না আইলে কেবা লয়ে যায় কাহারে করিব রোষ॥ রাধা বলে তায় "কিবা আছে ভয় যে করু সে করু পাছে। পাইয়া আমরা এ হেন সম্পদ আর কি জগতে আছে ॥ 🕻 . শুনগো বেদনী বড়াই চেড্নী • ভুমি সে নাটের নাট। গোপনী যে রস্করিশে বেকত পাতালে রসের হাট।।

এখন কেন বা ভয় পরিসর
ভখনি ভরসা বাঁধ।
কান্তর চরণে ভেজাতে যতনে
যতনে তাহাই ছ'াদ॥"
চণ্ডীদাস বলে চলহ তৃরিতে ২৫
বিলগু নাহিক ধনি।
বহুদুর পথ গোকুল নগরী
সাজাহ পশ্রা খানি॥

১৫—১৬। আমরা এমন সম্পদ্ পাইযাছি; ইহাব জুল্য জগতে আর কি আছে? ১৯। গোপনী—গুপ্ত। ২৩। ভেজাতে—মিলাইতে।

२८। छोम-तिभन कत।

585

শীকানড়া

সব গোপীগণ আহীর রমণী
পশরা তুলিয়া মাথে।
মাঝে স্থনাগরী প্রেমের আগরি
আনন্দে চলিল পথে॥
হাসি রসথানি রাই বিনোদিনী
বড়াই পানেতে চায়।
"আর কত দূর গোকুল নগর"
ক্ষণেক স্থধায় ভায়॥
বড়াই কহিছে "আগে সে যমুনা
ও পারে সবার ঘর।
বড় দেখি রাধা সব দেখি বাধা
যমুনা বাড়ল জল॥
কেমনে সকলে পার হৈয়া যাব

ইহার উপায় বল।

কিসে পার হবে কেমনে যাইবে ১৫

ফিরিয়া সবাই চল॥

সেই সে কদম্ব তলাতে চলহ

যেখানে রসের কাম ।

সেখানে যাইয়া মিনতি করিয়া

নিবসে রসের তমু॥" ২০
এ বোল বলিতে কামু আচম্বিতে
আসিয়া মিলল তায়।

আব এক লীলা পুনং উপজিল

দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥

ইতি দান সমাপ্ত। ২•। নিবসে - বাস করে।

৩। নৌকাখণ্ড।

285

कक्षा रोप ।

(निश्या यमूना নদীর ভরঙ্গ উঠিছে দারুণ ফেনা। দেখিয়া নাগরী সকল গোয়ালী লাগিল বিস্ময়পনা॥ **(कगर**न এ नमी যমুনা পেরাব মোর মনে হেন লয়। বহিছে তথার তরঙ্গ অপার হইছে সবার ভয়। कान शालीवरण दकान शाशालिनी "এ বড়ি বিষম দেখি। ইহার উপায় কি বৃদ্ধি করিব বলহ সকল স্থি॥ কোন বা সাহসে যদি লালে নামি ভূৰিয়া মরিব ভবে

উপায় হইলে তবে সে যাইবে নহে বা কি আর হবে ॥ কিসে পার হব না জানি সাঁতার কেমনে যাইব পার।

* * * * * ||" < 0
 বড়াই কহিছে চাহি রাধা পাশে
 "শুনগো আমার বাণী।
কামুর চরণে বিনতি করহ
 পার করে গুণমণি॥"
 চণ্ডীদাস দেখি যমুনা তরজ ২৫
 ইহার উপায় কই।
 এই দরিয়াতে আনের শক্তি

ে। পেরাব—পার হইব। ২৬। কই— কহি, বলিতেছেন।

> ১৪৩ বড়ারি

নাহিক কালিয়া বই ॥

"হেদেহে নাগর চতুর শেথর
সবারে করিবে পার।

যাহা চাহ দিব ও পার হইলে
তোমার শুধিব ধার॥

মনে না ভাবিহ ভোমার মজুরী ৫

যে হয় উচিত দিয়ে।

তবে সে গোপিন্টু যত গোয়ালিনী
যাবত ও পার হয়ে॥"

হাসি কহে কামু করে লয়ে বেণু

শুনহ মুন্দরী রাধা। ১০
ভোমা পার করি দিতে সে আমার

• তিলেক নাহিক বাধা।

ভবে করি পার ও পারে রাখিব,
ত্বন গোয়ালিনী যত।
ও পার হইলে কত দান নিব ১৫
লইব সবার ফুর্ত ॥"
বৃটী কহে ভাতে "কিবা নিতে চাহ
কহ না বেকত করি।
ভাহাই করিব যাহা চাহ দিব
ত্তনহ পরাণ হরি॥" ১৯
চণ্ডীদাস বলে নাগর চতুর
ভান রসময় কান।
রাধা পার কর বিলম্ব না কর
ইহাতে নাহিক আন॥

< 1. মনে অন্য কিছু ভাবিও না।

188

কানভা

হাসিয়া নাগর চতুর শেখর

যতনে আনল তরি।

চাপায়ে রাধারে সনারে স্থায়
থেয়া দেয়া আছে ভারি ॥
একে একে করি সনে পার করি ৫
আমার এ না' টি ভাঙ্গা।
পাছে দরিয়াতে ডুবহ বেকতে
মোটা আছে কার গা ॥
ক্ষীণ যার গায় চড়সিয়া নায়
সবারে করিব পার। ১০
মোর কাছে থোহ বচন শুনহ
থত আভরণ ভার ॥
রাধা বলে ভালু দানের বিচার
বিষম দানীর লোঁঠা।

কুবচন অভি কুজন সংহতি বডাই কণ্টক কাটা। বড়াই চরিত অতি বিপরীত যা কহে তা ক্রনে দানী। ্এ বড়ি বি**ষ**ম আভরণ মাগে কি হেতৃ নাহিক জানি॥ २० ভয়ে মনোত্বঃখ সবাই বিমুখ হইল বিষম বডি। ইহার উপায় কহ কহ দেখি শুনগো বড়াই বুড়ি॥" নৌকার উপরে সবা চড়াইয়া 20 চালাতে লাগিল তাই। কেরয়াল বাহি যায় আন পথে करह विमािषनी बाहे॥ ও পথে বাহিছ চলে ভরিখানি এ দিকে রহয়ে পথ। **90** এত দিনে জানি ভোমার চরিত বড় কর অমুরথ 1 **पत्रिया (य मिटक** বাহ কেরয়াল মাঝারে মকর ভাসে। কের কেরয়াল শুন নন্দলাল কহে শ্বিজ চণ্ডীদাসে॥

৪। **থেয়া** দেয়া বড় শ**ক্ত**। ২**৭। কের**য়াল—দাড়, নাবিক।

w 1 🖨

রাধার কাকুতি করিছে আরতি
"শুনহ নাগর রায়।
বৃঝি হেন মন ় লইবে পরাণ
হৈন বৃঝি অভিপ্রায়॥

এবার বাঁচাহ জীব বতকাল ঘুষিব তোমার গুণে। কিসের কারণ করহ আপন মনে॥" "ভখনি বলেছি কান্ন কহে তাহে ভাঙ্গা নৌকাখানি মোর। তোমরা গোয়ালী ছেনা হল্প খেয়ে আছে অঙ্গ ভারি ভোর॥ মোর ভাঙ্গা নায়ে এত কিবা সহে না'খানি ভূবিতে চায়। মোর কিবা দোষ মোরে কর রোষ 24 সকলি চাপিলে না'য় ॥" "মকর কুস্তীর ভাসে শত শত ভাহার নাহিক লেখা। পরাণ উড়িছে তাহারে দেখিয়া · কার সনে আর দেখা॥" 20 কান্তু বলে "শুন বিনোদিনী রাধা আমার কি আছে দোষ। ভাঙ্গা নৌকাখানি দরিয়াতে ঘুরে আমার কি আছে দোষ॥" শুন স্থনাগর চণ্ডীদাস কহে 20 অবলা কি জানে রীত। ভোমার চাতুরী কিবা সে বুঝিব কে জানে ভোমার চিত্ত ॥ রাধা বিনয় করিয়া বলিতেছেন। कोव—वंकित।

> >8**४०**० (वना

"টল টল করে অঙ্গ মোর খুরে
চাইতে যমুনা নদী।
নানা জস্তু আছে তারা জলে ভালে
দেখহ পরাণমিধি॥

٠.

>0

30

₹•

90

ংন মনে ক রে এবার কি জীবঁ ৫	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
ু 'কেন বা আইসু বিকে।	अप्रती•। .
ভাল লুরে যাউ জীবন সংশয়	হাসি কহে ডবে সব গোপনারী
কি আর বলিব কাকে॥	"আর কিবা রিতে আছে।
এমন জানিলে তবে কি বাহির	এ নব যৌবন' কুল সমাপন
आहोत तमनी हरता। ১०	দিয়াছি তোমার কাছে॥
ু এ কোন বিচার না জানি আচার	কায়মন চিত্তে বিধির বিধান
পরাণ লইভে চাহে ॥	শরণ লইয়াছি ৷
সব গোপীগণ হয়ে একমন	আর কিবা চাহ আগে ভাহা লছ
পড়হ নেয়ার পায়।	সামরা জানিয়াছি ॥
সরস বচন করহ যতন ১৫	ভূমি ভক় লতা মোরা ফল পাতা
ও পারে রাখিয়া যায়॥	তুলিয়া ল ইতে কি।
এবার ও পারে লইয়া চলহ	নহে অতি দ্র বড় পরিশ্রম
হেদেহে রসের কামু।	় তোমারে বলিব কি॥
তোমার চরণে শরণ লইয়াছি	এ তি ল তু লসী তোনার চরণে
দিয়াছি আপন তকু॥ : ২০	সঁপিয়াছি জাতিকুল।
প্রাণের দোসর এ নব কৈশোর	ভোমা বিনে আর কে আছে আমার
তোমারে করিল দান।	তুমি সবাকার মূল ॥
এবার ও পারে সহ স্বাকারে	তুয়া বিনে, স্থান নাহি কোন জন
ভনহ নাগর কান ॥	আর বা বলিব কেই।
হাসি বিনোদিয়া কছে সবা আগে ২৫	জনমে জনমে জীবনে মরণে
"ভবে সে করিব পার।	দিয়াছি আপন দেহ॥
এ নব যৌবন কর অরপণ	বে কর সে ক র আপন বড়াই
ভবে লাগাইব ধার ॥"	আমরা কুলের নারী।
চণ্ডীদাস তাহে আকুল পরাণ	আমরাজানিয়ে তুমি প্রাণপতি
রাধার বিনতি দেখি। ১০	শুনহ প্রাণের হরি॥
व्यवना भन्नांग 🧖 ं स्मिथ छम्न नार्श	খরে পরিবাদ কলফ, ত্সারি
শুনহ কমল আঁখি॥	ভোমার কারণে এত। 📏 .
। यक्तन रुख्या पृद्यत्र कथा, स्रोयनमुक्त रुरेन ।	গুরুর গঞ্জনা লোকের তুলনা
-> ৩। শ্রীকৃষ্ণে আ ত্মসমর্পণ ভিন্ন পার হওগার	॰ এ সব সহি যে যত ॥" ∕
পান্ন নাই। ১৪। নেয়ারনাবিকের।	চণ্ডীদাস বলে, শুনহ চতুর
	ব্যক্তিক লাগ্য কাল।

গার কর হরি আগে লেহ ভরি े ইহাতে নাহিক আন।

७। क्न. मया भन-क्न मयर्भ।

২৭। লোকের তুলনা—লোকে অপরের সঙ্গে ভূলনা করিয়া আমাদের নিন্দা করে।

শাগে লেহ তরি—নৌকা অগ্রে তীরে লইয়।

% ऍम#ती ।

হাসিয়া হাসিয়া নাগর রসিয়া না'ধানি উজান বাহে। দরিয়া হইতে ওপার করিলা নৌকা কুলে গিয়া রহে॥ জনে জনে সবে আনন্দ হইলা ওপার হইল রাধা। জনে জনে খরে চলিলা হরিষে আন নাহি কিছু বাধা। এত বলি সবে গেলা নিজ গৃহে আহীর রমণী যত। পশরা এলায়ে গৃহ সমপিয়া গৃহপতি বলে কত॥ "এতক্ষণ কেনে বেলি অবসানে আইলা গৃহের মাঝ। ছি ছি মুখে যেন লজ্জা নাহি বাস মুতেতে পড়ুক বাজ। কুল কুলটিনী তোরা কলঙ্কিনী , স্থানের রমণী ভাল। এ ঘরে কিরূপে কেমনে বঞ্চিব বাহির হইয়া চ**ল**॥" । ২০ গৃহপতি কহে সবে কহে তাহে "য়মুনা ছ'ধার বহি।

ভে কারণে মোরা পার হতে নারি. বিলম্ব গমন রছি ॥" চণ্ডীদাসে বলে এই মিথ্যা নহে যমুনা ভরঙ্গ বড়ি। হয় নয় ডাকি স্থাহ ভোমরা বিদ্যমান আছে বুড়ী॥

 পশরাশুলি নামাইয়া গৃহে ফিরিয়া দিল। তখন গৃহপতি কত বলিতে লাগিল।

৪। বনভোজন।

কাৰভা।

হেথা কামু যত পার করি গোপী গোঠেতে পড়িল মন। [']কেমনে ভা স্বা কিরূপ কহিব চলিতে বচন কন॥ চতুর মুরারি মনেতে ভাবিলা ইহার উপায় এই। कत्रिन रुक्षन কমল লোচন চোরা ৰলি ছুটি গাই। সেই গাই সনে চলিলা সঘৰে কানাই চতুরমণি। গাভীর পুচ্ছেতে বাম কর দিয়া कतिना এकि धि ध्वनि॥ হৈ হৈ রব ুশুনি ব্রহ্ম শিশু তুরিতে আইলা ধেয়ে। কোথা কার ভাবে গিয়েছিলে তুমি 20 কহিবে কানাই ভেয়ে॥ ভাণ্ডীর কাননে मिना मत्रभटन মিলিলা ত্রজের বালা।

কাসুরে বালক কহিছে সকল

স্থানিক কোথার ছিলা ॥ ২০

চণ্ডীদাস বলে কিবা সে বুঝিব

অপার যাহার দীলা।

কে পারে বুঝিতে কাহার শক্তি

মুরতি রসের কালা ॥

শ্ৰীমভাগৰত ১০ম কল, ১৩শ অধ্যায়ে ব্ৰহ্মকৰ্ত্তক (श्यू-वर्ग ७ मिस हत्र वर > म यक्, २०म व्यवहारत বনভোজন বণিত আছে। চণ্ডীদাস এই তুইটি পুথক আখ্যারিকা একত্র জুড়িয়া দিয়াছেন। এ কেত্রে তিনি ঠিক মূলের অভুসরণ করেন নাই। প্রথমতঃ ভাগবতে আছে, এরুক নিজে ত্রাহ্মণ-পত্নীগণের নিকটে অর ভিকা कतिए यान नाहे, (शानशनक नाठाहेबाहितन। তাহাদের মূথে কৃষ্ণ-বলরাম অল্প প্রার্থনা করিতেছেন ওনিয়া ব্রাহ্মণপত্নীগণ বয়ং অর আনিয়া দেন। বিতীয়তঃ **এীকৃষ্ণ ঈশর কি না, এই সংশ**র ব্রহ্মার হর নাই। তিনি डगवात्नत नौना (मिंदवात क्या (स्यू, वर्म ७. (गान-বালক হরণ করেন। তৃতীয়তঃ ব্রহ্মা ধেরু হরণ করেন नारे, क्वन वर्त्र रद्भ कदिशाहितन। ठ्यूर्वछः এ नकन काम अक्तिरारे (नव दश नारे। उक्षा ठाँदात्र अक किं किंग चर्बार मानरात्र अक वरमत्र कान वाशिश वरम ও শিশুগণকে গোপন করিয়া রাখিয়াছিলেন। চঙীদাস ইচ্ছাপুর্বক অক্তরপ গাহিয়াছেন।

৩-৪। এতক্ষণ অনুপস্থিত ছিলেন, রাখালগণকে কি বলিয়া বুঝাইবেন, ইহাই মনে মনে বলিতে বলিতে চলিলেন।

৮। চোরা গাই - যে গাই চুপি চুপি দল হইতে পলাইয়া যায়।

সারজ।

স্থৰল বলিছে হাসিয়া হাসিয়া কাসুর পালেতে চেয়ে।

"চোরা,ধেন্ম বনে রাখিতে নারিয়া वृत्नइ व्यत्नक (शर्म ॥ আমি সব জানি তোমার চরিত ইহারা বুঝিবে কে। অপার মহিমা লহনি গারিমা কেই সে জানয়ে কে। গোপত পিরিতি কেহ না জানয়ে ব্ৰহ্ম শিশুগণ যত। >. এ কণা মরম ভোমার গোচর আনে কি জানিবে এত॥" এ কথা কহিয়া ব্ৰদ্দশিশু লয়া গোধন রাখ্যে বনে। কানাই আগেতে বলরাম ভায 12 কহিতে লাগিলা মনে॥ "তোমারে খুজিয়া আকুল হইয়া না পাই ভোমার দেখা। কাঁদিয়া আকুল সবে নেয়াকুল ভোমার যতেক সধা॥" ২ • **ह** छीलांग कुरश বলরাম আগে ধেনু হারাইয়াছিল। ফিরি বনে বনে চোরা ধেতু সনে (उँडे मि विनय इन ॥

৪। বুলেছ - এমণ করিয়াছ।

: <a>। (वब्राक्न-वाक्न।

263

সাৰক।

বলরাম আগে কহিছে কানাই
"বড় দিল মনে হুখ।
চোরা ধেয়ু হেদে বনেতে হইডে
গেছিল মধুর/-মুখ ॥

চণ্ডীদাস

ভাঁহা ফিরাইতে ভেঁইছে বিশম্ব শুন বলরাম দাদা। তোমা ছাড়া হয়ে তবে কিবা থাকি পরাণ এখানে বাঁধা॥" "ভान देश खाँहे जे। तिया भिनिदन" 🖊 বলে "কি খেলাবে খেল। ভূরিত করিয়া থেলিয়া ছলিয়া घरत रत याहेव हल ॥ আজি যবে আসি গোঠেতে সাজিয়া দেখেছি বনেতে ভয়। কংস-চর জাসি সবারে ধরিয়া লয়েছে মনেতে লয়॥ কানাই থাকিতে তার ভয় নহি শঙ্কট-তারণ তুমি। কত কত কংস স্ঞ্জিতে পারহ তাহা সে আমরা জানি॥ ভূমি কোন দেব দেবের দেবভা আমরা আহীর বালা। কি জানি তোমার মহিমা অগম্য অপার যাহার দীলা॥" সব শিশু বলে কানাই গোচরে 20 "শুনহে কমল আঁখি। আজু সে কুধায়ে কুধিত হইয়া ভোগ কিছু নাহি দেখি॥ এই বলে যদি অন্ন আনি দেহ সকল বালকে খাই। কুধার কারণে এই বড় মনে শুনহ কানাই ভাই॥" इत्रय वहन বালক, বচনে ী গোপাল হইলা বড়ি। কমল নয়ান বলরাম পানে চांहिना नग्ननं खूष् ॥

কান্তু কৰে শুন "বলরাম দাদা কুধার বালক ছুখী। চল চল যাব বজ্ঞপদ্মী স্থানে" চণ্ডীদাস ভাতে সুখী॥ ১৫-১৬। মনে হইল, যেন কংস চর আসিয়া সকলকে

১০ ধরিরালইরাগিয়াছে।

২৮। ভোগ—উপভোগের দ্রব্য, ধাবার দ্বিনিস।

245

কাৰড়া।

কৃষ্ণ বলরাম চলিলা তুরিতে যথা যজ্ঞপত্নী রহে। চলিলা সঘনে তথা চুই ভাই ত্য়ারে বাইয়া রহে ॥ দেখিলা আন্দাণী কৃষ্ণ বলরাম পুলকে পূরিত অঙ্গ। কহিতে লাগিলা र्गम भम ভাবে "কিবা শুভদিন রঙ্গ। আজু বড় শুভ করম ফলিল ভাগ্যের নাহিক সীমা। নয়ন ভরিয়া দেখিলাম আঁখে রামকৃষ্ণ ছই জনা ॥ कर कर (करन) अरम पूरे करन কি হেডু ইহার শুনি।" কহিতে লাগিলা কৃষ্ণ বলরাম "কুধায় আকুল প্রাণী॥ অন্ন দেহ মোরে 🕨 ইহার কারণে আইল তোমার আশে। কুধায় আকুল বালক সকল ব্য মাগে মোর পালে॥" তখনি ব্ৰাহ্মণী এ কথা শুনিয়া

পঞ্চাশ ব্যঞ্জন অন্ন।

স্বৰ্ণের থালি ভরি করি পূর

চলিলা কতেক বর্ম ॥

চণ্ডীদাস দেখি বিশ্বয় মানিল ২৫

বনে কোথা হতে ভাত।

রাখালমণ্ডলী করি বনমালী

বিছাইল বটপাত॥

১। ৩ভ করম ফলিল—ভত কর্মের ফল ফলিল।

-

कानद्रा।

সবে অন্ন খায় মাঝে যতুরায় **पिएक्न ज्ञात पूर्य।** খাইয়া খাওয়ায় স্থে স্থে তায় তিলেক নাহিক চুখে॥ কৃষ্ণ বলরাম গ্রীদাম সুদাম সুবল যতেক স্থা। বসিয়া বালক রাখালমণ্ডল ঃ তার কিছু নাহি লেখা : কেহ বলে "ভাই কানাই বলাই वज़्हे प्रशाम हरा । ١. কোথা হতে অন্ন আনিল নবান্ন সকল বালক খায়ে॥ এ বড়ি মহিমা যার নাহি সীমা এ মহীমণ্ডল মাঝ। বলের মাঝারে এ অন্ন ব্যঞ্জন 24 কে বুঝে ভোমার কাজ। বুঝিল কান্ত্র চরিত অম্ভূত এ মেনে মাঁকুষ নয়।" চণ্ডীদাস বলে জানি অনুমানে গোলোক-ঈশ্বর হয়॥

'৮। কত রাধাল যে বসিয়াছে, তাহার সংখ্যা নাই। ১০। হয়ে—হয়। ৰড়ারি।°

548

বিশ্বয় ভাবিলা • বালক সকল কহিতে লাগিলা তায়। "এ জন নদের ি ভবনে জন্মিল ধরিরা মানুষ-কায়॥ কেবল ঈশর দেব দামোদর নহিলে এমন হয়। সঙ্কট নিকট নানা সে আপদ ঘুচায় সবার ভয়॥ সবাই মরিলা বিষপান বেলা এই সে যমুনাতটে। অমৃত দৃষ্টিতে চাহিয়া বাঁচায়ে সকল বালক উঠে॥ অঘাস্থর আদি যতেক অস্থর मकलि कतिल भ्रःम। বুঝিল সাক্ষাতে এমন সম্পদ্ কেবল দেবের অংশ॥ আজি হৈতে ভাই সকল রাখাল কানাই-কাঁধেতে না চড়। উচ্ছিষ্ট ভোজন মুখে মুখে দিতে এ মেনে সবাই ছাড়॥" শুন স্থাগণ চণ্ডীদাস বলে অপার যাহার লীলা। রাখালি করিয়া রাখালমগুলে করে নানা মত খেলা।।

३)। वीहास्त्र—वीहाहेन।

>६। असन मन्नाम् - कृष्णक्रान वन।

क्षेत्रविष्य मिळ्ड्रत्।

় বড়ারি।

্সকল রাখাল 💢 ভোজন করিতে रम अवमान (वीम । নিজ গৃহ যেতে ধেমুর সহিতে

पिया উঠে **क**य़जालि॥

হেন কালে কানু মনে পড়ে ধেনু भाउनी धरनी काथा।

ভোজন বিশেষ করি অভিলাষ लहेग्रा हिनल उथा॥

সেখানে না দেখি শাঙলী ধবলী কোপা গেলা চুটি গাই।

এখানে আছিল কোথা ভারা গেল

শুনহে রাখাল ভাই॥ আয় আয় আয় ডাকে যতুরায়

অঞ্চলি ভরিয়া তুটি।

ধেয়ে এস বনে দেহ দরশনে 20 ষরায়ে আগল ছুটি॥

ডাকিতে ডাকিতে না দেখি সে ভিতে भाउनी भवनी गारे।

কোন পথে গেল কিছু না জানিল

খুঁ জিব কোন বা ঠাঁই॥ বনে বনে ধেয়া বিকল হইয়া

ना प्रिथ धवनी शाहे।

এ রসমাধুরী ধেন্থ বৎস চুরি

मीन **छ**ीमान गाँरे॥

গাভী হুইটিকে কিছু ভোজন করাইবার ইচ্ছা আমার সাহস হয় নাই। করিয়া।

১७। आशम--आहेत।

কাৰড়া।

ইহার বিস্তার ভাগবতে আছে কহিয়ে একটি বাণী।

যে যে অগোচর গোচর না হয় কি হেডু ইহার শুনি॥

মধুর মধুর এক পথ আছে

গন্ধ আমোদিত তায়। এ মহীমগুল পদ্ম বিকসিত

একহি একাদশ কায়॥

ভার রক্ষে চৌদ্দ ব্রহ্মাণ্ড ভেদিয়া

উঠিল কোন বা খানে। পুন: এক রক্ষে কোটা কোটা মৃগ গভায়াত নাহি জানে ॥

>

এক রক্ষে # # আর নাহি ভার

বেণিত আঁধারে মানি।

কোন কোন খানে ভার এক ফুটে ব্ৰহ্ম গভায়াত জানি॥

এক রন্ধ্রে পুনঃ শত কোটী যুত বিংশতি কলার ফুটে।

ভার তিন কলা

সহস্র পৃরিত উঠে॥

তার শত কলা কলার অংশ किছू (म क्वानिग्राह्म।

চণ্ডীদাস বলে বৈছবে হকুম এক রন্ধু ভার আছে॥

এরপ পদ অনেক আছে। এগুলির টীকা করিতে

26.					
পৌরশারজ।					
আর কৃহি 🐯ন					
ক্হিতে নহি লে নয়।					
মহা অভুরন্ধ্	আট সে প্রবন্ধ				
কেহ কেহ জ					
. একটি কমল	তার তিন দল	æ			
ব্ৰহ্মাণ্ড ভেদিয়া আছে।					
আর এক দল	এ মহীমণ্ডল				
ব্যাপিত হইয়	া আছে॥				
আর এক দল	ফণি গোক ভ রি				
তিন দল তিন	লোকে।	> •			
এক এক দলে	সহস্র বিংশতি				
ভাথে রেখ এ	াক থাকে॥				
সে রেখ গণিতে	কাহার শক্তি				
রেখেতে পল	ক হয়।				
একেক রেখেতে	লাখেক নিমিখ 🖁	26			
এই বড় অভি					
কোটা পলকে	সহস্ৰ বিংশতি				
ক্ষণেক পলক	रुग्र ।				
নব কোটী শভ	পলক বেকত				
কলার সহস্র	क्यू ॥	२०			
লক কলাপর	অংশ যেই হয়				
ভাহে ভবিষ্যা	ভি কাল।				
তিন তিন কলা	অংশের একলি				
রেখে করে তে	राम्याम् ॥				
এক নিমিখ	ভার এক রেখ	20			
পলটি অলসে	था रक ।				
ত্রহ্মার পলক	কলা অংশ ভরি				
সে কেনে এইক্লপে রাখে॥					
কলার গরিমা	রেখের মহিমা				
, জন্মার এমন	षिन ।	•			

চণ্ডীদার্স কৈছে এ রেখ গণিতে। শক্তি স্বার হীন।

> ۳۳۰ ر: ا ه

সার এক শুন পরম নিগুণ ভিনের উপরে তিন। সাতের উপরে এক জ্যোতির্ময় পুরুষ ভূষণ চিহ্ন ॥ মুদিত বেকত 🛭 ৫ এক পদ্ম ভার তা পরে মণ্ডল চারি। ভা পরে বদতি এক সে পুরুষ ். নয়নে মুদিত টারি॥ সেই যোল কলা তিগুণ করিতে তাহার কলার কলা। কলার যে অংশ সেই শত গুণ তাহাতে নয়ের মেলা॥ নয় নয় গুণ গুণ মিশাইলে ভাহাতে যে গুণ হয়। ত। পর যে রহে সেই গুণ দর ১৫ জগতে সে গুণ নয়॥ অষ্ট অষ্ট মোক্ষ রসে রসে রস ত্রিগুণ গুণের গুণে। ু সে গুণ গাইতে বড় অভিলাষ দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণে॥

>4>

জন মৃত্যী।

শাঙলী-ধবলী বনে না পাইয়া আকুল হটলা°কায়। ८वन वानी भूति मधीरा मधान তবু না মিলিল ধেনু॥ আকুল হইল नर्ज्य नन्पन ধেমু হারাইয়া বনে। থান নাহি চিতে 🕯 চাহি চারিভিতে আন সে নাহিক মনে॥ কি বোল বলিব যশোদা মায়েরে বনে ধেনু হল হারা। এ বোল বলিতে ফুকরি ফুকরি নয়নে গলয়ে ধারা॥ হায় হায় আজি বনের ভোজনে বড়ই পাইল তাপ। কি বোল বলিব মুখে না নিঃসরে 34 ভোজন হইল পাপ॥ নিব গাই বনে এমন কে জানে भाडमी धवनी गाउँ। আজু আচম্বিতে গেল কোন ভিতে কিছু না জানিল ভাই॥ ২০ যাইব সাক্ষাতে কেমনে গুহেতে (महे नम शाय भारम। ধেমু বংস বনে হরে কোন জনে करर विक ठछीनारम ॥

৩-৪। পুনঃ পুনঃ বেণু ও বংশীর ধ্বনি করিতে ৭। রছি লাগিলেন, তথাপি গাভী আসিল না। >>। এই >৭। নিব পাই বনে—বনের মধ্যে কে গাই লইয়া রাখিয়া দেন। ষাইবে, অর্থাৎ চুরি করিবে।

কাফি।

আর বাকেমনে ঘর যাব মেনে ধেসুহারাইয়াবনে।

সেই ঘোষ নন্দ বলে কভ মন্দ মোরে পরতীত জানে॥ ধেমু না পাইলে গুছে না যাইব শুনহ রাখাল ভাই। রহিল যতনে নহে এই বনে শুন হলধর ভাই॥ অতি বড় স্লেহ যশোদা মায়ের-পরাণ পুডলি গাই। তাহার কারণে এ পঞ্চ ব্যঞ্জন রাখি যশোমতী মাই॥ আগে তুই গাই গেলে সে সুধাই তবে সে আনের কথা। উঠিছে বিবাদ এই পরমাদ মরমে হইল ব্যথা॥ কহিল সকল রাগাল যতেক শুনহে কানাই ভাই। আগে চল গিয়া খুঁ জিব যাইয়া শাঙ্লী ধ্বলী গাই॥ ٥ ۶ দেখি সব জনা কাত্বর বেদনা খুঁজিতে লাগিল বনে। বিফল হইলা ধেমু না পাইয়া দ্বিল চণ্ডীদাস ভণে॥

৭। রহিল—রইলাম।

১১। এই হুইটি গাভীর জত্তে যশোমতী পঞ্চ ব্যঞ্জন
াথিয়াদেন।

,

ງພາ

বড়ারি।

শুনহে বলাই দাদা।
আজি বন ভোজনে কি হৈল কাননে
সকল হইল বাধা॥

এমন কে জানে না শুনি প্রবণে 🔪 ्रभाष्टमी थवनी हाता। এ বোল বলিতে হেদে আচমিতে यूगन नग्रत्न थाता ॥ কি বলিব কায় যশোমতী মায় হারাল শাঙ্লী গাই। মোরে কি বলিবে এ মন্দ কহিবে ১০ সেই যশোমতী মাই॥ বলিছে রাখাল শুনহে গোপাল আমরা কহিব গিয়া। আচম্বিতে গাই হারাল তথাই त्राथि भत्रद्वाध मिशा॥ যশোদা রাণীরে কহিব তাহারে কানুর নাহিক দোষ। कांनि थूं कि वरन বালক সকলে কাসুরে না কর রোষ॥ थूं कि अरक अरक २० সকল বালক আজু না মিলল ভাই। কাশি আনি দিব भांडली धवली চণ্ডীদাস গুণ গাই॥ ৮। काश-काशांक।

265

>०। शत्राथ—श्रायाः।

দেখ দরশন করহ ভোজন
শাঙলী ধবঁলী বলি।
ছটি কর ভরি এ অর বাঞ্চন
ডাকিছেন বনমালী॥
কোথা আছে ভোরা দেখা দেহ মোরে
ছদয় পরাণ কাঁদে।

ভোমাশ্ল বিহনে জানি এ পরার্ট মোর বুক নাহি বাঁধে॥ কাঁদে যতুনাথ ় বুকে দিয়া হাত ফুকরি ফুকরি রোই। তোমা না দেখিলে এই বনজিঠে भाषणी धवली शाहे॥ এ বোল বলিতে ফুকরি রোইতে नत्मत्र नम्मन कान। না যাব গুহেতে রহি বনভিত্তে ভোমরা চলিয়া যাও। ঘরে গিয়া কচ মায়ের সাক্ষাতে আমার শপথি খাও॥ না পাইল খুজিয়া -ধেনু হারাইয়া কানাই রহিল তথা। শুনি স্থাগণ বিরস বদন क्रमर्य भिन वाथा॥ কাঁদিয়া আকুল বালক সকল কালুর বদন চায়।

৮। আমার হৃদয়ে শান্তি হইতেছে না।
>৽। রোই—কাদে।
২৫। যে জন দেবেরও অগোচর, তিনিও মুগ্ধ হইলেন,
অর্থাৎ কে ধেরু হরণ করিল, বৃঝিতে পারিতেছেন না।

চণ্ডীদাস গুণ গায়।

সে জন মোহিত

দেব অগোচর

भृत्रवी ।

পুন: শিশুগণে করল হরণ রাখিল গোপন করি।

বেলার মনেতে করি কিছু চিতে

ইহ কি গোলোক-হরি ॥ hea

ধেমু বংগ লয়া বুঝিতে আঁপন মন। (उँहे रम हतिम · বালক সকল वृक्षित्व कान वा कन ॥ रहेथा वनमानी খুঁজিয়া বিকলি না পাই ধেমুর লাগি। কমল লোচন না ক্রুরে বচন উঠত বিরহ আগি ॥ আসি সেইখানে ভোজনের স্থানে না দেখি বালকগণে। হইয়া বিরস এ কি পরমাদ এমন হইল কেনে॥ वद्यान ना नामुद्र একটি বচন नग्रदन भनरम् वाति। কে হেন করিল বিপদ্ আপদ্ বিরহ দেওল ঢারি ॥ কোথা ব্ৰজবালা রাখালের মেলা সে হেন স্থলর গাই। কোথায় রহল কিছু না জানল দ্বিজ চণ্ডীদাস গাই॥

৩-৫। ধেকু বৎস লইয়া যিনি দাড়াইয়া আছেন, তিনিই কি গোলোকের ঈশ্বর, একা ইহা মনে করিলেন।

৬। স্বাপন মনে বুঝিতে।

> । লাগি—দর্শন।

২)। মেলা—সংহতি, সমূহ।

3.68

সূহা।

কোথা আছ ভাই ছিদাম স্থদাম বস্থদাম আদি যত। দেহ দরশন না রহে জীবন

কোন বনমাঝে আছ কোন কাজে উত্তর না দেহ কেনে। ভাই ভাই বলি করিয়া বিক্লি বুলত বনহি বনে॥ কাঁদিয়া আকুল नरमञ्ज नमन वहन ना मरत्र मूर्थ। আজি সে ছর্দিন र्रेन भिनन পাইল ভোজন হুখে॥ প্রাণের দোসর রাখাল সকল তারা বা চলিল কোথা। श्रमश विषाति কাটিয়া লইল 24 মরমে হানিয়া ব্যথা। কাসুর রোদন বেদন দেখিয়া চণ্ডীদাস বলে ভাথে। এ কথা যে জন করিল তখন জানিয়াছি অমুরথে॥

৮। বনে বনে ভ্ৰমণ করিতে লাগিলেন।

' ১২-২২। আজি বড়ই চর্দিন আসিরা উপস্থিত হ'ইরাছে; ভোজন করিতে গিরা বড় হংখ পাইলাম।

১৯-২০। এ কাজ যে জন করিরাছে, আমি তাহ।

অসুমানে জানিরাছি।

364

সূহা ৷

এস ভাই সখা দেহ মোরে দেখা
পরাণ কেমন করে।
কোথা আছ ভাই খুঁলিতে না পাই
একি পরমাদ মোরে॥
আর কার সনে খেলিব বতনে ৫
বনে কিরাইব পাল।
আর না শুনিব মধুর বচন
বেশ না করিব ভাল॥

٥ (

20

٥٤

কামুর বিবাদ द्यापन द्यपन ্ ভনি পশু পাখিগণে। পাষার গলিত শাখিকুল যত শম্বিত চরণ পানে॥ আর আর ভাই ডাকয়ে মাধাই উত্তর না দেহ কেনে। - দিয়া দরশন রাখহ জীবন এত নিদারুণ **কেনে** ॥ ভাই বলি কেনে দয়া নাহি মনে সকল পাশরিবে। प्रिथिय द्यमना আমার যাতনা বড় পরমাদ হবে॥ কহে চণ্ডীদাস কামুর চরণে এক নিবেদন করি। এ ব্রহ্মগেয়ানে দেখহ ধিয়ানে কে হেন করিল চুরি॥

300

২৩। ত্রন্ধজান দারা ধ্যান করিয়া দেখ।

ক্ষলনরন ধেয়ান স্মরণ
মুদিয়া নয়ান ছটি।
ব্রহ্মজানেতে দেখি হৃদয়েতে
ব্রহ্মার হেনক কুটি॥
আমায় ছলিতে আসি বনভিতে
ঐছন ভাহার কাজ।
মোর ভণ্য কিছু জানিতে নারিয়ে
বুঝিব শক্তি আজ॥
আমি কি বটিয়ে জানিতে নারিয়ে
পাইয়ে ময়মে ব্যধা।

তেঁই গিণ্ড বৎস हतियां महें জানিল এ তথ্য কথা। **जान जान विन जानिए। ज्**सुद नम्बद्ध नमन कान। रुकिन त्राचांन े যত ধেমুপাল 30 ইথে সে নাহিক আন ॥ সেই ব্ৰম্ববালা তখনি হজিলা भाउनी धवनी शाहे। তা দেখি ব্রহ্মার ভাঙ্গিল সংশয় ভাবিতে শাগিলা তাই ॥ "ইंহ দেব হরি দেবের দেবতা ইহাতে নাহিক আন।" ফাঁফর হইয়া ধেমু বংস লয়া আইল কামুর স্থান। করপুট করি, ধরিয়া চরণ 20 পডিল ধরণীতলে। কাঁদিতে কাঁদিতে আকুল হইয়া কাতরে কিছুই বলে॥ **ह**शीमां में परम ব্ৰহ্মার আরতি ধরিয়া চরণ স্তই। বছ স্তব করে कांनि উष्ठश्रदत অঝর নয়নে রোই॥

৪। কৃটি—কৌটিল্য, চতুরতা।

>। জানিতে নারিয়ে—জানিতে পারে না।

২৯। আরতি—কাতরতা, মিনতি।

241

ভূমি দেব হরি দেবের দেবভা ভূমি হিতক্রী হও। তুমি চন্দ্র দিবা তুমি মহাতেকা তুমি ত তারণ হও॥ তুমি সে পুরুষ- . ভূষণ শকতি তুমি সে জগৎ সিন্ধু। তুমি দয়াবান্ এ নব বৈভব व्यनाथ कनात तक्ष्॥ . তুমি জল স্থল তুমি দিবাকর তুমি সে এখা দীলা। তুমি ত**রুলতা** তুমি ফল শাখা তুমি সে দরিয়া ধারা॥ যার অগোচর এ মহী ব্ৰহ্মাণ্ড ভোমারে জানিতে পারে। ক্ষেম অপরাধ বিষম বিপাক প্রভু দয়া কর মোরে॥ আমার হৃদয়ে তম উপজিল পাইমু তাহার চিহ্ন। অপরাধ ক্ষেম প্রভু দয়াবান্ আমি কি জানিয়ে বর্ণ॥ এ রীভ আকুভি চণ্ডীদাস কহে কে তুয়া বুঝিতে পারে। মহিমা চাতুরী চতুর্বেবদ যার কহিয়া কহিতে নারে॥

৫। পুরুষভ্ষণ শকতি—অনেকবার পাওয়া ষাইবে।
ইহার অর্থ বােধ হয় এই ঃ—শজিমান্ পুরুষ শ্রেষ্ঠ।
১০-১৪। যে মহী ভ্রন্ধাণ্ড বৃঝিতে পারে না, সে কি
ভামায় বৃঝিতে পারে
?

বড়ারি।

বেদ বেদ বর্ণ চারু সে পুরিভ এক চক্রবর্তী সাই। সপ্ত সপ্ত শত সহস্র মেচুল মস্থাহি পল্লব বাই॥ তাহে শশব্ব দীপ্ত নবপর प्रभागे **प्र**प्त अः त्य । ভিপর যাকর কর্মিশ মানগ ওখন ভেল আতংশে॥ পট কি টাটক ফণী মণি দশপর ' সে দশ যাকর আগি। মেখল খগতি তত্বপর যো রীতি (वनी (वनीक नाति॥ মমিদ আদপাশ ভারপর যো রয়া স্থ্রস বাঁহাকে লাগে। বারহি অক্ষর চৌদহি যে রহে সোবহি গেলহি ধন্ধ। চূতীদাস কছে যাকর আশপর ৰেড়ল সাত্তহি ধন্ধ॥

...

বড়ারি।

মোর অপরাধ ক্ষেম যত্নাথ
করিত্ব এমন কাজ।
তুমি দয়ানিধি দয়া না করিলে
পাব অতি বড় লাজ॥
না জানিয়া যদি কেছ করে দোয ৫
রোষ পরিহর তুমি।
অহজার হেতু না জানি বেকভ
কি আর বলিব আমি॥
বে জন এ ভিন ভ্বন ঈশ্বর

\কপট নিকট ছাড়হ সঙ্কট 1. 'আমারে হইল গাঢ়॥ ব্ৰহ্মাণ্ড অগাধ वद्दिनग्रथ যাহার ইহাতে গতি। গুণ শত শত অতি অমুমত 26 চারি চারি গতি বীতি॥ **ুপ্রণয় তুল্ল**ভি সাত গুণ গুণ চক্র সাই যার হয়। নব নব রেখ রেখের উপমা তাহার যে রস হয়॥ 20 প্রকার আরতি সে রস এ চারু তুমি সে মুরতি কায়া। তার এক কলা কলার অংশ ত্রিকুটি কুটির ছায়া। ছায়ার বিস্বুক সামগ্রাহিপর তাপর জ্যোতিক হেম। গৃঢ় অভিতর তাহার ঈশ্বর কে জানে এছন প্রেম। যোগী ফণিবর প্ৰবাহ পল্লব মুনির মানস সেই। 90 এ রস চাতুরী মধুর পঞ্চজ চণ্ডীদাসে মাগে এই।

> ১৭*০* ভোৱি।

বড়ারি।

প্রভুর আরতি • কি জানি কাকুতি
তুমি সে পরমপতি।
অপরাধ করি ক্ষেম দেব হরি
তুমি অগতির গতি॥
দেব ভগবান্ ইথে নাহি আন ৫
• ইবে সে জানিল ইহা।

বছ স্তৃতি করি ধরিয়া চরটো
ধরণী পড়িয়া দৈহা ॥

যাহার মহিমা নাহি পায় সীমা
বেদে অংগাচর যেই। ১০
কি বলিতে জানি যার যেন রাত
বুঝিতে নারিল এই ॥
বহু স্তৃতি করে পড়িয়া ভূতলে
চরণকমল ধরি।

চণ্ডীদাসে বলে এ রসমাধুরী ১৫
কেবা জানিবারে পারি॥

212

ন্টনারাগ্ণ।

মোর অপরাধ ফেন। এ দেহ ধরিয়া হেন না করিব হেনক না হয় যেন॥ প্ৰভু ভগদান্ আকার **কার**ণ করণ প্রবণ ধাতা। নিশা তর তম চন্দ্র দিবাকর ব্ৰহ্মাণ্ডেতে গতায়াতা॥ তুমি চরাচর ভূমি সে সত্যর ভৈবর আগম সার। যার নাহি পায় গমন বিচার যাহাতে না পায় পার॥ ক্ষেম ক্ষেমতম অন্ধকার ভূম অথির নিবিড় গঙা। , ১১.. তুমি সে পুৰুষ ভূষণ শক্তি তুমি সে দেবের ধাতা। লক্ষ শত্কোটি যার লোমকুণে এ চৌদ্দ ব্ৰহ্মাণ্ড জ্যুতা॥

ভার এক কৃট শত শত অংশ এক ধৃম রেণু বৈসে। ধ্মস পলক • পালটি কটাক্ষ নিমিখ গণিয়ে কিসে॥ নিমিখ গণিতে কাহার শক্তি এক পল কুটি সাতে। তাহার অঙ্কুর তাহাতে যে হয়ে ভাহার পালটি যাতে॥ জামু জামু ভামু কিরণ ছটায়ে তাহার কিরণ এক। কোটি পলক দেখি যে অনেক তাহার অনেক রেখ। এ জন যাহার বৈভব নায়েক সে জন ব্ৰজেতে স্থিতি। তাহার মহিমা আগম গারিমা কেবা সে জানিব গতি॥ চণ্ডীদাস কহে এ মহীমগুলে জনম লভিয়াছে। গোপ গোপিনী নয়ন অঞ্জন করিয়া রাখিয়াছে।

শতমুখ দেখ সহস্রমুখ দেখ এ সব দেখল মুদিত নয়ন কে জানে এছন গতি॥ মন বিচারিয়া দেখল বেকত হইল ফাঁফর মনে। স্তুতি করে শত 🗀 ১৫ চরণে পড়িয়া কে তোমা মহিমা জানে॥ ক্ষেম অপরাধ কর পরসাদ শুনহ গোলোক হরি। আমি না জানিয়ে অপার অগাধ এ রসমহিমা কেলি॥ চণ্ডীদাস কহে দয়ার সাগর ধরিয়া এ ছুই বাহে। উঠ উঠ বলি কহে বনমালী পাইয়া কিছুই মোহে॥

312

ক্ষেন কারণ নন্দের নন্দন
তুমি কি জানহ মোরে।
কোটি ব্রহ্মা আছে, কিবা তার কাছে
কাণনা আছায়ে তোরে॥
মুদ্ধ নিয়ান দেখহ গেয়ান
দেখাব কভেক ব্রহ্মা।
এক সে পলকে দেখহ টাটকে
জানহ কতেক জনা॥

ও। যশোদার বাৎসল্য

৩-৪। কোটি ব্রহ্মা আছে, তুমি তাহাদের মধ্যে

১৭। পরসাদ - প্রসাদ, অহুগ্রহ।

২২। বাহে—বাহতে।

গণনারই যোগ্য নও।

সিন্ধুড়া।

কারু কহে শুন • রাখাল যতেক
হইল উছর বেলা।
ছিদাম স্থদাম ভাই বলরাম
আর কি করহ খেলা॥
ধেমু কর জড় আর খেলা ছাড়
কালি সে খেলিহ খেলা।

আৰু চল ঘরে যাব কুভূহলে ধেসুগণ কর মেলা। আজুকার গোঠে श्रेल मकरहे বিপাক পড়িয়া গেল। 20 र्टर रेट ब्रव निया ধেমুগণ লয়া আজুকার মত চল। প্রাথে চলি যায় মাঝে যতুরায় युवनी वनरन शांग्र। শিঙ্গা বেণু রবে **আনন্দে** চলংয় 30 গোকুল মুখেতে ধায়॥ যমুনা পুলিন প্রবেশ হইয়া নিজ গৃহে চলি যায়। ধেমুগণ গৃহে রাখিয়ে গোপনে যশোমতী মুখ চায়॥ २० কোলেতে লইয়া नरन्पत्र नन्पन वनन हुन्द्रल तरम। অমিয়া পাইয়া * কত শত শত রসের আনন্দে ভাসে। "এতক্ষণ কোথা হিয়া দিয়া ব্যথা গেছিলে কোন বা বনে। এখানে এ ধর গৃহমাঝে ছিল পরাণ তোমার সনে॥ আঁখির তারাটি গেছিল খসিয়া এবে আঁখি আসি বসি।" **ठ** छौमात्र वरल क्करनक त्नशरण ও মুখ বদন শশী॥

। উছর—উচ্চ, অনেক।
 ২৭। ধর—শরীর।
 ৩০। তারাটি আবার আসিয়া চক্লতে বসিল। তৃমি
বাড়ী আসিলে, আবার চক্লুর দৃষ্টি ফিরিয়া পাইলাম।

তুমি মোর প্রাণ পুথলি সমান যতক্ষণ নাহি দেখি। হৃদয় বিদরে . . তার অগোচরে মরমে মরিয়া থাকি॥ যেন বা কি ধন অমূল্য রতন পাইয়া আনন্দ বড়ি। ভাসি অশুজ্ঞলে আনন্দহিল্লোলে গৃহকাজ যত ছাড়ি॥ শুনহ কানাই আর কেহ নাই কেবল নয়নতারা। 20 সাঁখির নিমিখে পলকে পলকে 🐧 🌣 কভ বার হই হারা॥ শক মেন যত ধেমু গাই তোমার বালাই লয়ে। কালি হৈতে বাপু ধেমু গোঠ মাঠ না পাঠাব বন দিয়া॥ কি বলিব নন্দ ভোমার যুক্তি কামু পাঠাইয়া বনে। না জানি কখন কিবা জানি হয় হেন লয় মোর মনে॥ বৈদে ভয়ন্কর বনে ভয়ক্কর শার্দি ভুজক রহে। জানিবা কখন করয়ে দংশন এ বড়ি বিষম মোহে। আনের অনেক আছে কত জন আমার পরাণ তুমি। **खान मन्म** रेश्टन वांथित भने रक • তখনি মরিব আমি॥ চণ্ডীদাস বলে অতি বড় স্নেহ দেখিল যশোদা মায়।

25/

এ না কভু শুনি জগতে না দেখি জগতে এ যশ গায়॥

১৩---> । যত গাই আছে, সব মরিয়া যাউক, তুমি ভাল থাক।

: 90

শ্রীসূহা।

ঢর ঢর বারি বদন নেহারি ও অঙ্গ বাহিয়া পড়ে। ঘন ঘন দেখি নিশাস হুতাশ অতি সে করুণা স্বরে॥ এ জীর নবনী ছেনা সর আনি দেওলি কানাই মুখে। যতন করিয়া পিয়াইছে রণী দূরে গেল যত ছখে। "কহ দেখি বাপু আজু কোন্বনে চরাই**লে স**ব ধেরু। মাজু কেন বাপু শুনিতে না পাই তোমার মোহন বেণু॥ আন দিন শুনি বেণুরব খানি আজু না শুনিতে পায়ে। মনে উঠে কত বিষম সম্ভাপ 50 শুনিলে থাকিয়ে জীয়ে॥ তখনি বলেছি যমুনা নিকটে রাখিও ধেমুর পাল। আপনি যাইয়া তোরে দেখি গিয়া তিবৈ সে জুড়াই ভাল॥ ২৽ ্র্পার নবনী শাকর সেবনি রাখি**ল যতন করি।** । কোন শিশুগণে নিবার কারণে না আইপে যতন করি।

এই বড় ছখ নাহি হয় সুখ ২৫
উঠিল আগুন বড়। ,
চণ্ডীদাসে বলে রাণীর করুণা
বড়ই দেখিল দড়॥

২১। শাকর সেবনি—শর্করাযুক্ত।

>96

কামোদ।

বিচিত্ৰ পালক্ষে শয়ন করায়ে नन्दरागी किছू राज। উছর গমন "আজি কেন ধেন্তু আনিলে যতেক পালে॥" গমন বিলম্ব মায়ে কিছু বলে "শুনহ বেদনী মাই। চোরা ধেমু সনে যাইতে যাইতে বনে বনে বুলি তাই॥ বিষম বিপাকে চোরা ধেতু সনে পাইয়ে যাতনা বড়ি। ফিরাব বাছুরি একলা কত না কাননে যাইয়া পড়ি॥ যদি কিছু বলি ভাই বলরামে ফিরাইতে ধেমুপাল। বসিয়া থাকেন শীতল ছায়াতে কোপেতে লোচন লাল ৷ আর শিশুগণে আপন কাজেতে তাদের এমনি রীতি। কেবা করে কার নিজ কাজে দড় স্বার স্মান মতি। ₹• আর বনে আমি না যাব জননি এত কি বেদনা সয়।" ।

শুনি নন্দরাণী করুণ হাদয়
় কার্চের পুথলি রয় ॥
"কড় না কুধায় পীড়িত হয়েছ ২৫
বাছনি যাত্মা মোর।"
চণ্ডীদাস বলে শুনিয়া যশোদা
তথের নাহিক ওর ॥

৩ - ৪। আ্রাজি কেন ধের বাড়ী আ্রানিতে এত বিলম্ব হইল ?

ে। গমন--আগমন।

>**11** স্হ সিকুড়া।

"আহামরি মরি পরাণপুথলি বাছনি কালিয়া সোনা। কত না পেয়েছ ক্ষুধায় পীড়িত বনে যেতে করি মানা॥ এ ছঃখে না জীব নন্দে কি বলিব এ শিশু পাঠায়ে বনে। এ ঘর করণে আনল ভেজাব কিবা সে করয়ে খনে॥ ইহাকে অধিক আর কিবা ধন যারে না দেখিলে মরি। কালি আর গোঠে না পাঠাব মাঠে কেবা কি করিতে পারি ॥" মধুর বচনে কহে নন্দরাণী মরমে পাইয়া ব্যথা। দ্বিগুণ স্বাগ্যন ু জ্বলিছে হিয়ায় 30 শুনিয়া পুত্রের কথা। "তোমারে লইয়া আন দেশে যাব ना त्रव नरमत्र घरत्। তোমা হেন ধন আর কোথা পাই বিধাতা দিয়াছে মোরে॥ २०

কত কত-কার ছোনা ননী সা

পিয়াই রক্ষনী জাগি।

কটোরা ভরিয়ে রাখিয়ে থাপিয়ে
রাখিয়ে যাহার লাগি॥

এজন কেম্নে এই ধেমু সনে ২৫

ফিরিবে বনেতে বনে।

অভাগী মায়ের বিষম অস্তর
কেম্পে কত উঠে মনে॥"

মায়ের রোদন বেদন দেখিয়া

কহিছে কানাই তায়।

৩০

পরিবোধ চিতে বেদনী জননি

ভিজ চণ্ডীদাস গায়॥

৩১। পরিবোধ চিতে —চিতে প্রবোধ দাও।

294

रुर ।

চিবাইড়ে দিল কর্পুর তামুল স্নেহে সে যশোদা মা। জাতিয়া দিছেন ধরিয়া চরণ শীতল পাখার বা॥ वनन त्नरात्म यत्नामा स्नमती ঘুমল কমল আঁখি। গৃহকাজে মন করিল গমন আন আন কাজ দেখি॥ "শুন নন্দ ঘোষ পাছে কর রোষ . কহিয়ে ভোমার কাছে। छनिण वरनत इरथेत्र विठात কহিতে কি আর আহৈ। চোরা ধেন্তু সনে বহু তুখ মেনে পাইল যাদৰ মোর।

চণ্ডীদাস

ত্তনিতে শুনিতে পদ্মাণ বিদরে ১৫

ত্থের নাহিক ওর ॥

বল দেখি তুমি এমন ধবলী

কেন বা পাঠাও বনে।

রাজকর লাগি 'এমন বয়সে

বঙ্কিল ধেমুর সনে ॥" ২০

নন্দ কহে শুন এমন সম্পদ্

আর না পাঠাব তারে।

চণ্ডীদাস বলে এছন আরতি

এ লীলা ব্ঝিতে পারে॥

> ३१३ युरु।

এই মন্ত নিতি বনে বিহরয়
অপার যাহার লীলা।
নিতি নিতি নব এ নব কৈশোর
কে হেন জানিব খেলা॥
প্রভাতে উঠিয়া গোঠে আরোহণ ৫
আইলা যতেক শিশু।

ভাই ভাই বলি ডাকে কত জনা ় ছিদাম আছয়ে পাছু॥ স্বল যাইয়া কান্থ জাগাইয়া কহিছে মধুর বাণী। "গোঠেতে যাইতে শিশু চারি ভিতে কিনা যাবে ইহা শুনি॥ বল দেখি ভাই মোরা শুনি তাই" ष्ट्र' याँथि कठानि करत्। "আজিকার মত কহিয়ে বেকত ১৫ আজি সে রহিব ঘরে॥" সুবল জানল কান্তুর চরিত কহিতে লাগল তায়। "আজুকার বড় ভ্ৰমেতে আগল কিছু সুখ চায়॥ চল সব গণে ধেন্তু বৎসগণে ক্ষেতে চরাইব ধেমু।" শুনি সব জন স্থবল-বচন "আজু না চলব কামু॥" আপনার ঘরে मव जन ठिन २० ধেমুগণ করে মেলা। নিকট আটনে চরে ধেমুগণে চণ্ডীদাস তথা গেলা॥

(गार्वनीला ममाश्र।

রাই রাখাল।

थाननी ।

বঁধু যদি গেল বনে শুন ওগো সখি। চূড়া বেঁধে যাব চল যেথা কমল-আঁথি॥ বিপিনে ভেটিব যেয়ে শ্রাম জলধরে।
রাথালের বেশে যাব হরিষ অস্তরে॥
চূড়াটি বাঁধহ শিরে যত সথীগণ।
পীতধড়া পর সবে আনন্দিত মন॥
চণ্ডীদাস বলে শুন রাধা বিনোদিনী।
নরনে দেখিব সেই শ্রাম গুণমণি॥

১৯। আগল - কাতর। ২০। আটনে—স্থানে।

242

स्ट्रे ।

কেহ হও দাম শ্রীদাম স্থদাম স্বুবলাদি যত স্থা। চল যাব বনে নটবর সনে কাননে করিব দেখা॥ পর পীতধভ্যু মাথে বাঁধ চূড়া ৫ বেণু লও কেহ করে। কর উচ্চ রোল হারে রে রে বোল याइव यमूनाजीदत्र ॥ পর ফুলমালা সাজাহ অবলা সবারে যাইতে হবে। দাম বস্থদাম সাজ বলরাম যাইতে হইবে সবে॥ কহিছে বচন যোগমায়া তখন রাখাল সাজহ রাই। मिथिरा नग्नरन ১१ চণ্ডীদাস ভণে আমি তব সঙ্গে যাই॥

> ১৮२ शानगी।

যোগমায়া পৌর্গমাসী সাক্ষাতে আসিয়া।
লইল হরের শিক্ষা আপনি মাগিয়া॥
সাজল রাখাল বেশ রাধা বিনোদিনী।
ললিতারে বলরাম কানাই আপনি॥
বলরামের হেলে শিক্ষা বলে রাম কামু। ' ৫
মূরলী নহিলে কে ফিরাইবে ধেমু॥
চণ্ডীদাস বলে যদি রাই বনমালী।
সলিল আনিয়া পত্রে করহ মূরলী॥

বড়ারি 1

আনন্দিত হয়ে সবে পোরে শিক্সা বেণু।
পাতাল হইতে উঠে নব লক্ষ ধেনু ॥
চৌদিকে ধেনুর পাল হান্বা হান্বা করে।
তা দেখিয়া আনন্দিত সবার অস্তরে॥
ইন্দ্র আইল ঐরাবতে দেখয়ে নয়নে।
হংসবাহনে ব্রহ্মা আনন্দিত মনে॥
র্যভবাহনে শিব বলে ভালি ভালি।
মুখে বাত্ত করে নাচে দিয়া করতালি॥
চণ্ডীদাসের মনে আন নাহি ভায়।
দেখিয়া সবার রূপ নয়ন জুড়ায়॥

৯। ভার হয়।

>F8

বিভাষ।

গায়ে রাঙ্গা মাচী কটিভটে ধটী মাথায় শোভিত চূড়া। চরণে সুপূর বাজে সবাকার গলে গুঞ্জমালা বেড়া॥ সবাকার কুচ হইয়াছে উচ ৫ এ বড় বিষম জ্বালা। কমলের ফুল গাঁথি শতদল সবাই গাঁথিল মালা॥ ঠারে ঠারে চূড়া গলে দিল মালা নাসিয়ে পড়েছে বুকে। 认 🍌 ১০ ফুলের চাপানে কুচ ঢ়াকুী গেল ' চলিল পরম সুখে॥ কেহ লয়ে লাঠী কেহ পীতধটী 🗼

গৰ্জন শবদে ধায়।,

্থীদাস ভণে গহন কাননে ১৫ শ্যাম ভেটিবারে যায়॥

১০। 'নাসিয়ে—'হেলিয়ে।

১৮¢ বিভাষ।

যমুনার তীরে সবে যায় নানা রক্ষে।
শাঙলী ধবলা বলি আনন্দিত অঙ্গে॥
আসিয়া নিভৃত কুঞ্জে সবে দাঁড়াইল।
রাখাল দেখিয়া শ্যাম চমকি উঠিল॥

"কোন্ প্রামে বসতি রে কোন্ প্রামে ঘর । ৫
আমার কুঞ্জেতে কেন হরিষ অস্তর ॥
কাহার নন্দন তোরা সত্য করি বল।"
মুখে হেসে বাক্য কহে অস্তরে বিভোল ॥
রাধা-অক্সের গন্ধে কুফের নাসিকা মাতার ।
আপাদ মস্তক কৃষ্ণ ঘন ঘন চার ॥
১০
ললিতা হাসিয়া বলে "শুন শ্যাম্থন ।
রাধারে না চেন তুমি রসিক কেমন ॥"
চণ্ডীদাস বলে শুন রাধা বিনোদিনী।
হের গো শ্যামের রূপ জুড়াবে প্রাণী।

রাইরাধাল সমাপ্ত।

সম্ভোগ-শ্বতি।

28.6

বিভাৰ।

শ্যামলা বিমলা মঙ্গলা অবলা আইল রাইএর পাশে। যদি স্বতন্তরে তথাপি রাধারে পরাণ অধিক বাসে॥ দেখি সুবদনী মিলিল অমনি মিলিল গলায় ধরি। কত না যতনে রতন-আসনে বসায় আদর করি॥ রাইমুখ দেখি হৈয়া মহাস্থ্ৰী ূফহয়ে কৌতুককথা। রজনী-ব্রিলাস শুনিতে উল্লাস অমিয় অধিক গাপা॥

মগলে হইল রাধা।

় রসের আবেশে

হাস পরিহাসে

চণ্ডীদাসবাণী নিশির কাহিনী ১৫ শুনিতে লাগয়ে সাধা॥

৩। স্বতস্তরে—স্বতন্ত্রা অর্থাৎ ললিতাদির ক্রায় অস্তরঙ্গানয়।

> ১৮৭ ললিত।

আজুক শয়নে ননদিনী সনে
শুভিয়া আছিফু সই।
যে ছিল করমে বঁধুর ভরমে
নরম ভোমারে কই॥
নিদের আলিসে বঁধুর ধাধসে
ভাহারে করিফু কোড়ে।
ননদী উঠিয়ে বলিছে ক্ষয়ে
বঁধুয়া পাইলি কারে॥
এত টীটপনা জানে কোন জনা
বুঝিফু ভোহারি রীতি।

চণ্ডীদাস

কুলবজী হয়ে পর পতি লয়ে এমতি করহ নিতি॥ যে শুনি প্রবণে পরের বদনে নয়নে দেখিত্ব তাই। দাদা ঘরে এলে করিব গোচর 20 ক্ষণেক বিরাজ রাই ॥' নিঠুর বুচনে কাঁপিছে পরাণে মরিয়া রহিন্থ লাভে। ফিরাইয়া আঁখি গরবেতে থাকি সঘনে আমারে যজে। এক হাতে সখি কচলিয়া সাঁখি নয়ানে দেখি যে আর। কিবা কুলভয় চণ্ডীদাসে কয় কামুর পীরিতি যার॥

- শয়নে—শ্যায় ৷
- ৩। করমে—মরমে—পাঠাস্তর—ভরমে ভ্রমে।
- १। शाधरम-ज्या
- ২ । যজে-- গর্জন করে।

ললিত।

মার একদিন স্থি শুভিয়া আছিমু। वैंधुत्रा ভत्राम ननमी क्लाए निय ॥ বঁধু নাম শুনি সেই উঠিল ক্ষয়া। বলে 'ভোর বঁধু কোথা গেল পলাইয়া॥ সভী কুলবভী কুলে স্থালি দিলি আগি। ৫ আছিল আমার ভালে তোর বধভাগী । শুনিয়া বচন ভার অধির পরাণী। কাঁপয়ে শরীর দেখি আঁখির তাজনি॥ এমত যে ভরি স্থি পাপিনীর হাতে। বনের হরিশী থাকে কিরাডের সাথে॥

বিজ চণ্টালাস বলে পীরিতি এমতি। যার যত স্থালা ভার •ভভই পীরিভি ॥

- ৭। অধির পরাণী-প্রাণ অফ্লির।
- ৮। তাজনি তৰ্জন।
- ৯। কেমনে এড়াব স্থি তাপিনীর হাতে—পাঠান্তর।

বিভাগ।

পরাণ-বঁধুকে স্বপনে দেখিয় বসিয়া শিয়র পাশে। নাসার বেশর পরশ করিয়া ঈষৎ মধুর হাসে। পিঙ্গল বরণ বসন্থানিতে মু'থানি আমার মুছে। মাথাটি বাছতে শিথান হইতে রাখিয়া শুভল কাছে॥ भूरथ भूथ पिया সমান হইয়া বঁধুয়া করিল কোলে। চরণ উপরৈ চরণ পশারি পরাণ পাইনু বলে। অঙ্গ-পরিমল সুগান্ধ চন্দন কুশ্ব্য কন্তুরী পারা। পরশ করিতে রস উপজিল জাগিয়ে হইন্মু হারা। কপোত পাখীরে চকিতে বাঁটুল বাজিলে বেমন হয়। এমন হইলে

१। निषान--वानिम।

চণ্ডীদাস কহে

১৬ ৷ যথন চেতন হইল, তখন আর বঁধুকে পাইলাম

আর কি পরাণ রয় 🛌

বিভাব।

কলি মন্দিরে আছিলা স্থন্দরী কোড়হি শ্রামর চন্দ। ভবহু ভাহার প্রশ না ভেল এ বড়ি মরমে ধনদ। সঞ্জনি পাওল পীরিতি ওর। পীরিতিশেখর. শ্রাম স্থন্দর কঠিন হৃদয় তোর॥ কন্তবুরী চন্দন অঙ্গের ভূষণ দেখিতে অধিক জোর। বিবিধ কুস্থুমে राँधिन कवती শিথিক না ভেল তোর ॥ 🐪 বিমল মধুর বয়ান কমল না ভেল পুলক সাত। পুছইতে ধনি হেরসি ধরণী হাসি না কহসি বাত। 30 কিয়ে রতিপতি বসতি সময়ে তেজিয়ে দেওলি ভঙ্গ। চণ্ডীদাস কহে এ দোষ কাহার रिएटव ना (छम मक्र ॥

৬। পীরিতি-শেধর – পীরিতি দোসর – পাঠ।স্তর। ৯। জোর –-উচ্জল।

১২-১৫। পাঠান্তর,--

এমন কমল বিমল মধুর
. না তেল পুলক সাজ।
হেরইতে বলি কবরী হেরলি
বুঝি না করিলি কাজ॥
১৬।, রতিপতি—ঋতুপতি পাঠাস্কর।

ম্লার ৷

সই কি আর বলিব তোরে। অনেক পুণ্যকলে সে হেন বঁধুয়া আসিয়া মিলল মোরে॥ এ ঘোর রজনী মেঘঘটা বঁধু কেমনে আইল বাটে: আঙ্গিনার কোণে বঁধুয়া ভিভিছে দেখিয়া পরাণ ফাটে॥ নহি স্বতন্তর গুরুজনা ডর বিশম্বে বাহির হৈমু। আহা মরি মরি সঙ্কেত করিয়া কত না যাতনা দিসু॥ বঁধুর পীরিতি আদর দেখিতে মোর মনে হেন করে। কলক্ষের ডালি মাথায় করিয়া আনল ভেজাই ঘরে॥ 30 আপনার ত্থ সুখ করি মানে আমার হুখেতে হুখী। চণ্ডীদাস কংহ কান্তুর পীরিতি শুনিতে জগৎ স্থী॥

৮। পাঠান্তর,— ° ঘরে গুরুজন ননদী দারুণ।

१५८ ।

সিক্ষভা।

"আমি যাই যাই" বলি বলে ডিন বোল।
কড না চুম্বন দেই কড দেই কোল॥
করে কর ধরি পিয়া শপথি দেয় মোরে।
পুনঃ দরশন লাগি কড চেঠা করে ॥

পদ আধ বার পিরা চাহে উলটিয়া। বরান নিরখে কত কাতর হইয়া॥ নিগৃঢ় পীরিতি পিরা করেন বহুক। চণ্ডীদাস কহে হিয়ার ভিতরে রহুক।

৪। কন্ত চেষ্টা করে। পাঠান্তর-কত চাটু বোলে।

220

সুহই।

এমন পীরিতি কভু দেখি নাই শুনি।
পরাণে পরাণ বাঁধা আপনি আপনি ॥
হুঁহু কোড়ে হুঁহু কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিয়া।
তিল আধ না দেখিলে যায় যে মরিয়া॥
ত্বল বিনে মীন ক্রুমু কবহু না জীয়ে।
নামুষে এমন প্রোম কোখা না শুনিয়ে॥
ভামু কমল বলি, সেও হেন নহে।
হিমে কমল মরে ভামু স্কুখে রহে॥
চাতক জ্বলদ কহি, সে নহে তুলনা।
সময় নহিলে সে না দেয় এক কণা॥
১০
কুসুমে মধুপ কহি, সে নহে তুল।
না আইলে ভ্রমর আপনি না যায় ফুল॥
কি ছার চকোর চাঁদ হুঁহু সম নহে।
ত্রিভুবনে হেন নাই চণ্ডীদাস কহে॥

228

সিমুড়া।

এমন পীরিতি কভু দ্বেখি নাই শুনি।
নিমিখে মানয়ে যুগ, কোড়ে দ্র মানি॥
সমুখে রাখিয়া করে বসনের বা।
মুখ ফিরাইলে ভার ভয়ে কাঁপে গা॥
- একভন্ন হৈয়া মোরা রজনী গোঙাই।
স্থের,সাগরে ভূবি অবধি না পাই॥

রন্ধনী প্রভাত বিংলে কাতর হিয়ায়।
দেহ ছাড়ি মোর যেন প্রাণ চলি যায়॥
সে কথা বলিতে সই বিদরে পরাণ।
চণ্ডীদাস কহে সই সব পর্মাণ॥

২। কোড়ে দ্র মানি—কোলে থাকিলেও তৃত্তি হয় না, মনে হয় যেন দ্রে আছি, আরও নিকট হইলে ভাল হইত।

২০। পরমাণ-প্রমাণ-ঠিক, সত্য।

>>4

सृष्ट्रे ।

়াকদিন যাইতে ননদিনী সনে।

কুটাম্, বঁধুর কথা পড়ি গেল মনে॥
ভাবে ভরল মন চলিতে না পারি।
অবশ হইল তমু কাঁপে থরথরি॥
কি কহিব সথি, সে হইল বিষম দায়।
ঠেকি বিপাকে আর না দেখি উপায়॥
ননদী বলয়ে হেঁলো কিবা তোর হই।।
চণ্ডীদাস কলে উহার কপালে যা ছিল॥

326

গান্ধার।

সাত পাঁচ সথী সঙ্গে বসিয়া ছিলাম রজে
হেন কালে পাপ ননদিনী।
দেখিয়া আমাকে তার কাছে ডাকে
"আইস শুাম-সোহাগিনী॥
রাধা তোমারে কহিতে কি ।
ছুই চারি দিন আমিহ ও কথা
কাণেতে শুনিয়াছি॥

তুমি কোন দিনে যুম্না-সিনানে
গিয়াছিলে নাঁকি একা।

খ্যামের সহিত্তে -काय-खनारक >• ं राष्ट्रिक नाकि (मथा। त्में पिन देश्राण विकास कार्या अर्थ भरव ৰিতি করে আনা গোনা। রাধা রাধা বলি 🕴 বাজায় মুরলী তেঁই হ'ল জানা গুন[ি]:্ ষে দিন দেখিব আপন নয়ানে তা সনে কহিতে কথা। কেশ ছিঁ ড়ি বেশ দুরে তেয়াগিব ভাঙ্গিব বাড়িয়া মাথা॥ এ কি পরমাদ দেয় পরিবাদ ২০ এ ছার পাড়ার লোকে। পর চরচায় যে থাকে সদায় সাপে খাৰ তার বুকে ॥ গোকুল নগরে গোপের মাঝারে এত দিন বসি মোরা। কভুনাহি জানি কভুনাহি শুনি কান্থ কি কালিয়া গোরা॥ বড়ুয়ার ঝিয়ারি বড় নাম ধরি বলই বড়ুয়া বউ। নিরমল কুলে এ কথা যে বলে ৩০ সে নারী গর**ল** খাউ॥" চিত থির করি থাকহ সুন্দরি যেন মন নাহি টলে। কাহার কথায় কার কিবা হয় বড়ু চণ্ডীদাস বলে। é-१। পাঠাস্থর,— রাধা বিনোদিনি ভোষারে বলিতে কি। চাই ছুই তিন কথা ৰে কণা তোমার বড়ই ভনিয়াছি॥ २•। পরিবাদ--- निम्ना, क्रम्ह। বড় ভাল বধ্ বলিয়া গৰ্ম করিয়া থাকি।

.

আমার পিয়ার কথা কি কহিব সই। যে হয়, তাহার চিতে স্বতস্তরী নই ॥ ভাহার গলার ফুলের মালা আমার গলায় দিল। তার মত ম্য়ের করি সে মোর মত হইল॥ তুমি সে আমার প্রাণের অধিক ভেঁই সে ভোমারে কই। এ যে কাল কহিতে লাজ আপন মনেই রই॥ 50 তাহার প্রেমের বশ হইয়া ষে কহে ভাহাই করি। চণ্ডীদাস কহয়ে ভাষ বালাই লইয়া মরি॥

794

সপ্রারি।

নিভিই নৃতন পীরিভি ছক্কন
তিলে তিলে বাড়ি যায়।
ঠাই নাহি পায় ডপাপি বাড়ায়
পরিণামে নাহি ক্ষয়॥
সখি হে অনভ্ত ছাত প্রেম।
এত দিন ঠাই অবধি না পাই
ইথে কি কষিল হেম।
উপমার গণ সব কৈল আন
দেখিতে শুনিতে ধন্দ।
এ কি অপরূপ তাহার স্করপ ১০
স্বারে করিল আরু॥

30

ठिशाम करह प्रस्त मरह · এখানে সে বিপন্নীত। এ তিন ভূবনে হেন কোন জনে **ওনি না দরবে চিত** ॥

>४। मन्दर्य--- प्रव हरा।

466

व्याभावती ।

চলহ সই জল ভরিতে যাই যে ঘাটে চন্দন চুয়া ভাসে। কলগী ভাঙ্গিয়া ঝিকটি খেলিব যাবত কৃষ্ণ না আইসে॥ এসং সকল সখী বৈসহ আমার কাছে ৫ স্বপন কহি যে ভোমার আগে। নিশি ছু'পছরে স্থপন দেখিসু वैधूया नियदत कारम ॥ শিয়রে বসিয়া ঈষৎ হাসিয়া গায়েতে বুলায় হাত। সূভার সঞ্চার খার নাহি নড়ে কোন পথে গেলা প্রাণনাথ। ভাহুকী ভাকয়ে কোকিল কুহরে চকোর ছাড়য়ে নিশাস। বাশুলী-চরণ শিরেতে বন্দিয়া ১৫ কহে বড়ু চণ্ডীদাস ॥

বিরলে বসিয়া আছিল শুভিয়া ওন গো পরাণ-সধি। নিশিতে আসিয়া षिण पत्रभन ক্মল-ন্য়ান-জাধি॥

পেয়ে বছ ধন অমৃশ্য রতন পুইভে নাহিক ঠাই। কোন্থানে থোব ্লে হেন সম্পদ্ মোর পরতীত নাই॥ যত ছিল ত্ৰুপ দুরে গেল পাপ ব্রিপ্রই বেদনা যতি। রাখে পেয়ে ধন আমার তেমন ইহা না রাখিব কভি॥ আজি নিশি দিন ভেল শুভকণ वँध्या भिनन काल। शिम वित्नोषिनो करह आध वानी ১৫ शिमग्रा शिमग्रा वर्ज ॥ না পাই কহিতে বিরল হইয়া মনে মোর যত আছে। চণ্ডীদাস কচে আসি প্রিয়া মোরে সে কথা কহিবে পাছে॥ ٠ ۶ ৮। পরতীত—প্রতীত, বিখাস। ২০। পাছে—পশ্চাতে, পরে।

4.5

বিভাগ।

প্রথম প্রহর নিশি স্থস্পন দেখি বসি সব কথা কহিয়ে তোমারে। বসিয়া কদম্বভলে সে কাসু করেছে কোলে **চুম্ব मिग्रा यमन-छेभ**रत ॥ व्यक्त पिया छन्पन वरण प्रध्य वहन १ व्यात वाय वांनी स्मध्रत। ் চাহিলেন স্থরতি নাহি দিলগপাপমঙ · पिश्न कृष्क पोकि श्रंहरत्॥ তৃতীয় প্রহর নিশি মুই ক্লফ-কোলে বসি निर्मातियः तमे हाम्-वमरन । . ू ১०

স্বৰ হাসন করি প্রাণ মৌর নিল হরি
বিয়াকুল হইল মদনে ॥
চতুর্থ প্রহরে কান করিল অধর পান
মোর ভেল রতি আশোয়াসে।
দারুণ কোকিল নাদে ভাঙ্গিণ আমার নিদে ১৫
রস গাইল বড়ু চণ্ডীদান্তা ॥

৬। বায়—বাজায়। ৮। দৌজি—ঘিতীয়। ১৪। আশোৱাদে—আশা।

> २०२ धानमी।

রজনী-বিশাস কহরে রাই।
সব স্থীগণ বদন চাই ॥
আ'থি চুলু চুলু অলসভরে।
চুলিয়ে পড়িল স্থীর কোড়ে॥
নয়নের জলে ভাসয়ে বুক।
দেখি স্থি কহে কহনা হুখ॥
কুপায়ে কুঁপায়ে কাঁদয়ে রাধা।
কহে চণ্ডীদাস নাগর ধান্দা॥

২০০ শিক্ষ্ণ।

রাই আজু কেন হেন দেখি।
বর্গ করিয়া কহ না আমারে
মনের মরম সখি॥
আখি চূপুঁ চূপু ঘুমেতে আকুল
জীগিয়াছ বৃঝি নিশি।
বসের ভরেতে ত অঙ্গ নাহি ধরে
বসন পৃঞ্ছিছে ধসি॥

এক কহিছে আর কহিতেছ বচন হইয়া হারা। কিবা রসরকে ১০ রসিয়ার সনে সঙ্গ হয়েছে পারা ॥ ঘন ঘন তুমি মৃড়িভেছ অঙ্গ সঘনে নিশাস ছাড়। কহ না কুমুসি স্বরূপ করিয়া কপট কেন বা কর। ভালের সিন্দুর আধেক আছুয়ে নয়নে আধ কাজল। **ठाँम निका**ष्ट्रिया এমন করিয়া কেবা নিল এ সকল। চণ্ডীদাস কয় যেবা সেই হয় ২০ ভালে जुनाहेल काछ। সঙ্গের সঙ্গিনী বঞ্চিতে নারিবে কিবা কর আর লাজ॥

> **५००** शाम**नी**।

প্রছন শুনইতে মৃগধ রমণী।
সথীগণ ইঙ্গিতে অবনতবয়নী॥
লাজে বচন নাহি করে পরকাশ।
সথীগণে কছইতে প্রিয়তম ভাব॥
কছইতে না কছসি রজনীক কাজ।
আমার শপথি ভোরে যদি কর লাজ॥
পহিল সমাগমে হইল যত স্থধ।
পুনহি মিলনে পাথব কত স্থধ।
প্রহিন বচন শুনি কহে মৃতু ভাবি।
চণ্ডীদাস ইহ রস পরকাশি॥

ভাবি—ভাবায়, কথা কহিয়।পরকাশি—প্রকাশ করিতেছেম।

₹•€

युक्ते।

करहं स्वमनी अन (গা, मकनि ছুখ কি বলিব আর। কি করি এখন জুড়াই জীবন .___ বদন দেখিব তার॥ ভাহার সাঁরীতি কিবা দিবারাতি ভূলিভে নাহিক পারি। মনে হলে মুখ কেটে যায় বুক শুমরে গুমরে মরি॥ সহে নাক আর করি অভিসার আজি হই বলরাম। > 0 যশোদা-মন্দিরে যাইব সহরে ভেটিব নাগর কান॥ শুনিয়া ললিডা হাসি কহে কথা वनाइ जाकित्न भरत । চণ্ডীদাস জ্বণে যশোদা যভনে ঈপিবে তোমার করে॥

সম্ভোগস্থতি সমাপ্ত।

বাসক-সজ্জা।

গান্ধার।

बाधिका ज्ञारित वेदवत स्तर्य • কুন্ত্ৰ রচনা করে।

ঐক্রিফের উক্তি।

কামোদ[°]।

আজুকার নিশি নিকুঞ্জে আসি কৃত্রিল বিবিধ রাস। রসের সাগরে ভুবাইল মোরে বিহানে চলিল বাস॥ শুন হে স্থবল স্থা। সে হেন স্থন্দরী গুণের আগরি পুন: কি পাইব দেখা। মদনে আগুলি গলে গলে মিলি চুম্বন করল যভ। কেশ বেশ যদি বিধার হইল ১০ তাহা বা কহিব কত॥ অশেষ বিশেষ বচন কৰিয়া আবেশে লইয়া কোড়ে। অক্সের পরশে হিয়া জুড়াইছ ক্ষেমনে পাশরি তারে॥ চণ্ডীদাস কৰে শুন হে নাগর

এ বড় লাগল ধন্দ। সে রাধা রমণী রস্পিরোমণি ভোমারে করল বন্ধ। ৮। यम्रात व्याश्वनि-यमनरक व्यावेकाहेबा त्राबिबा।

মল্লিকা মালতা আর জাভি যুখী সাজাইছে থরে থরে। আৰু রচয়ে বাসক শেজ। মুনিগণচিত হেরি মুরাছিত কলপের মুচে তেজ।

14

3450

ফুলের আচির ফুলের প্রাচীর क्रान्त श्रेव चत्र। ফুলের বালিশ আলিস কারণ প্রতি কুলে ফুলশর ॥ শুক পিক ছারী ১মদন প্রহরী ভ্রমর ঝক্কারে ভায়। ছয় ঋতু মত্ত মলয়-প্ৰন বায়॥ উব্দরোল রাভি মণিময় বাতি কর্পুর ভাত্মল বারি। চণ্ডীদাস ভণে বাধি স্থানে স্থানে শয়ন করল গোরী॥

> । বায় — প্রবাহিত হয়।

১৬। উজ্বোল — উজ্জল। বাতি প্রদীপ।

১৯। গোরী — রাধিকা।

विश्वनका।

थानने ।

বঁধুর লাগিয়া শেজ বিছাইমু
গাঁথিয়ু ফুলের মালা।
ভামুল সাজিমু দীপ উজারিমু
মন্দির হইল আলা॥
সই পাছে এ সব হবে আন।
সে হেল নাগর গুণের সাগর
কাহে না মিলল কান॥
শাশুড়ী ননদে বঞ্চনা করিয়া
আইমু গহনবনে।
বড় সাধু মনে এ রূপ-বৌবনে
মিলিব বঁধুর সনে॥

পথ পানে চাহি কত বা রহিব কত প্রবাধিব মনে। রসশিরোমণি আসিবে এখনি বঁড়ু চণ্ডীদাস তণে॥

26

30

- ু। উজারিছ—উজ্জল করিছ।
- णन-द्याः

কিশলয় শেক করি কেন জাগি রাতি।
মদন হরজন ভাহে সঙ্গ হইল ভাতি॥
চল্রকিরণ ভাহে বৈরী মোর ভেল।
দক্ষিণ-পবন মোর সমূহ ছুঃখ দিল॥
অবহু এখন বঁধু না আইল ইহা।
কেমনে ধরিব প্রাণ এত হুখ সয়া॥
কালরাতি কাল মোর দংশিল শরীরে।
কি আর ঔষধ আছে বল না আমারে ॥
ধরস্তরি কাছে গিয়া সাধিব সব ভত্ত।
ঘূচাব সকল জালা কাল বে ভুজজ ॥
মৃত মণিমজে বেন মৃত হয়ে যায়।
তাহার অধিক যেন হৈল সব কায়॥
চণ্ডীদাস বলে এই সময়ের দোষ।
বিরস না ভাব ভুমি না করিহ রোষ॥

বারের আগে ফুলের বাগ
কি সুখ লাগিয়া কইছু।

মধু খাইতে খাইতে ক্রমর মাডল

বিরহ-জালাতে মৈলু ম

লাতি কইসু वृथि करेश क्रेंश्रेश शक्य मानजी। करनेत्र वास्त নিদ নাহি আসে शुक्रव विश्वेत काछि । কুন্ম ভূলিয়া বোঁটা ভেয়াগিয়া শেজ বিছাইমু কেনে। यहि एहे छाहे कांग्रे कृति शांग्र রসিক সাগর বিলে॥ রতন-মন্দিরে স্থীর সহিত্তে তা দৰে করিত্ব প্রেম। **छोमान करह** কামুর পীরিডি 30 --বেন দরিজের হেম॥

กลิมเหล้า

২। রুইছ - রোপণ করিলাম।

আর কি মিলব মোরে পিয়া গুণনিধি।
কি রাভি মুরাভি হবে অমুক্ল বিধি॥
গগনে আছিল চাঁদ সেহ অভি মনদ।
হিয়া জর জর হৈল খনিল পাঁজরের বন্ধ॥
এখনে না আইল পিয়া কে কৈল আটকে। ৫
নিজ ঘরে রৈল কিবা পড়িয়া বিপাকে॥
শরীরে না রহে প্রাণ বাহিরার এখনে।
গরাণ গেলে কি করিবে পিয়াদরশনে॥
চণ্ডীদাল কহে প্রাণ বাইবেক কেনে।
চিত ভির করি রহু মিলিবে এখনে॥

कारमान ।

- নাহ নিঠুরচিত ভেল কাহার চিত , জঁহি রহল আঞ্চু রাভি। প্রাণ গুনি গুনি খোরাছ রকনী
সহকে অবলা নারীক্ষাতি ॥

চণ্ডীদাস তণে মরম সমানে ৫
না মিলল আর কান।
জীবন যৌবন বুথা অকারণ
কেমুনে ধরিব প্রাণ ॥

১। নাছ—নাথ।
২। উহি—সেই জন্তে।

120

৩। প্রাণ গুনি গুনি,-মনে মনে চিন্তা করিয়া।

कारमान।

সামার বাসনা ना देश्य जायगा আঁ/খের হইল আড। নিরবধি বিধি এমতি করিলে কেমন ব্যাপার ভার॥ সায়র নিকটে চাঁদ মিলিব ৫ यूह्यि मत्नत्र इथ। স্থা যে ক্ষরিবে অঙ্গ জুড়াইবে পাইব পরম সুখ। পাপ নারী করি জনমিলে হয়ি পরের পত্তির আব্দে। ^১ কহে চণ্ডীদাসে না মিলিল শেষে আপন করমদোবে ৷ ১। তোৰণা—ভৃপ্তি। २। अनिष्ण-जन्मश्रमान कतिरम।.

528

নিশি প্রভাত হৈল পিয়া না আইলা ভবনে। হেদে রে মালতীর মালা কেন গাঁথিলাম যতনে॥ অগুরু চন্দন চুয়া দিব কার গায়।
জর জর হৈল তমু নিশি না পোহায়।
কপূর চন্দন চুয়া দিব কার মুখে।
রজনী বঞ্চিব হাম কারে লয়ে সুখে॥
নাহ নিঠুর যদি না আইসে ইছা।
যমুনার জলে সব দিব ভাসাইয়া।
চণ্ডীদাস কহে তবে মিলিব আসিয়া।

२३६

50

সুহিনী।

সে যে ব্যভানু-স্তা।

নরমে পাইয়া ব্যথা॥

সজলনয়ান হৈয়া।

রহে পথ পানে চাইয়া॥

ফুল-শেজ বিছাইয়া।

উলর চাদনী রাতি।

মন্দিরে রতন-বাতি॥

কহে সব ভেল আন।

কাহে না মিলল কান॥

সকল বিফল হৈল।

আধ রজনী গেল॥

শ্যাম বঁধুয়ার পাশ।

চলু বড়ু চণ্ডীদাস॥

136

शानवी ।

ত্ব'কান পাভিয়া ছিল এভকণ বঁধু-পৃথপানৈ চাই।

प्रिश्चा क्या পরভাত নিশি চমকি উঠিল রাই ॥ পাতায় পাতায় পড়িছে শিশির স্থীরে কহিছে ধনী। বাহির হইয়া দেখ লো সজৰি বঁধুর শবদ শুনি॥ পুনঃ কহে রাই না আসিলে বঁধু মরমে রহল ব্যথা 🗠 🗇 কি বৃদ্ধি করিব পাষাণে বাড়িয়া ভাঙ্গিব আপন মাথা। ফুলের এ ডালা ফুলের এ মালা শেक विছाইस कुला। আর কেন সই সব হৈল বাসি 20 ভাসা গে যমুনা-জলে॥ কুম্কুম্ কস্তুরী লাগিছে গরল হেন। তামুল বিরস ফুলহার ফণী मः भिष्ट **रु**मरत्र यन ॥ २० যমুনায় ভার সকল नहेश আর ত না যায় দেখা। ললাটের সিন্দুর মুছি কর দূর नशारनत काकत-(त्रथा॥ আর না রাখিব এ ছার পরাণ 20 না যাব লোকের মাঝে। থির হও রাই **हन् ह्छोमान** णानिए निर्वतनारक।

" পতিতা।

১১৭ চন্দ্রাবলীর উক্তি

कारमाम ।

এই পথে নিতি কর গভায়তি 📉 सूर्दत्रत स्विन अनि। রাধা সঙ্গে বাস আমারে নৈরাশ আমি বঞ্চি একাকিনী॥ वैंधू (इ, ছाড़िয়া नाहिक निव। হিয়ার মাঝারে রাখিব ভোমারে সদাই দেখিতে পাব॥ শুন স্থীগণ করিয়া যতন লয়ে চল নিকেতনে। আজুকার নিশি রাধিকা রূপদী वक्क नागत वित्न ॥ এত্ক শুনিয়া করেতে ধরিয়া লইয়া চলিল বাস। রাধা-ভয়ে হরি কাঁপে থর থরি ভবে দ্বিদ্ধ চণ্ডীদাস। 20

ঞ্জীকৃষ্ণের উক্তি

91

চন্দ্রাবলি, কাজি ছাড়ি দেহ মোরে।
বীদাম ডাকিছে গাব তার কাছে
এই নিবেদন তোরে।
কালি আসি হাম পুরাইব কাম
ইথে নাহি কর রোষ।
চন্দ্রাবলীনাথ ভূবনে বিদিত

> **২১৯** বিহ**া**গড়া।

তুমি সে রাধার কে বলে সামার তাহার হুখের হুখী : করিয়া চাতুরী যাবে বুঝি হরি রাগারে করিতে সুখী॥ বঁধু হে, তুমি ত রাধার নাথ। ৫ তব ভারিভুরি ৺ ভাঙ্গিব মুরারি রাখিব আপন সাথ॥ এতেক বলিয়া করেতে ধরিয়া চুষ্বয়ে বদন-চাঁদে। রসিক নাগর হইয়া ফাঁপর ১০ পড়িল বিষম ফাঁদে ॥ হেপা স্থবদনী সখী সনে বাণী কহয়ে কাতর-ভাষে। নিশি পোহাইল পিয়া না আইল কহে দ্বিদ্ধ চণ্ডীদাসে॥

৬। ভারিভূরি—চাশাকি। •১২। স্থবদনী রাধিকা। ्धान्त्री।

हञ्जावनी मत्न কুত্রম-শর্মন সুখেতে ছিলেন স্থাম। ভূয়ে ভীত হৈয়া প্রভাতে উঠিয়া আসিলা রাধার ঠাম। গলে পীতবাস করিয়া সাহস मांज़िल बाहे अब बारग। দেখে ফুলমালা তামুলের ডালা क्लियाद तारे तारा॥ মানিনী না চান নাগরে না দেখি আছেন স্থাপন কোপে। 50 ভঙ্গিমা দেখিয়া ভয়ে সে ভূরুর নাগর ভরাসে কাঁপে॥ রোষেতে নাগরী থাকিতে না পারি नागरत्रस्त्र भारक् गामि। লম্পটের সনে চণ্ডীদাস বলে कथा किला छवू छानि ।

> ২২১ **ঞ্জারাধার উক্তি** দলিত।

ভাল হৈল আরে বঁধু আসিলা সকালে।
প্রভাতে দেখিলাম মুখ দিন যাবে ভালে॥
বঁধু ডোমারে বলিহারি ফাই।
ফিরিরা দাঁড়াও ডোমার চাঁদ-মুখ চাই॥
আই আই পড়েছে মুখে কাজরের শোড়া। ৫
ভালে সে সিন্দুর ডোমার মুনির মনোলোভা॥
খন্দ নখ দশনে অঙ্গ জর জর।
ভালে সে কহণ-দাগ হিলার উপর॥
নীল পাটের শাটী কোঁচার বলনি।
রমনী-রমণ হৈয়া বিভিন্না রজনী॥

প্রথম বাবক কল বিক্ত আর সাজে।

এখন কর মনের কথা আইলে কোন্ কালে।

চারি দিকে চায় মাগর আঁচরে মূর্ব মূছে।

চণ্ডীদাস করে লাজ ধুইলে না বুচে।

১১। উরে—উ**ক্ত**ে।

ুরামকেলী।

हूँ ७ मा हूँ ७ मा वैध् अवारन शाक। মুকুর লইয়া চাঁদমুখখানি দেখ। বরানে লেগেছে নয়ানের কাজর কালর উপরে কাল। ও মুখ দেখিলাম ৫ প্রভাতে উঠিয়া 🍍 দিন যাবে আৰু ভাল ঃ বয়ানে লেগেছে অধরের তামুল च्राम पूल् पूल् माथि। কিরিয়া দাড়া ও আমা পানে চাও নয়ন ভরিয়া দেখি 🎉 🦈 চিকণ চূড়া চাঁচর কেশের লে কেন বুকের মাঝে। আছে সর্বগায় जिन्मू (इत मांग মোরা হলে মরি লাজে ॥. - वामक राग्रह > नील क्मन . मिन इरहर एक । (शरत स्थामिथ কোন্ রসবভী मिछ्छ गरत्रह रगर् । क्षिन-नग्रात कश्दिक ऋमात्री অধিক করিয়া ভোড়া। আপন স্ভাব करह हुडीशांग,

ছাড়িতে না পারে চোরা।

१ । जनसङ्ख्यान नातिकातः २८ । नामक नाभोक्त जान जनसङ्ख्या १० । रहाकाः सर्वतः।

me legisli . -

२२० विकास ।

বেলে হৈ নিলাক বঁধু লাক নাহি বাস।
বিহানে পরের বাড়ী কোন্ লাজে এস॥
বৃক্ষাঝে দেখি ভোষার কছপের লাগ।
কোন্ কলাবতী আন্ধ পেরেছিল লাগ॥
নথ পল বিরাজিত ক্ষিরে পূরিত।
আহা মরি কিবা শোভা হয়েছে ভূষিত॥
কপোলে সিন্দ্র-রেখা অথরে কাজল।
সে ধনী বিহনে তোমার জাখি ছলছল॥
ভিজ চণ্ডীদাস ক্ষে শুন বিনোদিনি।
না ছুইও, আমি ইহার সব রক্ষ কানি॥
>

৪। ক্লাবতী—কুলবতী, পাঠান্তর।
 १। কপালে সিন্দুররেখা নয়ানে কাজল, পাঠান্তর।
 ১০। আমি—ভূমি, পাঠান্তর।

২২৪ সিক্ডা।

বঁধু, কহ না রসের কথা শুনি।
ক্রেমন কামিনী-সঙ্গে যাপিলা যামিনী রঙ্গে
কৃত সুধে পোহালা রক্তনী ॥
নীল-নলিনী আভা কে নিলে অঙ্গের শোভা
কাল্লবে মলিন অল্পানি।
কিকণ চূড়ার হাঁদ কে নিল বরিহা কাঁদ আজি কেন সিঠে লোলে বেণী ॥
ধক্ত সেবাল্ল-বধ্ নে পিয়ে অধ্যান্যধ্ রক্ত উৎপুল রুলে ।

এছন ফিরুয়ে ছটি আছি॥

রচিয়া শিক্ষুরের বিন্দু কে নিল চুন্দন ইন্দু
নাসা ছলে নাকের মুকুতা।

বিক্ত চণ্ডীদাস কয় এ কথা অক্সথা নয়
ভাল কানে বৃষ্ডায়ন্থতা॥ ১৫

- ७। वित्रश काँम-समुत्रभूकः।
- २। नाषी--नाकी।
- >২। কে নিল চন্দন ইন্দু কে নিল অমিয়া-দিছু পাঠান্তর।

রামকেলী।

এস এস বন্ধ করুণার সিদ্ধ त्रकनी शिक्षात्म ভात्म। বসিকা বুমণী পেয়ে গুণমণি ভাল ভ সংখেতে ছিলে॥ কপালে সিন্দূর न्यारक कांबत ফতবিক্ষত হে হিয়া। পরি নীলাম্বর অ'াখি চর চর হরি এলে হর সাজিয়া॥ ধিক ধিক নারী পর আশাধারী কি বলিব বিধি ভোয়। ধুক্ট লম্পট শঠ এমত কপট হাতেতে স'পিলি মোর॥ কাঁদিয়া যামিনী পোহালাম আমি তুমি ত সুখেতে ছিলে। শইয়া মাধব রভিচিহ্ন সব প্রভাতে দেখাতে এলে॥ এই মিনতি রাখ ঐখানে থাক আঙ্গিনাতে না আইস।

-

Ş۰

ছু'ইলে ভোমারে বিরুদ্ধে আমারে না করিবে পরশী। লোকমুখে কত শুনিভাম বত প্রতীত আজি হ'ল সব। গুডীদাস কর নাগর দ্যাময় এত দ্যার স্থান।

२२

লিকিড।

আবে মোর আবে মোর সোনার বঁধুর।
অধরে কাজর দিল কপালে সিন্দুর॥
বদন-কনলে কিবা ভাত্বল শোভিত।
পায়ের নথের ঘার হিয়া বিদারিত॥
এস না এস না বঁধু আঙ্গিনার কাছে। ৫
ভোমারে ছুইলে মোর ধরম যার পাছে॥
শুনিরা পরের মুখে নহে পরতীত।
এবে সে দেখিলু ভোমার এই সব রীত॥
সাধিলে মনের কাজ কি আর বিচার।
দুরে রছ দুরে রছ প্রণাম আমার॥
১০
চণ্ডীদাস বলে ইং। বলিলে কেমনে।
চোর ধরিলেও এত না কহে বচনে॥

२२१

. 1

गणिए।

আহা আহা বঁধু ভোমার ওকারেছে মুখ। কে সাজালে হেন সাজে হৈরে বাসি হুখ। কপালে কছণ-দাগ আই বির ছিন।
কে করিল হেন কাজ কেনন গোঙারি ।
দার্নিণ নখের ঘা হিয়াতে বিরাজে।
রক্তোৎপল ভাসে বেন নীল-সরঃ মাঝে ।
কেমন পাখাণী যার দেখি হেন রীভি ।
কে কোণা শিখালে ভারে এ হেন পীরিভি ।
ছল ছল আঁথি দেখি সনে ব্যথা পাই ।
কাছে বস আচলেতে মুখানি সুহাই ।
১০
বড় কন্ট পাইরাছ রজনী জাগিয়া।
চণ্ডীদান কহে শোও হিয়ায় আসিয়া।

246

শ্রীকৃষ্ণের উত্তর গাদকেলী।

শুন শুন স্থান আমার যে রীত।
কহিতে প্রতীত নহে জগতে বিচ্ছি ॥
তুমি না মানিবে তাহা আমি ভালে জানি।
এতেক না কহ ধনি অসম্ভব বাণী ॥
সঙ্গত কহিলে ভাল শুনিতে হয় সুধ।
আসঙ্গত কহিলে শুনিতে পাই ছখ ॥
মিছা কথায় কত পাপ জান ভ আপনি।
জানিয়া যে না জানে সৈ অধম পাপিনী ॥
পারে পরিবাদ দিলে ধর্ম সবে কোনে।
তাহার এমন রীত হইবে কেমনে॥
১০
চণ্ডীদাস বলে যদি মিছা বলে থাকে।
সেই সে ঠেকিবে পাপে তোমার কিবা বাবে ॥

-)। जुन्दद्वि जुनद्रमि।
- পাঠান্তর !
- भनेक्छ दरेल भारेत के इव ।
- b। जानिता मा बात्म (व त्यह ७ शालिमी। "

১०। खानाह अमूक्त नाम वहेरन खनाता। श्लोठांचत्र। ১১। ह्वीमान नाम सन्ति मिहा क्यो कृत्त। "

...

জীরাধিকার গ্রত্যুত্তর নামকো।

কালিয়া নাগর ভাল ভাল ভাল श्रमात्म ध्रम-कथा। পরের রম্পী अखारम यथन ধরম আছিল কোথা ॥ চোরের মুখেতে ध्रम-काश्मी শুনিতে পায় যে হাসি। পাপ পুণ্য জ্ঞান ভোমার যভেক कानस्य वतकवानी॥ माश्व छेशदम्भ চলিবার তবে পাথর চাপিয়া পিঠে। বুকেতে মারিয়া চাকুর ঘা ভাহাতে সুনের ছিটে॥ व्यात नी तम्बिव ও কাল মুখ এখানে রহিলে কেনে। যাও চলি যথা মনের মাতৃষ रयथात्म मन रव छोरन ॥ কেন দাভাইয়া পাপিনীর কাছে পাপেতে ডুবিবা পাছে। करह छ्खीमान যাও চলি যথা **धत्रस्यत्र थणी जार्छ ।**

> থান প্রকৃত্বের উক্তি গানন।

মা কর মা কর ধমি এত অপমান। তরুণী হইয়া কেন একে দেখ আন॥ বংশী পরশি-নামি শপথ করিয়ে।
তোমা বিন্ধু দিবানিশি কিছু না জানিয়ে॥
কাগুবিন্দু দেখি সিন্দুরবিন্দু কছ।
কতকে কন্ধণ-দাগ মিছাই ভাবহ॥
এত কহি বিনোদ রায় চলি যায় ঘর।
চণ্ডীদাস কহে রাই কাঁপে থর থর।

২। তুমি ত বয়সে নৰীনা, তবে কেন ভোষার চকুর দোব ঘটিল ? দৃষ্টিভ্রম হইতেছে কেন ?

(0)

थाननी।

লালতা কহয়ে শুন হে হরি।
দেখে শুনে আর রহিতে নারি॥
শুন শুন ওহে রসিকরাজ।
এই কি তোমার উচিত কাজ॥
উচিত কহিতে কাহার ভর।
কিবা সে আপুল কিবা সে পর॥
শিশুকাল হতে স্বভাব চুরি।
সে কি পারে রহিতে ধৈর্যা ধরি॥
এক ঘরে যদি না পোষে ভায়।
ঘরে ঘরে ফিরে পায় কি না পায়॥ ১০
সোনা লোহা ভামা পিতল কি বাছে।
চোরের কি কখন নির্শ্বি আছে॥
এ রস দ্বিজ চণ্ডীদাস কয়।
চোরের কধন মন শুদ্ধ নয়॥

৯-১০। এক স্থানে যদি তাহার আর্কাজকার তৃতি না হয়) পুত্রে কিছু পাউক আর নাই পাউক, নানা হারে বেড়ার। शृतकी।

করক বরণ করিরা মনে।
ভ্রমই মাধব গছনবনে ।
হিমকর হেরি মুরক্ষিপড়ি।
ধূলায় ধূসর যাওত গড়ি ॥
"অপরাধী আমি কোধায় যাব।
রাই স্থামুখী কেমনে পাব॥"
এতেক কহিতে মিললি রাই।
চণ্ডীদাস তব্জীবন পায়॥

১। কনকবরণ—রাধিকা। ৮। তব্—তবে।

মান।

২০০ ভা**টি**য়ারি।

রামা হে কি হুরে বলিব আন। ভোহারি চরণে শরণ সো হরি অবৰ্ত না মিটে মাৰ ॥ গোবর্দ্ধন-গিরি বামকরে ধরি যে কৈল গোকুল পার। বিরহে সে ক্ষীণ করের কঙ্কণ মানয়ে গুরুষা ভার 🛚 কালীয় দমন করল বে জন চরণযুগলবরে। এবে সে.ভুৰঙ্গ ভরমে ভুলল क्षप्र ना धरत हारत ॥ সহজে চাতক না ছাড়য়ে প্রীত ना देवरम नमीत छोदत। নব-জলধর ্বরিশণ বিনে না পিয়ে তাহার নীরে ॥ . 50 বীন্ধ দৈবলোবে অবিক প্রিরাসে
পিবরে হেরিরে থোর।
তবহু তাঁহারি নাম সোঙ্রিরা
গলয়ে শতগুণ লোর ॥
চণ্ডীদাস-বাণী শুন বিনোদিনি
কি মার করহু মান।
তুরা অমুগত শুনম মরকত
তো বিহু ভাবে নাংআন ॥

২০—২০। পাঠান্তর :—
 চণ্ডীদাস তথে . শুন বিনোদিনি
 কি আর বলিব ভোর।
 ভাষ রতন
 কার বলিব ভোর।
 কারতন
 কারতেন
 না ঠেল মানেতে যোর।

२७८

ত্তন লো রাজার ঝি।
লোকে না বলিবে কি॥
মিছাই করসি মান।
তো বিফু জাগল কান॥
আনত সংগ্রুত করি।
তাহা জাগাইলা হরি॥
উলটি করসি মান।
বড়ু চঙীদাস গান॥

২০০ শ্রীরাধিকার **উক্তি** নিভাব।

উহাঁর নাম করে। না নামে মোর নাহি কাজ। উনি করেছেন ধর্ম নক্ট ভূবন ভরি লাকা॥ । नि नार्छेत अन मरे छेनि नार्छेत अक ।মি করেছেন কুলের বাহির নাচাইয়া ভূক ॥ ात हक्त हार्ट पिरन यथम हिन छहात काक। १ াখন উহাঁর অনেক হল আমরা পেলাম লাজ। ार वज्र हछीमान वास्त्रनी जारमरम । াহাঁর সনে লেহ করে তমু হৈল শেষে॥

थाननी ।

(স্থার উক্তি)

তোদের দোঁতের দৈবের ঠাম। নিতি নিতি তোরা কলহ করিবি কত না সাধিব হাম। নিতি নিভি তোদের এমতি করিয়ে কথাতে কথাতে ঘন্দ। সে বলে নাই রসিক নহে **जू विनाम छेश मन्म**॥ সে হেন নাগর গুণের সাগর 🌞 জগৎতুল্ল'ভ লেহা। তু হেন নাগরী প্রেমের আগরি ১০ কেন ৰাড়াইলি লেহা। এমতি করিবি নিতি নিতি ভোরা हैर्स कि भन्नान नम । চণ্ডীদাস কছে অবলা পরাণে এত কি বেদনা সয়।

>। देशस्त्र श्रीय-नाथ कतिशा विद्या कनर। ३०। जानित-ज्ञानी, त्यां।

30

थामने । আসিয়া নাগর

় সমূৰ্ দাড়াল গলে পীতবাস লৈয়া। সে চাঁদ-বদনে ফিরি না চাহলি তু বড় কঠিন মেয়া॥

জগৎ তুলু ভ ৫ সো শ্রাম নাগর কিসের অভাব তার।

কুলবভী সভী তোমা হেন কত দাসী হইয়াছে তার॥

ভার চূড়া মেনে সুখেতে থাকুক তাহে ময়ুরের পাখা।

ভোমা হেন কত কুলবভী সভী छ्यात পाইरिव (मर्था ॥

অভিমানী হৈয়া মোরে না কহিয়া তেজালি আপন সুখে।

যতনে আপনি ১৫ আপনার শেল হানিলি স্পূৰ্ণন বুকে॥

মনের আগুনৈ মরহ পুড়িয়া . निভाইবে ञात्र किरम। আর না মিলিবে শ্রাম জলধর

কহে দ্বিজ চণ্ডীদাসে॥

কলহান্তরিতা।

(রাধিকার উক্তি)

ं शामनी । আপন হাতে কাটিয়ু আপন শির হাম • কাহে করিমু হেন মান। শ্রাম স্কাগর . নটবর্-শেখর কাঁহা স্থি করল প্রান 🛚

তপ বরত কত করি দিল-যামিনী ৫
থো কার্মু কো নাহি পায়।
হেল অমুল্য ধন মরু পদে গড়ায়ল
কোপে মুই ঠেলিফু পায়॥
আরে সই, কি হবে উপায়।
কহিতে বিদরে হিয়া ছাড়িফু সেহেন পিয়া ১০
অতি ছার মানেরই দায়॥
জনম অবধি মোর এ শেল রহিবে বুকে
এ পরাণ কি কাজ রাখিয়া।
কহে বড়ু চণ্ডীদাস কি কল হইবে বল
গোঁড়া কেটে আগে জল দিয়া॥ ১৫

ে। বরত-ত্রত।

.

রাইমুখে শুনল এছন বোল।
স্বীগণ কহে ধনি শুহু উতরোল।
তুয়া মুখ দরশন পাওল সেহ।
কৈছে আছল কছু সমুঝল এছ।
তুঁত কাহে এত উৎকণ্ঠিত ভেল।
ভোহে হেরি সো আকুল ভৈ গেল।
এছে বিচার কহত যাঁহা রাই।
তুরতহি এক সমী মিলল তাই।
এ ধনি পছমিনী কর অবধান।
ভোহারি নিয়ড়ে মুঝে ভেজল কান।
চণ্ডীদাস কহে বিধুমুখী রাই।
অভিশর ব্যাকুল ভেল কানাই।

২। নহ উতরোল—উৎকৃষ্টিত হইও না। ১। 'পছ্মিনী — পদ্মিনী।
১০। নিরভে— নিক্টে। .* वामन

রাইক ঐছন সকরুণ ভাষ।
তানি স্থী আওল কামুক পাল ।
ক্রইতে সকল সংবাদ।
গদ গদ কছই বিধাদ ।
চল চল নাগর রসনিরোমণি।
ভূয়া বিমু রাধিকা অধিক ভাপিনী ।
চণ্ডীদাস করে বিনোদ রায়।
বাট চল রাইক মাঝ হৃদয় ॥

> 8 \$

(শ্রীকৃষ্ণের উক্তি)

হাত দিয়া দেখ বড়াই মোর কলেবর।
ধান দিলে খৈ হর, বিরহ অনল ।

জিতা খণ্ড খণ্ড হল রাধা রাধা বলি।
তাহার বিচ্ছেদে মোর বুক হৈল সজি ।
আমি মৈলে মরিব বড়াই ভার নাহি দার।
রাধা বিনে মোর মনে আন নাহি ভার ।
মরিলে পোড়াইও বড়াই বমুনাত্ম কুলে।
সে ঘাটে আসিবে রাধা জল আনিবারে ॥
মরিবার বেলৈ রাধা লেগ আনিবারে ॥
দরনম জনমে বেন মিলার বিধাতা ॥
বিজ্ঞা চণ্ডীদাসে বলে কাঁথহ জীবন ॥
দরশন দিরে রাধে রাখহ জীবন ॥

- 8। नि—की**ग**।
- »। (ने खिन्नाथ-वन्ने क्लोरेख।

485 (4.

a i

• (সধীর উক্তি)

হেদে হে বঁধুয়া আসিগা আমি।
পথে আন হলে দেখা হ'ল ভালে
কি আর বলিবে ভূমি॥
ভাল না হইবে কাজ।
চন্দ্রাবলী হামে যদি কেহ কহে ৫
শুনিলে পাইবে লাজ॥
সে যে করিবে দারুণ মান।
এ কুল ও কুল ছুকুল যাইবে
পাথারে ভাসিবে শুসম॥
ইথে ভোমার ভাল না হইবে। ১০
চণ্ডীদাস ভণে রাই যদি শুনে
কুঞ্জে উঠিতে না দিবে॥

₹8₹

4 1

জ্বাসি সহচরী কহে থীরি থীরি

"শুনহ নাগর রায়।

অনেক যতনে ঘুচাইলাম মানে

থরিয়া রাইএর পায়॥

তবে যদি আরু মান থাকে তার ৫

শুন্ধবি আপন দোব।

তোমার বদন মলিন দেখিলে

খুচিয়ে এখনি রোব॥

ভ্রিড গমনে এস, আমা সনে

গলেতে থরিয়ে বাস।"

> ০

সোহেন নাগর হইয়া কাতর

• দাড়াইল রাইয়ের পাশ॥

রাই কমজিনী হেরি গুণমণি বঁধুয়া দাইল কোলে। ছহ'ক জনয়ে আনন্দ বাড়িল দিজ চণ্ডীদাস বলে॥

480

थाननी ।

ললিভার বাণী শুনি বিনোদিনী क्षेत्रज्ञवहरून कंग्र। "আমি ড কেবল ভোদের অধীন যা বল শুনিতে হয়॥ সখি, ভোরা মোর কর এই হিছে। আর যেন কখন না করে এমন পুছ উহায় ভাল মতে ॥ পুন যদি আর এমভ ব্যাভার করয়ে এ ব্রহ্মভূমে। উহার প্রণতি শ্রবণগোচরে ना कतिर/ध जनस्य॥" এত শুনি হরি গলে বাস ধরি কহমে কাডর-বাণী। "শুন বিনোদিনি जनरम जनरम আমি আছি প্রেমে ঋণী ॥" এত শুনি গোরী ছু বাছ পসারি বঁধুয়া করিল কোলে। এই মনে হয় রসাম্ভময় **ह**शीमारम देश वरम ॥

\$88

গানৰ। জিছি মানের লাগি শুসাম বঁধুরে হারাইয়ী ছিলাম।

adult.

'ग्रामन चुनरत শিশুর সুরতি পরশে শীন্তল হৈলাম ৷ **শ্রিমধুমক্তে** আন কুতৃহলে जुआं अमन मिर्ध। হারা-ধন যেন পুৰহি মিলল मनग्र श्**रे**ल विधि ॥ নিজ স্থারসে পাপিনী পরশে ना कारन शियात चुथ। 50 কহে চণ্ডীদাসে এ বাগি আমার मरमरक छेर्रर प्रथ ॥

अवह । कि कि माक्रव মানের লাগিয়া বঁধুরে হারায়ে ছিলাম। শ্রামস্থলর রূপ মনোহর দেখিয়ে পরাণ পেলাম॥ नहे, खुड़ारेन त्यात हिया। 🔪 শীতল প্রন শ্রাম অক্সের তাহার পরশ পাইয়া॥ তোরা সখীগণ করহ সিনান व्यानिया यमूना-नीरत । আমার বঁধুর যভ অমক্লল সকল যাউক দূরে॥ শ্ৰীমধুমঙ্গলে আনহ সকলে ভুঞ্জাহ পায়স দধি। বঁধুর কল্যাণে प्तर नाना मारन जामादत मनत्र विधि॥ 30 কহে চণ্ডীদাস শুনহ নাগর 🚬 🛚 এমন উচিত নয়। না দেখিলে যুগ শতেক মানয়ে . ইথে কি প্রাণ রয়॥

রাইয়ের বচন শুনি স্থীগণ ञानन वजूना-वाति। সিনান করিল নাগর স্থন্দর উলসিত ভেল গোরী॥ ললিভা আসিয়া হাসিয়া হাসিয়া পরাইল পীতবাস-। পরিয়া বসন হর্ষিত মন বসিলা রাইক পাশ ॥ वारे वित्नापिनी ভেরছ চাহনি হানল বঁধুর চিতে। >0 নাগর স্থব্দর প্রেমে গর গর অঙ্গ চাহে পরশিতে॥ মনে আছে ভয় মানের সঞ্য সাহস নাহিক হয়। . অতি সে লা**লসে** না পায় সাহসে विव ठछीनात्म क्या।

> अर्थमृत्के मान। भग

(একুফের উক্তি)

कांद्याम ।

হেরয়ে রসিকবর রাইক চরিত।
কি হেতু দেখিরে মান অভি অনুচিত।
ভোমা বিনে নাহি জানি মরমকি বাত।
কেন বা মলিন মুখ অব্বনত মথি।
অপনক বাত নাহি কর পরতীত।
নয়নে দেখিলে কর বে হয় উচিত।
কোন রমণী দেখ রহল ছাপাই।
চণ্ডীদাস কহে বধুর কোন দোৰ নাই।

50

30

481

নাপিতিনী-বেশে মিলন।

না ভাঙ্গিল মান দেখি চতুর নাগর। বিশাখারে ডাকি কহে বচন উত্তর ॥ শুনহ আমার কথা বিশাখা সুন্দরি। আমারে সাজায়ে দেহ নবীন এক নারী। চূড়া ধড়া ভেয়াগিয়া কাঁচলি পরিল। নাপিতিনী-বেশ ধরি নাগর দাঁড়াইল। क्षत्र त्रार्थ श्रीकार्य विन कतिन शमन। রাইএর মন্দিরে আসি দিল দরশন। कि नागित्य धृनाय शर् वितानिनी बाहै। এস এস তুয়া পদে বাবক পরাই।। চরণমুকুরে শ্রাম নিজ মুখ দেখে। যাবকের ধারে ধারে নিজ নাম লেখে॥ সচকিতে হয়ে ধনী চরণ পানে চায়। আচন্দিতে শ্রাম-অঙ্গের গন্ধ কেন পায়॥ ইক্সিতে কহিলা তখন বিশাখা স্থন্দরী। নাপিতানী নহে তোমার নাগর বংশীধারী॥ বার্ছ পসারিয়া নাগর রাই নিল কোলে। आंत्र ना कतिय मान छ्छीमान वरन ॥

धानंत्री

নাপিডিনী-করে ধন্ধি রাই চক্রমুখী।
কেমন নাপিডিনী তুমি হের এক দেখি।
কাজের বসন ধরি পাড়িরা কেলে দ্রে।
রমনীর বেশ গেও রাসক গোচরে।
পড়িল করিছে কুচ জম গেও রুরে।
সখীগুল চমকিত হেরিয়ে নাগরে।

কি ছার মার্নের দাঁগি রমণী সাজিল।

এত বলি ফুল্মরী বামে শাড়াইল।

মানজনিত তুখ দুরে পরিছরি।

চণ্ডীদাস বলে দোঁহার প্রেমের বলিহারি।

মান সমাধা।

আক্ষেপারুরাগ।

নায়ক-সম্বোধনে।

74.

शामनी ।

ভাদরে দেখিতু নটচাঁদে। সেই হৈতে উঠে মোর কারু পরিবাদে॥ এতেক যুবভীগণ আছয়ে গোকুলে। কলভ কেবল লেখা মোর সে কপালে। স্বামী ছায়াতে মারে বারি। তার আগে কুকথা কয় দারুণ শাশুড়ী॥ ननिमनी रमधर्य रहार्थत वालि। স্থাম নাগর তোমায় পাড়ে গালি। এ ছুখে পांकन रेशन कान। ভাবিয়া দেখিয়ু এবে মরণ সে ভাল। चिक हशीमात्र भूनः क्या। পরের বচনে কি আপন পর হয়॥)। निर्देशक --- निर्देशक । काज बारा नहें इस (मित्राहिनाम, ठाँटै जामात्र এই कनक स्हेत्राहि। তার আবে—স্বামীর সন্থা।

442

সিছত। ।

দ্রশন পীরিভি কৈলা আনি চাঁদ হাতে দিলা আপনি করিভা মোর বেশ। আধির আড় নাহি কর হিয়ার উপরে ধর এবে ভোমা দেখিডে সন্দেশ॥

একে হাম পরাধীনী कार्ट कुनकामिनी क चत्र देराज जाकिना विराम। এত পরমাদ প্রাণ তবু ত না জানি আন আর কড কহিব বিশেব। ननशे विद्यम कांठा বিষমাখা দেয় খোঁটা তাহে তুমি এত নিদারুণ। विक छ्लीमान क्य কিবা তুমি কর ভয় বন্ধ ভোর নহে অকরণ।

8। गरमथ--गरमद। ৯-১২। পাঠাত্তর---नममी विरवत्र कांठा বিৰ্মাণা তার গোঁটা জীবন হেতু তোষার পীরিতি। विक हशीनांग क्य **এ**वन कि.चात्र इग्र এই ছিল ভাগেতে উচিতি।

প্টমঞ্জয়।

তোমার প্রেমে বন্দী হৈলাম শুন বিনোদ রায়। ভোমা বিনে মোর চিতে কিছুই না ভার॥ শর্মে স্থপনে আমি তোমার রূপ দেখি। ভরমে ভোষার রূপ ধরণীতে লেখি # श्वक्रकनमार्य यपि थाकिरत्र विज्ञा। भवनक नाम **अ**नि पत्रवदन्न हिन्ना ॥ शुन्तरक शृतरम् जन जीर्थ जरत जन। ভাছা নিবারিডে স্থামি হইয়ে বিক্স ॥ ি নিশি দিনি ভোষায় বঁধু পাসরিতে নারি। ্চতীদাস কৰে বিয়া রাখ ছির করি।

- 8। छत्रान-खरन।
- ७। भन्नमान-धाननकारमः चत्रवरह-जन रत्र।
- १। छत्-चात्र-शृशिवङ्ग।

পীরিভি করিলা यथम नागत्र ञ्रू (भन्न ना हिन अन्। ভাসাইরা কালা সোতের সেওলা কাটিলা প্রেমের ডোর॥ মুই ত অবলা অধলা হাদর ৫ छान मन्त्र नाहि जानि। বিরুক্তে বসিয়া চিত্রেভে লিখির৷ विभाषा प्रशासन जानि । কোথা ভার স্থিভি পীরিতি মূরতি विवत्र कर मारत। পীরিভি বলিয়া এ তিন আখর এত প্রমাদ করে ॥ এ জিন আঁখর পীরিভি বলিয়া **जुरान जानिता (क**। অমৃত বলিয়া গরল ভখিমু ১৫ विरयुष्ड कार्तिन रम ॥ नमीत्र छेशस्त्र ় ভাহার উপরে ঢেউ। ভাহার উপরে রসিকের বসভি পীরিতি না জানে কেউ॥ क्ट अक रम চণ্ডীদাস কয় তবে সে পীরিতি রর। (নতু) খলের পীরিতি ভূ'বের অনল भिकि थिकि रवन वज्र ॥

७-६। छूनि भाषात्र (अयंक्टर वावित्रा दावित्रा-हिरम, राहे थ्या-क्षम असम हिन्न कविरम। देनवास रामन লোতের বেণে জুন্হাম্ব অবস্থার চালিত হয়, জাসাকেও ভেমন সংসারস্রোতে অসহায় অবস্থায় নিক্ষেণ করিলে। >७। (व-(वेंद्)

1 100

प्रदे ।

কি মোহিনী জান বঁধু কি মোহিনী জান।

অবলার প্রাণ নিজে নাহি ভোমা হেন ॥
রাতি কৈছু দিবস, দিবস কৈছু রাতি।

বৃঝিতে নারিতু বঁধু ভোমার পীরিতি ॥

ঘর কৈছু বাহির, বাহির কৈছু ঘর।

পর কৈছু জাপনু, আগন কৈছু গর॥

কোন বিধি সিরজিল সোতের সেওলি।

এমন ব্যঞ্জি নাই ডাকে রাধা বলি॥

বঁধু যদি ছুমি মোরে নিদারুণ হও।

মরিব ভোমার আগে দাঁড়াইয়া রও॥

১০

বাশুলী আাদেশে বিজ চণ্ডীদাস কয়।

পরের লাগিয়া কি আপন পর হয়॥

৮। এমত ব্যঞ্জি নাই ডাকি বলু বলি—পাঠাত্তর।

১১-১২। চণ্ডীদাস বলে এই বাশুলীরুপায়।

এমন পীরিতি জানি না দেধি কোলায়॥

**

२१६ कृष् পাঠান্তর।

ভোমারে ব্ঝাই বঁধু ভোমারে ব্ঝাই।
ভাকিরা স্থার মোরে হেন জন নাই।
অকুক্ষণ গৃহে মোরে গঞ্জরে সকলে।
নিচর জানিমু মুই ভবিব গরলে।
এ হার পরাণে মোর কিবা আছে স্থ। ৫
মোর আগে দাঁড়াও ভোমার দেখি চাঁদমুখ।
খাইতে সোরান্তি নাই নাই টুটে ভুক।
কে মোর ব্যথিত আছে কারে কর হুখ।
চণ্ডীদাস কহে রাই ইছা না জুরার।
পরের বোলে কেবা প্রার্থ।
১০
৪। নিচর—নিভর।

प्रश्रे ।

আরে মোর বিনোদ রার ।
ভাল হৈল খুচাইলে পীরিডের দায় ॥
ভাবিডে গণিতে মোর তমু হৈল কীণ।
ভাগং ভরি কলম্ব রহিল চিরদিন ।
ভামা সনে পীরিভি করি কিবা কাজ কৈয় । ৫
মমু লাজে মিছা কাজে দগদগি হৈমু ॥
না জানি অন্তরে মোর কি হৈল ব্যথা।
একে মরি মনোছখে আরে নানা কথা ॥
শয়নে অপনে বঁধু সদা করি ভয় ।
কাহার অধীন যেন ভোর প্রেম নয় ॥
১০
খারে না মরিয়ে বঁধু মরি মিছা দায় ।
চিণ্ডীদাস কহে কার কথায় কিবা যায় ॥

₹41 • **3** |

সকলি আমার मांच (इ वक् সকলি আমার দোষ। ना कानिया यपि করেছি পীরিডি কাহারে করিব রোব ॥ স্থার সমুজ সম্মুখে দেখিয়া আইমু আপন সুখে। কে জানে খাইলে গরল হইবে পাইৰ এতেক ছুখে ৷ সো বদি জানিভাম অলপ ইজিতে जरव कि धमम कति। ৰাতি কুল শীল মজিল সকল वृतियां वृतिया मति॥ অনেক আশার দেখিতে করয়ে স**ম**।

33.

প্রথম পারিতি [®]উাধার নাহিক ১৫ বিভাগের আধের আধা। যাহার লাগির। যে জন মরয়ে সেই যদি করে আনে। চণ্ডীদাস করে এমনি পীরিতি করয়ে স্কুজন সনে। ২০

১৩ – ১৬। বেশী আশা করি না। কেবল একবার দেখিতে ইচ্ছা হয়। প্রথমে যেরপ প্রেম দেখাইয়াছিলে, তাহার সিকিও এখন নাই।

4.0

কামোন।

वंधु, कहिरल वामिरव मरन इस। যতেক রমণী ধনী বৈঠয়ে জগত মাঝে ना कानि (नश्रा जुरा पूथ। লোক মুখে জানিয়ু লখি আগে না দেখিতু আমারে কুমভি-দিল বিধি। না বুঝিয়া ক্রে কাজ তার মুণ্ডে পড়ে বাজ তুখ রহে জনম অবধি॥ কেন হেন বেশ ধর পরের পরাণ হর खौराध खग्न नाहि कत्र। গগন ইন্দু আনিয়া করে কর দর্শাইয়া ১০ এবে কেন এমতি আচর॥ পীরিভি পরশে যার 💹 হিয়া নাহি দর্বয়ে সে কেন পীরিতি করে সাধ। · विक क्शीवार्त्त क्य মোর মনে হেন লয় ভাঙ্গিলে গড়িতে পরমাদ ॥ >। शांशंखत--वंधू ना कहिला कतित्व मत्न वृथ। त्न कामि (क्षंत्र पूत्र) मूर्व ।

ह । निष्—नक्ष कतिया, विद्युष्टमा कतिया।

ভাটিয়ারী

তুমি ত নাগর যেমন ভ্রমর রীত। সামি ত ছু:খিনী কুলকলন্ধিনী হইমু করিয়া প্রীত॥ গঞ্জয়ে আমারে ভোমারে কহিব কত। বিষম বেদন কহিলে কি যায় পরাণ সহিছে যত॥ পীরিতি বঁধু হে অনেক সাধের कि कानि विष्ठकृप इयः 5 " विरम्हत इंटेरन পরাণে মরিব এমতি সে মনে লয়॥ **ठ**ओमां करह পীরিতি বিষ্ম শুন বড়ুয়ার বছ। ় পীরিতি বি**চ্ছেদে** হইলে মরণ এমতি না হউ কেছ। ১৫-১৬। পীরিতি বিশদ र्वश्रव विश्रम এমতি না হও কেত। -- পাঠান্তর।

আক্ষেপানুরাগ।

मधी-मदश्वांधरन।

তৃতি। তৃতি।

কানড় কুন্থম যিনি কালিয়া বরণখানি
তিলেক নয়ানে বদি লাগে।

হাড়ায় সকল কাল ডেজি কুলভয় লাল

মরিব কালিয়া অনুরাগে॥

সই, আমার বচন যদি রাখ।

ফিরিয়া নয়ান-কোণে না চাহিও ছার পানে
কালিয়া বরণ যার দেখ।

পীরিতি আরতি মনে যে করে কালিয়া সনে কখন ভাহার নহে ভাল। কালিয়া ভূষণ কাল। মনেতে গাঁথিয়া মালা১০ জাগিয়া জপিয়া প্রাণ গেল। নিশি দিশি অমুখণ প্রাণ করে উচাটন বিরহ-আনলে জ্বলে তমু। ছাড়িলে ছাড়ন নয় পরিণামে কিবা হয় কি মোহিনী জানে কালা কামু॥ দারুণ মুরলীস্বর না মানে আপন পর মরমে ভেদিয়া যার থাকে। विक ठखीमारम क्य তমু মন তার নয় যোগিনী হইবে সেই পাকে॥)-৪ - ছাড়িয়া সকল কাজ জাতি কুণ শীল লাজ মরিবে কালিয়া অমুরাগে॥ - পাঠান্তর। >। জপিয়া জপিয়া প্রাণ গেল---

সজনি লোসই। খানিক দাঁড়াও শ্রামের বাঁশীর কথা কই।। খ্যামের বাঁশীটি হু'পুরে ডাকাতি সরবস হরি নিল। হিয়া দগদগি পরাণ পাগলী কেন বা এমতি কৈল। এমতি বেভার না বুঝি ভাহার পীরিতি তাহার সনে। গোপত করিরা ু কেন না রাখিলে বেকত করিলে কেনে॥ 50 দোষ পরিহরি মো হয় ভাকর দাসী। চণ্ডীদাস ভগে সম্বরহ মনে ় * কালার সরবস বাঁশী॥

e->8। धरे केर्र हैतरनत भतिवर्स्स (कार्न/कार পন্তকে এইরূপ আছে;--

থাইতে গুইতে আন নাহি চিতে विधित कतिन वानी। শব পরিহরি করিল বাউরী মানয়ে যেমন দাসী। কুলের করম देशत्रक धत्रभ পরম মরম কাঁদি। চণ্ডীদাস ভণে এই সে কারণে কামুর সরবস বাদী॥ ১২। মোহয়—আমি হই। তাকর—তাহার।

सुरहे।

বিষম বাঁশীর কথা কহনে না যায়। ডাক দিয়া কুলবতী বাহির করয়॥ কেশে ধরি লৈয়া যায় শ্যামের নিকটে। পিয়াসে হরিণ যেন পুড়য়ে সঙ্কটে॥ शास्त प्रवे, अश्वि यस्य वाँगीत निभान । গৃহ-কাজ ভুলি প্রাণ করে আনচান॥ সতী ভূলে নিজ পতি মুনি ভূলে মৌন। শুনি পুলকিত হয় তরু-লতাগণ॥ কি হবে অবলা জাতি সহজে সরলা। কহে দণ্ডীদাস সব নাটের গুরু কালা॥

६। निर्मान--- निःश्वन-- मक्

शाननी ।

कुरलत रेवति করিল সকল নাশে। মদন কিরাভি ধরিতে আইল দেশে। 1 cke

🗀 ्राष्ट्रे, जीवन मन 🔭 ग्रा वाँ 🖣 । পীরিতি আটা नमली कैंछि। ু আনলা হইল বাঁশী। বৃন্দাবনমাঝে বেড়ায় সেব্ৰে ধরিতে যুবতী জনা। ষমুনার কুলে গাছের তলে ১০ বিসিয়া করিল থানা॥ থাকি লুকাইয়া এক পাশ হৈয়া प्राथं (य विमन भाषी। भीति भीति यांग्र ভার পানে চায় আনলা চালায় দেখি॥ 30 গাছের ডালে বসিয়া ভাগে তাক করে এক দিঠে। জড়ান্স আটা . লাগায় কাঁটা লাগিল পাখীর পিঠে॥ পড়িয়া ভূমেতে ধড়ফড়াইতে ২০ কিরাতে ধরিল পাথে। পাখে পাখা দিয়া 'বাঁধিল টানিয়া ঝুলিতে ভরিয়া রাখে। চণ্ডীদাস কয় মহাজন হয় কিনিয়া লয় যে পাখী। 20 পাখা খুলি দেয় পাখা সে ধোয়ায় তবে সে এড়ান দেখি॥

গ। আনলা—নল। ব্যাধেরা নলের অপ্তো হচী বা
 আঠা রাধিয়া তদ্বারা পক্ষী ধরিয়া থাকে।
 ১>। থানা—আজ্ঞা।

>१। তাক-ज़का।

২৬৪ তুদ্ধি।

আকুল হইয়া বাহির হইবে না চাবে কুলের পানে॥ কি রঙ্গ লীলা মিলায় শিলা ৫ क्षितिल त्म स्वित कारन। যমুনা পবন স্থগিত গমন ভূবন মোহিত গানে॥ ञानन छेपग्र শুধু সুধাময় ভেদিয়া অন্তরে টানে। জীয়ে কি অবলা মরমে জালা शनरत्र महन वारन ॥ ेकन नित्रभूग কুলবতী কুল নিষেধ নাহিক মানে। চণ্ডীদাস ভবে রাখিও মরমে ১৫ कि भाहिनो काना खात ॥

১-৪। পাঠান্তর ,—
্যুরলীর স্বরে বাধির কি করে

গোকুল আকুল প্রাণে

কালিয়া নাগরে কাল নদী খুঁাহে

বিষ মিশাইলা তানে ॥

৫। মিলায় শিলা--পাষাণ দ্রব হয়।

১১। মরবে—ররে রয়ে—পাঠান্তর।

२७१ थाननी ।

কালার লাগিয়া হাম হব বনবাসী।
কালা নিলে জাতি-কুল প্রাণ নিলে বাঁশী॥
ভরল বাঁশের বাঁশী নামে বেড়া জাল।
সংসারের স্থলক বাঁশী রাধার হৈল কাল॥
মন মোর আর নাহি লাগে গৃহকাজে।
বিনি দিশি কাঁদি আমি হাসি লোকলাজে॥
হাঁ রে সখি, কি দারুণ বাঁশী।
বাচিয়া বৌবন দিয়া হলু ভামের দাসী॥

অন্তরে সরল বাঁশী বাহিরে প্রবল।

পিবরে অধর-স্থা উগারে গরল।

থে ঝাড়ের ভরল বাঁশী তার লাগি পাও।

ডালে মূলে উপাড়িয়া সাগরে ভাসাও।

চণ্ডীদাস বলে বাঁশী আমার কি করে।

আপন করম-দোষ দোব দিব কারে।

সংসাধের—সুবার— পাঠান্তর।
 সংসাধের—সুবার— ,,
 সংসাধের অসার বাঁশী বাছিরে সরল— ,,
 সংসাধের অসার বাঁশীর ঘর সে না দেশে যাও ,,
 সংসাধির ভালাস কারে বংশী কি করিবে।
 সংসালের মূল কালা তারে না পারিবে॥— ,,

266

সান্ধাইল বিষম্বরে বাঁশীর নিঃস্বান কাণে এ অঙ্গ জ্বিয়া গেল মোর। কেবা করে প্রাণ দান (महरा वा काने छन ্তবে যায় এ ছখের ওর॥ • সই, হিয়া মোর কেন কাঁপে। নয়ানে ঝরুরে নীর পরাণ না রহে স্থির এই বাঁশীর মধুর আলাপে॥ চকিত হইল শশী মিলাইছে শিলারাজি মোর কাছে নাচিছে আসিয়া। তাতে তার আছে মন ১০ নারীর যৌবন ধন তেঁই পুরে হাসিয়া হাসিয়া। करह विक हखीमारम শবদ বায় আকাশে মুনীন্দ্র মুরছি পড়ে যাতে। সে ধ্বনি নারীর কাণে ङ्गनरम् यत्रमञ्चारन क्यात एम धतिरक हिए ॥

)। नाषाहेन-धाराम कतिन। । निहाल-निहम करत। eta 🕯 i

কালা গরলের স্থালা আর কি সহে অবলা
তাহে মুই কুলের বোহারি।
অন্তরে মরমবাণা কাহারে কহিব কথা
শুপতে গুমরি মরি মরি ॥
সথি হে, বংশী দংশিল মোর কাণে। ৫
ডাকিয়া চেতন হরে পরাণ না রহে ধড়ে
তন্ত্র মন্ত্র কিছুই না মানে।
মুরলী সরল হয়ে বাঁকার মুখেতে রয়ে
শিখিয়াছে বাঁকার স্বভাব।
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসে কয় সঙ্গাদোহে কি না হয় ১০
রাভ্মুথে শশী মসী লাভ॥

পাঠান্তর---

>। আর ।ক সহে অবলা আর তাহে অবল। পাঠান্তর—

৩। কাহারে কহিব কথা না ওনে ধরম-কণা

346

মরি মরি যাঁই শ্রামের বাঁশীয়া নাগরে।
কুল ছাড়া বাঁশীটি কলঙ্ক হৈল মোরে ॥
নিতি নিতি ডাকে বাঁশী রইতে নারি ঘরে।
মরম সন্ধান দিয়ে হৃদয় বিদরে॥
যদি বা বাজাবে বাঁশী না হও ত্রিভঙ্গ।
কুলবতীর কুলবছ না করিহ ভঙ্গ॥
শাশুড়ী কুরের ধার ননদিনী জালা।
মরমে মরমের ব্যথা নাহি জানে কালা॥
কালা কালা বলিয়া আসয়ে জগঃ জনে।
চরণে শরণ নিল না বাসিল ভিনে॥
বিকে ত অবলা জাভি পরের অধীন।

নিরমক কুল ছিক তাহে দিয় কালি। হাতে হাতে মাথে নিমু কলঙ্কের ডালি॥ ، 8 څ

বিজ চণ্ডীদাস বলে শুন রীজার ঝি। ১৫
বাঁলীয়া দংশিল ভোমায় আমি করিব কি॥

> । না বাসিল ভিনে—ভিন্ন মনে করিল না।

260

সই, পশিল বিষম বাঁশী। বাহির করিতে যতন করিমু মরমে রহিল পশি॥ তেরছ নয়ানে বাণের সন্ধানে ना वाटक अमनि नग्न। বাজিলে অস্তরে আকুল করয়ে যতনে পরাণ রয়॥ नारि पिया निभि যেমন করিছে এ কথা কহিব কায়। ष्विण्ड विश्वन ১० মনের আগুন কে না পরতীত যায়॥ স্বাধ্য়া পুকুরে य भोन थाकरय वां भरत्र शैवत्र कारण। তেন আছি হাম এ ঘর করণে গুৰু জনা যত বলে॥ কুরের উপরে রাধার বস্তি নড়িতে কটিয়ে দেহ। আমার হুখের আচার বিচার এ কথা বুঝিবে কেহ। বণিক জনার করাত যেমন ২০ ञ्चिक काण्या यात्र। তেমন আমার গুরু জনা কার্টে বিব্দ চণ্ডীদাস কয়॥

১৪। ভেন-ভেমন।

२ । विषक क्रमात्र-भागविषकत ।

সিছ্ডা। ডাকিয়া শুধাও না প্রাণ আন চান বাসি। কেবা নাহি করে প্রেম আমি হৈলাম দোষী। কে বা কি না করে গোকুল নগরে তারে নাই নিষেধ বাধা। সতী কুলবতী সে সব সুবজী ৫ काञ्-कनिक्ती वाथा॥ বাহিরে বেড়াতে লোকচরচাতে বিষ মিশাইল ঘরে। পীরিতি পীরিতি করি क्र १९ देश देवित আপনা বলিব কারে॥ ১০ ভোমরা পরাণের মরম ব্যথিত জীবন-মর**ণে সঙ্গ**। অনেক দোষ দোষী হইলে সে কি ছাড়ে আপন অল। গোকুল কানাই :৫ भरन्यत नन्यन সবাই আপনা বলে। 🕡 সোপুন ইছিয়া লইল নিছিয়া শানন্দ জনম ফলে। রাধা বলি ডাকি শুধাইতে নাই **এখনে এমনে মৈলে**। २० চণ্ডীদাসে বলে সকল পাইবে বঁধুয়া আপন হৈলে॥ >। তোমরা মোরে ভাকিয়া শুধাও না প্রাণ আন-চান বাসি। - পাঠান্তর। ৪। তাহে কি নিধেৰ বাধা---৭। বাহির হইতে লোকচরচায়— শীরিতি করিরা লগতের বৈরি— >>। মরম ব্যথিত ব্যথিত আছিলা— ১৩-১৪। অনেক দোবের দোবিণী হইলে ণে ছাড়ে স্বাপন স্বন্ধ।

১>। রাধা বলি আর ডাকি না ভবাও 💃

415

निष्णा।

দেখিলে কলন্ধীর মুখ কলক হইবে।

এ জনার মুখ আর দেখিতে না হবে॥

কিরি ছরে যাও নিজ ধরম লইরা।

দেশে দেশে ভরমিব বোগিনী হইরা॥

কাল-মাণিকের মালা গাঁথি নিজ গলে।

কান্ম-গুণ-যশ কাণে পরিব কুগুলে॥

কান্ম-অনুরাগ রালা বসন পরিব।

কান্ম কলল-ছাই অলেতে লেপিব॥

চণ্ডীদাস কহে কেন হইলা উদাস।

মরণের সাখী যেই সে কি ছাড়ে পাশ॥

১০। ক্ল-প্রেম যে মরিলেও ছাডিবেনা।

* 52

তুড়ি।

আগুনি, সালিয়া মরিব পুড়িয়া কত নিবারিব মন। আপনি মরিব গরল জ্বখিব নতুবা লউক শমন॥ महे. जानर जानन हिछा। সীমস্তিনী আনিয়া কেশ বাঁধিয়া जिन्दूत (पर (य मीं था। তমু তেয়াগিয়া সতী যে হইব माधिव मरनत युष् । আসিবে সংহতি ১০ মরিলে সে পতি আমারে সেবিবে কত। তখনি জানিবে বিরহ-বেদন পরের লাগরে বত। তাপ সে জানয়ে তাপিত হইলে

10

, ভাগ হয় যে কভ।

নিনা বে কেন্দ্রে না জানে তেওঁনে
দরদের দরদী সন্ধ।
পর দরদের দরদানিবে
সেই সে স্থলন হয় ॥
আপনি মরে কি করে পরে ২০
সোদর নহে বা কেনে।
কাহার কারণ কে সাহে মরণ
চণ্ডীদাস বলো মেনে ॥

গরল ভিৎিয়া মো পুনি মরি :—পাঠান্তর।
 গীমন্তিনী লইয়া কেশ সাজাইয়া - "
 দা সভী—সিদ্ধ "
 মরিলে পতি থাকিব সংহতি— "
 ১৬-১৯। বিরহ-বেদন না জানে আপন দরদের দরদী নয়।
 চঙীলাস শুণে পর দরদের
দরদী হইলে হয়॥-- পাঠান্তর।

410

पत्रम-- (वमना।

সিম্বড়া।

সই, কেমনে জীব গো আর।
বুকে খেয়েছি খামের লেল
পিঠে হৈল পার॥
মরু মসু মসু গো সধি
কালিয়া বাঁশীর গানে। ৫
ফুলন দেখিয়া গীরিভি করিছ
এমতি হবে কে জানে॥
কলল গোকুল হইল আকুল
শুনিয়া বাঁশীর কথা।
খলের সহিতে পীরিভি করিয়া ১০
কি হ'ল আকুরে ব্যথা॥

शित्र हेराज नात्रि প্রাণের স্থি গো বুকে খেলেছি খা। আঁখির জলেভে. পথ নাহি দেখি मूर्य ना वाहितात्र ता ॥ পীরিভি রতন পীরিভি যতন পীরিতি গলার হার। ভাষ বঁধুয়ার निमाक्रण याँभी পরাণ বধিলে আমার॥ পীরিতি এমন ২০ কে জানে কেমন পীরিতি কৈল সব নাশ। গঞ্জে গুরুজন সেহ স্থখমন करह मीन छ्छीमात्र॥ ২ । সেহ সুধ্মন—তাহাতেও মনে সুধ হর, রুক-क्षेत्रक इम्र विनिमा।

शानकी ।

अखनि, ना कह ७ भव कथा। কালিয়া পীরিতি যার মরমে লাগিয়াছে জনম অবধি তার ব্যথা। কালিন্দীর জল নয়ানে না ছেরি বয়ানে না হেরি কালা। আন নাহি জানি क्रिक्त ब्रक्तनी কালা হৈল জপমালা॥ বোগিনী হইব ব্ধুর লাগিয়া কুণ্ডল পরিব কাণে। विशाय श्रेय 🎶 সবার আগে যাইব গ্ৰন-বলে ॥ গুরু পরিজন वरण क्वान না বাব লোকের পাড়া।

চণ্ডীদাস কছে আডি-কুল সব ছাড়া। ১-৩। পাঠান্তরঃ---नके, ना कह ७ नव कथा। কালার পীরিভি যাহার লাগিল बनय रहेए राथा ॥ ৬। তথাপি সে কালা অন্তরে আগরে--পাঠান্তর। ১:-১১। শুকু গরবিত করিব বিদিত কালা পরিবাদ জানে->२। श्रक्र-चरत्र। >१। त्रय-भीन। ক্ষ-প্রেম করিতে হইলে জাতি কুলশীল সব বিসর্জন দিতে **হইবে। "সর্বধর্মানু পরিতাজ্য মামেকং** শরণং বৰ ।"

> प्रदेश प्रदेश

কাল জল ঢালিতে কালিয়া পড়ে মনে।
নিরবধি দেখি কালা শয়নে অপনে॥
কাল কেশ এলাইয়া বেশ নাহি করি।
করে কর জুড়িয়া কাজল নাহি পরি॥
আলো সই, মুই শুনিমু নিদান।
বিনাদ বঁধুয়া বিনে না রহে পরাণ॥
মনের মরম-কথা মনে সে রহিল।
ফুটিয়া সে শুাম-শেল বাহির না ভেল॥
চণ্ডীদাস কহে রপ শেলের সমান।
নাহি বাহিরায় শেল দগ্ধে পরাণ॥
১০
৪। কাল জন্ম আমি মুরনে না পরি।—পাঠান্তর।

416

সই, আর বে কহিব কত।
আপনা থাইমু হাড়িতে নারিমু
হইতে নারিমু রঙ ॥

50

ঝাপ বে দিয়া জলেতে পশিল্লা यम्माय थाकिव मति। গোঠেতে যাইতে ধেকু চরাইডে त्मधात्म क्षिथित इति ॥ এখনি তখনি বচন ছুখানি পরিমাণ কিছু নয়। কহিতে কহিছে সোনা যে বরিখে त्रांक्तित कुलना नग्न ॥ ধাকড় চতুর চোর বে টীট সব বে মিছাই কয়। তাহার অধিক ষিগুণ চাতুরী টীট ঢক্তেতে কয়॥ এমভি নাগর গুণের সাগর এমতি বচন তার। এমতি বচনে করিয়া প্রমাণে কেবা কোথা হৈল পার॥ চণ্ডীদাসে কয় त्कांशी (यदा इय সেই ত এতেক কয়। আপনা বুঝি মনেতে সম্বরি মনের মনেতে রয়।

> 211 कृष्टि ।

পাশরিতে চাহি ভারে পাশরা না যায় গো। না দেখি ভাহার রূপ মনে কেন টানে গো॥ পথে চলি বাই यদি চাহি লোকপানে গো। তার কথায় না রয় মন তারে কেন টানে গো॥ খাইতে যদি বসি ভবে খাইতে না পারি গো। ় কেশ পালে চাহিলে নয়ান কেন ঝোরে গো॥ বসন পরিয়া থাকি চাহি বসনপানে গো। সমূখে ভাহার রূপ সদা মনে ঝাপে গো॥

ं ना जानि कि হৈল মোর কোথা আমি যাব গ্রে/। না জানি তাহার সঙ্গ কোথা গেলে পাব গো॥ ১০ চণ্ডীদাস কহে মনে নিবারিয়া প্লাক গো ৷ সে জনা ভোমার চিতে সদা লাগি আছে গো॥

> २। होत--भए .. পাঠাৰর।

৯। খরে মোর সাধ নাই—ইত্যাদি

বরাডি।

কানড় কুস্থম করে পরশ না করি ডরে এ বড়ি মরমে বড় ব্যথা। যেখানে সেখানে যাই সকল লোকের ঠাই · কাণাকাণি শুনি এই কথা II मरे, लाक वर्ण काना-পরিবাদ। কালার ভরমে হাম জলদে না হেরি গো ত্যকিয়াছি কাকরের সাধ। যমূনা-সিনানে যাই আঁখি তুলি নাহি চাই তরুয়া কদ**শ্বতলা পানে**। (यथारन रमथारन थांकि वाँनीर्षि श्वनिया राग ১० ष्ट्रि शंख **मिया थाकि** कारन ॥ **छि। मात्र देश करह** नमारे अस्तर दरह পাশরিকে না যায় পাশরা। ৰূপিতে ৰূপিতে হরি তমু মন করে চুরি ना हिनि (य काना किया शांता॥ । তাহার রসত্রযে জলদ স্তামের সনে—পাঠান্তর। ১৪। দেখিতে দেখিতে হরে 🔐

212

स्रहे।

नहें, मान भात अबे खत्र छेर्छ। খ্যাম বঁধুর পীরিভিখানি ভিলে পাছে ছুটে॥ গড়ন ভালিতে সই আছে কত জুন।
ভালিলে গড়িতে পারে সে বড় স্থলন।
এমন বঁধুরে মোর যে জন ভালাবে।
অবলা রাধার বধ তাহারে লাগিবে।
চণ্ডীদাস বলে রাধে ভাবিছ জনেক।
ভোমার পীরিতি বিনে না জীবে তিলেক।

च्रहे।

এই ভয় উঠে মনে এই ভয় উঠে।
না জানি কাম্ব প্রেম তিলে জনি ছুটে॥
গড়ন ভালিতে সই আছে কত খল।
ভালিয়া গড়িতে পারে সে বড় বিরল॥
যথা তথা বাই আমি যত দ্র পাই।
ঠাদ-মুখের মধুর হাসে তিলেক জুড়াই॥
সে হেন বঁধুরে মোর বে জন ভালার।
হাম নারী অবলার বধ লাগে তায়॥
চণ্ডীদাস কহে রাই ভাবিছ অনেক।
ভোমার পীরিতি বিনে সে জীয়ে তিলেক॥ ১০

...

=1

কামু পরিবাদ মনে ছিল সাধ

সকল করিল বিধি।

কুজন বচনে ছাড়িব কেমনে

সে ছেন শুণের নিধি॥

বঁধুর পীরিতি শেলের ঘা ""৫

পহিলে সহিল বুকে।

দেখিতে দেখিতে ব্যথাটি বাড়ল

এ তুখ কঁহির কাকে॥

করে নিরম্ভর হিয়া পর পর যারে না দেখিলে মরি ৷ কি শেল সাধাইল হিয়ার ভিতরে वन नां कि वृद्धि कति॥ অন্য ব্যথা নয় বোধে শোধে যায় हियात मासादत शूरा। কুল ভেয়াগিয়া ১৫ কুলবভী হৈয়া किमान तरतर **गे**शा ॥ আমরা অধল राल्य गत्र কথায় ভুলিয়া গেন্তু। পীরিভি করিয়া পরের কথায় क्रनम काँ मिया मन्त्र ॥ সকল ফুলে ভ্রমরা বুলে কি তার আপন পর। চণ্ডীদাস করে কান্তুর পীরিতি কেবল ছুথের ঘর॥ >७। (वार्ष भार्य यात्र त्वार्य स्नार्य दन्न --- পাঠান্তর। ১৫-১৬। কোন কুলবতী

> २५२ धाननी ।

কেমনে রয়েছে ভরা। পাঠান্তর।

কাহারে কহিব মনের মরম
কোবা যাবে পরতীত।
কামুর পীরিতি ঝুরি দিবা রাতি
সদাই চমকে চিড॥
সই, ছাড়িতে নারি যে কালা।
কুল জেয়াগিয়া ধরম ছাড়িয়া
লইব কলছের ডালা॥
মাথায় করিয়া দেশে দেশে ফিরে
মাগিয়া খাইব তবে।

কুলের বিচার ১০ সভী চরচার ভবে সে আমার বাবে॥ চণ্ডাদাস কয় কলঙ্কে কি ভয় যে জন পীরিতি করে। মরমে ঝুরিয়া পীরিতি লাগিয়া কি তার আপন পরে। কাহারে কহিব >। निभ (त्र, मरमत्र (त्रम्मा - পাঠান্তর । ৫-৭। কুল তেয়াগিল ভরম ছারিলু महेकू कनास्त्र छाना। (व क्न (वृ वन আমারে বল ছাড়িতে নারিব কালা।-পাঠান্তর। ৮। त डांगि याथात्र कति ति स्तर्भ मित —পাঠাস্তর।

> २४० धान**न** ।

আগো সই, কে জানে এমন রীত। শ্রাম বঁধুর সনে পীরিভি করিয়া কৈবা যাবে পরভীত॥ খাইতে পীরিতি **শুইতে পীরি**তি পীরিতি স্বপনে দেখি। আকুল হইয়া পীরিতি লহরে পরাণ পীরিতি সাখী॥ পীরিতি অ'াখর জ্ঞপি নিরস্তর এক পণ তার মূল। শ্রাম বঁধুর সনে পীরিতি করিয়া ১০ নিছিদ দিলাম কুল। চণ্ডীদাস কয় অসীম পীরিতি কহিতে কহিব কত। আদর করিয়া যতেক রাখিয়ে পীৰিতি পাইবা তত। >4 . ২৮৪ ভুড়ি।

আমার মনের কথা শুন লো সজনি।

শ্যাম বঁধু পড়ে মনে দিবস রজনী ॥

, কিবা গুণে কিবা রূপে মোর মন বাঁধে।

শুখেতে না সরে বাণী ছটি আঁথি কাঁদে॥

চিতের অনল কড চিতে নিবারিব।

না যায় কঠিন প্রাণ কারে কি বলিব॥

চণ্ডাদাস বলে প্রেম কুটিলতা রাত।

কুলধর্ম লোকলজ্জা নাহি মানে চিত॥

১৮**६** शानमो ।

জাতি জীবন ধন কালা। ভোমরা আমারে (य तन (भ तन কালিয়া গলার মালা॥ সই, ছাড়িতে নারিব ভারে। সে প্ৰেম জড়িত অন্তর সহিত কে তারে ছাড়িতে পারে॥ (य मिन (यथारन সেই সব লীলা करतन कालिया काणू। হৈয়া রহিন্দু সঙ্গের সঙ্গিনী শুনিভাম মৃত্ব বেণু॥ >॰ এত রূপে নহে হিয়া পরভীত যাইতাম কদন্ত্রের তলা। এত প্রাণে সতে • চণ্ডীদাস কহে বিষম বিষের জালা। । সই ছাড়িতে যদি বল ভারে। পাঠাস্তর। .

१ । (यकिन दिशास य तर भी त्रिष्ठ

লীলা করয়ে কামু॥ -- পাঠান্তর।

নি**ছভা**।

वर्ण वलुक (भारत भन्न **आरह यछ कन**। ় ছাড়িতে নারিব <mark>আমি খ্রাম চিকণ ধন</mark>॥ সে রূপ-লাবণি মোর হিয়ার লাগি আছে। হিয়া হৈতে পাঁজর কাটি লইয়া যায় পাছে॥ স্থি. এই ভয় মনে বড বাসি। a অচেডন নাতি থাকি জাগি দিবা নিশি॥ अन्त वाहरन निंग यनि प्रति वास्थ। শয়न করিয়া থাকি ভুক দিয়া কাঁথে॥ এমন পিয়ারে মোর ছাডিতে লোকে বলে। ভোমরা বলিবে যদি খাইব গরলে। কামু রূপের নিছনি নিছিয়া দিমু কুলে। এভ দিনে বিহি মোরে হৈল অমুকৃলে। পুরুক মনের সাধ ধরম যাউক দুরে। কামু কামু করি প্রাণ দিবানিশি ঝুরে॥ চণ্ডীদাস বলে রাই এমতি চাহ বটে। 50 স্বঘরের পীরিতি হৈলে কভু নাহি টুটে॥

৪। হিয়া হৈতে পাঁজর ধনিয়া যায় পাছে।—পাঠায়য়
१-৮। অলস আইসে নিদ যদি আইসে ইথে।
শয়ন করিয়া থাকি ভুজ দিয়া মাথে য়—পাঠায়য়
১৫-১৬। চণ্ডীদাস করে রাই ভাল ভাবিয়াছ।
মনের মরম-কথা কারে জানি পুছ॥ পাঠায়য়
শ্বরের পুজনের।

২৮৭ দাস পাডিয়া।

ভার সনে মোর দেখা নাই মিছা কথা রটে গো। দেখা হইলে কইত বদি ভার বেলে সইত গো। মিছা কথা কইরে পরের মন ভারি করে গো। হয় কি না হয় মনে আপনা বুঝি দেখ গো॥ পর কুচ্ছার ধরম মেনে কেমন করে সয় গো। চণ্ডীদাস কয় লোকে মিছে কথা কয় গো॥ ১০

৬। একে নাড়ী কুলের বৈত্তী দেখিতে খোরে নারে গো।।
- শঠিকের।

তুড়ি।

স্থুজন কুজন य कन ना कात्न ভাহারে বলিব কি। বে জন জানয়ে পরাণ কাটিয়া দি॥ সই, কহিতে বাসি যে ভর। সব ভেয়াগিত্ যাহার লাগিয়া সে কেনে বাসয়ে পর ॥ ° কামুর পীরিভি বলিতে বলিতে পাঁজর ফাটিয়া উঠে। শঙ্খ-বণিকের করাত বেমন আসিতে যাইতে কাটে ॥ সোনার গাগরী যেন বিখ ভরি তুহ্ধতে ভরিয়া মুখ। বিচার করিয়া যে জন না খায় পরিণামে পায় ছখ ॥ 50 শুনহ সুন্দরি **ठ**खीमारम कन्न এ कथा वृक्षित शाहि। খ্যাম বঁধু সনে পীরিভি করিয়া কেবা কোথা ভাল আছে। >१। পাছে-পদ্চাতে, ইহার পরে। •

শিল্পড়া।

পিয়ার পীরিতি লাগি যোগিনী হইমু। তবু ত দারুণ চিতে সোয়াস্তি না পামু॥ कि रेशन कलझ-त्रव शक्ति यथा ७था। কেন বা পীরিতি কৈমু খামু আপন মাথা॥ না বল না বল সই সে কামুর গুণ। হাতের কালি গালৈ দিল মাথে কালি চ্ব॥ আর না করিব পাপ-পীরিতের লেহা। পোড়া কড়ি সমান করিমু নিজ দেহা॥ বিধিরে কি দিব দোষ করম আপনা। সুজনে করিমু প্রেম হইল কুজনা॥ 50 চণ্ডীদালে কৰে তুমি না কর ভাবনা। স্থজনে স্থলন মিলে কুজনে কুজনা॥ शास्त्र कानि भारत पिनाम माधिनाम हुन।-- भाठाखत

তুড়ি।

এক জালা ঘরে হৈল আর জালা কাতু। জালাতে জ্বলিল দে সারা হইল তমু॥ কোথাকারে যাব সই কি হবে উপায়। গর**ল সমান লাগে বচন হিয়া**য়॥ কাহারে কহিব আমি কে জানে প্রভীত। মরণ অধিক ভেল কাতুর পীরিত। জারিলেক তমু মন কি করে ঔষধে। জগৎ ভরিল এই কাুমু-পরিবাদে॥ লোকমাঝে ঠাই নাই অপবশ দেশে। वाक्रमी-वारमस्य करह विक हशीमारम ॥ >। এক আলা গুরুজন ইত্যাদি-পাঠান্তর। २। (म-ज्यान।

1640

সিকুড়া।

এ দেশে বসভি নাই যাব কোন্ দেশে। যার লাগি প্রাণ কাঁদে তারে পাব ।কদে॥ ¹ বল না উপায় সই বল না উপায়। कनम रहेए जूथ तहन हियाय ॥ **ভিতা किल (पर भात नम्मी-वहरन।** কড বা সহিব জালা এ পাপ-পরাণে॥ বিষ খাইলে দেহ যাইবে রব রহিবে দেশে। নাশুলী-আদেশে কংহ কবি চণ্ডীদাসে॥

শিক্ষুড়া।

সই, এ কি সহে পরাণে। কি বোল বলিয়া গেল ননদিনী শুনিলে আপন কাণে॥ এত কথা কৰে পরের কথায় 🕨 ইহাতে কহিব কি। ভুবন ভরিল কামু-পরিবাদে বুথায় জীবনে জী। কামুরে পাইত এ সৰ কহিত তবে বা সে বোলে ভাল। মিছা পরিবাদে বাদিনী হটয়া জর জর প্রাণ হৈল। কে আছে বুঝায়ে স্থামেরে কহিয়ে এ ছুখে করিবে পার। रेश्या धति तह **ह**णीमांग कर কে কিবা করিবে কার॥

৮। •বদি কামুকে আমি পাইতাম, তবে এ কণা বলিলে অন্তার হইত না।

৮-১৩। পাঠাত্র---

(वीवन मंशिरन পর পুরুষে আশা না পুরয়ে ভায়। বিছুরিলে বৃতি আপন রতন দ্বিগুণ সু**খ** সে পায়। সই, বিধি করিল এমত রীভি। কুলবভী হইয়া পতি ভেয়াগিয়া পরপতি সনে প্রীতি॥ এবে সে জানিল প্ৰিলে স্থিল इक्न जात्रिन जरन। পীরিতি করাভিয়া শিরে চড়াইয়া कूल इंडे कांत्र रेकरल ॥ ए पिरक जानिन উড়ু ডুবু দিতে কিনারা নহিল দেখি। চোরে চুরি করে মহাজনের ঘরে পড়শী দেয় মাসিয়া সাখী॥ 30 ভ**লাদ** করিয়া বেড়ায় ফিরিয়া ध्रानत ना शाय (लग) মনেতে বুঝিয়ে মরমে ঝুরিয়ে তাহারি কপালে দোষ॥ এমন ডাকাতি বঁধুব পীরিতি इति निम भात मन। আপন পর বিছুরল স্ব ত্য জিল গৃহ গুরুজন। বাশুলী-কুপায় চণ্ডীদাস হিয়ায় দোসর থোবিক জনা। • সকলি পাইবে কুলে সে রহিবে 🥫 🔑 व्यक्तिकत्न नक्तनक्ता॥

ে-৪। ত্রী যদি আপন স্বামীকৈ ছুলিয়া বার, তবে

কি ভাহার সুধ হয় ?

- এবে সে জানিল इक्न शांतिन करन । পীরিতি করিতে चानित्व वहारे इरे कून कांक रान ॥ হু দিকে ভাসিতে উঠু ডুবু করিতে किमात्रा हरेन (मिथ । শেশিকু ভাবিয়া ১৮-১৯। মনেতে বুঝিরা ভাহা র কপাল-দোৰ। পাঠান্তর। আপন পর যে দূৰিল সৰ-পাঠান্তর। ২৪-২৭। রাখ চিহ্ন পায় চণ্ডীদাস-হিন্নার त्नात्रत्र (शांविकक क्ना। সকলি পাইবে কুশলে রহিবে व्यात्रिरव नम्य-नम्पना॥ शाठास्तरः।

সিদ্ধুড়া।

আমার ,বঁধুরে গোকুল নগরে সবাই আপনা বাসে। হাম অভাগিনী আপন বলিলে माक्रम लाक्टि शास्त्र॥ नरे, कि कानि कि देश भारत। আপনা বলিয়া পুকুল চাহিয়া না দেখি দোসর পরে। কুলের ক্লামিনী হাম একাকিনী নহিল দোসর জনা। तिक मागत , अक समा देवति এ বড় মুরখপণা।। ৰিখিয় বিধান এসন করণ वृत्तियु कत्रमासा । আগেতে বুৰিয়া না কৈল স্থাৰিয়া करक विक क्खीमारम ॥

20

০-১১। বুলিরা নাগরী श्रक्रममा देववि ্এ বড়ি মূরখ জনা॥ –পাঠান্তর। >2->e.। . दिशित विशाम वृत्तिक कत्रमरमारव न्यात्त्र शास्त्र द्वि ना देकरण मधि करह विक छ्डीमारम ॥ - भाशिखत ।

গাৰার।

পীরিভি লাগিয়া আমি সব ভেয়াগিমু। তবু ভ শ্রামের সনে গোঙাতে নারিমু॥ विधित्त कि पिर पाय आशन कत्रम। কি ক্ষণে করিত্ব প্রেম না জানি মরম। ঘরে ঘরে চাতরে কুলটা হল খ্যাতি। কামু সনে প্রেম করি না পোহাল রাভি। চল চল আলো সই ওঝার বাড়ী যাই। কালকুট বিষ আনি হাতে তুলি খাই ॥ পীরিতে মরিতে লাগি যেবা করে আশ। পীরিতি লাগিয়া মরে বিজ চণ্ডীদাস।

- া চাভরে—বাহিরে –পাঠান্তর।
- १। जाला महे-जात पिथ याहे--वाख
- b | 418-418-
- ১। মরিভে-মরতে--

প্টম্ল্ররী।

নিখাস ছাজিতে না দেয় খরের গৃহিণী। वाहित्य वाजारम कांद्र शास्त्र नविमनी ॥

শুন শুন প্রাণপ্রিয় সই i তুমি সে আমার হও তেঁই তোমায় কই। বিনি ছলে ছার দেশে সদাই ধরে চুরি: হেন মনে করে জলে প্রবেশিয়া মরি॥ সতী সাধে দাঁড়াই যাদ স্থাগণ সঙ্গে। পুলকে পুরয়ে তমু শ্রাম-পরসঙ্গে॥ পুলক ঢাকিতে নানা করি পরকার। নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার॥ পোড়া লোকে না জানে পীরিতি বলে কারে। ज्ञिम यिक तन महे ममाधिया घटत ॥ চণ্ডীদাস বলে গুন আমার যুক্তি। অধিক যাতনা যার দ্বিগুণ পীরিতি॥

- ছরি ছলি পাঠান্তর।
- ২। পরকার প্রকার।
- >२। তুমি यमि वन नमाधान (मह चात -- नाठा खत ।
- ১৪। অণিক জীল। যার তার অধিক পীরিতি---পাঠান্তর।

নিকুড়া।

ভাহারে বুঝাই সই পেলে ভার লাগি। ननमी वहरन रयन वृत्क छेर्छ आणि॥ কাহারে না কহি কথা রহি ছখে ভাসি। ননদী বিগুণ বাদী এ পোড়া পড়শী॥ কাহারে কহিব ত্রখ যাব আমি কোথা। কার সনে কহিব কালা কামু-রসের কথা ॥ যত দুর যার মন তত দুরে যাব। 🏲 শীরিভি পরাণভাগী কোথা গেলে পাব॥ ভাহারে কহিব তথ বিনয় করিয়া। চণ্ডীদাস কৰে তবে জুড়াইবে হিয়া॥

महे, कि बात जीवत गांध। ত্কুল ভরিয়া কুল ও কুল বাড়াইলা পরমাদ। भाराष्ट्री ननही गद्ध पिवातां डि ভাহা বা সহিব কভ। हेकिए जाकारन পাড়ার পড়শী কুবচন বলে যত। এত কিনা সয় অবলা-পরাণে শুন গো পরাণ-সই। যতেক যাতনা মনের বেদনা আপন বলিয়া কই॥ কুলের ধরম এ ঘর করণ ভরম সরম গেল। कनिक्रमी विन জগৎ ভরিল निम्हरा मत्र (खन ॥ 30

শুন শুন রাধা

গুরু তুরুজনা

424

১০। তরম শন্তম, মান। ১৮। ত্রুজনা—ত্র্জন। ১৯। বাটে—পথে।

কি করিতে পারে

छोनाम वरन

.

সে শ্রাম ভোমার বটে।

কামু সে রয়েছে বাটে॥

কান্থ সে জীবন জাতি প্রাণ ধন এ ছটি আখির তারা। পরাণ-অধিক হিয়ার পুড়ালি নিমিধে নিমিধে হারা॥

ভোরা কুলবভী তম নিজপতি যার মনে যেবা লয়। ভাবিয়া দেখিলাম শ্চাম বঁধু বিদে আর কেছ মোর নয়॥ কি আর বুকাও थ्यम क्यम মন সভস্তর নয়। 30 কুলবজী হৈয়া পীরিভি আরভি আর কার জানি হয়। লিখন আছিল যে মোর করমে विशि घछायम भारत। ভোমরা কুলবভী দেখিদে কুমভি 50 কুল লইয়া থাক ঘরে॥ গুরু চুরজন वर्ण क्वहन সে মোর চন্দন চুয়া। শ্রাম অনুরাগে এ তমু বেচিমু তিল তুলসী দিয়া॥ Ş٥ পড়শী হুৰ্জন বলে কুবচন না যাব সে লোকপাড়া।" কানুর পীরিতি চণ্ডীদাস কয় ভাতি কুল শীল ছাড়া।

৩। পাঠান্তর—
হিরার মাঝারে পরাণপুভলি
১৩-১৬। পাঠান্তর—
বে মোর করম কপালে আছিল।
* বিধি মিলাওল তার।
ভেলার কুলবতী ভক্ত নিক পতি
ধাক বরে কুল লই॥

২১ ২৪। পাঠান্তর—

শুক হুকুজন বলে কুবচন

না বাব সে লোকপাড়া।

জানদাস কর কাছুর পীরিতি

জাতি কুল শীল ছাড়া।

জাতি কুল শীল ছাড়া—ফুকের সলে প্রের কবিলে

জাতি কুল শীল সব ত্যাগ কদ্বিতে হইবে।

शाननी ।

কে আছে বুৰিয়া বলিবে স্থাঝিয়া আমার পিয়ার পাশে। গোপত পারিতি না করে বেকতি শুনিয়া লোকেতে হাসে॥ গোপত বলিয়া কেন বা বলিলে এমত করিলে কেনে। এমত ব্যাভার না বুঝি ভাহার পীরিভি যাহার সনে॥ সই, এমতি কেনে বা হল। পরের নারী মন যে হরি निम्ह्य ছाष्ट्रिया (शन ॥ আমি অভাগিনী मियम तकनी সোঙরি সোঙরি মরি। কুলের কলঙ্ক **रहेन সাল**% ্, তবু যে না পানু হরি॥ 36 পুরুষ পরশ হইল জুরুস বিছুরি আপন মতি। জনম অবধি না পাই সোয়ান্তি कां बिया मित (य निष्ठि॥ চণ্ডীদাসে কয় স্থল যে হয় এমতি না করে সে। ভাহার পীরিভি পাষাণে লেখতি मृहिरमध नाहि चूरह ॥

>8। जानक--वनकार्ते।

> । ৰভি--ৰাভি ----পাঠান্তর।

২২। পাৰাণে লেখতি--পাৰাণে ধেয়াতি--পাঠান্তর।

शामनी ।

সই, কেমনে ধরিব হিয়া। আমার বঁধুয়া সান বাড়ী যায়। আমার আঙ্গিনা দিয়া ॥ সে বঁধু কালিয়া না চায় ফিরিয়া এমতি করিল কে। আমার অন্তর रयभन कतिए তেমতি হউক সে॥ যাহার লাগিয়া সব ভেয়াগিত্ব লোক অপষশ কয়। সেই গুণনিধি ছাড়িয়া পীরিতি ১০ আর জানি কার হয়॥ আপনা আপনি মন বুঝাইতে পরতীত নাহি হয়। পরের পরাণ ভরণ করিলে কাহার পরাণে সয়॥ 26 ষুবতী হইয়া শ্রাম ভাকাইয়া । এমতি করিল কে। আমার পরাণ যেমতি করিছে সেমতি হউক সে॥ करह हजीमान করহ বিখাস যে শুনি উত্তম মুখে। কেবা কোথা ভাল আছয়ে সুন্দরি **षिया शत्रमदन कूर्य ॥**

> ०•२ नाकात।

কহিতে তা সনে কথা।
বেশ দূর করিব কেশ খুচাইব
ভালিব, আপন মাথা॥

ু সই, কেমনে ধরিব হিয়া। বঁধুয়া আমার এমত সাধের (मिथित्म ना हाग्न कितिया। সে হেন কালিয়া যা বিনেক হিয়া এমতি করিল কে। क्षपि भीपि আমার ধেমতি ভেমতি পুড়ুক সে। কহে চণ্ডীদাস কেন কর ত্রাস সে ধন ভোমারি বটে। তার মূখে ছাই **पिया (म काना** ह আসিবে ভোমা নিকটে। 36

> । সাঁদতি—্সংস্কৃত) কট্ট পাওয়া। আমার মনে
 বেরূপ কট্ট হইতেছে, সেইরূপ সে পুড়ক।

शाननी ।

गरे, जाशास्त्र विश्व कि। এমতি করিয়া শপথি করিলে त्थाय कीवन की ॥ थत्रम शर्प ভয় না মানে এমন ডাকাতি সেহ। বুঝিলাম মনে ডাকাভিয়া সনে यू िन छान (य (प्रह ॥ বিনি যে পর্যথ রূপ যে দরখি ভূলিকু পরের বোলে। পারিতি করিয়া কলত্ব হইল फुरियू अगार्थ करन ॥ গুরুর গঞ্জন সহি সদাত্ৰ ना जानि किरंत्रत बर्ण। অমিয়া হইয়া এমতি বুবিলাম লেখে। 24 আগে যদি জানিত্ সভর্কে থাকিত্

এমত না করিত্ মনে।

সে হেন শীরিতি হবে বিপরীতি

কে জানে এমন মনে॥

চণ্ডীদাস কহে ধৈর্যা ধরি রহ ২০
কাহারে না কহ কথা।

কথা যে কহিবে যথা লেম যাইবে

মনেতে পাইবে ধ্যথা॥

দ পর্রথি—পরীকা করিয়া—দর্রথি—দেখিয়া।

২২। সহি সদাতন—সহিদ অমন—পাঠান্তর।

সদাতন —সর্বলাই।

২০। না জানিত্ব সেই রসে—পাঠান্তর।

রথায় হইবে

वृथारे मत्भन वाथा--- भाठासन ।

eta**a** i

२२-२७। कथा (य कहिर्द

পীরিভি পসার (मिथिएय क्रग्रं मा যভেক নাগরী কুলের কুমারী কলম্বী আমারে কর। मि, कानि कि श्रेट स्थात। সে প্রাম নাগর গুণের সাগর কেমনে বাসিব পর ॥ সে গুণ সোঙারিতে, যাহা করে চিতে তাহা বা বলিব কড। গুরুজনা কুলে ডুবাইরা মৃলে ভাহাতে হইব রভ। थाकिल त्य (मत्म क्रिए मा शाबि क्या।

34

30

ব্যাধান কোৰে এক দেৱ শোকে ব্যাধান ব্যাধান বাওলীর পাল একন বদি হর মনোরীত।
বার সনে হয় পীরিতি করয় কহিলে লে হয় পারতীত।

.

সই, সরম কহিয়ে তোকে। পীরিভি বলিয়া এ ভিন আঁখর क्षु ना जानित मूर्थ ॥ পীৰিতি-মৃহজি কভু না হেরিব **এ इ**ष्टि नशान-कारन। পীরিভি বলিয়া নাম ওনাইতে मुनिया त्रश्वि कार्ण ॥ শীরিভি নগরে বসতি ত্যবিয়া পাকিব গহনবনে। পীরিভি বলিয়া এ তিন আঁখর दिन ना श्रेष्ट्र मदन । শীরিভি-পাবৰ পরশ করিয়া **পুড়িছি এ निमि पिरा।** नीतिकि विस्कृत সহনে না যায় करर हखीमान किया।

ষ্ট্রীত-পুরতি কড়ু দা হেরিব এ ছটি সমাদ-কোপে।

শীরিডি বলিয়া माम समाहेरक . मुणिया बहिव कार्य ॥ मिं, बाब कि वनिव खादत । পীরিতি বলিয়া 🕝 এ তিন অ'াখর এত ছখ দিল गोति॥ পীরিতি আরডি क्षू ना कतिव भंद्रत अशत गता। পীরিভি নগরের বসতি ত্যজিয়া त्रहिव शहनवरन ॥ পীরিতি পবন পরশ লাগিয়া ভেজিব নিকুঞ্বাস। পীরিতি বেয়াধি ছাড়িলে না ছাড়ে **ভাবে बा**न ठ**ी**मान ॥ 34

ও সই, আর বলিং যোরে।

পীরিতি বলিয়া দাকণ আঁথব

বলিতে নয়ান ঝুরে য়—পাঠায়র।
 ৮। কছু না আরিব ... "

>২। শীরিতি অবশ পরাণ লাপিয়া..."

4.1

শুন সহচরি না কর চাত্রী
সহজে দেহ উত্তর।

কি জাতি মুরতি কামুর শীরিতি
কোথার তাহার ঘর ॥

চলে কি বাহনে টিকে কোন্ হানে
সৈক্ষণণ কেবা সঙ্গে।
কোন্ জন্তর ধরে পারাপার করে
কেমনে প্রবেশে জঙ্গে।
পাইরা সন্ধান
না লব ভাহার বা।

20

নরনে প্রবণে বচনে ভাজিব ' সোঙরি ভাছার পা॥ সধী কছে সার দেখি নিরাকার স্বরূপ কছিবে কে।

জন্তুরাগ-ছুরি বৈসে মনোপরি জাতির বাহির সে॥

মন তার বাহন রক্ষক মদন ভাবগণ তার সঙ্গী। স্থান পাইলে না দেয় ছাড়িয়ে শীরিতি অস্তুত রঙ্গী॥

কহে চণ্ডীদাসে বাশুণী-আদেশে
ছাড়িতে কি কর আশ।
গীরিতি-নগরে বসতি করেছ

পরেছ পীরিতি-বাস॥

वाननी ।

শুন শুন সই কহি তোরে।

শীরিতি করিয়া কি হৈল মোরে॥

শীরিতি-পাবক কে জানে এত।

সদাই পুড়িছে সহিব কত॥

শীরিতি হুরস্ত কে জানে ভাল।
ভাবিতে পাজর হইল কাল॥
ভাবিতে পাজর হইল কাল॥
ভাবিতে বহে নরানে নীর।

নিলাজ পরাণে না বাঁধে থির॥
দোসর ধাতা শীরিতি হইল।

সেই বিধি মোরে এতেক কৈল॥
চণ্ডীদাস কহে সে ভাল বিধি।

এই জমুরাগে সকল সিধি॥

ग्रेम्बरी ।

कि वृत्क शांकन वाथा। म (मर्म वहित स स्मर्म मा अब পাপ গারিভির কথা ॥ সই, কে বলে পীরিভি ভাল। হাসিতে হাসিতে পীরিভি করিয়া कैंपिए जनम शान ॥ कुनवजी देशस कुरन मांडाहरम যে ধনী পীরিভি করে। তুষের অনল বেন সাজাইয়া এমতি পুড়িয়া মরে॥ হাম অভাগিনী এ ছখে ছখিনী (धारम छन छन वांथि। **ठ**खीमांग कट বেমতি হইল পরাণ সংশব দেখি ॥

সিমুড়া।

এ দেশে না রব সই দ্রদেশে যাব।
এ পাপ পীরিভের কথা শুনিতে না পাব।
না দেখিব নয়নে পীরিভি করে বে।
এমভি বিবম চিভা স্থালি দিবে সে।
পীরিভি অ'থের ভিন না দেখি নয়ানে।
যে করে ভাহারে স্থার না দেখি বয়ানে।
গীরিভি বিবম দারে ঠেকিয়াছি আমি।
চণ্ডীদাস কহে রামি ইহার শুক্ত ভূমি।

৮। বিশ চতীয়ান কৰে ইয়ার ওর ছবি...পাঠান্তর।

æ

20

_

মুখের লাগিরা এ ঘর বাঁধিসু আগুনে পুড়িয়া গেল। অমিয়া-সাগরে সিনান করিভে नकिन गत्रन (छन ॥ স্থি, কি মোর কপালে লেখি। শীতল বলিয়া ও চাঁদ সেবিম ভাতুর কিরণ দেখি॥ উচল বলিয়া অচলে চড়িমু পড়িত্ব অগাধ জলে। লছমি চাহিতে দারিজ্য বেডল मानिक बातास ट्राल ॥ নগর বসালেম সাগর বাঁধিলাম মাণিক পাবার আমে : সাগর শুকাল মাণিক লুকাল ব্রভাগীর করম-দোবে॥ পিয়াস, লাগিয়া জলদ সেবিসু বজর পড়িয়া গেল। কছে চণ্ডীদাস শ্রামের পীরিভি मत्राम त्रम (नन !

নিচল ছাড়িরা উচলে উঠিতে...পাঠান্তর।

>>। (>) পিরাণ লাগিরা জলদ দেবিত্ব

শাইত্ব কর-তাপে।

জানখান করে পীরিতি করিরা

পাছে কর অসূতাপে।

(২) জানখান করে কাছর শীরিতি

वत्रव व्यक्ति त्वेत... शांठावत् ।

कि देश मन्तर পীরিভি হইল কাল। অস্তুর বাহিরে . পশিয়া রহিল কেমতে হইবে ভাল। महे, वन ना छेभाग्न त्मारत। গঞ্জনা সহিতে নারি আর চিত্তে মরম কহিন্দু তোরে। ननमी-वहरन बनिष्ठ भन्नार्व व्याभाषपञ्चक हुन । কলছের ডালি মাথায় করিয়া পাথারে ভাসাব কুল। ভাসিয়ে যায় चूट ल मात्र না বলে ছাড়য়ে লোকে। চণ্ডীদাস কয় না করিত ভয় কি করিবে অধম লোকে। 🥞 30 ১৩। এ বেলি এ ছার লোক...পাঠান্তর। : ८। छ्लीमान करह

युररे ।

মরিব তাহার শোকে॥ - পাঠান্তর।

পাপ পরাণে কড সহিবেক আলা।
শিশুকালে মরি গেলে হইত বে ভালা॥
আলা জঞ্চাল সই তবে সে পরিহরি।
ছেন্ন করিয়া দেও শীরিতের তুরি॥
তেমতি নহিলে বার এমতি ব্যাভার।
কলম্ব-কলনী লৈয়া ভালিব পাধার॥

চতীদাস কৰে এই বাশুলীকুপার। শীরিতি লাগিয়া কেন ভাসিবে দরিয়ায়॥ ,8। जुनि-नम्

শুন গো মরম সই। যখন আমার জনম হইল नयन मुस्या बरे। দিতে ক্ষীর সর জননী আমার নয়ন মুদিত দেখি। জননী আমার করে হাহাকার কহিল সকলে ডাকি॥ শুনি সেই কথা জননী যশোদা বঁধুরে জইয়া কোরে। আমারে দেখিতে ় আইল তুরিতে সৃতিকা-মন্দির ঘরে॥ দেখিয়া জননী কহিছেন বাণী এই কি ছিল কপালে। করিয়া সাধনা পেলাম অন্ধ কন্তা বিধি এত ছখ দিলে॥ :0 উঠ উঠ বলি করে ধরি তুলি বসান যতন করে। হেনই সময়ে মায়ে ভেয়াগিয়ে वैधू भविमा स्माद्ध ॥ পায়ে দিভে হাড মোর প্রাণনাথ অস্তবে বাড়ল ত্থ। হাসিরা কাঁদিরা কাঁখি প্রকাশিয়া, 📝 কুচিল অভ্ন বাড়িল আনন্দ

जननी वर्त्नामात्र मरम्।

₹€

আমার কল্যাণে कतिन विविध मारम । সুজন যে জন জানে সেই জন कुकन माहिक कारन। অমুরাগে মন সুদাই মগন ৩০ षिक চণ্ডীদাস ভণে ॥

আপনা আপনি ভাবিয়ে কভেক ছুব। যদি পাখা পাই পাৰী হয়ে যাই ना प्रभारे व भाभ-मूथ । महे, विधि मिन स्मारत ल्यां । পীরিতি করিয়া আশা না পুরস • কলঙ্ক ঘোৰিল লোকে ॥ হাম অভাগিনী ভাতে একাকিনী নহিল দোসর জনা। অভাগিয়া লোকে যত বলে মোকে ১০ তাহাও না যার শোনা। যদি বিধি শুনিত মরণ হইড ঘুচিত সকল তুখ। চণ্ডীদালে কর এমতি হইলে শীরিভির কিবা সুখ।

६। विशि—काञ्च... शांठाचत्र।

पुष्टिरव क्पनि এমডি করিবে থাতা।

व्यक्ति चरत्र घरत ८भाक्षण नगरत ना अनि श्रीविकिक्श। नरे, त्य वन तम वन त्यारत। ৰলি শাড়াইয়া শপুথি করিয়া ना त्रव ध भाभ-चरत्र ॥ शक्त गक्षन মেঘের গর্জ্জন কত বা সহিব প্ৰাণে। বর বে ডেজিয়া ' যাইব চলিয়া ১০ রহিব গ্রহ্ববে 🛚 বনে যে থাকিব শুনিতে না পাব এ পাপ জনার কথা। গঞ্চনা খুচিবে হিয়া জুড়াইবে व्यस्टरतत्र गारेटन नाथा॥ 34 স্বতন্তরী হয় চণ্ডীদাস কয় ভবে সে এমন বটে। সে সব কহিলে করিতে পারিলে ্ ভবে সে ভাপ যে ছুটে॥ >। अशोनी-- त्रमणी · পाठाखत । DE । पृष्ठित मत्नव वाशी... " ১>। তাপ-পাপ ·

•>1

न्ररे ।

না জানে শীরিতি যারা নাহি পার তাপ।
পরবশ পীরিতি অ'ধার ছরে সাপ।
সই, শীরিতি বড়ই বিষম।
না পাই মরমী জনা কবি বে মরম।
গৃহে গুরুগঞ্জম কুষ্চনজালা।
কত বা সহিবে ছুই পরাধীন বালা।

नीतिंडि-विदाधि यपि अस्तत्व नामादेन।.. ঔবধ খাইতে ভবে পরাণ জারি গেল। ' চণ্ডীদাস কহে প্রেম বড়ই বিষম। जीयरस्य मत्र**ग करत म**स्क ममन ॥ >। নাহি জানি নাহি তনি তারা পায় তাপ.. भागिकत । २। शत्रवम--- शत्र (त्र ৮। ঔষধ বাইতে তবে পুন অরি গেল... >०। यद्य -- ध्यन... वानने । দৈব যুক্তি বিশেষ গডি याहारत लागरम जाय। আন আন জনে করিয়া যভনে প্রেমেতে গড়ায়ে দেয়॥ সই, এমন কামুর রসে। রহিবে শারিতি জনম অবধি विरम्हत ना हरव (भारत ॥ ষেই মনে ছিল ভাহা না হইল সোভরি পরাণ কাঁদে। লেহ দাবানলে মন যেন অলে ১০ रतिनी পড़िन कांदन ॥ পলাইভে চার পথ নাহি পায় (पि (य जननभग्र)। **इ**ऐक्ठे करत वरनंत्र मांबादत কড বা পরাণে সয়॥ . ১৫

বাহিরে আসিয়া বাণ বে খাইয়া

পশিতে তাহাতে পুন:।

भागातिक नात्त्र **(वन ॥**.

গরুল আনলে

भन्नीत विवन

করিবর আদি না পায় সমাধি ২০ । ফিরিয়া চীৎকার করে। একে কুলনারী ফুকারিতে নারি ' ननमी व्याहरम घरत ॥ এমতি আকার পীরিতি ভাহার রহিয়া দহিছে মনে। 20 ननमी वहरन দগধে পরাবে পাঁজর বি'ধিল ঘুণে॥ নয়ন-পিঁজরে नग्रदन नग्रदन রাখয়ে আপন কাছে। জলে যাই যবে সঙ্গে চলে তবে ৩০ जात्मत्त्र (पश्चि य भाष्ट्र ॥ চণ্ডীদাস কয় বাশুলী সহায় মনেতে থাকয়ে যদি। य कन या वितन ना कौरत्र भर्तार তার কি করে ননদী॥ >२। अनाइँ एक मान काई अर्थ भाग ... -- পাঠান্তর। ২৪-২৫। এমতি আমার পীরিতি ভাহার সহিতে সহিছে মনে। ... " ৩১। বাওগীর সায় \cdots शन्त्री।

জনম অবধি পীরিতি বেয়াধি
অস্তরে রহিল মোর।
থেকে থেকে উঠে পরাণ ফাটে
জালার নাহিক ওর।
সই, এ বড় বিষম কথা। ' ৫'
কাসুর কলস্ক জগতে হউল
জুড়াইব আর কোথা।

বেয়াধি অবধি সমাধি করিয়ে পাই এবে যার লাগি। এমতি ঔষধ হয় অল সূল্য লয় ১০ হিয়ার ঘুচায় আগি॥ জনম অবধি कर्णक नमही স্থালাতে স্থালল মন। দ্বিগুণ স্থালার তাহার অধিক খলের পীরিতি শুন॥ ১৫ খলের সংহতি ছাড়িমু পীরিভি ছাড়িমু সকল সুখ। চণ্ডীদাস কয় যদি দেখা হয় এবে কেন বাস ছখ।

> ् धान**न** ।

যতন করিয়া বেসালি ধুইয়া সাঁজে সাজাইনু ছুধ। ," দধি সে নহিল জল সে হইল পাইকু বড়ই ছুখ॥

সই, দধি কেন ছি'ড়ি গেল। ৫
কামুর পীরিতি কুলের করাতি
পরাণ কাটিয়া নিল॥
পীরিভি ঘুচিল আরতি না পূরিল
না ঘুচিল কলক্কজালা।
তবু অভাগিনী না ঘুচে কাহিনী ১০
পরিবাদ দেই কালা॥
ব্বিলাম যতনে প্রবোধিমু পরাণে
ছাড়িমু ভাহার আশ।

চিতে স্বার কত ভাবি স্ববিরভ দৈবে করিল নৈরাশ। ১৫ আর কেহ বলে ক'পে দিব জলে তেজিব এ পাপ দেহ। চণ্ডীদাস কহে ছাড়িলে ছাড়ন নহে শুধু সুধাময় লেহ॥

৮। আরতি না খুচিলপ..... পাঠান্তর। ১। পরিবাদ হৈল কালা..... ,,

०२১

याननी ।

না বল না বল সথি না বল এমনে।
পরাণ বাঁধিয়া আছি সে বঁধুর সনে॥
ভাজিলে কুল-শীল এ লোকলাজ।
কি শুক্রগোরব গৃহের কাজ॥
ভাজিয়া সব লেহা পীরিতি কৈছু।
যে হইবে বিরতি ভাবে ভাজিয়া মৈহু॥
যে চিতে দাঁড়ায়েছি সেই সে হয়।
ক্ষেপিল বাণ যে রাখিল নয়॥
ঠেকিল প্রেমকানে সকলি নাশ।
ভালে সে চণ্ডীদাস না করে আশ॥ *

०२२

शामनी ।

ইকু রোপিমু গাছ যে হইল নিক্সাড়িতে রুসময়। কামুর পীরিতি বাহিরে সরল অস্তবে গরল হয়।

° কোৰাও এই পদ জানদাসের ভণিভার্ক গছে।

महे, (क वर्ल भिठा हेक्सू ७५। d পরের বচনে চাকিমু বদনে খাইমু আপন মুড় ॥ চাকিতে চাকিতে শাগিশ জিহ্বাতে পহিলে লাগিল মিঠ। মোদক আনিয়া ভিয়ান করিয়া ১০ এবে সে লাগিল সীট। মশলা আনিমু আগুনে চড়াফু বিছুরিমু আপন ভাব। কামুর পীরিতি বুঝিন্থ এমতি কলক হইল লাভ। 24 আপন করমে বুঝিতু মরমে বস্তুর নাহিক দোষ। চণ্ডীদাস করে পারিতি করিয়া কেবা কোথা পাইল যশ। ে। সই, কে বলে ইক্ষুরস ওড়...পাঠাকর। ७। চাকिङ्...थावाम कोद्रनामः ৭। মুড়...মন্তক। ১১। नौष्ठे...चनात शनार्थ।

०२ ०

महात्र ।

দিবস রন্ধনী গুণি গুণি গুণি গুণি কি হৈল অস্তুরে ব্যুপা। বলের বচনে পাতিয়া প্রবণে বাইন্মু আপন মাথা॥ কে বলে পীরিতি ভাল গো সবি ৫ কে বলে পীরিতি ভাবিতে ভাবিতে লোনার বরণ ভাল॥

বিষের গাগরি শীর মুখে ভরি ্ৰেবা আনি দিল **আগে**। ১০ ক্রিমু আহার না করি বিচার এ বধ কাহারে লাগে॥ নীর-লোভে মৃগী আনন্দে ধাইতে ব্যাধ শর দিল বুকে। জলের সফরী আহার করিতে ১৫ वज्नी नाशिन पूर्थ। नवचन दहति পিয়াসে চাতকী চঞ্ পদারল আশে। করল পবন বারিক বারণ কুলিশ মিলল শেষে॥ ২০ বিষে মিশাইয়া ক্ষীর নাড়ুকরি व्यवना वानाटक पिन। মুস্বাদ পাইয়া খাইতে খাইতে নিকটে মরণ ভেল । লাখ হেম পেয়ে যতনে বাঁখিতে ২৫ পড়িল অগাধ কলে। হেন অমুচিত করে পাপ বিধি विक छ्छीमान वरन ॥

e-৬। তন তন ছতি কি কহ নো প্রতি বচন না লাগে ভাল।...পাঠাবর। ১। সোনার পাগরি বিবলন ভরি... "

428

निष्णा ।

সই, কি হইল কালার আলা। রাজি দিন মন সলা উচাটন অপনে ছেখি বেঁকালা॥ মুদিভ-লোচনে বন্ধি বা খুমাই হৃদয়ে কানুরে **দে**খি। মনের মরম ভোমারে কহিমু 🕶ন গো মরম-স্থি॥ মৰ উচাটন ঘরে নাহি মন कि ना देश भात गारि। कि कानि कीवन वाँ किए मः भग्न কহ না ইহার বুধি **॥** नपार राष्य আমার পরাণ কামুর চরণে বাঁধা। যে অন পীরিতি পাড়ার পড়সী সদাই করয়ে বাধা N দুরে রহু তার আদর পীরিতি (म कन व्यांशित वानि। না যাব সে ঘর পাড়ার পড়সী দেই যত গালি॥ চণ্ডাদাসে কৰে লোকের বচন কিবা সে করিতে পারে। আপনা হৃদয়ে মনের মানসে নিরবধি ভব্দ তারে।

> धरण शामनी

না জানি পীরিতি এমন বলিয়া
তবে কি বাড়ামু পা।
পীরিতি বিচ্ছেদে জীবন না রহে
এলায়ে পড়িছে গা।
কহ কি বৃদ্ধি করিব দেখি।
একে লোকলাক এ পাল পন্নাণ
যরে খিরি নাহি থাকি।

আপনার বুড়া অঙ্গুলি বিনিয়া চলিতে নারি বে शेরে। আমার কর্মে ' বিধির লিখন ১০ " विषा त्माव मिव कादत ॥ ভাবিতে গণিতে কামুর পীরিতি পরাণ হইল সারা। সর্বনে সহলে • সঞ্চলনয়নে নিরবধি বহে ধারা ॥ ১৫ **इंडोमार्न करह** अन वित्नामिन দেখি বে অবোধপারা। মিছা লোককথা চাঁদ সখা যার কিবা করে লাখ ভারা॥

950

थानना ।

🕶ন গো মরম-স্থি। কামুর পীরিতি পরাণ না ব্লছে বড় পরমাদ দেখি ॥ किया दून कृषिन दमिन दम्हान নরান পসারি ছুটি। ৫ সেই দিন হতে আন নাহি চিতে শীরিভি-আনলে ছুটি। আন সে আনল বারি ঢালি দিলে 🕙 তখনি নিবায়ে যায়। মনের আগুন নিবাইব কিসে ১০ षिक्षन चनित्र जात्र॥ বন পোড়ে বলে বনে আগুনি त्मच्दत्र कगर लाटक। এ বড়ি বিশ্বস শুন গো সঞ্জনি • चरन डेंटर्र विनि कूरक । ১৫ হের দেখ সুধি অঙ্গে হাত দিয়া • **উঠিছে** বিরহ আগি।

टन श्रीम-विटक्टरम स्थात्र विवादम नना कैंकि जांत्र नाणि ॥ • • **छ**शेनाटम वटन

७न विद्यांनिन २० মিছাই ভাবনা কর। শ্রামের কলক যত পরিবাদ क्षारत वट्ट भन्न 8। (नहत = जहांक। ৮। আন সে আনল= অপর আগুন।

3

সই, বড়ই প্রমাদ দেখি। কামুর সনে পীরিভি করিয়া नित्रविध क्रांत औषि॥ কাহারে কহিব মনের আগুন चनियां चनियां छेर्छ। বেমন কুঞ্জর বাউল হইলে অঙ্কুশ ভাঙ্গিয়া ছুটে॥ কিসে নিবারিব নিবারিতে নারি বিষম হইল লেঠা। হেন মনে কুরি উচ্চৈ: স্বরে কাঁদি ১০ তাহে গুরুজন কাটা।। ষাইয়া নিভূতে বশি এক ভিতে সদা ভাবি কালা কামু। বিরলে বসিরা বুরিভে ঝুরিভে কবে হারাইব ভন্ম। ১৫ भीवत (पश्चित्र) व्यत्न यङ मीन বেমন ভরাসে **কাঁপে।** ্পামার তেমতি বরের বসভি गत्रिक गत्रिक संराण । चर्ड शुक्रमन वरम क्रान २० विष वा निवाल भारत ।

• বাহার লাগিরা এতেক সহিব

• সে রহে ধৈরক ধরি ॥

• চণ্ডাদাসে বলে শুন বিলোদিনি

• সকলি স্থপন মানি । ২৫

• তুমি সে কালার কালিয়া ভোমার

কগতে স্বাই কানি ॥

৬। ৰাউল-পাগণ, উন্মন্ত।
২২-২০। শ্ৰীকৃষ্ণ বদি আমার জম্ম একটু চঞ্চল
হইতেন জানিভাম, তবে শুকুজনের কুৰ্চন সম্ করিতে
পারিভাম।

3

সই, রহিতে নারিমু খরে। নিয়বধি বলে কামু-কলঙ্কিনী এ কথা কহিব কারে॥ যত আছে মনে चात्र शुक्रकान কালার কলফ সারা। e বিরলে বসিয়া সেখানে বসিয়া नग्रत्न गलरत्र भाता ॥ ইহার উপায় কি করিব বল শুন গো মরম-স্থি। नमारे हक्क >• এ পাপ-পরাণ খরে স্থির নাহি থাকি ॥ বিষ ভেল গৃহ ভোজন না রুচে খুম নাহিক হয়। শ্রাম-পরসঙ্গ বিনে নাহি ভার ে প্রবণ তা পানে রয়। 24 না রয় বেক্ত গুহকাকে চিড্ কালার ভাবনা গাঢ়া।

চঞাদাসে বলে কালার পাঁরিভি

नक्लि रहेद्रव हाज़ा ।

nta 4

সই, মন্দিব গরল খে কাসুর পীরিতি বিষম বেয়াধি व्यामादन दवनल शिदन ॥ কভ না সহিব ব্দবলা পরাণে কুৰচনে ভাজা দেহ। মনের বেদনা বুঝে কোন্ জনা আন কি বুঝিবে কেই। হেন মনে করি বিষ খেলে মরি দুরে যাউ যত ছখ। অখলা রমণী কুলের কামিনী ১০ সবার হউক সুখ। কভ না সহিব সেই কুবচন महिट्ड इहेसू कानो । হেন মনে করি এ হর করণে पिर (म वान्न क्वांनि ॥)**१** চণ্ডীদাসে বলে এমন শীরিভি বিষয় প্রেমের লেহা। পীরিতি আরতি বার উপজিল তার কি আছয়ে দেহা।

পানী।
সই, আর কিছু কৈর না গো।
সকল বন্ধর পাড়িরা পরল
গোকুলে নন্দের পো॥
কে জানে পাইব এত অপবাদ
স্থপনে নাহিক জানি।
তবে কি তা সনে বাড়ামু মরমে
অথবা কুলের ধনী॥
শরনে স্থপনে

(मित्रा कानित्रा कान्यू। ...

বিরয় বেয়াবি কড না সহিব ১০ কৰে সে ডেজিব তমু। स्तर गंबनि হেন মনে কবি গরল ভবিয়া মরি। ভবে স্থচে ভাপ বিষম সন্তাপ গোপতে শুমরি মরি ৷ ১৫ ক্ৰে চণ্ডীদাস হিত আশ্বাস পীরিতি এমতি রীত। কেন এত তুমি করিছ বিবাদ কণেক ধৈরজ চিত। ধান¶। गरे, कि कांक এ हांत्र घरत। খ্যাম নাম নিতে না পারি গুহেতে তবে তারা হেদে মরে॥ কেবল রাধার পরিবাদ সার ্সে সব কুলের মণি। ৫ লোক চঁরাচরে মুমু মুমু মুমু কি ছাড় পড়সী গণি । আমি সে লয়েছি শ্রাম-হেমমালা অদয়ে পরিয়াছি। ক্ৰে যত জন শত কুবচন ১০ লে বহি লইয়াছি॥ চণ্ডাদাস কৰে খ্যাম স্থনাগর ভত্তহ কিশোরী গোরী। লোক-পরিবাদ মিছা যত হয় গোকুলে গোপের নারী ৷

41 ' গাঁলে মিবাইল বাতি কত পোহাইৰ রাতি . তপগুলি অময় বিষয়ে।

नां एत्र मञ्जन मा त्रंदर जीवन মরম কহিব কারে ! जरे, कि हिन जामात कतरम। রোপিল কলপলভা না হল ভাহার পাজ अकारेग्रा रगल जात्म॥ জনম অব্ধি कीत नीरत कति সিচিল ও লভামূলে। ক্ষীরের গরিমা नोरत्रत्र मोमा ১० হরিয়া লইল আনলে॥ যাহার লাগিয়া সকল ছাড়িয়া मन देशन वनवांती। **छिनारम क्या छाहात्र कि बाहि हय** পরশে করিবে স্থা। भीत नीत कति—कोत अ अन विदा। ১৪। ঘাটি—অপরাধ।

विद्यान्।। শুন ও গো সই • আর ভোমা বই কহিব কাহার কাছে। লোকমুখে শুনি ইহা বলে লোক কামু সনে রাধা আছে 🛭 গোকুল নগরে **टगांटशत्र मांबांटत** क এত দিন আছি মোরা। লোকমুখে শুনি কখন না চিনি কামু কাল কিবা গোরা॥ चदत्रत्र चत्रवी व्याद्ध ,कानवामिनी -পাপমতি ননদিনী। . ১০ ভনাইরা মোকে আর কাকে ভাকে व्यादेश श्याम-त्यादाणिनी ॥ কিবা সে শুাম . কামু কার নাম ় ভাহা না বলিব कि,।

শুনাইয়া মোকে আর কাকে ডাকে ১৫ ্ আই মাইকে জানাই দেখি। একা প্রাণপতি সেই মোর গতি তা বিশু আন নাহি জানি। চণ্ডীদাস বলে ভাঁড়াইলা ভালে ধশ্য রাধা ঠাকুরাণি॥ 20

क्षश्मि।

পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর ভূবনে আনিল কে।

ছানিয়া খাইসু মধর বলিয়া ভিতায় ভিতিল দে॥ সই, এ কথা কহিব কারে। ৫

হিয়ার ভিতর বসতি করিয়া कथन कि कानि करत्र॥

পিয়ার পীরিতি প্রথম আরতি ভাহার নাহিক শেষ।

পুন নিদারুণ শমন সমান ১০ দয়ার নাহিক লেশ ॥

কপট পীরিভি আরতি বাড়ায়ে মরণ অধিক কাজে।

লোকচরচায় কুল রক্ষা দায়

ব্দগত ভরিল লাবে। ১৫ स्रेट वरेट অধিক হইল সহিতে সহিতে মসু।

करिएक करिएंड खणू कह कहें পাগলী হইয়া গেন্দু ॥

এমন পীরিতি না জানি এ রীতি ২০ জনন অবধি ভাবি নির্বে

পরিধামে কিবা হয়।

ুশীরিতি পরম षिक वंशीमारम क्रेन ॥

गरे, ७ कथा करन नव्द—श्रीखा।

१। क्थन कि कानि क्ट्-

১৪। লোকচরচার কুলের থাঁকার---

২২। পীরিতি পরম হয় ছব ভূব-

' একটি ক্মল পীরিভি বলিয়া রসের সায়রমাবো।

প্রেম পরিমল লুবধ ভ্রমর ধাওল আপন কাজে॥

खभत्र कानरत कमल-माधुती ৫ তেঁই সে তাহার বশ।

রসিক জানয়ে রসের চাতৃরী व्यात्न कदत्र व्यवश्यम ॥ ় সই, এ কথা বুঝিবে কে।

বে জন জানয়ে সে যদি না কছে ১০ **८कमान ध**विव ८**ए ॥**

ध्रम क्रम লোক্চরচাতে

এ কথা বুকিতে নারে। এ ভিন আঁধর বাহার মরমে

সেই সে বুৰিতে পারে॥ ১৫

কহে চণ্ডীদাস তন হে নাগরি পীরিতি রসের সার।

পীরিতি রসের রসিক নহিলে কি ছার জীবন তার 🛭

२। नावद-- नानद--- नार्जिस्द्र।

সই, পারিডি আখর ডিন।

না জানি রাভি কি বিন 🖁 🐪

গীরিভি পীরিভি সৰ খন কংহ পীরিতি কেমন রীত। হঙ্গের পীরিভি রসের স্বরূপ কে না করে পরতীত। महे, कि चात्र कुल-विहादि। শ্রাম বঁধু বিনে ভিলেক না জীব कि भारत (जानत शदर ॥) ० পীরিতি মস্তর ব্দপি নিরন্তর নাহিক তাহার মূল। বঁধুর পীরিতে আপনা বেচিমু নিছিয়া দিমু জাতিকুল ॥ সে ক্লপ-সায়রে নয়ান ভূবিল ১৫ (म शार वैधिन हिशा। সে সব চরিতে ভুবিল যে চিতে নিবারিব কিবা দিয়া॥ খাইতে খাইছি শুইতে শুইছি আছিতে আছয়ে যরে। • ২০ ইন্সিড পাইলে **ह** छोमार्ग क्य . আগুন ভেজায় ঘরে॥ ৬-৭। রশের স্বরূপ পীরিতি মৃরতি কেৰা করে পরতীত।—পাঠান্তর। ১৭-১৮। সে সৰ চরিতে ভুরু ভুরু মন व्यानिव कि खन निश्रा ।--- शांठी खत्र।

etalle i

ধানী।

পীরিতি বলিয়া , এ তিন জাঁধর
সিরজিল কোন্ ধাতা।
আবধি জানিতে শুধাই কাহাকে
স্কাই মনের ব্যথা।
পীরিতি রতন ৫
. শার চিতে উপজিল।

त्म भनी करडक जनत्म जनत्म কি ভাগ্য করিয়াছিল ॥ · · गरे, भीतिष्ठि ना कारन वाता। এ ভিন ভুবনে মাসুৰ জনমে ১০ কি হুধে আছয়ে তারা। বে জন যা বিনে না রহে পরাণে त्म (य इन कूननानी। ভবে কেন ভারে কলঙ্কিনী বলে অবোধ গোকুলবাসী **৷** গোৰুল নগরে কেবা কি না করে व्यतिथ मृष् (य लिटिक । মক্লক সে জন চণ্ডীদাদের মন পরচরচায় থাকে। ে। পীরিতি মুরতি পীরিতি রতন—পাঠান্তর। ৮। जाना-वळ-১০। এ ভিন ভূৰনে জনমে জনমে িক স্থ জানয়ে তারা।—পাঠান্তর। ১৮। हखीमांग जत मक्क (म क्र —পাঠান্তর।

•

স্থান লাগিয়া পীরিতি করিছু

শ্যাম বঁধুয়ার সনে।
পরিপামে এত তৃথ হবে বলে

কোন্ অভাগিনী জানে॥

সই, পীরিতি বিষম মানি। ৫
এত স্থাখ এত তৃথ হবে বলে

স্থানে নাহিক জানি॥

'সে হেন কালিয়া নিঠুর হইল

ক শেল লাগিল বেন।

দর্শন আশে বে অন কির্য়ে ১০

त्म এउ निर्देश स्वत ।

বল না কি বৃদ্ধি ক্রিব এখন · · ভাবনা বিষম হৈল। ় হিয়া দগদগি পরাণ পোড়নি कि पिटन हरेट छान ॥ ১৫ চণ্ডীদাস কছে শুন বিনোদিনি মনে না ভাবিগ আন। ভূমি সে শ্যামের সরবস ধন শ্যাম সে তোমার প্রাণ ॥ ে। সই, এ বড়ি আফুতি গুনি-পাঠান্তর। ৬-१। তত হুং এত তুখ হবে বলে স্বপনে ইহা না জানি ॥—পাঠান্তর। ১২। বল নাবল নাসই কি বুদ্ধি করিব—পাঠান্তর। ১৪-১৫৷ হিরা দগদগি কি দিরা জুড়াবে क्मान हरेरद **छान ॥—भाठीख**त ।

a 1

হুখের লাগিয়া রন্ধন করিসু ঝালেতে ঝালিল দে। স্বান্ত নহিল স্বান্তি সে গেল ব্যঞ্জন খাইবে কে সই, ভোজন বিশ্বাদ হৈল। ৫ ৰামুর পীরিতি রস এই মতি কি জানি কেমন হল। পীরিভি রসের নাগর দেখিয়া আরতি বাড়াইসু ভাবে। তবে সে সঞ্জনি मिवम तकनी ५० ব্দানল উঠিল চিতে॥ উঠিতে উঠিতে অধিক উঠিল ' निटम इंथ नित्री . একতা कतिहा এছন কাত্ম লেহ। . 50

हशीनांटम क्यू হিয়ায় সহয় नकलि गतल रहन। কিছু কিছু সুধা . বিষ্ঠুণা জাধা **जिक्कोवी (पर देवल ।** ২। আলাতে আলিল দে—পাঠান্তর। ৬-৭। কাহুর পীরিতি হেন রসবতী স্বাদ গন্ধ দুরে গেল।—পাঠান্তর।

A .

স্থাধ্য পীরিতি আনন্দ যে রীতি দেখিতে স্থার হয়। কাঞ্চন পীযুবে মদন সহিতে মাখিলে এমতি লয়। সই, কেমন কারিকর সেহ। ৫ এ সব সংযোগ কেমনে করিলে কেমনে গড়িলে দেহ ॥ সিদ্ধুর ভিতরে অমিয়া থাকয়ে কেমতে পাইল এ। ়ু মাটীর ভিতরে কাঞ্চন, গড়য়ে ১০ সন্দেহ এ বড়ি এ। মদন-মাদন থাকে কোন স্থানে বুকিতে সন্দেহ হয়। এ তিন আনিয়া একত্রে ছানিয়া গড়িল কেমন দেহ ৷ তিন তিন গুণে বাঁধিলেক খুণে পাঁজরে পশিয়া গেল। যতন করিয়া ু অবলা বধিতে আনিল এমতি শেল। এমতি অকাজ করে কোন রাজ ২০ বুবিতে নারিল মোরা। কুলের ধরমে ভাজিমু মরমে

এমতি হউক ভারা 🛊

इस्तेशास्त्र क्य्र शिक्षा गानि द्य -ना प्राचि ज्ञानक लाएक। ভাগনা ভাগনি বলায় কুবাণী আপন মরম ভূপে। ১२-১¢। • मांशंत्र मांखादत থাকরে অমিরা কেমনে পাইবে সে। পাইল কোন্ স্থানে स्मापन मापन त्रत्य नित्रमिल (प ॥-- शांठीखत । ১৭ ৷ পাজর ধনিরা গেল---

আপনা খাইসু সোনা যে কিনিসু ভূষণে ভূষিব দেহ। সোনা যে নহিল পিতল হইল এমতি কাসুর লেহ॥ नरे. महत दर्शानादत ना हिटन दर्शाना। e সোনা যে বলিয়া পিতল আনিয়া •ু গড়ি দিল যে গহনা॥ পরিতে,অঙ্গেতে ঝলকে দেখিতে হাসয়ে সকল লোকে। ধন বে গেল কাজ না হইল ১০ শেল রহি গেল বুকে॥ বেমত মতি তেমত গতি ভাবিয়া দেখিতু চিতে। পাথারে সাঁভারি খলের কথায় উঠিতে নারিমু ভিতে॥ ১৫ অভাগিয়া জনে , ভাগ্য নাহি জানে না পূরে এ সব সাধ। খাইতে নাই ঘরে সাধ বহু করে বিধি করে অমুবাদ ! म्लोमारम क्य বাশুলী কুপায় ২০

. " नात्र निरंदिषिय कात्र।

ভবু ভ পীরিভি নাহি পার বলি পরাণে মরিয়া বায় 🛊 मनन अमिन मुडिशेन (य, (माना डिक हिनिएक. পারে না। মদন-মোহিত লোকেরা ভাল বিচার করিতে পারে না। পাশ্চাভ্যেরা ত মদনকে অত্ব বলিরাছেন। व्यामात्मत्र (शांविक्तमात्रक वरनन,--"वांधन (क्षम ।" ৮। পরিতে অবেতে প্রতি অসুবিতে—পাঠান্তর।

91

কামুর পীরিতি চন্দনের রীতি খসিতে সৌরভময়। বসিয়া আনিয়া হিয়ায় লইতে परन विशुप **र**ग्न ॥ সই, কে বলে পারিতি হীরা। ৫ সোনায় জড়িয়া হিয়ায় করিতে ছুখ সে লাগিল ফিরা॥ পরশ পাথর হয় যে শীতল वनाय मकन (नांदक। পীরিতি না জানি ১০ আমি অভাগিনী কতেক পাইসু শোকে। স্ব কুলবতী করয়ে পীরিডি এমতি না হয় তারে। এ পাপ পড়সী সকল ডাহিনী मकिन (मायरत्र (मारत्र ॥ গৃহের গৃহিণী मदम ननिष्नो वलाय रहन यह । কি করি উপায় कहिल कि यांग्र , পরাণ সহিবে কত। नाज्ञ दात्र मार्छ वास्त्र निक्टि २० वास्त्रो आहरत्र वथा।

ভাষার মানেশে কহে চঞ্চানাসে

্ সুখ যে পাইবে কোথা ॥

১০-১১। মুই অভাগিনী লাগিল আঙ্কনি

পাইস্থ প্রেডক হবে।—পাঠান্তর।

১৪-১৫। এ পাড়া পড়সী ডাকিনী সদৃশী

এমত না ধার ভারে।—পাঠান্তর।

২০। নিকটে—হাটে—পাঠান্তর।

· (ii)

কামুর পীরিতি মরণের সাথি বুঝিল এতেক দিনে। মরিলে ছাড়িবে সঙ্গে কি যাইবে कर ना देशांत विधारन ॥ **गरे, जोग्रत्स अमन स्वाना ।** ৫ জাতি কুল শীল সকলি ভূবিল हाफ़िल ना हाएक काला u শয়নে স্থপনে না করিয়া মনে ধরম গণিয়ে থাকি। व्यानिया मनन _ (सय कनर्थन ১० অন্তরে উঠয়ে উকি॥ गदर्शवत्र भारक . भीन त्यन शास्क উঠে অগ্নি দেখিবারে। ধীবর কাল शंख नाय जान তুরিতে কাপয়ে তীরে॥ কামুর পীরিতি কালের বসতি যাহার হিয়ায় থাকে। परमञ्ज गन्नत জারিল সকলে कनको वलरत्र (मारक ॥ **ह** श्रीमारनंत्र यन वालनो हदत २४ **७**भएम्भ त्र**क्को** नाती । সহিতে সহিবে কিছু না ভাবিৰে कहिरव धकांख कति ॥

ব্ৰিল—পাইল—
 ব্ৰিল—পাইল—
 ব্ৰিল—পাইল—
 বিলে কি ছাড়িৰে সন্ধো না বাইৰে—
 বিলে কি ছাড়িৰে সন্ধো না বাইৰে—
 বিলে কি ছাড়িৰে সন্ধো না বাইৰে—
 বিলে কি ছাড়িৰে সন্ধোন না বাইৰে

কলক ঘোৰৱে লোকে ॥—পাঠান্তর।
 বিভনী চরণ

আদেশে রহুক নারী। সহিতে সহিতে কিছু না ভাবিবে বলিবে একাস্ত করি।—পাঠান্তর।

G-----

সিস্কুড়া। পীরিভি গরল আমরা সরল नाशिन अभिया भय। মহানন্দ রীতি বিছয়ল পতি . कनक नवारे करा।। महे, रिएटव रेडल रहन मिंड १ व्यस्त ब्रिम পরাণ পুড়িল এছন পীরিতি রীতি।। माणि त्थानारेया थान वनारेया उপরে দেওল চাপ। আগে আছার দিয়া মারল বাঁধিয়া ১০ धमन कत्रद्र भाभ॥ নৌকায় চড়ায়ে দরিয়াতে লয়ে ছাড়য়ে অগাধ জলে। **जू**विया ना मदब ভুবু ভুবু করে, উঠিতে না পারে কুলে॥ ১৫ এমতি করিয়া পরাবে মারিয়া ठनम जाभन चरत ।

এমতি কি হয়

ভূমি দে ভাবহ ভাবে।

ह छोषात्म क्य

১-৪। আনরা সরলপ্রাকৃতি, তাই গরলসমূপ পীরিতি আনাদের নিকট অনুত বলিরা বোধ হইরা-ছিল। পীরিতির রীতি প্রথমে মহানন্দমর বোধ হইরাছিল, তাই পতিকে ত্যাগ করিয়া-ছিলাম; ফলে কলভ হইল।

.

9 1

বিবিধ কুন্থম ত বভনে আনিয়া গাঁথিত্ব পীরিভি-মালা। শীতল নহিল পরিমল গেল पानाट पनिन गना । नरे, मानो (कन (शन देश)। শালার করিরা বিৰ মিশাইয়া हियात मांचादत पिल ॥ चानांत्र चिना छेतिन य हिना আপাদ মস্তক চুল। এমন না দেখি শুন ওলো সখি ১০ • चाक्त रहेन सून ॥ কুলের উপরে চন্দ্ৰ লাগল সংযোগ হইল ভাল। इरे अक टेरज़ শোড়াইল হিয়া পাঁজর ধসিরা সেল। ধসিতে ধসিতে नकनि धनिन

নঠুর কালিয়া না গেল বলিয়া আনিলে যাইত সাথে।
গুরুগরবিত বসতি আমার
পরাণ লইয়া হাতে ॥
সই, কি আর বলিব ডোরে। ৫
আপন বস্তর না কর বেকত
তবে সে কহি বে ডোরে ॥
মনের মরম আনিবে কে।
সেই সে জানে মনের মরম

চোরের মা বেন পোরের লাগিয়।
ফুকরি কাঁদিতে নারে।
কুলবতা হৈয়। পীরিতি করিলে
এমতি সকট তারে ॥
কে আছে ব্যথিত বাবে পরতীত ১৫
এ মুখ কহি বে কারে।

হর দুখভাগী পাই তার লাগি
তবে সে কহি বে তারে
পর কি জানরে পরের বেদন

সে রড আপন কাজে। ২০ :
চণ্ডীদাসে বলে বনের ভিতরে
কড় কি রোদন সাজে ॥

निर्यम बरेन (मर।

এছন কাসুর লেহ।

১৮। किছू नाहि खड कहिरण ना स्व

२०-१२। ना छनि ना एएपि

চণ্ডাদাসে কর কিছু নাহি ভয়

কি করিব সধি

—পাঠান্তর।

व्यक्ति हरेग पूरा।--शाशंकतः।

शानचा । সই, কাহারে করিব রোব। রাজানি নাদেখি সরল হইসু সে পুনি আপন দোষ॥ ফেলাইত পা বাভাস বুঝিয়া বাড়াই বুৰিয়া থেছ। ৫ মানুষ বুঝিয়া कथा य कहिरत्र त्रिक वृक्षिया (लह ॥ मत्रक वृत्थिरम ধরিয়ে ডাল ছার সে বুকিয়ে মাথা। গাছক বুঝিয়া গুণ প্রকাশিয়ে ১০ ব্যথিত বুঝিয়া ব্যথা॥ অবিচারে সই করিল পীরিভি दक्न देक्न दहन काटक। চণ্ডীদাস কৰে थी वह स्थलित কহিলে পাইবে লাজে 20 < । (थर-देश्या। 38 । श्री तर—देशका शांत्रण कतिता शांक । 480 धानना । হিয়ার মাঝারে বতনে রাধিব वित्रण मटनत्र कथा। মরম না ভাবে ধরম বাখানে সে আর বিশুণ ব্যধা॥ , যারে নাহি দেখি শয়নে স্বপনে ৫ ना एमि नयन-कारण।

प्रियम ब्रज्जनी

ভবু সে সজনি

সদাই পড়িছে মনে।

नकृति भरतंत्र वर्ष ।

राम अकाशिनो , शत्रत्र अधीनो

नहां रे अमनि পুড়িছে পরাণী ঠেকিয়া পীরিতি-রসে ॥ অসুখন মন কল্পে উচাটন না সরে মুখেতে কথা। हखीमारत्रत्र मन व्यक्त नग्नन >४ ভাবিতে অন্তরে বাধা 👢 ६। भवत्न-वनम-भित्रेखत्। १। তবু সে नवनि-वद्ध रा वन । - शांशिकः। বিভাগ। আমি ত অবলা তাহে এত স্থানা বিষম হইল বড। নিবারিতে নারি শুমরিয়া মরি ভোমারে কহিল দড়॥ সহজে আপন বয়স যেমন ৫ আর নহে হাম জানি। স্বপনে ভালিয়া সে রূপ কালিয়া ना त्रार जाभन लागा ॥ .' সই, মরণ ভাল। মরমে পশিল ১০ সে বর নাগর ভাবিতে इहेन कान । करह हशीमारम বাশুলী আদেশে এই ত রসের কৃপ। এক কীট হয়ে আর দেহ পায়ে ভাবিয়ে ভাহার রূপ # 30 ১১। व्हेल-व्हेलाम।--लाठीखन्न। ১৪-১৫। একরপ বোলতা আছে, তাহারা আরহুলা ধরে। অনেকের বিখাস বে, আরম্মলাটা ধরা পড়িলেই ভাতিত হইরা বার এবং বোলভার রূপ ভাৰিতে ভাৰিতে বোলতা হইরা বার। চতীদাস ৰলিতেছেন,--- শ্ৰীরাধিকা কাল শ্রামের রূপ ভাৰিতে ভাৰিতে কাল হইয়া গিয়াছেন।

3 1 যড়ন ক্রিয়া ভ্ৰন ছানিয়া • আনিমু প্রেমের বীঞ্চ। রোপণ করিতে গাছ বে হইল जाधिल मत्र निष्म ॥ नहे, त्थम-७ इंट (कन रेशन । ৫ হাম অভাগিনী দিবস রজনী সিচিতে জনম গেল। পীরিতি করিয়া সুখ যে পাইব ভনিমু সধীর মুধে। ্অসিয়াবলিয়া গরল কিনিয়া ১০ ধাইকুআপন মুধে॥ স্বাত্ লাগিত অমিয়া হইত হইল গরল ফলে। কাসুর পীরিতি শেবে হেন রীতি কানিসু পুণ্যের বলে॥ : ৫ যত মনে ছিল সকলি পুরিল ঁ আর না চাহিব লেহা। চণ্ডাদাস কৰে পরশন বিনে **८कम्पटन धतिरव एम्टा ॥** পীরিভি জানল ছুঁইলে মরণ अनह कूरणत वध्। আমার বচন না শুন এখন জানিবে ৫কমন মধু॥ সই, ও বোল না বল মোকে। ৫ পীরিতি আনলে পুড়িয়া মরিবে जनम वार्टिय द्वार्थ ॥ मना इहेकहें मूत्रनी विकट ্ নটপটা ভার বেশ।

আর বিব খাইলে তথনি মরিরে ১০ বিবে ত জীবন শেব॥ নয়ানের কোণে চাহে ঘাহা পানে সে ছাড়ে জীবন-আশ। পরশ পাথরে ঠেকিয়া রহিলে কহে বড়ু চণ্ডাদাস॥ ১৫

965

শ্রীরাধিকার প্রতি সধীর উক্তি।

ছড়ি।

শুন কমলিনি চল কুল রাখি আর না করিও নাম। সে যে কালিয়া মূরতি কালিয়া প্রকৃতি কালা খল নাম শ্রাম॥ ভেজিয়া আপনি ৫ জনক জননী অন্যের হইয়া মজে। রাম অবভারে আনকী সীভারে বিনি অপরাধে ত্যকে ॥ আছয়ে বিদিত উহার চরিত वौनो विश्वांत्र कारम । >• বলিকে ছলিয়া পাডালে দাইল কি দোব উহার পেলে॥ উহার চরিত আছুরে বিদিত क्षय भावांगमय । উহার শরণে বেমত রাবণে ১৫ যেই সে শরণ লয় ॥়. মরুক সে জনে চণ্ডীদাস ভণে ষেবা পরচরচায় থাকে। পীদ্ধিতি লাগিয়া মরে সে ঝুরিয়া কুলেড়ে কি করে তাকে। ২০

আক্ষেপানুরাগ।

স্থগত।

diala i

কেন বা পীরিতি কৈলাম শ্রাম বঁধুর সনে।
ভাবিতে রসের তত্ম জারিলেক ঘূণে॥
কত ঘর বাহির হইব দিবা রাতি।
বিষম হইল কালা কামুর পীরিতি॥
না রুচে ভোজন পান কি মোর শয়নে।
বিষ মিশাইল মোর এ ঘর করণে॥
ঘরে শুরু তুরজন ননদিনী আগি।
তু আঁথি মুদিলে বলে কাঁদে কামু লাগি॥
আকাশ যুড়িয়া ফাঁদ বেতে পথ নাই।
কহে বড়ু চণ্ডীদাস মিলিবে এথাই॥

- ১। কেন বা পীরিত কৈছু কালা কাসুর সনে।—পাঠান্তর।
- ७। (भाव--(यन-- शांठीखा।

प्रस्रे।

ধরম করম গেল গুরু গরবিত।
অবশ করিল কালা কাসুর পীরিত॥

যরে পরে কি না বলে করিব হাম কি।
কেবা না কররে প্রেম আমি লে কলছা॥
বাহির হইতে নারি লোকচরচাতে।
হেন মনে করে বিব খাইরা মরিতে॥
একে নারা কুলবতী অবলা বলে লোকে।
কাসু পরিবাদ হৈল পুড়িয়া মরি লোকে॥
খাইতে নারি বে কিছু রহিতে নারি ঘরে।
ভাবিতে ভাবিতে ব্যাধি সাধাইল অস্তরেশ॥
ভারিলেক তমু মন ব্যাপিল,শরীর।
চণ্ডীদাস বলে ভাল হইবে শুন্থির॥

১০। একে নারী কুলবভী পুড়ে মরি শোকে।
 তাবে কাছ-পরিবাদ দের পাপ লোকে।

--পাঠান্তর।

¢

कृष्टि ।

কি হৈল কি হৈল মোর কাসুর পীরিতি।
আঁখি কোরে পুলকেতে প্রাণ কাঁদে নিতি।
শুইলে সোরান্তি নাই নিঁদ,গেল দুরে।
কাসু কাসু করি প্রাণ নিরবধি ঝুরে।
নবীন পাউসের মীন মরণ না জানে।
নব অসুরাগে চিত নিবেধ না মানে।
এনা রস যে না জানে সেনা আছে ভাল।
হাদরে বিঁধিল মোর কাসু-প্রেম-শেল।
নিগৃত্ পীরিতিখানি আরতির খর।
ইধে চণ্ডীদাস কবি হইল ফাঁকর॥

- ে। নৰীন পাউস—নুতন চুস।
- ७। निर्देश-रेषत्रव-शाठीस्त्र।
- १। धना-धरे ; तना-तरे।
- ৮। विधिन-- द्रहिन-- भाशिकत ।
- ১०। कवि-व्य ।-शांत्रीस्त्र।

vtoB .

সেই হৈতে সোর মন নাহি হর সম্বরণ
নিরস্তর ঝুরে তুটি আঁখি।
একলা মন্দিরে থাকি কভু তারে নাহি বেথি ৫
সে কভু না কেখে আনারে।
আমি কুলবভী রামা সে কেমনে জানে আমা
কোন্ থনী কহি দিল ভারে।
বি ক্থিয়া হিন্দু ভাল দেখিয়া অকাঞ্ছল

না দেখিলে প্ৰাণ কেন কাছে।

हशीनांग करह शन কামু সে পরশমণি ঠেকে গেলা মোহনিয়া কাঁদে !

জনম গোঁয়াতু ছুখে কভ বা সহিব বুকে কামু কামু করি কত নিশি পোহাইব। কুল শীল গেল কোৰা অন্তরে রহিল ব্যথা কামু লাগি গরল ভথিব # কুলে দিকু ভিলাঞ্চলি श्रुक मिर्छ मिन्नू वानि व কামু লাগি এমতি করিমু। ছাড়িমু গুহের'সাধ কাসু কৈল পরিবাদ তাহার উচিত ফল পাইকু ॥ অবলা না গণে কিছু এমতি হইবে পিছ তবে কি এমন প্রেম করে। ভাল মন্দ নাহি জানে পরমুখে বেবা শুনে তেঁই ত অনলে পুডে মরে॥ वष्रु हशीबाटन क्य প্রেম কি আনল হয় च्धूरे दब च्धामग्र नाटग । ছাড়িলে না ছাড়ে সেহ এমতি দারুণ লেহ ১৫ ननारे हिवाब मात्य कार्ण ॥ ে। শুরু দিঠে দিছু বালি—শুরু জনকে অপমানিত ও ছ:খিত করিলাম। शत्यात्मात्म-भाष्ठीखत्।

কাহারে কহিব मटनत्र मत्रम কেবা বাবে পরতীত। হিয়ার মাঝারে मन्म दक्ता नमारे हमरक हिंड । দাঁড়াইতে নারি ৫ मन इन इन जांचि।

পুলকে আকুল দিক্ নেহারিতে नव श्रोममन (मिश्र B স্থীর সহিতে অলেরে বাইতে সে কথা কহিবার নয়। যমুনার জল करत वंशमल তাহে কি পরাণ রয়। कुटलत धत्रम রাখিতে নারিমু কহিলাম স্বার আগে। কহে চণ্ডীদাস তাম ক্রনাগর ১৫ ननारे श्रियां स्वाटन ॥

दरहें।

व्यानित व्यविद्या-भाग पूर्ध विभादेता। লাগিল গরল যেন মিঠ ভেয়াগিয়া ॥ ভিভায় ভিভিল দেছ মিঠ হবে কেন। খলন্ত অনলে বেন পুডিছে পরাণ॥ वाहित्त अनम चल पर्ध नव लादक। অন্তর পুড়িয়া উঠে তাপ লাগে বুকে 🛭 পাপ দেৰের তাপ মোর খুচিবেক কিসে। কামুর পরশে বাবে করে চণ্ডীদানে । ১। अभिदा-भाना-अमृत्जद मदवर। २। मिठ-मिहेच।

একে काल देश भारत नग्रील द्योवन। व्यात कान देशन (मात वान कुम्लावन ॥ व्यात कान दिल स्मात कमस्यत उन। व्यात कांग दिल मात्र यमुनात कल ॥ আর কাল হৈল মোর রভন ভূবণ। জার কাল হৈল মোর গিন্ধিপোবর্দ্ধন ।

20

¢

5.

এত কাল সনে আমি থাকি একাকিনী।

এমুন ব্যথিত নাই শুনরে কাহিনী।

ভিল চণ্ডীদাস কহে না কহ এমন।

কার কোন দোৰ নাই সব এক জন।

965

युष्टे ।

কেন বা কামুর সনে পীরিতি করিমু।
না খুচে দারুণ লেহা ঝুরিয়া মরিমু ॥
আর জালা সইতে নারি কত উঠে তাপ।
বচন নিঃস্ত নহে বুকে খেলে সাপ॥
জনম হৈতে কুল গেল ধরম গেল দুরে।
নিশি দিন মোর মন কামু লাগি ঝুরে॥
নিষেধিলে নাহি মানে ধরম বিচার।
বুবিমু পীরিতের হয় স্বতন্ত্র আচার।
করমের দোব রে জনমে কিবা করে।
কহে বড় চণ্ডাদার বাণ্ডলীর বরে॥

•••

8 1

যাহার সহিত বাহার পীরিভি
সেই সে মরম জানে।
লোকচরচায় ফিরিয়া না চাই
সদাই অস্তরে টানে ঃ
গৃহকর্ম্মে থাকি সদাই চমকি ৫
শুমরে শুমরে মরি।
নাহি হেন জুন করে নিবারণ

ষেম্ভ চোরের নারী।

ঘরে গুরুজনা গঞ্জয়ে নানা

্ ভাহা বা কহিব কি । ১৫ সমৰ সমান ক্ষে অপমান

বন্ধুর কারণ সে ॥

কাহারে কহিব কোনবারিবে কে কানে মরম-ছুখ।

हशीमांग करह

कब्रह द्यांवना ३०

ভবে সে পাইবে স্থ।

১৫-১৬। ছঃধের কথা প্রকাশ করিরা বলিলে ছঃব কমিরা বাইবে।

060

গান্ধার। .

थिक् तक कोवरन (य भन्नाथीन कीरम । তাহার অধিক ধিক পরাধীন হয়ে । এ পাপ কপালে বিহি এমতি লিখিল। স্থার সায়র মোর গরল হইল॥ অমিয়া বলিয়া যদি ডুব দিসু ভায়। Œ গরল ভরিয়া বেন উঠিল হিয়ায় 🛚 শীতল বলিয়া বদি পাষাণ করি কোলে। পীরিতি-অনল-ভাপে পাষাণ সে জলে ! ছায়া দেখি বসি যদি তক্ষলতা বনে। ম্বলিয়া উঠয়ে তমু লভা পাভা সনে এ 30 यम्नात करन शिशा वित निहे याँ। পরাণ জ্বডাবে কি অধিক উঠে তাপ । অতএ এ ছার পরাণ যাবে কিসে। निहरत अधिम मूरे अ शतन विद्य ॥ চণ্ডীদাস কৰে দৈব গতি নাছি জান। 30 দারুণ পীরিভি মোর বধিল পরাণ n আমি ক্ল-প্রেমের অধীন হইরাছি বলিরা অপরে বাহাতে স্থৰ পার, আমি ভাহাতে পাই না।

১৩। এডএ—অডএব। • ১৪। নিচয়ে—নিশ্চয়।

968

কালিয়া কালিয়া

বলিয়া বলিয়া

बनाम कि स्थ शासू।

हिन्ना प्रशति পরাণ পোড়নি মনের অভিনে সমু॥ মরিতু মরিতু मित्रा राष्ट्र ए 'ঠেকিমু পীরিভি-রদে। আর কেহ জানি এ রসে ভুলে না कंक्टिन कानित्व त्नारव ॥ এ ঘর করণ বিহি নিমাকণ বসতি পরের বলে। মাগ এই বর মরণ সকল কি আর এ সব আশে। এখনি জানিলে আর কি জানিবে জানিবে পীরিতি শেবে। অনেক যতনে পেয়েছি সে খনে ১৫ তাহা জানে চণ্ডীদাসে #

.

এ ঘর করণ বিধি নিদারুণ পীরিভি পরের বলে।

হেন করে মন হউক মরণ

আর বত অপবশে ।
বাহির বেড়াতে লোকচরচাতে
. ° বিষম হইল ম্বরে ।

পীরিভি বলিয়া বভেক বৈরী ১৫

আপন বলিব কারে ॥

রাধা মেনে কেহ নাম নাহি লবে

এখানে অমনি মলে।

চণ্ডীদাস বলে সবারে পাইবে
বঁধু আপনার হলে॥ ২০

.

কত ষর বাধির হইব দিবারাতি।
বিষম হইল কালা কামুর পীরিতি ।
খাইতে না কচে অল্প শুইতে না লল্প মন।
বিষ মিশাইলে বেন এ ঘর করণ ।
পাসরিতে চাহি বদি পাসরা না যায়।
ধূষের অনল যেন কলিছে হিয়ায় ॥
হাসিতে শ্যামের সনে পীরিতি করিয়া।
নাহি যায় দিবা নিশি মরয়ে ঝুরিয়া ॥
পীরিতি এমন স্থালা জানিব কেমনে।
তবে কেন বাড়াই লেহা কালিয়ার সনে ॥
১০
শীরিতি-গরলে মোর হেন গতি জেল।
আছিল সোনার দেহ হৈয়া গেল কাল ॥
তিলেক বিচ্ছেদ পাপ পরাণে না সহে।
এমন পীরিতি বিল্প চণ্ডাদানে কহে ॥

७७१ यरहे।

পীরিতি লাগিয়া দিতু পরাণ নিছনি।
কাতু বিনে দোসর তু কাণে নাহি শুনি॥
রূপ নির্থিয়া আরতি নাহি ছুটে।
বোল কি বলিতে পারি বত উঠে চিতে॥
মনোছুখে অদ্যে,সদাই সোঙ্রিয়ে।
কাতুপরসঙ্গ বিসু ভিলেক না, কায়ে॥

١.

বাহার লাগিয়া আমি কাঁদি দিবারাতি।
নিছিয়া লয়েছি তারে কুল শীল জাতি॥
আর যত অভিমান দিসু বঁধুর পায়।
বড় চঙীদাস কতে বেবা বারে ভায়॥

attenter a

বলি বা পীরিভিথানি স্কলের হয়।
নয়নে নয়নে মিলন হইলে
তবে সে কিরিয়া লয়॥
বে মোর পরাপের মরম ব্যথিত

তারে বা কিসের ভয়।

অতি গুরস্তর

বিষম পীরিভি

ঐচন পীরিভি

नक्लि भन्नार्य गन्न ॥

অবলা হইয়া বিরলে রহিয়া

না ছিল দোসর জনা।

হাসিতে বাঁশীতে গীতের ঝামরু ১০

এ বড় হুগড়পণা॥

বেন মলয়জ শিলায় খবিতে

অধিক সৌরভ হয়।

শাম বঁশুয়ার

্ৰিক চণ্ডাদাস কয় ॥ ১৫ ১-৩। বদি বা পীরিতি অন্তনের হয়।

नव्यत् नव्यत् इहेन विनन

नत्रान नत्रान इंड्ल भिन्न

তৰে কেন প্ৰেম ফিরিয়ানা লয়।—পাঠান্তর। ১০-১১। হাসিতে হাসিতে পীরিতি করিয়া

পরাণ উপরে হানা।—পাঠান্তা।

४२ । यनत्रमः हन्तन ।

...

शंचार ।

ৰক্ত নিবারিয়ে চিতে নিবার না বার রে। আন পথে চলিতে চার আন পথে ধার রে। এ ছার রসনা মোর হইল কি বাস রে।
বার নাম না লইব তার নাম লর রে॥
এ ছার নাসিকা মূই কত করু বছা।
তবু ত লারুণ নাসা পার তার গছা।
পে কথা না শুনিব করি অনুমান।
পরসক্ষে শুনিতে আগনি বার কান॥
ধিক্ রক্ত এ ছার ইন্সির মোর সব।
সদা সে কালিয়া কানু হর অনুভব॥
চণ্ডীদাস বলে রাই ভাল ভাবে আছে।
মনের মরম-কথা কারে জানি পুছ॥

¢

١.

১। চিতে—ভার।—পাঠাবর।

২। আন পৰে বাই সে কামু পৰে ধার রে ।—পাঠান্তর।

...

41

কোন্ বিধি সিরজিল কুলবতী নারী।
সদা পরাধীন ঘরে রহি একেশ্বরী ॥
ধিক্ রছ ছেন জন হয়ে প্রেম করে।
বুধা সে জীবন রাখে তথনি সে মরে ॥
বড় ডাকে কথাটি কহিতে বে না পারে।
পরপুরুবেতে রতি ঘটে কেন ভারে ॥
এ ছার জীবনের মুই শুচাইন্মু আল।
চণ্ডীদাস কচে কেন ভাবহ উদাস ॥

943

विश्रात्रेष्ठा ।

ধাতা কাতা বিধাতার কিখানে দিরে ছাই।
জনম হৈতে একা কৈলে দোসর দিলে নাই।
না দিল রসিক মৃঢ় পুরুবের সনে।
এমতি আছিল মোর এ পাপ বিধানে।
বার সাগি প্রাণ কাঁদে তার নাহি দেখা।
এ পাপ কর্মে সোর এমতি দেখা কোঁধা।

ে ব্যৱ মুখারে আগুন দিয়া বাব বঁ ধুর পালে।
আরতি পীরিতি তবে কতে চন্ডাদানে ॥

>। বাতা কাতা বিধাতার কপালে দিয়াছি ছাই।
[কাতা—কর্জা] —পাঠান্তর।

০। না দিশ রসিক জন মোর পুরুবের সনে।—পাঠান্তর।

1) বাব বঁ ধুর পালে—বাব দুর্দেশে!—

.....

৮। আরভি পুরিবে কহে বিশ্ব চণ্ডীদানে ॥---

41

কাহারে কহিব ছখ কে জানে অন্তর।
বাহারে মর্মী কহি সে বাসরে পর ॥
আপনা বলিতে বুঝি নাহিক সংসারে।
এত দিনে বুঝিসু সে ভাবিয়া অন্তরে॥
মনের মরম কহি জুড়াবার তরে।
বিশুপ আগুন সেই কালি দের মোরে॥
এত দিনে বুঝিলাম মনেতে ভাবিয়া।
এ ভিন ভুবনে নাহি আপন বলিয়া॥
এ দেশে না রব একা বাব সুরদেশে।
সেই সে যুক্তি কহে বিজ চণ্ডাদাসে॥

शनना ।

শিশুকাল হৈতে প্রবণে শুনিসু সহত্ব পীরিতি কথা।

সেই হৈতে মোর তমু কর কর

ভাবিতে জন্তবে ব্যথা॥ দৈবেৰ ঘটিতে ব'ধুর সহিতে ৫

मिलन इरेटव यदा।

মান অভিমান বেদের বিধান

ধৈরজ ভাজিবে ভবে॥

লাভি কুল বাল দিভাম ভিলাঞ্চলি

30

ছাড়িমু গভির আশ।

श्रुष क्यूम

नंबर सरह

সকলি করিছু নাশ ।
কুলে কলছিনী বলি দেয় গালি ।
গুরু পরিজন মেলি।

কাতর হইরে আদর করিরে ১৫ লইফু কলক্ষের ভালি ॥

চোরের মা বেন পোরের লাগিরা ফুকরি কাঁদিতে নারে।

কুলবভী হয়ে শীরি**ভি করিলে** এমতি **বটিবে ভারে** ॥

মুই অভাগিনী কেবল ছুখিনী সকলি পরের আপে।

আপনা থাইরা পীরিতি করিমু লোক শুনি কেন হাসে।

চণ্ডীদাস বলে পীরিতি লক্ষণ ২৫ শুন গো বরজ-নারি।

পীরিতি ঝুলিটি কাঁথেতে করিয়া পীরিতি নগরে কিরি ॥

विटिङ—वर्षेनात्र।

-11

কালার পীরিতি

না ধাইলে থাকে হুখে।

গরল সমান

পীরিতি অনলে পুড়িরা মরে বে জনম যায় ভার ভূবে॥

আর বিষ খেলে ডখনি মরণ্ ৫ এ বিষে জীবন শেব।

नना इट्कट् यूक्रति निगष्ठे

লট পট ভার বেশ।

নয়নের কোণে চাবে বাঁহা পাবে

त्म श्राटक कोर्यत्मत्र व्याम ।

2)

ঠেকিয়া রহিল কহে বড়ু চণ্ডীদাস। নিমুড়া। বে জন না জানে পারিতি সরম সে কেন পীরিতি করে। ভাপনা না বুঝে পরকে মজায় পীরিতি রাখিতে নারে । व तर्भ ना स्नि পীরিভি মরম ৫ त्महे त्मर्ण हाम वाव। মনের সহিত ক্রিয়া যতন मनदक প্রবোধ দিব ॥ করিয়া বতন পীরিডি রডন পারিতি করিব তায়। ১০ ছুই মন এক করিতে পারিলে তবে সে পীরিতি রয়॥ करर छछोषारन मत्नत्र छन्नारन এমতি হইবে বে। সহজ ভজন পাইবে সে জন ১৫ সহজ সাসুৰ সে । নিমুড়া। পীরিতি বিষম কাল। পরাবে পরাবে মিলাইডে জানে ত্তিব সে পীরিতি ভাগ। শ্রমরা সমান আছে কড জন মধুলোভে করে প্রীত। मधू कूत्रादेख উড়ি বার চলি এমতি তাদের রীভ । হেন অসরার , সাধ নহে কভু

🧭 সে মধু করিতে পান।

অজ্ঞানী পাইতে পারয়ে কি কড় ১০ রসিক জানীর সন্ধান । মৰের সহিত বে করে পীরিভি ভারে প্রেম স্থপা হয়। অটল ক্সপের সেই সে রসিক **कारभा पत्रभाग भाष्र ॥** >e মনের সহিতে পীরিভি করিয়া থাকিব বন্ধপ আশে। শ্বরূপ হইতে ও রূপ পাইব करर विक हशीपारन ॥ পীরিভি পীরিভি বর্মভি মুরভি क्रमरत्र मात्रिम रम । পীরিতি না ছাড়ে পরাণ ছাডিলে পারিতি গড়ল কে॥ পীরিতি বলিয়া এ ভিন স্পাঁধর ৫ ় না জানি আছিল কোণা। পীরিভি কণ্টক স্থানরে, স্কুটিল পরাণ পুতলি বধা ॥ পারিতি পারিতি পারিতি আনল विश्व विश्वा (भग। >• পীরিতি জানল নিভাবে না বিভার क्तरत त्रक्ति त्यन । 💙न विदनांतिन চণ্ডাদালের বাণী পীরিতের মা কও কথা। পীরিভি লাগিরা পরাণ ছাড়িলে ১৫ পীর্মিত রহিবে কোণা । ७। अवर् छनिछात्र क्या ।-- शांशेख्य । **>>->२ । विषय जनग** निकारेल नरह হিরাম রহিল শেল।—পাঠান্তর।

১৪। পীরিতি না কহে কথা।— ১৬। পীরিতি বিশার তথা।— व्याप्ति ।

- কেনে কৈন্তু পীরিভির সাধ। পীরিভি ব্যবুর হৈতে বভ দুখ পাইসু চিভে स्वित्न गणित्व भवनाप । मूँ रे यनि जानिजू এড ভবে কেন হব রভ না করিড় ছেন সব কাজ। ভূলিমু পরের বোলে কুলটা হইমু কুলে জগৎ ভরিয়া রইল লাজ। বখন পীরিভি কৈল আনি চাঁদ হাতে দিল পুন ভাছে না পাই দেখিতে। कि कतिएक कि ना कति व्यक्तिया वृतिया मित्र ১० व्यवस्थित थोश होत्र निष्ठ । পীরিতি অ'াধর তিন यांचात्र क्षण्टग्र हिन তার কিবা লাজ কুলভয়। কহে বিজ চঙাদাস বে করে পীরিতি আশ ভার বুঝি এই সব হয় ৷ ১৫

4

পীরিভি বলিরা এ ভিন জঁ খের

এ ভিন জুবন-সার।

এই নোর মনে হর রাভি দিনে

ইহা বই নাহি জার ॥

বিহি একচিতে ভাবিতে তাবিতে ৫

নিরমাণ কৈল পী।

স্থার সারবে , মধন করিয়া ভাহে উপজিল রি ॥

পীরিভি-রসের সারর মধিয়া ভাহে উপজিল ভি। ১০

সকল কুখের এ ভিন আঁখির

• উপৰা বলিব কি ॥

বাহার সরমে পশিল বড়তে এ ভিন জাখন সার।

ज्याच्याचापप्रगाप्ताः .

थतम कतम जनम जनम ७३म , ५१

কিবা জাভি কুল ভার।

এ হেন পীরিতি না জানি কি রীঙি পরিণামে জানি হয়।

পীরিতি বন্ধন না বার পঞ্জন

বিক চণ্ডাদানে কয় । ২০ ৭। রনের সাগর সহন করিছে।—পাঠারর।

৯-১০) পূনঃ বে মধিরা অমিরা হইল তাহে ভিরাইল ভি।—পাঠান্তর।

>२। जूननां निव (व कि !—

১৬। কি তার জনবে আর।---

>>। পীরিতি বন্ধন না বার খণ্ডন।-- "

41

পীরিভি পীরিভি মধুর পীরিভি এ ভিন ভূবনে কর।

পীরিতি করিয়ে বেশিলাম ভাবিয়ে কেবল গরলময় ৷

পীরিজের দেখা গুনিব হে বেখা ৫ তথার নাহিক বাব।

মনের সহিত করিরা পীরিত স্করণে চাহিরা বব ॥

এমতি করিয়া স্মতি হইরা

बहित खन्नश कार्त्य । ১०

স্বরূপ প্রভাবে সে রূপ মিলিবে ক্ষে বিজ চণ্ডীদাসে ॥

41

শ্রামের পারিতি মূরতি হইলে ভবে কি পরাণ কলে।

পরাণ পীঞ্জি সমান করিলে েকে ভারে জীরন্ত কলে। विष होन छोन বঁধু লাগি পাউ ৫ তৰে লে এ ছখ টুটে। জান উপায় শুনি मरनत्र जाश्वनि वनदक बनदक छेटी। পীরিতি পরশ পৰাণ ৰতন जूदिन् समन पूरन। পীরিতি রতন व्यक्षिक रहेन পরাণ উঠিল চুলে ॥ লাভি কুল বলি पिरत जिनाश्चीन কি আর সভী চরচাতে। कीवन दर्शवन ১৫ তমু ধন জন নিছিত্ব কালা পীরিতে॥ হিয়ার রাখিব কারে না কহিব পরাবে পরাণ জোডা। ৰি জানি কি কেণে कि शिया कि देखता মরিলে না যায় ছাভা ॥ ভিৰোক মরিকে विक ना दक्षिट्य नग्रत चर्नान रचा। करह हखीमांग মরমে রহিল পীরিভি অমিয়া সিজু। .6-७। नहे, बांव (न छाम ধনের লাগি পাউ करव रन व इव इरहे ।-- शांतिका । ৭। আন মত গুণি—) श्रांव गंगान পীরিভি রভন-- " **>> । नै**तिकि दशोषि দিখাণ হইল---১৫-১৪। व्यक्ति कृत वति पिष्ट बनाश्रीन

পার সভী চরচাতে।--পাঠান্তর।

-

বিধির বিধানে হাম আনল জেলাই।

যদি সে পরাণ বঁধু তার লাগি পাই ।

শুকু সূরজন যত বঁধুরে ঘেষ করে।

সন্ধ্যাকালে সন্ধ্যামূনি তার বুকে পড়ে ।

আপন দোষ না দেখিয়া পরের দোষ গায়।

কাল সাপিনী ষেন তার বুকে খায় ॥

আমার বঁধুকে যে করিতে লাহে পর।

দিবস স্থারে বেন পুড়ে তার হর ॥

এতেক বুবতী আছে গোকুল নগরে।

কে না বঁধুকে দেখে বুক ফেটে মরে ॥

১০

বাশুলী আদেশে ঘিল চণ্ডাদাস ভণে।

তোমার বঁধু তোমার আছে গালি পাড়িছ কেনে ॥

১।

বিধির বিধান—গাহঁত্বা ও সামাজিক রীতি-নীতি।

3

8। नद्यामृति-- এक व्रकम नाम।

ননদী-বচনে বোর পাঁজর বিধে থুগে ॥—পাঠান্তর ১-১০। বাওলী আদেশে কবি চঙীদানের গীত। আপনা আপনি চিত করহ সহিত ॥—

পীরিভি পীরিভি সব জন কৰে পীরিতি সহল কথা। বিরিখের ফল নহে ভ পীরিভি नाहि मिल्न यथा उथा ॥ পীরিভি অস্তরে পীরিভি মস্তরে ৫ পারিতি সাধিল যে। পীরিভি রতন ' লভিল যে বন বড় ভাগ্যবান সে ॥ পীরিভি লাগিরা আপনা ভূলিরা পরেতে মিশিতে পারে। পরকে আপন করিতে পারিলে भौतिजि विलहत्र जांदत । ছই ঘুটাইয়া এক অঙ্গ হও পাকিলে পীরিতি আশ। পীরিভি সাধন বড়ই কঠিন ১৫ . करह विक ठशीमांत्र ॥

পীরিতি বলিয়া এ তিন জাঁখর বিদিত ভূবনমাঝে। তাহে বে পশিল সেই সে জানিল কি তার কুল-জর লাজে। বেদ-বিধিপর সব জানে। বহা কি জানে জানে। রসে পর পর রসের জন্তর সেই সে মরম জানে।

· ভাহে উপজিল পী।

०। वितित्थत्र-वृत्कत्र।

হিরার হিরার পরশ করিতে
তাহার তুলনা কি ॥
কহে চণ্ডীদাস শুন বিনোদিনি
পীরিভি রসের ভোর।
পীরিভি করিরা ছাড়িতে নারিবে ১৫
আপনি হইবে চোর।।

a ,

পীরিভি নগরে বদতি করিব পীরিতে বাঁধিব ধর। পীরিতি দেখিয়া পড়সী করিব তা বিন্দু সকল পর 🛭 পীরিতি বারের কুপাট করিব ৫ পীরিতে বাঁধিব চাল। পীরিতি আসকে সদাই থাকিব পীরিতে গোঁয়াব কাল। পীরিভি পালক্ষে শয়ন করিব পীরিতি শিখান মাথে। পীরিভি বালিসে আদিস ভ্যবিব থাকিব পীরিতি সাথে # পীরিতি সরসে সিনান করিব পীরিতি অঞ্চন লব । পীরিভি করম ১৫ পীরিভি ধরম পারিতে পরাণ দিব । পীরিভি নাসার বেশর করিব ष्ट्रिक्टिय नग्राम टकाटम । পীরিতি অঞ্চন লোচনে পরিব षिक हतीयांत्र छर् ॥ ৭। আসকে—আসক্তিতে অধবা 'আসক্' বা 'এসুক্' वेर्क् ७ भारती मृत्यत वर्षदे '(बाव', भीतिष ।

পীরিভি রসের সাগর দেখিয়া নাহিতে নামিলাম তার। নাহিয়া উঠিয়া কিরিয়া চাহিত্তে লাগিল তুখের বার । কেবা নির্মিল **अभ-मदबावब** ७ স্থাময় তার জল। কিরে নিরস্তর ত্রখের মকর প্রাণ করে টলমল । গুরুজন-ছালা स्टाइ (जरुना भएमी किउन मारह। কাঁটাভে সকল कून भागोकन निन गंकिया चार्ड । কলৰ পানায় नमा नारग गांग्र ছानिया थारेल यपि । অস্তর বাহিরে कूष्ट्रे कूष्ट्रे करत ১६ ञ्राच हुच मिल विधि॥ अन विद्यापिन करह हलीशांत्र ज्य इथ इहि छाई। বে করে পীরিতি স্থাৰ লাগিয়া ছুখ ভার ঠাই ঠাই। 2.) । तत्त्रत—श्रूर्पत्र !—शांठीखत्र । । छ्यांमब—नित्रमण।— " ১२। **जिक्का—(विक्रृ**वा!— "

ভরম সরম

পীরিভি করিত্র

কুলের ধরম

হাসিতে হাসিতে

मकलि देश होड़ा।

अदव्हा चेरेन गांग ।

शांत्रिगारम हर १ কে জানে এমন এমন পাইব ছখ। ক্রিমু আরতি তবে কি পীরিতি এ হেন প্রেমের মুখ । এই मिथि शांता প্রেম হৈল হারা বাঁচিতে সংশয় ভেল। আছিল আমার সোনার বরণ কাল হৈয়া গেল ॥ শ্রামের পীরিভি **हशोशांग वटन** (व धनी कत्रियां हि । . পীরিভি আদর সে জন করিয়া ১৫ **(क्वा क्वांका क्वांक क्वांक्ड 8**

चररे ।

জনম গেল পরছুখে কত বা সহিব।
কামু কামু করি কত নিশি পোহাইর ॥
অন্তরে রহিল বাধা কুলে কি করিবে।
অমুরাগে কোন দিন গরল ভবিবে ॥
মনেতে করেছি কুলে দিব তিলাঞ্চলি।
দেশান্তরী হব গুরুদিঠে দিরা বালি ॥
ছাড়িমু গৃহের সাথ কামুর লাগিরা।
পাইমু উচিত কল আগে না বুরিরা ॥
অবলা কি জানে, এমত হইবে পাছে।
তবে এমন প্রেম করির কেন বেচে ॥
তবে এমন লামনা সঁপেছি হে মন।
তেঁই সে জনলে পুড়ি বার দের প্রাণ ॥
চণ্ডাদাস কর প্রেম হর স্থাময়।
কপালক্রমে অমুডেতে বিষ উপজয় ॥

বসতি করিব পারিভি নগরে পীরিতে বাঁধিব ঘর। পীরিতি প্রেয়সী পীরিভি পড়সী অক্ত সকলি পর॥ এ দেহ রাখিব ৫ পীরিভি সোহাগে পীরিতি করিব কা। পীরিভিন্ন কথা ' সদাই কহিব পীরিতে গোঁয়াব কাল ৷ শর্ন করিব পারিতি-পালম্বে পীরিতি-বালিশ মাথে। পীরিভি-বালিসে আলিস করিব রহিব পীরিডি সাথে ॥ সিনান করিব পীরিভি সায়রে পীরিতি জল যে খাব। प्रिंभने (व अन) १ পীরিভি ছুখের ় পরাণ বাঁটিয়া দিব ॥

পীরিতি পুইব क्षय-शिक्षरत विष हिंदीमात्र ज्या ॥

ं ब्रहिव वक्तुया मत्न ।

নাসাতে পরিব

পীরিভি বৈশর

ধিক্ রছ কুলবতী কুল ভেয়াগিয়া। মররে খলের সনে লেছ বাড়াইয়া 🛭 চিক্ টাচর কেশ বেশ খোরাইরা। ধুলার ধুলর কাঁদে নিশি পোহাইয়া 🛚 খাতি কুলশীল দোবে খার গুরুজন। काशास्त्र ना करह तमहे मन्नम त्यसन ! কে ভার মরমে আছে মরমে পশিরা। भत्रम्-८वएना जात्र सहरव वाँछिता ॥

চঙীদাস কছে সেই বেদনা জানিয়া। পীরিভি বেয়াধি রহে মরমে লাগিয়া ॥ · › ১০

सामनीमा।

भारम शृनिमा নিরমল রাভি উজর সকল বন। বিকশিত ভথি মলিকা মালভী মাতল ভ্ৰমরাগণ া কুল ভরি ভাল ৫ ভক্লকুল-ভাল সৌরভে পুরিল ভার। দেখিয়া সে শোভা অগমনোলোভা ভুলিল নাগর রায়॥ নিধুবনে আছে রঙন-বেদিকা মণিমাণিক্যেতে বাঁধা। কটিকের তক্ল শোভিয়াছে চারু ভাহাতে হীরার ছাদা ॥ প্ৰধান মুকুডা চারি পাশে সাজে গাঁথনি আটনি কত। ভাহাতে বেড়িয়া কুঞ্চ-কুটীর ১৫ নিরমাণ শত শত ॥ **छे**फिट्ड छेशदत নেতের পতাকা কি তার কহিব শোভা। অতি রম্য স্থল দেব অগোচর কি কহিব তার আভা। मानिदकत्र चर्छ। কিরণের ছট।

এমতি মগুপ বর।

অতি অপরূপ **ह**श्रीमान वरन নাৰিক তাহার পর ॥ • यून इटेंट्ड छओमारमद्र 'दामनीमाद' वर्फ नार्थका নাই। তবে তিনি কৰিমুণত কলনার বেগে খনেক प्रश्न कथा बिनदा (किनदार्हन। अविविधनात वान, **बिइएक्त शांत्रका-त्वरण त्राधिकात निकर्वे जाशमन छ** স্ত্ৰীতে তাঁহার চিত্তৰিমোহন, এ সৰ কথা ভাগৰতে

কানোৰ। . ব্ৰশী-মোহন বিলসিতে মন গিয়া ব্ৰহ্মাবনে বসিলা বভনে त्रमिए वत्रक धनी ॥ मध्य मूत्रली शृद्ध वनमाली ए রাধা রাধা বলি গান। বনের ভিতর একাকী গভীর বাজায় কভেক তান। অমিয়া নিছনি ৰাজিছে সঘন मधूत मूत्रनी गीछ। অবিচল কুল রমণী সকল শুনিয়া হরল চিত॥ ভাবণে বাইয়া রহল পশিয়া বেকত বাজিছে বাঁশী। আইস আইস বলি डाक्रत भूत्रमी ১৫ বেন ভেল স্থরাশি # পুলক মানস আনন্দ অবশ ञ्कूमात्री धनी तार्थ। গৃহকর্ম বত হৈল বিসরিত नकन कतिन वार्ध ॥ রাইএর অত্যেতে বভেক রমশ্ব কহয়ে মধুর বাবী। ঐ ঐ শুন কিবা বাজে তান কেমন করিছে প্রাণী ! সহিতে না পারি মুরলীর ধানি ২৫ পশিল হিন্নার মাঝে। हरेन वाउँ**नो** ' वंत्रज-उसनी হরিল কুলের লাজে। কেহ পতি সনে আছিল শন্ননে ভাৰিয়া ভাষার সঙ্গ। 9.

কেহ বা আছিল সধীর সহিত কহিতে রভগ রজ। কেহ বা আছিল ष्ट्रक जावस्टरन চুলাতে রাখি বেশালি। ভাজি আবর্ত্তন হই আগ্রয়ান ৩৫ अक्न रन राम हिम H কেছ শিশু লয়ে কোলেভে করিয়ে ছ্থ করার পান। শिশু किन कृत्म हिन शिन खरम শুনি মুরলীর গান॥ ৪০ কেছ বা আছিল শয়ন করিয়া नग्रत्न चाहिन नोप । বেমন চোরাই হরণ করিল মানসে কাটিল সিঁদ 🏽 কেহ বা আছিল রন্ধন করিতে ৪৫ ভেমতি চলিয়া গেল। कृष्णगूथी देशग यूत्रमी छनिया সব বিসন্নিভ ভেল 🛭 সকল রমণী शाहेनु अमनि কেহ কাহা নাহি মানে। যমুনার কৃলে কদখের মূলে मिनन शांत्मत जान ॥ **ত্ৰজ**নারীগণে দেখিয়া তখনে হাসিয়া নাগর রায়। রাস-বিশসন कतिम ब्रह्म ৫৫ বিশ চঙীদাস গায় ॥ রমশীমোহন त्रमश्च त्मास्टिक टन पिटन कर्तन दवन। চুড়ার টালনি কি বা সে কাঁথলি

বিচিত্ৰ স্কুচাক্ল কেশ।

মণি হেমমালে	বেড়িয়া ছ্ধানে	¢	তা দেখি রমণা ভ	गैदय ।	•
তাহাতে মুক্ত	1-मान ।		নৰ মধু ধেন পিয়ে	T N	
প্রবাল গাঁথিয়া	তাহে খরি দিয়া		হাসির হিলোলে	ভারা।	
· দেখ না শোডি	চহে ভাল।		অমিয়া বরিখে ধা	রা 🛮	
নব নব ফুলে	শল্পিকার মালে		নবীন চাতক ধেন	1	
ভ্ৰমর ধাওল ে	কাটা।	>•	খনরস পিয়ে খন।	l .	١,
পরিমল আদে	উড়ি বৈসে ভাহে		চাহনি চঞ্চল শৱে	11	
কিবা ভাহে প	রিপাটি॥		ভারা কি রহিবে	चरत्र ॥	
ছকাণে শোভিত	कमरसद स्व		নব নব বেশখানি		
কি শোভা ক	ইব ভায়।		রহিবে কোন বা ২		
ময়্র শিখণ্ড	ঝলমল করে	>¢	মুরলী অপার গান		>4
তাহে সে উড়ি	ছে বায় 🛭		পাষাণ গলিয়া ৰা		
নাগর বরণ	বেন নবঘন		সে নৰ চলন গভি		
অঞ্চন গণিয়ে	কৈসে।		মদন মোহিত তা		
ভাঙ-ধনু বাণে	কামের কামানে		চণ্ডীদাস রূপ হো		
	केटम ॥	२०	মূৰ্চিছত ধরণী পঢ়ি	7 N	२०
ব্যায়র ব্যায়ার ক্লাবিক	करत भारत तांनी				
मन्त मन्त राजि	TCH FIGH TI II		40.4		
নক নক হয়ত মুগমদ মাখা গ	•		००० वस्रे	ı	
ু মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ	াায়। নানা আভরণ		•১• হংই বেশ সে স্থবেশ	। স্বতি মনোহর	
় মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ * রভন-মৃপুর পা	ায়। নানা আভরণ য়॥		বেশ সে স্থবেশ	। স্বৃতি মনোহর াগণে।	
ু মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ	ায়। নানা আভরণ য়॥		বেশ সে স্থবেশ	ব্সতি মনোহর াাগণে।	
় মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ * রতন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরণেখর র	াায়। নানা আভরণ য় ॥ ক্রিতে বতন ায়।	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আভরণ জননী নাহিক	স্পতি মনোহর গাগণে। করল শোভন জানে॥	
্ মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ * রভন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরণেখর র এমত মুরভি	াার। নানা আভরণ র ঃ করিতে বডন ার। স্থের আরডি	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আভরণ	স্পতি মনোহর গাগণে। করল শোভন জানে॥	Œ
্ মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ * রতন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মুরতি বিজ চণ্ডীদাস	াার। নানা আভরণ র ॥ করিতে বতন ার। হুধের আরতি	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ শোহিতে অবল নানা আভরণ জননী নাহিক ব নিভূতে উঠিয়া ভাজিয়া আনহি	স্পৃতি মনোহর গোগণে। করল শোভন জানে॥ নাগর শেখর ই কাজ।	Œ
্ মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ রজন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মূরতি দিজ চণ্ডাদাস	াার। নানা আভরণ র ॥ করিতে বতন ার। হুখের আরতি গায়॥ —	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আভরণ জননী নাহিক ব নিভূতে উঠিয়া ভাজিয়া আনহি	স্পতি মনোহর গগৈণে। করল শোভন জানে॥ নাগর শেখর ই কাজ। বাঁশী লয়ে করে	¢
্ মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ * রতন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মুরতি বিজ চণ্ডীদাস	াার। নানা আভরণ র ॥ করিতে বতন ার। হুখের আরতি গায়॥ —	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আজরণ জননী নাহিক ব নিভূতে উঠিয়া ত্যক্তিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল	অভি মনোহর াগণে। করল শোভন লানে॥ নাগর শেখর ই কাজ। বাঁণী লয়ে করে নাগাজ॥	¢
্ মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ রজন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মূরতি দিজ চণ্ডাদাস	াার। নানা আভরণ র করিতে বডন ার। হুধের আর্ডি গার॥ নর্প স্থাক।	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আভরণ জননী নাহিক গ নিভূতে উঠিয়া ভাজিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল	অভি মনোহর গোগণে। করল শোভন লানে। নাগর শেখর ই কাজ। বাঁশী লয়ে করে সাজাজ। মদমন্ত হাতী	
্দ্রগমদ মাখা গ সোনার বরণ রজন-সূপুর পা রমণী রমণ নাগরণেখর র এমত স্রতি ভিজ চণ্ডাদাস ৭। ধরি—সারি—শ্রেণী। ১১। পরিমণ—মধু—প্রাকৃত ব	াার। নানা আভরণ র ॥ করিতে বতন ার। হুখের আরতি গার॥ - দর্গ স্থগর।	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আভরণ জননী নাহিক গ নিভূতে উঠিয়া ভাজিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল	অভি মনোহর নাগণে। করল শোভন জানে॥ নাগর শেখর ই কাজ। বাঁশী লয়ে করে নাগাজ॥ মদমন্ত হাভী	
্ মৃগমদ মাখা গ সোনার বরণ রজন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মৃরতি দ্বিজ চণ্ডাদাস ৭। থরি—সারি—শ্রেণী। ১১। পরিমল—মধু—প্রকৃত থ	াার। নানা আভরণ র ॥ করিতে বতন ায়। তথের আরতি গায়॥ — নর্থ অগন্ধ।	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আজরণ জননী নাহিক ব নিভূতে উঠিয়া ভাজিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল চলিতে গমন অঙ্কুশ নাহিক ব	প্রতি মনোহর গোগণে। করল শোভন লানে। নাগর শেখর ই কাজ। বাঁশী লয়ে করে নসাজ। মদমন্ত হাতী মানে। উপজে তখন	
্ মৃগমদ মাখা গ নোনার বরণ রজন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মুরতি দিক্স চণ্ডাদাস ৭। পরি—সারি—শ্রেণী। ১১। পরিমগ—মধু—প্রাক্তব ব	াার। নানা আভরণ র করিতে বতন ার। হুথের আরতি গার - নর্থ স্থাক। - ন	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আত্তরণ কননী নাহিক হ নিভূতে উঠিয়া তাজিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল চলিতে গমন অঙ্কুশ নাহিক হ মদন বেদন আপন পর কি	প্রতি মনোহর াগণে। করল শোভন জানে॥ নাগর শেখর ই কাজ। বাঁশী লয়ে করে নাগজ॥ মদমন্ত হাতী মানে। উপজে তখন জানে॥	
্দানার বরণ ক্রমণী রমণ রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মূরতি ভিজ্প চণ্ডাদাস ৭। থরি—সারি—শ্রেণী। ১১। পরিমল—মধু—প্রকৃত থ কাল্ডা মোহন মূরতি কার জ্বলা কি রতে ও চূড়ার মন্থ্রের পা	ায় । নানা আভরণ র করিতে বতন ায় । হুপের আরতি গায় - নর্থ স্থগন । ন । বাব ॥ খাব ॥	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আজরণ জননী নাহিক ব নিভূতে উঠিয়া ত্যক্সিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল চলিতে গমন অঙ্কুশ নাহিক ব মদন বেদন জাপন পর কি	প্রতি মনোহর গোগণে। করল শোভন লানে। নাগর শেখর ই কাজ। বাঁণী লয়ে করে সামাজ। মদমন্ত হাতী মানে। উপজে তখন জানে। বিদ্ধিল,ধামুকী	
্ মৃগমদ মাখা গ নোনার বরণ ক্রতন-মৃপুর পা রমণী রমণ নাগরশেখর র এমত মূরতি বিজ চণ্ডাদাস ৭। পরিসারিশ্রেণী। ১১। পরিনল-ন্ধু-প্রাকৃত প ক্রান্ডা মোহন মূরতি কার জ্বণা কি রহে প্র	ায় । নানা আভরণ র করিতে বতন ায় । হুপের আরতি গায় - নর্থ স্থগন । ন । বাব ॥ খাব ॥	૨ ૯	বেশ সে স্থবেশ মোহিতে অবল নানা আত্তরণ কননী নাহিক হ নিভূতে উঠিয়া তাজিয়া আনহি চলিলা সম্বরে নানা বেশ ফুল চলিতে গমন অঙ্কুশ নাহিক হ মদন বেদন আপন পর কি	প্রতি মনোহর গোগণে। করল শোভন লানে। নাগর শেখর ই কাজ। বাঁণী লয়ে করে সামাজ। মদমন্ত হাতী মানে। উপজে তখন জানে। বিদ্ধিল,ধামুকী	

नाना श्रृंभ कूँढि शक्के हुनाति ১৫ मद्रम (वमन ১৫ নিবারণ নতে ় শনহি মাকারে রহে॥ মধুকর মধু পার। नत्रज-त्रमणी রমণ কারণ চণ্ডীদাস কয়ে কিবা স্থানয়ে চলিলা গভীর বনে। নিভূত স্থচার বনে। এই রসভৰ সঙ্কেত বেকভ সেধানে একাকী বৈঠল নাগর কেহ ভ নাহিক জানে। ২০ প্রবেশ করিল বুন্দাবনমাঝে এ क्षा कह ना कारन । २० দেখিয়া নিভূত স্থান। রভন বেদিকা অভি স্থুশোভিত বৈঠল নাগর কান ৷ कारि। অপরূপ রাস ২৫ চণ্ডাদাস কৰে নিভৃত নিকুঞ্জে কুঞ্জ-কুটীর বিহার করিল কাসু। মণি-মাণিকের শুভ। রস-ত্বধ অভি করিতে পীরিভি রতন-জড়িত পরশ-পাণর স্থুই রদের ভমু। অতি অনুপম রঙ্গ। ২৭। রস হুধ রতি—পাঠান্তর। উপরে জড়িত ছেম মরকত ৫ মুকুর কিলে বা গণি। চারি পাশে শেভে মুকুতা প্রবাল গাঁথিয়া মাণিক মণি । वद्गनी। ষমুনার ভট অভি রম্য স্থল ঝালর ঝলকে অতি মুদোহর রভন-বেদিকা তায়। ঐছন কুটীর শোভে। নানা ভরুবর পুষ্প-বিক্সিড পূম্পের সৌরভে দশদিক্ মোহে নানা পক্ষগণ গায়॥ মধুকর ধায় লোভে। ভরুগণাবভ ফুলভরে ভারা ৫ নেতের পতাকা উড়ে অনুপাম লম্বিত ধরণীতলে। কুটীর উপরে দিয়া। मधू वर्षत कड़ ... स्पर दक्ड শত শত কোটা এ কুঞ্ল-কুটার ১৫ ু মধুকর ভ্রমে ভালে। সকল তাহার ছায়া 🛭 मबुत मबुती नाट किति किति বৈঠল নাগর ় • চছুর-শেখর কেকম ধরিয়ে ভারা। চতুর নাগর কান। চাতক চাতকী ডাত্তক ডাত্তকী এমদ আনন্দ দেখিয়া সে কুঞ্চ হংস ক্লোড়ে ডাকে তারা ॥ ৄ • চণ্ডীদাস গুণ গান। यम्मात नीत्व , जनहत्र कित्त २०। **উদ্দে—অ**ভি—পাঠাৰর। শকরী ফ্রিরিছে ভার।

460

कांकि ।

हेन हेन विज विज्ञान ं শরৎ পূর্ণিমার শশী। নটবর কামু यूत्रमी वम्दन সদনে কুটীরে বসি॥ কলরব করু **বত পাখিগণ** ৫ मझ्त्र मृत्रुती नाटम । खमत खमती वंकतः भवाम ডাহুক ডাকিছে সাধে। मनन द्वमन नत्मत्र नन्मन করিতে রাসের লীলা। ১০ নিভূতে বসিয়া নাগর রসিয়া কামেতে হইয়া ভোলা। वम्दन कृषन मूत्रली मूत्रली मूत्रली বাৰুয়ে কতে্ক তান। সদ্ভেত নিশান বাজে আন্তান ১৫ ় ছুটল পঞ্চম গান। প্রিয়,রাধা বলি ডাকিছে মুরলী अनिल अवर्ष युद्य । ষভ গোপনারী ুআন নহে কিছু কাননে চলুহ ভবে॥ ২০ বিশ্বল মরুমে হিয়া আনচান ক্ৰিতে কাহারে নারে। মুনের বেদুন নাহি জানে আন **अनि यन दिया यूद्र ।** . ভনিতে মুরলী . যেমত পাগলী ২৫ वरमञ्जू इतिशी थ्याय । ,ব্রাধ বাণ খেরে ধাওল হইয়ে 📍 **ठाविस्टिक द्यम ठाव ॥** চণ্ডীদাস রলে ব্ৰহ্ম জনা-চিত শাকুল হইয়া গেল। 40

নাহি আন কথা পাই-হিয়া ব্যধা कि वृद्धि कतिव वल ॥

শুন গো মরম স্থি। के छन छन मधूत मृतनी **डाक्टब कमन आधि**॥ रेथबृष्ट ना धरत । প्रांग रकमन करत ইহার উপায় বল। আর কিয়ে জীব গোপের রম্শী ब्रम्मावटन याव छन ॥ এই অমুমান করে গ্রেপীগণ শুনি সে বাঁশীর গীত।

শুধু তমু দেখ এই তমু মোর ১০ তথায় আছমে চিত॥

মুগধ রমণী কুলের কামিনা না জানে আনছ পথ। ষেনক চাঁদের রুসের প্রশ

চকোর অমুহি রুপ।। সে জন পাইলে ্টাদের সুধাটি স্থাপের নাহিক ওর।

কভক্ষণে মোরা ভেটিব নাগর পাবহ তাকর কোড়॥

বেন মেলুরুল ভাহাতে আবেশ ২০ চাতক না পায় বারি।

দে জন পিয়ারে না পাই জাবেশে সে জন হতাশে মরি॥ অলের অাবেশে চাঙ্ক ঝুরয়ে **८७मनि जाम्बा इहै।** २८

व्यवित तमनी ভবে সে জীয়ই जनम गिंडिक (गृहे॥

চণ্ডীদাস বলে চলহ নিকুঞ্চে

ত ভেটিতে নাগর কান।

পু শুন বাঁশী বাজে এই নিশি ৩০

শ্বিতে চলিয়া বান ॥

••> **a**

4

কি করিতে পারে গুরু জুরুজন
হয় হউ অপ্যাশ।
চল চল যাব ় শুাম দর্শনে
ইথে কি আনের বাশ ॥
যা বিনে না জীয়ে আঁথির পলক ৫
তিলে কত যুগ মানি।

সে জন ডাকিছে মুরলী সঙ্কেতে ভূরিতে গমন মানি॥

কেহ বলে শুন আমার বচন রহিতে উচিত নহে।

চল চল বাব রন্দাবনে মোর মনে হেন লয়ে॥

কোন গোপী ছিল গৃহ পরিবারে করিতে গৃহের কাজ।

গুৰ-কাষ্ণ তাৰি চলিল তথনি ১৫ বেমত আছিল সাঞ্চ॥

. আবেশে সুধেতে ঢালিয়া দিয়াছে গাগরি ভরিয়া বারি ॥

চ**লিলা** তুরিভেঁ সব ভেয়াগিয়া **হুশ্ব আবর্ত্তন ছাড়ি।** '

রক্ষাবন মুখে তখনি চলিলা রহল ডেমতি পড়ি 🛭 কোন গোপী ছিল রন্ধন করিতে ২৫ শুধুই হাঁড়িতে শ্বাল। আনহি ব্যঞ্জনে আনহি দেওল

আনাহ ব্যক্তনে আনাহ দেওল
আনহি হাঁড়িতে বাল ।
রক্ষন উপেধি চলে সেই স্থী
শ্রবণে শুনিয়া বাঁলী ।

চণ্ডীদাস কৰে আবেশে গমন হয় হউ কুল হাসি ॥

102

কেহ বা আছিল শিশু কোলে করি
পিয়াইভেছিল স্তন।

ছথপোষ্য বালা ভূমে কেলি গেলা

ছ্গ্মপোষ্য বালা ভূমে কেলি গেলা এছন তাহার মন॥

চলিল গমন সেই বুনদাবন ৫ কাঁদিতে লাগিল শিশু।

ভেমতি চলিল সব পরিহরি চেতন নাহিক কিছু॥

কোন জন ছিল প্ৰভিন্ন শন্ত্ৰনে ত্বনে জনেত্ৰন ছবে। ১০

হেন বেলে শুনি মুরলীর ধ্বনি উঠিল চেতন পেরে॥

বিচিত্র বসনে মুখানি মুছিয়া চলল পভিরে ভাজি।

পতি-কোল সেই • ভাজিল ভখনি ১৫ চলিল বনেতে সাজি ॥

কোন গোপী ছিল কোন আরম্ভনে ত্যজিয়া তথনি চলে।

রসের আবেশে কিছু নাহি জানে কারে কিছু নাহি বলে ॥ ' . ২০

কোন জন ছিল বেদনে তুঃখিত অঙ্গেডে আছিল দোব। শুনি বংশীগীত অহ পুলকিত সব দুরে গেল শোষ। कि वा रम रमधन २० **हशीमांग वटन** অপার অধল রামা। তেঁই সে প্রেমেডে বন্ধন সবাই -গোপের রমণী জনা ॥ 8। जब इस (भन (भव--भार्शका)

8। त्यांच--(बमना।

কাষোগ।

এক গোপী ছিল পভির শয়নে ভ্যবিয়া বাইতে তারে। তার পতি ইহা জানিল শগ্ননে • তাহারে ধরিল বলে॥ এত ৰিশি বল কোণারে পমন ৫ সরম নাহিক ভোর। লোকে অপবশ কুষণ কাহিনী কুলেতে নাহিক ভর । বড় বিপরীত দেখি তোর রীভ এ নিশি কোখায় বাবে। ১০ কুলটা হইলি কলম্ব রাখিলি মারি ছুখ বায় ভবে 🛭 ভ্যজিরা আমারে • বাহ কোথাকারে ध वष् विवय प्रिष । বছত গঞ্জনা শুনি নিঃশবদে ১৫ রহিল কমলমুখী 🛚 বৰন ভাহার বুমাইল পতি

. * তথ্য ত্যজিয়া গেল।

तरनत कारवरण हिनक स्वनती কিছুই নাহি শুনিল ৷ ২০ ভয় পরিহরি চলিল স্থলরী বেখানে নাগর কান। **हशीमांत्र खर्ग** किंदूरे ना मारन এমনি বাঁশীর ভান ॥

कारनाम । আর এক গোপী বাইতে বাহিরে দেখিল তাহার পতি। তাহারে রুষিয়া কহিছে গঞ্জিয়া নিশিতে বাইবে কতি ৷ একে ঘোর রাতি 🌷 ভাষাতে ত্রী জাতি ৫ ভয় নাহিক মনে। নাহি লাজ-ভয় কুলের কলছ कि कति यारेवि वतन ু অনেক গঞ্জিয়া তাহারে ধরিয়া लहेग्रा भूरेन चरत्र।

কাৰড়া।

ক্রমণী এছন রমণী यूत्रनी अनिवा আৰুল হইয়া চিতে। निव (तथ करत মনের সহিতে **छनिया यूवनो गीए**छ । রসের জাবেশে পদ-আভরণ ৫ কেছ বা পরিল গলে। গলা আন্তরণ কোন অন্তরামা

পরিছে চরণে ভালে ॥

शतिन खनग्रमात्व । পরিছে বতন হিয়ার ভূষণ . কটিতে ভূষণ সাজে। কেহ বা পরিল একহি কুগুল শোভই একহি কাণে। वब्रज-ब्रम्भी ১৫ এছন চলল रेथत्रक नाहिक मात्न॥ এক করে পরে কনক-কন্ধণ সিন্দুর পরল ভালে। কোন জন পরে নয়নে অঞ্জন একহি নয়ন চালে॥ ২• নানা আছরণ পরে কোন্ধানে ভাহা সে নাহিক জানে। আবেশে রমণী গমন করল त्मरे बुम्मावन भारत ॥ বসন ভূষণ ২৫ কেছ নবরামা উলট করিয়া পরে। **हशीमान करह** आहीत-त्रमणी চলিয়া বাইতে নারে # ৮। পরিছে চরণভ**লে—পাঠান্ত**র। **A** 1 এই মত সব গোপের রমণী চলিল, নাগরী রামা। রাই পাদে গিয়া চলিল ধাইয়া সঙ্কেত ক্ষহি ধাষা।

চল চল ধনি রাই প্রেমমণি '৫

রসের আবেশে কুহে নবরামা

किंद्रिक वनीत्र, कारन ।

हन हन यांच वटन।

ৰাহুর ভূষণ ক্রক-ক্ষণ

ইথে ধানি আসি রাধার প্রারণে পশিল ষতনে তাই। **उ**र्**न क्**ष्न রমণী অস্তর কহেন হুন্দরী রাই॥ পুন শুন শুন ডাকে ঘন ঘন মধুর মুরলী-ভান। শুনিতে চমকে मूत्रनी धमटक ১৫ চিতে নাহি কিছু আন ॥ রাধার আরভি তা নহে পীর্নিতি তথাই আছুয়ে মন। कहिर्द्ध जकम जन॥ ' २० স্থময়া রাধা বেশ বনাইল বন্ধন করিল জাল। নানা ফুলদাম বেড়ি অসুপাম দিয়া মুকুতার মাল। দ্বসারি মাণিক ভার পালে পালে ২৫ প্রবাল গাঁথিয়া মাল। কনক চম্পক কবন্ধী বেড়ল ভ্রমরা গুঞ্জরে ভাল। সিঁপায় সিন্দুর ভার মাধ্যে মাঝে **(मरब्रुट्ड् ह्न्म्न-रकांग्रे)**। ७० বেন শূলধর চৌদ্ধিকে বেড়ল কি,তার,কহিব ঘটা। নারার_বেশর ্অতি মনোহর হাসিতে মুকুতা খনে। কনক-কাঁচুলি ভার পরিপাটী ৩৫ মুকুতা গাঁথুনি পালে॥ যাঘর কিছিনী वाटक, विशि विश्वि পিঠেতে ছলিছে বাঁপা। ্তাহার,মাঝারে গাঁথি থরে থরে স্বাস কনক-চাঁপা॥

নীল উড়নি

প্রেন-মোহিনী

প্রেনার মৃপুর পার।

চলিতে চরণে পঞ্চম বাজরে

হংস-গমনে বার॥

চণ্ডীদাস বলে বিনোদিনী রাধা ৪৫

রূপে করিরাছে জালো।

দেখিতে নরন পিছলিয়া পড়ে

দেখিতে বাইবে চল॥

907

কাষোদ।

দেশ সধি অপরূপ মনোহর।

এ ভব সংসারমাঝে হেন কভু নাহি দেখি
বেশে যেন করে চল ঢল।

মাঝে রসবতী রাধা অজ্জন হয়ে বাধা
পাছে দেখি ধরিয়া রহায়।

ভরেতে আকুল হয়ে ভুরিতে রাধারে লয়ে
ব্রন্দাবন মুখে সবে ধায়।

মন্দ মন্দ গভি চলে রাই কহে কুভূহলে
আজ বড় আনন্দ অপার।

সে রূপ আনন্দনিধি আজু সে মিলাব বিধি ১০
দেখিব চরণ তুটি তাঁর।

ভাসিব আনন্দ-রসে পূরিব যতেক আশে
ভবে হয় কামনা পূর্ণিত।

চণ্ডীদাস কহে ভাগে একা হোখা বছনাথে

००४ चररे।

वांधानाटम वाँनी शांत्र शीख ॥ >৫

শ্রাম-সন্ত্রমালা বিনোদিনী রাধা জনিতে জনিতে বার। রামের জাবেশে জানন্দ-হিল্লোলে ওরলনরনে চার ।

অসীর অপার वर्षं विषग्ध ৫ ञ्च्यती (म धनी ताई। च्याम प्रज्ञाटन हिन्दा दश्जाटन স্থা ভাদ-গুণ গাই॥ मना मना गंडि ठलन मांश्री বেমন সোনার লতা। কিবা সে ভড়িৎ চলিল ভুরিভ कि कंत डारांत्र कथा। क्रोमिटक र्रगाथिनो मारक वित्नामिनो **চলে সে আনন্দরসে।** কেহ কোন যেন সম্পদ্ পাইয়া ১৫ হুখের সায়রে ভাসে ॥ পৰে যেতে কৰে রাধা বিনোদিনী क्छ मूद्र वृन्मावन। কহ কহ দেখি কোন্খানে আছে त्रभी जनात धन ॥ আগে হের দেখ ছু আঁখি চাহিয়া এই উপবনমাঝে। ঐখানে বসিয়া নাগর আছেন **रमथह** दकीन वा काटन ॥ চণ্ডীদাস বলে গোপিনীর বোলে ২৫ ठाहिया संस्थित बाहै। चन चन द्रव मूत्रनीत भवेष তাহাই শুনিতে পাই ॥ ১৬। সাররে—পাথারে—পাঠা**ভ**র।

कानका ।

রাধার আরতি পীরিভি দেখিয়া * কছেন কোন বা সখী। আজি সে ভোমারে মিলব স্থাদিন

कमल नग्न जाबि ।

जांचि छन छन ए প্রেম অঞ্জলে ं · इत्र श्रुलक मानि। প্রেমের হভাশে কহিছে নিকশে करहन त्रमण धनी ॥ কেমনে এ বনে যাইব সঘনে পাছে কোন দশা হয়। এই ছখ উঠে মরম-বেদন মোর মনে হেন লয়॥ শ্ৰাম ছেন ধন অমূল্য রতন सप्तय পড़ियां हि। এ দেহ তাহারে मटनद्र मानटम ১৫ যতনে লইয়াছি ! কহিতে কহিতে শ্রাম পরসঙ্গ চলে त्रममग्री तांथा। আছে আন বোল প্রেমের তরকে নিগুড় আছমে বাঁধা ॥ গোপীগণ বলে হাসি রস রসে চলহ ভুরিত করি। কাননে কালিয়। নিভূতে বসিয়া करत्रा यूत्रमी धति ॥ केइन औइन मश्रुत मृत्रणी २० এস এস বলি ডাকে। তুরিত গমন চণ্ডাদাস কৰে **हल वृत्सावन मृत्थ ॥**

> 830 **A** 1

চলল গমন হংস বেমন বিজুরি ডেমন উয়ল ভূবন . লাথ চাদ লাজে মলিন হইল তি চাদ-বদন হেরিয়া। সরল ভালে সিন্দুরবিন্দু
ভাহে বেড়ল কডেক ইন্দু
কুন্দুম সুৰম মুকুতা-মাল
নোটন ঘোটন বাঁথিয়া ॥
বিশ্ব অধর উপামা জোর
হিঙ্গুলে মণ্ডিভ অভি সে ঘোর >>
দশন কুন্দ বেমন কলিকা
কি বা সে ভাহার পাঁতিয়া ।
হাসিতে অমিয়া বরিখে ভাল
নাসিকার পর বেশর আর
মুকুতা নিশ্বাসে চুলিছে ভাল
দেশহ বেকভ ভালিয়া ॥
চণ্ডীদাস দেশি অথির চিত
অলে অলে অলে অনক রীভ
রসভরে ধনী সুন্দরী রাই

চলল মর্মে মাভিয়া ৷ ২০

822

কানড়া।

রাধার আবেশে গমন মন্থর
চলিলা আবেশ হৈয়া।
ত্যাম-মন্ত্রমালা জপিতে জপিতে
প্রবেশ করিল গিয়া॥
তপবন মাবে প্রবেশ করিল ৫
প্রথমই ধনী রাই।
প্রেমরস-ভবে লাধ আধ বোল
স্বনে কহিছে ভাই॥
এক স্থী গিয়া সেধানে বাইয়া
কহিছে রাধার কাছে।
১০
কি জার বিশ্বস্থা করিছ ভোষরা

চলহ ভূরিত বেশে।

নাগর শেশর একলা আছরে চলহ ভুরিভ করি। TICTIV ! शिय़। बन्मांवरन अन (र कमन-पांशि। मिना मन्नाम ১३ এ দেহ দেখানে পরাণ এখানে **ह**शीमांत्र करह छानि॥ **७४ू (पर जांद्र जांशे ॥** नकन एडब्रिट्स , नंत्रन नरहर्षि 875 ও তুটি কমল পায়। कांत्वाव । र्द्धिता ना रकत (उट्ट बाँगीयत কামু কৰে শুন আমার বচন বে ভোর উচিত হয় 🛭 যতেক গোপের নারী। নিশি নিদারুণ কিসের কারণ ব্দগতে এ সব বৈরী॥ मद्राय ना स्टान जान। দেখিলে জুড়ায় অবলার কুল অতি নির্মল ৫ এ পাপ পরাণ ১০ ধড়ে আসি রহে প্রাণ 🛭 ছু ইতে কুলের নাশ। ভাহার কারণে रयमन चरतत्र मोभ निषाहरन কহিল সন্বনে অন্ধকার হেন বাসি। যাইতে আপন বাস ॥ ভেন মত তুমি লোচন স্বার রাধা কৰে তাথে শুন যতুনাথে হেনক আমরা বাসি # আর কি কুলের ভয়। . ১০ একদিৰ জাতি কুল শীল পাঁতি সকল ছাড়িয়ে বে লয় শরণ ভাহারে এমতি কর। দিয়াছি ও হুটি পায় ॥ আর কি কুলের গৌরব সূচনা ভূমি সে পুরুষ ভূষণ শক্তি वाशांक्रिकि नाम धन्न ॥ আর কি কেতের ভর। ভোমার পীরিভে এ দেহ সঁপেছি ১৫ চণ্ডীদাস বলে শুন গোপনারি ২০ कि श्विन मांक्रण वाणा। এ**খন** কি কর ছল ॥ সরস বচনে সিচহ যতনে কেবল গোপীর নয়ন অঞ্চন বতেক কুলের নারী 🛭 হিয়ার পুডলী ভূমি। ১৩। बांगि—यत्न कति। তাহে কর হেন ় কেন ভুয়া মন ় २२। निष्ठक्-तिष्ठन कर्। এবে সে জানিমু জামি। ভাল ভূমি বট 878 এমতি ভোমার কাল। শুন হে নাগর রায়। **प्रशासित वरन** ও নহে উচিত কি বলিব রাজা পায় ॥ তন হে নাগররাজ ॥ আমরা কুলের বি। ভোদারে বলিৰ কি ॥

যে ভজে ভোষার পায়। (य कंन ट्डामाद्य शाय ॥ আন কি জানিয়ে মোরা। তুমি নয়নের ভারা। (य वन म वन त्मादत । ছাডিতে নারিব তোরে॥ 20 তোমার মুরলী শুনি। **धाँ**रेख चाँरेसू चामि ॥ শুন হে পুরুষ ভূষণ। তুয়া মুখে এমন বচন॥ কি বলিব আমরা অবলা। 30 আমি হই দাসী পনসারা । हखीमांन किছू खन गांग्र। অদ্ভুত শুনি যে হেথায়॥

कारमाम ।

শুন হে নাগর রায়।

এই নহে চিত তোমার উচিত এ কথা কহিব কায়। সব ভেয়াগিসু ভোমার কারণ কুলেতে দিয়াছি ভোর। ছেন করিবারে অবলা অখলে এ নহে উচিত ভোর॥ আমরা স্বপনে আন নাহি জানি **८करल छूथानि शां**य । ভোমার কারণ ১০ এতেক বেদন 🗢ন হে নাগর রায়॥ স্কল ভেজিমু ভবু না পাইসু ' হৃদয় কঠিন বঞ্চি। হাসিয়া হাসিয়া বৃদ্ধিয়ে চাহিয়া

এবে কেন কর ডেরি॥

তুমি প্রাণমণি পরশ বাখানি हूँ है एन त्रजन हता। ইধে নাহি আন রাজের সমান এমন গতিক নয় । অমূল্য রতন ২০ বহু রত্ন ধন যাহার নাছিক মূল। এ ধন লাগিয়া পাইয়া আমরা না পাইয়ে কোন কুল ॥ • আমি জানে ভালে **हशोमान** वतन কালার পীরিভি লেঠা। যেমন জানিবে সরোরহ ফুল তাহার অঙ্গেতে কাঁটা। ১৫। ডেরি—চাতুরী।

২২-২৩। লাগিরা—লাগ। এমন ধন পাইরাও আমরা কোন কুণ পাইলাম না।

8>+

কানড়া।

ভুমি বিদগধ আমার স্থাপের ধর। লইল চরণে যে জন শরণ তাহারে বাসহ পর। **এ ভব সংসারে** ৫ प्रिचि वन नाव আর কি আছরে মোরা। এ গোপী জনার হাদয় মানস কেবল আঁখির ভারা 🛭 গৃহ পতি ভাজে ্ হা হা মরি লাজে ভনহ নাগর রায়। মনে নাহি গণি এ সব না জানি সকলি গোচর পায়॥ শীতল চরণ যে লয় শরণ

ভাহারে এমনি রোব। '়

करणा कारन कंड (कर्न (करन) ८ কত শত হয় লোব ৷ প্রাণ-পতি ভূমি কি ৰলিব আমি ' আনের অনেক আছে। আমার কেবল ভূমি সে পরাণ দাঁড়াই কাহার কাছে॥ চণ্ডীদাস বলে শুন স্থলাগর ইহাতে নাহিক আন। সৰ ভেয়াগিয়া ভোমার লাগিয়। ভূমি সে স্বার প্রাণ । 91 তুমি বিদগধ রায়। বলিতে কি জানি কি আর বলিব সকলৈ গোচর পায়॥

(य वल रम वल रमारत नागत-रमधत। পর কৈল আপন আপন কৈল পর॥ মনের আগুন কত উঠে অনিবার। কাহারে কহিব ইহা আচার বিচার ॥ এমন ব্যথিত পাই আপনা বলিতে। ষান কথা কহিলে কহয়ে অফুচিতে॥ व्यक्तिम शांजिया काँक शांश ननित्रो । মিছা মিছা বলে সদা খ্যাম-কলঙ্কিনী ৷ ভোমার কলত্ব হেমমালা করি গলে। मिছारे (यायना भाभ ननिएनी वटन ॥ যরে হইল পরিবাদ,লোকের গঞ্জনা। তাহাতে নিষ্ঠুর তুমি এবে গেল জানা । পরের পরাণ হরি হাসিতে হাসিতে। विलाक्त तथा भित्रा कतिला भौतिए । ভোষার পীরিতে গোপী ভ্যঞ্জিরা সকল। मां और ए नाति भाता स्रेन विकल ॥

>.

30

• চণ্ডাদাস দেখিরা গোপীর প্রেমবাশী।

শব্দে পরশম্পি পরিবে এখনি ॥

, ३। विष्णंश--विण्णः।

৮। আপনা—ভাচার · · · · পাঠাবর।

৯ i কংবে অমুচিতে—করবে অমু চিতে i…"

874

मामि।

নয়ন তরল বহে প্রেমবারি অধির কুলের বালা। ক্ষেণে ক্ষেণে উঠে বিরহ আঞ্জন বিশ্বণ হইল স্থালা।

মলয়-চন্দন মৃগমদ যত ৫
আঙ্গেতে আছিল মাখা।
হাদয় কাঁচুলি ভিতিল সকল
ভাহা নাছি গেল রাখা॥
প্রেমে চল চল যেমন বাউল

বনের হরিণী তারা। ১•
ব্যাধবাণ খেয়ে ধাওল ছইয়ে
চারি দিকে নাহি সারা ॥
ক্ষাণ গোপাগণে চাহি চারি পানে
বিরহ-বেদনা পাইচা।
কার্চ সব যেন চিত্রের পুভলি ১৫

সারি সারি দাঁড়াইয়া।

কি শুনি কি শুনি বিষম বিপদ
হদয়ে হইয়ে ব্যথা।

আব কি জীবন সন্ধট হইল

কি আর দেখহ হেখা । ২

যাহার লাগিয়া এত পরমাদ
ু তাহার এমন রীত।
চল গিয়া জলে পশ কুতুহলে

मतियं अन्दर हिछ ॥

কি আর পরাণ রাখিব আমরা ২৫
কি শুনি দারুণ বোল।
বার লাগি এত বিষম বিবাদ
নয়নে বহিছে লোর ॥
এই অমুমান করে গোপীগণ
কহত ইহার বাণী। ৩০
নাগর বচন বিবের সমান

ৰাগর ৰচন ় বিবের সং এবে সে ইহা**ই জা**নি॥

চঞ্জীদাস করে শুনহ গোপিনি এই মোর মনে লয়।

ভক্তি জাদরে সরস বচনে ৩৫ বিনতি করহ পায়॥

- वाश्वन—(वन्नाः भाष्टां खत्र।
- <! मनव---क्षिश्रां !·····*

8)» *1**9** (

তুমি বঁধু তক্তের জীবন।
জাতি কুল করিয়া রোপণ॥
তুমি নহ নিঠুরাই পণা।
কেনে দেহ বিরহ-বেদনা॥
বে ভজে ভোমার ছুটি পায়।
ভারে নাথ হেন না জুরার॥
গৃহ পরিবার পরিহরি।
ভোমারে মজিল অজনারী॥
দেখ নাথ মনে বিচারিয়া।

30

বভ ছুখ ভোমার লাগিয়া । ' শাশুড়ী ক্ষরের অতি ধার। খরতর ভাহার বিচার।

কাঁদিতে না পারি তব লাগি। ভবু বলে ভামের সোহাগী॥ বরে পরে ভোমার বিবাদ।
বাহির হইয়া বাইতে সাধ ॥
চণ্ডীদাস দেখিয়া ছঃখিত।
শ্রাম কহিছে অনুচিত॥

शनका

56

রাধা কহে শুন আমার বচন
নিশ্চয় করিয়া কও।
কেন হেন চিত করিলে বেকত
এত নিদার্কণ নও॥
তোমা হেন ধন পরম কারণ ৫

পাইল অনেক সাধে।
বিহি দিয়া পুন: করিল এমন
কি আর বলিবে রাধে।
বে দেখি ভোমার আচার বিচার

কুটিল অন্তর বড়ি। সরল বে জন নাহি তার কোন

কুটিল কুটক ছাড়ি।

ভূজকে আনিয়া

কলসে পুরিয়া

বতনে তাহাকে পুবে।

কোন কোন দিন সেই বাদিয়ারে ১৫
দংশয়ে আপন রোবে ।

ভূজক সমান ভেন ভূয়া মন ভৌহার চলন বাঁকা। ভোমার অস্তর সেই লে সোসর

ভাষার অন্তর তাই সে সোবর এ হুই ভূলনা একা। ২০

যেন মুখে আছে অমিরা কলসী হৃদরে বিষের রাশি। অন্তরে কুটিল মুখে মধু পর

র কুটেল মুখে মধু গ আমরা এমন বাসি ঃ

বে ছিল ভা হল ভাহাই করিল ২৫ ব্দামরা হইয়ে কুলের বৌহারি নির্মল বেবা ছিল। কি বলিতে মোরা পারি। ভাহে দিয় কিল ঠাকুরালি ভালি ভাহার উচিত করিলে বেকভ কলৰ উঠিল ভাল॥ শুনহ প্রাণের হরি ॥ চণ্ডীদাস কৰে শুন ধনী বাধা **ठशीमांग क**रह अन वितामिन २० ঐছন কামুর লেহা। সকল স্থপন সম। কামুর ঐছন পীরিতি কেবল অমিয়া সেচনে সরল বচনে কেনবা করিছ শুম। সঁপহ আপন দেহা । ১१। योकत्र-वाशतः। ১৮। कठिन-कृष्टिन-- शाठीखत । 843 भूतवी । পুরবী। বঁধু ভূমি কঠিন পরাণ। বঁধুর আদর ८मिथ क्यनामत ইবে মোরা জানি অমুমান। কছেন কামিনী যত। (कन पूमि विद्रम वहन। তৃষি শুনাগর শুণের সাগর কহে যত গোপী সখাগণ # কি জানি ভোমার রীত। ওছে তুমি বিদগধ রায়। হাসি রসাইয়া কুল ভাঙ্গাইয়া ৫ মো সবারে ছেন না জুরার ॥ • নিদানে এমতি কর। ন্ত্ৰীবধ পাতকী ভয় পাবে। এ নহে উচিত তোর অমুচিত মরিব তোমার নিজ ভাবে । कानिया-वद्रश-धद्र॥ माँज्ञिश ध्रम्थह जाभटन। কালিয়া বরণ धत्रद्य (व कन रश नग्र वृक्ष निक मरन ॥ বড়ই কঠিন সেহ। একে একে खर्मन त्रम्ये। তা সনে পীরিতি না জানি এ গতি (इंडे मार्थ क्रेंडरा भवनी ॥ এবে সে জানিল এই। পাসরিলে সে সব পীরিতি। তখন প্রথমে পীরিতি করিলে পরিণামে হেন কর গতি॥ দেখাইলে আকাশের চাঁদ। ভুয়া বিনে আর কেবা আছে। কভ মুখে হাসি বচন সেচন ১৫ আমরা দাঁড়াব কার কাছে । . **এবে সে পাতিলে** कांत्र ॥ हशीमांत्र करह रहन जानि। স্পন্ন বাকর कांनिया वद्रश সুখে রসে কর রাস কেলি। সে মেনে কঠিন বড়ি। १ ৮। द्वीरंश भाउकी छत्र नात्त्र। হাসিতে হাসিতে পীরিতি করিলে मतिब नकर्म छव चारत मे∙•• नांठां खत्र । • এবে সে रहेन गांजि । २०

884

91

কার্মুর বচন শুনি গোপীগণ কহিতে লাগিল ভাতে। আমরা পরের রুমণী হইয়া বজর পত্তিল মাথে॥ পরের পীরিভি আগে না গণিয়া ৫ যে অন পীরিতি করে। বিষ ধরি খায় আপনার হাতে পরিণামে হেন করে। ছায়ার আকার ছায়াতে মিশায় জলের বিস্তৃকি প্রায়। নিশার স্বপন ষেৰ নিশাকালে তেমত পীরিতি ভায়॥ বেমন বাদিয়া কাঠের পুতলি নাচায় যতন করি। দেখিতে মিছাই সকল ছায়াটি ১৫ বাজিকর করে কেলি ॥ তেমতি ভোমার পীরিতি জানিমু শুন হে নাগর রায়। পরের পরাণ হরিয়া যভনে ভাসাইলে দরিয়ায় ৷ মুখে কত যতন সরস বচন হিয়াতে কুটিল সারা। না জানি কখন তখন এমন এমত তোমার ধারা॥ **क्छोमारम वरम** अन विरमामिन २० কৈ বলে পীরিতি ভাল। 'পীরিভি-গর**লে** এ দেহ **জা**রল ' **चरत रहेन कान॥** ২১। মুখে কত জন সরল বচন পাঠান্তর।

रव करत्र भरतत्र तथम । পরিণামে পায় এভ পরাভব বেমত পঞ্চল হেম ॥ ভাহে কি বলিব नक्न कान्य ए यात्र मागि (यवा कोएम । **८७ (करन निषदा)** निर्देश हरेश এতেক বাতনা দিয়ে। ভোমার মুরলী ডাকিল স্থস্থরে আইমু ধাইয়া বনে। ১ ওতে বাঁশীধর তাহে হেন কর ফিরিয়া না চাহ কেনে॥ তোমা হেন নিধি মিলাইল বিধি পুন তা হইল বাধা। এ সব বচন কছিতে কছিতে ১৫ শোকেতে মরিবে রাধা॥ তোমার কারণে এ ঘর ছুয়ার दिर्देश व्यानक प्रस्थ । তাহা ভাঙ্গাইতে এ নহে মহিমা व्यात स्म विषय कारक ॥ २० **ठ** छोषांत्र (पश्चि বড়ই ছঃখিত

858

শিকুড়া।

३ । ऋषद्र— मत्रामः, भाष्टीखत्र ।

চিতে বেয়াকুল

ত্ত শিকুড়া।

मूर्य ना निःश्वत्त वांगी।

गटक खरकत धनी॥

হইন আকুল

বঁধু, কি জার ঘরের সাধ। ছেদে গো সজনি কহ মোরে বাণী এ স্থাধ হইল বাদ।

र्व कर्न वृचिक रत्र कर रेनज्ञान मरन ना शृत्रण गांध । ﴿ কার্ছের পুডলি রহে সারি সারি চাহিয়া নাগর পানে। যেন সে চাঁদের রসের লাগিয়া **চকোর থাকরে খানে ॥** ভেমতি নাগরী রসের গাগরি ১০ মুগধ ভাহাতে বড়ি। বেন বা ক আদে ধনের লালসে তৈছন গোপের নারী॥ বেন মেঘবর চাডক অবশ ক্রিতে রসেরি পান। ১৫ भकती-जीवन ्दन जल विन সে জন কুলেতে যান॥ স্থামাথে যেন করে আন চান ২০ া চণ্ডাদাস কহে ভবে॥ ४। दबन दन—दबमन ∙•शिठाखत । >8 | स्मावत--- (भावतम I···" **a** , বে দিন হইতে ভোমার সহিতে পহিলে হয়েছে দেখা। সে সব বচন রয়েছে ঘোষণ বেমত শেলেরই রেখা ৷ শপৰি করিয়া পীরিভি করিলে ৫ ভাহা বা রাখিলে কৈ।

কে আছে ব্যথিত কাহারে কহিব

বে ছুখে আমরা রই ॥

আপনি বলিলে আপনি কহিলে আবার এমত কর। . . ১০ আমরা হইলে মরিয়া বাইডাম পুরুষ বলিয়া সার ॥ একটি বচন कत्रि निद्वसन শুন হে নাগর রায়। সে मिन বাইয়া কি কাজ লাগিয়া ১৫ स्टब्स्टिन कृषि भाग ॥ मात्र वहन क्रि निर्वापन শুন হে নদ্দের হুত। সে দিন বাইয়া কি কাজ লাগিয়া म्मारम **अतिरम** कूछे ॥ তেসর বচন कत्रि निटवसन দাঁড়ায়ে শুন হে ভূমি। এ জনমের মত ফিরে চাও তুমি विनांत्र इर्ग्न यांहै व्यामि এ কথা শুনিয়া व्यक्तिक नांशव २० छात्रिम नशास्त्र करम । রসিক নাগর হইল কাডর विक हशीनांग वरन ॥

839

कानका ।

এ কথা শুনিয়া রাধা বিনোদিনী
বড়ই আকুল হয়ে।

যা লাগি এডেক হল পরমাদ
রহল বিয়োগ পেয়ে ।

উপজল মান যেন বিষ্ডুল ৫
দেন ব কিশোরী রাধা।

বিমুধ বিয়োগী হইলা ক্লিশোরী
কম্পিত ও জমু আধা।

নর্ম-কম্ল বেন রাডাপল · · ভ্যক্তিয়ে বানের কাছে। ় বৈসঁল কিশোৱী আপনা পাসরি . শাধবী-তলার পাছে॥ বসি এক ভিতে মাধবী ভলাতে অতি সে বিরস ভাবে। वज़्हे मिन ১৫ अग्रंथ विश्वष्ठि कडू ना वहन ना नरव ॥ অঙ্গুলি সন্থনে বাম সে চরণে भत्रभी श्रष्ठाटव श्रुँ हो। নিশাস হুতাশে ভাহার হুতাশে নাসা আভরণ ছুটে॥ ২০ ঐছন মনের উঠিল আগুনি त्म धनो किरमात्री ताहै। কাছে একজন ছিল গোপনারী তাহাতে উঠাল তাই ॥ ভুমি হেপা কেন কেন অভিমান ২৫ তুমি যাও শ্রাম পাশে। অভি সে বিমুখী রাধা চন্দ্রমুখী কৰেন এ চণ্ডীদাসে ।

३। त्रांजार्गन-त्रांख्नांदर्गन।

১६। वर्ष्ट् मिन-प्राप्त प्रत्र···शिखत।

822 चररे।

রাধার চরিত দেখি সেই সধী চলিলা আনের কাছে। ञ्चामूबी बनी ट्राइट मानिनी অতি কোপমনে আছে। তবে কি বা হুখ উঠে কত ছুখ ৫ त्म भनो छानिया किया।

চল মোরা বাব রাখা মানাইব করিয়া ভাহার সেবা। ছই চারি সধী বাই পাশে গিয়া কহিতে লাগিলা ভার। 🕐 😘 কেন অভিমান কিসের কারণ এ ছখী হইয়াছ কায়। শ্রাম স্থনাগরে এ দেহ সঁপেছি তার কিছু নাহি ভয়। সে জন বচনে " অভিমান কেনে ১৫ এ ভোর উচিত নয়॥ শ্রাম পরসঙ্গ না কহ আরভি ভোমরা ভুরিতে গিয়া। শ্যাম-সোহাগিনী বভেক গোপিনী তোমরা সেবছ গিয়া। ২০ আমি না বাইব আম সাধ গেল কিবা সে রহল ভোরা। চণ্ডীদাস দেখি মনের বিপথ ধাইয়া চলিল ছরা॥ >२। कात-कि वड़।

>१। कर्-कत्र ः शशिखत्र।

658

दरहे। গেলা যভ সখী বচন না শুনি যুক্তি ক্রিছে ক্তি। রাই মানাইতে না পারিল ভারা কি কৰ ইহার গভি॥ চলে ব্ৰন্ধনারী 🔻 ৄ বেখানে গোপিনী ৫ ক্ষিতে লাগিল ভায়। রাই মানাইতে না পারি বেকভ **अ क्था कहित कांग्र** ॥ হেৰা স্থাম বায় বাধা না দেখিয়া

পুছে রসময় কান।

25 कृद्ध अरू नची छन खनागत ষান ভাঙ্গাইতে পুরিল মুরলী রাধার না খুচে মান। রাধার হয়েছে মান 🛚 অনেক বভনে বুকাইল রাধা অভি সে কোপিড না হয় সরল .. কহেন বিষয় আন। দ্বিজ্ব চণ্ডীদাস গান ॥ হয়েছে সে ধনী ১৫ ১২। ভাৰিবা অন্থির তাই :--পাঠান্তর। द्वन वा मानिनी किरमञ्ज कांत्रर्भ वन। ক্তে সুনাগরী তন প্রাণ হরি मात्मराज रहारह एन ॥ 700 ভোমার বচন কহিলে যখন রাই রাই নাম আর সৰ আন কেন বা আইলে বনে। हिवूटक भूतनी निया। २० অভি অভিমান রাধা নাম দুটি আঁখর জণিছে সেই সে কারণে विक हश्रीमांत्र छर्ग ॥ কোণা ছে রদের প্রিরা । **८कर**ण त्रांशक्रण (श्रांम कत्रदर्ग ए ৩। তারা—মোরা শাঠান্তর। অন্তরে ও রূপ দেখি। ক্ষেণেক নিশ্বাসে অভি সে হুডাশে पानुनी । রাধা নাম তাতে লিখি 🛭 নিকুঞ্জে বসিয়া নাগর রুসিয়া সদা রাধা নাম মুদিত নয়ন • ৰড়ই হইলা সুখী। গাইয়া আপন মনে। >• রাধার পীরিভি মনে হয় ভণি ত্যঞ্জল সকল বেশ পরিপাটী হিয়াতে না হয় স্থী। त्रहरे अकृष्टि भारत ॥ वाँ**नी मृ**त्थ निया वाश्वित हरेया द করের অঙ্গুলি কপি কড বেরি পুরত স্থার বাণী। क्शरत्र वांधाव नाम । এই ডল্ল মল এই স্থারস ১৫ वांशा वांशा वह जान नाहि कहे नचरन कहरे जीम ॥ ভূরিতে গমন ধ্বনি ॥ মুগধ মুরারি রসের চাতুরি **এই वाँभी क**न्न स्थूतन श्राय আকুল হইয়া চিডে। খনে খনে কতে রাই। ১০ রাধা রাধা বিদে আন নাহি মনে বাঁশীতে সৰুল , নিশান বেক্ড বসিল কুঞ্জের ভিডে ॥ ২০ ভরিয়া অমৃত তাই ॥ ° (कांश) तमभदे (पर पत्रभन ত্তনি পশু পাথী পুলকিত মানে • তো বিনে সকলি আন। वरमञ्ज रुद्रिशी वछ। जूनि कूछ पनी जूमि तन माशूनी মিলাইছে শিলা ১৫ ৰাউল হইয়া ভোর সদা, করি গান । · ७नि (न मूत्रमो-भीज ।

;66		•	ह शोषा	স		
ভোমার কারণে		बाँभोडि वहरन	20	কোণা না পড়ল	मश्र मृ	রকা
. ভূনি	বা কেমন রভি	11.	1 .	मृश्र शफ्न व	। ভীৰ	
***			•	নয়নে গলরে	বহুত্র বা	রি
	*	•		চণ্ডাদাস তুখ্য	ণ্ডি।	
এই সে বাঁপী	ভ	সঙ্কেত নিশাৰ	7)——	
বাজ	ই ৰূসিক রায়।		9•	\$ 0	ro {₹	
তবু না ভারল			न	ক্ষেণে রাধাপণ		
	দাস গুণ গায়		`	মুগধ সে লুবধ ম		
				কুঞ্জে লুটত মহি		
০০। বাজ্ ই—গাও	য়হল পাঠান্তর।			রাধা রাধা নাম		
O			কোণা রাধা সূত্			
	842			হেরত নয়ন প্য	•	
~		ৰভেক প্ৰকা	র	পून: गूनि छ्ह		
	দল রসের তাব			ধনিমণি কভি ন		
•		ৰুষভানু- সু ৰ	51	একলি কুঞ্চে দু	कुष्ट्र ।	
	া নিভ্ত মান।			গান করত কত		
		হইল কাত	রে ৫	হা নাধা হা নাধ	। তমু আধ।	
	জল সকল স্থ -		_	হেরইতে পুন	ভেল সাধ ॥	
	त स्टब्स्ट स्टब्स		. 4	তো বিমু সৰ ৫	ভল বাধা।	
	ল বিরহ ছখ বিবি	" উঠল মুরা	fa	ক্রদিপর যাভায়	ত রাধা ॥	
	নে নে নিখাস নাম	•	11H 20	এছন কাজর মূ	बाबि।	
		।। রসিক না	-	গদ গদ নয়নক		
	কৰে একহি ভ				म्द्र व ्य गान।	
		পড়ল মাৰ	ta .	রাইক পথ পা		
	ছ মুকুট চূড়।			চণ্ডাদাস কৰে		
		ক্টির ঘা	গর ১৫	আসি মিলব পু ৩। মহি—মণিপাঠান্তর	n	
্ সে	পীত বসন ধ	ज़ 1 ॥			-0	
কোণানাপড়ল মণিময় হার '			101			
ব্					A 1	
		চূড়ার ব		এই পর মাদ		
(F	ন্ব ভঞার ম	ांगा ॥	२०	নাগর রসিং	क जोग्र । °	

269 রাই-ভাবে ডমু পুরিত হইরা চলি একমন দুতীর গমন ভামূল নাহিক খায় ৷ **विश्वादन काइर**स ८७६ ॥ বিসরি সকল পুরব পীরিভি ৫ সেইখানে গিয়া विन प्रत्माम এবে ভেল অভিযান। কহিতে লগিল ডাই। কহে স্থনাগর চতুর-শেধর দূতি বাহ রাধাঠাম 🛭 রাই মানাইয়া আনিবে যতনে দূর হতে দেখি দূভীর গমন ভবে সে জীয়ই কান। মন कतिम अभूभ वह । তুরিত গমন করহ এখন হেনকালে দূতী माँ ए। हे मन्यू (४) ८ ইহাতে না হয় আন ! करहन जरमज ज्ञा বড় অভিমানী वारे वित्नामिनी দুতী বলে ভাল ভোমার চরিত वित्रा माथवी मास । বুকিতে নারিল এ। সঙ্কেত-মুবলী ডাকিল স্কুশ্বরে ১৫ সে হেন নাগর পরিহর ধনি অনেক মানের কাজ ॥ वाहादत्र मंशिदल (म ॥ তাহে বে গোপিনী গেছিল সেখানে যার লাগি তুমি পথের মাঝারে না ভাকে রাধার মান। मचरन मचरन हो । নেই গোপবালা পরাভব মানি সে হেন বঁধুরে ত্যজি রহু দূরে • . আওল আমার ঠাম ॥ কত মেনে স্থুখ পাও 🛭 চণ্ডীদাস কর বেণীর বাঁধন ২৫ **শুন রস**ময় যাহার কারণে রাধার বড়ই মান। দিনে কভ বার কর। আনে আনিবারে কেহ না পারিবে কালিয়ার সাথে কাল জাদখানি ভাবে বেণীপর ধর॥ পয়ান করহ কান ॥ চণ্ডীদাস কৰে শুন স্থামূখি কুঞ্চেতে আকুল কান। বিলম্ব না কর তুরিতে গমন कारबाव। তেক্ত দারুণ মান॥ এ কথা শুনিয়া श्रोम-मूथ टिट्स २१। कान बाप-कान बान-भीशेखा। দূতী কহে এক বাৰী। রাই দানাইরা এখনি সানিব শুন হে নাগরমণি । **१५**1 । সে হেন রসিক্ ফেলে রবি তথা কহিছে নাগর চভুর-শেশর ৫ ं এপনি চলিয়া বাহ। मिन अभूश-हैं। ए।

যেন সেই বিধু ভাহে নাহি সধু . ं त्करण विरवत काम ॥ ⋯ বিষের কাছেতে অমিয়া ঢলকে ৫ (क्वन भन्न मांका। চরিত আবার বে দেখি ভোমার বিষম বিপাক ধারা ৷ হেন লয় মন क्षेत्र वहन এই সে বাসিয়ে ভাল। সে হেন নাগর ভোমার হুতাশে বিরহে হয়েছে ঢল ॥ শীতল পক্তৰ-मन निष्किया শয়ন করিতে চায়। বিরহ হু তাশে (अरे प्रवचन ३৫ **क्टिंग एकाइट्ड** भाग्र ॥ সে চুয়া চন্দ্ৰ मृगमम जामि লেপন করিতে অঙ্গে। ভাহা ক্ষেণে ক্ষেণে গরল সমান क्षकारेन (मथ त्राज्ञ ॥ মলিল বয়ান ক্মল নয়ান সন্থনে ভোহারি ধ্যান। রাধা রাধা বই স্থান নাহি কই किष्टे नाहिक छान ॥ **ाक्त व्यक्ति** বেশ আজরণ ২৫ সোনার মুকুট চূড়া। অতি প্রিয় বাঁশী তাহা পড়ে কতি আর সে পীতের ধড়া । শুনহ স্থান্দরি করহ গমন বিলম্ব না কর রাধা। ' চণ্ডীদাস কৰে তুমি নাহি গেলে সকলি হইল বাধা ৷ >। विभक्-नदम्बः भागिषद्र। ২৫-২৬। তাজল নাগার নানা আভিন্ · ७ नव पूक्षे हूका J··· शार्थास्त्र ।

কি আর দেখহ রাই।
কামু ভ্রা গুণ গাই ॥
পড়িয়া নিকুঞ্জ ঠাম।
কেবল ভোমার নাম ॥
ভূরা পথ কত বেরি।
হেম রতন হার ভোড়ি ॥
ভারল আভরণ ভার।
ভাসুল দূরে কবি ভার ॥
হেম নূপুর করি দূর।
না কহি বরণ পূর ॥
সে হেন নাগররাজে।
অভিমান কভু সাজে ॥
চণ্ডীদাস কহে ভালি।

¢

>0

मान्य ।

৬। তৈাড়ি—ছিড়িয়া ফেলিয়া। ৭। ভারল—ত্যাপ করিল। ১০। কথা বলিভেছে না।

১৪। উছ্ ধারে বনমাণী···পাঠ।স্তর।

৪৩৮ কাষোদ।

ভোহার ধেয়ান বনমালী #

কি আর বিলম্বে কাজ।

ভূরিত গমন করহ বতন ভেটহ নাগররাজ। কিসের কারণে দানিনী হয়েছ শুনহ কিশোরী গোরি।

লে স্থাম নাগর তারে পরিছরি

এ তোর মহিমা বড়ি ।

দৈখিল বেমন শুনহ কারণ

নিদান দেখিল শ্রামে ।

পদ্ম পড়েছিল ১০ ভোমার বেণীর ভাছাই ধরিয়া বামে । সেই পল্ম ধরি নিজ করে করি ं छ। हाटल महेग्रा कैंटिए। (एथाইव हल এমনি দেখিল वज़रे निमान हारम ॥ >0 ষেন যোগী জনে ভোমার ধেয়ানে বেমত দেখিয়াছি। আমি সে আসিয়ে ভাহার কারণে তোমা নিতে আসিয়াছি॥ करत्रत्र अत्रुलि २० তাম করে ধরি জপই ভোমার নায ভুরিতে যাইয়া মান তেয়াগিয়া ভেটহ নাগর শ্রাম 🛭 চণ্ডীদাস বলে শুন শুন রাধে বিলম্ব কেন বা কর। 20 শ্রাম সম্ভাষণে কাসুর মালাটি ். ষতন করিয়া পর । ে। কিখোরী—নাগরী লগাঠান্তর।

> ३७५ क्विहा

এই দেখ ধনি চাঁদমুখ তুলি
কাতুর সন্দেহ লহ।
তোমার লাগিয়া রজনী জাগিয়া
নিদান হইল সেহ ॥
এই লহ রাধা , খ্যামের কুস্থ্ম ৫
অতুল তামূল হার।
বালায় পরিলে মান দুরে বাবে
মুখ তোল একবার ॥
বে হরি তিলেক দেখিতে না পেলে
. * লদমু ফাটিয়া মর।

সে জন কুঞ্জেডে একাকী বসিয়া এখন এমত কর ৷ প্রেমের অগিরী ভুমি স্থনাগরী त्म वन हाष्ट्रिय क्टन। এত অভিমান किटमङ्ग कांत्रण ১৫ তিলেক না কর মনে॥ মুখ ভুলি চাহ নিদারুণ নহ क्त वित्नां प्रनी वाथा। পরিহর কেনে সে ছেন নাগরে সে রসে করছ বাধা ॥ দেখি নিকরুণ অতি নিদারুণ ना (प्रथि ना श्विन कष्ट्र। সে হেন নাগর গুণের সাগর তোমার বিরহে প্রভু । পুরুষ-ভূষণ कमन-नग्न २० তুরিতে ভেটহ কানে। বিনয় কহিল রাধার বচন

विक हशीमांत्र छर्ग ।

२। जत्मर-जृत्ममः गरवान। ७। जजून-व गरं गर्गाठीखन।

...

রাই, তুরিতে স্ঠামেরে দেখ গিয়া।
বেন মরকত মণি ধূলায় লোটায়া।
কোথা না পড়ল চূড়া মালতীর মালা।
কোথা না পড়ল পৌত ধড়ার অঞ্চল।
কোথা না পড়ল নব মঞ্চরীর দল।
নিকুঞ্জে পড়িয়া অক্ত ধূলায় ধূসর।
রাধা রাধা বলি কাঁদে ক্রি উচ্চতার ॥

মধুর মুরলী যার অতি প্রিয় স্থধা।

সে কোথা পড়ল তার নাহিক সংবাদা। ১০
আচেতন মুদিতনয়ন কলেবর।

রাধা বিসু বিকল হইল বংশীধর।

ভোমার কারণে ধনি ত্যুক্তি স্থখোলাস।

কেণে কেণে উঠে যেন বিরহ হতাশ।

মুখ তুলি কহ কথা শুন রসমই।

১৫

চণ্ডীদাস ব্যথিত শুনিয়া ইহা হই।

১০।

সংবাদা—সমাধা শুনাবার।

_

31 🗢নি স্থামুখী দুভীর বচন বয়ানে নাহিক বাণী। হেঁট-মাথে র**ছে** ও চাঁদ বয়ান ভাহাতে অধিক মানী॥ একে ছিল মান তাহাতে বাড়ল ৫ শতগুণ করি উঠে। নহে নিবারণ বিরহ আগুনে সে বেন সঘনে ছুটে॥ বিরহ আগুন নহে নিবারণ নাহিক বচন ভাষা। ' >• भटन जिल्लानी बारे विटनांत्रिनी সন্থান নাসা ॥ বিরস বদন আন ছলা করি উखत्र मा (मग्न किছ्। माधवो जलारज् विम धनो ब्राट्स ১৫ । নখেতে ধরণী নিছু 🛭 বঙ্কিষ ফটাক্ষে চাহে দুড়ী পানে ক্ষেণেকৃ মুদিত জাধি।

তা দেখি ব্যথিত মনে গুণি আর

চণ্ডীদাস তাহে সাথী । ২০

১২ ৷ নিখাস নাসা ানাসিকা দিরা নিখাস খন খন

ৰহিতেছে।
১৬ ৷ নিছু ানিখিতেছেন ৷
১৯ ৷ গুণি াগণনা করিরা, ভাবিরা ৷
২০ ৷ সাথী াসাকী ৷

888

नानव ।

তবে কছে রাই দূতীর গোচরে কেন বা আইলে ইথে। কিসের কারণে ভোমার গমন কহ কহ শুনি ভাবে ৷ কহে সেই সখী শুন চন্দ্ৰমূখি ৫ ভোমারে আইমু নিতে। নিকুঞ্জে একলা চাহিয়া তোমার পথে 🛚 🕐 কেন বা তা **সনে** মান অভিমান বারে না দেখিলে মর। সে তন পীরিতি তেজিয়া আরতি কিসের গুমান কর 🛭 সে নব নাগর ভেজিয়া বৈভব ভোমার ধেরান রাধা। ৰূপিতে ৰূপিতে ১৫ ভুয়া গুণ-গান লে শ্ৰাম হইল আধা। ভূমি বিদগধ ' ভূমি বৈদগধী গুণের নাহিক সীমা। চতুর নাগরী গুণের আগরি मान शर्थ रमस् क्या । २० क्रशंकरन क्य রাধা ধীরময়

সকল গোচর আছে।

	ट खोन	. .	\$2	
मभूरव मभूरव	ক্ৰি ভার মাঝে	এ কোন চরিত		
কৰি বে ভুরার কাছে ॥		এ কোন চরিত আচার বিচার সেই সে আছরে আশে॥		
ভূমি শ্রের সমা ভূমি কুলরামা ২৫			রুন্দাবনেশ্বনি ২	
তুমি সে রসের নদী।		निकृक्ष-मन्मिर		
বার রসগুণ	নিপৃঢ় মরম	চণ্ডীদাসে বলে		
পঞ্চ ভন্ম বার সিন্ধি।		সে শ্যাম ভ		
অটি গুণ গুণ	তার পহন্তণ	১৭ ৷ শোষেপিপানার ৷	icaco bel li	
এ নৰ যাহার	গতি। ৩.		0	
ठ श्रीमांन करह	রসভন্ত লাগি	•••		
কুঞ্জেতে যাহা		a 1		
১২। কিনের—তা হা র ··	পাঠান্তর ।	ভূমি বড় নিদয় নিদান।		
-	वूर्य (म वृर्य ः भाशिकः।	উহারি কেবৰ	न ८४श्रांन ॥	
	·	সে জন ছাড়িয়া এখনে। একলা বসিয়া কুঞ্চবনে ॥		
884	•			
পড়া	ı	শুন্হ সুন্দরী রাই।		
শুনহ স্থানী।	রাধা।	ক্ষেণে ক্ষেণে বিরহে লোটাই॥		
যে জন পরশে		এগ কিবা সং		
· সে জনে কেন	·		খ গিয়া কান।	
তোমার লাগিয়া		কাহারে কর	१ थनि दब्रोच ।	
ভঙ্গয়ে পরম		मक्म (म क	र (माय ॥)	
তেন মত শ্যাম	-	পুমি সে নাগ	\	
ভারে কেন কং		চিতে দেহ ধ		
রস রস পর		চলহ নিকুঞ্জ	मांच ।	
পাঁচ রস আট		ত্য ক আনহি	কাজ ॥	
	গুণ রস পর ১০	চণ্ডাদানে ভা	त कान। >	
সায়র অমিয়া		करश मृञो क	ত অমুমান ॥	
त्म व्यव त्रामत		⊭। वाऍ्∵नीब।		
পিয়াসে মরয়ে		>७। अञ्चलन अञ्चलका ।	•	
ज् मि ठाँए रुटग्न		0	•	
	কেন ঃ >৫	• সুক্ <i>ড</i>		
	গাগরি থাকিতে			
া আন জন সরে	11 11 111 110	বেশ কথা কি		

সেই স্থুখ বাধা তাহে কেন রাধা চলহ বিষ্প চেয়া ॥ . পরশ রতনে তেজহ সখনে. ৫ বসকথা কিছু কয়। দের দেখা দিয়া সহ না আসিয়া এতন তামূল লয় ৷ মুখ-রস-মধু কত শত বিধু উলটা কহত বোল। ১০ উত্তর না দেহ পরমাদ এহ শ্যামে কর গিয়া কোড়॥ মুখ ভুলি বল মানে আছ চল এ কোন विठातिभेगा। একে নাম ধরি ভব্ৰুর ছায়াভে ১৫ আছ হরি মন-মনা ॥ আমি আসু নিতে কিবা ভোর রীতে कर कर हक्त्रमूथि। কিবা কহ শুনি শুন বিনোদিনি কহত বচন লাখি ৷ এত পরমাদ মান পরিহর ञ्च्नतो भारमत् श्रिता। চণ্ডাদাস দেখি: ব্যথিত হইরা বিবস পাওল হিয়া॥

সে হেন নাগর আমি সে আইল ভাঙ্গিতে ভোমার মান 🏽 **দে ছেন**্নাগর পরিহর ধনি আছহ মাধবী-তলে। শ্যামের বিধাতা (?) শুনি তার কথা কহিতে পরাণ ঝুরে॥ कटर भनी तांथा अन त्यांत्र कथा জানিল ভাহার চিত। ভা সনে কিলের মান অভিমান ১৫ ব্দানিল ভাহার রীভ ॥ পরের বেদনা পর কি জানয়ে পর কি আনের বশ। পরের পীরিতি আধারে বসতি किया (म कानरम तम ॥ २० রসিক হইলে রস কি ছাড়য়ে মুধর চতুর জনা। যত যত তেঁই রুসের রুসিক সে সব গেলই জানা॥ करह हशीमात्र छन रह इस्मिति २० তুরিতে গমন কর। भागात्मत्र जिल्लाम क्लार्यत माना বতন করিয়া পর ॥

२२। मूथत—ऋष्ए...काठीखत।

21

কহে ধনী রাধা কেন তুমি হেথা
কি হেতু ইহার বল।
কৈন বা আইলে কিসের কারণে
কে ডোমা পাঠাইরা দিল॥
ভবে কহে দূভী শুনহ আরতি ৫
মোরে পাঠাইল শ্যাম।

a_l

দৃতি, না কহ খানের কথা।
কালা নাম ছটি আঁথর শুনিডে
জনয়ে বাড়য়ে ব্যথা।
আমি না বাইব সে খাম দেখিডে
পরশ কিসের লাগি। ় ৫

আবণে শুনিতে শুনি পরসহ অস্তবে উঠয়ে আগি। কিলের কারণে ভা সনে মিলন চলিয়া ভুরিতে বাও। ভাহার মরম জানিল এখন ১০ রহিল মাধৰী ছাও। ভাহার কারণে সব ভেয়াগিতু কুলে ভিলাঞ্চলি দিয়া। তবু না পাইল সে নব নাগর বেমন রলের প্রিয়া॥ ১৫ कूल भील हिल जकिल मिलल निषात्न कलक गाता। স্থার লাগিয়া পীরিতি করল ভাহার এমতি ধারা॥ হুখের আরতি করিল পীরিতি ২০ 'হুখ গেল অভি দুরে। চুখের সাগরে করিল পয়ান মনোরথ পরিপুরে॥ পাড়ার পড়শী করে লোকহাসি क्तिरम् ७ त्रव कथा। . २० अस्त्र (दशन जन কে জন বুৰিবে হেখা ৷ কামুর পীরিভি ্ব দিল সমাধান না কহ জামার কাছে। ্রাশির সমান ৩০ **क्विक विद्युत** হেন কে বা আর আছে। তুমি বাহ সৰি কামুর সমাজে ় • আমি সে নাহিক বাব।

চণ্ডীদাস কৰে বড় অভিনাম আমি শ্বামে বেরে কব। ... ৩৫ ७। भेदमङ्गाः अम् ३३। इंडि होता। २०। मरनाव्यं भूनं कविएछ। २৮। औक्ररकेत गर्म त्थाम (भव व्हेन। क्विड़ा । বেরি বেরি দৃতি বচন সরদ কত সে আর ভনব। যথা না শুনব শুাম নাম পুধা সেখানে চলিয়া যাব। **ভবে সে দারুণ** राभ **উপজন** ৫ তবে সে ভালই হব। বেরি বেরি দুতি বচন সরস এ কথা না ভনি তব ॥ প্রবণে না শুনি কছে আন বানী क्था त्रभारतम् ना वाति । * * * শুনগোসজনি বেজনগরল খায় সে বিষের লাগি। कानिया क्रनिया विव शांत जरत ১৫ ধাইতু করমভাগী ॥ त्य भाग्न गत्र विदय छन छन তখনি মরিয়া বায়। ° আমি সে ভখিল কাল কাল-বিষ ঝাড়িলে রহে সে গায় । ২০ কারে কি বলিব বলিতে না পারি

গুপতে গুমরি গৈহা।

কালিয়া বরণ দেখিতে স্থলন
করিতে রসের লেহা॥
ভাবিতে গুণিতে মরিয়ে ঝুরিয়ে ২৫
শুন গো সঞ্জনি সুধি।

বেন সে জলের বিষুক উপজে
তেমতি কামুর প্রীত। ৩০
এবে সে জানল • সে জন লালস
চণ্ডাদাস করে হিত॥

১। বেরি বেরি শপুনঃ পুনঃ। ২২। ত্বপতে শগোপনে। গেছা শগোলাম।

७)। नानम स्नानमापूर्व, नम्मछ।

क्विड़ा ।

কালা হৈল খর আন কৈল পর কালা সে করিল সারা। আর নাহি গন কালার ধেয়ান কালিয়া অ াখির তারা॥ হিয়ার মান্স ৫ পরাণ অধিক কালিয়া স্বপনে দেখি। জপেতে কালিয়া গমনে কালিয়া नग्रत्न कालिया (पश्रि॥ গগনে চাহিতে সেখানে কালিয়া ভোজনে কালিয়া কাসু। জ্বেষ্ম মূদিলে সেখানে কালিয়া কালিয়া হইল তমু 🛚 🧢 **ভন হৈ সন্ত**ি • কহিতে আগুনি

উঠয়ে कालात शाला :

त्म कन विमूच পরাণ হইল সারা ১ আরতি পীরিতি তা সনে কিসের স্থচারু রসের লেহা। সব ভেয়াগিমু যাহার কারণে পরিহরি নিজ গেহা 🛭 তার কিবা হয় কুজন স্থজন গরল অমিয়া ন্য়। সরল না হয় क्षिन क्षम्य কাজেতে বুকিলে হয়। करह हैं खें नारम **এই मिल्लार्य २**० আশাপাশ তুয়া কাছে। তুমি সে ভাহার সে জন ভোমার काश वा श्किल जारह। ২১·২২। বে কুজন, সে কখন স্থলন হয় না, বেমন গরু ক্থন অমৃত হয় না। व:म्य । पृत्री करह छन আমার বচন कतिरत्र व्यक्तिभना। গুণের সাগর সে হেন নাগর অতি সে স্থন জনা। ভোমার লাগিয়া রজনী জাগিয়া (লে হরি কাতর হর। কর পরশন मिया मजभन 🌱 আমার মনেতে লর ॥

এখনে ছাজিয়া ় বাহত চলিয়া

ভাষার সনেতে

ু এ লেহা রসের সুখ।

জানিল তাহার বভ বড় ভেঁহে। কালিয়া বিষের রাশি।

দ্বৰণ উঠয়ে দ্বৰ।

কিবা পরিচয়

কুলের ধর্ম 🧳 नत्रम खत्रम ১৫ जकन हरेन हाति। লে দেশে বাইব বৰা না শুনিব 'कालिया-वद्मण भाग। म्बर्ट (मर्म याव শুনহ স্ভ্রনি রহব সেই সে ঠাম॥ অনেক ষ্ত্ৰ করিল সখন व्रांशंत्र ना चूटि मान। কার্ছের পুতলি বহে দাঁড়াইয়া मत्त्र कार्य कान । মান না ভাঙ্গিতে भातिम मखनी २० চলিল খামের পাশে। पृशे (भन यथा नांभव-८मथव करहन এ हशोषारम ॥ ३०। (उट्हा-(ब्रह)

> শ্রীমতী কি করিতেছেন। শ্বয়ং দৌত্য। ••১

নাধবী তলাতে দূতী পাঠাইরা
বিসয়া চিবুকে হাত।
আকুল সখনে নিশাস হতাল
কাহা না বোলই বাত ॥
এক নব রামা আহে রাধা কাছে ৫
তা সনে না কহে বোল।
মাধবী ভালেতে , এক পিক বসি
কহত পঞ্চম বোল ॥
চাহিরা দেখিল নাধবী উপরে
রসমই ধনী রাই। ১০
কালার করণ দেখি শ্বনাগরী

. ' হেরিয়া দেখিল তাই ॥

করতালি দিয়া मिन छेड़ाह्या পিকেরে কৰিছে কিছু। কি কারণে বসি **जाकर स्वं**दत ३० ं ८उँ रे प्राचीम निष् নিকুঞ্জ-বিলাস যাহ খ্যাম পাশ এখানে কিসের বাণী। এই অমুরাগ রাগের আর্ত্তিক करहन किर्णाती धनो ॥ উড়ি যাহ ঝাট ছাড়িয়া নিকট এ ডাল ছাড়িয়া যা। চণ্ডাদাস বলে পিক চলি গেল কহিতে বলিতে রা॥ · ১। দুভী পাঠাইয়া—দুভীকে বিদায় দিয়া। ২৪। গান গাছিতে গাহিতে চলিয়া গেল।

> ee২ ^হাবভি।

ময়ুর ময়ুরী নাচে ফিরি ফিরি আসিয়া মাধবী-তলে। দেখিয়া কুপিত হইল বেকত তারে ধনী किছু বলে॥ **८६था (कन एकाश)** नाट हरम (खाता क দিতে সে শোচনা সারা। सांहे हिन या उ বেখানে রসিক নাগর শেশর তোরা॥ নিকুঞ্জ-ভবনে যাহ সেইখানে এখানে নাচহ কেনে। হেথা কিবা স্থ হুখের বিচার ভাবিয়া দেখহ মনে ॥ ' তুমি না ধরিতে ग्रांमल वदन , তবে সে হইতে ভাল। কালিয়া বরণ দেখি মোর মন ১৫

আনল উঠিয়া গেল।

কালা আছে যথা ডোরা বাহ তথা
এখানে কিসের কাল ।
কালিয়া বরণ বরণ মিশাহ
বেখানে রসিকরাল । ২০
কোপে স্থামুখী করতালি দিয়া
মরুর উড়ায়ে দিল ।
চণ্ডীদাস বলে অপার মানেতে
সে ধনী হইল চল ॥

। বিশেষ কঠ দিবার অক্ত।১৬। মনে হঃখানল জলিল।

840

कारि ।

মাধ্য ভলার ফুলের সৌরভে ষতেক ভ্রমরা তারা। মকরন্দ পানে মুগধ হইয়া মাতিল সে রসে ভোরা। ा दिश्यो किटमाती विश्वयूषी शाती व কহিতে লাগিল তায়। বরণ ধরিয়া ভূমি সে কালার কেন বা ধরিলে কায়। এখানে হে তুমি কেন জমি ভমি কিরহ কিসের লাগি। ১০ মোরে দিতে চাহ বিরহ-বেদনা উঠাতে দারুণ আগি॥ ভোমার চরিত আছে বেয়াপিত · সে শ্রাম অকের মালে। 'मध् (थरत्र एंग्ट्स तरमटङ পृतिदत्र ১৫ আ^ইলে মাধৰী ডালে 🛭 🔒 একে মরি স্থালা 🧼 🌁 সাহিয়ে একলা ार्ट् प्रयो मिल छोटन।

কালা আছে যথা তোরা বাহ তথা ঁ অতি সে বিষাদ বাড়ল দিওৰ এখানে কিসের কাল। চণ্ডীদাস কিছু বলে।

...

शंचि ।

শুন হে জ্ঞমর কেন বা ঝছারে। ভোমার কালিয়া ততু।

তোমারে দেখিয়ে বাঢ়ল বিযাদ বিয়োগ উঠিল হুমু॥

শটি চলি যাও কেন ত্থা দাও ৫ চমকে আমার ছিয়া।

যাহ রুন্দাবনে নিকুঞ্জ-ভবনে যথায় রসের প্রিয়া॥

সেইখানে গিয়া কুলে মধু খেরা থাকহ বেখানে কামু। ১০

হেণা কেন তুমি মধুর লালসে তোমার কালিয়া ততু॥ ,

কালিয়া বরণ দেখি দোর মন বিগুণ ক্লিয়া বায়।

মনের বেদনা বুকে কোন্ জনা ১৫ এ কথা কহিব কার॥

এ কথা প্রবেশ শুনি মধুকর ভর্মনি চলিয়া গেল।

কোণাও না দেখি মেলি ফুটি আঁথি ভবে সে থৈরজ ভেল ৪ ২০

নীল কাল-জাল ুকেলিল ছিনিয়া কিছু না রাখল ভালে।

অংক্র কাঁচলি কেলি দূর করি নীলের উড়নি দূরে॥

কাল আভরণ ভেলিয়া ভখন ২৫ পরল ধবল বাস । হিয়ার কাঁচলি পরল ধবল ক্ৰেন এ চণ্ডীদাস i

844

पूष्।

X.A.

মুছিয়া ভারল मन्न-क्।जन কাল আজরণ যত। স্থা এক সঙ্গে ক্রে কিছু রঙ্গে কহিছে রাধার মত। শুন স্থামুখি আমার বচন ৫ •ত্যক্ত দারুণ মান। অভিমান অভি যে দেখি ভোমার পাছেতে তেক্ত প্রাণ । रेश्यक कडाइ শুনহ স্থারি এতেক কেন বা মান। সরম ভরম দুরে ভেয়াগিয়া ় কোপিত কহত আন। যদি আছ ভূমি বিরুষ বদনে ° एनर ञ्चाती तारे। কেন বা অক্টের ভূষণ সকল ১৫ ভেব্দিয়া ভেব্দিলে ভাই॥ তুমি স্থনাগরী রসের আগরী তেজহ দারুণ মান। मधोत्र वहरन कम्म-नश्मी नेयर कढोटक हान ॥ ર•

শুন গো সঞ্জনি ৽ কালিয়া বরণ

চণ্ডীদাস কৰে হেন মনে হয়

त्मित्य छेठत्य जान ।

মানদে দাকুণ পাপ 🛚

কৃষ্ণের নিকট পুনরায় দূতীর গমন।

841

সোমারি।

মাধবী তলাতে রছে এক ভিতে (म (इन खुम्बड़ो ब्राइ। মানে মন রীত এ ভার চরিত অনেক বুঝাল ভাই ! ভোমার কুস্থম-হার মনোহর ৫ দুরেতে ভারিয়া দিল। এ তিন ভাস্থল কিছু না ছোয়ল কোপেতে কুপিত ভেল। অনেক প্রবন্ধ প্রকার করিয়া বুকাইল রাই পাশ। হেট মাথে রছে বচন না কছে মুখেতে নাহিক ভাষ॥ य पिथ मोक्रग মান উপজন এ মান ভাঙ্গিতে গাড়া। আপনা যাইতে মান ভাকাইতে ১৫ রুঝল এমন ধারা॥ আপনি গমন করহ এখন তবে সে আসিবে রাধা। নহে বা এ মান আর কোন জনে তাহারে করিব বাধা॥ দূতীর বচন ভনি জ্নাগর ं वज़रे रहेना छूथी। এ কথা উচিত্ত জানিল বেক্ত **ह**ओनाम चाट्ह माथी ॥

মন রীত—মনচিত হইলে একরণ অর্থ হয়।
 ১৫-১৬ । তুমি নিজে না গেলে মান ভালিবে না, এইরণ
ব্বিলাম।

31

ক্ষে যতুমণি শুনহ সঞ্জি রাধা আনিবারে গেলে। कि अनि वहन कह दर्शि **जघान जघान वाल ॥** স্থী ক্তে ভায় 🗡 শুসাম রায় ৫ রাধার বড়ই রোব। ভুমি গেলে যদি ভার মান খুচে আমার কি আছে দোব ॥ স্থীর বচনে ক্মল-নয়ন আপনি সাঞ্জত কান। ১^০ বেশ সে স্থবেশ অতি মনোহর ভাঙ্গিতে রাধার মান॥ বাঁধল কুন্তল লোটন স্থন্দর বেড়িয়া মালভীদাম। ভাষার পাশেতে মুকুতার মালা ১৫ শোভে অতি অমুপাম॥ নানা আভরণ কৃষণ ভূষণ নিবি<mark>ড় কিঙ্কিণীজাল</mark>। নীল বসনের ওড়নি স্থন্দর করে বীণা যন্ত্র ভাল ॥ २० এক সখী সঙ্গে চলে বেশ ধরি কেবল একহি রামা। চলত নাগর বেশ মনোহর **टनहें टन माथवी थामा** ॥ নারা-বেশ ধরি চতুর মুরারি ২৫ ২০। স্থ-স্থে।

শাধ্য ভলাতে বার। · किवा (त्र अ**ड्ड** (एथन (वक्रड

ं ছিল চণ্ডাদাস গার্॥

* **पृ**ष्टि । मन्म भन्म গভি চলম-চাজুরী

. 84A

কুঞ্জর-গমনে চলি। · বেমন কুঞ্জর চলন স্থান্দর এ ছুই চলন ভালি।

मन्मरमांबन নবখন-খাদ ৫ कित्रारत्रज्ञाभन (वण ।

काँटिश को देशना नवचन-छाम পরিমলে ভুলে দেশ।

চলিতে চরণে বাঙ্গয়ে স্থভানে বাজল মৃপুর পায়। ১০ ফুলের সৌরভে অলিকুল যত

यूटल यूटल नव श्रेय ॥

দুর হৈতে রাই দেখি নবরামা বিশ্মিত হইলা চিতে।

কোন নবরামা काँद्ध यस कति ১৫ আমারে আইল নিতে।

এই অমুমান করে ছুই জন त्रांधा वटन (इत (मर्थ।

রাধার বচনে দেখে মুখ ভুলি

চক্রবদনী সূখ। ২• হেনই সময় স্বাসিয়ে মিলন (महे (म मांथवी-७८न। চণ্ডীদাস ভাহা নৰ পরিচয়

হাসিয়া হাসিয়া বলে।

৮। পরিমল— স্থপদ্ধ।

यश्रे ।

(मिष नवतामा क्रिम द्वान क्रम कर कर एमचि (मारत । '.

কেন বা এবানে ভোষার গমন कर कर वरन जाता। ज्यो करह ভাषে अनह जुन्मति ० গেছিল কানন-কুঞ্চে। वर्षा ब्रमभन्न ভ্ৰন্থ মাগণ আহরে কভেক পুঞ্জে। মোরে বোলাইয়া গেছিল লইয়া ন্দামি সে বটি যে যতি। কিছু তান মান করিয়াছি গান বে ছিল আমার শক্তি॥ रगोती नहे जात टक्नात स्थलत পুরবি সিন্ধুড়া ডাকো। भागने व्यात कानज़ा माधवी ১৫ हिल्लान मन्ता त्मा ॥ পাহিড়া দীপক স্থার বেলাবলি স্থরট মলার গ্রাগ। গাইতে প্রবন্ধ প্রকার করুণে ্, ভাহার মরমে লাগ॥ এ রাগ শুনিতে 🗼 বিনোদ নাগর মোহিত হইলা গীতে। ইহার উপর পুনঃ পুনঃ কহ আর কিছু শুনি চিতে॥ ভবে কৈলা গান বে ছিল স্থভান ২৫ ভাছাই করিলা গান। রাধাকুঞ্ নাম অতি অসুপাম বীণাতে উঠিল ভান॥ এ তান শুনিয়া 🔹 নাগর রসিয়া হরৰ হইল বড়ি। ৩০ সেই সে গানের মধুর শুনিয়া व्यामास्य ना मिन हाड़ि । রহ রহ ধনি আর গান শুনি ি বহত প্ৰথম নাম।

শুনিতে মধুর ও ছটি আঁখৰ ৩৫ त्राथा नाम कणूलाम । কাসুর স্বারতি বে দেখিল রীতি এ কৰা কহিব কত। রাধা নামে কড অমিরা পাওল রস উপজিল বড় ॥ গাও গাও ধনি ক্তে গুণমণি রাধা নাম কর গান। ঐ রদ বই আন না শুনিব ্ এ বড় মধুর ভান 🛭 আলাপে রাগিণী রাগের উত্দনি ৪৫ त्रांधा विंग (यन वास्त्र) ভোমার ও গানে মোর মনে হানে रिमा इसरा वाक ॥ চণ্ডীদাসে বলে এই গাঁতে মোহ রসে ভেল অভি ভোর। ৫০ মুগধ মাধব বছ বিদ্যাধ স্থের নাহিক ওর **॥** a। (बानाहेबा-डाव्या। ৩৭। আরতি—শীরিভি...পাঠান্তর।

> क्षक । संबंधित

শুন ধনী রাই তান কিছু গাই
রাগেতে রাগিণী মেলা।
গাইতে গাইতে মুগধ হইলা
নম্মের নক্ষন কালা ধ
পুন: কহে শুসাম অভি অনুপাম ৫
ভানিতে মধুর ধর্মি।
রাধা রাধা বলি ডাকিছে বীণাটি
মুগধ হইলা শুনি ।

, এই রস ভান অনেক সন্ধান · • • निल व्यक्तिक भागि । >• অতি বড় হুৰী হুখেতে মোহিত · গাইতে রাধার নাম n ভাবে গদগদ অভি সে আমোদ সে হেন রসিক কান। त्रांथा नाम विदन अन्त नाहि कादन ১৫ শ্রবণে ওনল গান ॥ नग्रन-कमन (वन एन एन লোরেতে কমল আঁথি। ১৮। লোর—মঞ্চ। বরিখে জাবণে বেমন ঘনের তেমতি ধরণ দেখি॥ ২০ রাধা রাধা রাধা আন সব বাধা কেবল রাধার ধ্যান। রাধা নাম ধ্যানে কমল-নয়ানে কিছুই নাহিক জান ৷ এই সব রস শুনিয়া অবশ ২৫ রসিক নাগর কান। সে নব নাগর রসের সাগর व्यवर्ग स्वत्य गान ॥ যধন বাজামু রাই-নাম-জুধা কাদিয়া আকুল শ্যাম। ৩০ হইয়া মুগধ ী অভি সে আমোদ দিল মুকুতার দান। रमथ रमथ धनि শাশার উরসে এই মুকুডার মালা। সে নব নাগর শুণের সাগর ৩৫ রাধা নামে বড় ভোলা 🛭 এই সব রসে এ ভাঁহা মন ভোষে . . বীণাতে করিল গান। 'বিকল ফিলে বা না জানি কেন বা কিসের কারণে ্থান 🛊 89

কুঞ্জে একাকিনী করেতে বাঁশীটি ধরিয়া নাগর রার। ভোমারে কিছুই তান ভানাইডে वारेन मांथ्यो हात्र ॥ চণ্ডীদাস দেখি অভি অপরূপ ৪৫ অপার দোহার লীলা। কে ইহা জানিব নিগুড় মরম দোঁহে ছুঁহু রস মেলা।

७२। नाम--माना।

CAMP I শুন শুন রাধা কহে সেই গুণী ভনহ রসের গান। ভোমারে এ গান প্রাবেণ করাভে व्यक्ति मांधवी जान ॥ ' মুধ তুলি চাও 🕒 রসের প্রেয়সি ৫ গাইয়ে একটি রাগ। প্রবণ পরশি এ গান ভনিতে কতি যাব অ**সুরাগ** ॥ এ কৰা শুনিয়া কহে স্থামূখী **७**नर ज्ञाती तामा। ১० কহ কিছু গান শুনি কিছু ভান नवीन नागत्री भग्नामा বীণাতে কেদার ্রাগ আলাপন गां उरे मूग्रथ तरम । রাধা কৃষ্ণ নাম উঠে জমুপাম ১৫ ্টনিতে শ্ৰেবৰ পালে ॥ এ চারি আঁখর বাজল মধুর

বীণাতে কহন্ত রাই।

(कन वा मानिनी स्टाइ न्याद्या मश्र मश्र शह । দে হেন নাগর পরিছরি রোবে ি কি স্থাধে আছহ বসি। মলিন হইল সে মুখমগুল वंतरक (त्र मूथ-मणी॥ মানে মন ছুসু पिथि कीन उन् २० তেজি আন্তরণ-ভার। বচন কহিছ তাতে নাহি রস এত বা কিসের তার॥ সে হেন নাগর वित्रम वल्दन আছমে মাধবীতলে। বীণা গাঁত-ভানে বুঝায় সঘনে

৮। কভ অনুৱাগ সঞ্চার হইবে। ১৮। ৰীণাতে ৱাই নাম ধ্বনিত হইল।

> इक्ट यहरे ।

मीन हशीमांत्र वरल ॥

ভ্যক্ত দারুণ মান।
চলহ নিকুশ্ব-ধাম।
সে হেন রসিক রায়।
ভাস্থল নাহিক খায়।
ভূমি সে নিদয় বভি।
কেমনে আছহ ছাড়ি॥
এ রসে কেন বা ভক্।
মিলহ ভাকর সক্ষ ॥

কোপ পরিহর ধনি।
তুমি সে রমণী-মণি।
এরস ক্ষের সার।
এ মতি ক্ষিয়া-ভার।

রনের নাগরী ভোরা।

পিও স্থাকর-ধারা ॥

বাহার সমুখ বারি।

বিহাসে কেন বা পুড়ি ॥

বেমন চাতক পাথী।

স্থাকর ডেন সাখী ॥

বেমন সক্ষরী মীমে।

নাহি জীয়ে জল বিনে ॥

এমতি তুমি সে গতি।

তাহাকর হেন রীতি ॥

ত্যক্ত বিরস মান।

চণ্ডীদাস গুণ গান॥

২২। তাহাকর—তাহার।

860

कानका ।

রাধা বলে শুন আমার বচন করহ কিছুই গান। ভোমার বীণাটি অপক্ষপ বাজে আর কিছু শুনি ডান. গাও গাও রামা মধুর বচন ৫ শুনিতে বড়ই হুখ। कांधा ना स्विन হেনক বাজন দূরে বার অভি ছুখ। नग्रामा भुन 🕆 কোণা তোর ঘর কেমনে আইলা ভূমি। কিবা ভোর নাম वनह जामाद्र

অতি মধুরস বাণী।
বসতি গোকুলে আমরা গোরালে
মোর নাম বটে শ্রামা।
ভণী ভণী জানি স্বাই আদরে ১৫

তন বঁসবতী-নামা।

ं नत्मत्र नम्मन कान। , সেখানে এ গুণ কিছু সে গাইল · কিছুই রসের তান ৷ ২০ নেখানে হইতে আইল হেণাতে দেখিয়া ছুঃখিত কান। সে হেন নাগরে ভেটহ স্থন্দরি ভেলিয়া বিষম মান। চণ্ডীদাস কৰে অতি বড় মোহে ২৫ স্থন্দরী কিশোরী রাই ।· ইহার কোপের বিপাক বিষম ভাঙ্গিতে নারিল কই ৷ ১৫। আমাকে সকলে আদর করিয়া গুণী বলিয়া ডাকে।

ৰাফি।

গুণী, না কহ কাসুর কথা। শুনিতে মরমে সেইখানে হানে উঠত দারুণ ব্যথা ॥ মনের আগুন বাড়ল বিগুণ বে জানে বেদনা মরমে পশিত্র তসুখানি হল আধ ॥ ত বড়ি বিষম বাঁশীটি বিদ্ধল বুকে বাজি পিঠে পার। টানিলে যতনে বাহির না হয় ১০ এ ছখে জীব কি আর । দারুণ শেল হৈ নিবারণ ' আর সে বিরহ-আগি। এ ছুই যাহার পালল কি ছার জীবার লাগি ॥ >6

মোরে রোলাইয়া গেছিল লইয়া কাননে আনল কেহ না নিভায় আপনি নিভার সেই। হৃদয় আনল কেবা নিভাইব বিষম আগুন এই ! কাহারে কৃছিব এ সব বিচার ২০ मत्रम कानस्य (क। চণ্ডীদাস কৰে , যে জানে মরম ় সে জন ব্যঞ্জি দে॥ ে। নিভাইতে যদি ইচ্ছা করি। ১৫। তাহার জীবন সম্ভট।

A

শুন নব রামা ঐ পরসঙ্গ না কহ আমার কাছে।

আন কথা কহ এ যন্ত্ৰ বাজাহ ও বোল কি বোল আছে॥ '

(य जन कूजन . (म नरह मत्रल ৫ গাও গাও কিছু শুনি। এ কথা শুনিয়া হাসিয়া হাসিয়া

वोना काँट्य निम खनी ॥ গাইতে লাগিল হিলোল নায়ক রাগিণী ভুঞ্জার ভার। ১০

মধুর মধুর তান মান রাগ এ স্বর মধুর প্রায়॥

व्यथम ब्राटगटङ . वागिनी पृक्षारव গাওল প্রিয়ার নাম।

हुई हि का भटन রাধা নাম উঠে ১৫ শুনিতে মধুর তান।

এই ছুই নাম বাজে অনুপাম মুগধ ছইল রাধা।

ক্টাকে মিলনে অমিয়া বরিখে কড কড বংগ হুধা ৷ ২০ শুন খ্যামা সখি গাও আর দেখি ভানিয়ে শ্রেবণ ভরি। গাও গাও পুনঃ त्रमांन तहन শুনহ শ্রামক গৌরী। वौनाणि वाकरम २० রাধা কান্ম বলি শুনিতে আনন্দ বড়ি। হার মনোহর মুকুতার মাল দিছেন হিয়ার ভোড়ি। আগে আসি লহ গাইলে মধুর তুরিতে দিয়াছি হার। 🕟 🕫 . চণ্ডীদাস কৰে কিবা সে অন্তুত স্থাবর নাহিক পার॥ ১৩। ভূঞায়ে—ভূবায়ে । পাঠান্তর। ২৯। আগে—সমূৰে।

মগন হুইলা গীতের আলাপে

সে ধনী কিশোরী রাই ।
আগে আইস শ্যামা হেদে নব রামা
তোমারে মরম কই ॥

সু বাহু পসারি রাই স্থনাগরী ৫
পুণীরে করিল কোড় ।
শ্যামের অঙ্গের পরল কোড় ।
শ্যামের অঙ্গের পরল ভোর ।
মনোরথ ভেল ভোর ।
মনোরথ ভেল ভোর ।
মনোরথ ভিল ভোর ।

তালি রসপর কটাক্ল চাহিতে
ভানিল স্থরস প্যারী ।

কপট মুরারি করিরা চাতুরী

়• মান লয়া প্রিয়া মোর।

ভূবে গেল মান সরস বচন ১৫

স্থেখন নাছিক ওর ॥

জানিল কপট নারী-বেশ ধরি

জাঙ্গিতে দারুণ মান।

অভি ভেল সুখ দূরে গেল তুখ

থিজ চণ্ডীদাস গান ॥ ২০
১৪। আমার মান লইলেন, হরণ করিলেন, ভালিরা
দিলেন।

বিহাসভা ৷

কাসুর প্রীরিতি পাইয়া পরশ মানেতে মোহিত ছিল। হাসি নাসাপর . অঙ্গুলি ভেজায়ে ও নব নাগরী দিল।। কে জানে এমন ভোমার ধরণ ৫ কপট আগুন ইথে। ৰণট অন্তরে বহুদিন মান ভালল কপট চিতে। মান অভিমান আর কিবা আছে **इल ह निक्अ-वरन।** >0 করহ বেশের পরিপাটী ষভ চলহ সধীর সনে॥ শ্যাম স্থনাগর চতুর-শেধর **हिलल निक्श्वधारम**। হেৰা স্থামুখী বেশ পরিপাটী ১৫ কত সে মনের সনে॥ हनन किट्गात्री **भाग-**मत्रभटन বদনে মধুর ছাসি। मह्म महहती मन्द्र गमन **हा** जूती वनन्त्रभी ॥

বেমন চিত্তের বাস করে লই গন্ধ। পুতলি চলিছে ं ७ ठाँमवनमी जांधा। मिन करत कूलूम कुशक ॥ भिन्न निद्ध-माव। व्यादश्य ७एनी . नील-लाइनी **ट्यारा नागःत्राम ॥** বচন কহত আধা ॥ भाग-वाटम देवर्रम बाहे। শ্ৰীষঙ্গ চলিতে গদ গদ ভেল ২৫ (भाषा वर्गान ना जारे । বচন চপল আধ। চলিতে মধুর **इन्सन जुशक जुडा**ति। বাজ্বরে পঞ্চম 16 - মধুর মধুর নাদ 🛚 **(मखन क्कूमात्री भारी !** ञ्गक मनत्र हम्मन करहुती প্রীঅঙ্গে লেপন ভাল। - অগুরু সৌরভ পায়। গলে দিল মালভীর মাল। মন্ত অলিগণ কুত্বম কোকিল क्छोमान खन गान। **এ সব সম্বনে ধা**য়॥ রাধাশ্যাম অসুপাম 🛚 বিচিত্র তুসারি **३८। आहे : आहे**(म् । ন্থগদ্ধ কুন্তুম विष्ठारे बरनद्र शर्थ। नवीन किट्मांत्री স্থাখে পদ তুটি ৩৫ আবোপিয়া যায় তাতে॥ চণ্ডীদাস কৰে न्याय-स्त्रभटन দেশ চুই রূপ অতি রসকৃপ স্থের নাহিক সামা। ' हिलाइन धनी जांथा। দেখিতে দেখিতে হইল মোহিত কতি গেল মান विक्रम वसन যতেক ত্রজের রামা আন কাজ গেল বাধা॥ 8. শ্যাম মরক্ত बांहे (न नामिनी ए এ इहे गथिए नरत । এ কিএ জলদ এ কিয়ে কাঞ্চন त्मात दर्भ नात्र ॥ রাই অভিসার করু। এ কিএ অভগী এ কিন্তে চম্পক (वर्भ कृषां कत्र शक्न ॥ কি দেখ বরণ শোভা। ১০ इः म-गमनी त्रांथा । (यथन कनार 🔧 😮 (मानात्र विक्रूती) **Бटन शह जांध जांध ॥** তেষ্তি দেখনে আতা। वेष शित्रा शारी। œ ° ध पूरे नत्रन नएक निक्रभन গমন করত ভালি। प्रिचिट्ड नत्राम इहि। े প্रदिश क्रबल वरन। আঁথি পিছলয়ে (रम सन स्ता >6 কর কর্ গোপীগণে। কি ছাৰ বিশ্বর কুটি।

রূপ মলোহর त्मांट्र (मारा काल मिला। ेविहत्रक त्रहे मूथक ठ जुन विष्त्रल भिंदर कारम ।। २० নবীন নাগরী " এ রস নাগর त्रार्थ कतिश्राट्य वाला। চণ্ডাদাস কৰে কিবা সে আনন্দ কলপভরুর ভলা॥ ৬। শবিতে—শক্ষা করিতে, দেখিতে। ৮। दांप दव 'त्यात मत्न (हन नात्व' इहेट्य । १७। कृष्टि—वर्ण।

> 89. कारमान ।

রাধা-শ্যামরূপ দেখিয়া মোহিত नव नव वत्रनाती। কে হেন আনন্দ রস পরিপাটী ্রপ অপরপ ভালি॥ বিহি সে রসিয়া কেমনে পশিয়া ৫ গড়ল কেমন ছাঁদে। কত সুধা দিয়া গড়ল এ দেহা मुशानि वकान वार्थ । ছ হ রূপ দেখি নয়নিয়া পাখী **ठक्षण खारांत्र मन ।** >• হেল করে মল চাঁদের ভরমে

স্থারস পিতে কন॥ এ বর-নাগরী , রসের গাগরি নাগর রসের সিজু।

भौषांत्र क्राट्गाट व्यादमा वृष्णावन ১৫ ' কৈল মুখ কোটা ইন্সুা

ছঁ হ রূপ ছেরি

্ শোহিত হইল সবে।

छिनाम कटह ट्रमेंबात हत्त्व

भवन मांगरम जरन । २०

৯ ১২। ছই জনের রূপ দেখিয়া নয়নরূপ চকোর পকীর মন क्ष्म क्षेत्र छ क्ष्मकात्म स्था भाग कतिएक हेक्क्

TICTIV I সই, হের আসি দেখসিয়া। নবীন নাগরী নাগরের কোলে আছে আরোপিত হৈয়া॥ লখিতে লখিতে আখির পুতলি সে অঙ্গে নাছিক থাকে। ৫ বড় অপরূপ কিবা রসকৃপ অমিয়া বরিখে লাখে॥ দেশ না চাইয়া ছুঁহু রূপখানি এমতি না দেখি কতি। বহু দিন থাকি গোকুল নগরে ১০ ना अनि ना प्रिच क्रिक

যেমন নাগর নাগরী ভেমন ছু হো শোভিয়াছে ভাল। नव बुम्सावन যত উপবন

नकलि कतिल कारला॥ যত গোপনারী নাগর ছেরিয়া স্থার নাহিক ওর। চঙীয়াস দেখি আনন্দে মোহিত

विद्यामिनी भाग-दकाछ । अर्थाद निष्कृतिया वाय-अध्य नम प्रद नर्शक (मधुन)

মিলনের পর সেবা।

40114 1

চন্দন অগোর যত গোপনারী লেপিছে দৌহার গায়।

কোন কোন জন ं করিছে পাখার বায়॥ কোন কোন কনে গাঁথি কুলদামে ৫ দিয়াছে শ্যামের গলে। কোন কোন গোপী শ্রীঅঙ্গ নেহালে চামর চুলায় ভালে 🛙 কোন কোন গোপী নিজ সেবালকে () সেবন করিছে গাঢ়া। এ অই রমণী কুলের কামিনী সকলি হইয়া ছাড়া। অষ্ট অফ সখী গুণের আর্ত্তিক (माक नक अरे विशि। এ কুঞ্চ-কুটার কুটার ভিতর ১৫ বেকত আছমে সধী॥ কোন কোন রস সমেতে বেক্ত রসিক নাগর রায়। এ রস-চাতুরী কে জন বৃঝিব চণ্ডাদাস গুণ গায়॥ ₹• অথ রক্ষাবন-গোভা। प्रश्रे।

প্রথ।

এইরূপে নব নাগর রসিক
করিতে রসের লীলা।

গুপত পীরিতি করিতে আরতি
রচিল নাগর কালা॥

নানা রক্ষণণ করে স্থোভন ৫

বিকসি কুসুম তারা।
কুলকুল তারা তরুকুলে বত
মক্রন্দ করে সারা॥

শস্তুর মরুরী চাতক চাতকী
হংসিনী হংসপ্রে জোড়ে। ১০

জীঅন চাহিয়া বেড়িয়া রঙম- মন্দির স্থাদার কলরব বড় রাজে অমরা অমরী কুমুদে গুঞ্জরি ু স্থাপানে ভেল ভোরা। যমুনার যত 🧈 জলচর কত ১৫ কোড়ে কোড়ে ফিরে তারা ॥ ক্ষল-নলিনী ভাপরে জন্ধা গান। বিক্সিত বত শুনিতে মধুর বৃদ্ধার শ্বদ कि प्राचि ऋक्तत्र छ। । २० নানা জন্তু ফিলে উপবন-ধারে আরোপি চামরু বৃত। হরিণী ছরিণ দেখিতে শোভন বানর বানরী কত॥ **एम बिर्ड एम शिर्ड** ७ नव-नागती २० মোহিত হইলা চিতে। চণ্ডীদাস কৰে কি শোভা আনন্দে ছু পাঁখি মজিল তাতে । "

ব্যাধা কৰে শুন পানি হালাল ।

ব্যাধা কৰে শুন পানিয়ে লাজ ।

এক নিবেদন আছে রাজা পায়ে
অধিক আছয়ে কাজ ॥

কৰেন চতুর নাগর-শেশর ৫
কৰু কছ ধনী রাধা ।

যাহাই বলিবে তাহাই করিব
ইহা না করিব বাধা ॥

হাসি বিনোদনী কৰে আধবাণী
শুনিতে আছয়ে সাধ । >

ভোলার চূড়াটি মোরে বাঁধি দেহ
করহ বাঁশীর নাদ ॥

চূড়া বাঁশী ক্ষেত্র মুরলী শিখাত নব নব নব বরিছ-শিখর এই শোর মনে হয়। দেওলি চূড়ার পরে। जांध चार्ट महन विश शृंत कारम ১৫ নয়ন অঞ্চন অভি ফুলোডন ছেন মোর মনে লয় ॥ তাক্ৰ পুরিত ধরে ॥ ১৫ হাসিয়া নাগর 🦠 রসিয়া চাহিয়া সিধার সিন্দুর মুছিয়া ভিলক চাহিয়া রাধার পানে। দিল সে রাধার ভালে। म्ग-मन्बिन्त् कन्मरम् हन्मरम् विन्त्र ट्र विश्व वि मिथाव वाँभीत शारन॥ २० শোভিত হৃন্দর সরে॥ गलग हम्पन অঙ্গে স্থলেপন ২০ নাগর বসিলা তুরুর তলাতে ্অগোর কন্তুরী সনে। বনাইতে রাধার চূড়া। নীল সে নিচোলে পরিলা গোচরে চণ্ডীদাস খলে অপরূপ দেখি পীত ধড়া পরিধানে॥ নাগরী আগরি বাড়া। সোনার খাবর বছরি দেওলি न्भूत्र (पछ भारा। २० ३२। (इत्र धर्मात्न। রসিক নাগর বেশ বনাইয়া শ্রীমুখ নেহালে তার॥ চণ্ডাদাস বলে দেখ কুতুখলে ্মহারাদে শ্রীমতীর চূড়া বাঁধিয়া কিরূপ সাজল রাই। বংশী-গীত শিক্ষা। বসিয়া নাগরী দেখ মনোহারী ৩০ ও রূপ হেরয়ে ভাই। ১२। वित्रह-निषत...मञ्जूतभूष्ट् । বেশ বনাইছে শ্যাম। ১৯। সরে ⊹ইহার পর এই কথাটা অংনক বার আছে রাই বামকরে দিয়াছে মুকুরে ভাগ অৰ্থ ৰোধ হইতেছে না। চৃড়া বাঁথি অনুপাম॥ মুকুভার মালে বেড়িয়া বসনে মাঝারে প্রবাল পাঁতি। ৫ न्हे । রাধারণ অভি দেখিয়া মূরভি তাহার উপরে , কুন্দের কলিকা विकन हरेन जोता। কি তার দেখিলা ভাতি। তার পরিমল পেয়ে অলিকুল 🔸 কোণা হৈতে এত রূপ লয়েছিল

ভাহার উপরে মাণিক গাঁথুনি ১০ বেমন নাগরী ভেমন নাগর ৫

ধাইয়া পড়িছে ভাষ।

় • দেখি মন সুরছার॥

এমনি মাধুরী ধারা॥

ज इर्रे अट्रूक थान ।

¢.

50

তেমতি বান্ধিল আপনার চূড়া ইথে সে নাহিক জান॥ বাইবামকরে নাগর-শেখরে धतिया नहेन कुट्टा 30 মুরলী শিখাব वन धनी ब्रांधा धहे (न क्षेत्र-क्षा ७ मुगनत्रनी क्रवस-बमनी কছেন হাসিয়া রসে। धनो करह शिंग >@ দেহ করে বাঁশী বৈঠহ আমার পাশে मध्य गुतनी যেমত বাজাও তেমতি শিখাও মোরে। शिथारल गुरली যা চাহ তা দিব অধীন হইব ভোরে ॥ খলের স্বভাব नह भन्नभग निश्रंह युत्रनी श्रुट्ग । শিখাব যতনে হাসি রসপানে बिक हशीमांत्र छर्ग ॥

> 899 etm1 :

রসিক নাগর বলে শুন বিনোদিনি।
তোমারে শিখাব বাঁশা আমি ভালে জানি॥
রাধা কহে কুটিল ছাড়িতে বদি পার।
তবে গুণ শিখাইবে শুন বংশীধর॥
কামু বলে কুটিল সে জানিল কেমনে।
ধর বাঁশী কহে হাসি শিখাই যভনে॥
রাই কহে বিনোদ নাগর রসময়।
ভালমতে শিখাইতে আমার মনে হয়॥
করেতে মুরলী দিলা হাসিয়া হাসিয়া।
মনের হরিবে বাঁশী শিখাই বসিয়া॥

কাপু করে শুন ধনি আমার বছন।

ক্রিন্তক হইয়া থাক পদ আবোহণ ॥

চরণে চরণ বেড় দাগুছ জন্মি।

অস্থান সুবাহ রাধা বলে ঘনশ্যামে ॥

কহে চঞ্জানাসে বড় অপরূপ বালী।

চূড়া বাঁধি মুরলা শিখরে বিনোদিনা॥

ভাষোদ।

নাগর চতুর-মণি।
কাহেন একটি বাণী॥
শুন শুন স্থকুমারী রাগে।
দাণ্ডাইতে শিখ আগে।
তবে সে ভালই লাগে।
তবে বাঁশী শিখাইব সাধে॥
ধরহ আমার বেশ।
আরহ চরণ শেষ ॥
পদের উপরে দেহ পদ।

١ŧ

वाँभौत्रस कथा कछ >• ত্রিভঙ্গ হইয়া রও वाँभी वां इहेग्रा जात्मान।। শুনিয়া আনন্দ ৰডি সে নক-কিশোরী গোরী ত্রিভব্নি ভবিন সুঠান। ধরিয়া রাধার করে নাগর রসিক্বরে बङ्गी चुत्राहेट नियान।। 30 त्रक् त्रक त्र अपूनि निशंहेरक वनमानी त्नहं कूँ क दुक्मात्री तांधा। বাজাহ মধুর তান मन्त्र मन्त्र का गान िलिक नाहिक कर वांधा।। शकि करह विरामिती এবে कि निविष्ठ स्थान २० जन्द्रभ जन्द्रभ विष भारत ।

কংহন রসিক্ষাত্র তালে সে পাইবে লাজ চন্ডীদাস বায় বলিহারি।।

৮। আরহ---আরোপণ কর। চরণ শেব --পদের শেব-ভাগ।

३३। वाकाःस्वाका

वश्मीवाह्य।

ভ্ৰম কেদার।

অঙ্গুলি খুরিয়া রাই यूत्रनी मधूत शृत শুনি ষেন শ্রবণ পুরিয়া। দেহ ফু ক ধীরে ধীরে অঙ্গুলি নাড়হ রাধে ভাবে শ্রাম দিছে দেখাইরা।। রাই, হের দেখ চেয়ে মোর পানে। রক্ষের বিশ্ব বিশ্বনি করের অঙ্গুলি ঢ়াক প্রথম রক্ষেতে কর গানে।। এ বোল ভনিয়া রাই স্থাম-মুখপানে চাই कूँ क मिन जब बजगान। না উঠে কোনই গান ফাঁক কাঁক পড়ে যেন ১০ হাসি কামু না বায় ধরণ।। পুনঃ কছে স্থনাগর 😁 নহ নাগরী গৌরি নহিল নহিল এ না গান। পুনঃ দেহ দৃঢ় কুঁক বাড়ুক অনেক স্থ পুন: ধনি পুরহ সন্ধান।। 30 কাসুর বচন শুনি • ব্রবভাসু-নন্দিনা करह क्षांरे विनय्न-वहरन। এখন মুরলী শিক্ষা কেবল হয়েছি দীকা विक हशीशांत्र किंदू छर्त ॥

वानचि ।

পুনরপি রাই भूतनो वाकार উঠিল একটি ধ্বনি। প্রথম সন্ধান উঠিল সঘন कृषा कृषा উঠে वानी । ক্ৰে শ্যাম পর বাবে অপশ্বর ৫ ना छेठेल जोधा नाम । আগে গাহ ধনি রাধা নাম শুনি তবে স্থা সমুপাম॥ তবে হাসি ধনী রাজার নন্দিনী কহিছে কামুর কাছে। মুরলী শিখিতে বড় সাধ আছে শিখাহ যে আর আছে ॥ ভূমি গুণমণি গুণের সাগর ্ আমি যে অবলা জনে। युत्रमी निर्भातन यांश हां मित ३० विक हशोनाम खर्ग ॥ অপশ্বর···অপর শ্বর, বাহা বাজা উচিত, তাহা নহে।

862

ভাষা।
তান হৈ নাগর গুণমণি।
এক রক্ষে ত্রুলনাতে বাজাহ ভালই মতে
বেমন মধুর উঠে ধ্বনি।
তানিয়া রাধার বাণী হাসিল সে গুণমণি
মধুর বাঁলীতে দিল ফুঁক।
এক রক্ষে তুট নাম ধ্বনি উঠে অনুপাম
তানতে মধুর অতি ক্ষা।
এক রক্ষে তুই জনে বাজে বাঁলী ঘনে ঘনে
মৃত তক্ত মুঞ্জিতে চাহে।

বমুনার যত নীর কুলে পড়ে হংখীর ১০ গান ভূনি পরাণ মিলায়ে ।

রাই কহে শুন হরি এই সে বিনতি করি ভাল মতে মুরলী শিশাও। কোন রক্ষে কোন কর ফু ক দিলে কিবা হয় (कान् त्रस्क्, (कान् त्रन शांग्र ॥ সপ্তাঙ্গুলি পরিচয় দশাঙ্গুলি করে হয় কোন অঙ্গুলে কিবা বোল। শ্যাম কৰে শুন রাই যে হেতু শুনহ তাই বাঁশী কিবা পরিচয় ছল।। कानरन मधुत वरल (कान्धारन कान् पिरल २० আগে আছে ভাগৰতে লেখা। পুরবে সে এক কালে মধু বারি আনি ছলে তিন জনা আনি দিল দেখা । সেই তিন বসি তথা কহিতে কানন-কথা সেই মধু গাগরিতে ছিল। 20 তিন জন অভিপ্রায় তালে মধু তথায় সকল ঢালিয়া তায় দিল॥ মধ্বনে সেই মধু ঢালি দিল কোন বিধু সেই মধু উপজিল दीय। হইয়া নারীর কার দিব্য স্লিখ্ন রূপ পায় ৩০ সেই রামা হইল রস ছায়॥ এবে তার শুন কথা কোন কর্ম্ম সখী হেখা वर् भूगावको त्मरे नाती। দিল ভার পরিচয় মনে মনে কথা কয় **छिनान वरन विन्हांत्रो ॥** >>। मिलारत-मिलारेबा बाब, खब इब।

ers

चहरे

আট রন্ধ্রে আট গুণের মহিমা পাঁচ রস করে গান। এ রাগ-রাগিণী প্রথম আঁখর কনিষ্ঠ অসুবি তান। ভাবে মধু আছে অঙ্গুলির কাছে ৫ অতি সে স্থারে বটে। রসিক মুরারি 🖊 রাই-ক্রে ধরি ্গানের মাধুরী উঠে। গাৰ গাও কিছু মধুর মধুর কালিয়া অঁাখর শুনি। প্রেমরসে রাধা আবেশ হইয়া কহেন একটি বাণী॥ রাধাশ্যাম বলি " वाकरम मुत्रली যমুনা উজান ধরে। খগ মুগ পাখী ছুসারি কাননে .৫ वाँगीर्छ अनिया यूद्र । वानी कुँक मिल একবার রাই পুनः ফুক দেয় শ্রাম। ঐ রাগ-রাগিণী মধুর মধুর বাজাই অমুহিপাম ॥ রাধা নাম কেণে শ্যাম নাম ক্লেণে (यमन त्रमत वांभी। চণ্ডাদাস কৰে ছু ছ সে রসিক মরমে মরমে পশি 🛭

२०। जन्नुहिनाम । जन्नुनम ।

TICATE I

ছঁত বাবে মধুর মুরলী।
অপরূপ ছঁত রস-কেলি।
এক রজে, ছুলুনে বাজার।
রাধাকুক নাম উঠে তার।
রাই কতে শুন নাগর কান।
পূরল মনের অভিমান।
সাধ ছিল শিখিতে মুরলী।
তাহাও শিখালে বনমালী।

30

কান্দু কৰে আর কি শিধিবে।
নিশ্চর কৰিবে ভূমি এবে॥
হাসি ধনী ধরণে না বায়।
দীন ক্ষীণ চণ্ডীদাস গায়॥

)। वादर-**ःवाका**त्र।

७। चित्रांन...चित्रांव।

१ड़ी ।

रहरम रह मूत्रमीधत ।

'না বাস আপন পর ॥ হাসিয়া কহ না এক বোল।

বে ছিল মনের সিন্ধি (?) তাহাই পুরালে বিধি

मूत्रली निश्चिल त्राम ज्रुत । (१)

আর এক শুন কান আকুল রমণী-প্রাণ

আপনি থাজাহ নিজ বাঁশী।

শুনি গোপ স্থনাগরী শুনিতে আনন্দ বড়ি খুবে যেন ছেন নিশি দিশি॥

मधूत मधूत थ्वनि शांख ८ एवि शांगमि ১०

নিজ মুখে শুনিতে মধুর।

কি জানি কি গাও গুণে বিষ ভরি মুখ খনে(?)

শুনিলে দংশয়ে হিয়া মোর।

ষেই ভূজস্বগণ করিলেই দংশন

চেত্তন গেয়ান নাহি থাকে। ১৫

তেমতি তোমার বাঁশী কুল লেই হালি হালি

मःभन कन्नद्य जानि वृदक ।

কভু বাঁশী প্রেমধারা কখন ভূকসপারা

গরল সমান কন্তু হয়ে। কেন বা এমন হয় এ অবলা প্রাণ সয় ২০

भीन हश्रीमांत्र देश करत्र ॥

क्षीर्का ।

बढ़ा ।

হাসিয়া নাগর

কহিল সকল

চপুর-শে

রাধারে কিছুই বলে।

ভোষার গোচন

বাঁশীর বচন ছলে॥

কথন কখন বাজয়ে কেম্ন ৫

कथन मधुत नम।

ক্ধন ক্ধন গ্রন স্মান

়গাইতে হইয়ে ভ্ৰম ॥

কোন অভিলাবে বাজয়ে কেমন

না জানি ইহার রীভ।

মধুর মধুর বাজায়ে স্থাস্থর

কত আনন্দের গীত।।

বাঁশী পরবশ নছে নিজ বশ

কখন হয়নি ভাল।

বাঁশীর চরিত বুঝিতে না পারি ১৫

जूमि वा कि जात्र वन।।

ज्गि कि कान्टिर स्थूत मूत्रनी

নহে পরিচয় তাম।

বাঁশী আগৈ কর বশীভূত পণা

তবে কিবা রঙ্গ হয়।।

যখন না ছিল পরিচিত রাধা

এবে হল জানা শুনা।

চণ্ডীদাস বলে আমি জানি ভালে

বে দেহ তুকুলে হানা।।

२८। होनां ... श्वरत्र ।

নিধুবনে কিশোরী রাজা।

a 1

স্ব গোপীগণে, ক্মল-নয়াদে

कहिल এकर्षि वाणी।

হের শুন আসি কহে হাসি হাসি এক মনে অনুমানি। কহে গোপীগণ হর্ষ বদ্দ ৫ ক্রেন নাগর রায়। কি হেতৃ হাদয় করল নাগর কহনা শুনিয়ে ভায় ৷ মনের বেদনা मत्रामत (थला কহিল স্বার কাছে। এক অভিলাব মনের মানস ' ইহাই কহিতে আছে॥ কছ নাবিচারি কহিল নাগরী চাহিয়া নাগর পানে। কহিতে লাগিলা রসের রসিক ১৫ छगात्रल (यवा मत्न ॥ এই বৃন্দাবনে রতন-আসনে রাধারে করিব রাজ।। त्रभगी मांचादत अग्र अग्र आग्र वैं। थिया ब्रांचिव धवका ॥ সবার মাঝারে ছত पश पित ধরিয়া আড়ানি মাথে। চতীদাস বলে অনভুত লীলা ইছা বা বুঝিবে কভে ॥ ১-२। ओक्स गकन त्रांत्रीशनतक बनिएछ नातितन। ৪। অমুমানি—করনা করিতেছি। ৭-৮। গোপীর উক্তি। তুমি কি মনে করিতেচ, বল। ১७। 'উशांत्रम-छेमत्र रहेन। এ বোল শুনিয়া হাসিয়া হাসিয়া ক্ছেন গোপের নারী। বড় আৰ্ভুড ্ শুনিল বেকড

देश श्वमामे विष् ॥

ভাল ভাল বলি ৰলে গোপীগণ বাহাই করিবে ভূমি। সেই সভ্য ফল সেই সে হুদিন কি আর বলিব আমি॥ **्कर** तरण स्थन নাগর মোহন ना मिथ ना अनि कारन। 🦠 🦠 রাধারে রাজত্ব দিব সে বেকত **८**मिथरत्र मत्नत्र मत्न ॥ আনন্দ অধির হইয়া নাগরী কছেন কামুর পালে। রাধা পাঠাইয়া সকল গোপিনী ১৫ বদনে বসনে হাসে অপরপ লালা কিবা সে স্থালিলা রসিক নাগর কান। এমন আনন্দ সুসের লহরী हरीमांग खन गांन ॥ 244 কাফি। কেছ কেছ গোপী যমুনার নীর जुलन भक्त कून। কোন গোপী ভুলে নানা সে কুস্তুম ञ्चम मृशांन कृत ॥ কোন গোপী ভূলে চাঁপা নাগেশর ৫ মলিকা মাধবী লভা। কানড়া কুন্থম • ধাতকী স্তৰম ভূলল ঝামক পাড়া 🖁

আমলি স্থন্দর

ভুলন গোলাপ

कुम्म कत्रवी

কিবা সনোহর

চম্পক কেডকী বেলি।

ाट चुन्दर हारमनी ॥ '

নানা লাভি কুল 🥇 ভূলন ফুল্লর নাগরী গোপের রামা। কৈছ করে ভালি গাঁথে বন্সালা ১৫ নিকুঞ্জ সহরে জানা ॥ নিকুঞ্জ-বেদিকা বেড়িয়া ৰোপল ञ्च्यत कशकी-मन । স্থবর্ণের ঘট বারি সে পুরল আমশাখা ভার পর॥ কোন এজনারী এ তৈল হলুদি বিবিধ সৌরভ করি। নানা গন্ধ আদি আছিল সে বিধি বঁসাইল আসন পরি ॥ সহস্র ধারা করি তাহা বারি ঢারি ২৫ স্থান করাইল গৌরী। ক্রিয়া গোপিনী नांना (वष्टश्वनि সবাই মগন কেলি॥ জয় জয় ধ্বনি ষতেক গোপিনী ं. प्रश्रम निक्क्षमाद्य । অভিষেক করে বিনোদু নাগর শৰ্ম খণ্টা বোড়া বাজে স্থান সমাধিয়া রাধারে লইয়া করত বেশের শোভা। বিনোদ পাগুড়ি বিনোদ বন্ধান ৩৫ বাৰ্দ্ধল আনন্দ লোভা ৷ ভাহে আন্নোপিভ মাণিকের ঝুরি দেওল পাগুড়ি পাছে। ভমু আছোদন • নীল ভমুত্রাণ অভি সে রন্ধিম কাছে।। ভাবে সে বান্ধল নেভের পটুকা বেড়ল ভালই ভাগে। চণ্ডাদাস অভি দেখিয়া মূরতি ় * বৈছন চাঁদের মতে॥

২৫। সংলধার সহল ছিল্রমুক ইাড়ি। ৩৭। কুরি—ছোট ছোট স্বিম্কার গাঁথা ৫৬ অসুনী দীর্ঘ-শুজ্মানা। ৪৪। বেন টাদের মত।

> ३४% योग्य ।

অসীম স্থুসর শাজল সুন্দর नवीन किएमांबी रगांबी। মঙ্গল বচন বত ত্ৰহ্ম জনা কুঞ্চেতে শইল সরি॥ রত্ন-সিংহাসনে বসাই যতনে ৫ উয়ল করল রাধা। হলান্তলি দিয়া যত গোপীগণ व्यानरम नाहिक बाधा ॥ কেহ শিরে দেই দুর্বাদল আনি क्ट म पिए न थान। (क्ट (क्ट (कें(क শিরের তুপাশে গুৰাক স্থান্ধ পান 🛚 प्रसि मीन चर्छ নানা ফল পূব্দ রাখল সম্মুখে ধরি। রতন-প্রদীপ জালল দুসারি ১৫ হেম ঘটে থাপি বারি । महार् हत्सन भूगमन चन অগোর কন্ত,রী চুয়া। নিকৃঞ্জ-মাঝারে কুটার-ভিডরে **फांत्रम त्गांभिनी नग्ना ॥** ` २० স্থগদ্ধ কুত্ৰম বিছাই চৌদিকে অতি সে সৌরভ বাসি। মধু-লোভে অলি লাখ লাখ কোটা তাহাতে উড়িয়া বিস য় তাল মান রসে ২৫ माना वामा वारक मृत्रक के कि ति वीशा।

মদন ভেউর শব্দ করতাল ররাব খঞ্চরি পিনা 🛭 পাঁখোয়াজ বাজে কাহাল রসাল (वर्षेत्र भवत ब्राप्त । বাঁশী করভাল এ সব মগুল चन्छा कनवत्र (भरव ॥ এই সব বস্ত্ৰ বাজরে স্থতন্ত্র जरा जरा छेट्ठ श्वनि। মঙ্গল স্থাচার বেদ সে বিধান ৩৫ कब्रम यरजक धनौ ॥ . বৈঠল কিশোরী আসন উপরি রাজ-আভরণ সাজে। क्यू क्यू जिल গোপিনী-মগুল রাধিকা করল মাঝে । মরুর ধরিল আড়ানি শিরেতে মরুরী ধরিল তা। ক্ষেকন ধরিয়া রাই শিরে দিয়া এই ছুই রহল তথা । রাজভাট ডাকে কোকিলা কোকিল ৪৫ ভাহকী ডাহক বলে। खमत-संकारत भागारे भवन ভাহা সে গাইল ভালে। অপরপ নীলা **ठओप्रांट**म वटन কুঞ্জে রাধা ভেল রাজা। ৫. त्रमणी-मानादत রমণী-মোছন वाँथिया पिन (म भ्वका ॥ >>। (कैंटक···श्राटकन करत--इफ्रांहेबा (स्त्र ।

নক্ত সহর সব গোপীগণ

সাজাইল পারি সারি।

प्रमिट्य कृषीत আয়ারি বাছল রসিক চতুর ধারী । বাজার তুসারি ষভ বৰনারী (সহরে বৈঠল ভারা। চিত্ৰা দেবী ভেল রাজকারবার ঐছন স্বার ধারা॥ সহর-কোটাল হইল রসাল এ নব-নাগর কান। রাজকর সাধে রসিক নাগর মনে ভেল অসুপাম ॥ কোটাল প্রহরী রসিক নাগরী সাধয়ে রসের দান। রাজার দোহাই দোসারি ফিরাই ফিরিয়া চলত ভাই। ফিরাই স্থন্দর করহ চৌদল রচহ উপায় এই । , ' ২০ क्टोम्ल कर्न এ নৰ নাগরী রাধা চড়াইল তায়। লইয়া সহরে ফিরায় ফুন্দরী मीन ह**ी**मांज गांग्र ॥

....

(क्लोब ।

সহর কিরায়ে ধনী রমশীর শিরোমণি
লীলাবতী চামর ঢুলার।
চম্পাবতী আদি নারী এ নব অক্ট মারী
সেবা করে মনে অভিপ্রায় ।
কিরাইল বিনোদনী নব নব গোপিনী ব

এই नोना बट्ट कान व्यारेन त्र कुक्षधाम (प्रव देश गर नवशूरक । ক্রিভে রাদের রস महत्व इट्ट्र वश রচিলা নাগরবর কান ৮ ক্ষতেন রসিক রায় সোর মনে তেন ভায় विद्वल महत्र भन्न वांग ॥ পুনঃ ধরি করে বেশ বাঁধল চাঁচর কেশ (वनीत वकान करत्र हारम। नव महिकांत्र माल • বেড়িয়া কনকজাল ১৫ মাণিক কোঁপনি দিয়া বাঁধে॥ সিঁথায় সিম্পুর শোভা যেমন রবির আভা अंदर भाएं हन्मरनत विन्यू। মেঘ হইতে যেন শশী আসিয়া বেমন বসি कछ घटे। इटे। (काटी रेन्स् । অধর রাজুল দেখি হিঙ্গুল কিলে বা লখি নাসার বেশর ঝলমল। কাঁচুলি সে অনুপাম বেড়িয়া মুকুভানাম • অমুপাম কি ভার ফুব্দর॥ नाना जांडवर्ग माटक किविनो स्टाक वाटक २० **চরণে নৃপুর করে ধ্বনি**। কি আনন্দ দেখি ভায় মনমৰ মুরছায় **ठ** छोमान वाहेर निक्ति ।

> Sat • (Trial)

"কাহার বাছনিরে নিছনি লরে মরি।"—ভারতচন্ত্র।

२४। निक्रमि-विलहाति।

শ্রাম-বামে কৈঠল কিশোরী। মেখে বেন মিশরে বিজুরি । সোনার কমলে মধুকর। তেমতি সাজল কলেবর । ছঁ হ রূপ না বায় কথন।

কোটা কোটা স্বছে মদন ॥

সহচরা কুঞ্চ-নিকেডনে।

কেহ করে চামর ব্যক্তনে॥

কেহ চন্দন দিছে গায়।

কেহ করে পাথা মন্দ বায়।

চণ্ডাদাব ছাঁ হু গুৰ গায়॥

যুগসরূপ।

7W# 1

চাহিয়া ছু আঁখি (मथ (मथ मिथ কিশোর-কিশোরী-শোভা। যেমন খনেতে বিজ্ঞারি বেচল কি দেখি বরণ আভা॥ मथोगन कटर **टिन मटन लट्य** ए মেঘ আসি কিবা নামে। আসি আচন্দিতে গগন হইতে কলপ-ভরুর ঠামে ॥ कान मधी करह এই चन नहरू ও দেখি স্থামের দেহ।। বিজ্ঞার বলিয়া দেখিলে ভালিয়া ও রূপ কিশোরী সেহা॥ पिश्यू यक्तभ যার অপরূপ कहिरल कि जानि कि श्रा। তুঁত অমুপাম বেশের আভাতে ১৫ वुन्नावन (नाष्ट्रामय ॥ .

এক ভক্লবর কালিয়া বরণ আর ভক্লবর গোরা। বড় অনস্তুত কি হেডু ইহার বিচারি কহ নাডোরা। ২

স্থীর বচনে আরু স্থী ভাছে • চাহিল বনের পানে। দেখিল বেকত আধ সে গউর আধ সে কালিয়া সনে। এক সখী ছিল চেডন গোয়ালী ২৫ বিচারি কহিছে তায়। এ কথা কৰিতে কাহার শক্তি কে না পরতীত বায় ॥ রসের সায়র ক্রপের দরিয়া তাহে আছে এক স্থা। সেই সুধা আনি বিহি সে রাখিল বেকত করিয়া জুদা॥ বে ছিল অমিয়া আর কুপমানে লইল যতন করি। সেই হুই স্থা বিহি সে আনন্দে ৩৫ রাখল একক ধরি॥ চণ্ডীদাস কছে অপার চাডুরী (क जन वृत्तिव हेहा। বিহি সে রসিয়া তাহাতে পশিয়া গড়ল দোঁহার দেহা॥ 8. चर्रे । ছুই সুধা লয়ে বিহি গেল ধেয়ে

গড়ল মুরতি চুই। কুন্দন স্থন্দর অভি মনোহর মূরতি **হইল দেই**। য়খন গড়ল্ প্ৰথম পৃথক্ ৫ নিরমাণ কৈল দে**হা।** সন্মুখে আছিল ক্রপের স্থায়ে পড়িল কাজর রেহা।

(गरे इंश नरत गड़न मृत्रि কালিয়া হইল শ্রাম। আর হুধা ছিল আন ঘটে পুরি তার কহি পরমাণ । ভবে সেই বিহি গড়ল মূরভি অনেক বতন করি। চাম্য করকলা (?) পড়ল ভাহাতে ১৫ তাহাতে হইল গৌরী। বিহি নির্মিয়া চলল সেখানে বেখানে রসের নদী। (महे नमोखन (शांत्रन च्रम्पत মাজল বেকত সিধি 🛚 🐪 ২০ क्लानबादन देकल (गई रूप मण्लाम এ তিন ভুবনে ধাতা। চণ্ডীদাস বলে এ তুই মুর্ডি কে জানে এ সুখ-কথা ৷ त्त्रहा .. त्त्रभा ।

ধানশী। এক এক পেহ দেহের গণন ध (पह चोहरत्र वह।

নব নব শভ সহজ্র পুরিত जनस जमम कहाँ॥ কোন অজ কোন করত সেবন ৫

সহস্ৰ পুটকে ছটা।

रेन्स् विन्स् हिन्स् हिन्स् जाडाव देवग दन नव चढे।

সাত পুট ঘাট সারল্য শব্দক চিক্ চিক্ অভিশর। >•

এক এক দেহ দেহ ভিন্ন নহে

দেহে রস ভার হর ।

কোন সে বভাবে কিসে কোন মডি রভির পাতিক কত। 🦒 কোন দৌ প্রধানে 💢 - কোন সে বেক্ড ১৫ কোন লে ৰোকক যত ৷ চারি চারি অঙ্গ অঙ্গ বহু এ অহ কে রতি পার। **ह**शीमांग कटह কোন কোন জন কেহ সে খু জিয়া পায় 🛭 এই সব তত্ত্ব কহিল বেকত , ইহা কে কহিতে পারে। ছায়ার মুকুর (पर (म (म ४२ **এ क्था (मिर्टिक इंटिन ॥** কালার ছটায়ে কালরূপ ধরে ৫ এ সব ভরুর কুলে। भोत्र प्लरहरू গোর বরণ . ধরিয়াছে অবহেলে॥ সধীর বচন হাসিয়া সঘন • সকলি গৌর দেখি। ज्ञांभनांत्र त्मर स्मान त्मीत দেখল সকল সধী॥ নিকুঞ্জ-ভূবন সেই ভ গৌর গৌর কালিয়া কামু। সকল গৌর रम्बन (वक्छ ১৫ গৌর আপন ভন্নু॥ नक्न भीत प्रिचित्र मिनो मस्मा नागम थमा। চণ্ডীয়াল কৰে ও নৰ নাগর গৌৰ হইল কুম্ব 🛚 🗢 তক্ত হয় ত এই পদে গৌরাদ অবভারের স্চন। द्विद्वा ।

चर्रे। टेड्यान (मथन আর অ্পরপ তমাল ভরুত্র গাছে। সে গাছে কভেক **ठैं।**न क**ि**श्रोट् দেধি অদস্ত সালে। কোপা হতে এল এত শশ্ধর ৫ অক্লণ সেখানে কেনে। ময়ুর ফণীতে একত্র দেখিয়ে কি হেতু ইহার সনে॥ मथोत्र वहन শুনিয়া তখন কহেন কোন বা সখা। ও নব তমাল ও নব কিশোরী তাহাতে বেড়িয়া থাকি। ফুলে ফুলে এক দেখ পরতেক **ज्यम** ना रग्न धरे। **ज्यक मर्गाम** त्रांशांत (२गी (भ ১৫ (मलना वरेट्ड उरे॥ বিধু যত দেখ ও নখ-চন্দ্ৰক উপমা গণিব কিলে। তু হু হু ওই লখিতে লখই करहन ७ ठ औपारम । क्नार्थ। সকল গোপিনী মোহিত হইল (मिश्रा (मैंश्रा क्रथ। ক্ষেণে ক্ষেপ অনন্দ বাড়িছে প্রেমের রসের কৃপ। **ट्या त्मर्थ (मर्थि** नशान छतिशा ৫ কি শোভা আনন্দ বড়ি।

তা পানে-না রছে

পিছলি পড়ায়ে ছড়ি॥

এ ছুটি নয়ান

কোন সে বিধাতা ক্রপ নির্মিণ · · এমন রসের সার। ও ज्ञानहरों। (मधि कि सिंध . কেবল অমিয়া ধার 🛭 এভ দিন বসি গোকুল নগরে ना एकि अपन कना। নিকুঞ্জে শোভল এত রূপ বেন ১৫ **(क्वल कालिय़ा शाना ॥** ভাবের আবেশে उ नव नागत्री স্থাৰের নাহিক সীমা। **छिमान वटन** দোঁহার রূপেতে মোহিত ত্রক্সের রামা॥ ₹•

বাবাৰ।
রাই শ্রাম একই পরাৰ।
হৈরি নাগর ধরণে না বান ॥
শ্রাম-কাকেতে কক হেলাইয়া।
বাহু বাহু আহুরে বেড়িয়া ॥
সোনায় সোহাগা বেন মিলে।
তেমতি নাগরী নাগর কোলে॥
এক অফ ছু হু নহু ভিন।
চণ্ডীবাল দেখি নিশি দিন ॥

400

Ticale I

বেশ অপরপ সিরা।

থরণী উপরে এ চারু পঞ্চল

দেশয়ে নরানে চেয়ে॥

পঞ্চল উপরে বিশ শশধর

চাঁদের উপরে গজ।

এ চারি গজের উপরে হুগল

কেশরী শোভিত রাজ।

ভেশরী উপরে এ ছই সারর সায়র উপরে সিরি। গিরিন্ন উপরে এ ছুই ত্যাল ১০ চাকু শাখা ভাছে ধরি ঃ তাহে এক শুন ে একটি ভষাল नवचन नम (मिष । একটি ভদাল সোনার বরণ **७न (१) मन्म-मधी ॥** তাহে কলিয়াছে ' অক্লণ-বৰণ এ চাক উত্তম কল। কলের ভিতরে কুল কুটিয়াছে নাহি তার শাখা দল ॥ ' তাহার উপত্রে কিয়ের বসতি ২০ ा शदा हरकांत्र हाति। তা পরে চাঁদের এ ছই বৈসভ পিতেই ভাহার বারি ৷ ভাহার উপরে विश्व (म अक्रश **ा शरत मस्त परि।** १० **ठ** छोनांटन दनिष মোহিত মানল এ কথা জানিবা কহি ।)। भनेक्रने (स्वट्न । २१। कहि । (क।

> १०५ चर्चरे-मध्न ।

দেশ নব কিশোর কিশোরী।
ও নব নাগরী দেশ ুনাগরের কোলে গো
আলে অলে আছরে পসারি॥
নব্দন বেন শ্রাম রাই সে চম্প্রকান
ছুঁছ ভুমু এ ছুই সমান। ৫
মত্ত করিবর কাছে বেমন কুরছ রাজে
মত্ত ভুকু কুমুম মুঠাম॥

শিখিপুছ উড়ে বার এক বেশী শোভা পার

এক কপালে শশ্বর ধরে।

আর কপাল মাকে কিবা সে জরুণ সাজে ১০

নাল পাঁত বসন স্থলরে ॥

বলরা বাছটি টার আর বৈসে মভিহার

বেশর সে আভরণ সারা।

এ মণি-মঞ্জরী পায় তাহে সে পঞ্চম গায়

আর প্দে মুপুর বিকারা ॥ ১৫

ই হ সে মগুর হাসি জমিয়া বরিধে রাশি

রন্দাবন কি শোভা আনন্দে।

চণ্ডীদাস বলে ভাল হুঁহু রূপে করে আলো

গোপীগণ মোহিত সানন্দে॥

व्यक्त्यम् । सुक्त्यम्

গুণের সাগর এ নব নাগর রাধার বদন হেরি। অমিয়া বরিবে হার্সি রসে রসে বামে শোভিয়াছে গৌরী। (एथ (एथ ज्ञा निया। রূপ মির্মিল কোন বিধি এত **क्र का**रन कि खुश पिया । কেমনে গড়ল এডস্কপথানি ধক্ত সে রসিয়া জনে। রূপ নির্মিল ১০ কোন বিধি এত कुन्मन मरनत्र मरन ॥ एक क्य विदन . অমিয়ার সনে মুখেতে দিয়াছে ঢালি।

চণ্ডীদাস কৰে ছুঁতু রূপখানি ' হিয়াতে রাখিরে ভালি। ১৫

३३। कूक्ना - कूँ विन ।

क्ट्रे-नक्त ।

শুন গোমরম-সই কি রূপ দেখিতুওই বেশ কি দিব ভুলনা।

হেন মোর মনে লয় কি আর কুলের ভয় মনে রহে বড়ই ছোবণা॥

হেন মনে করি সাধ যদি নহে পরমাদ ৫ প্রফুজনে কত্তু তরাই।

হিয়া কাড়ি যথা ওসু রাখিতে কালিয়া কাসু সেইখানে করিতাম ঠাই॥

নারী জন্ম করে বিধি নহে এই গুণনিধি নিশি দিশি রাধিমূ সম্মুধে। ১

বেখানে মরম স্থান রাখিলাম সেইখান
না পাইয়া শেল রহে বুকে ॥
শাশুড়ী ননদী পাপ তারা দেই বড় ডাপ
উচ কথা না পাই কহিতে।

চণ্ডাদাসে কতে ভায় কেন দোর মণে ভায় ১৫ এ কথা না গেল মোর চিভে ।

8 । (चारना···नामना ।

৯। নহে - ভাহা হইলে।

১০। রাধিছু ১-রাধিভাষ।

১७। ना (गन-(बांप **ब्यः** कांगन।

to#

(क्षांत्र।

রসিক নাগর চতুর-শেধর করিতে রসের রঙ্গ।

মনমথ বেন রুমণী মোহিতে সঙ্গ ।

ধৈরজ্ব না মানে আন নাহি ভনে ৫ নত্তিত ভেল তার।

নাগরী সকল দেখিলা বিকল কটাক লহতে চায়॥

ঈষৎ হাসিয়া নাগর রসিয়া করিতে রমণ কেলি। বেদন কুন্তম দেখিয়া ক্রখম লোভিত হইয়া অলি॥ যেন করিবর করিণী দেখিয়া रेथब्रक नाहिक मारन । মত মুগ বেন मुशिनी (मिश्रा ১৫ **ছুটিয়া বুলয়ে বনে ॥** তৈছন লুবধ মাধৰ মুগধ মোহিতে তরুণীগণে। অভি রসলীলা নাগর চলিলা विक हें छीमांत्र करन ॥ मनमथ—डिनाइ...(वांग इब्र, डिनमङ।

বিহাগড়া।

নিকুঞ্জ শোভিত কি রস-কেলি এ মণিমগুপ করিয়া মেলি রতন-মগ্রিত পরেশ দোল শুস্ত স্থারু গড়ল ভাল

রতন-মন্দিরে **শোভিতে।** ৫

ঝঝর ঝলকে এ চারু পাশ
মুকুতা স্থসারি গাঁথনি সারি
গল্প মল্লিকা যাতি স্থবাস
কুঞ্জ-কুটীরে চৌদিকে ভাল

ত্ৰগন্ধে আমোদ মোহিতে ৷ ১০

চ্টোদিকে জমরা জমরী গান
চক্ষোর চকোরী গাওত তান
হংস হংসীকর জোড়েতে কিরত
শিক্ষা-মাঝে মাঝে খুরি

মগুলগণ সারিতে ৷ ১৫

মৰুরা মৰুরী মরস ভাল কোকিল ভাতকী ভাকে রসাল শারী শুক পিক ভাকত সার

जर जर कुक माहिए ।

হরিণ হরিশী সারস পাখী ২০
ভূলোক গগন ক্ষেরত আঁথি
বৈছে দিক উজর রেখি
ফুচারু গমন করত কেলি
হেরি নয়ন মোহিতে।

চামর চামরু কুঞ্জনরাজ ২৫ দেওত নি**কুঞ্জ-মন্দির-**মাঝ তাহাতে **সাজল রাজ** তাহার বামে নারী গৌরী হেরি চণ্ডীদান গাইতে ॥

विद्याशका ।

ফুটল ফুল মাধবী বাভি
পারল কিংশুক ধাবক ভাভি
কেভকী কুন্দ কদম্ব পাঁতি
ধরণী লম্মিভ রসাল ফুল

বরণ কুন্তুম-কাননে ॥ ৫

কেয়া আমলকী পলাশ ফুল কুটল মলিকা ফুসারি কুল করবী গুলাল সৌরগু পূর গছে আমোদ কামনকুঞ্জ

वश्ववक्र त्नांक्रव ॥ ১०

বাঘনখি আর কুবল আদি ফুটল ফুল সব সমাধি চঙীদাস গুণ গাওত সাধি

অপরূপ রূপ কাননে।

গাওত কডেক তান মান 30 श्रिका मांगडी माश्रद्धत कत ্ হেরি সুরুতি মলের প্রাণ निकृश-वांचादन किरन । অভি মগন এ পাঁচ বাণ এ নৰ কুঞ্জৰ जाकात श्रम्बत ए রসিক নাগর শোভনে # (मिथ्रा नांश्वताम । এক শত নারী ি ৪। রসাল—আম, অথবা রসবুক্ত। कुश्चर व्यक्ति ১०। क्य ग्नम्ह। वांत्रियां मिल्ल माथ ॥ ১०। नाविः नात्य—मत्नत्र व्यानत्त्व । ज मिथि मामद नक्त कानक চড়িয়া কুঞ্জর পরে। রাধা স্থাম ভাই চড়ল ভাহাই कांटनांव । বিহার করই তারে ॥ বস্তু ভদ্ৰ ভাগ মান কুঞ্জর কামিনী वक्ष-व्रमन অধল রম্বী করত গান कित्रहे (व कुरक्ष कुरक्ष। মগন হইয়া গাওয়ে বাওয়ে এই রস-কেলি करत पूरे करन ३० वब्रक-प्रमण धनी । नक्न कामनभू(अ ঝাঝরি গান মুদক্ষ ভান **हशीमांग** (मि कानम्-मगन ররাব ঠমকি ভান মান সুখের নাছিক ওর। মূরজ কেরি ভেরী বায় নাগর নাগরী প্রেমের লহরী দুমি দুমি খন বাজনি॥ मनमर्थ रहा रखात्र ॥ वीमा द्विन् ज्ञव मधनी गांत्र পাখোৱাজ সৰ কি গতি বায় সুন্দরী পিণাক মধুর গাওনি ॥ (एव (एव जनक्र)। চণ্ডীদাস দেখি মগস তার শোভিছে সুন্দর এ নৰ কুঞ্জর গোপীর মণ্ডলী কি লোভা পার বড় আনক্ষের কৃপ। আনন্দ বড়ি লে রলের সার নিকুঞ্জ-ভৰনে বিলাসি সহনে ক্ষেরি ক্ষেরি মগন চিত্ত 20 লহরী মনন ভাতি। विमय विह्न कामिनी ॥ महन दश्यन रियात याकारत (रविद्रा थवन त्रांडि । শব কুঞ্জ-লীলা। গমন মোহিত গোপনী মোহিতে • ভেজিয়া कूटक वान। নাগর নাগরী धानुको समूक >० **প্রেমের সাগরি** विद्याग मनन ध हुई भगन महत्र । ছাড়িয়া নাগর পাশ।

শরের রমণী নিশিতে গ্রন জানিরা নাগর রায়।

এইখান হইতে মূল পুথির ৮টি পাতা নাই। অনেক চেটাতেও পাই নাই। ৪০টা পদ বাদ গিরাছে। ৫১০ নং পদ পড়িয়া বুঝা যাইতেছে, কোন সধী প্রীক্ষেত্র সহিত বনমধ্য দিয়া বাইতেছিলেন, পথে ফ্লান্তি বোধ হওয়ার উাহাকে কাঁবে করিতে প্রীকৃষ্ণকে অনুরোধ করেন। তাঁহার অহস্কার হইয়াছে বুঝিরা প্রীকৃষ্ণ সহসা অদৃশ্য হন। ৫১০ সংখ্যক পদের প্রথমাংশ পুথিতে নাই।

630

আগল শ্রেম অভিভরে বিকল হইল প্রাণ ॥ রাস-জাগরণে जनन नच्दन जांचि पुन् पुन् करत । চলিতে না পারি ৫ আর আমি মেনে শুনহ নাগর রে ॥ পারি এ কাননে তবে সে বাইতে यमि कैंदिश कत्रि नह। তবে সে বাইতে পারি বনজিতে ৰাগে এ কবুল কহ। হাসি কৰে কিছু রুসময় কান ইহার এমন রীত। রাধার বেমভ मणा छशका তেমতি ইহার চিত। ভাল ভাল বলি करह वनमानी ১৫ ভোমারে লইব কাঁথে। বড নহে.এই . তার পরিণাম ' কহিলা স্থামর চাঁছে।

পেয়ে সেই গোণী

₹.

नक्रन वहम

উঠিয়া বস্ধ বাঁধে।

হের আসি করে আর কিবা মোহে

মোরে আসি সহ কাঁথে ।

হ্বর শেশর জানিল অন্তর্গ
ইহার এমন দশা।

মদ অহজার হইল ইহার ২

পাওল বিষম দিশা ॥

হাসি গুণমণি কহে এক বাণী
ভূমি কি চড়িবে কাঁথে ।

চণ্ডীদাস কয় বিপাক পড়িল

সে গোপী পড়ল ধন্দে ॥ ৩

())

কহি এক বাণী শুন গুণমণি काँदिएक कत्रव भारत । তবে সে এ পথে পারিয়ে চলিতে निक्त्य कहिएय ट्याद्र ॥ व्यादेन धनी त्रामा কাঁধে করি ভোমা সেখানে বসিলা হরি। স্থামের সরস বচন পাইয়া नेष्डिंग लाभनाती । বসন নিবিড করিয়া বাঁধল त्मे दे **एक कार्य** হেন বেলে তথি চলি গেলা কতি সে নব গোকুলচাঁদে॥ त्निरं नव-नाती কার্ছের পুডলি

সেই নব-নারী কার্তের পুড়লি

দাঁড়ারে চেডন হরি।
বেমন জার্কাশে বজর ভাজিরা ১৫

পড়ল শিরের পরি॥

কান্দরে করুণে পড়িয়া কাননে

ধূলারে ধূলর ডমু।
বিষল হইথা

বৈষন হরিণী বিকল হইগ্র কাননে বেড়ার পুসু॥ ২০

¢

5.

8 | **- जक्**तरथ --- फ्रंथ |

त्रांषम (वषन चारक्षम गरत · ভারাতে পরাণ-পতি। কোথা গোলে নাথ ছাড়ি মোর সাধ ভোষাৰে না দেখি কডি। श्राटमदत्र श्रीकटत्र २० সেই নব-রামা একাকী কাননে পড়ি। মুখে নাহি বাণী বেন অনাথিনী শিরে করাবাত পাড়ি ঃ সোনার প্রতলি বেম সে ধবলি পতিয়া कामन-वरन। विकल स्टेब्रा मुत्रका भारित्य मोन हखीबांत्र छट्न । ২৯। ধৰলি-ধরণীও ছইতে পারে।

CHUIT I ওচে নাথ কি করিয়া গেলে। বজর পাড়িয়ে মোর ভালে। आमि (म क्रम क्रम कांक। পুরিহরি সভীপণা লাজ। আও পাছ কিছু বা গুণিতু। ছার মুখে कि বোল বুলিমু।। ভূমি পতি পুরুষ-রতনে। ইহা না জানিল পরিণামে ॥ ব্দপরাধ ক্ষেম এইবার। ভন নাথ মহিমা ভোগার ॥ व्यवना कि कारन खनतानि। আমি ভোমার ভরণের স্বাসী । আপনার ঋণে কর দযা। লইরাছি ভুরাপদ-ছারা ॥ मीन वि क्लोमान बरन। कांग्र में किवादत थनी हटन ।

410 द्श्य ब्रांश वित्नाणिनी ब्रम्बीब निट्यामनि कैंबिट कैंबिट टारे भर्य। शिव महत्त्वी मत्न हता गयी जातवान वज़रे बहेन जमूत्राथ । বিরহে আকুল ধনী সার বভ গোপিনী ৫ সেই বনে প্রবেশিল গিয়া। (मधिन हत्रनहिन বিহি পদ আছে শ্ৰ তার কাছে কাছে আর্নিয়া॥ तमनीत शर जांदर तम शरमत कांदर कांदर औ एमध नयन ठाहिया। **এট स्मध्य अनमनि** आनिया वा काम धनी (वन किन रहत रहेगा । **ভার চিহ্ন দেখ আরে সিন্দুর দেওল** ভারে পত্তে মধি পরাইল ভালে। সেই পত্ৰ ঐ দেখ कांकरमञ्ज्याहरू (वर्ष) ह क्रविभ करल कुष्ट्रण ॥ हमान प्रियोटक वार्क जांत्र हिन्स रम्थ ब्राट्स এই দেখ ভাহার নিশান। নয়ন আগুনু হয়ে वल्दन वनन नद्य অতি বড় উঠি গেল মান। বেশ কনাইল ভালে जुनिया वरनत कुरन এই দেখ কুত্ম ভুলিয়া। কুমুন ভাঙ্গল হরি এই বৃক্ষ-গতা ধরি ভার চিচ্ছ দেখ না আসিয়া # তা দেখিয়া অমুরাগী विद्रह छैठिन वाणि २० (कान बामा अन कुक नरव ! हशीमान करह कानि नत्त्र नत्त्र त्यांभभनो ভারে কাসু গেছেন ছাড়িয়ে। এই পদ হটতে বুঝা বাইতেছে বে, প্রীকৃষ্ণ কোন গোণীকে गहेबा श्रीबाधिकांव निक्षे स्टेटि अश्विष्ठ स्त । तिरे গোপীর অংকার দেখিরা একক ভাষাকেও ভাগে করেন। ·६५६ कांगडा ।

দেখিয়া বিকল অতি সে আকুল त्म नवं कित्भात्री तारे। মানেতে মোহিত অতি গুরন্তর किছ मा বোলয়ে जारे । कुरलद तमनी व সে কোন কামিনী কেমন তাহার কাব। वंश्रुद्ध लहेश সবারে তেজিয়া विरुद्ध वटनद्र मांच ॥ विद्यांग विवारग क्रक विश्विशी তাহে ভেল অভিরাগী। তাহা সে করিব বে আছে মরমে যদি বা পাইয়ে লাগি ॥ এ সব থাকিতে সে এত বাণিত সে হইল এতেক ভাল। এই অসুরাগ व्राणिनो अखदा ১৫ विद्यांग छेठिया (गल ॥ সেই পথে চলি যার সবে মিলি রাধার সক্তেতে দেখা। মুৰ্চিছত হইয়া সেই গোপনারী পড়িয়া আছিল একা। अन विदनामिन চণ্ডাদাস বলে देशक केवन मणा।

कांबद्धां ।

भारेमा भन्न खाया॥ (१)

কহিতে ইহার

निष्ठेत्र वहम

স্থি, এমন ভোষারে কেন বেথি। একলা গহন বনে পড়িয়া আছহ কেনে আভরণ মকল উপেথি॥ রাধা আগে ক্রহে বাণী কি আর পুছৰ তুদি कहिरात वस्त हरत गांच । यह जजागिनी नाती यहन-हांडुबी कि করিলাও আপনি অকাজ। बुन्नायम बागबरम काणि गव रणाशी स्थर **खेळाशव विभित्मत्व अहै**। রাধার বাসনা সাধে কামুর চরিতে কাঁথে ১ ভোষারে ভেজিয়া গেল সেই। আমারে লইয়া শ্রাম আইলা সে বনঠাম वार्ग रत करित कनजारा। ভাজি মোর অহন্তার ' তুখ গেল ছারধার আমার হইল হেন দশা-ঃ ভোমার ভাঙ্গিতে মান তেজি গেল কোন স্থান সেই মত একাকিনী বনে। अभि स्थामुची ताथा अमरत शाहरत वाथा मीन ह्थीमांत्र देश छटन ॥ রাধিকাও পূর্বে শ্রীক্লফের কাঁবে চড়িতে চাহিরাছিলেন

রাধিকাও পূর্বে শ্রীক্ষের কাঁবে চড়িতে চাহিয়াছিলে তাহাতেই শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে ত্যাগ করিয়া যান।

434

এ কথা শুনিরা বিনোদিনা।
অধিক হইলা বিরহিণী।
কি আর করিব সখি বল।
কামু বড় নিদর হইল ।
বনে বনে খুঁজিতে মাধাই।
ভার দরশন নাহি পাই।
তোর দরশন নাহি পাই।
তোর করিল পরাণ।
সো পঁছ করল নিদান।
ভানল দোহে খেল বাম।
আমরা কি পাওব কান।
বার লাগি ডেজল গেছ।
ভছু পদে সোপায়ু দেই।

¢

>

श्रम्बन भतिबन जाम । দুৱে ভারতু অভিনাব। कुंबहन कतिन कुवन । 24 ज्ञान ज्ञान देवन भग ॥ পাড়ার পড়সি দিল ডোর। লে কামু করিল নিজ কোর।। निष्ठा एडजन खनमनि। অমুরাগে যভেক গোপিনী।। 20. मीन हखीमांन वटन छात्र। এখনি মিলব যতুরায়।।

>। কাঁথে চড়িব বলার আমার প্রতি ও অপর একজনের প্ৰতি বিৰূপ হইয়াছেন।

>७। गर्भय--- खुर्भय ।

कारबाद ।

अन (ग। मध्यनि महे कि वृक्षि कतिव। কালিয়া কামুর লাগি আনলে পশিব॥ যাহার লাগিয়ে হল এত পরমাদ। त्म कतिम श्रूथ मन्भारमण्ड वाम ॥ সকল গোপিনী বলে আর কিবা দেখ। সে শ্রাম নৈরাশ হল কি আর উপেধ। व कन कतिछ एया दन हन निर्वेत । **७ विश्वाविष्य (अन देवन अ**डिवृत ॥

>•

এ ছার জীবন কেন থাকিয়ে ধরিয়া ॥ দীন চণ্ডাদাস বলে এত পরমাদ।

এখনি মিলব কামু মিলিবেক সাধ।।

वस्नाटङ शिद्य हल मनिव जुविद्या।

শুনহ সজনি আর কি দেশহ मत्र व्हेल मात्रा। योरेब्रा वसूना মরিব সঞ্জনি **এ अन जामांत्र धाता ॥**

शंश पिए तारे कता। বুঝিল নিশ্চয় त्नर यष्ट्रताग्र ত্ৰীবধ পাতকা ভয়ে।

वरिया वम्नाकृता।

ञांति (एथा फिन

এই मत्न जीनि

সব গোপীগণ

সেই সে নাগর

শুণের সাগর

नागरो नकन ১৫

नक्न (गामिनी €

ट्न देकत मन

वहन मधुत करम्॥ দেখিয়া নাগর

নবীন ত্রজের রামা।

চণ্ডীদাস বলে

উঠলি উপল প্রেমা॥

ঠানি—অত্নান করিয়া, ভাবিয়া।

यश्रे।

नागत्री मकल নাগর পাইয়া হুখের নাহিক ওর। বেন বা কে ধন পাইয়া তেমন

वैधुया कतिन (कात ।

थित्रा शिक्त ए নয়নের ভারী

আসিয়া বসিল পুনঃ।

भक्ती विकल ৰুণ ছাড়া হয়ে সে জল পাইল হেন॥

বেমন চাঁদের রসের বিহনে

চকোর অবশ হয়ে। পরাণে জিয়ল রস পেরে বেন

एक त्म क्यांत्मत्व (भारतः ॥

লাগিয়া চাতক বেন মেঘরস

পিরাসে পিঙ সে পিঙ।

ठांडक बाँठन ३८ রস ভালাপনে

u त्रम नी काटन (कह II

পাইয়া নাগর নাগরী সকল · কহিতে লাগিল ভারে। এ্যন পীরিভি নাছি দেখি কতি **ह**श्रीमांत्र क्षण शांद्य । 20 । ठीटनत तम · ख्यां। >४। व्यागांभरतः अव्यापां । श्रमित्र । বঁধু, ভাল সে বটহ তুমি। এক অপরাধ জনম অবধি করিয়া আছিল আমি # সেই অপরাধ বিষম বিবাদ করিলা নাগর রায়। আমরা অবলা অখলা কি জানি সকল গোচর পায়॥ কঠিন সে জন কালিয়া বে জন এবে সে कानिल पछ। কালার সঙ্গেতে বে করে পীরিভি ১০ शतिशांटम स्ट्रा व्यात ॥ ব্ধন না ছিল ভোষার মিলন তখন আছিল ভাল। হাসিয়া হাসিয়া ব্দাতি কুল নিয়া निमादन जानन जान ।। >e পরের পরাণ হরিতে ভোগার ভিলেক নাহিক দয়া। পরবল ভূমি কি বলিব স্থামি বেমন বায়ার ছারা। বেমন কলের বিশ্বক সম্মুখে ২০ (मिथ्रा मिनारम वाम । ভোমার পাঁরিভি দেখিতে তেমন मीन क्छोमान गात्र।। DD विवित्र-विद्या क्षात्रात्र कृ

693 ভাল হইল বঁধু ভোমার পীরিতি নিশির স্থপন বেন। কৰিতে কহিতে দেখিতে দেখিতে (म नव मिहारे (मन । আমরা অবলা व्यथना त्रमणी व ভিলে কতবার ভূলি। দোষ গুণ আদি কিলের অবধি ধরিয়াছ বনমালী ৷৷ ভাল সে ভোমার চরিত বেন্ডার এবে সে জানিমু কামু। निष्यं नह পরবল হও ভোমারি স্থপন তমু॥ তুমি দয়া কর দয়ার সাগর কলপভক্ষর গাছে। শীতল দেখিয়া ও তুটি পক্ষ ১৫ শরণ লইয়াছি কাছে॥ এ নহে ভোমার মহিলা করিতে অবলা জনার তুখ। এড়িয়া কাননে গেল কোন ছানে কত না হইল হুখ। **हशीमान वर्ल** (व रन रन रन এখন পাইলা कान। পরশ-রভন कतिया प्रवन रामदम कत्रर चान ॥ १-৮। जामत जनमा, जामार्ट्य कड स्वांत स्त्र, छाहा कड মুর ধরিয়াছ ? >>। पूमि एकवम, देशदे कि वर्ष नरह ? ১২। ভোষার সকলি অনীক।

२०। कछ छाउँ वित्र पछिन।

१२२ गि**यक**ा ।

रक्षा (इ कमन-कान का जान कब्रह मान मार अन किइहे ना नल। পরবর্ণ রস প্রেম এবে সে জানিল ছেম व्यभिद्रा (महत्न कथा कथ । ভোমার অমৃত বাণী কত বোল পেয়ে জানি ৫ হালি পরকিত সুধাময়। পাইয়া অবলা জন এমন রভন ধন ' কোথা ছিল হেন মনে লয় # ভোমার কারণে ছরি গৃহকাল পরিহরি গুরু গরবিত যত জনে। ভোষার কলছ-মালা ক্রদয়ে পরেছি কালা नहेनांड करिया हम्मरन ॥ বে বল সে বল কামু ভোমারে সঁপিতু ভত্ন মো সবা ছাড়িবে আনি পাছে। দেখদেখি ত্রিভূবনে,কে বা আছে ভোমারিনে ১৫ ু আর সে দাঁড়াব কার কাছে। যে কর উচিত কাজ প্রন হে নাগররাজ পরভাব না করিছ মনে। दक्षमात्री मनकाम कि शृतात ७१६ णाम मोन कीन हरी मात्र छटन ॥ । পর্কিড-প্রকৃত।

> ८२७ जिस्हा

নিছ্ছা।

কি আর বলিব পায়।

শুন হে নাগর রায়
তারা কি পরাপ এড়ি।
কাননে ংহিলা ছাড়ি
আমরা অবলা নারী।

দেখিঞ্জন নাহি ধরি ।

জুমি সে পরাণ বন্ধু। কেবল করুণানিজু ॥ দীন চণ্ডীদান কয়। সুধারন জুমি ময়॥

১০। ভূমি ভ্রারসময়।

८२८ शिष्कृत्।

শুনিয়া রাধার বিনয়-বচন
কৰিতে লাগিলা তায়।
তোমার পীরিতে এ দেহ সঁপেছি
এ কথা কৰিব কায়।

ত কৰা কাহৰ কায়।
তোমা না দেখিয়া আঁখির পলক ৫
যদি বা নাহিক দেখি।

দেখিলে জুড়াই না দেখিলে মরি
শুন শশধরমুখি॥
হাসিয়া হাসিয়া নাগর রসিয়া

তুষিতে লাগল তায়।
বুদাল বচনে ক্রি**রা লেচনে**কটাক নয়নে চায়॥

যাংল ভাহল সমে নাভাবিছ ভনহ জুলরী রাধা।

ভোমার মরমে আমার মরমে ১৫ সদাই আছায়ে বাঁধা॥

রমশীমাঝারে তৃষিয়া নাগর
চাহিয়া সবার পানে।
এমন পারিতি কোবাও না দেখি

চন্ডীদাস রস ভণে॥

्रद भूत्रको ।

দেখিলা নাগর নাগরী সকল দিয়া সে ব্যেগর ভারা।

মধুর সরসে ন্দ্ৰেহে যুশোমতী ব্দাদর স্বভাবে ৫ বেমন কুন্থম অলিকুল পিয়ে ভারা 🛭 এ क्रीत नवनी जानि। খতে খতে খতে লাখ শত শত ৫ কানাই-বদনে मित्रा (न वज्द त्रमणी अदक्क त्रम् । करहम मधुत्र वाणी॥ আতু বনে তৃমি কামু সে লুবধ ভ্ৰমর বেমন বাবে বাতুমণি মধুপানে অভিশয়॥ শুনিতে লাগয়ে জর। লোকমুখে শুনি মধুর সে মাতি বেন মন্ত হাতী বিষম কাহিনী অঙ্কশ নাহিক মানে। থাকয়ে কংসের চর 🛭 কামু বলে মাতা সবারে ভূষিয়া নাগর রসিয়া না কর সংশয় করুণ বাঁশীর গানে ॥ . তোমার চরণ আশে। মধুরসম্বরে বাঁশী বাজাইয়া নাগর চতুর রায়। তারে বা গণিয়ে কিসে॥ বাঁশীর আরতি ১৫ গুণত পীরিতি মায়ের করুণ বচন শুনিতে ध क्था ना कारन मात्र॥ সে হেন যাদব রায়। নিজ নিজ গুহে গেলা গোপীগণ মধুর বচন করিয়া ছব্দন না জানে গৃহের পতি। আরতি কহিছে মায়॥ বেমন যে ছিল ভেমন পৈশল কোটি কংস ভারে কটাক্ষ নিমিষে ঐছন আরতি গতি॥ क्तिएड भातिएय ध्वःम । . বতুনাৰ গেলা নন্দের মহলে শুভলি মায়ের কোলে। আমি বছুকুলবংশ ॥ জননী না জানে এ রস বেভার মায়েরে ভূবিয়ে চতুর কানাই ২৫ मोन हश्रीमांत्र वटन ॥ क्षन (भा (वहनी माग्र। पण्ड चर्छ---मरम मरम। বেশের রচনা করছ রচনি २७। (वर्षात्...वावश्रंत्र। मोन छ्छोमान गांग्र॥ त्रांगनोना गर्यास । २। अभिकृष्यः । अभिकृषः। **३८। जाएं...जानीकां**रमः অকুরাগমশ। · গোৰ্ছ। নিশি গেল দুর এভাত হইল উঠল খ্যামক্লচন্দ্র। বেশ বনাইছে মায়। মুখ শশীখানি . স্থবাসিত জলে চাঁচর চিকুম বনাই স্থান্তর (थात्रम् रगोक्नाहसः ॥ চূড়াটি বাঁধিল ভার 🛭

ৰেড়িয়া মালভী স্থানি স্থাভি বৃধি दिन यति हम नोन मरचम .कूरम्बर किनका पिरत्र। e হিয়াতে ভরিয়া রাখি। ভাহার উপরে **মুকু ভার মালা ৮। ছ থরি •• ছ**মারি।। **अवान-मावादत्र** मिट्र ॥ २४। बाह्य---बाह्यका সোনার ছ পরি মালা দিয়া ফেরি মাণিক খোপনি সাজে। বেলয়ার। शांथि बदा बन ১० পরশ-পাথর **दिश्व दिश्य नम्म ब्रांग्न कि कानम्म (भाव) शांग्र** कि त्नांका त्रथ ना मादव। विश्व (यन एन एन एम यमूनाय। মরুর শিখণ্ড দিয়া ভার পর नव नील धन ठाँक मनमथ किनि साँक বিনি বায়ে দেখ উড়ে। অমিয়া-সাগর স্থ্পায়রে ভাসার 🛚 ফুলের সৌরভে অলিকুল বভ प्रिया जानम रिष् नम त्वाव क्रेश दिवि ए উড়িয়া উড়িয়া পড়ে 🛚 **४त्ररण नाहिक रमन वांग्र।** কোলে লয়ে নন্দরাণী ও মোর বাত্রামণি **ञ्**षिटक **ञ्**कात কদন্বের ফুল চুম্বন করিয়া কাঁলে মায়॥ কি শোভা পেয়েছে দেখি। ध दिएम दिमारन वरन याहेरव दश्यूत महन নালমণি ষেন হেন লয় মন পদযুগ অভি সে কোমল। ै. নবঘন কিলে পেখি॥ বিষম ভাতুর তাপ নাগিবে সে উভভাপ কপালে মলয় চন্দন-ভিলক ২০ জানি বা গলিয়া হয় জল। ভাৰে গোৱোচনা কেঁটো। এই वर् छर्द छत्र (इन मात्र मरन नग्न क्षेत्र्य समारक বেমন অলকে ज्नाकृत वाटन वा हत्रत। शृनिमा ठाँदमत घडे। বরে বসি থাক বাপু ভোমা না গাঠাব কভু ১৫ অধর বান্ধলি বেন রাতাগুলি मीन हखीमांत्र देश छर् ॥ कि कांनि रिकूरन पनि। ७। जानत्य ज्योत हरेतन। ভাহাতে কাৰল নয়ন চাভক **অতি সে শোভন ভালি ॥** বাহে টার বালা • গলে বনমালা কটাতে খুসুর বার। अविद्रुष्टि । করেতে মুরলী শোভে দেখ ভালি ৩০ 🔸 হেন বেলে যত রাধাল বালক রতন-সূপুর পার 🛭 আইল কানাই নিতে। हरोबाटन क्य · अमाम रुमान ू শার বস্থাম নটবর রূপ नषारे प्रचिद्ध चाकि। বাঁশা শিলা বৈণু গুতৈ ।

চল ভাই কাসু	কি কাল বিদৰে	æ	20.			
' ' হইল উছর বেলা।			त्रायटकनि ।			
. এখন কি কাজে	আৰু গ্ৰহমানে		পুনঃ পুনঃ কহি রে।			
	করহ ধেনুর মেলা ।		শুন বাপু হলধরে।			
ধবলী শাঙলি অভি চোরা গাভী			কেবল আঁখির আঁখি।			
			ভারার পুতলি সাধী।			
বদি বা উচর হয়।		>•	ভূমি ভ প্রবীণ বট। 💮 🦸			
मृत्र वटन गिरम			আমার বাছয়া ছোট ॥			
এই উঠে মনে ভয়॥			ব্দাপনার কুধার বেলে।			
ভূরিত গমন	কি আর বিলম্ব		খাইতে দিও ত ভালে॥			
রাধাল আঙ্গিনা ভরা। [']			সম্মুখে রাখিওকান্থ।			
क्टब व्लथन	यरमान्। ८गांहत	>¢	ভূমি চরাইবে ধেতু। ১০			
ভূমি সে করহ ধরা।		কামুর ধরাতে বাঁধি।				
এ কথা ভনিতে	যশোগা-হৃদয়ে		কীর ছেনা ননী চাঁছি ৷			
উঠিল বেদনা বড়।		ৰাছুৱে করিয়া কোলে।				
কেমনে পাঠাব	এ হেন ছাওয়াল		শ্বাপনি খাইবে বলে॥			
ভূমি সে হইও মড়॥ ২০		ર•	ছুখিনী অভাগী আমি। ১৫			
বলরাম-করে	ধরি কিছু বলে		কেবল ভরসা তুমি ।			
ওন হলধর তুমি।			ভিলে না দেখিলে মরি।			
ভোমার করেতে	সঁপিল বাছুৱে		এই নিবেদন করি ॥			
কি ভার বলিব ভামি ॥			এ কথা যশোদা বলে।			
কত শত বেরি	কটোৱাতে ভরি	20	हशीमान करह खारन ॥			
রাখিয়ে এ ক্ষীর সর।		১৪। বল, আপনি তাহাকে পাওয়াইবে।				
নিশিতে পিয়াই						
ভরিয়া এ ছুটি কর ॥			e * >			
ক্ৰেন্বচন	বলরাম হেন		(बरनोशंत्र ।			
	প্রাণ।		চলিলা রাধাল সকল মঞ্জ			
আমি সে থাকিতে			লইয়া ধেন্দুর থাল। হৈ হৈ বলি			
मीन हखीमान						
			কেছ নাচে গায় কেছ বেণু বায়	¢		
৬.। তচর আতারক। ১০। উচর-: চঞ্চন, বিপ্রগামী।			কেছ বেণু দের সাড়া।			
•			কেহ ডাল মান করে অভি গান			
namen de separa			কেছ নাচে অভি গাঢ়া।			

क्लान् वरन यादव কেহ বলে ভাই কহত বোলত ভেয়ে। . সেই বন পালে চলে ধেমুগণে তবে বাই ধেনু লয়ে। বলরাম ভার কহিছে সবহি कानारे वाहारे वरण। (गरे निक् भारन চালাহ রাখাল ১৫ আমি সে কহিয়ে ভালে॥ যভেক রাখাল • कट्ड वादत्र वादत ওন হে রাখাল কামু। তাতু কোন্ বনে বলহ বচনে 'কোপারে চালাব ধেনু॥ ₹• কামু বলে আজু চালাহ সঘনে ভাগ্রীর-কানন বনে। সেই বনমাকে চালাইবে পাল मीन हशीमांत्र खर्ग । _____ 103 (बरनायात्र । ভাণ্ডীর কাননে চলে ধেমুগণে नकन त्रांथान (मिन । নানামত খেলা া সকল রাখালে मिरत **উঠে क**त्रजानि ॥ আর বত লীলা বিস্তার আছরে ৫ ভাগৰত হুখ কেলি। কিছু কিছু আছে সংক্ষেপ রচনা **क्विन कृष्टेक विन ॥** আর পরমাদ পড়িল সংশয় (शक्त नत्मत्र चरतः। ज क्यां ना कारन গোঠের লীলাতে ভোলে॥

নানামত খেলা সকল রাখাল त्थनरव् महनव नहम । অবসান-কাল व्यानियाः हरेन **३**६ জানিস ৰালকগণে ॥ আজিকার মত খেলা সমাধিয়া চলহ গোকুল পুরে। কালি আসি বনে খেলাৰ বভনে अन छाहे इनश्रत ॥ অড় কর পাল সকল রাখাল শিঙ্গাতে দেহত সান। চলি যার সব রাখালম এল विक हशीमांग गांन ॥ ৮। क्षेक ... এक हू-नामान । ৯-১০। अञ्बद्धार्गमनक्रम विश्रम्। 1 四年 1 (5)

भूववी ।

চলত নাগর কান।
রাখাল চলিয়া বান ॥
কেই নাচে গুণগানে।
যমুনা সরস মানে ॥
উঠিল বেণুর সান।
ধেমু চলে আগুরান॥
মুরলী স্থার রবে।
পাবাণ হইছে জবে॥
কামুর বাঁশীর গানে।
যমুনা উজান পানে॥
চলি বার নানা রকো।
নবীন রাখাল সজে ॥
বোকুল মুখেতে চলে।
হৈ হৈ বৰ বলে॥

গদগদ হৈরা ভাবে আবেশিয়া সে রাঙ্গা চরণে শোটারে পড়িব ১e সুখের নাহিক ওর॥ নিজ আপনার দেহ ॥ .जाक (मंथर চরণ ছুখানি ৫ কিবা হুখদশা হুখে নাহি স্থানা লোটায়ে পড়িব ভায়। জনম সকল মানি। প্ৰেমে কত শত প্রণাম করিব প্রভুর চরণ দেখিব নয়নে সে তুটি কমল-পার॥ কহিব বচন বাণী।। ২০ ধরি চুটি হাভ ভবে বন্ধনাথ ষে পদ-পরশ আশে অবিরত 🕠 পরশ করব মোরে। ব্ৰহ্মাদি যতেক দেবা। আলিজন রসে পদ গদ হব বুন্দাৰনে আসি ভরুলভা হয়ে थाकिया कब्राय (न वा ॥ ও নব নাগরবরে 🏻 দেব শূলপাণি অবিরভ গুণি ২৫ পাইয়া পরশ হইব হরষ 'ভাসিব আনন্দ-জলে। গাইছে পরম স্থরে। এ সব কাহিনী কহিতে চলল ১৫ মুনি ঋষিগণ করমে শুৰন मीन हखीमान वटन ॥ অতি সে পরম রসে। গোকুল-ঈশ্বর গোকুলে আসিয়ে क्रिमा नत्मत घरत । ७० চন্তীদাস বলে হেনক সম্পদ্ গড়া। হেরিব মনের সরে॥ এ সর[°]বচন ভাবিতে ভাবিতে ১৬। 'निक जाननात्र', 'बहन बानी', '८०व रमध', * অঞ্র চলিয়া যায়। 'প্রল বিষ', এরপ ছিকজি চণ্ডীদানের পদে প্রেমের স্বভাবে রসে আবেশিয়া विव्रम नरहाँ পুলক হইছে গায়। ৩২। 'সরে' কথাটা নানা অর্থে নানা ছানে वाबक्ष व स्टेबार्क । देशव शक्ष वर्श তৈছন অক্র দেহা। স্থির করা কঠিন। আঁখি চল চল প্রোম অশ্রুজনে विमत्रम निष्म (गहा ॥ त्यक्षिक्यू अधि ক্লেণেক চেত্ৰন निष्का। (कर्णक जनम इत्र। ভাবের বিকারে আপনা পাশরে মুনিগণ বারে ভাবে নিরস্তুরে व्यवस्य महत्व मूर्थ। আপনার বশ নয় 🛙 কংস রাজা হইতে আমার হইল সেঁজন না পার মহিমা অপার আন কি জানিব লোকে। ও পদ দর্শন লেহ।

এই মত কত ভাবের উদয় 🗼 নগর সফল ৫ ধন্ত সে গোকুল . . मनारे तम्बद्य कान्यू। व्यक्त महा तम मिछ। ধশ্য সে গোপিনী थक दन वरभोगा व्यक्ति रंग कतिन, শুভ দুশা মোর সঁপিল আপন তমু॥ দেখিব গোলোকপতি॥ ত্ৰজবাসী বালা ভাল পেয়ে মেলা বে পদপল্লব বোগীর ধেয়ান কানাই সঙ্গেতে খেলে।-করিলে নাহিক পায়। ভাই ভাই বলি কাঁথে করে লয়ে সে জন দেখিব ৰয়ৰ ভবিষা চরায় ধেমুর পালে॥ ত্র আঁখি জুড়াব তার॥ ना जारन लारकरङ গোলোক-ঈশ্বর • ভক্ত বিচার এই সব কথা বিহরে গোলোকপতি। कति शिला मरन मरन। নয়ন ভরিয়া हैं। प्रमुख दम्दर्थ ५० বিষম পড়িল গোকুল নগরে ১৫ আনন্দে এ দিন হাতি॥ मीन हखीमांत्र छट्न । স্নেহভাবে সেই নন্দ যশোমতী করিয়া বালক-ভাব। শ্ৰীরাধিকার স্বপ্ন। পতিভাবে গোপী পীরিতি করিয়া टेडबरी। তারে শেষে হরিলাভ। ₹• প্রভাতে উঠিয়া বিনোদিনী রাধা কানাই রাখাল করিয়া মানল কহিতে লাগিলা কথা। গোকুল পুরের লোক। ভোমরা শুনিলে এ সব কাহিনী কুঞ্চরূপ হেরি আনদ্ধে বিহরে হিয়ায়ে পাইবে ব্যথা ॥ নাহি কোন ছখ শোক। আজুর নিশির স্থপন দেখিল ৫ চণ্ডীদাস আশ करत्र भेषडल २० অতি অদত্ত বাণী। ভাহার কণিকা পেতে। শুনহ সঞ্জনি ভোমরা চেডনি মন নহে ভাল िख नरह मठ কি হয়ে নাহিক জানি॥ কেমনে পাইবে তাৰে । नव नथी वटन কৰ কৰ রাধা कि रिष्ठू देशन अमि। ১० রাই কহে সব নিশির স্থপন 4 कश्चि नाभिन वानी॥ গ্দ গদ প্রেমে পথে বার চলি निर्मि अवरगटव যুমে অচেডন व्यानमः रहेशा विष । द्दनक नमग्र कारन। অঞ্জলে অঙ্গ छिजिन गँवन त्रथं जारतार्ग क्त्रि धक्कन ১৫ ं রথের উপরে পড়ি । সাইল গোকুলপুরে॥

আমি যেন বিকে বড়াইএর সাথে গেছিল গোকুল পুরে। হেন বেলা দেখা হইল আমার কহিতে লাগিল ভারে।। ২০° রথ আরোহণে কোপারে গমন এ পৰে যাইছ ভূমি। ' কহিবে গোচর কি নাম ভোমার তাহারে কহিল আমি॥ কহিতে গাগিল ' সব বিবরণ ২৫ অক্র আমার নাম। কৃষ্ণ বলরামে আনিতে যতনে এ কংস রাজার ধাম ॥ এ কথা ভ্ৰিয়া বেদন পাইয়া আসিতে গৃহের মাঝে ৷ ৩০ **छ्छोमाञ वटन** निर्मित अर्थन মিছা হয় সব কাজে॥ (8) रेड्डबो । এ কথা কহিতে সব স্থিগণ কহিছে রাধার কাছে। স্বপন আপন না হয় কখন শয়ে এক সাঁচা আছে॥ **(इन (बार्स मात्र)** निंग मूरत (शन ए विग्राद्य रहेनं छूप। সেই সভ্য মোর কিছু নাহি ভায়ে অঙ্গেতে নাহিক সুখ 🛭 কোন স্থা বলে অমুভাবে দেখি ঐছন ক্ষিয়া হিয়া। ১০ কি জানি অপন কি না হয়ে পুন সেই গৌরী-শিরে

গণাহ গণক লয়া ৷

ভাল না কছিলে নরম্-স্থি হে মনেতে লাগল মোর ৷ · · দেয়াশীর খর বাহ একজন ১৫ বুকহ ইহার ওর 🖁 এক গোপনারী দেয়াশীর ঘর গেল সে বিরসমতি। গৌরীর মাণায়ে ফুল চড়াইয়া বুঝহ এ কাজ গতি ৷ ফুল চড়াইল গৌরীর মাথায়ে (मग्रामी कहिरक जाता। যে কারণে পোপী আরাধন আসি पिरव रम भाषात कृ**रम**॥ कुल नाहि नएए जुरम नाहि भए २० দেয়াশী কহল ভায়। অতি অমঙ্গল পড়ল গোকুল না জানি কি জানি হয়॥ **छ** छोमां ग वरल स्था वर्गां भावि সকল মিছাই নয়। ৩০ কখন কখন কান্সের গোচর কিছু কিছু সত্য হয়॥ ৩-৪। নিজের অপন শতকরা একটা সত্য হয়। e-৮। व्राधिकात खेकि। ১৩-১৬। ब्राधिकांत फेक्कि, खान ना कहिरत, खानहे बनिरन -- 'ना'द्र निरवध व्यर्थ नरह। टेक्ट्रकी ।

সেই গোপ-নারী রাধার গোচর

কহিতে লাগল পিয়া। পুষ্প চড়াইডে (मग्रा[®]) विनयू दे**स्त्रा**॥ ं

না পড়ল ভার শিরে এক ফুল ৫ · . . শুনহ সুন্দরী রাধা। व्यमज्ञा (यन व्यस्तक व्यस्तः সকল দেখিল বাধা। এ ৰুথা শুনিয়া সুবার চিত্তেভে বিস্ময় ভাবিল বডি। ভাৱে গণাইব গণক আনিয়া সে অন পাড়িয়ে খড়ি। বসিলেন তথি আসিয়া গণক লিখিল বোলই ঘর। বেদ পরিমাণ ১৫ ভাতে জাঁক রাখে খড়ি দিল তার পর॥ প্রথম বাদের বর ছাড়াইয়া তার পাশে পড়ে খড়ি। সীতার ঘরেতে খড়ি বসাইল এ কথা কহিল ডেড়ি॥ ২০ সীতার ঘরেতে বহু ছুখ বোলে গণক কহিল তার। মনে করি কিবা কছে খড়ি দিয়া ২৫ গণক কহিল পুন:। এই মনে কর রহে গিরিধর মপুরা না যায় যেন॥ সাভার ঘরেতে এ খড়ি উঠল সামাল কহল তায়। ৩• এ কথা শুনিয়া ব্যখিত হইল বিব্দ চশুদাস গায়। ৭-৮। অন্তরে অনেক অমদল দেখিলাম।

41 আসিতে অক্র দেখি অদভূত পথের মাঝারে চিহ্ন। শৰ চক্ৰ গদা পদ্ম সে পতাকা রহিছেন অশু অশু । দেখি সে চরণ পড়িয়া স্থন ৫ লোটাইয়া পড়ে অঙ্গ। প্রেমে গদগদ . স্থাপের আমোদ উঠিল আনন্দ রক্ত ॥ প্রদক্ষিণ করি অফ্টাঙ্গ প্রণাম সহস্র সহস্র করে। , ১০ নয়নের জলে অঙ্গ বাহি বায় (यमन यमूना-नीरत्र॥ অচেতন পেয়ে পড়ে ম্রছিয়ে চেতন নাহিক হয়। বহুক্ণে ভবে চেতন পাইয়ে ১৫ উঠিল সে মহাশয় # যমুনা দেখিয়া . প্রণাস করিলা তুমি সে স্থখন্য মানি। ভোমার তীরেতে বিহুরি **খেল**য়ে সে হরি গোকুলমণি ! এ বোল বলিয়া গেল পার হইয়া প্রবেশে গোকুল পুরে। নন্দের ছয়ারে রখ আরোপিয়া চলিলা মন্দির পরে॥ तिथि नन्त रचाय इहेना गरखांव २० বসিতে আসন দিয়া। পাদ্য অৰ্ঘ দিয়া তাহারে ভূবিল অভি সে আনন্দ হয়া ৷ मामा व्यारमञ्जन विविध वास्त्रन

রন্ধন করায় তথি। ৩০

· চণ্ডীদাস ন্মত তুপ্ক তথি মিন্টান্ন সাকরি বিবিধ ভোজন রীতি ৷ নন্দের সনেতে চণ্ডীদাস বলে দোঁহে করে কোলাকুলি। আনন্দ মগন ভেল হুই জন ৩৫ কথার চাতুরী মেলি 🛭 8। अञ्च कञ्च । शृथक् छार्य। ৩১। সাকরি \cdots শর্করা। ৩৬। ছুই জনের মধ্যে নানা কথা হইতে লাগিল। रमोत्री । বিচিত্র আগনে বসিলা সন্থনে র**ন্ধন** করিলা ভায়। ভোজন করিল অতি বিলক্ষণ আচমন করি ভায়॥ আচমন করি বিচিত্র পালকে ৫ ্ভতল অফুর রায়। কপুর ভাতুল আনল মধুর • नन्म বোগাইল তায়॥ তবে পুছে বাণী কছ কছ শুনি

কেন বা আইলে ইথে। ১০ কহ সমাচার কি হেতু বেভার অক্র বলেন তাথে॥ ধসুর্শ্ময় বজ্ঞ করে নরপতি ্ ভন নন্দ ছোব রায়। মোরে পাঠাইল ় গোকুল নগরে गरेए ज पूरे खारे। **ञ्**निष्ड न**्यत्र** हिन्ना एत एत আঁধাৰ মানিল ভাই। ২০

कि त्वांन विशतन त्वम्य वक्षत পড়িল নদ্ধের মুঙে। . . বাকাশ কুনিশ পড়ন ভনিতে ভাহার ডুঙে॥ বেমন আকাশ চণ্ডীদাস বলে আর কি বাঁচিব ২৫ গোকুলে গোপীর প্রাণ। विकल कंत्रल সকল অধির ছাড়ব নাগর কান।

यानी।

এ কথা বখন শুনিল যশোদা কহিতে লাগল ভায়। কি বোল কি বোল আর আর বল ঘন ঘন পুছে তায়। অক্র আইল নিতে। কৃষ্ণ বলরাম লইতে চুজন এই সে करमেत চিতে। এ কথা শুনিয়া নন্দ পানে চেয়ে পড়িল ধরণীতলে। ১০ কি হল কি হল গে। কুল নগরে कैं। निया कैं। निया वटन । বেমন কুলিশ ভাঙ্গিয়া পড়িল **८७मन वर्णामा मार्य**। कि श्रीनम पूरे माजन वहन ১৫ অক্রুর জাইল নিতে । বাহার ভয়েতে বেধিত অস্কর নিভি পাঠাইত চর । বাজু ধরিবারে গছন কাননে আছে-কও হয়ে ডার । ২০

ाट करन शेरम वाव क्रे करन · । বা জানি কি জানি করে। गाराज व्यस्त वारव व्यत . এমন নাহিক সরে॥ চণ্ডীদাস বলে अन नमजानि २० বে জন গোকুলপতি। কি করিতে পারে কংস নৃপবরে সে জন রহিব কভি। ०। ७वः छो जिल्लाम्बन >। यांच · वादव । পৌৰী। ছেন বেলে শিক্স। বেণু বাজ্লাইয়া রাখাল আসিছে পথে। कृष्ध वलहाम मासादत कतिहा ধেমুপাল লয়ে মতে॥

গোকুল নগর পুরে। নিজ গুড়ে গুড়ে গেলা বজবালা লইয়া ধেতুর পালে॥ নিজ গৃহে গেলা কৃষ্ণ বলরাম यटमाना जानम विष् । ধেমুগণ যত সব সমাধিয়া সন্থনে নিখাস ছাড়ি॥ কোলে লয়ে কামু এ ক্লীর নবনী পিরায় মনের হুখে। বিবিধ শাকর চিনি ছেনা সর ১৫ ০ पिट्न ७ **ठाँप-मूट्य** ॥ কানাই পুছল শুন গো জননি षाद्य या किटमन नर्थ।

करबन वर्णामा कानांवे रमान्त्र বড় হল অমুর্থ ৷ कर कर छनि যশোদা জননি হাসিয়া মায়ের কোলে। কিসের কারণে কহ গো জননি শুনি কি তাহার বোলে॥ क्श्म भोगेहिएस व्यक्त्र वानिएस २० ক্বৰ বলরাম নিতে। ধনুর্বায় যজ্ঞ করে নরপতি সেই সে তাহার চিতে 🛭 হাসি যতুনাথ বচন ভারতী কহেন মায়ের পাশে। '৩০ তার কি বা ভয় না কর সংশয় करहन এ छ्छोमारम ॥ कान्छ। হেনক সময় অক্র দেখল আয়ল অক্রপতি। চরণ-ক্ষলে পড়ল তৈখনে ত করেন আরতি রীতি॥ কৃষ্ণ বলরাম थित्र कृष्टे जन ए করিল ভাহারে কোড়। আলিজন দিয়া বচন মধুর

স্থের নাহিক ওর॥

७ नर वहन थेएत ॥

সায়ল গোকুল পুরে॥

আইলে গোকুল পুরে। ১০

কহিল নৃপতি মোরে।

ধনুর্বায় বজ্ঞ করে নরপতি ১৫

কিসের কারণে

আমার গমন

८५व माटमान्त्र

कर कर एमि

ভোমা লইবারে

বলরাম আর

কৃষ্ণ বলরাম আনহ তুজনে ভুরিভ গমনে গিয়া। এথ আরোহণে কর**হ** গমনে ভূরিতে ভাসিবে লয়া॥ ২• এ কথা শুনিয়া অক্রে তুবিয়া कृषः वनताम प्रहे। कृष्ठ-मूथ (हरव গদগদ হয়ে চণ্ডীদাস গুণ গাই। ---68r **a** 1 অক্ৰে পড়িয়ে করয়ে স্তবন শ্মরণ ধ্যান। পরশ করিতে লইল ব্ৰহ্মহি জ্ঞান॥ তুমি চক্রপাণি তুমি বেদধ্বনি ৫ ভুমি বে পরমকায়া। যে জন স্তবনে না পার ধেয়ানে বুঝিতে না পারি মায়া॥ 🐪 তুমি চন্দ্র আদি দিবাকর সিদ্ধি তুমি ভ ভুবনধাতা। ভূমি চরাচর ভূমি সে আকাশ তুমি যে দেবের কর্তা। ভূমি হুডাশন ভূমি সে কারণ তুমি সে করুণাসিষ্টু। এ ভবসায়র করণ ধরম ১৫ ্ তুমি সবাকার বন্ধু। বেদে দিতে নারে 🔻 বাহার সীমা जनस्य महस्य मूर्य । বলিয়া বলিতে না পারে বলনে वान कि वानिय (मारक.॥ २०

जूमि वाञ्चलव जूमि, नाताव्रव बहुा अनस हित । তুমি হাবীকেশ তুমি লানোলর जूमि (म ও वनमानी । তুমি সে মাধব তুমি পুণালাভ তুমি পুগুরীকধারী। তুমি জনাৰ্দ্দন ভূমি পুরুষোত্তম কি জানি মহিমা ভার। ৩০ দেব অগোচর না হয় গোচর চণ্ডীদাস গুণ গায়॥ ৪। ব্ৰহ্মান ক্ষিল। ১৯-२०। **अनस्य गर्म मृत्य मृत्य वि**टि भारते गां, তাহার ক্রন্ত্রে ভখনলামি কেমন করিয়া জাঁহার মহিমা জানিব। बढ़ाबि। করপুট হইয়া गम गम जारव এ সব কহিলা যবে। হরষ বদন মদনমোহন কহিতে লাগিলা তবে॥ তৃমি সে পরম পবিত্র মানল ৫ কহেন গোলোকপতি। হাতে ধরি তবে উঠায়ল হরি করল পীরিতি রীতি॥ करहन व्यक्त वहम मध्य ভোমার পরশে এভ দিন মুই ় পৰিত্ৰ করল কোড়। জন্ম শুভদিন হইল আমার

পাইল পরম খদে। •

কি কহিব আমি কহন না বায় ১৫ তুরিত গমন করহ এখন ं '७ शर भारत गाट्य ॥ वारेट्य नत्मन मान । করে ধরি হরি বসাইল বেরি সেই গোপ-নারী ভুরিত গ্যন · আনন্দ-রসের কথা। कत्रण नत्स्व चरत्र । নানা উপচার বিবিধ বিধানে यांच्या ८एचन वृत्रंग गक्न ১৫ পূজন সে নন্দ তথা। বঙ্গর পড়িল শিরে॥ ঘোষণা সকল কহে নন্দ ছোব প্ৰভাত হইলে कुष वनदाम ভাকিয়া আনিল গোপে। যাইৰ মধুরাপুরে। দধি ছ্বা স্থতে সান্ধাই শকটে এ कथा अनिया 🐪 ८गई नव-त्रामा আরতি হইল ভূপে 🛭 ভূরিতে গমন করে॥ ২০ শক্ট লইয়া ञ्च पि नग्न २० রাধারে কহিতে **চলে সেই** স্থা সাকাহ ভুরিত করি। 🖰নহ আমার বাণী। 🦾 প্ৰভাত হইলে যাইব মধুরা कहिरल कि इग्र **হেন মনে** লয় রাম হলধর ধরি 🛭 - ७ नर प्रमेश धनि ॥ চণ্ডাদাস বলে বিষম হইল কহ কহ শুনি 🕟 🏻 কি হৈল গেছিল ২৫ আৰুল গোকুলবাসী। কহিতে লাগিল বাণী। হুথ গেল দুর তুখ অবশেষ **छेंग छूट्यत** त्रोगि॥ * * * * * | অক্তৰ বলিয়া একজন আইল कुक बनताम निष्ठ। ०० ষাশকেলি। রথ আরোহণ করিয়া আইল পড়িল খোৰণা নগর চাতরে এবে সে দেখিল ভিতে॥ ষত যত গোপগণে। চণ্ডাদাস বলে নিশ্চয় বাইব শকটে শকটে পুরিল সকলে কৃষ্ণ বলরাম ছুই। দধি চুগ্ধ স্থত সলে। মুরছিভ হয়ে পড়িল গোপিনা ৩ঃ বাজায় বাজনা नत्मत घुत्रादत ए পড়িয়াছে ধারা ধাই। এত দিনে গেল এই। এ কথা শুনল **ত্রক**রামাগণ)। क्रांक्टल ·· क्रब्रेटल । किरमंत्र वाक्रमा ७३॥ २०। बिलामा ब्लानि, फूमि कि कतिरव। विषय भान এক নব-রামা রাধা পাঠাওল করিবে। वूबर कि द्रुष्ट् वान । ১०

शामी :

जनिजात कथा अनि शांति शांति विदनांपिनो कहिएक नाशिन धनी बाहे। আমারে ছাড়িয়া শ্রাম সধুপুরে বাইবেন এ কথা ত কছু শুনি নাই ॥ वियात मानादत (मात अ चत मन्मिदत (गा @ রতন-পালম্ব বিছা আছে। অনুরাগের তুলিকায় (?) বিছান হয়েছে ভার न्धांमठीम चुमादत त्रदत्र ॥ ভোমরা বে বল শ্রাম মধুপুরে যাইবেন देकान् भर्ध वैश्व भनारेदव । এ বুক চিড়িয়া ববে বাহির করিয়া দিব তবে ত শাস মধুপুরে যাবে॥ শুনিয়া রাইএর কথা ললিভা চম্পকলভা মনে মনে ভাবিল বিশায়। চণ্ডীদালের মনে इत्रक इरेन (ग) ১৫ ় সুচে গেল মাপুরের ভর।

411

বেলহার।

অভি আনা গোনা বিষম বাজনা
শুনিয়া গোশিনী বড ।
হিয়া ছট্ কট্ অভি সে ব্যথিত
ভাহা না সহিব কভ ॥
অব কি করব , পরাণে কি জীব ৫
কি শুনি মারণ বাণী ।
বে দেখি অপনে সেই কলে আসি
নিশ্চয় অপন মানি ॥
দেয়াশী জানল গণক কহল
সিহা নহে কোন কথা ।

ভাহা সে দেখল मत्न विठातन विक्न नहिन (स्था । कारम रगाभीगन रदेश विवन छेभाव कर ना मि। किरन बुन्नावरन त्रष्ट् वनमानी ১৫ (न (रन कमन-जापि । প্ৰভাত হইলে বাবে মধুপুরে रवायना अनित्य विष् । দ্ধির আটন (भाभगन करत भक्षे नावित नाति । नत्मन छुत्रादन বিষম বাজনা বাজত না-কড়ি। চণ্ডীদাস বলে প্ৰভাত হইলে বাইব গোলোক হরি॥ १-৮। यद्भ बांश (मिश्नाम, जांशरे गठा हरेंग। यभ मठा बढि।

গটনধনী।
গগনে দাৰুণ নিশি।
প্রভাত হইল হেন বাসি ॥
নিশি ওডারে করিয়ে মিনভি।
প্রছন থাকছ তুমি নিভি॥
প্রভাত না হও তুমি চাঁল।
বেকত রহিত গতি হাঁদ ॥
কেহ বলে শুন ধনী রাই।
উপায় করিতে আহে ডাই॥
আঁচলে ঢাকিব নিশি চাঁদে।
বেন মতে অক্কার বাঁধে॥
চাঁদে বেন থাকিয়ে গরাসি।
চাঁদে বেন থাকিয়ে গরাসি॥

বেমনে নহত পরভাতে।

তবে রহে প্রভু জগদাবে ।

. >0

२०

কেই বলে হব দিঠি বাধা।

অসলত উটাক সমাধা ॥

কৈই বলে হইব শৃগালী।
দক্ষিণে চলিয়া বাব ভালি ॥
কেই বলে সম্মুখে যোগিনী।
বাধা মানি রহে গুণমণি ॥
কেই হব বজর কুলিশে।
বধিব অফ্রের মরে জিলে ॥
ভবে সে রহেন গুণমণি।
চণ্ডাদাস কহে কিছু বাণী॥

448

প্টন্তরী।

এই অসুমান করে গোপাগণ আকুল হইয়া প্রাণ। **८क्**मरन ब्रहिटन কহ কহ দেখি রসিক নাগর কান ॥ ৰুহে গোপীগণ শুনহ বচন ৫ এই সে ভালই মানি। কুষ্ণ ছাড়ি গেল কি আর করিব তবে সে.ভেজিৰ প্ৰাণী। व अन मा सिंच আঁখির পলকে ডবে সে মরিয়া থাকি। दिश्वाल खूड़ाई এ পাপ-পরাণ **अम (श मन्म-मि ॥** ভিলেক কখন या जरन विद्राध यपि वा कथन हरा। লাখ যুগ মানি कि इत्र ना जानि ১৫ এৰত গভিকে কয় ৷ বাঁচিৰ কেমনে সে জন বিহনে **उ**टर कि भूतारण और ।

অঁথি পাড় হৈলে অবলার প্রাণ
তথনি মরিয়া বাব ॥ ২০
বাহার কারণে সব ভেয়াগিল্
কুলেতে দিয়াছি ভোর ।
গুরু গরবিত এ হেন বেধিত
বভ জন প্রাণ মোর ॥
চণ্ডীদাস বলে শুল ধনী রাধে ২০
ঐছন পীরিতি তার ।
এমতি পীরিতি
যমুনা ছইব পার ॥

*

প্টমঞ্জী।

প্রভাত হইল হেনক সময় माञ्चल मक्स (कांक। मधि पूर्व म्र পাইল দারুণ শোক ॥ করিতে তখন ৫ রপের সাজন সেই সে অক্ররু মতি। চল চল বলি পড়ে হুলাহুলি পরমাদ পড়ে তথি ॥ नम यता बाशू কৃষ্ণ হলধর করহ বেশের কাজ। মধুপুর বর বাইতে ছইল ভূপতি কংসের মার । নানা পরিপাটি नोन थड़ा का हि वैंथिन बिटनांग हुए।। माना कुनमाम বেশ অমুপান ১৫ ভাহে মালভীর বেড়া॥ বেড়ি ভান্ন দালা হেদ যুকুতার क् जात्र शांधनि शारम ।

		•	101	
ভা দেখি সকল	मांगती पूजन	ভোমার বিহনে	মরিব সহলে ১	
ভূলন গোকুল দেশে॥ ২০		বাব সে বাছির ছয়া।। কেবল নয়ান তারার পুডলি		
ভাহা স্থশোভন	অ তি বিলক্ষণ	কেবল নয়ান	তানার প্রতলি	
नय नश्रूद्भन्न गाचा ।		তোমানা দেখিলে মরি।		
যেমন আক াশে	আসিয়া বেড়ল	- यथन प्रिंथिएय	ও চাঁদ-বদম	
वैद्याथयू पिका पिथा ॥		ভবে সে ৫	চতন ধরি॥ ১৫	
চন্দনে শেপিত	শ্ৰীষক্ষ শোভন ২৫	यदव याह (गार्ट्य	ধেমুগণ লয়ে	
এ তাড় বলয়া সাজে।		সেখানে থাকয়ে প্রাণ।		
সোনার খুসুর 🕝	বাজয়ে মধুর	যবে সে শুনিয়ে	কুশল-বারভা	
সোনার নূপুর বাজে॥		ভনিয়ে বেপুর সান।।		
	সমান সাজল	অনেক তপের	यस भवभाग ३ ०	
কি ভার ক	হিব কথা। ৩০	পাই সে ভোমা সে ধনে।		
क्रिंट साइन	বাশীত শোভন	বিছি নিকরুণ	এবে সে জানল	
দেখিতে হা	रदय वाथा ।	मोन छश्चीमा	ठीमात्र एए।।	
হলধর ছাত্তে	শিঙ্গটি সাজল	३०। म् यान ःसी <u>ष</u> ।		
স্ত্ৰে স	য়ের কাছে।	১৯ ৷ সান - সংক্ত শক্ষ্		
চণ্ডাদাস বলে	प्रिष्ठा अनुनो ७०	C		
় পরাণ ভেজ	য়ে পাছে ॥		41	
		9 (
		আর কি পরাণে জাব।		
শশেদা-বিলাপ।			(कमाम विक्व	
৫৫৩ ছুড়ি		এখনি পরাণ দিব।।		
			हैपि-भूच ८६८श	
কোণারে সা			विद्या (
		হিয়া আনচান		
थ (वन वनारम् ।		পরাণ কেমন করে।।		
ागभूष ८५८म	यर्गामा कनना	মায়ের পরাণ	(ধরজ না রছে	
চাদমুখ চেরে বশোদা জননী পড়ে মুক্ছিত হয়ে। ৫ কেমনে বাঁচিব ভিলেক না জীব				
		অচেতন তমু	• .	
	E ECR I	•	চয়া।।	
বিসের কারণে সাক্রি			আনিয়া নবনী	
স্থা গুনি ভেজা য়ে দিয়া।়		সে চাঁদ-বয়ানে	11441	

দুরে বাবে ছখ चरन चरन गर्थ এ শোকে কেমনে जीव। ভান নদ্দ হোব আমার বচন গোপালে বিদায় দিয়া। ध चत्र छग्नादत আনল ভেজারে যাব সে বাহির হয়। তাখি গেলে তার कि हात जीवता २० বাঁচিতে কি জার সাধ। অনেক ভপের ফল পরশ্বে বিহি সে করিল বাদ। 20 क्लीमांग करह শুন গো কননি **এই সে ভালই মানি** ॥

क्रिड़ा ।

কানাই করিয়া কোলে।
বিশোগ কিছুই বলে ॥
তুনি কি ছাড়িবে মায়।
তুনি কি ছাড়িবে মায়।
তিন ছে বালব রায় ॥
কি লোব পাইয়া মোর।
কিছু না জানিল ওর ॥
মায়ের কি লোব ধরি।
লোব গুণ না বিচারি ॥
তোরে উদ্পলে বাঁধি।
কি লোব তাহার সাধি ॥
সে লোব পাইয়া বদি।
ছাড়ি বাবে গুণনিধি ॥
জানেক ডপের কলে।

ভোষারে পাইল কোলে।

মুই বে অভাগিনী নারী।

হাড়হ অনাথ করি।

মারের করুণ শুনি।

হেঁট মাথে গুণমণি।

চণ্ডীদাস গুণ গার।

কিছু না কহরে মার।

যদ্ভি

কি শুনি দারুণ কুলিশ বেমন মাথার পড়িয়া গেল। আচম্বিতে হেরি এই সে অক্র র কোথা বা হইতে এল # পরাণ লইতে এই ভার চিতে ৫ স্ত্ৰীবধ পাতকী লাগি। এ সব গোকুল আকুল করল সবার বধের ভাগী। যুচিল আনন্দ কিবা দেখ নন্দ বেড়ল আপদ আসি। সুখ গেল দুর ছৰ বহে পালে **(कम्या विकय निर्ण ।** मन मन मन হিয়া কর কর नम्म यटभागजी मात्र । हैं। म निविषया > 0 বাছর সে মুখ-**ट्मिट्ट कैट्स छेख्वा**य ॥ क्छीमान केंद्रम বুক নাছি বাঁধে (यनक वांकन (भन। ৰুকেতে পশিয়া পিঠে পার হয়া বাহির হইরা গেল।

महन्नात्र । বশোদা বলেন শুন গো রোছিণি व्यात्र कि माँजारम (मथ। কুক বলরাম ছাড়িয়ে চলিল আর কি পরাণ রাখ। পাইয়া রতনে ৫ অনেক বডনে বিধি দিয়াছিল মোরে। পুন হরি নিল . কোন অপরাধে আমার করমকলে। দেব আরাধিয়া বখন পুজিল . ববে দিয়াছিল বর। গৌরীর ছয়ারে অপরাধ ফলে না পূজিলা তাতে হর॥ সেই দোবে রোষ দেবের হইল ভাহাতে এ দশা ভেল। কোলের বালক রাখিতে নারিল ১৫ · अरंव रम ছाज़िरत्र रगन ॥ দেবীরঙ্গ বুদ্ধি বুঝিতে না পারি এছন কাজের গতি। (भव जुक्के इरम जारह कम धरत **ভনহ ইহার রীতি** ॥ বালুকা উপরে यथन कोटबान করিল অনেক তপ। দেৰা সে সাধিতে বিধি বছমতে করিল অনেক তপ ! वथन टेनटवहा मव माळाडेग्रा २० খরেরে হইতে যাই। গড়ুরের বেটা পুরপ (१) এক গোটা উড়িয়া লইল ভাই॥ त्नहें त्न त्मरक्ता उल्लेख रहेग

সেই অপরাধকলে।

ভাষার কারণে আনন্দ ছাড়ল

এই সে আনিকে ভালে ।

চণ্ডীদাস কছে শুনহ লমনি

একটি কহিয়ে বাণী।

ধল্য ধল্য ধল্য

তুমি ভাগ্যবভী ৩৫

তেজিবে গোকুলমণি ।

८७) वहरें।

আরে মোর বাছনি কানাই। এ বেশে সাঞ্চিলা কোন ঠাই॥ এ নব বরণ ভমুখানি। আতপে মিলায়ে হেন জানি। यथन याहरू पृत वन । রবিরে করিপু সমর্পণ ॥ वनामत्व शृक्षिषु दश्याहै। ভान बाथ कानाई वनाई ॥ প্ৰনে মিনতি বছ সাধি। মন্দ মূন্দ বাভাস স্থ্যাধি ॥ बिनम् ना जानि कि करता। পাছে নাহি অঙ্গে ছায়া ধরে ॥ অগোচর গোচর না হয়। সেই সে বাসিয়ে মনে ভয়। नत्रन खित्रा (एथ चार्ण। 16 वहन हुचन कत्र कारण । তবে কর বে আছে উচিতে। গোপালেরে নারিল রাখিতে 🛭 **ह** श्रीमात्र थुनाग्न दनांगित्र । এত कि সহিতে পারে মায়।

८७२ वर्रे ।

ভন ভন বাছা জীবন-কানাই
তুমি কি ছাড়িবে মার।
ফ্রীবধ পাতক ভর নাহি মান
এই সে ভোমাতে ভায়॥
ভাহাতে অকাল অঘাত বচন ৫
অাসি ধুচাওল সাধ।

কে জানে আনন্দ তুথ দিবে বলি

যপনে নাহিক আনি : ১০

মপুরা গমন এ কথা শুনিতে

ফাটয়ে মায়ের প্রাণী
এ পোক পড়িল বখন হিয়ায়

ডখনি জানিল ইহা ।

ডোমা না দেখিলে আর কি বাঁচিব ১৫

ডেজব আপন দেহা ।

এ বরে আনল ডেজায়ে এখনি

মরিব বমুনা-জলে ।

400 **A**ab i

मोन छश्चीमांत्र वरण ॥

ভোষার কারণে

20

এত পরমাদ

কোলে লয়ে যাত্র্যণি বদন চুন্ধয়ে রাণী
দর দর বহে প্রেমবারি।
ধরিয়া গোপাল করে কাতর হইয়া বলে
ছই নান্ধ ধরিয়া পলারি ॥
শীম্থমণ্ডল দেখি ভাছাতে নয়ন রাখি ৫
পড়ে রাণী মুরছিত হয়ে।
বংশালা রোহিশী কালে ছির নাহিক বাদ্ধে
গোপী রহে চান্মুখ চেয়ে॥

रगारभन्न न्रमनीगन সবে হৈয়া একমন ধূলায় ধূলর কলেবর। क् आंत्र क्तिर्व (थना इहेग्रा वानक (भना . कांद्र पिव एक्ना नमी जर ॥ কে আর বাইয়া ঘরে মহটা লইয়া করে এ जब नवनी पिर मूर्थ। এ সব ছাড়িয়ে মায় কোখারে বাইতে চায় ১৫ মারের অন্তরে দিতে তুখে।। करह कछ नन्म रचाव कारत कछ मिव साव ্ আমার করম হীন বড়ি। নয়ন ছাডিয়া গেলে কি কাজ জাবনে বলে উচিত মরিতে হয় ডারি ॥ नम राम सन व्रापि এই মনে অমুমানি চল যাব বাহির হইয়া। কিবা ঘরে আছে সাধ রুচিল সে দিন বাদ চতীদাস পড়ে মুরছিয়া।।

463

41

একবার চাহ মায়ের পানে।

কৈ ভোরে যুক্তি দিল নিশ্চয় আমারে বল
এই সে আছিল ভোর মনে।

গোকুলের বত লোক পাইয়া দারুণ শোক
তথিনি মরিব ভুয়াগুণে।

বেজালিশু বত জনে ভাবিতে ভোমার গুণে
ভারা এবে ভেজিব পরাণে।।
গোঠে মাঠে ধেমু সনে কে, আর কিরিবে বনে
কে আর করিবে নানা খেলা।
আর না শুনিব বাণী মধুর বচনধানি >

কে আর করিব পাল মেলা।।

শীমুখ বদন মেলি দিব ছেনা ছুখ ননী
কে আর ভাকিব মা বলিরে।

कारि नन्म रचार बांब क्वांत क्वांत गाँउ गाँउ , काँटम जानी भनाव धतिरत्र।। 20 চণ্ডাদান মুরছিতে পড়ে কাঁদি এক ভিতে यत्भामात्र धतिशा हत्रत्। এ সকল कथा छनि आहोत-त्रमणी धनी धारेया जारेन (जरेथारन।।

. গোপী-বিলাপ।

ে বেলরার। কি শুনি কি শুনি দারুণ বচন ষেনক বাজল শেল। বুকে পশি গসি (?) মরম ভেদিয়া পিঠে পার হৈয়া গেল ॥ (यमन इतिगी विम्नल विश्वाधि ए •ু লইয়া ধেনুক শর। আচন্ধিতে ৰাজে পড়ে বনমাঝে • খাইয়া বিষম শর॥ তেমন ধাওল হরিণীর প্রায় সে জন চৌদিকে চায়। ১০ কাষ্ঠের পুথলি বহে দাঁড়াইয়া চিত্তের কায়ার প্রায়। কেহ বলে কোথা হইতে আইল অক্র কহিয়া নাম। व्यति देशा व्यानि , हिशा निशा गाँनि ১৫ সাধিতে আপন কাম । এত দিন মোরা ফুখের সাগরে नाहिन् मत्त्र ऋत्थ। এখন ছুখের সায়রে সিন্ছি বেড়ল আপদ ছবে ৷ ર•

চণ্ডীদাস আশ করিতে আছিল प्रिंचिए नम्न छित्र। অক্র আসিয়া সরল কাড়িয়া ... হিয়ার হইতে চুরি। विश्वािष •• बार्ष ।

एक्टे-निवृद्धा

🗢নহ নাগর গুণের সাগর এই সে মহিমা ভোর। অবলা অখলে কেলাইলা জলে কে আর আছুরে মোর ॥ ভোমার শীতল **ठत्रग (मिथ्टिय) ए** দেখি এ কুলের বালা। ছায়ার কারণে শীতল বলিয়া ভাবে ভেল এত স্থালা ! সিন্ধু দেখি মোরা তৃঞ্চা পাই ভোরা शिग्रांग वाहेव मृत्र। অধিক বাড়গ পিয়াস অন্তর মনমৰ নাহি পুর 🛭 ছায়ার কারণে ভক্লরে সেবিত্র ভাপ হইল বড়ি। চন্দন সৌরভ দুরে কভি গেল ১৫ কেশাই (१) নহল পড়ি ॥ ফলের কারণ ক্রিমু বতন সেবিমু অমিয়া-লভা। कल थित रमटन भाषा रमल मृद्र উড়ি গেন কভা পাভা। . ২০ नव जनभन সেবিসু ভাষারে ় পাইতে রসের বারি।

विन्यू ना शहीं ग्रहान्त्र जानि

वितर्व शाक्त भूतो ॥

50

24

₹•

চণ্ডীদাস বলে এ কথা নিশ্চরে ২৫ শুনহ স্থান্দরী রাধা। আহিল সম্পদ্ বেড়িল আসদ্ এ স্থান করল বাধা॥ ২। মনমধ—মনোরধ।

> १७१ व्हरे-तिबुद्धाः।

শুন ছে নাগর গুণমণি। गांत्रदा किना वितामिनी ॥ এ কুল ও কুল নাহি ভাবে। ভাসাইলা মাঝ দরিয়াতে॥ এত বদি ছিল ভোর মনে। তবে প্রেম বাচাইলা কেনে পরিছর কি দোব দেখিয়া। তবে তুমি বাইবে ছাড়িয়া। কে ভোমা লইয়া বেতে পারে। ল্লীবধ পাতকী দিব তারে । (जहे कन प्रिथिव (कमन। পরবধ করিতে বতন ৷ দোৰ গুৰ আগেতে বিচারি। उंदर वार्टिव मधुभूती ॥ जूमि यादि मधुश्रुत रमन। গোপীগণে দিয়া অভি ক্লেশ ! বত কৈলে লহরী রসিয়া। সে সকল রহ পাসরিয়া॥ **(व पिन माथवी जल्हा**य । किं तोन विनटन वह बाग्र।। करब पिन कुक्छि (१) खुम्पद । जारनक कतिरण इन्म वन्म ।। । - সঙ্গেতে আছিল এবে। कान नार्टन हाष्ट्रि वाद्य ॥

দেশ দেখি মনে বিচারিয়া।
সভ্য মিথা দেশহ ভাবিয়া।।
ভখন করিলে ভূমি পণ।
এবে কর এখন এমন।।
কহিলে বখারে বাবে ভূমি।
কহিলে ভোমারে নিব আমি।।
চণ্ডীদাস কহে ভাহে পূরি।
নিদান কহিছে নব গোরী।।

२। किनिय ... (किनिद्य)

৬। বাচাইলা ন্যাক্ত করিলে—ব্যাধ্যা করিলে, উৎপত্তি ও বিভার করিলে। এইরূপ অর্থে এই কথা এ অঞ্চলে প্রচলিত আছে।

১৭। লছরী···(প্রমের লংরী, রসিরা···রসিক।
 ৩১। পুরি···সার দিয়া।

200

পাষাণ নিশান তোমার পীরিভি ইথে কি করহ আন। ভোমার বচন ছাড়িব ক্লেমনে এ নব নাগরী প্রাণ তুমি জল হরি আমরা শকরী ৫ তুমি চাঁদ মোরা হথা। ভূমি ভক্লবর মোরা তাহে ফল ভাহাতে আছিয়ে বাঁধা 🛭 ভূমি নবখন শামরা চাতক ভশিব ভাহার রলে। ভূমি বিধুবর 🕐 আমরা চকোর ত্থার লালস-রসে ৪ তুমি কারা বঁদি শাসরা ত্রিবলী

বেড়িয়া রহিব ভাবে।

বেড়িয়া রহিব নাথে ৷

ৰোৱা কামঘন ১৫

कृषि (म नव्रन

ভূমি দিবাকর আমরা কিরণ ৰভু না ছাড়িব ভোরে। তুমি চক্ৰ বদি সামরা হুধায়ে রহিব আনন্দ হেরে। कृषि क्लिनिधि प्रतिश व्यवीहे আমরা ইহার মীন। ভূমি বদি বট ষট্পদ হও আমরা পাখাহ চিহ্ন ॥ **जूमि यिल इ. अनम्ब (प्रता २.** আমরা হইব কাম। এ রস বিরহ ব্রফশিশু লাগি বিজ চণ্ডীদাস গান। १)। व्याष्ट्र...व्यनामः।

ভোমারে ছাড়িভে নারিব কালিয়া ্ বে বল সে বল মোরে। তোমার কারণে প**রাণ তেজি**ব গিয়ে বমুনার নীরে॥ মরিলে ভরিব মুরতি ছইব ৫ मरमप्र नमन कान्। দেখিবে বেকভ নছে আনমভ ध क्षा ना रूटर जान। नत्स्व नस्व হইব বখন ভোমারে করিব রাই। वित्रह-त्वमन , मिर त्र औड्न বেমন বেদনা পাই 🛙 পরের বেদন না বুকা এখন পরিণামে পাবে সাধী। লান জন ছুখ পাসু কত হুখ ১৫ छन ए कमन-जांबि । .

482 ভোষার কারণে সৰ ভেয়াগিল क्रानत रगीतवभन्। भारुड़ी बननी বাসিভ স্বধি বেমন কাণের সোনা # এখন বাসয়ে বেন কালকূটী नग्रदन चाहरम् मिलि। কথায়ে ছেদনা वष्ट्र याजना . **मिছरिय क्य मिन त्रां**जि॥ नकन होफ़िल जितनत कांत्रण २६ ভাৰার এমনি রীতে। হাসিয়া হাসিয়া: প্রেম বাড়াইলে ভাঙ্গিল গৃহের ভিতে॥ এখন এমন কেমন ধরণ मथ्वा वारेष्ड हार। ७० সৰ গোপীগণ করিয়াছি পণ সবারে সংহতি লহ। যদি বা পরাণ-পুথলি ছাড়িল কি স্বার নয়ান সূটি। চণ্ডাদাস বলে কি হৈল গোৰুলে ৩৫ ঘেরল আপদ কোটি मानका । স্বপনে কালিয়া নয়নে কালিয়া · চেডনে কালিয়া মোর। শুইতে কালিয়া বসিতে কালিয়া কালিয়া কলম্ব কোর॥ **ভোজনে কালি**য়া গমনে কালিয়া' ৫ কালিয়া কালিয়া বলি। কালা হাই বালে (?) কালিয়া মুরভি ভূষণ করিয়া প্ররি।

গগনে চাহিতে কালিয়া বরণ দেখিরে মেখের রূপ। ৰভি। जूमि निषाक्रण नछ। তৰে দে জুড়ায়ে এ পাপ পরাণ ভূমি ছাড়ি বাবে উচিত কহিবে উঠয়ে রসের কুপ 🛭 নীশ্যন শ্রাম নিশ্চর করিয়া কও। বে দেখি সম্মুখে তখন কহিলে ভাহাই দেখিয়া রই। **অনেক ব**তন সে সব বিসর এবে। নাহি পড়ে মনে कमथ-कानरन বেশী করি পরি কি বোল বলিলে ভবে॥ নীল জাদখানি ভোমার বচন कुखल वैधिया त्राधि। পাৰাণ নিশান এবে সে রাক্তের পারা। বরণ ভালিয়া কন্ত,রা কালিয়া পুরুষ বচন নহে নিবারণ ১০ ভাহে সে বডনে মাঝি॥ স্থাদ্ধি কুস্ম- হার বনাইয়া এ দেখি বেমন ধারা ৷ রাখিয়ে আপন পাশে। कुछ पत्रभन বেড়ায় যখন এ নাহি লুকয়ে আর। যেমন বচন স্থচল স্থচন দেখহ এ গতি ভার ৷ ১৫ ভোগার বরণ धतरत्र मचन २० ভোঁমার পারিভি ঐছন,নছিব मजूद भाषीत्र भारत् । ভোমার বরণ কিসের রসের রীত। না দেখি বখন এ চিত রাখিরে তারে॥ এমতি পারিতি বানহ বারতি मव नीमश्रम লইয়া করেতে সরল বাহার চিত # ছেরিয়ে নয়ন ভরি। **ट्यामात्र कानिया** वत्रभंगित (व २० অভসীর ফুল দেখিতে রূপস বড়। তুলি মনোহয় **छेशदत मध्**त যতন করিয়া পরি ॥ দেখি মনোহর অন্তরে আহুয়ে গাঢ় **॥** এ সৰ যাকর विषय छेठ्ट्य পরের পরাণ হরিতে সঘন সে জনে ছাজিতে চার। ঐছন ভোমার রীত। চণ্ডীদাস কৰে এতেক বিরহে ৩৫ এত বদি ছিল ্ ভোমার মনেতে তবে কেন কৈলে প্ৰীত। को धनी वैक्टिय जोग्न । প্রেম বাড়াইরা নিদারুণ হয়া oo.os। नांकांत्र क्टंड थ नव त्वलनां क्य, त्नहें वास्क्रि वाहरव मध्या श्रुतः। শামাকে ছাড়িতে চার। চন্তাদান বলে শাকুল করিল ৩০ গোকুল অনেক দুর 🛭

415

विकासका ।

বঁধু, উলটি কহত এক বোল। নিশ্চয় মধুরা যাবে কি না পারা দরা কি নাহিক তোর । सहय कठिन বেমন পাবাণ তার কি আছুরে মোহ। ভোমার কারণে এত পরমাদ ভেজিল আনন্দ গৃহ। কুবচন বোল ভোমার কারণে **इन्सन कतियां** निल। পাড়ার পড়সি আপন রহসি ১০ তাহে পরিহার দিল । (य (वांन ८म भाग-পরসঙ্গ-কথা তাহারে বাসিয়ে ভাল। শ্রাম নাম নিভে যে করে নিষেধ তারে তেয়াগল দিল।। আপনু যে জন তারে কৈল পর ° পরেরে করিল খর। ভোষান্ন কারণে এত পরমাদ 😎ন হে সুরলীধর।। অনেক হাতনা গুরুর গঞ্চনা ২০ তাহা না কহিব কত। পরিবাদ বলে ভোমার ঘোষণা ভাহা না কহিল যত।। চণ্ডীদাস বলে শুন বিনোদিনি বড় পরমাদ দেখি। তুমি না হইও নিঠুরছি পণা বিমুখ ও রাজা আঁখি।। ।০.১১। প্রতিবেশীরা সকলেই আমার নিজের লোক • ছিলেন, ভাঁথানের আমি পরিভাগে করিয়াছি।

ং২০। ভোষার সহতে নানা অপবাদ ঘোষণা করে।

बढ़ाबि।

জাতি কুল শীল সকলি মঞ্জিল

ও রাঙ্গা চরণতলে।

হাসিতে হাসিতে পীরিতি করিয়া নিদানে ডারিলে জনে ॥

অনেক কহিলা মোরে। ভোমা না ছাড়িব সঙ্গে করি নিব

বলিলে মাধ্যীতলৈ ॥

এবে কোৰা বাহ ছাজিয়া রাধারে

সংহতি করিয়া লহ। ১ বিষম দারুণ শোল বুকে বাঁধি

এবে কেন তুমি দেহ॥

জাঁখি কাড় হলে এখনি মরিব এখানে দাঁড়ায়ে দেখ।

हय नय এहें (एथ छटन या**डे ১**৫

কণেক দাঁড়ায়ে থাক॥

রাই করে ধরি এক গোরালিনী

কহিতে লাগিল জান। ২০

এমন কুমারী নবীন কিশোরী রাখিয়া বাইবে কোথা।

জলপ বয়লে প্রেম বাড়াইরা

এবে দিয়া হিন্না ব্যথা।

চণ্ডীদাস বলে ত্ন ত্নাগরি ২৫

टकमत्न विक्व क त्रांभनागत्री

• इंश ना क्त्रिक गंधा।

418 . दश्रे। আমার কিশোরী কিছু না জানয়ে বঞ্চিব কেমন করি। সব পাসরিয়া চলিলে ছাড়িয়া আধার গোকুল পুরী । **এ नव (योवनी** কুলের কামিনী ৫ त्रमणी ध त्रम-वाना । কোপা রাখি লেহ বাঁচাইয়া যাহ দিয়া বাহ এত জালা ॥ কি করিব জার বস পরিপুর নিবিড় রসের প্রেম। তা ত্যেক এমন নবীন কিশোরী বেন লাখ বান হেম। ভেব্দিয়া গোকুল নাগরী সকল মপুরা গমন এবে। তা সভা তোমার মনেতে পড়িল ১৫ সে নৰ কৈশোর লোভে। নিঠুর না হও এ গোপ গোপিনী মরিব ভোমা না দেখি। জীবধ পাভকী ভয় না গণহ শুনহ কমল-জাখি। रय क्या ना कीरत वांचा ना स्वित्त क्मान जीवह ता। চণ্ডীদাস বলে কাতর হইয়া এ কথা জানয়ে কে। कांगडा । শ্ৰীমূখ-পঞ্চল চাহি গোপীগণ नव्रत्म वस्ट्य लाव । (यम ऋत्रधूनी-ভরজ ভেমনি ভিজিল বসন জোন ৷

গাগরি গাগরি ় বেন বারি ঢারি ৫ লোচন-কমল ভায়। চিত্তের পুৰ্বলি লে নব কিশোর কাষ্ঠের পুথলি প্রার । স্বপনে না জানি লোকমুখে শুনি ছাড়িব গোকুল পুরে। মনমৰ কাম ভেল সেই ঠান এ সব করিয়া দূরে। ज्ञिम कि वाहरत • प्रश्नुत पृत **(क्याल कोवरे स्माता।** কেবল রাধার পরাণ-পুথলি ১ঃ কেবল নয়ান-ভারা।। এখনি মরিব গরল ভবিয়া সায়রে তেজিব প্রাণ। রাধার মিন্তি আরতি শুনিতে मौन हशीमांत्र गांन । ছত্রিশ অক্ষরের করুণা। कांबढ़ा । কেন তুমি যাবে কামিনী তেজিয়া কাতর করিয়া কান। क्यात वाँहिव কাতর হইল প্রাণ ঃ क्राम्य राज कि कत्रम विधि व कान कान का मानि। কার কত কন . - করি অপরাধ কখন নাহিক জানি। কেন বা করিলে কামিনী সহিত কঠিন পীরিভি লেহা। ১০ কামনা রভিক क्षन होताव

ৰুলে দিলে কালী করিলে কুলটা कलक रहेल जांता। कामिनी वक्षव ১৫ ক্রেমন করিয়া কুল শীল হল হারা 🛭 কানন নিকুঞ্চে ক্রিলে কালিয়া কামিনী করিতে রাস। কামে মন্ত হয়ে কালিন্দার তীরে করিলে কঠিন রাস। কত কত ভেল . কানন-বিরহ করিলে কপটপনা। কুলবতী শভ করিলে বেকত ·ছাড়িয়া কুলের বামা ॥ कश्नि ट्डामाटत काँट्स कतिवादत २० কোপারে চলিলা কালা। কাতর পরাণ কালা কালা করি কঠিন পাইল ভালা। কৰে চণ্ডীদাদে কাতর হুইয়া • কামুর চরণে বাণী। ৩০ করে কর ভরি না জানি কখন বিষ পান করে ধনী ৷

খলপণা ছাড় - খল খল কহ ক্ষেণেক খনাহ বোল। খল সাম খলে খরতর দুখ খনিক ক্ষেমহ ওর। ক্ষো ভব নাহি কীণ ভ**সু ভেল** ৫ খসল নয়নভারা। ক্ষেণেক বৈষম ক্ষেণেক কেপেক পরাণ সারা মূ

थारेट ना क्रट थक्षनमञ्जा ধোজত সে বৰ লেছ। . . . ১০ ধল খল খল সে মৃত্ হাসিয়া ক্ষেপেক দণ্ডাহ সেহ।। খু জিতে এমন নাগর স্থন্দর (भाग्रम भक्षमी बाहे। ক্ষিতিতলে ক্ষীণ হি মন্তর ১৫ : পড়িয়া রহল ভাই 🛊 थमल क्वत्रो कीन डांम्यूच ক্ষো সে নাহিক চিত। ক্ৰীণ তমুখানি ক্ষেপণ যতেক চণ্ডীদাস সে ছঃখিত।

₹[45] | গুণিত গোপত পারিতি * * *

গাইতে ভোমার গুণে। গুমরি গুমরি স্কনিতে শুনিতে পঞ্চর জারিল খুণে॥ গরবিত গুরু গঞ্জনা যে দিল ৫ (गौत्रव भित्रमा भेगा। গাখানি গরজি পারল গুরু পরিবারপণা। গোকুলে গোপের • গরিমা বডেক (गण (म गारे (म ७८९।)• গোপবালাগণ वंड मधारान ভা সব পাসর কেনে _! গোধন কাইয়া গভীর কাননে (भा होत्र कत्रित्व (क । গৌৰুল হইয়া গোধন লইয়া '১৫ গাইয়া পুড়াৰ সে॥

গোরী আরাধিয়া গোবিন্দ পাইয়া গোপিনী রসের সেহ। গোপত পীরিতি গাইতে গাইতে কালিয়া হইল সেহ 🛙 ₹. গুহে যত কাজ গ্ৰুন সমান গরল্মদৃশ ভেল। গোধন দোহন গ্ৰুন কানন গোরস বাধক দিল ॥ গোপীসণ যত मधुता शमन २० মাধায় পসরা গোরী। গাইতে গাইতে সে গুণ-মাধুরী **हिंगान करह छानि ॥** न्देनात्राव्य । বেরল আপদ चुिन विवास चदत्रत्र द्यांयमा काछि। ঘূৰিতে ঘূৰিতে ঘোৰণা সেচনা খনয়া খোষণা মতি খুনে বেন খর नना करत्र कत्र । वित्रिया वित्रिया काटि। খুৰিতে খুৰিতে গুণ খর মর वन कांग्रि छेटां॥ খোৰ নন্দ বোৰ • ব্যৱের বাহির चन चन गाम करत्र। ৰোৰ ঘটা করি त्रुष प्रश्न बर्दे श्रित्रा + + भटत । ছোষণা নগরে এ স্বত পদারে উ রাজা চরণে चरततः स्ट्रेट जाता। খন খটে পৃরি বেসাখেসি করি ১৫ উরল উপরে রাখরে এ ঘট পানে,॥

বোরভর ঘন . নন্দ ঘোৰ মন वन त्वभ कति (महे। चटत नन्मतानी यूट्य श्रम्भाव বরেতে লইয়া বাই॥ মৃত যোল সব রাখি কর পুর খুচল খেরল বিধি। चन नव धन वन चन घन সুনায়ে ছেরব নিধি 🛚 यत इाज़ि याव • अब्बर्त त्वतल २० व्यक्तिन এ चत्रभाना। বোষণা খুনায়ে चटत त्रथं नग्र ঘরেতে আইল ভারা 🖟 🕟 বর সে জাধার ঘর সে দীঘল अकृत काहेन यदा। धन नवचन ধাউল হইল ঘরের বাহির এবে 🛭 ঘট গুলে বাঁধি তোমার অবধি মরিলে ভবে সে যেও। ঘোষণা রহিল এই ঘোরতর ৩৫ **छ्योमान वत्न त्रल ॥** एर्रे-व्हाति। উ কি এ ভোমার উন্মত চিত উচিত ভোষার নর। উ সব আচার বিচার না লয়ে উচিত केरिए एता

छ गव नागनो ए

छ छूडि চরণ

छनम्छ स्ट्रम् मन।

রাখল করিয়া পণ ।

			₹₹₡
উজাগর নিশি	. উদিত এ ৰাসি	চন্দন চৰ্চিত	সে অহে লেপিড
উপরে শুনি এ তান। ১০		চুড়ার সঙ্গেতে মিখা।	
,७नग७ (९५।	भारम श्राह्या	চপল রমণী	८ न ठॅोकतक्ती
উঠানি গো	াপীর প্রাণ ॥	চলিব করিং	तिना॥
	পুরি আবর্ত্তন	हैं जिस्साल हैं। ज	मूथ निक्रविद्रा
উনানে রহ	ল ভাহা।	চঢ়াইৰ উক্ল	भेदत्र ।
উন্মত বালা	জ্ঞানে কেনি গেলা ১৫	চিনি চাঁপা কলা	ছেনা চাহি সর ১৫
উমা উমা রবে রহা।		निव रत्र जानतम कारत ॥	
७ पूच हनन •	বরজ-নাগরী	চাঁদ-মুখ পর	চৰ্চিত কপুৰ
উপরে নাহিক মন।		চাহিয়া মাগিব কারে।	
উনমন্ত হৈয়া	प्रकत्र पः भव	চপল রমণী	চেডন করিয়া
	क कन। २०	চলিয়া আপন বশে। ২০	
	নিজ পতি করে	চাহিব কা পানে	চামর ফুলাব
বসায়ে আছিল হুখে।		पित (ज किका का ।	
७ ४नो मधूत	মুরলী শুনিয়া		ক্রিব শ্রন
উছটি কেলি	ল ভাকে॥	চৰ্চিত সোন	
উ গুণ গাহিতে	छ त्रव नांगजी २०	ठांति मिक् मिव	চাঁপা নাগেশ্বর ২৫
ু বেশের উ	নহি চিত।	ठाटमली ठल्ल	
	চণ্ডীদাস তাহে	এ চন্দ্ৰমলিকা	চুয়া মিশাইয়া
उँग विद्रह	চিত।	আসন করিব	ट्या ॥
0			চেডন হেরিয়া
4 1	'	চাহিলা গোপি	ानी পादन। ७०
कानांहि ।		চিরকাল রহ	. ठाँषमूच ८०वि
	চলিল ছাড়িয়া	স্তৃ।ক সবার প্রাণে ॥	
ক্ছিতে পরা		0	
চিভ বেয়াকুল	চ म रक अस्त त	ere	
চাঁদ ছাড়ে কোন নাটে ।		नहें में ।	
টাদ সে বয়ানে	ठळा पूथी बाहे e .	इ ठे्क ठे्क दत	षात्रा जू दत्र ८१०
না ওন আম	•	,	क र्वे १ हैं।
টাচর চিস্কুর	हु फ़ा ना दीश्व	इना कति इते	
চাঁপার ফুল সে জানি 🛭		ছলা দে করিব নাই॥	

ছেনা ননী স্থত দধির পসরা ৫ ছান্দিৰ গ্ৰন্থা পৰে। ছন্দ বৃদ্ধ ছাদে ছলা বে করিব भारुषो ननमो त्वारम ॥ हाँनित्रा छत्र हांटर मान जानि . ह्ना प्रथि निव इटन । ছল ছল ছল গোপিনী সকল हि हि हि तो वनि वता। ছলা করি ভবে বড়াই যাইয়া इन्म कित कथा करता। क्रांशिद्य बांधादव वज्रदनव क्रांय ३० त्म नव किरभात्री नरत्र ॥ ছটা বেশ দেখি ছটার উপমা ছাভিতে করিয়ে ঠাই। ছলা দানখাটে সিরজিব কেবা नकृति । জর জর জর জারিল অন্তর

जर्द रम अनिम देश। যাইতে মণুরা নাগর চজুরা कांत्रम त्रांशांत्र (प्रदा ।। यात्र लागि वारे निक्श-कृत्रन ए বোলা ভেজাইৰ ভালে। বমুনা কিনারে বশোদা-নক্ষন রহিব কদম্বভবে।। মচিয়া বাচিয়া বভন করিয়া टक मिव कमच-कून। 30

वर्ष रा कामन यदा काइन तथ বৰে সে পড়ল সারা। वारे धक्यन वृत्रेण कांत्र >१ জারল বিরহ গাড়া॥ বে জন বাইব ভোমারে লইয়া বমুনা হইলে পার। জীবনে ভেজিব বতন করিয়া व्यानित्व विष्ठांत्र छात्र।। २० कारन हरीनाम ं गहित मध्रा यदव त्म अनिम कांदन। জর জর তমু জারল অন্তর रेथब्रक नाहिक मान ॥

evs

नवेगात्राव्यः।

यंत्र क्षेत्र व्यवस्थाति कांमक नश्रन छटि। यमार्क यमार्क अंत्र संत्र संत वित्ररहत्र वात्रि छेडि ॥ याँकात शीकात वंत्र वंत्र (छल (विटेक भन्नान वात्र। কট করি জিউ কার্ক কার্ক বটকে ব্যথাটি পায় I वन् वन् करत कश्न वहेकि कत्रम सनदत्र ध्वनि । বিরের করণা বট করি আসি বৃবভানু রাজা রাণী 🛭 वक् कक् भारते कनक जात्रादि

वेदन बन वन वन्ति। तेन् तेन् तेन् तेन् तेनक तेनक ३६ वर्णक द्रापत्र ठीति ॥

नहेनांत्रांत्रण।

এঃ কি মণুরা

এঃ কি পরের বশে।

এঃ কি পাবাণ

এঃ কি লাদান

এঃ কি লাদান

এঃ কি গোধন

এঃ কি গোধন

এঃ কি ভেজিব মায়ে।

এঃ কি বালক

এঃ কি মণুরা বারে॥

এঃ কি গোপিনী

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি গোপিনী

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি গোপিনী

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি বােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি বােল্ল

এঃ কি বােল্ল

এঃ কি বােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি বােল্ল

এঃ কি বােল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি নােল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি নাল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি পাবাণ

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি নাল্ল

এঃ কি নাল্ল

এঃ কি নাল্ল

এঃ কি নাল্ল

এঃ কি পাবাণ

এঃ কি নাল্ল

এঃ কি বাল্ল

এঃ কি পাবাণ

এঃ কি পাব

এঃ কি পাৰাণ - হাদর নিদান ঞ কি মধুরা বাব। . . ঞিহার কারণে ইন্সিডে আকারে ১৫ . এখনি পরাণ দিব॥ अ कि मथुता नागृती विनादन ঞ কি বঞ্চিৰ তথা। ঞ কি সেখানে বঞ্চিব সহনে এ कि डाफिन (इशा॥ २० এ কি রাধার মরণ দেখিয়া ষাইব মধুরা দেশ। ঞ কি মত্রে সংস্তে যাইব দিয়ে শুভি বড় ক্লেশ। এ কি হুখের লালস ভেলিয়া ২৫ গোপিনী ছাড়িব পারা। ঞ কি বঞ্চিত করব সকল **छिनाम वृदक** थाता॥

विक्रिक्री

টল বল করেঁ টল টল দেছে

টেরা সে বিষম গাঁসি।

টানিলে না টলে বুকে টেরা হয়।
ফদয়ে রহল পশি॥

টাটক হইরা স্থামুখী ধনী ৫

টেরা সে নয়ানে চেয়া।

টারিয়া বাইবে ডটক রমণী

টুটিল বিরহ দিয়া॥

টানাটানি করে টেরেডে লইয়া

, মরিডে টাকর দিয়া।

টান টোন করি টাকাই ডা সবে

টের দুরি দিকে রয়া॥

२०

টিপ টাপু করে • টেটালির পারা विकानिन भावा ताथा। **वेल वेल कर**त অবলা পরাণ ১৫ সকল করিল বাধা॥ টাটক হইয়া টানিয়া রাখিব আপনার নিজ পতি। টেবেতে থাকিয়া टिं हेकाति मिया ব্যক্র মহা সে মতি॥ **ह** छीमारम करह টাটক ছইয়া টারল গোকুলনাথ। िष्पादन स्नानिस टिंग्रा स्टार नाथ ছাড়ৰ গোপীর সাথ॥

(वस्त्रावः।

ঠালল রমণ र्वगदक देवर्डन ঠারা ঠারি করে ভারা। ঠাট করি রথ ঠেলা ঠেলি যত ठालिल त्रमन मात्रा॥ ठीन दिन भित्र र्ठमदक गाइटिन त्ररथ। ঠকের ঠাকুর ঠক্ষকি সারা ঠাকুর বলিয়ে ভারে। ঠাকুরালি পনা ঠাকুর হইলে ठेमक (म कन करता। ठेकाईश अट्ट ठमरक याहर > • ठानिल शालात त्रामा। ঠার নাহি চিতে অবলা বধিতে ঠারে ঠেলিব ভোমা॥ ठानिन मत्र ঠাকুর তখন ঠারে যোগাইব রথ। 34 ठारत ठछीमान হয়ে একমন ঠারে বোগাইব রখ।

ৰেলয়ার। ডাকে এক জনা ডাহিনে শৃগালী ডাহিনে কাটিয়া বাব। ডর পেয়ে মনে অশুভ দেখিয়া ডরে ডরাইয়া রব॥ ডোর দিলে পরে ৫ ডোর দিলে ঘরে ডাগর হইল বাণী। ডরে ডরাইয়া ' ড**রেভে** ডরিয়া ডাহিন নাছিক গণি॥ **फांत्रिल मतिया फहत (मथिया** পড়িল সকল জলে। '১০ ডোর দিলে বড়ি **স্বতি তড়া**ৰডি এমন কে জন জানে॥ ভাগর দেখিয়া বামেতে ভারিয়া ভাগর কদস্ব ফুল। উড়ে শিখিচ্ড়া ১৫ ডগ•মগ ডগ বাঁধিয়া চাঁচৰ চুল ॥ ডাহে চণ্ডীদাসে পড়িল চরণে ডারিলা সাগরজলে। ডহ ডহ ডহ ডাহয়ে অন্তরে क्परत्र व्यानरम क्रांतम ॥

বড়ারি।

हर हर हर বহে অনিবার চরকি চরকি লোর। ঢলিয়া পড়ায় ' • ঢাকিলে না রহে নাহি ভোর দিলে ওর॥ **जिंदित अभिग्रा** বহু ঢারি দিলে ৫ एन एन करत कल। ঢারি পুন দিলে ঢারি আগর

তারে তারিলে সক্ষ

তোর পরিবলে তাকির টোরসে

তাপন বিরহ কোর। ১০
টোকল তাবলে তারির তাপনে

তিবল তঙ্গ স্থতোর ॥

তর তর বে গোপ স্থনাগরী

তরল বিরহ সবে।

তারিলে বিরহ আনল বিশুণ ১৫

তালি চণ্ডীদাস ব্যুরে॥

470

41

আনন্দ ছাড়িয়া আনল জারল

আন কি পরাণে সয়ে।

আনহ গরল হইয়া সরল

আন কি পরাণে সয়ে॥

আন কান ছলে আন কুতৃহলে ৫

করিপু আনহি খেলা।

আন জনা কভ কহিপু বেকত

আন দিখ অভি স্থালা॥

আন পাণা সব পান কি দিয়াছে ভোর।

আন সত করি ভোমার কারণে ১০

থান করি বাহ ভোর॥

আনল স্থালিলে আনন্দের ঘরে

আনল জালিলে আনন্দের ঘরে

আন কি জানিয়ে ইহা।

* * * * * * * *

আন আন মত ১৫

আনহ বারন ভালে।
আন আন লাগি এত প্রমাদ
চণ্ডীদাস আন বলে।

ভাটানি-মঙ্গল ে তুমি কি নিদান তাহা সে না জানি তবে কি এমন করি। তার তর ভম তথন করিপু जशना कूरलत नाती ॥ তরল সরল ভোবিমুগরল ৫ • তখনই খাইব আমি। তবে তাপ যাবে তখনি মরিব তবে সে জানিবে তুমি॥ ভোমার কারণে ভেঞ্চি গুরুজনে তাহা সে সকলি জান। ১০ তুমি নিদারুণ তাহে কর ছেন তাহা তুমি বদি জান॥ তোমার পীরিভি স্কায়ে পুরিতে তাহা না কহিব কত। ভাপেতে ভাপিত ভাছা কৰ কভ ১৫ ভোমার কারণে যত॥ ভাগেতে ভাপিত গঞ্জাে সতত তাপিনী বড়ই আমি। ভোমার চরশৈ সকলি গোচর তাহে নিদারূণ তুমি॥ ২• ভাহে চণ্ডীদাস তাপিত হৃদয় ভমুজর জর ভেল। তাপে বত সৰী তাহা মুখ দেখি

2031

कपर्य विकास त्या मिन ॥

থাকি থাকি বেখিত জন্তর
, কান্দিয়া কান্দিয়া উঠে।
থির নাহি চিতে থাকিয়া বেখিত
ধেমন আনল, ছুটে॥

খোর দরশন খাকিড খোকিড ৫ ं थित्र थित्रं नाहि मान। থাপিল ভোমার যুগল চরণ থল সে নাহিক জান।। থির করি চিত थंत्र थंत्र करत्र. थाकि थाकि किन केंद्रि। থাকুক থাকুক ভোমার পীরিভি थित यात्र नाहि वाँदि ॥ পল না রাখিলে পুইবে খেয়াভি থাকুক ভোমার লেহ।। থির থির তাতে কতে বিনোদিনী ১৫ थारि ना तरम (मरा॥ থির করি চিভ থাকহ গোকুলে পারী সে হইয়া থাক। **छिनाम करह** পল রাখ নাথ গোপীর শুমান রাখ। २०

470

यररे-तिकुछ।। मिन नश्रत নাচিল যখন प्रिथम विशम मना। দিয়া সে দেবতা দেবীরে পৃক্তিতে দেখল আপদ ভাসা॥ দেৰতা উপরে मित्र। कुनमन দেয়াশী জুড়ল কর। দেহ মাতা দেবি দরিয়া হইয়া चटत्र तटर माटमामत्र ॥ (प्रेवी रम ना विम মাথার সে ফুল তাহাতে কানল মনে। >•

দিব বহু তুখ হুখের সাগরে ফেলাব নাগর কানে॥ দেখিরা দরাল শুণের সাগর

দর দর ছটি আঁখি।

দরাতে মোহিত দেবের দেবতা ১৫

শুমুখ বন্ধিমে রাখি॥

দোষ শুণ যদি দেখিরা রাখার

ছাড়িয়া বাইতে চাহ।

দেখিব লও দেশির নাহিক

চণ্ডীদাস শুণ গাহ॥ ২০

478

কানডা।

धत्रम क्त्रम नकलि मिकल ধাধসে পরাণ রাখি। ধেয়ান ভোমার ধনী সে আকার एधू प्रव वार्ष्ट माथी। ধন জন খড সে সব বেক্ত ৫ ধরম ভরম তুমি। ধরিয়া চরণ লইনু শ্রণ তোমা না ছাড়িব আমি ॥ ধরিব যেমন ধরে মীনগণ थांधरम नकत्री यछ । थनी विदनां किनी ধাধসে তেমনি ধৈরজ ধরিব কত। थक् थक् भिक शत्रमान (निश् ধরিতে না পারি হিয়া। চঙীদাস করে ধরিরা ছলরে ১৫ বচন চরণ সেয়া।

केर ' भैग्हे।

দ্বীন নাগরী নবীন লোরেতে দেখিতে নাহিক পায়। নাহিক কখন নীরস বচন মভিকে কেমন ভায়॥ নৰ নৰ ৱামা না ফেল পাথারে ৫ নাহিক আপন কেহ। না জানি পীরিভি' না জানি কি রীতি क्वित इंशिन (म्ह। भिलिल (य पिन नग्रान नग्न সে দিনে আছিলে ভালে। নাগরী আগরি বমুনা নাগর সেই সে কদম্বতলে॥ নানা রঙ্গ তথা নানা রসক্থা আন আন ছলে কয়া। नीत व्यानि इत्ल नाना द्यम धति ३० • কহিমুবদন চেয়া॥ নাগরীর প্রেম পাসর কেমন কেমন ভোমার প্রীতি। নাহি গণ এবে সে সর ভারতি চণ্ডীদাস কহে রীতি।

> ८५५ बुढ़ाबि ।

পতি ছুরুম্ডি ় ভাহার পীরিভি ভেজিমু অবহি হেলে। পাথারে ফেলহ পরিহরি বাহ পাসর পরম লেছা। পাতি লাতি কুল পহিলে সকল পরিহার দিল গেহ:॥ পথে কত শত পাওল বেদনা পহিলে বিকের ছলে। পরিয়া কদন্ধ-মালা মনোহর ১৫ পাইথে কদশ্বতলে ॥ পরিহাস-রসে প্রেমে রহাইদে পাইয়া পসরা জড়ে। পথে লুটি নিতে দধি ছুগ্ধ যভ সে সব তেঞিলে কতি॥ পরশ-রভন পাইয়া সঘন পরাণে মিশিয়াছিল। প্রেমে দিয়া ইবে ছাড়ি কার বোলে **ठ** छोमात्र इथी (ङल ॥ पदचान!— (व चत ভाकिया (मत्र, गृश्विध्वन विषेश । व कथांवि माजुत अक्टन क्रीरनाकरभत

> 451 41(4)

মধ্যে প্রচলিত আছে।

কিরিয়া না চাহ কিরি কথা কছ
কের দিয়া কোথা যাবে।
কসল পাইয়া ফাঁফর করিয়া
, ফিরিয়া চলছ ঘরে॥
কিরাইতে যবে ফিরিয়া ফিরিয়া ৫
শাঙলী ধ্বন্ধী গাই।

ফেনাতে চাহিলে ফাঁফর হইলে
ফিরিরা কাঁদরে মাই ॥

ফটল বখন ফণ্ট বিষধর
ফুরল শুলি জলপানি। ১০

ফের ফিরি ফিরি গোপিনী ছুসারি
ফুরল জনেক বাণী ॥

ফাটরে পরাণ ফাটরে হাদয়

ফেলাহ দরিয়া মাঝে।
ফুরল সকল ফাঁফর গোকুল ১৫

চণ্ডীদাস সজে সাজে ॥

69r

च्रहे।

বল বল দেখি বিকল পরাণ বুক বিশরিয়া মরি। रवनना कानव वत्रक-त्रभी বিকল হইয়া বড়ি॥ বলরাম হৈতে व**ड़ रम बा**निएम ए বড় সে করিয়ে প্রেম। विषुत्र (यमन বহু রত্ন ধন लार्थ लार्थ भाग्र ८६म ॥ বড় যেন চুখ বহু গেল তুখ বড়ই আনন্দ তার। >. বহুমূল্য ধন তুমি সে তেমন ভূবন করিল সার॥ বটে কি বা নয় বুকা রসময় . ৰলিল গোচর পার। বসিয়া বিরলে ১৫ ৭ বৈণী কালজাদ রূপ নির্বিয়ে ভার॥ বেশ পরিপাটি বেশের বন্ধান (विन अवनामकार्ज)

বলি রাধা রাধা বাজাও মুরলী
তথনি বাইপু জলে ॥

বুল্লাবন বন্ধান সক্তে-মুরলী
শ্রাবণে শুনিয়ে ববে ।
বেকত কামিনী কুলের রমণী
পরাণ না ধরে ভবে ॥
বিকল হইয়া সক্তে পাইয়া ২৫
কনক-গাগরি কাঁখে ।
বলে চণ্ডীদাস বেদনা পাইয়া
বেন ধন পেয়া রাখে ॥

ৰ)১ ভাতি।

কাৰি। ভালের বড় ভু ভামিনীর প্রিয় ভালে সে কানল ভোরে। ভরম সরম ভাসল সকল ভাসালে দরিয়াপরে ॥ ্ **जान मन्म (मात्रा किंदूरे ना जा**नि ৫ ভরসা কেবল পায়। ভরসা অন্তরে ভারি ভারি তাহে ভস্ম হইল গায়॥ ভর্ম সর্ম ভরসা করিল ভালে সে জানিল মোরা। ১০ ভাল মন্দ কেৰা স্থানে ভাল মতে এমন ভোমার ধারা॥ ভৈগেল ভাবের • ভরসা সকল ভেল সে গরল পারা। ভাবিতে গণিতে সারা 🛚 ভিগল মরমে ভোমার ভাবনা

ভালে সে পশিরা গেল।

ভাবিতে গণিতে তাসল সায়রে कांनर जकत •ভণে চণ্ডীদাস ভাল॥ ₹• **जू**रनमशल माता॥ यपि नांकि हारव **লে ছেন শ্রীমূখ** 🕆 ৫ जन करन (महा। জীবহা। মনের মরম যাইয়া বমুনা জল ভরি ছলে মনেতে জানহ দেখিয়ে বাড়য়ে লেহা॥ মানস মরমে যতি। যদি বাহ নাধ যমুনা উপারে মনস্থ যত মানসে জানিয়ে • যগন ধেমুর পাল। মদন-ভর**ক্ষে** মাভি॥ यद नाहि (प्रथि (प्रथित क्ष्णाह মদন-মোহন त्रमीत मन ए বিকের ছলায়ে ভাল॥ ্মোহিলে মনের হুখে। যাহার বেদন৷ জানে কোন জনা মথুরা-নাগরী यांशांत क्षमस्य शिमा মনে সে পড়ল তাকে 🛚 कारन (महे कना वित्रह-(वहना ১৫ মনেতে লাগিল মনোহর রূপ যেমন র**লের** রসি॥ মগন হইয়া 6িভে। বাবে মধুপুর যবহু শুনল মনে নাহি ভয় গোকুল নগরী তবে কি পরাণ জীব। কি রূপ আছুরে ইপে॥ यम्नात करन वरात्र कृष्ट्ररा मनमख राजी मात्रिरत रक्भती তখনি পরাণ দিব ॥ শৃগাল মারিতে চায়। यमि ना इहेटव জীবধ পাত্ৰ, মাণিকের কাছে ভুলনা থাকয়ে ১৫ তবহু তেজৰ গেছা। কাঁচের ফলের প্রার॥ যতনে বাইয়া যমুনা মরিতে পর বে যজিয়া সন বে মজিয়া তেজৰ আপন দেহা॥ রঙ্গে ভেন অতি ভোরা। कात का का किन का खुत्र २० **থোতিম তেজিয়া (?) কোলিসে পাও**ব **ह** छीमांत्र खन सूरत्र । চণ্ডীদাস ভেল ভোরা॥ এত দিন ছিল যতেক আনন্দ २०। मनमच-छेननतः। शुक्तं धकवात अहे चार्वः यूठन शोक्न भूरत ॥ रारक्छ रहेशाई। **কা**ফি। त्रमने एक्स्या বাহার কারণে রুসে রসাইয়া জগজন ভরি বভ বড় ভেল লাজ। রন্তদ'রদেন ক্রেছি।

রসিক হইয়া ় রস ভেয়াগিয়া এবে সে জানিল ভালি॥ •. • রাতুল চরণ রঞ্জিয়ানাগরী ৫ রসয়া রসান ছিল। রসের ঘরেতে রস ভাঙ্গাইয়া বিহি নিকরণ ভেল॥ রাত্রি দিন ঝুরি বিরহে স্থন্দরী রহই তুহারি ধ্যান। রব শুনি যব মুরতি কৈশর রাজিয়ামুরলী গান ॥ 🕟 রাধা রাধা রবে অঙ্গ পুলকিড মুঞ্চরে তরুর ডাল। রহে সে বমুনা রহে নিরমল ১৫ **छकान इहेग्रा छात**॥ রাস অনুমাগ রহত অন্তর রমণী এতেক সয়। রাস অমুরাগে যে জনা বহল ভার কি পরাণ রয়॥ রাগ উঠে ঘব রাগরসে মাতি রাগ সে বিষম বড়ি। রাগে উনমত রাগ সে বেকভ রাগে সে পরাণ ছাড়ি॥ রাগে সে মগন রহই ধেয়ান ২৫ রাগে সে মরণ গাঢ়া। রাগিণী অন্তরে রাগ বচ পেলে পরাণ তেজৰ সারা ॥ রাতৃল চরণ लरत्रिक् भद्रग बहिंव ७ भरता। রহিল বিরহে: বেকড পড়িয়া • **চণ্ডীদাস পুছে কে**বা॥

নহ নিদারণ নবল নাগর ললিত ত্রিভঙ্গধারী। नव नव (वर्भ नि मत्नाइत লছ লছ মৃতু বোলি॥ नान(म नान(म নবীন নাগরী ৫ নোটন খোটন বেশে। নৰ অসুৱাগ নব নব রসে নব রামা জিয়ে কিসে॥ निनो नखग्रा সেজ বিছাইয়ে লওল সুগন্ধি তাথে। লওল বিচিত্র চামর ঢালর নাইৰ স্থাবের যুথে॥ লাগাইৰ অক্ৰে এ ছয় রসাল মিশান কুম্কুম্ ভায়। নবীন কিশোরী त्रमाम (म (गांभी)व লেপৰ শ্রামের গায়॥ লাবণ্য-লহরী লেছ না করব লে চলু অক্র রায়। নব নব গোপী লাজ পরিছরি চণ্ডীদাস গুণ গায়।

800

ৰড়ারি।

বল বল সখি , বিরস হইলে
বাঁচিব কেমন করি।
বিনোদ বিনোদ আমোদ
এ কি এ ডেজিতে পারি॥
বিনোদ বেশের বিনোদ মাধুরী
বিনোদ কেশের চূড়া।

বিনোদ কুস্থম- হার বনাইয়া 'বিনোদ দিয়াছে বেড়া। বিনোদ ময়ুর- পাখা তাহে দিয়া বিনোদ বিনোদ উড়ে। विताप नागत्री বিনোদ মরম পরাণ রহে সে ছাড়ে॥ বিনোদ বিপিনে রাস-জাগরণে वित्नाम् (शारशत त्रामा । আর না করিব বিনোদ চাতুরী ১৫ विद्याम विद्याम (अम।॥ वित्नाम गुत्रली वित्नाम वालव শুনিব শ্রবণ ভরি। विरनाम रवरभव रवभ ना कतिव वित्नारम वादेव हिला। २० वित्नाम त्मोत्रङ হার মনোহর ञ्गिक ठम्मन करत्र। বিনোদ নাগরী বিন্যেদ আকুতে লৈপিত শ্রীষক্ষ পরে॥ বিকায়ল পায়ে বিনি মূল পেরে ২৫ চণ্ডীদাস গুণ গায়। বিনোদ নাগরী কি কহিব গভি হেন মন মোর ভায় **গ**

> ৬০৫ কানড়া।

শুন হে নাগর ° শুরণ যে লয়

তারে সে এমন কর।

সরল হাদর সরল স্বভাবে

স্বারে করিয়া জর ॥

শ্যাম শ্যাম বলি শ্যামরী সকল ৫

শ্যামল হইরা সেল।

সঘনে সঘনে সে গুণ জাৰিতে क्रन जिलाश्वित पिन । হুজন প্রীরিতি হুখের আর্ডি সে ভেল গরলময়। रूप मृत्त्र तान . जूप कारामध মরণ হইল ভয়॥ मगमी मगात সময় হইল এই সে সকল মোয়। শরণ যে লয় সে জন ভেজহ ১৫ क्रम व्यविध द्याय॥ সহজে অবলা শাশুড়ী ভাপিনী সকল জানহ ভূমি। সহিতে সহিতে সে যে করে চিতে विष थ्या मित्र भामि॥ २• সাহস ধাধসে সৰ গোপীগণ कार्ष्ठत भूवनि श्राय। শ্যাম-পদে পড়ি करत्र निरंत्रमन **हछीमांत्र खन शां**य ॥

শ্বাম স্থনাগর রায়।

সকল তেজিয়া শরণ লয়েছি

সকল তেজিয়া শরণ লয়েছি

সকল কলে না ঠেল পায়॥

শুনিল যখন শ্রবণ ভরিয়া

সকল কুলের নারী।

সরল হাদয়ে সৃন্মুখ হইয়া

শুন হে মুরলীধারী॥

শুক্ত করি বাবে সব গোপীগণে

সবাই মরিব শোকে।

সব গোপীগণ - সম্প্রে স্থারূপে ১০ শেল দিয়া গেল কুকে ॥

শাশুড়ী ননদা সবাই সবাই সে সব আরতি স্থাধের আরতি • ় শাসিল সবার আগে। সে দিন পাসর দেখি মনে কর স্বরূপে লইব নগে॥ 36 সৰ পাসরিয়া. সমুক্তে ভারিয়া শেষেতে করিলে হেন। সহজে অবলা হইয়া অংখলা তাহে নিদারুণ কেন॥ স্থের ঘরেতে তুখ সার হৈল ২০ শোচনা রহিল বড়ি। চণ্ডীদাস বলে আশ পাশ গেল এবে হল বড় ভেড়ি॥ 609 শীপটমগুরী। শ্যাম শ্যাম বলি সদা শ্যাম হেরি नकल मैं भिल भारिय। শ্যাম পরিবাদ সকল গোকুল এ ত**নু সঁ**পিনু শ্যামে॥ সব তেয়াগিমু শ্যামের কারণে ৫ সবাই করিল সারা। শ্যাম কলক্ষিনী শবদ উঠিল তাহার এমন ধারা॥ সহিতে সহিতে দে সব কারণ শুনিতে পরাণ কাটে। শহাবণিকের করাত যেমন ও দিকু ও দিকু কাটে॥

শরণ যে লয়ে শীতল চরণে

সে জন এমন দশা। '

যুচিল সে পর আশা॥

কে জন ভাঙ্গিয়া দিল। চণ্ডীদাস বলে সেঁজন অজুর : শমন সমান ভেল ॥ 405 সুহট। হা হরি হা হরি 🐪 হরি হরি হরি হব সে হুতালে সারা। হরি কি হিয়ায়ে হানি বাণ সব হরি বা কেমন পারা॥ হের দেখি হরি হর্য প্রশ ৫ তেজহ কিসের লাগি। হিয়াতে হুতাশ **হয় নছে হ**রি বিদারি দেখহ আগি॥ হার পরিহার রভস হারাস रुति निमाराग रुख। হরবে গোপিনী যমুনাতে গিয়ে मित्रत्न ज्दब तम त्यस হরিণী বেমন হাণে ব্যাধগণ হিয়াতে বিশ্বয়ে শর। হোরে গিয়ে যেন পড়য়ে হুতাশে ১৫ বাণেতে হইয়া জর॥ হরিণী হুভাশে হরির বিরহ তেমতি সমান বাণ। হিয়াতে বাঞ্চল • হরিণী সমান **ह**शीमांत्र खन गान॥ 20 > । स्टादि-पूर्व।

नहेमातात्रम् ।

কণে কত শত ক্ষমা নাহি চিত ক্ষত উঠে কত বেরি। ক্ষেয়াতি রহল ক্ষিতি মহীতল ক্ষমা কর যত্ন হরি॥ ক্ষণেক ক্ষমহ দোষ অপুরাধ ক্ষমা সে করিতে চায়। ক্ষেপল সকল 'গোপিনী যভেক ক্ষমা চিতে নাহি লয়॥ ক্ষণেক ক্ষণেক বিরহ-আগুনি कर्ण कींग कत्रि मिल। ক্ধায় আকুল পীরিতি বিহনে कर्णक ভाक्रिया देवन ॥ ক্ষিতিতলে লুটি রাধা স্থামুখী ক্ষণেক বদন চাহি। ক্ষণেক বোধত ক্ষীণ তমু হয়ে ১৫ ் চণ্ডীদাস গুণ গাহি॥

রাখাল-বিলাপ।

410

হেথা সে অক্রের রথ সাজাইয়া
কর জোড় করি কয়।

মধুপুর দেশ চল জ্বীকেশ
বিলম্ব নাহিক সয়॥
এ বোল শুনিয়া • শ্রাবণ পূরিয়া ৫
কৃষ্ণ বলরাম সুই।
ভাল ভাল বলি ভুরিত গমন
মধুর মধুর কই॥

মোর স্থাগণ ভূষি ভার মন
. ভবে সে চড়িব রথে। • ১০

সৰারে লইয়া শানল যতনে কহিতে লাগল ভাথে॥ जातक (थिनन শ্ৰীদাম স্তদাম . ञ्बल नवांत्र नत्न। किছू ना ভाविर भवरम वाशिक ১৫ না কর ভাবনা মনে ॥ ভোমাদের চিতে আছি অবিরভে হিয়ায়ে হিয়ায়ে মেলা। এই স্থাগণে লয়ে ধেমুগণে জনম করিয়ে খেলা॥ এ যত্নন্দৰ কর্ময়ে রোদন ছলে সে কমল আঁথি। (यन इद्रधूनी-তরঙ্গ তেমনি বনে তেয়াগল লক্ষ্মী (?)॥ कृलि कृलि मूथ त्म विधूमधन २० কহিতে না ফুরে বাণী। চণ্ডীদাস কহে সাঁথি ভরি লোহে किश्ल कि श्रा कानि॥

333

भायका ।

গদ গদ বোলে শুন বাঁশীধর
কোথাকারে যাবে তুমি।
এ ব্রজ-বালক করিয়া বিকল
কিছু না জানিয়ে জামি॥
কেমন ভোমার চরিত ব্যাপার ৫
এই সে করিলে পাছে।
তবে কেন এত প্রাত বাড়াইলে
গাকিব কাচার কাচে॥
স্বপন নয়নে শ্রেজন গুমনে
সদাই ভোমায়ে দেখি।

কেষনে ভোষার ় লেহ পাসরিব ঁ শুন হে কমল-সাঁধি॥ কাদে শিশুগণ হয়ে অচেতন শ্ৰীৰুখ পানেতে চেয়ে। नाहिक मःवाम ১৫ কেহ কোখা পড়ে অভি সে বেদন পেয়ে॥ (कह वर्रण वाम (?) आत ना स्थिनिय মধুর মধুর বাণী। बाद ना दश्लिव दश्यू निरशिक्श ना निय वाँगीत भरनि ॥ ভাই ভাই বলি আর না শুনিব विश्वन देवकान दवरन। চত্তীদাস কৰে অতি বড় মোৰে পড়িয়া চরণতলে॥

> ७५२ यङ्गित्र ।

ক্ৰেন বচন এ যুত্বনদ্দন শুন হে স্বল ভাই। ट्यामारमञ्जूष्ट व्याहित्य नमार्ड ইথে সান কথা নাই॥ কংসরাজ তুষি ৫ আমি গিয়া আসি পুনঃ সে খেলিব খেলা। সরল হৃদয়ে विদায় করহ পুন সে হইব মেলা॥ এ কথা শুনিয়া গদ গদ হৈয়া কাঁদয়ে বালক যতে। ১০ रुरंग्र करनवन्न করাখাত হানে মাথে॥ কি বোল কি শুনি কহে সবে বাণী নিঠুর হইল কামু।

আমরা ভোমার বরহ-বেদনে ১৫ এখনি ভেজিৰ তমু॥ . আর কি বাঁচিব ও ভন্ম রাখিব ' ना एमि ७ हाम-मूथ। এবে সে জানিল বিহি নিকরণ मिर्प्य ञिष्ठ विष् इस ॥ ভোমার বিহনে জীব বা কেমনে ইছার উপায় বল। তবে সে यारेदा भेथूता नगती শুনিতে কানাই ঢল।। **८२ हे भार्य ब्रह्म** वहन ना ऋरूत २० নাগর চতুর রার। काँ एक खकरांना वित्र इ- ८ वर्गन চণ্ডীদাস কাঁদে তায়॥ २८। এ कथा ७नित्रा श्रीकृषः विख्व हरेलन।

कामका ।

উঠ উঠ ভাই

চাহত আমার পানে।

সরল হৃদয়ে

তবে স্থুখ হয় মনে॥

এক বোল বল

মণুরা গমন

যাইতে বলহ মোরে।

কহিতে কহিতে

কহিতে না পায় লোরে॥

তন হে স্থুবল

ভূমি সে আমার প্রাণ।

হৃদয়ে হৃদয়ে

মন্ম মর্মে

ইহাতে না হয়ে আন॥

বহু মুখ-কথা 'ভোমার সহিতে সকল জানহ তুমি। ভোমার মারাটি ছাড়িব কেমনে ১৫ পরবশ হই আমি॥ শুনহ স্থবল মরম-বেদন ভোমারে না দেখি যবে। হিয়া জর জর করয়ে অন্তর দেখিলে জুড়াই তবে॥ স্থবল কহেন কামুর গোচর তুমি সে নিঠুর এবে। তবে কেন লেহ বাড়াইলে মোহ মোর কোন গতি হবে ॥ পীরিভি করিয়া ছাড়িয়ে সবারে ২৫ এ নহে উচিত পণা। কে আছে এ মহী- মণ্ডল মাঝারে এমন বেথিত জনা॥ চণ্ডীদাস কহে কমল-নর্মন • ছল ছল সুটি আঁখি। ব্যাহ্য বিশ্বিত অন্তর বয়ান বন্ধিম রাখি॥ २१। हाफ़िया नवारत...नकनरक क्रांकिया हिनया যাপ্ত।

418

বেলরার।

তবে কেন প্রীত 🕠 বাড়াইলে হিত গোপের বালক সনে। পরিণামে এভ করিবে বেকত हेश वा (क अन आदि॥ षषि वा कानिश् স্থপন ইঙ্গিতে ৫ নিদান হইবে ভূমি।

বাদিয়ার ঘরে গরল ভখিপু আমি 🛙 এ সব কেমনে পাসরিব মনে ভোমার পীরিতি-লীলা। যবে পড়ে মনে দে রস-মাধুরী গলিত মানয়ে শিলা 🎚 দেখ মনে ভাবি বালক সংহতি कौड़ाड विकास निमि। (अपू वरन वरन द्राधिया प्रचरन ३० ভাণ্ডীর-গভরে বলি॥ নানা মত পেলা তুমি সে ক্ষলা বঞ্চিমু ভোমার সনে। যবে সেই লীলা মনে পড়ি গেলা क्यान कीव (त्र मित्न ॥ २° তো বিমু মরিব সকল বালক তিলেক নাহিক জীব। ভোমার সম্মুখে মরিব স্বাই এখনি প্রাণ দিব॥ কি ছার বাঁচিতে সাধ নাহি চিতে ২৫ **डा**ड़िय़ा जानमनिधि। **ए धीमांत्र (भार्ट इल इल (लार्ट** (क देकटल निषया विभि ॥ ७। निषान...निष्धा ১২। পাৰাণও গলিয়া বার।

স্তবলের করণা।

(有明集(第二)

্বনে অভিমুখ ষ্থন করিলে নীলা সে পেলিলে গেলা। कटिक बद्धत विभाग निर्देत **इया जानाटकत्र (मना ॥** े

अपन्न क्षान्य कांनिष्ड कांनिष्ड (य मित्न.कांनिकी मत्हत मन्त्रूर्थ व স্ৰল পানেতে চায় 🕯 🐪 ्त करन गतन हिन। না বল না কহ ও সব বচন ' ৫ সে জল খাইয়া সেখানে বালক কহিতে পরাণ ফাটে। সবে তমু তেয়াগিল। হিয়াজর জর পুড়য়ে অন্তর কুলে পড়ি সবে মরিল বালকে অধিক জ্বলিয়া উঠে॥ তুমি সে গেছিলা কতি। ১০ আসিয়া দেখিলে কিবা মাত্র দিলে শ্রীদাম স্থদাম স্থার বস্তদাম অপর যতেক স্থা। করিলে স্বার গতি॥ আর না হেরব 'ও মুখমণ্ডল কেন বা জীয়ালে এ হুখ দেখিতে আর না হইব দেখা।। তখনি মারিতে ছিল। भा नवा विनिति - वादव मधूर्भूती মণুরা গমন করিবে এখন ১৫ শ্রবণে শুনিতে ইহা। ইহাই দেখিতে হল। জীব স্থাগণে ১৫ কিসের কারণে **८कम्परन विका**व তোমা না দেখিয়া কি ছার রাখিতে দেহা॥ শুন হে কানাই ভেয়া। লোরে আঁখি ভরি ক্ৰে বন্মালী নিঠুর নহিও বচন কহিও সবারে তুষিয়া কহি। কহত বুদন চেয়া॥ সরল হৃদয় করহ বিদায় এ যত্নন্দন না ফুরে বচন হেটমাথে রহে কানু। কহে স্থাগণ কেমন বচুন কিবা না বলিব মুখে নাছি বাণী এ বোল কেমনে विल। পুরল বিরহে তন্তু॥ মনে বিচারিয়া **इग्र नट्ड (५**४ চণ্ডীদাস কহে श्व (इ वहन २० শুন কানু বনমালী ॥ চলহ যমুনা-জলে। চণ্ডাদাসে ব**লে** এ (वाल (कगरन २० ঝাঁপ দিয়া মরি করিয়া ধেয়ান कहिरत्र ना लरत्र भन। ञ्चल देशह चरल॥ প্রাণের দোসর তুমি সে স্বার ৪। বালকগণের সহিত মিলিত হইরা। ষেমন বাপের ধন। ১১-১७। **जबानत्वत्र छे**ख्यि ह

ं নটনারায়ণ।

ফুলি ফুলি কান্দে স্থির নাহি বান্ধে সৈ হেন রসিক্রায় ১

4) 1

কি বা করে ধনে কি বা করে জনে ভোমারে জধিক কি।

এ ধন সঞ্চয	্ মনের সহিতে		6	•	
ं कांबरग्र			1 -1 - 1 0 11 4 Chal	আন জীৰ মাধে	
•			সে হয় ভূগে	त्र कांग्र॥	
	রসের চাতুরী	¢	यूबर्य आह्न	এক মুনিগণ	•
জানয়ে বি			তপেতে মহা	ই তেজা।	٥٥
	জানে গুণি গুণি		कल मूल मूल	পলের মূণাল	
গো পঁছ তু			ভক্ষ ণ করিত	अमा ॥	
	সে নৰ কিশোৱী		সেই বনে এক	হরিণ ছরিণী	
	কানয়ে নাই।		সঙ্গেতে তাহ		
			(इनक ममर्य	এক ব্যাধ শৱে	50
কি জানিয়ে তব	গুণের মহিমা		বিদ্ধল থাকি	য়ে পাছ॥	• -
्मश्य भूर			ছুই জনা মারি		
	যুগ ফিরি ফিরি		হরিণী ছাওল		
	হিক পান॥	20	যেখানে আছয়ে		
	রাখিতে নারল		দেখিতেন আ		
করম অ ভা			চণ্ডীদাস বলে		`
হিয়া সে দারুণ	শেল পশি দিয়া		শুনহ নাগর :		
মধুপুর যাত	ব ছাড়ি॥		ভাগবতে আছে		
কে সার ডাকিব	ভাই ভাই বলি	٥ د	এবে কহি ভং		
 মধুর বচনর 	সে।				
পড়িয়া চরণে	कॅमिट्य मघटन				
ক্ৰেন এ চণ্ডীদাসে॥			*	•	
২। তোমা অপেকা প্রিয়তর আর কি আচে ?			কান গ	1	
			সেই মুনি সেই	হরিশী ছাওয়াল	
			রাখল সে মূনি	बद्द ।	
•) b		প্রতিদিন দিন	ভক্ষণ সেবন	
3 0 :		করয়ে অবহি ভেলে॥			
	কেল উজ্ঞটিয়া		কভ দিন বই	সেই মুগশিশু	æ
	্ব ভোমা।		পাইয়া হরিণী-	नक ।	
ভোমার বিরহে	মরিলে এখনি	•	আন বনে গেলা	রতি রসস্তথে	
পরিণামে পা	বে প্রেমা ॥		' করিতে রসের		

यथन मन्नरत्र

না দেখি সেই মুগী ক মুনির হইল 'শোকু।

বড়ই বিয়োগী

বারে বেবা ভাবি

মরিলে তরিব ' মরিয়া হইব হরিণ হরিণ . ক্লে অসুক্ষণ পাইক্সা বিয়োগ রোগ ॥ া যবে সেই মুনি কাল উপস্থিত रुत्रिश (श्यांत्म मद्र । व्रतिश व्हेल आनहि जनरम ১৫ ष्ट्रं इल मृगवद्य ॥ যারে যেবা ভাবে তারে তাহা লবে মরিলে পাইব ভোমা। আনহি জনমে পাইব সঘনে কানাই ভেয়ের প্রেমা॥ ২০ চণ্ডীদাস কছে রসভত্ত্ব-কথা শুনিতে নাগর কান। হেট মাথে রহে বচন না কহে উঠল বিরহ মান॥ ভাগবত ৫ম হন্ধ, ৮ম অধ্যায়—ভাগবতে ঠিক এরপ নাই। 61 তুমি সে নিম্য়া নিঠুৱাই পনা এবে সে জানিল দঢ়। পীরিতি করিয়া हिया राश मित्रा এবে সে काबिल प्रजृ॥

বালক সংহতি ৫

কেন প্রীত কৈলে

नाहित्न (थिनत्न त्रत्न।

জেয়া কেলা বলি প্রেমে চল চল

निमान कतिरल त्नारम ॥

ইशति भन्नोत किरम। ' ১०

(डामा ना प्रिचित्त जिल्लक ना क्रीव

করিলে এ সব সঙ্গে॥

তোমার চরণে সখা। **बी**नाम स्रुपाम আর বস্থদাম ১৫ আর না হইব দেখা॥ কহে গুণমণি কাঁদিতে কাঁদিতে স্থবল পানেতে চেমে। চণ্ডীদাস কছে অতি বড় মোহে পড়ে মুরছিত হয়ে॥ স্থালে কহেন কমল-লোচন কহ কহ এক বোল। যাইতে বলহ মধুপুর দূর তেজিনমায়া মোহ কোর॥ স্বলৈর কাঁধে কর আরোপিয়া ৫ আলিঙ্গন রস আশে। বল বল ভাই মুখ পানে চাই খুচাহ শোচনা ক্লেশে॥ ভোমার হিয়াতে সদয় হৃদয়ে তিলেক নহিয়ে ছাড়া। হাসির সন্মুখে বিদায় করহ তোহে মোহ প্রেম বাঢ়া। আর এক কথা শুন হয়ে বেগা শুনহ সুবল ভাই। नवीन किरमात्री के ख तत्र-कामिनी >0 वत्रक-द्रम्भी ताहै॥ আরতি পীর্জ স্থাের কি রীতি ' ভাল মন্দ কিছু তেহাে না স্লানিরে কেবল আমাতে চিত্ত। গোপত বেকত কহিবারে মহে ভোমারে কহিয়ে রীত॥ . ২০

' সব ভূমি জান কাঁদত করুণে মরম-বেদন ় সৰ স্থাগণে কহিল গোপত কথা। 🗐 मूथ रहन ८ एए। গতি দূর এই কি হব রাধার ধরণী পড়িল বালক সকল ১৫ (न भार मन्द्रम वार्था ॥ वज़्हे (वमना (भरत्र ॥ कथन न। जारन वित्रह-त्वमन २० ধরিয়া শ্রাম नीन वन्रत আনবি রহতি দূর। ধড়ার আঁচল ধরি। এবে অগোচর গোচর না নয়ে কোণা যাবে ভাই কানাই বলাই যাইব মথুরা পুর॥ হিয়া বিদরিয়া মরি॥ জানিবা কখন বরহ-বেদন উঠ উঠ ভাই সুব স্থাগণ मत्राम পिना यत् । काँ पिया नागत त्राय । প্রবোধ বচন করিল তখন দশমী দশারে পাছে দরশায়ে এ উঠে অন্তরে সবে॥ দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥ (कान इला तरन निकिर्द (म स्मर হাসিবে আনহি ছলে। কহিল কারণ ৩৫ মর্ম-বেদন ■東野 ! मीन **ह**शीमांत्र वटन ॥ সবার করেতে ধরিয়া ধরিয়া ৩। স্বাইতে বলহ...বাইবে বলিতেছ। রসিক নাগর কান। উঠ উঠ বলি স্থানে কছে: 622 ঝেমরা আমার প্রাণ॥ थान्या । এ কথা শুনিয়া গদ গদ ছৈয়া এ বোল বলিতে नरमन नमन ० পড়ল ধরণী ধরি। नकल वालक (मिल। নিদান করিয়া হিয়া ব্যথা দিয়া ভেয়ের করেতে কর পসারিয়া ষাবে সবে পরিহরি॥ সবে আলিজন করি॥ বোলহ বচন সচল সঘন ৫ (कह लाएं कृष्म कह लाएं जारम निण्डय मधुत्रा शादन। কেহত ধাওই দূরে। গোকুল আকুল * করিয়া সকল কেছ প্রেমরদে ভাই র্ছাইবা (?) ঐছন যাইয়া ধরে॥ স্বার প্রাণ লবে ॥ (कह वाल फारें कानारे वलारें ক্ষ ক্ষ ভাই স্থল সালাতি ু এবে সে নিঠুর ভেলা। विषात्र कत्रह त्यादत्र। পড়ল অধনী গোকুল নগরে এত দিনে মেনে ১৫ মুরছা খাইয়া শোকের সায়র দিলা।॥ . नव कम दिशा कूरत ॥ "

কান্দিয়া বিক্ল . বালক সকল
শ্রীমুখ নিরখে সদা।
চণ্ডীদাস বলে পড়িয়া ভূতলে
সকল হইল বাধা॥

গোপী-বিলাপ।

438

ৰড়ারি।

এত বলি যত বালকমগুল শ্রীমুখ পানেতে চেয়ে। কেহ কান্দে ভাই ভাই বলি পড়ে মুরছিত ইয়ে॥ চল ছল বারি চতুর মুরারি উঠব রথের পরে। হেন বেলে সব গোপিনী ধাওল পাইয়া নিশ্চয় সরে (?)॥ কতি যাবে ছাড়ি অখল রমণী মো সব সঙ্গেতে লহ। কিবা আর সাধ সব হল বাদ এই সে कात्रण श्रह ॥ লেহ বাড়াইয়া নিদান করিলে স্ত্রীবধ পাতকী সারা। মধুপুর দেশে বাইবে ছাড়িয়া ১৫ এই সে ভোমার ধারা॥ এত ছিল মনে লেছ কৈলে কেনে व्यवना त्रमी नत्न। আর কি দেখহ মপুরা গমন मीन हरीमांग **ड**र्ग॥ . २०

012

কামোৰ। বলে শুন

রসিক নাগর" রাধা বলে শুন মোর সে কোন বা গতি। তুমি দয়ানিধি সব পরিহরি রাখিয়া চলহ কভি॥ প্রেম বাড়াইলে অমিয়া সিঞ্চনে ৫ করিলে অনেক স্থুখ। কে জানে এমন 'ভোমার ধরম পরিণামে দিলে ছুখ ॥ মোরে লেহ সাথ শুন যতুনাথ সাধ গড়ায়া যাব। এ ছুখে এবে সে ভোমার বিহনে কেমন করিয়ারব॥ শাশুড়ী তাপিনী নন্দী পাপিনী তাহা সে সকল জান। তোমার চরণে এ দেহ সঁপেছি ১৫ তাহে নিদারুণ কেন॥ 🕡 ভোমা না দেখিলে ভিলেক না জীব মরিব তোমার গুণে। এমন পীরিতি নাহি দেখি কতি দীন চতীদাস ভণে॥ ২০

क्रमणाः

১৮। তোমার ৩৭ শর্প করিয়া, ধ্যান করিয়া

यत्रिव ।

প্রাণনাথ বঁধুর। আদরে।
কোবা ইছা কহিবারে পারে॥
মরিব গরল বিষ থেয়ে।
কান্ধ মাই এ ডমু রাখিয়ে॥

এত বদি ছিল তোর মনে। তবে প্রেম বাঢ়াইলা কেনে॥ একে मति गृह-পतिवारम । भारुषो ननमो देकल आद्ध ॥ ভাহে ভেল ভোমার বিরহে। কতেক সহয়ে তার দেছে॥ রাধা বলি কে আর ডাকিব। শুনি ধানি সে সুখ পাইব॥ বিধি বড়ি নিকরুণ ভেলি। মহাত্রখ-সায়রে পসারি॥ নিকুরুণ নহ ত মাধাই। শরণ পশিরাছিল রাই n मीन शैन ठछीमांत्र गांत्र। काटम्म श्रृंह धत्ररण ना यात्र॥ >२। अति ..'धनी' कतिरम ३ वर्ष हरा।

平押付!

প্রাণনাথ, একবার চাহিয়া কহ কথা। সে স্থুখ পাসর এবে ভূঁত মধুপুর যাবে त्रमणी मत्राम निया वाथा॥ এমন করিবে তুমি স্বপনে নাহিক জানি তবে कि कतिशू नव लिहा। তাপেতে তাপিনী যত তাহা না কহিব কত क्रकात डाका এह परा। অনেক কহিলে বাণী * শুন ওছে যতুমণি সকল গোচর রাক্ষা পায়। এবে নিদারুণ কেনে ৰধিয়া রমণীগণে ১০ কি হুখে মণুরা পুরী বাও॥ বির্লে ডু নিয়া খ্র দেখা শুনা নিরস্তর . শীতল চামরে দিব বা।

কুস্থম-শয়ন শেযে কিচিত্র-পাল্ক সাজে জাতি জাতি দিব ছটি পা॥ কর্পুর ভাস্বল দিব বাটা ভবি পান নিব षिव जुलि श्रीमुथमधरल। শ্রম নিবারণ হব এ हुया हन्मन मित চরণ পাখালি কুতৃহলে॥ এ স্থ-সম্পদ ছাড়ি কোথারে যাইবে এড়ি ২০ রহ রহ প্রাণের কানাই। চণ্ডীদাস বলে ভায় শুন নাথ যত্ত্বায় আমরা দাঁড়াব কোন ঠাই ॥ 30 >। জাতি জাতি...টিপিয়া। ১৯। পাথালি ধুইয়া।

बड़ाबि।

শুন ধনি রাই কহি ভুয়া ঠাই ना कत्र विश्वामभेगा। ভোমার হৃদয় আছিয়ে সদ: তাহা সে আছিয়ে কানা॥ তুমি রসমই তোৱে কিছু কই শুনহ আমার বাণী। পরবশ হয়৷ পুন সে আসিব ধনি ॥ यथन देवर्ठन রথের উপর त्रिक नागत धाती। দেখায় রসিয়া অঙ্গুলি তুলিয়া বসি এক হেন ঠারি॥ সারণি ভুরিত (হ্ৰক সময় **हालात्य ज्ञ्म**त तथ । হট্য়াবিমন ১৫ সব গোপীগণ .

সবে আগুলিল পথুন

प्र वांक् शंगांत्र . नवीन किरणांत्री ় পড়ল রথের তলে। ' বাহ যাহ দেখি রাধারে মারিয়া সকল গোপিনী বলে। পড়ল রথের চাকার সম্মুখে অবলা অখলা রামা। বধ করি যাহ এ সব গোপিনী জানিল ভোমার প্রেমা॥ **छिमान** सिथ রাধার হুডাশ ২৫ বিরহ-বেদন চিত। গিয়া শ্রাম পাশে কর জোড করি বুঝাইছে কোন রীত॥

६६५

ৰড়ারি।

কেহ কোথা রহে কাসুর বিরহে ধূলায়ে ধূসর তমু। গোকুল ছাড়িয়া অনাথ করিয়া কোথারে যাইবে কামু॥ কে আর করিব দয়া মোছ অভি কারে সে করিব মান। আর না শুনিব শ্রবণ পুরিয়া মধুর বাঁশীর তান।। ইহাই বলিয়া বরজ-রম্ণী পড়ল কতহি ঠামে। >0 উচ্চ সর করি কাঁদে ত্রজনারী করিয়া যাহার নামে॥ কেহ রথ হাতে धतिया तश्रा क्टिकार्य नाहि तिथि। त्क इ कांत्र शास्त्र , ठांश्टिय वक्त ३० लार्व ना रंग्स्य जीचि ॥

भवनी छेशदत ं हिट्यत शूर्वल वत्रक-त्रमगी धनी। নাহিক নিশাস নাহি কোন ভাষ কপালে ছু কর হানি॥ কেহ কার অঙ্গে অঙ্গ পরশিয়া পড়ল ঐছন গতি। কোথায়ে পড়ল আভরণ-ভার তাহা সে না জানে রীতি॥ কেহ বা ষমুনা- কিনারে পড়ল ২৫ যেখানে উঠিল রথ। সেখানে রহল যত গোপনারী আগুলি রহল পথ। কেছ কার মুখে ়বারি ঢারি দেই চেতনা নাহিক হয়ে। উর্জবাহু করি ধূলায়ে পড়িয়া চণ্ডীদাস তঁহি রহে॥

কেছ বলে ভাল মেরা যাব চল
মণুরা নগর পুনু।

কিবা কুলভয়ে হেন মনে লয়ে
ধরিয়া রাখিব কানু ॥

যাহার লাগিয়া কত পরমান ব
হল সে লোকের হাসি।
কেহ গোপনারী কসনেতে ধরি
কাড়িয়া লইব বাঁশী॥

প্রেম বাড়াইয়া নিদান করিয়া
মণুরা সাজল এবে। ১০
এত কিবা সহে অবলা পরাণে
কেমন ভাহার ভাবে॥

कून-नीन भना पूर्वाहेन এবে .শুন গো মরম-সখি। **এবে সে ह**रेल ১৫ বাঁচিতে সংশয় वष्ठ शत्रमान दन्थि॥ কেহ বলে আর রাখিতে নারল এ হেন পরাণ-পতি। এখন কি কর এ দেহ রাখহ শুনহ আমার রীতি॥ २० यम्नात करल ' এখুনি মরিব कि कांट्र भन्नाग नाथ। হয় নয় আসি দেখগে রহসি তি**লেক দাঁ**ড়োয়ে দেখ ॥ চণ্ডীদাস বলে ভাবিতে গুণিতে ২৫ এখনি मत्रण हरत। স্বার মরণ (एथ नवधन তবে সে মথুরা যাবে।

407

कानड़ा।

এত বলি বিনোদিনী রাই।
ক্ষেণে ক্ষেণ ধরণী লোটাই॥
জ্যুতেতন চেতন না হয়।
শ্যাম পানে নয়ন থাপায়॥
ক্ষেণে আঁথি মুদি রহে রাই।
পুন রাই পথ পানে চাই॥
বেন চাঁদ মুখের বয়ান।
ভেল বেন অধিক মেলান॥
হতাশ পাইয়া চন্দ্র-মুখী।
সদা শ্যামরূপখানি দেখি॥
১০
সোনার পুথলি বেন লুটে।
সবনী উপরে বেন উঠে॥

বয়ানে নাহিক কিছু ভাষ। . চরণে লোটায়ে চতীদার ॥ •

৪। থাপায়…বাপিত করে।

৮। (यनान व्यक्ति।

408

न्द्रमञ्जा ।

হেদে হে রমণ त्रगगी(मारुन বধিয়ে যাইবে তুমি। তবে সে ছাড়িব व्यक्तित्र वनन পড়িয়া রহিব আমি॥ কোন গোপী বলে শুনহ নাগর (एथर वहन ठारे। ব্দবনী গড়ায়ে রহেছে পডিয়া তোমার কিশোরী রাই॥ চাহ রাই পানে कमल-नग्नारन বয়ানে ভোষই বোল। একবার চাহ क्र (मिल (लक् তিলেক হইল ভোর॥ **द्रमगै**। यादन इटिल (म नयून गलरा (अरमत भाता। চাহিয়া দে ভিতে ১৫ কটাক্ষ ইঙ্গিতে পড়িয়া রহল সারা॥ এক গোপীগণ দেখল ভখন (एडन कत्रास्त्र त्रांशा না হয়ে চেত্ৰ হয়ে অগেয়ান ভমু সে হয়াছে আধা॥ 20 बड़हे (विश्व -**छ**ीमांत्र (मिथ त्राधात प्रणमो प्रणा। (इन नवश्रत वछ (मिथ भारत

विवम (प्रचित्र पिना ॥

কাৰড়া। রাই-মুখ হেরি নাগর মুরারি (वांदन (वंदन (पंग्रा। রাধার বেদন হেরিয়ে সঘন রথের উপরে রয়া। ভুরিত করিয়া পুন সে আসিব ইহাতে নাহিক আন। তুমি দেহ বাণী মথুরা যাইতে व्यथन त्रभग প्रांग ॥ এ বোল বলিতে বরজ-রমণী मत्रा (वक्तल भंत । হিয়া ছট্ফট্ পরাণ-পুথলি তমু হল জর জর॥ এ বোল শুনিয়া নাগর রসিয়া विक्रम-नशांदन हांग्र। রথ ঢালাইয়া তুরিত গমন ১৫ অক্রুর লইয়া যায়॥ গোপিনীমগুল দেখল সকল মথুরা চলিয়া গেল। নয়ানে চাহিতে দেখল বেকত যেনক বাজিল শেল। २० চলে সে ধাইয়া সন্বিত পাইয়া ও বর-রমণী রাই। কান্দি কহে কিছু থাকি গোপী পাছু

608

मीन हखीमांत्र गाहे॥

শুনিয়ে আজীরিণী চিতগত বোল। মাধব কছে কেন এত উতরোল॥ হাম মাপুর নাহি করব পয়ান। দৃত্তর বচন বিচল ন'হি জান॥

অবহ বিরহ-চুখ দূরে দেহ ডারি। কবছ না বাওব তুয়া গুণ ছোড়ি॥ কত পরবোধই রসময় কান। বৈছে অবলাকুল প্রবোধই মান॥ नकल नमाधिरत हलल मूत्राति। চণ্ডীদাস তহি হৃদয়ে বিচারি॥ > नमाधित्य-- त्याहेगा। কানডা। ক্ষেণেক দাঁড়ায়ে রও। টাদ-মুখখানি আগে নিরখিয়ে তবে সে মথুরা যেও॥ আমার নয়ন চকোর স্থন পিতে চাহে ঐ বিধু। লুবধ-ভ্রমর যেমন জীয়য়ে পাইলে ফুলের মধু॥ একবার দেখি নট-বেশখা্নি জুড়াক রাধার হিয়া। **जिक्**ल अस्टर्स ३० তখন এ বেশে এবে কেন কর ইয়া॥ मक्न मिक्न এ (দহ সঁপিল কাতি কুল দিমু তোরে। তোমার কারণে এত পরমাদ गश्चमा এ चरत्र शरत ॥ সকল ছাড়িল • ভোমার কারণে ভাহে নিদারুণ তুমি। কি বলিব পায়ে সকল গোচর

কি আর বলিব আমি॥

মিনভি করিয়া কভ।

কামুর চরণে ২০

কহে চণ্ডীদাস

কুলবভী ক্লনে কি হবে উপায় পরাণে না সহে এত।

- २। नित्रविष्य ... व्यामको (मिथ)
-) बोदाय...बोविक शांक ।

५८७ स्ट्रा

হেদে হে পরাণ-বন্ধু, ফিরিয়া না চাহ একবার। পাসরি সে সব স্থখ উলটি না চাহ মুখ বড় নছে মহিমা তোমার।। আৰু পাছু না গণিয়া সে ধনী করম খেয়া প্রেম করে পরের পুরুষে। পরিণামে পায় দ্বখ কখন নাহিক স্তথ আগম পাথারে পড়ে শেষে।। কৰিলে কি জানি হয় কহিবার কথা নয় হাতে চাঁদ দিল হাসি হাসি। পড়ে বা না পড়ে মনে বসন লইল দিনে ১০ • কদম্ব-তরুর *তালে* বসি॥ দে সৰ,করিয়া সভা ভাহার নাহিক নভা (•ু) तफ कनांत्र এ वफ् नीति । গাসি রসে চেয়ে কথা মর্মে মর্মে ব্যথা কত বার পাঠাইতে দূর্তী॥ এখন कत्रमक्टल বিহি নংগ্ৰহুকুলে পতিকুলে যে করিল ধাতা সে জন পরের বল সে কি জানে আন রস কহিতে হিয়ায় হয় বাথা। কারে সে করিব রোষ "সকল আমার দোষ ২০ मिहे प्राप्त करन এउ पिति। না চাহ কিরিয়া নাথ সকল তোমার হাত ছাড় নাথ মথুৱা-গমনে ॥ এত বলি বিনোদিনী ধ্লারে ধ্সর ধনী

আজরণ দূরেতে ফেলিয়া।

বিকল বরজ-ধনী মুখে না নিঃগরে বাণী চণ্ডীদাস মুরছি লোটায়া

- १। আগম...অগম্য, অগাধ।
- २०। यथूताभगत निवृष्ठ रुखा

404

য় তি । যত ক্ষণ নয়নে চাও ও রথ দেখিতে পাও দেখ দাক উড়নি স্থানার। ভবে সে তৈত্ত আছে সারি সারি গোপীমানে गरतं छनि भगन উछत्। गगरन छेरेरम पुलि यग तथ हत्ल छानि ए ঘোড়ার শবদ উত্তরোল। যবে না দেখল দাজ পড়ল ধরণীমাঝ আর দশা আসি ভেল ভোর ॥ পডিয়া সকল জনে ঠারে করে অসুমানে প্রিয়া মাথুর দুরদেশে। ব্ধিয়া রুমণীগণ এমন জানয়ে কোন পীরিভি ঢাড়ল নব লেশে। স্বপনে জানিথ যদি সে হেন গুণের নির্ধ लुकांरेणु अन्य-भाषाद्य । আসিয়া অক্রুর রায় আয়ল শমন প্রায় ১৫ প্রবেশিলা গোকুল নগরে॥ হরি লয়ে গেল দুর ভার মনোরণ প্র

চন্দ্রীদাস পড়ি কাঁদে থিয়া শ্বির নাছি বাদ্ধে রাধা সে পড়িয়া আছে ভূমে॥ । উত্তর এলদাবদের উত্তর মধুরায়।

भश्रत!-नागत्री श्रुगावान ।

গোকুল হইল বন সম॥

পাইয়া গোলোক হরি

১৯। दर्शत्रव...दितिद्वः

হেরিৰ নয়ান ভরি

440

न्द्रेनामाम् ।

কেহ আউদত্ কেশ নাহি বান্ধে मथुत्रा शास्त्राट्ड मन। কেহ অচেডন• পড়িয়া আছেন তেজি আভরণ**গণ**॥ (कर म धृनाद्य व्यक्र लागिरेया ० आहरत्र मृष्ट्उ दरा। বেষ্ণ ওনল কেহ নব-রামা वाँभीव गार्निए (ध्या ॥ কোন নবরামা শ্রামরূপ হেরি **इन्द्रिक्षण्डल**। কোন নবরামা নৰ অভিসার कत्रत्र मत्नत्र इत्न ॥ দেখি ঘন ঘন এ সব প্রলাপ গেয়ান নাহিক হয়। কেণে অচেতন কেণে সচেত্ৰন ১৫ **क्लि** खिमग्रा कग्र ॥ কেহ বলে সখি পুন সে গোকুলে (गाविन्म बाहेल किति। পশিতে কাহার এ কথা ভাবণে উঠ া চেতন ধরি॥ নাহিক গেয়ান স্বপন সমান ঐছন প্রলাপ হয়। কান্দিতে কান্দিতে রাধা পাশে গিয়া **ह** छीमांग किছू कंद्र ॥

1-)। যেদ বাঁশীর পান ওনিরাছে মনে করিছ; . জত চুলিদ। 407

महेमाश्रात्र ।

সোনার পুথলি व्यवनी खेशदब বেন খন গড়ি বার। নিখাস হতালে নাদার মুকুডা र्हिलाइ जुलिएइ वांग्र ॥ তা দেখি গোপিনী गरन अमूमानि । त्रांश त्मत्न चार्छ किया। হেন মনে ছিল 'त्रांश कि वाँहिव এছেন বিরহ পেয়া॥ উঠ উঠ ধনি त्रांधा विटनांपिनि এত অগেয়ান কেনে। যে দেখি তোমার চরিত বেভার **পরাণ হারাবে মেনে** ॥ মর্ম্মদখী ছিল এড বলি এক ধরিয়া তুলিল রাধা। ধরিল তুলিয়া ১৫ **गू(४° ज**न मिश्रा (मथन जकन वांधा॥ टोनिक त्मशान नम्रत्य खानि সকল আন্ধার হেন। चरतत्र क्षेत्रोभ स्वनक निष्ठारत व्यक्तकात रुदत्त (यन ॥ গোকুল উজর আছিল তখন এখন কানন ভেল। চণ্ডীদাস কৰে অক্র আছিল কাসু হরে নিয়ে গেল। >>। (वणात्र.ं.व)वहात्र[®]।

> ব্যনী। গোকুল ডেজল নাকি কান্। মাথুর করল পয়ান॥

े अ गिष् कानम निषान। नवं करन रहन भन्नान ॥ वर पानि भनिन प्रकृतः। ¢ তবহি পড়ল মডি দুর 🕽 ভাকর ভাশ খ্রীয়াসে। त्म कन दिन देनबाट्य n (का अब क्यून विविति। সে হউ ইহ পাতকিনী॥ 30 कर कर जखर कारि। কো কৰে মরম হামারি॥ কুঞ্চ নিকুঞ্চ ভেল শৃত্য। गृह दिन इहेल अब्रग् ॥ भूतवांनी नग्नत्व ना त्मि । 30 वांत्रि मधन (मा जांवि॥ हेर वड़ प्रथम (जन। প্ৰাণ ভাষা সঙ্গে চলি গেল ॥ চণ্ডীদাস পড়িয়া বেধিত। क्लाक देश्तक धति विखा। २०

ँ । সৰ জনে ..সৰ জনের। १। বাহার জাশা প্রত্যাশ। করি।

विचित्र...विश्व।

>>। वाति...वौर्य क्तिन।

>१। मण्यन...मध, कहे।

•83 •**83** |

ব্যেমুগণ সৰ করি হাখা রব
মণুরা মুখেতে ধার।
ব্যেমুর বাছুরি বিরোগ পাইরা
সেহ স্থুধ নাহি খার॥
পুদ্ধ উচ্চ করি মারে পরিহরি

मधुना भगन मिर्छ।

যথা সে রসিক মাগরতেশখর সে দিক গমন ভাগে॥

খগ মৃগগণ বেদন বেদন
আহার নাহিক খায় ।
ভালে বসি খগ ' খ্যাম খ্যাম করি
রাভি দিন নাম লয় ॥
মৃগগণ অভি 'চেয়ে আছে কভি

নয়নে বহুয়ে লোর। কুফের বিরহে পেল্লে অভি মোহে ১৫ এ সব হইলা ভোর॥

সেই পিকু রবে এ পঞ্চ শ্বদে শুনিতে আনন্দ বড়ি।

সে সৰ শবদ নাছিক আপদ সে ভাল চলল ছাড়ি॥

জমর জমরী সদাই শুঞ্জরি সে নাহি শবদ করে।

চকোর ডাত্কী চাতক চাতকী ভাহা না শবদ বলে ॥

হংস হংসিনী শুক শারী গণি ২৫ ভাহা না শবদ একে।

নিশবদ হই নিরন্তর রোই না জানি কোথায় থাকে॥

পুরবাসী যত অঝর নয়ন

যুবা বৃদ্ধ বাল যও। ৩০ ক্তে আকুল বিয়োগ সকল

শোকেতে আকুল বিয়োগ সকল ভাহা বা কহিব কভ।।

চণ্ডীদাস-বাণী শুন বিনোদিনি ধৈরজ করহ মন। ক্লেক্বাসি চিতে দেখহ বেকতে ৩৫

ছেন্স বাসি চিতে দেখছ বেৰ মিলব সে রস-ধন॥

00

•8₹ **3**1

মিলি রাধা পাশে সব স্থী আসি ব্যুতক বিরহ পেয়ে। সম্বোধ পাইয়া রামা নবরামা रेवर्ठन किल्मात्री नरत्र॥ রাধারে ভূষিয়া . সম্বোধ করিয়া বৈঠল সখীর মেলা। কেহ বলে শুন আমার বচন ওহে বৃষদ্ধানু-বালা॥ হেন মনে বাসি হকু কুলে হাসি চল মধুপুর গিয়া। দেখিয়ে নয়নে ८म ठाँम-वमन তবে সে জুড়াবে হিরা॥ এক ভিল যারে যদি নাহি দেখি শত যুগ হেন মানি। সাঁখির পলকে शंबारे डिल्लारक ३० **रश्नक (य जन जानि ॥** ভিলেক না জীয়ে वकु ना तमिश्राय আর কি পরাণ রয়। রাধার বিরহ বচন শুনিয়া मीन छ्छीमांग क्य ॥ २०

680

१५।।

কেন বা লইয়া আইলা মোরে।
দেখি নবখন যুবঙী-মোছন
নয়ন চকোর সোস(?) মরে॥
নয়নে নয়নে ভরি রূপ পিতে মনে করি
হেন বেলে চালাইল রথ।
দেখিতে না পায় রূপ উঠিল বিরহ কূপ
এই সে হইল অমুরধ ৪

সে জন কঠিন বড় এবে সে জানল দঢ় বড়ই কঠিন ভার হিয়া। মধুরা নগর মুখে লইয়া চলল স্থা ১০ রম্পীর হিয়ার দিয়া ব্যথা ॥ ধন্ত ভার মাভা পিডা কি আর কহিব কথা जकृत विद्या श्रेन नाम। প্রথম আঁখর সার দেখাইলে অস্তকাল শেষের জাঁখর সেক ধাম ॥ (?) কে বলে অক্ৰুৱ সেহ বড়ই কঠিন দেহ গৃহ ভাঙ্গাইয়া সেই ৰনা। মথুরা নাগরীগণে त्म मव रवन मत्न प्रिन त्याद्य वित्रह- त्वप्रमा ॥ এ সব কারণ স্বরে বিষম নিশাস ছাড়ে ২০ काँए यक आहीत-तमनी। চণ্ডীদাস কহে ভাল আমরা ভুরিতে চল (मिथ गिया भारतारक व मि ॥

488

नदेनात्रात्रमः

শ্যাম-মুখ ছেব্লি আকাশের বিধু মলিন হইরাছিল। এখন পূর্ণ কলা হয়ে উদয় হউক এখন সে চাঁদ গেল। কাসুর সে ছটি নয়ান হেরিয়া **४क्षन जाहिल कछि।** এখন আসিয়া किक़क नािका মাপুর পরাণপতি 🛭 পিয়ার নাসার গঠন দেখিয়া थराक्त शिक्ति पुत्र। এখন जानाम পর্ম সামকে দেখা দেও অমুকৃল।

কাম্বুর অধর স্করঙ্গ দেখিয়া আর না হেরিব সে চাঁদু-বদন বান্ধলি মলিন ছিল। দীন চণ্ডীদাস ভণে 🖟 क्रक श्रुमत ३० আপনার রঙ্গ এবে শুভদশা ভেন॥ দশন হেরিয়া কুন্দ সে কুশুম कलिका नाहिक हरत्र। লক্ষিত হইয়া বিকশিত দশা েরাদন গুমান সব পরিহরি षीन **ठ**शीषांत्र करत्र ॥ 30 নিজ নিজ গৃহে চলে। 8। (न हान... में कुक्क हसा বিরহ-বেদনী যভেক গোপিনী ৮। প্রাণপতি মধুরা গিয়াছেন। রাধারে কিছুই বলে। >०। ऋतक...ऋसत वर्ग। বিরহ-সমূদ্রে নাহিতে আমরা বিহি সে করল কাজ। 98€ গুরু পরিজন করিবে তাড়ন পাইৰ অনেক লাজ॥ শ্রামের জলদ রূপ হেরি হেরি তবে বিধি যদি অসুকূল হয়ে জনদ গগনে যত। মিলব রসের পিয়া। লাজে লুকাইয়া রহল সকল এখন চেডন ধরহ যভন রহল শত হি শত।। এ বুকে পাষাণ দিয়া।। এখন'আনন্দে বিকশিত হ'উ এই অনুমান করে গোপীগণ আর কি ভাহার ভয়ে। निक निक गुरु हरल। দেখিয়া তথন বাহুর গঠন वित्रम-वत्री (म ठाँप-वपनी ५० করি গেল অভিশংয়।। मधीरत किंदूरे वरत ॥ এবে যত জনে করুক সঘনে পাসরিতে নারি খাম রূপখানি আপন আপন কেলি। मनारे हियाद्य बार्ग। रुष्त्र निक्क्ष ছরি নিদারুণ क्त्रदग्न (यमन হিয়া আনচান মোহে निमाक्त एडनि॥ কৃহিব কাহার আগে॥ আর না হেরিব আর না শুনিব চণ্ডীদাস কর ·**७**न व्रमयहे -(म नव मधूत ध्वनि। আমি সে মধুরা বাব। ना बानि चर्गान (डिविंच रंग करन ३४ স্থাম কৰেবণ সৰ বিবরণ মোরা कि এমন কানি।। ভোষারে জাসিয়া ক্য 🖞 बाकून कड़न (शाकून नकन ভে**জ**ল গোপিনীগণে i

ক্ষ-বলরামের মথুরাগমন। শীক্ষা। রণ আরোহণ কৃষ্ণ বলরাম চলয়ে অক্র সাথে। गिन्न। वाँगी तदव পাষাণ দ্রবয়ে এই রঙ্গে পথে॥ নানা স্থ্যাসিত বিচিত্ৰ মোদক ৫ মিষ্টান্ন শাকরি চিনি। ছেনা চাঁপা কলা ছাঁচি সীভামিশ্রী ছগ্ধ আবর্ত্তন ঘনি॥ স্নান আচরিল ভাই হুই জনে সেই সে যমুনা-নীরে। এ সব ভোজন করি হুই জন উঠিল রথের পরে॥ কপ্র তামূল বদনে দেওল বেশ বনাওল ভায়। বেশ করে অতি এই ছই মুরতি ১৫ করল অক্রুর রায়॥ তাহাকে অধিক বেশ বনাওলি **४त्रेगी श्रृलक मानि**। গগন হইতে দেবগণ মোছে পা হালের যত ফণী। তিন লোক দেখি পুলক মানিল মোহিত অক্র রায়। অভি পুলকিভে कामिए कामिए ধরিয়া পড়ল পায়।। শুনহ এথাই ২৫ · কহে দুই ভাই করহ সিনান সেবা।

স্নান আচ্রিয়া যাইৰ চলিয়া

পুজহ আপন দেবা 🗓

श्रमिया व्यक्त वहन मधुव প্রভুর নারতি পেরা। . ৩. নামি কুতৃহলে যমুনার জলে নামি হর্ষিত হয়া॥ অক্রে ডুবিলা ব্দার ভিতরে त्रान कृष्ण छूटे (एथि। বড় **অদভূত জ**লের ভিতর ৩৫ लिश्न (कमन लिश्र বিশ্মিত মানল " আপন অন্তরে উঠল मखक जूलि। যমুনার কুলে রথের উপরে **(मर्थ द्राम वनमानी** ॥ পুনরপি ডুবি জলের ভিতরে ভৰা দেখি ছটি ভাই। বিশ্মিত হইয়া তুরিতে উঠিয়া চরণে পড়ল যাই॥ তুমি'দেব হরি ইবে সে জানল ৪৫ মুই কি জানব ভোমা। চণ্ডীদাস বলে বৰ অবহেলে বরিখে কতই প্রেমা॥ शिक्र।।

পড়িয়ে চরণে অন্ত্রুর সঘনে
করয়ে জনেক স্তাতি।
তুমি হিতকারী , তুমি সে প্রলয়
তুমি সে সবার গতি॥
তুমি চরাচর তুমি দিবাকর ৫
আকাশমণ্ডল ছায়া।
তুমি সনাতন পরম কারণ
তুমি পূর্ণ পূর্ণ কায়া॥

	'বে জন না পায়ে		विधि पिन्नार्ह्म	. ্যুগল নয়ন ২৫
	ণের রীভি।		ইহাতে ৫	দখিব কত।
	আমি কি জানিব		তবে সে দেখিপু	নয়ান ভরিয়া
অতি হই য	ঢ়েমতি ॥			নয়ান হত॥
-			আপনা আপনি	মুপুরা-নাগরী
			অ ভিমান	करत्र अछि। ७०
	88 .		ठछीमांग कटह	কলার অংশ
	4 1	•	তাহার রূ পের কতি ॥	
प्रकार वार्य .	অক্র গোহারি			William Calabria
করল নিজ	•			
	শ্ৰীষক্ত স্পৰিয়া			\((0)
স্থাধের নাহি				
্ৰাপঙ্গ শরশে	প্রেমের অবশে	Œ	প্ৰেম যুবতী	
উঠল স্বক্রু				রিছে রয়া এক ভিতে।
	যে কিছু আছিল			ভাবের রসে ভোরা
পাওল আন			রূপ নির্বিয়ে	প্রেম ঝলকে
	মথুরার মুখে			রসের ভারা চিতে॥ ৫
	পার।		শ্রামল বরণ	তমু সে রতন
. •	প্রবেশিল গিয়ে		अन्य (यन इंड	রূপে খালো করে
রুগের আন				যেমন মদন ভাসু।
শিঙ্গা মুরলীর			হু ক্রপে আলা	কিবা বরণ কালা
মপুরা নগর			বরজ পথটি	আলা করে ১০
	বাহির হইয়া	24		কিবা রদের তথু।
	क्लमि ॥		যত নাগরী জনে	
মপুরা-নাগরী			भटनत्र भटन	হুধা পিয়ে
८ एटथ जोम इ			4644 464	হ্ব। গেরে পেয়ে রদের কামু।
এত ক্ষণে কেহ			- 3-1	
নিমিখ নাহি	क थटत ॥	२०	ठ आमारम कंग्र	(इन मदन लग्नः) ১৫
	কি রূপমাধুরী	•	ভ্রেম নাগরা	गटन करत्र
লখিতে নাহি			•	প্রেমের সিজু॥
ट्टन म्टन कति			-	*
অঙ্গে অঙ্গে	यमि भटत्र ॥			

2 6 %	,		চণ্ডীদাস			
	, 40	•		সব ছাড়িয়া	ব্ৰ ন্দে র নারী	ŧ
	রাকবিকয়।			দিয়াছে জা	ভ কুল ।	
٠.	এমন রূপের ছট	11		বিনোদ নাগর	রদের সাগর	
	ভুৰনমোহন			মঞাল্ছে প্ৰ		
	বেমনু মেছের খ	টা ॥		হেন আমরা	यदन कति	
	বেমনু মেছের খ বন-ফুলে	'চুড়া বাঁধে		পরিহরি ল	ो क ।	٥.
	किवा ছटन नां हे	1	¢	হেমের মালা	করে পরি	•
	সোনার খোপে	কদে বাঁধে		রাখি হিয়ার	। মাঝ ॥	
	বেন মুকুতার হা	हे ॥			, বলে শুন	
	মণি মাণিকে	গাঁথা মালা		কহিলে ভা		
	তায় দিয়াছে বেং	5 1 1		চক্ষে ভরা	এই য়ে নাগর	30
	ময়ুর-পাখা	উড়ে বায়ে	> 0	রাখিব মনে		
	কিন্দ্ৰণ-মাথা চূড়া	1 11			কহে ভাল	
	কোন যুবঙী	বাঁধে চূড়া			ला मिमि।	
	সেই সে আপন	मृत्न ।		वित्रल (भरल	কহিব ভালে	
	হাসির ঠাটে	वग		কাল স্বাদে	গোকুল দি (?) ॥	२०
	मध् अदत्र घटन ॥			এমন করে	থাকি সঘন	
	গলায় মালা			ছাড়ি গৃহের	কাজ।	
	হাতে মোহন বাঁ			হিয়ার ভিতর	রাখি সদাই	
	मनन मिथ			এই সে নাগ	াররাজ ॥	
	भावादित कला १	र्भि ॥		চণ্ডীদাস	কহিছে শুন	ર¢
	প্রেম নাগরীর	কথা শুনে	२०	এই সে ভা	লই মানি।	
	कट्ट हछीमात्र।			প্রেমে ভোমরা	বান্ধ তারে	
	ও রূপ দেখি			স্থা রসের	ଏ नि ॥	
	চলে যাবে ৰাস					
	Open company				•	
•	. મારે			ত ৩০০ নটনারারণ।		
	রাজ্বিকর					
	এমন বেশে			মধুরা নাগরী		
	নিয়ে তাসি ভবে ক্রেম্বর বিজ্ঞ	• •		লাগল রসে		
	রূপের ঠাটে			কি জানি কি করে		
	সদাই কদমভূলে	II		ছাড়িয়া আ	ান গেহা 🛊	

্ৰভ্ৰন দেখিয়া থাকি। ন**হি শ্বভন্তর** পর্বশ হয়া থাকিয়ে এ বাঁধা পাখী॥ গৃহপতি মোর বড় খরতর কথায়ে বাতনা দেই। ১০ मरनत मत्रम व्यापन द्वपन শুন গো মরম-সই॥ . শ্বতি সে মগন যভ সধীগণ দেখিয়ে দোঁহার রূপ। नरती छेठेन ১৫ অভি সে.রসের উঠল রসের কুপ॥ কৃষ্ণ বলরাম দেখিয়া তুজন ধরিতে না পারে হিয়া। চণ্ডীদাস কৰে ও রূপ দেখিতে कूल भील यांदर निया॥ २० यश्हे। হেদে লো মরম-সই। ও রূপ দেখিতে হেন লয় চিতে ৰয়ান তাকিয়া রই॥ এ বেশে সে দেশে ভেঁই সে ভুলল যতেক বরজ-নারী। সব ভেয়াগিয়া গুরু গরবিভ দেখয়ে নয়ন ভরি॥ কিবা সে বিনোদ * চূড়ার টালনি উড়িছে ময়ুর-পাখা। নাৰা ফুলদাস অভি অনুপাম ১০ रेख्यस्य मिट्ड मिथा ॥

নয়ন বন্ধিষে চাহিলে যা পানে

मित्र देशवास्त्र भारत ।

কোন কুলবভী সে.কোন যুবভী कूल नरत योग्न घरत्र॥ হাসির মিশানে কত স্থা বারে ভাহাতে বাঁশীর গীত। হাসিতে কি জীয়ে সঘর রমণী চেতন ধরিব চিত॥ এই অসুমান মধুরা নাগরী ২০ মোহিত হইল তায়। চণ্ডীদাস বলে শুনহ ভরুণি ভত্ত কমল-পায়॥ कानड़ा। রূপ দেখি যত মণুরা-নাগরী মোহিত হইল ভারা। তাথে প্রেমরসে কুলের কামিনী চৈত্ত নাহিক কারা॥ (क दहन ७ ज़भ नित्रमान देकल ए কত হ্ৰখা দিয়া রাশি। গড়ল হরবে এমনি পরশে এমতি গতিকে বাসি॥ ধ্যা সে রসিয়া এমন কালিয়া नित्रभाग केम (पर्चा। ১० গঠন স্থঠন করি একমন नग्रन थक्षन (त्रर्।॥ উ্ঘ রাভাপল চৌরস কপাল मनन क्रमन किन्। **ए चित्रा क्**निया **क्टल**त खत्रा ३० উড़िय़ा वृतिष्ट वित ॥ বাহু সে মুণাল অভি সে বিশাল

रुपरम क्ष्मन क्षा।

করীর বদন করে যেই জন
নিভস্থ ক্ষীণ হি দক্ষ॥ ২০
বেন বা হিঙ্গুল দলিয়া অঞ্চন
যাবক মিশায়ে তায়।
এমন না শুনি, চরণ ছখানি
দীন চশীদাস গায়॥

464

शिक्षा।

ज्ञाश (मिथि हिया (कमन करता। না দেখিয়া ছিমু ভাল দেখি পরমাদ ভেল (कन वा लहेग्रा आहेल त्मादत ॥ হুদয়ে পশিল আসি এ ছেন রূপের রাশি অবলার পরাণ তরল। পাছে আছে এক দোষ জানি কবে অনিরোষ গুরু জন জানি করে বল। শুনহ মরম-প্রিয়া এ হেন রসিক লয়া कतिथु तरमत्र नव रणश। वात्र किंवा প্রয়োজন ১० অসুল্য রতন ধন গুরু জন পরিজন গেহা॥ কোন সধী বলে শুন এত অভিমান কেন (य कक़ (न कक़ शुक्रकान। শ্যাম সে পরশমণি যতনে ভজিব ধনী মোর মনে এই সে ভালই। এই মত সে নাগরী হাসিয়া আনন্দ বড়ি

চণ্ডীদাস তছু গুণ গাই॥

বড়ারি। রথ চড়ি যান ্করয়ে গমন-कृषः रमधत छ्रे । বাজার চাতর প্রবেশে নগর শিক্ষা বেণু উত্তরোই॥ कू तूका मानिनी । হেনক. সময় রাজপথে চলি যায়। শুন লো স্থন্দরি চন্দন কটোরি হরে মন হরে তায়॥ গাঁথিয়া স্থ্ৰম স্থান্ধি কুস্থম লইছ কাহার তরে। দোঁহার সদন কুবুজা কছেন কাতর হইয়া বলে ॥ আমি সে মালিনী কংসের যোগানি नई याई कःम उत्त । এই গন্ধমালা দেহ মোর গলে ১৫ সরসে কানাই বলে॥ শুনিয়া স্থন্দরী করল চাতুরী নুপতি যে কবে মোরে। নিজক গন্ধক निष्ट्रन क्ष्मित्री मिट्न (मांश्रेत **উ**द्र ॥ জানিল এ নতে মানুষ আকার এ ছুই দেবের শক্তি। পরশ হইয়া क्रूबा ऋन्मती পাওল আনন্দ মূর্ত্তি॥ বিলক্ষণ রামা 'যেন কাঁচা সোনা ২৫ उर्वनी किएन वा लिथि। গোবিন্দ পরশে ভাহে মন ভোষে চণ্ডীদাস তাহে স্থী॥ ৪। উভরোই...উচ্চখরে বাশিতেছে। **३৮। ताका (र जामारक छित्रकात कतिरायन)**.

664

. .

কুবুজা হৃন্দরী অতি মনোহারী দেখিল আপন অস। ত্রিভঙ্গ আছিল মোহিনী হইল এ বড়ি রসের রঙ্গ ॥ মোহিত इरेन नभन्न मकन ৫ এ কি অদস্ত শুনি। ত্রিভঙ্গ বে ছিল স্থন্দরী হইল এমন নাহিক জানি॥ কুবুজা দেখিতে নগর হইতে দেখিতে আইল তারা। निम्ठय स्थिल नग्रदन रम्भिल এই সে কেমন ধারা॥ কেহ বলে ভাই রথে হুই ভাই माथल ठन्मन ठान्म। মালা বিলক্ষণ দেখিল সঘন ১৫ তু ভাই হাসল মন্দ॥ হেনক সময় ই ইহার পরশে কুজ গেল কতি দূরে। অভি বিলক্ষণ দেখিল নয়ন এ কথা কছিব কারে॥ ২০ এ নহে মাসুৰ জানিল স্বরূপ কেবল জগৎপতি। ব্রিভঙ্গ শরীর হইল ফুন্দর বুৰল কাজের গভি u চণ্ডীদাস বলে যাহার নামেতে ২৫ এ তিন ভুবন ছোৰে। এই ভাগ্যবভী পেয়ে প্রাণপতি

কুবুজা কছেন চরণে পড়িয়া .
তুমি সে পরাণ-পতি।
মূই কি জানিব ডোমার শক্তি
অবলা যুবতী মতি॥
ক্ষেত্র গোলিক ক্ষেত্র প্রাধ্য ক

ক্ৰেন গোবিন্দ কুবুজা প্রশি ৫ তুমি সে উত্তম রামা।
তোমার ভক্তি স্বভাব শক্তি

দেখিল কটাক্ষ প্রেমা॥ পড়িয়া ভূতলে কান্দি কিছু বলে

মোর অপরাধ ক্ষেতা।
মূই মূঢ় জ্ঞাতি করিল যুবতী
ভিলে কত হই ভূম॥

তুমি সনাতন পরম কারণ দেবের দেবতা তুমি।

কেনে হই মুই অধম তুর্গতি ১৫ কিসে বা আমারে গণি॥ চঞীদাস বলে তোমার ভকতি

নিবিড়ু অস্তরে লেহা। তথির কারণে পরশ পাইয়া বিলক্ষণ হল দেহা॥

রজকের বস্ত্র-হরণ।

660

धानना ।

হেনক সময় এক সে রজক
° লইয়া বসন করে।
সে বায়ে চলিয়া রাজপুণ দিয়া
কংসের সারুতি ধরে॥

91

পাইল বাহার স্পর্ণে॥

কুষ্ণ বলন্ত্ৰাম পুছিল কারণ ৫ কাহার বসন এ। কহিছে রজক ভাহার উত্তর তুমি সে বটহ কে ?॥ তোমাকে ক**হিলে** কিবা **জা**নি হয়ে क्रफंद्र (योगानी व्यक्ति। তাহার বসন কাচিয়া সখন কি আর পুছহ তুমি॥ কানাই কহেন উত্তম বসন দেহ পরি হুই ভাই। কোপে কৰে ধোৰা তুমি বট কেবা ১৫ রাজার বসন এই।। পরমাদ হব ' এ কথা শুনিয়া ভাড়ন করিব রাজা। চণ্ডীদাস বলে ও নব নাগর তাহার রূপের ধ্বজা॥ २० 663 যতি : এ কথা শুনিয়া কুষ্ণ বলরাম नहेन बमन काफ़ि। পরিলা বসন ভাই হুই জন তাহে মল্লবেশ ধরি॥

মৃত্তিকা ভূষণ

বান্ধিল সঘন

কাড়িয়া বসন

নিবিড বসন

রাঙ্গা ধূলা মাখি গায়।

নবীন মুঞ্জরী . পরি ছটি ভাই

দেখিয়া মূরতি **অমুপম বেশ**

সমান দোঁহার বেশ। ৫ ১০

় পীত ধড়া দিল ভায়॥

. ভলল মথবা / দখ

क्षा करम त्राका कृष्य वलताम আসি ধরে মলবেশ। রজক ৰধিয়া বসন কাড়িয়া' ১৫ नहेन (न स्वीरक्ण ॥ ক্রোধে কংস রায় ধরণ না যায় ডাকিল কুবল হাতী। শুণ্ডে জড়াইয়া मात्र हुई करन এই সে বাড়িয়ে রীতি ॥ চণ্ডীদাস দেখি 'হাসিতে লাগিল শুনিরা কংসের কথা। যে জন গোলোক সম্পদ ভা সনে কিবা হঠ কর হেথা॥

> २०२ १

কুৰল্ম হাতী ধান্ন বেগে অতি মারিতে এ ছই ভাই। গরজি গরজি দশন কিরজি ছু ভাই চিরিতে বায়॥ লটাপটি শুণ্ডে বেন বাহদণ্ডে ৫ প্রচণ্ড প্রতাপভরে। গিয়া লে কামুর ধরল ছু বাছ **অভি সে নিবিড় সরে ॥** ধরি করিশুণ্ড প্রভাই প্রচণ্ড উপারি দশন ছুই। কুবলয় পায় 🕴 অভি অসুশয় म्मन এ छूरे लहे॥ দেখিল পড়ল কুবলয়-বল কংসের হইল ভয়। দ্বির নাহি মালে ভাই ছুই জনে ১৫

करत्राक प्रभन नम् ॥

হেনক সময়ে চাণ্র মৃষ্টিক
ভাকিয়া আনিল কংস।
ভানরা ছুজনে বল পরিক্রমে
কৃষ্ণ বলরামে ধ্বংস ॥ ২০
চাণ্র মৃষ্টিক আসি দেখা দিল
কৃষ্ণ বলরাম পাশে।
বাজিল বচন বোলা চারি ঘন (?)
ক্রেন এ চণ্ডীদাসে॥

द्रहरे। ঢাণুর মৃষ্টিক তুই জন আসি . मिलल (माँशांत्र भार्म। হাতাহাতি তথি মুটকা মুঠকি মহা ঘোর খেলা আসে॥ মহা মল্লযুদ্ধ वाकिन प्रकरन व দেখিল যতেক পুর। মুষ্টিক অন্থর ধরিয়া চাণুর ভার মাধা কৈল চুর॥ বধিয়া অহুর প্রচন্ত প্রচুর গেলা ৰখা কংস রায়। বোর অতিভর • কৃষ্ণ হলধর বা**জিল তুজনে তা**য়॥ কৃষ্ণ হাতে ভালি ধরি তার চুলি " কংসেরে বধিল হরি। ছত্ৰ দণ্ড দিয়া উগ্রসেন ব্যানি ১৫ . **স্প্**রিতি রাজা করি'॥

বস্থদেব পিভা দৈবকী সৈ মাভা
উদ্ধার করিলা হরি।

* * * * * *
গৃহমাঝে গিয়া মাভা পিভা লয়া ২০
অনেক করিলা স্তুভি।
চণ্ডীদাস বলে বস্থদেব কোলে

रेमवकी वद्यस्तरवत्र कक्ष्मा।

লইলা গোলোকপতি॥

यहरें। এত দিন ছিলে কোথা। ছাড়িয়া জননী বাছা যাত্মণি হিয়ায়ে মারিয়ে ব্যথা॥ ও মোর বাছনি চাঁদ-মুখখানি দেখিয়ে নয়ান ভরি। তুষ্ট কংস লাগি ভোমা হেন পুজে ভেৰুল গোকুল পুরী॥ শোকেতে অকুল পরাণ বিকল এই দেখ তমু সারা। যেন আঁখে আসি - তারা ছটি বসি ১০ দেখিল উজোর পারা॥ পরাণ-প্রদীপ কেবল লোচন এত দিন ছিলে কোণা। **क्षारम यहभाग के की है नवकी** বদনে দেওল তোমা'॥ . '১৫ ৰহুদেৰ-হুত লীলা ব্দস্ত " অপার মহিমা যার। विकक्ष यङ কুলের আখ্যান

ক্ষিতে আছয়ে তার॥

এ চূড়া করণ ় বিবিধ বিধান ২•
আয়োজন করে ছাতি।
চণ্ডীদাস কহে নন্দের বিদায়
আগে সে করহ ইতি॥

नक-विनाश।

496 李春山 |

এ কথা পরোকে যখন শুনল শ্রবণে পশিল আসি। गत्मन्त्र नन्मन পাইল বেদন **बीतूरक ठिकिल वाँगी**॥ চাদ-মুখ মহী-তলে নির্থিয়া ৫ ভাবিতে লাগিল মনে। কেমনে কহিব नत्मन्न विनाग्न চাহি হলধর পানে॥ জনেক করিল বিলাস বৈভব धका (म य(भामा गाँहै। যার এক কলা গুছের কথন পুঞ্জিয়া পাইতে নাই॥ কত কত আছে এ মহীসগুলে আছে অনেকের মাতা। এমন না শুনি ना तमि ना खिन ३० তাহে নন্দ ঘোষ পিতা॥ এ হেন ঘোষেরে বিদায় করিতে মোর মনে নাহি লয়। विषाय कब्रिटं यत्व मत्न क्रि . পরাণ-নাহিক রয়॥ ২০ চণ্ডীদাস কছে : অতি বড় মোছে লোৱে ছল ছল আঁথি। নন্দের নন্দন্ পাইয়া বেদন

वड़ भव्याम (पश्चि॥ "

करण जैद्रहो।

শুন হলধর ভাই। কেমন করিয়া নদের বিদায় কহিব কহ ত ভাই॥ এ কথা শুনিরা মোহিত হইয়া 'রোদন যশোদা-হ্রত। নিখাস এড়ই হলধর পাদে তরল করল চিত। কি কহিব কথা নন্দ হেন পিতা যার ক্লেহে নাহি সীমা। বহু স্থখ অতি কি তার পীরিতি ১০ যশোমতী অতি সমা॥ যশোদার ক্লেহ কি করিব এহ এ দেহ পুরিত স্থবে। এ জন বিদায় কেমনে করব ঁনালয় আমার মুখে॥ , ১৫ শুন দামোদর ক্ষে হলধ্র এই সে উপায় মানি। পশ্চাতে গোকুল গমন করিব আগেতে চলহ তুমি॥ এ কথা রচিল 🐪 কুফ হলধর ২০ আগেতে হু ভাই গিয়া। দণ্ডাই তু জনে নন্দ মুখ পানে গদ গদ হেয়া হিয়া॥ বিমুখ হইয়া বছে আনপানে গোকুল ঈশর হরি। ২৫

চণ্ডীদাস বলে মোহিত হইয়া

১৮-১৯। सम्राक मामना अहे कथा वनिव,--

"ভূষি আগে চল, আৰৱা গৰে বাইব।"

আন সে কহিতে নারি॥

ञ्हेॱ। ক্তে বলরাম এক নিবেদন रान नन्म (पांच त्रांग्र। কত দিন মোরা বহিলা কহিলা এ वस् रिवकी माग्र॥ এ কথা শুনিতে বলরাম-মুখে ৫ নন্দের বেদনা অতি। বেন আচম্বিতে • গাসি হিয়াচ্ছেদে मत्राम वाजिल उथि॥ নহে নিবারণ নিঠুর বচন প্রবণে শুনল যবে। বাণাটি পাইয়া মৃচ্ছিত হইয়া ধরণী পড়ল তবে ॥ এই সে ভোমার মনেতে আছিল রহিতে মথুরাপুরে। রাধিয়া এখানে হিয়ার পুথলি ১৫ • কেমনে যাইব ঘরে॥ কিবা লয়া আতু কিবা লয়া যাব কিবা গে বলিব লোকে। যশোদা রোহিণী গোপের রমণী কি তারা বলিব মোকে॥ চণ্ডীদাস বলে শুন নন্দ রায় কি আর দেখহ ভূমি। করহ সাঞ্চন শকট আটন ভাল মতে জানি আমি॥ CONTE ! নন্দের করুণ শুনি। পাষাণ গলিভ দেখই বেকত দক্তের মদের স্থান 🏢 🏻 · क्रूरप्र (१) क्रूलित धनों॥

कृत्म गिष् वाग्र कात्मु नम् ताग्र সন্বিত নাহিক চিতে। বেমন পাটল टोिं कि वार्गन দিক দিশা নাহি তাথে॥ শুন হলধর দেব দামোদর তুমি গোলোকের পতি। মানুষ গেয়ান করেছিল মন ১০ এবে সে জানল রীতি॥ পরোকে শুনেছি যথন জ্বিল (भवकी-कठेन হতে। চতুৰ্ভু হয়া ক্লোভ দেখাইয়া वृक्षिए जननी চिट्छ ॥ পুন মায়া ধরি দ্বিভুজ পদারি রাখিল গোকুলপুরে। রাখি কুতৃহলে যশোদার কোলে **बञ्चरमव हत्म शूर्त्र** ॥ স্থের হাতাশে ২০ পুত্ৰসেহবশে লালন পালন করে। চণ্ডীদাস বলে অপার মহিমা কে ইহা বুঝিতে পারে॥ 663 नड़ाजि। যখন এ তথ্ জানল জগৎপতি। অন গুণ আনি গুণে পরাইতে এ গুণ বিখাতি রীতি॥ এক দশ গুণ (यथात भक्त श्वान। সেখানে উঠিল , আখ্যান খকতি

এ তিন প্রকার পুন মান রাগ চারি চারি করে গুণি। ১০ প্ৰকাশি কায়াতে যখন এ ভত্ত मृद्य शिल उत्रथानि ॥ সে যে ছিল জ্ঞান ' গেল কোন স্থান আর দশা আসি ঘেরে। বে তত্ব পাগলী ১৫ বাছা বাছা ৰলি উন্মত হৈয়া ফেরে॥ মায়া প্রবেশিল তত্ত্ব দুৱে গোল কানল তনয় সোর। বুঝল শক্তি **छिनाम वटन** মানুষ ভিতরে তোর॥

ाग्रस्क जिल

ब्रामस्कि ।

व्याद्य भारत याष्ट्रश कुलान। অনেক তপের ফলে এ ধন পেয়েছি কোলে मधूर्यूदा शंताईल खाल ॥ ভাল হল যা করিলে দরিয়াতে ভাসাইলে এ নহে তোমার ঠাকুরালি। বাঢ়াইলে অতি প্রীত এবে কর অসুচিত हियार्य जानल मिर्ल जालि॥ বিরহ কঠিন বড় এ কথা জানিহ দঢ় পরবশ না গুণিহ মনে। উগারিয়া মধুরাশি **ट्यम किल अर्श्निण** : o हेश जुमि यूहार दक्यात ॥ গোকুলের গোপিনীগণ আন স্থা আন জন দে সকল পাসর কেমনে।

যশোদা রোহিণী কান্দে তারা বুক নাহি বান্ধে ১৫ যবে আসি এবেশিলা পুরে।

আছে তারা পথ চাই কবে আসিবে কানাই কবে দেখি নয়ন গোচরে॥ এ कथा छनिव यरव जात्रा कि जिलक कोर्व मतिव रम करल প্রবেশিয়া। না কর নিঠুরপনা শুন বাপু হুই জনা রহা নহে জননী তেজিয়া॥ मत्र मत्र (क्षेमवाति চতুর মুরলীধারী পুরব পড়িয়া গেল মনে। পীতবাস করে ধরি ভাষির পুছয়ে বারি ২৫ দেখে বলরাম অভিমানে॥ চাহি কান্দে বলরামে कुरक्षत्र वषन शान ছুঁহে মুছে নয়নের বারি। २० চণ্ডীদাস কহে তায় কহিলে দৈবকী মায় রহি হেথা চতুর মুরারি॥

413

31

এ কথা শুনিয়া নদ্দের বিরহ
বাঢ়ল বিষম জ্বালা।
বহে প্রেমজল . বসন ভিগঁল
বেমন কালিন্দী-ধারা॥
ক্ষেণেক নিশ্বাস ক্ষেণেক হুডাশ ৫
ক্ষেণেক সন্থিত হয়।
এক দৃষ্টে চাহে অভি বড় মোহে
নয়ান মিলিয়া রয়॥
লোষের নয়ানে দৌহার বরানে
ভৈছন দেখিয়ে হয়।

এত কি সহয়ে নন্দের পরাণে বিষম দারুণ আগি।

এ শোকে জার কি	ভিলেক বাঁ চিব		না হলে এড কি	শানের শক্তি	
	লাগি॥		ক্ছেন এ চ	छीमारम ॥	२०
	্গোকুল নগরে		****		· .
কৃষ্ণ বলরা	म वाभि ।				
যশোদা রোহিশী	কিসে প্রবোধিব			do	
বড় পরমাদ	(मिथि॥			3 1 •	
কেমনে বাঁচিৰ	গোপী কিসে জীব	२०		চেতন পাইয়া	
যত স্থাগণ	ভারা।			गांव जांग्र।	
ह शीमांत्र वटन '	গোকুল ভেজিলে			वित्रम-वृष्टा	
বুঝল এমবি			ছঁত মুখপাত		
				* কমল-লোচন	¢
•			রহিবা মণুর		
•	11		হের এস ছঁত		
হ	हरें ।			ভি দূরে॥	
कृषः रहाभन्न	विमूथ ऋछत्र			বহে প্রেমজল	
	। मदत्र वांगी।			ন হেরি।	
	ক্ৰেন বচন			বাণ অতি শর	
• কেই সে না			मत्राम तहल		
উঠ উ ঠ বলি	কহে বহুদেব	¢		আনল তথাই	
শুনহ বচন			বদন চুম্বন ও	हारम । कमनिया कां नि	
ভোমার নিবিড়	পীরিতি আরতি				>4
আন কি অ	নিয়ে ওর॥			ক বোলে।	
নন্দ যশোষতী	স্নেহের পীরিতি		वस्ट्रामव मान		
কহিতে ক	ইব কত।	> 0	(मनकीरत क	ছে বাণী।	
এ মহীমগুলে	নাহিক গণনা		গোকুল নগরে	विषाय माणिदय	
আদর পীরি	তি যত॥		छ छोमां न है ह	। कानि॥	२०
ন্নেহ ভাবে ভাল	° পাওল সম্পদ				
ভূমি সে পা			নন্দঘোষের গোক্ল-গ	ামন ও যশোদার ে	भण ।
এ মহীমগুল	গণিতে বিস্তর	>e '	6	18	•
এমন নাহি	क (मिथि॥		*	हरें। .	
कृष्ण रलवाम	কেবল ভোমার		সাজল শকট	ठनन , निक्छे	
নহেন আনের বংশ।			কান্দিতে কান্দিতে পথে।		

করল গমন **७४ (पश (पन** . পরাণ রহিল ইথে॥ ্লোরে পথে কিছু দেখিতে না পায়ে শোকেতে আকুল মানি। সঘন নিখাস বিষম হুডাশ करहं गम गम वानी॥ এইরূপ পাই বিরহ-বেদনা যমুনা হইল পার। 30 শকটের ধ্বনি स्नम खेरान करात्र जानत्म नात्र॥ কোন স্থাগণ তুরিতে গমন भक्छे-भवत्र स्थित । গৃহকান ফেলি তুরিতে বাহির ১৫ रहेला नाम्पत्र त्रांगी॥ কেহ পুরজন হাতে নড়ি ধরি বাহির হইলা কেন্ত। বালা বৃদ্ধ যত চলিলা ভুরিতে আর সে কুলের বহু॥ २• যত গোপীগণ खनल खेवरन রাম কৃষ্ণ আইলা ঘরে। এ কথা শুনিতে মরা তরু যেন মুঞ্জরে শাখার সরে॥ চণ্ডীদাস ভেল অতি আনন্দিত ২৫ পুরল মনের কাম। নয়ান ভরিয়া আজু সে হেরব সেই নবঘন শ্যাম॥

> ৬१९ · নটনারায়ণ।

হেন বেলে প্রবেশিল পুরে। ' শুনি শঙ্কটের রোল করে সবে উভরোল চলে সুবে শুগম দেখিবারে॥

যশোদা রোহিণী ধার মৃত তরু বেন প্রায় কোণা কৃষ্ণ হলধর মোর। मिथिएय नयन छत्रि वलन इश्वन कंत्रि স্থের নাহিক কিছু ওর। গোপ গোপী পুরবাসী চলে সবে প্রেমে ভাসি कृष्ण रलधत आहेल भूदा। গিয়ে ষমুনার ধারে দেখিল भक्छेभात ১० তাপে নাই কৃষ্ণ হলধরে॥ বিশ্মিত হইয়া চিতে ক্ষে যশোমতী চিতে কোথা কৃষ্ণ দেখিতে না পাই। এ কথা শুনিয়া নন্দ कारम वह मन मन মোরে তেজি রহে ছুই ভাই॥ কি আর পুছহ তোরা কৃষ্ণ বলরাম হারা রহি ছত্ মধুরা নগরী। মোর মাথে পড়ে বাজ সাধিতে আপন কাজ মোরে দিল ডারিয়া পাথারি॥ **शिष्ट्रं विनिद्यं कारम** २० শকট হইতে নন্দ লোরে আঁখি দেখিতে না পায়। ধরে নন্দ খোষে তুলি চণ্ডীদাস বেয়াকুলি সব জন ধরিয়া রহায় 🛭

क्षे**य्ह**।

তুমি নন্দ বড়ই নিদয়া।
কোথা না রাখিলা মোহ মায়া॥
বারে না দেখিলে আমি মরি।
কেমনে বাঁচিব গোপনারী॥
কি লয়ে আইলা তুমি ঘরে।
ছাড়ি মোর কৃষ্ণ হলধরে॥
কান্দে রাণী ভূমে অচেতন।
ধারে যত গোপ গোপীগণ॥

50

রোদন বেদন উপজল। শোকেতে হইয়া গেল ঢল।। . চণ্ডীদাস শুনিয়া মূর্কিছত। ইহা কিবা শুনি আচন্দ্ৰিত।

थरहे।

কি লয়ে আইলে তুমি। এ ঘর করণ . দুরে ভেয়াগিয়া জলে প্ৰবেশিৰ আমি॥ অন্ধনার নড়ি বাছারে কানায়া কোৰা না রাখিয়ে এলে। কেমনে বাঁচিব তাহা না দেখিয়া

विष् इथ स्मान मिला॥ কোথা হতে এল বাজা কংস-দৃত অক্রুর ভাহার নাম।

শমন সমান প্রবেশি গোকুলে ১০ ் লইল সবার প্রাণ॥

বেমনু সোনার পুথলি ধুসর व्यवनी छेशदत दर्शि।

ভিভিয়া ৰপন नग्रानत करन यमूना-छत्रक (मथि.॥

কেহ কার অঙ্গে অঙ্গ হেলাইয়া मूमिया नयन छूछि।

বেমন চামরু তাহার চামর व्यवनीय। सादत मृति ॥

বেমন ধাউল • হইয়া বাউল ২০ খাইয়া ব্যাধের শর।

তেমত বিরহ- বাণে তমু স্কর না চিনে আপন পর।

चान वान विक व्यवस्त्र टेशभएव . তথনি ভেলয়ে তমু।

এ বড়ি বিষম • নুহে নিবারণ হিয়ায় পৈশয়ে জন্ম। **छिनान वटल** कि स्नात वैक्ति ध दश्न वित्रष्ट-भद्र ।

আনল স্থালিয়া ' তাহে প্রবেশিয়া ৩০ कि हात्र की वन शदत ॥

बढ़ादि ।

শুন নন্দ ছোধ আমার বচন জ্বালহ আনল ভালি। তাৰে প্ৰবেশিব যশোদা রোছিণী (प्रश् ७ यानम स्वानि॥ (कह वरण यमि कृष्ध नाहि am e

বিসরি রহল গেহা। कि छात्र कीवन किरमत कात्रग এখনি তেজিব দেহা।

যাহার লাগিয়া এ ঘর করণ भिष्ठे (म तर्ग पूरत ।

নয়নের ভারা भवांग (मामव वैंाठिव काश्रंत अद्र ॥ कारम नम्म (घाष याणां प्राहिनी সঙ্গের বালক যত।

পুরবাসিগণ বত গোৱালিনী ১৫ কান্দে লাখে কত শত। হাতে নড়ি করি কত শত লব্ধ काम्मरत्र कक्षणयस्य ।

আছিল সম্পদ বেড়ল আপদ্ कि देश्न शाकुनभूदत्त ॥ 💢 २० 😁 চান্দ তেজি গেল হইল আছার

ર ૯

विषय पातः । কাল সে সঘন ্যেন তিমিক্সিল ভ্রম। ় জগত জীবন পরম-কারণ ২৫ গোকুলে সবার প্রাণ। মুরছি কান্দই উনমত হই . **ह**छीकाम खनगान ॥

415

वस्ति । কোণা গেলে পাব রাম কৃষ্ণ চুই জগত-জীবন ধন। ভার কি ভেরব সবার গোচরে তথাই আছয়ে মন॥ শুন নন্দ ঘোষ আমার বচন ৫ চল যাব সেই ঠাম। তু বাহু পদারি কোলেতে লইয়া (मिथ · : भननाम ॥ ছেনা ছুগ্ধ চিনি এ ক্ষীর নবনী দিব দে কোঁহার মুখে। ভবে সে যাইব আদর আগুন হইৰ অতি সে স্বথে॥ দোঁহার বদন মোহন সদন **চল আংগ গিয়া দেখি।** वषन हुन्दन করিব যতন ১৫ এই সে তাহার সাখি॥ এই বলি কান্দে বশোদা রোহিণী তিল শ্বির নাহি বাকে। কানাই কানাই বলিয়া বলিয়া नित्रविध त्रांगी कारम ॥ চগ্রীদাস, বলে বজর পড়িল [°] কি আর দ্বেখহ ভোরা।

স্বারে ভেজিয়া • রহল ভথায় সেই সে নয়ানভারা॥

शमणी ।

অনেক তপের ফলে বিহি আনি দিল মোরে সে হেন আদর নটরায়। কোন অপরাধ হল জননী ছাড়িয়ে গেল হেনক আমার ভার II সে হেন নৰীন তমু যেন পদ কর ভামু ৫ হিঙ্গুলে গঞ্জিত বিষধরে। নবঘন তমুখানি অঞ্বনে দলিত শ্রেণী नयून कमल माम्बर्दत ॥ কিবা সে মধুর হাসি মধু ঝরে রাশি রাশি নবীন কোকিল জিনি বোলে। করিশুণ্ড হল জিনি বাছর সে সুরলিনী তা দেখি नमारे मन यूदा ॥° त्म दहन बाह्य धरन बाधि काहरल (कामधारन मनारे म यूत्राय व्यस्ता। (य भात हरशह मन अ कथा जानित्व दकान >१ এ কথা সে কহিব কাহারে॥ কর ভরি দিতে সর মুখ দেখি শশধর वमन ठाहिया वटव व्याति। ভাবিতে গুণিতে সেহ মলিন হইল দেহ गत्न त्यांत्र शर् निमि निमि॥ যশোদার করুণা শুনি গলিভ পাষাণ মানি মৃগ তরু কান্দরে বর্করে। স্বন নিশাস নাসা শুনিয়া করুণ ভাষা চণ্ডীদাস পড়িয়া ভৃতলে॥

20

>0

আর কি শুনব তার বাণী। শুনিরা জুড়াব মোর প্রাণী। এ कीत नवनी पिर कांग्र। শার কে ডাকিবে বলি মার॥ মুই বড় অভাগিনী রামা। ত্ৰিভূবনে নাহি কোন জনা॥ যে পুত্ৰ নবীন তমুখানি। वां उर्थ भिलार्य रहन कानि ॥ रय अन विद्रारत्र शिरत्र क्थ। হেন বা করয়ে অমুরোধ॥ সে শিশু রহল মধুপুর। মথুরা রহল বহু দূর॥ मत्रिव भवन विष (थएव। কিবা ছার এ তন্মু রাখিরে॥ কানিল বিধাতা ভেল বাম। যবহু তেজল খনশ্যাম ॥ এমন বা জানিথু স্বপনে। তবে কি ছাড়িথু নবগনে॥ চণ্ডীদাস ব্যথিত হিয়ায়। नत्मत्व त्म धविद्या तहांग्र ॥ २०

कामड़ा।

কাহারে কহিব मर्ने द्रवन्ना ছাড়িল গোলোকপতি। उत्थत बाटमान বৈভব বসতি ভাঙ্গল এ দিন রাতি॥ আর কিবা দেখ কানাই ছাড়িল ভাঙ্গিল রসের হাট।

শাসিয়ে অক্রুর · কৈল এত দুর সেই সে পড়িল বাট॥ তার সনে ছিল কিসের বিবাদ সাধিল আপন কাজ। তার মনোরথ পুরল স্থার भात भिरत मिरत वाक ॥ কিসে প্রবোধিব প্ৰবোধ না মানে জলে প্রবেশিব গিয়া। 20 করে কর ধরি यम्भामा ज्ञमत्री তুলল চেতন ধনী। मूर्थ जल निया গৃহে গেলা লয়া কহেন ঐচন বাণী॥ শ্বির নাহি বান্ধে ২০ চণ্ডীদাস কান্দে স্বনী গড়িয়া যায়। লোরে পথ অতি না দেখি মুর্রতি (यमन शांधांग कांग्र॥

শীরাধিকার শোক।

বিভাব।

এ কথা শুনল শ্রেবণ ভরিয়া कृषः ना आहेला आत्र। भधुभूदत त्रदश রহিলা যমুনা পার॥ नवज-व्या কুলের কামিনী नत्व (भवा जोश शास्त्र)। नम द्रशाय व्यानि পুরেতে প্রবেশি (गाविन्म माथुत एमएम ॥ এ কথা শুনিয়া • गरव जन स्थरग

ছাড়িল গোকুল ় রহে বন্ত দূর ंत्रপনে নাহিক জানি॥ , আছিল মনেতে আসিব গোকুলে ভা মেনে নৈরাশ ভেল। বরজ্ব-রমণী কুলের কামিনী ১৫ সবার পরাণ গেল॥ যাই একজন নন্দের ভূবন বুঝহ কি গ্রীতি তার। করি যত জন তবে পরিণাম श्विति डाहात थात ॥ . २० **छ्छामारम वरम** श्रन विरनामिन বজর পড়িল মাথে। মধুপুরে রহে কামু গুণমণি বড় ভেল অমুরথে।

यहाँ ।

কামুর আদর পীরিতি ভাবিতে भीकत रहेन (भग। कत्रम विकल (मই (म ফলব হ্ন্মের নাহিক লেশ। विब्रह-त्वम्दन क জনম গোয়াসু তিলেক নাহিক স্থা। পরিণামে সারা এই হল পারা দিলা বিরহের ছখ। কে জানে নিঠুর হইব সবাবের মপুরা রহল গিয়ে। क्थन ना कानि স্বপনে না শুনি ় ছাড়িয়া বাইব প্রিয়ে॥ শালাপ ইঞ্জিতে বৃদি বা শানিধু भववान इत्व कान ।

নিজ কেশপাশে নিবিড় বন্ধনে ১৫
বাঁধিয়া রাখিপু শ্যাম ॥
পরিহরি দূর রহে মধুপুর
কি জানি করিব বল ।
এই মনে গুণি হেন অসুমানি
সে দেশ যাইব চল ॥ ২০
যাহারে না দেখি তিলেক না জানি
কেমনে বঞ্চিব ঘরে ।
চণ্ডীদাস বলে নিকটে মিলব
সেই সে মুরলীধরে ॥

৬৮৪ সুষ্ট।

মরিব গরল ভখি। তাহার বিহনে ভাবিতে গণিতে পরাণ হারাব দেখি॥ कालिया वदन धत्रास्य इन সে জন কঠিন বড়। পরের পীরিতি স্থার আরতি এবে সে জনল গাঢ়॥ হরিতে কি চুখ পরের পরাণ স্থের নাহিক লেহা। ভাবিতে গণিতে মলিন হইল ১০ व्यत्तभ इहेल (स्टा ॥ দে পঁছ রতন व्यानक वज्ञान আছিল নিজহি কোড়। • विश् निकक्षण ভা**হে ভেল বাদ** नकत इहेल (**अ**।त ॥) १ পহিলা পীরিতি यथन कत्रिटन शांख यानि पिना है। प কুল ভেয়াগিয়া কলত্ব রাখিল नागादेश ट्यमकाम ॥

চণ্ডীদাস শুনি রাধার বিরহ ২০ উঠিল দারুণ তৃথ। নিরমল বর রসের নাগর হেরব ডাকর মুখ॥

> ७৮**०** धाननी।

সখি রে, মথুরামগুলে পিয়া। মাসি আসি বলি পুন না আসিল কুলিশ পাষাণ হিয়া॥ लिथियु पिवरम আসিবার আশে খোরাতু নখের ছন্দ। উঠিতে বসিতে পথ নির্থিতে ত্র আঁখি হইল অন্ধ॥ কেহ কি না বলে এ ব্ৰজমগুলে আসিবে কি নন্দলাল। মিছা পরিহার তেজিয়ে বিহার ১০ রহিব কভেক কাল॥ চণ্ডীদাস কহে মিছা আসা আশে থাকিব কতেক দিন। বে থাকে কপালে कत्रि একে काल মিটাইব আঁখর তিন ॥ 14

> ७৮१ युव्हे ।

ও পারে বঁধুর ঘর বৈঁসে গুণনিধি।
পাখী হইয়া উড়ি বাউ পাখা না দেয় বিধি॥
বমুনাতে দিব ঝাঁপ না জানি সাঁতার।
কলসে কলসে ছিঁচো না ঘুচে পাথার॥
মধুরার নাম শুনি প্রাণ কেমন করে।
সাধ করে বড়াই গো ভামু দেখিবারে।

আর কি গোকুলচাঁদ না করিব কোলে।
হাতের পরশমণি হারাইসু হেলে॥
আঞ্চনিতে দেউ ঝাঁপ আঞ্চনি নিভার।
পাষাণেতে দেউ কোল পাষাণ মিলার॥
ভরুতলে বাই বদি সেহ না দের ছারা।
বার লাগি মঞি সে হইল নিদরা॥
কহে বড়ু চণ্ডাদাস বাশুলীর বরে।
ছট্ফট্ করে প্রাণ বন্ধু নাহি মরে॥

783 1

কামু অঙ্গপরশে শীঙল হব কবে।
মদন-দহন-জ্বালা কবে সে যুচিবে॥
বয়ানে বয়ান হেরি কবে সে ধরিবে।
বয়ানে বয়ান দিলে হিয়া জুড়াইবে॥
করে ধরি পয়োধর কবে সে চাপিবে।
ছুখদশা ঘুচি ভবে সুখ উপজিবে॥
বাশুলী এমন দশা কবে সে করিবে।
চণ্ডীদাসের মনোহুখ ভবে সে ঘুচিবে॥

৬৮১ সিধাতা ।

পিয়া গেল দূর দেশে হাম অভাগিনী।
ভানিতে না বাহিরার এ পাপ পরাণী।
পরলি সোঙরি মোর সদা মন ঝুরে।
এমন গুণের নিধি লয়ে গেল পরে।
কাহারে কহিব সই আনি দিবে মোরে।
রতন ছাড়িয়া গেল ফেলিয়া পাথারে।
গরল আনিয়া দেহ জিহ্বার উপরে।
ছাড়িব পরাণ মোর কি কাজ শরীরে।
চণ্ডীদাস কহে কেন এমতি ক্রিবে।
কামু সে পরাণনিধি আপদি মিলিবে॥

् ६५० यहरे।

় অগরু চন্দন চুয়া দিব কার গায়। পিয়া বিসু মোর হিয়া ফাটিয়া যে যায়॥ ভাত্মল কর্পুর আমি দিব কার মুখে। तकनी विकव शंभ कादत लाय छाउँ।। कांत्र अन्नभत्राम नीउल इत्त (परा। কান্দিয়া পোহাব কত নাহি ছুটে লেহা॥ কোন দেশে গেল পিয়া মোরে পরিহরি। जूमि यनि वन मिथ विष (श्रुत् मित्र ॥ পিয়ার চূড়ার ফুল গলায় গাঁথিয়া। স্থালহ আনল সই মরিব পুড়িয়া॥ সে গুণ সোঙরিতে মোর পাঁজর খসে যায়। দহনে দগধে মোর এ পাপ হিয়ায়॥ ভোমরা চলিয়া যাহ আপনার ঘরে। মরিব অনলে আমি ধমুনার ভীরে॥ **हिं छो मारित निर्देश किया किया किया किया ।** শরীর ছাড়িলে প্রীতি রহিবেক কোথা।।

৩। আমি—আদিপাঠান্তর। ৬। পোহাব—গোঙাব ,, ১০। আদহ—আনহ ,,

>२। परत्न पशहे (त महे अ भाभ विद्याय...

677

ধানশী।

ক।লি বলি কালা গেল মধুপুরে
সে কালের কত বাকি।
বৌবন-সায়রে সরিতেছে ভাঁটা
ভাহারে কেমনে রাখি॥
জোয়ারের পানি নারীর বৌবন স

জাবন থাকিলে বঁধুরে পাইব
থাবন মিলন ভার ॥
বৌবনের গাঙে না ফুটিতে ফুল
ভ্রমরা উড়িয়ে গেল। ১০
এ ভরা যৌবন বিফলে গোঁয়ামু
বঁধু ফিরে নাহি এল ॥
বাও সহচরি জানিহ আসহ
বঁধুয়া আসে না আসে।
নিঠুরের পাশ আমি বাই চলি ১৫
কহে ধিজ চণ্ডাদাসে ॥

নিশ্বটা।

[नक्ष्

সখি রে,
বরষ বহিয়া গোল বসন্ত আওল
ফুটল মাধবী লভা।
কুন্ত কুন্ত করি কোকিল কুহরে
গুপ্তয়ে ভ্রমরী বভা॥
আমার মাধার কেশ স্তাক্ত অসের বেশ

পিয়া যদি মথুরা রহিল।

ইহ নব যৌবন পরশ রতন ধন

কাচের সমান ভেল॥

কোন সে নগরে নাগর রহল

নাগরী পাইয়া ভোর।
কোন গুণবতী গুণেতে বেঁধেছে
লুবধ ভ্রমর মোর॥

যাও সহচরি মণুরামগুলে বলিও আমার কথা।

পিয়া এই দেশে আসে বা না আসে ১৫
কানিয়া আইস হেথা॥
বিধুমুখী বোলে সহচরী চলে
নিদর নিঠর পাশ।

२०

গৃহচরী সনে ভণয়ে ভৎ সিয়ে কৰে বড়ু চগুদাস ॥

৮। কাচের জার মূলাহীন।

শীরাধিকার দশা।

630

তুড়ি।

অথল বেয়াধি সেই কহনে না যায়।

যে করে কাসুর নাম ধরে তার পায়।

পায়ে ধরি কাঁদে তার চিকুর গড়ি যায়।

সোনার পুথলি যেন ধূলায় লোটায়।

পুছয়ে পিয়ার কথা ছল ছল আঁখি।

তুমি কি দেখেছ কালা কহ না রে সখি।

চণ্ডীদাস কহে কাঁদ কিসের লাগিয়া।

সে কালা রয়েছে তোমার হৃদয়ে লাগিয়া।

১।

শক্ধা বেদনা সই কহনে না বার…পাঠান্তর।

658

বিরহ-স্থরের তাপে ছল ছল আঁথি।
রাইকে বেড়িয়া কান্দে কত শত সধী॥
রাই মোর বেন কাঁচা সোনা।
ভূমে পড়ি গড়ি বাইছে বেন চাঁদের কণা॥
চমকি শ্রামের নামে রাই উঠে কত বেরি।
ধূলার লোটার বেন ক্রণদ্ধি কবরী॥
কহিতে কহিতে চিতে হৈলা অচেতন।
রাই মুরছিত কাঁদে আর সধীগণ॥
কহে কবি চন্ডীদাস বিরহ বেদন।
এমন বিরহে কেমনে রহয়ে জীবন॥

(वनावनि ।

দেখিয়া রাধার দশা উপজিল উঠিল বিরহস্থালা।
দশমী দশার . এ সব লক্ষণ
দেখিয়ে বিষম বালা।
কোন নবরামা কছে রাধা পাশে

রথ আরোহণে শ্রাম। গোকুল প্রবৈশি আঙল ভূরিভে শুনি কিছু হয়ে জ্ঞান॥

চমকি চমকি মিলিত নয়ন
চাহেন সদয় গৌরী।

করে কর ধরি কোন নবরামা

মুখেতে ঢারয়ে বারি ॥ ক্ষেণেক চেতন পাইল কিশোরী চকিত নয়নে চায়।

সোনার পুথলি বেন গড়ি যায় ১৫ এছন দেখিয়ে প্রায়॥

ঐচন অবনা উপরে ফুটল কনক-কমল প্রায়।

কাসুর বিরহে। সে গুণ সুন্দরী
ধূলাতে ধূসর কায়॥ ২০
শীতল চামর ঢারি কোন রামা
মলয় চন্দন দিয়া।

শীতল পাধার বাতাস করছে কোন নবরামা গিয়া ॥

ভাহে বাড়ে স্থালা বিরহবেদন ২৫ হুতাশ উঠয়ে দুসু।

অক্সের চন্দন বে ছিল ণেপন তাহা শুখাইল ভুমু॥

বিরহ লাগুন হিরার ভিতরে কি করে মদয়রাজে। > •

30

চণ্ডীদাস বলে ে কে এড জানব

(य कन এ तरन मरक।

कामणा ।

श्रा देव प्राक्तन विधि। **डा**खाइटन क्रननिधि ॥ বে এত দিল তাপ। তারে ধরু বহু পাপ॥ এত কি সহিতে পারি। বিরহে এ তত্ত্ব মরি॥ जिल्क मिवांत्र माथ। এ ছথে मिल कि वाम ॥ কৰে পাপ তার মেলি। পুন সে কবর রস-কেলি॥ আর কি হেরব মুখচন্দ্র। खांत्रव नकन प्रमा। श्रुन इति मिलव स्मात । পিয়ারে করব নিজ কোড়॥ भून कि कत्रव त्राम-दक्ति। नव नव शांशी हव सिन ॥ वानी कि श्वनव कारन। यांव वृक्षांवन शांटन ॥ चित्रा हन्दन माना। कारत निव चात्र गना ॥ हशीशांत क्या। ডিলেক না কর ভয়।

> ०১१ सरदे-त्रिषुक्। ।

বেদে গো সমনি সই তোষারে কিছুই কই এ ছথে কীবারু নহে রাধা।

त्म मिन Micक मिक e বে জন পরম বন্ধ ভাবিতে গুণিতে সেই লেহা। বঝিল জাপন চিতে মরণ আইল নিডে আর কি রহিব পাপ দেহা॥ শুন গো মরম-স্থি বড পরমাদ দেখি এ তমু তেজিব আমি যবে। সেঁচি তাহে সর্ব্বণা কুফের মালতী তথা নিতি তাহা মার্চ্ছন করিবে॥ তেজিব পরাণ যবে ভোমা বেই বিষয়ত (?) ভাজহ রবির তাপে। कीएड ना एडडेन हति ११ রাখিহ যতন করি বেন পিয়া রাখি কোন রূপে। যা সনে পীরিতি করি তারে না দেখিলে মরি त्म मकल हुच विमतिया। কেমন ধরণ তার সে হিয়া পাষাণ সার কেমনে বাজৰ সেই হিয়া। এই नव धनी करह কাভর বচন নোহে लार्ड जागतन क्रहे जाँचि। দারুণ কঠিন প্রাণ এমন করয়ে কেন **हिंशांग डाट्ड बाट्ड गांधी** ॥ २२। जानवन ..बद्ध कविन, इहे ठकू अञ्चलूर्य रहेन।

कार्य ।

ক্ষেণেক দাঁড়ারে দেখ।

হর নর হহ। বুক পরতাও

কি আর রহারে রাধ ॥

আনহ চন্দন কাঠ পরিষল
ভালৈ সে মেলাহ চিডা।

भट्नत व्यनित्म	এ দেহ পোড়াই	
্কি কহ তাহার	कथा॥	
গ্ৰ কাজ যখন	শ্রবণে শুনিল	
বেণিত কোন হি	জনা।	
রাই গলে ধরি	অপার রোদন	> 0
বেদন হানল রাফ		
তোমার এ অঙ্গ	লাখ বাণ সোনা	
শ্ৰীমুখ-মণ্ডল বিং	()	
বার হাসিরসে	মণি কত হয়ে	
ঝরয়ে কভেক ম	ा र्थ ॥	>4
এ সঙ্গ দাহন	কিসের কারণ	
শুনহ কিশোরী (
কোন শুভ দিনে	প্রসন্ন হইলে	
শো বর নাগর হ	রি ॥	
এ তমু রহিলে	তমু তমু মিলে	२०
কোন দশা কলে	কত।	
চেত্ৰ সমাধে		
• নিকটে মিলব গ্রি		
সে হেন রসিয়া		
বিসরিয়ে সব কে		२०
রাধা বলি যদি	•	
মনে পড়ে এই ৫		
অনেক আরতি		
এ নৰ নায়রী সা		
নিকটে মিলব		90
বিজ চণ্ডীদাস জ		
৪। কার্চ পরিমলপুর্গন্ধি		nturr
১০-১১। রাধিকার গলে। নিজ্ঞ জংগ জানাইল।		µ। ज न

১০-১১। রাধিকার গলে ধরিরা অনেক রোদন দরিল ও ভঃখ জানাইল। ১৮-২০। যদি তুমি ভোষার এই শরীর নই না দর, তবে কোন দিন সোভাগ্যের কলে ভাষ-মঙ্গের সহিত ভাষার অজের মিলন হইবে। অতএব চেডন হও, ধাষার কথা ভন, হরি ভোষার নিকটে আসিবেন।

স্থীর বচন **अ**नल श्रमती ∙़ রাজার নিদ্দনী ধনী। মিলল নয়ান মুছল বয়ান কহে আধ আধ বাৰী ॥ সবার বচন যেন লাগে আসি ৫ গরল সমান মানি। সেই স্থনাগর বিনে নাহি আর किছूरे नाहिक जानि ॥ মুখে দিয়া জল রাই উঠায়ল গৃহমাঝে নিল পুয়া। ফুচাক পালকে বাই শুভায়ল তুই চাবি সখী লয়া॥ রাই অঙ্গ তুবে বঙ্গনের বায়ে करहन मधुत वानी। ভুরিতে মিলব সে নব নাগর ১৫ আমি সে ভালই জানি॥ विवम विवास কেনে পরবাদ সে শ্রাম কতেক দুর। এক জন গিয়া পানিব ডাকিয়া চণ্ডীদাস মন পুর॥

100

তুড়ি।

একে হাম হব বনবাসী।

রামেরে ছাড়িয়া সীতা বনবাসী ভেল গো

তেন হাম মনে কবিয়াছি ॥

কাননে রহব একা না হয়ে কাছারে দেখা

থাকি বেন বোগীর ধেয়ানে। ৫
তুলিয়া মূল জার ফল নবীন কুকুমদল

এই শুরি রাখিব বহনে ॥

20

তুলিয়া সিশ্দুরভার এ জটা ধরিব সার অমুবাগে ভ্রমির কাননে। তবে সে ঘুচিব তাপ এ দেহের অমুরাগ ১০ ইহা মেনে করিব যভনে॥ এ ছথে জীবাব নই . শুন গো মরম-সই কি ছার গুছের সাধ। জানিল নিঠুর বড়ি স্বারে রহিল ছাড়ি দিল পঁত বহু বিসম্বাদ। শুনিয়া রাধার বাণী হেটমাথে গোয়ালিনী কহেন বচন কিছু ভাষ। কহ কহ ধনী রাই পুরব শুনিয়ে ভাই किंदिङ नाशिना हछीमात्र॥

श्वर-दिकावनि ।

পুরব সে অবভারে পূর্ণ পূর্ণ অবতারে সূর্য্যবংশ রাম অবভার। নব দূৰ্বাদল তম্ব করে ধরি শর ধন্ম দশরথ-স্থত অনিবার॥ পালিতে বাপের সভ্য এ চৌদ্দ বৎসর গভ শিরে জটা পরিয়া বাকল। করিয়া সীভারে সঙ্গ বন ভ্রমি নানা রঙ্গ সীতাপতি শ্রীরাম স্থুন্দর॥ সেই সীতা দশানৰে হরিয়া লইয়া বনে লকাতে লইয়া গেল ভারে। 'কেবল ঈশ্বর স্থাংশ স্বাবণ করিয়া ধ্বংস করি পঁছ সীভার উদ্ধারে॥ সাভার উদ্ধার করি অবোধ্যাতে অবভরি . : छता मध मित्रा देकन तांका। কোন লোক অপরাধে পাইরা সে রমুনাথে ১৫ সীতা ব্নবাসে দিল ভেজা।

তেজি রঘুনাথ সঙ্গ স্থপথে হইল ভঙ্গ পূরব-কাহিনী কহে রাধা। রাধার যুক্তি এই নিশ্চয় করিব সেই. **ठ** छी नांन करह कि हु त्वांशा ॥

908 यश्रे । অমুরাগে রাধা বেথিত অন্তরে পাইয়া বিষম জালা। ্ উঠে অসুরথ কেণে কত শত দেখিয়া কদস্বতলা॥ সেই সে যমুনা জল-কেলিপগ ঘাটের মাঝারে গিয়া। পূরব পীরিতি যেখানে করিল **पिथि পড়ে মুরছিয়া**॥ যেখানে বসন रुत्रग कत्रिम রসিক নাগর কান। তা দেখি কিশোরী সকল বিষ্ঠির টিঠিল দাক্ত মান।। যেখানে সঙ্কেত দেখিল বেকত धतिया गांधवी-**जा**न । বিষম বিরহ তাহে উপজিল ১৫ नग्रत्न वंश्रा भात्र॥ যেখানে সঙ্গত করল নাগর গিয়া সে কিশোরী রাই। তাদেখি লুটত মহীর উপরে **ह** छीमान छन गाई ॥

> 388 व्हरे-महे।

₹•

गरे, क वाद्य मधुताशुत्र । এ হেন যাভনা তারে নিষেপিয়ে তবে পরিহর দুর॥

¹ করিয়া বিকলা কেনে বা অবলা সেই সে আছুয়ে ভাল। वंत्रक-त्रभी क्लात्र कामिनी তাহার পরাণ গেল। কে বাবে বাহ ত কাসুর সম্মুখে ভারে দিব এই হার। গৰুমতি ছড়া গাথুনি স্থপারি ১০ গণনা নাহিক যার॥ এহ হার ভার গলায়ে পরাব কে এত সাছয়ে হিতৃ। करह शैरत्र शैरत এক নবরাসা ट्यांद्र निर्विष्ट्र किছू॥ অৱ কটাক্ষে শুপথে যাইব কেহ সে লখিতে নারে। দেখাই হইলে যাহাই কহিব বেবা সে অন্তরে আছে॥ করিল পয়ান ২০ সেই নবরামা যেখানে রসিক রায়। চণ্ডীদসি বলে কাসু অৱেষণে তুরিত গমনে যায়॥

> १०४ जामास्डी।

সখি, কহিও ভাহার পাশে।

যাহারে ছুঁইলে সিনান করিয়ে

সে মোরে দেখিলে হাসে ॥

কার শিরে হাত দিয়ে।

কদম্ব-তলাতে কি কথা কহিলে ৫

যমুনার জল ছুঁয়ে॥

মোর বৃক্ষাবন আছে সাখী।

মার এক হয় যদি মনে হয়

কপোত নামেতে পাখী॥

এ কথা কহিও তারে। ১০
সে গুণ ঝুরিয়া বে জ্বন মরিবে
সে বধ লাগিবে ভারে॥
বিজ্ব চণ্ডীদাস ভণে।
বাহার লাগিয়ে য়ে জন মরয়ে
সে তারে পাশরে কেনে॥ ১৫

শন্দা।
স্থি, কহিবি কামুর পায়।
সে স্থ-সায়র দৈবে শুকায়ল
তিয়াষে পরাণ যায়॥
স্থি, ধরিবি কামুর কর।
আপনা বলিয়া বোল না ভেজবি ৫
মাগিয়া লইবি বর॥
স্থি, যভেক মনের সাধ।
শয়নে স্থপনে করিমু ভাবনে
বিহি সে করল বাদ॥
স্থি, হাম সে অবলা তায়। ১০
বিরহ আগুন

সহন নাহিক যায়॥

স্থি, বৃঝিয়া কামুর মন।

যেমন করিলে আইসে দে জন

দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণ॥ ১৫
১১। হৃদ্দে বিভণ-দহয়ে বিভণ...পাঠারর।

স্থীর উক্তি।

10%

১৪। चाहरत रत्र क्रम-चाहरत्र क्रतिरव... "

ওতে বড়াই, তাহার বিষম নারা। (?) কিছু নাছি খায় সে তেজহে কায় শালর হৈয়াছে সায়।

ভূনি কি না ভূনি ষেন সরু বাণী যেন রুধিরের ধারা। देश्याद्य मिन চকিত লোচনতারা॥ করে অমুক্ষণ खेरन नग्नन বেনক শায়ন ধারা। मूहिरव (कगरन 30 নেতের বসনে এত বল আছে কারা॥ এখন তখন ভাহার জীবন ना हरन करकेत्र नानाः **Б**धीमारम करह তুরিতে চলহ বালা॥ 20 भाग्रसः, आवश्

দূতীর মধুরা-গমন।

क्षश्चिमे ।

ওহে ও কুবুজার বন্ধু।
পাসরেছ রাইমুখ-ইন্দু॥
ওহে ও পাগধারী।
পাসরেছ নবীন কিশোরী॥
রাই পাঠাইল নোরে।
দাসখত দেখাবার তরে॥
যাতে নোরা আছি সাখী।
পদতলে নাম দিলে লেখি॥
তুমি ত্রজ যাবে যবে।
করতালি বাজাইব সবে॥
বিজ চণ্ডীদাস ভবে।
গালি দিব যত আছে মনে॥

ं १०৮ शस्त्री।

খ্যাম শুকপাথী স্থার নির্খি त्रारे भतिल नयान कारमा। क्रमग्र-शिक्षद्र वाथिल मान्द्र মনোহি শিকলে বান্ধে॥ তারে প্রেম-স্থানিধি দিয়ে। তারে পুষি পালি ধরাইল বুলি ডাকিত রাধা বলিয়ে॥ কাটিয়ে আকুদি এখন হয়ে অবিশ্বাসী পলায়ে এসেছে পুরে।. সন্ধান করিতে পাইমু শুনিতে ১০ কুবুজা রেখেছে ধরে॥ আপনার ধন করিতে প্রার্থন রাই পাঠাইল মোরে। **ह** छीमांत्र बि**रक** ত্ৰ তজ্বিজে পেতে পারে কি না পারে॥ .

102

বিরহ-কাতরা বিনোদিনী রাই
পরাণে বাঁচে না বাঁচে।

নিদান দেখিয়া আসিমু হেখায়
কহিমু তোহারি কাছে॥
যদি দেখিবে তোমার পাারী।
চল এই ক্ষণে রাধার শপথ
আর না করিহ দেরি॥
কালিন্দী পুলিনে কমলের শেষে
রাখিরে রাইএর দেহ।
কোন সধী অক্তে লিখে শ্যাম-নাম ১০
নিশাস হেরয়ে কেহ।

কেছ কছে ভোর 1 বন্ধুয়া আসিল ্সে কথা শুনিয়া কাণে। को निम त्न हार्द्र মেলিয়া নয়ন দেখিয়া না সছে প্রাণে॥ 30 যমুনা পার যখন হইন্ম দেখিতু সখীরা মেলি। রাখে অন্তর্জলে যমুনার জলে রাই-দেহ হরি বলি॥ দেখিতে যদাপি সাধ পাকে ত্ৰ ২০ ঝাট্ চল ব্ৰজে যাই। विलन्न इंडेरल বলে চণ্ডীদাদে আর না দেখিবে রাই॥ ধিক্ধিক্ ধিক্ ভোরে রে ক। লিয়। কে ভোরে কুবৃদ্ধি দিল। কেৰা সেধেছিল পীরিতি করিতে মনে যদি এত ছিল॥ ধিক্ধিক্বকু লাজ নাহি বাস ৫ না জান লেহের লেশ। এক দেশে এলি অনল জ্বালায়ে क्वांबाइए बात (मण ॥ স্বগাধ জলের মকর যেমন না জানে মিঠ কি ভিত। চিনি পরিহবি ত্রস পায়স চিটাতে আম্লর এত। চণ্ডীদাস ভণে यद्यं द्रवत्र কহিতে পরাণ ফাটে। ভোমার সোনার প্রতিমা ধূলার গড়াগড়ি ১৫ কুবুজা বসিল খাটে॥.

ধিক্ধিক্ধিক্ নিঠুর কালিয়া -কে ভোরে এ বুদ্ধি দিল। কেবা সেধেছিল পীরিভি করিতে मत्न विम এउ हिल ॥ ধিক্ ধিক্ ধিক্ নিঠুর কালিয়া লাজের নাহিক লেশ। এক দেশে এলি অনল স্থালায়ে স্থালাইতে আর দেশ। জনম অবধি কালিয়া বদন ना भूलि लाटकत्र चाउँ रह। ব্ৰদ্ৰ-গোপী হতে মপুৱা নাগরী কত রূপে গুণে বটে হে॥ কিংবা কুবুজা নামে কুবুজিনী ভেঞি সে লেগেছে মনে। আপনি ধেন ত্রিভঙ্গ মুবারি ১৫ বিহি মিলাইছে জেনে॥ কিংবা কুবুজা গুণে গুণবতী গুণেতে করেছে বশ। কি জানে ষজিতে পীরিতি স্থথের किवां (म (त्र (अ एक राम ॥ পীরিতি করণ 🛭 যতেক ভোমারে তেমন পীরিতি হবে না। কুবুজার নাপ রাধানাথ বিনে কেহ ও ভোমারে কবে না॥ मदनत दवनना हर কি আর কহিব কহিতে যে ছখ পাই। কৰিতে বেদনা পরাণ ফাটিয়া বায়॥

ন্ট্ৰারারণ ৷

বন্ধু কানাই, ভোমার চরিত এত দূর। সে হেন কিশোরী রাধা তো বিসু হইয়া আধা তুমি কেনে এতেক নিঠুর॥ .চম্পকবরণী ধনী লাখ বাণ ছেম গণি त्म त्रांधा मिलन मूथहाँदि । গিয়া নিপ ভরুমুলে লোটাইয়া ভূমিভলে निर्मि पिमि भिग्ना वित कांत्म ॥ খলিত নয়নজলে সে অঙ্গ ভাসিয়া চলে ভিতে অঙ্গ নীলের বসন। খঞ্জন-নয়নী রাই কান্দিয়া আকুল তাই ১০ एकि एवन **अ**क्त वर्ग ॥ कीरत्र कि ना जीरत्र तारे कहिल তোমার ঠাই পরদশা আসি উপজিল। বড়ই কঠিন দেখি শুনহ কমণ আঁথি ভুরিত গমনে ভূমি চল। আছে যদি রাইএ কাঞ্চ তুরিতে দেখানে সাজ (पर्व गिया धनी वित्रशिशी। ভূয়া দরশন আশে তেঁই সে পরাণ আছে চণ্ডীদাস ভাল মতে জানি॥

130

সুহা-বেলয়।র।

স্থার বচন শুনিতে নাগর
বিস্মিত ইইলা বড়ি।
(বেমন দারুণ শোল পশি হৃদে
তেমনি নিখাস ছাড়ি॥
বাাকুল বিরহ বচন স্বরূপ ৫
চকিত্তনয়নে চার।
বাখাটি পাইয়া স্বেন নাগর

স্থী মুখ পানে 'চাহি কহে বাণী রসিয়া নাগর কান। রাধার সংবাদ পুন পুন কহ শুনিতে শুনিয়ে আন। স্থী পুন কহে আঁখি ভরি লোচে মোহেতে আকুল হয়ে। সে নব কিশোৱী তোমার বিরহে ১৫ আছেন মূৰ্চিছত হয়ে॥ ভোমার সঙ্কেত · भाषवी (मिथिया সেখানে নিদান রাই : সন্থিত না হয়ে মুদিত নয়ানে দেখিয়া আইমু তাই॥ মুখে বারি ঢারি পাগরি গাগরি নাহিক চেতন রাধা। দেখিয়ে বিষম বুঝিয়ে মরম যে কর মনেতে সাধা॥ তুরিত গ্মন করহ এখন ২৫ যদি বা দেখিবা এস। চণ্ডীদাস পুন আইলা তুরিতে শ্যাম স্থনাগর পাশ।

418

এ কথা শুনিয়া নাগর-শেখর
গদ গদ ডেল তমু।
কমল-নয়নে ধারা বরিখরে
মুগধ হইল কামু॥
শীত বসন ধরিয়া সখন ৫
মুছত নয়ন লোর।
দশমী দশার শেষ রব শুনি
ভাছাই হইল ভোর॥

ددن

শুনহ সজ নি	। কহিতে কি হয়ে		কেমন গোপের	রমণী যভেক	æ
শুনহ সন্ধনি । কহিতে কি হয়ে কেমন দেখিলে রাধা।		٥٠	কেমন বালক স্থা।		
নিশ্চয় কহিবে	আছে কি বাঁচিয়া		(कमन चाहिन	সে নন্দ যশোদা	٠,
আমার সে	া তমু আধা॥			হিকু দেখা ॥	
সে নৰ কিশোৱী	তারে কি পাসরি			' চাতর বাঞ্চার	
क्तरत्र बाहरत्र कांति।			কেমন আছ	হয়ে রীভি।	١٠,
সে ছেন পীরিতি	করিতে না পেয়ে	20	সে হেন যমুনা-	পুলিন কানন	
मनाइ উঠিছে আগি॥			পুরবাসিগণ	যভি ॥	
যারে না দেখিকে	ভিলেক না জীয়ে		কহ সেই বলি	বচন উত্তর	
बिया विनितिया मिति।			্শুনিভে পিয়ার বাণী।		
দেখিলে জুড়াই	সে মুখমগুল		কি ভার কহিব	স্থাইয়া দেখ	20
•	म ভোরি॥		চণ্ডীদাস ভ	ात कानि॥	
	গোঠে মাঠে ঘাটে		3	 >e_	
চরাই ধেমুর পাল।				উক্তি।	
পথের মাঝারে	কদস্ব-ভলায়ে		1 ১ ৬ ▼ান ড়া ।		
দান সির্বি	केन जा न ॥		তুমি হে নি	দয়া বড়ি।	
মধুর মুরলী	করিয়া অঙ্গুলী	૨ ૯		প্রেমের লছরী	
• वत्रदन भिण			কেমনে রয়ে	াছ ছাড়ি॥	
অারের মিশালে	ফঁকিয়ে রসালে		নিশি দিশি রাধা	কান্দিয়া বিকল	
नना बाधा			নয়ানে নাৰি	क चूम।	¢
সে নব নাগরী	কেমনে পাসরি		कारत किছू धनी	না কছে উন্তর	
শুনহ বচন	মের।	ಿ	िलक शः	प्रद्र खम् ॥	
छीनाम कर र	ভুরিত গমন		বদন–উপর	কর আচ্ছাদিয়া	
নহে বা হইবে ভোর॥			লোরেতে ড	রিয়া আঁখি।	
-				ভিতল সকল	>•
			আবেশে যে		
456			গিয়া ভরুবরে	कमय क्रा	١
वररे '			বলিয়া নবীন	বলিয়া নবীন রাই।	
भूरह भून भून	কৰ্ত স্থন	100.00	ভা দেখি বিবাদ	বাড়িল অন্তর্	•
সে বর-নাগরী-গুণ।			বিফলে কান্দিরে ডাই॥		>¢
পুনৰ হাদয়	ছুখ দূরে গেল		অন্ন কল কিছু	না চল্যে ভার	
, কৰে বসম	म्र भून ॥		সদাই তুহা	व शान्।	_
			•	, , , ,	

প্রিরা প্রিয়া বলি . কথা রস-কেলি কেণে কেণে হয় জ্ঞান ॥ খদি বা ভুরিত कत्रह शमन २० তবে সে মানিয়ে জাল। এ ৰখা শুনিতে রসময় কান वितर्द इडेल एल ॥ চণ্ডীদাস বলে শুন স্থনাগর ঐছন দেখিল রাধা। २० ভোমার বিরহে সে নব কিশোরী সোনাৰ বরণ আধা॥ . 939 ন্ট্রারারণ। শুন গো সঞ্জনি পরমাদ শুনি রাধার ঐছন দশা। বিরহে আকুল রসময় কান সঘনে নিশাস নাসা। করেতে আছিল মোহন মুরলী তাহা না পড়ল কতি। লোর বহি খনে কমল-নয়নে ভাসিয়া চলল তথি ॥ অঙ্গের সৌরভ এ চুয়া চন্দন ভূবণ কৌস্তু,ভ-মণি। এ সব ভিতিয়া চলল ভাসিয়া বিরহে চতুরমণি॥ সে মোর প্রেয়সী প্রেমময় রাধা শুধুই শুধার রাশি। माँजादग्र तमथरे ও মুখমগুল হেনক মনেতে বাসি॥ বাহার লাগিয়া বনে ধেন্দু রাখি ভাহার দরশ আদে। मधुक भूत्रजी गाँह निभि मिनि थित न्यूवन-त्यरम् ॥ ₹•

ঐছন বিরহ । নাগর-শেখর

'ক্ষণেক সম্বিত পায়।

তুরিত গমন চল বৃন্দাবন
চণ্ডীদাস গুণ গায়॥

1)৮

বেলাবলী।

রাইএর দশা স্থীর মুখে।
ভ্নিয়া নাগর মনের হুখে॥

রাহএর দশা সধার মুখে।
শুনিয়া নাগর মনের তুখে ॥
নয়নের জলে বহয়ে নদা।
চাহিতে চাহিতে হরল স্থী ॥
অব যতনে ধৈরজ ধরি।
বরজ গমন ইচ্ছিল হরি ॥
আগে আগুয়ান করিয়া তার।
স্থী পাঠায়ল কহিয়া সার ॥
এখনি আসিছি মধুরা হৈতে।
ইথে আন ভাব না ভাব চিতে ॥
১০
অধিক উল্লাসে স্থিনী যায়।
ব্যু চণ্ডীদাস তাহাই গায়॥

११३ ्मात्राति ।

চল চল যাব রাই-দরশনে
শুন গো মরম-সথি।
সে গোরী নাগরী কেমনে বিসরি
শয়নে স্থানে দেখি॥
মধুপুর বদি থাকয়ে একলা
সদাই ভাবিয়ে রাই।
নিশির স্থানে
সদাই সে গুণ গাই॥
বিসিতে রাধিকা গাইতে রাধিকা
শংগতে রাধিকা দেখি। ১০

ভোজনে রাধিকা ৷ গমনে রাধিকা সদাই ব্লাধিকা সাথী॥ হাস-পরিহাসে রাধার মহিমা महारे भड़रत्र मरन । কাহারে কহিব मत्नन (वषना ३० ञाशन मत्रदम कारन।। আন কি জানব হৃদয় পোড়ান সদা উচাটন চিত। মনে পড়ে ববে • রাধার মূরতি বাঁশীতে গাইয়ে গীত।। ২• কহিবে রাধারে তাহার অন্তরে महारे व्याहिएय वाँधा। করে করি কর জপিয়ে অস্তর এ তুই অক্সর রাধা॥ আগে যাহ সখি রাধার গোচর ২৫ কহিবে যতন করি। আমি গিয়া পুন দেখিব সে জন • চণ্ডীদাস কহে ভালি॥ আই সেই সথী ভেটে চন্দ্ৰমুখী শুন সুখমই রাধা। শুনহ সংবাদ মুখ তুলি চাহ না কর ভিলেক বাধা॥ মুখ তুলি রাই ু সধী পানে চাই ৫ কহত শ্রামের কথা। শুনি কিবা রীভি তাহার পীরিতি খুচুক হিয়ার ব্যথা॥ -কহ কহ শুনি অনুড়াক পরাণী কেমনে আছয়ে পিয়া।

.कर तिथि रहशा হুখের বারতা শুনিয়া জুড়াক হিয়া। কহে সেই স্থী শুন চন্দ্ৰমূথি : শ্যামেরে দেখিয়ে আমু। কহিতে কহিতে ' শ্রামের কাহিনী ১৫ মনের হুতাশে মসু॥ তোমার কাহিনী শুনি গুণমণি কান্দিয়া আকুল বড়ি। নয়নের লোরে বহি চলে কোড়ে সঘনে নিশ্বাস ছাড়ি।। মথুরা নগরে বসি এক স্থিতে নিভূত হইয়া কান। মোরে বেরি বেরি পুছয়ে সে হরি তোহারি গুণের খ্যান। কৃহ কৃছ আগে রাধার কাহিনী ২৫ সে অঙ্গ আছুয়ে ভাল। শুনিতে শুনিতে দশার কথন কামু সে হইল ঢল॥ তাদর পীরিভি কত বা কহব তুয়া পুরসঙ্গ বিনে। সে বর নাগর আন নাহি জানে मीन हखीमांत्र छट्ण ॥ २८। थान...णायान-वर्गा। 125 কানড়া ৷

রাই, বড় সে দেখিল বিপরীত।

ুসে নব নাগর কান ডোমারে কেবল মন

, দেখিল সদয় অভি চিত॥

বিরহ-বেদন-শরে ভেল ত**সু জ**রে **জ**রে আনন ক**হিতে** নাহি আনে। • **৫**

পুলক মানয়ে চিত শুনিতে ভোমার রীত লোরে অ'থি হরল গেয়ান॥ তোমার মাধুরী গুণে প্রবণ পরশি শুনে মোহিত হুইল কলেবর। কেবল ভোমার নাম 'নিরবধি জপে শ্রাম ১০ কাঁপে তুটি অধর স্থন্দর॥ অতি ভেল বিরহিণী শুনিয়া সখীর বাণী কহ কহ শুনি পিয়া-গুণে। সোনার পুথলি ঐছে অবনীতে লোটাইছে ধারা বহে এ ছই নয়নে। কেমন নাগরী নারী क्रमन मधुता श्रुती कह (मिथ गत्रम-मजनि। কেমন কুবুজা নারী শুনিব শ্রবণ ভরি কত রূপ সে জন মালিনী॥ তা সনে পীরিতি করে মুগধ রসিকবরে ২০ শুনিয়াছি পর লোকমুখে। এত কি সহিতে পারি মনে সে গুমরি মরি জনম গোঙামু এই চুখে। উঠিল দারুণ মান এই অতি ভেল মান পিয়া কি * * # এত দূর। মিলব নাগরমণি **ह** श्रीमांत्र करह थनि হব তুয়া মনোরথ পুর॥

> १२२ शाननी।

শুনি ধনী মুরছিত ভেলি।
নোঙরি সে অধ-রস-কেলি॥
পিরা-শুণ কুরিতে ঝুরিতে।
পুলকিত ভেল হিয়া চিতে॥
পড়ল ধরণীতলে গোরী।
মুছল লোর অতি ভোরি॥

(मा शृंह विमेग्ध तांग्र। মধুপুর রহল ছাপার।। এত কি সহিব কুলবালা। এ অতি বিরহকি জালা।। ٥٤ সোনব নাগর স্থজান। ছোডল মোহ অবিধান।। য়ব ভেল কুবুজাক সঙ্গ। তব ভেল সব সুখ-ডঙ্গ ।। এ সখি তোরে বলি ব্যথা। 10 সাজাহ দারুণ অতি চিতা॥ এ দেহ করিব ছারখার। কে এত সহিব স্বপ্পাল।। **ह** धीमांत्र करह श्रून रवांत । নাগর মিলব আসি কোড়॥ 2. ৮। ছाপाय... जुकारेया। ১২। মোহ...(अह- अक्वांग्रत्तां श्रेष्ट्र हाष्ट्रिनां हिन।

120

अर्हे-तिलाहात।

শুনিয়ে রাধার বাণী স্থী কহে ভালে জানি সকল কহিয়ে ভালমতে। শ্রবণ ভরিয়া শুন বিষাদ ভাবিছ কেন বুঝিয়ে করিবে যাহা চিতে।। মোরে সে ভেজল কান আইল ভোমার স্থান ৫ রাধারে তুষিবে ভালমতে। পেয়ে দশ্মীর দশ। ু পাছে হবে ফণভাষা তুরিতে চলিয়ে যাহ পথে॥ পাছে ধনী তেক্তে প্ৰাণ পাইয়া বিরহ-বাণ তেঁই আমি আসিল ভূরিত। ঘাইৰ গোকুল-মাৰ কহিলা নাগররাজ (मिथव त्म (श्रममह त्रीष्ठ ॥

গশ্চাতে গমন সাধে 'শুন স্থমই রাধে পুন পাবে ভাহার মিলন। শুন শুন আমার বচন ৷ সঙ্গত করিয়া বাণী আসিব সে গুণমণি হেন দশা কবে হবে মোর। পেয়ে সে নাগররাজ সাধিব আপন কাজ करव रम कत्रन निक रकाए।। সখীর বচন শুনি হর্ষ হইল ধনী পরশ করিব আমি যবে। তবে সে মনের সিদ্ধি যদি মিলায়বে বিধি চণ্ডীদাস স্থাই হব তবে॥ ১१। कथा चकुमाद्र काक कवित्रा। त्राशक्रिक्षत्र भिलन। 138

धाननी ।

. जरे, कानि कूपिन रूपिन एडल। তুরিতে আওব মাধ্ব মন্দিরে কপাল কহিয়া গেল।। ় বসন খসিছে চিকুর ফুরিছে পুলক যৌবন-ভার। বাম অঙ্গ আঁখি সঘনে নাচিছে ছুলিছে হিয়ার হার॥ প্রভাত সময়ে কাক কোলাকুণি আহার বাঁটিরা খায়। নাম স্থাইতে ১০ পিয়া আসিবার উজিয়া বিদল তায়॥ খসিয়া পড়িছে মুখের তাস্থ্ল (मरवत्र माथात्र कृत।

চণ্ডীদাস বলে ৰিহি ভেল অমুকুল।

ऋरहे-द्वनप्रात्र।

এক সধী আসি হেনক সময়ে হাসি হাসি কহে কথা। উঠ উঠ ধনি ও চাঁদ-বদনি ঘুচাহ মনের ব্যথা॥ भव पृद्ध (भन ৫ তব ত্ররদিন উঠিয়া বৈসহ রাই। নিকটে আওল তোমার মাধ্ব দেখহ নয়ন চাই ॥ এ সব বারতা শুনি শুভকথা আনদ্দে পুরল হিয়া। চাহিতে সঘনে চকিত-নয়নে

সম্মুখে দেখন প্রিয়া॥ এস এস বলি **্ছটি বাহু ভূলি** हामिया कश्य कथा।

মিলায়ল নিধি ১৫ চিরদিনে বিধি ঘুচিল মনের ব্যপা॥ স্ব স্থা মেলি জয় তলাত্রি দেওয় দোঁহার পাশ। দেখিয়ে বিজেব অনিন্দ-সাগর

ভাব-সন্মিলন।

खन शांत्र हछोमात्र ॥

(नलानजी।

° নন্দের নন্দন চতুর কান। भिनम व्यागिया क्रम्रय कान ॥

>.

30

₹ •

যাহার যেমন পীরিতি গাঢ়া। তাহারে তেমতি করিলা বাঢ়া॥ মথুরা হৈতে এখনি হরি। **षारें**न वित्रा भवन कति॥ আপনু ঘরে আপনি গেলা। পিতা মাতা জমু পরাণ পাইহা॥ কোলেতে করিয়া নয়ান-জলে। **(**महन क्रिया कैं। पिया वटन ॥ আর দুরদেশে না যাবে তুমি। বাহির আর না করিব আমি॥ এত ৰলি কত দেওল চুম্ব। বারে বারে দেখে মুখারবিন্দ ॥ এছন মিলল সখল সথা। আর কত জন কে করু লেখা। খাওয়াইয়া পিয়াইয়া শোয়াল ঘরে। ঘুমাক বলিয়া যতন করে॥ তখন বুঝিয়া সময় পুন। আ'ওল যমুনা-তীরক বন॥ রাইয়ের নিকটে পাঠাইল দুতী। বড়ু চণ্ডীদাস কহয়ে সতি॥

121

সুহই।

কেশপাশ দিয়া চরণ মুছায়ে
বিচিত্র পালকে লই।
আতি স্থাসিত বারি ঢালি রাধা
ধোরল চরণ ছুই॥
মুগমদ ভরি চন্দন কটোরি
অগোর ভিমির তায়।
মনের মানসে স্নাগরী রাধা
লেপিছে শ্যামের গায়॥

নানা ফুলদাম অতি স্থূপোড়ন গলে পরাইল রাধা। রূপ নিরীক্ষণ कदत्र चरन चन তিলেক নাহিক বাধা। কানুর শ্রীমুখ বেন শশধর যেমন পূর্ণিমার শশী। পাই নিরস্তর ১৫ রাই সে চকোর পিবই অবশ রাশি॥ চণ্ডীদাস কহে হেন মনে করি শুনহ কিশোরী রাধে। পাশ আস দিয়া মনের মানসে ष्ठ्रि करत्र रयन वारक्ष ॥

১৬। অবশ অর্থাৎ আত্মহারা হইয়া প্রচুর পরিমাণে পান করিতেছেন।

> १२४ श्रृहरू ।

কিয়ে শুভ দরশনে উলসিত লোচনে

তুঁহু দোঁহা হেরি মুখহাঁদে।

তৃষিত চাতক নব জলধরে মিলল

তুখিল চকোর চাঁদে॥

আধ নয়ানে তুঁহু রূপ নিহারই

চাহনি আনহি ভাতি।

রসের আবেশে তুহু অঙ্গ হেলাহেলি

বিছুরল প্রেম সাঙ্গাতি।।

খ্যাম সুখময় দেহ গোরী-প্রশে সেহ

মিলারল বেঁন কাঁচা ননী।
রাই তমু ধরিতে নারে আলাইল আনন্দভরে
শিরীশ-কুস্ম কমলিনী ॥
অতসী কুস্ম সম সম শুমাম স্থনায়র

৩বা কুন্থৰ বৰ সম শ্ৰাম স্থ্ৰায়র নায়রী চম্পক গোর।

ं ठाँप आरगात्रम ১৫ নব জলধরে জন্ম ঐছে বহল শাম কোর॥ কুম্ভল শিখি চন্দ্ৰক বিগলিত কেশ বিগলিত নিতল নিচোল। ভাসল নিধুবন তু হুক প্রেমরসে উছলল প্রেম হিলোল॥ তু হু রূপ নির্থিতে চণ্ডীদাস কৰে विছুत्रल देश भन्नकोल। শ্রাম স্থবড়বর ' স্থুন্দর রসরাজ कुम्बती भिन्हे त्रमान ॥ । ज्रिम...कृशार्छ।

9 8 3

सूर्हे।

वंधुत्रा मिलल घटत শতেক বরষ পরে রাধিকার অন্তরে উল্লাস। शक्रांनिधि পारेयू विल लहेशा सपरम जूलि রাখিতে না সহে অবকাশ। ំ মিলল ফুঁছ তমু কিবা অপরূপ। চকোর পাইল চাঁদ পাতিয়া পীরিতি-ফাদ कमलिनी পांखल मधूপ ॥ ' থর ধর কাপই রপভারে ছুঁছ তমু ঝাপই ছুঁহু দোঁহা আবেশে ভোর। নিভায়ল আনল ১০ হু ছক মিলনে আজি পাওল বিরহক ওর॥ रेवर्रम घूँ र जन রতন-পালক-পর ছু তু মুখ ছেরই ছু ছ আনন্দে। হরষ সলিলভরে হেরই না পারই व्यनित्मरव दश्ल थरना। আজি মলয়ানিল মৃত্ মৃত্ বহত नित्रमण हैं। ए क्षेत्राम ।

ভাবভরে গদ গদ চামর দুলারত পাশে বহি চণ্ডীদাস ॥

190

चर्रे । ভাবোলাসে ধনী বঁধুরে পাইয়া ভাবে গদ গদ কয়। ব্ৰঙ্গ-পীরিতের अमोभ कानिया मोभ कि निভাতে হয়॥ কালিয়া কুটিল স্বভাব তোমার কপট পীরিতি যত। ভুক় নাচাইয়ে মুচকি হাসিয়ে অবলা ভুলাইলে কত। পীরিতি-রদের রসিক বোলাও পীরিতি বুঝিতে নার। যত নাগরীর মথুরা নগরের পীরিতের ধর ধার॥ মথুরা বিহারী শুন গিরিধারী নারী-বধে নাহি ভয়। তোমারে ভ**জিলে** ১৫ পীরিতি করিয়ে लार्य कि এই मना दग्र॥ **किन मगिधिल** পীরিতি করিলে वित्रश्-दिष्मा पिरत्र । কালিয়া কঠিন দয়াহীন জন তোর নিদারুণ হিয়ে। পীরিতি মম্ভা সোই রসিকতা সমতা হইলে রাখে। রসের গঠন পীরিভি রতন कृषिनाएं नाहि थारक । পীরিতির দায় প্রাণ ছাড়া বার ২৫

শীরিভি ছাড়িতে নারে।

পীরিভি-রবের পারে।
বি'জনা রসিক রসে চর চর
মরমী বে জন হয়। ৩০
হেরে রে রে করে ধবলী চরার
সে জনা রসিক নয়॥
রসিকের রীতি সহজ সরল
রাধালে তাই কি জানে।
চণ্ডীদাস কহে রাধার গঞ্জনা ৩৫
স্থা সম কামু মানে॥

ত্বহ है। শুন শুন হে রসিক রায়। তোমারে ছাড়িয়া বে হুখে আছিনু নিবেদি বে ভূয়া পায়॥ मा कानि कि करण কুমতি হইল গৌরবে ভরিয়া গেন্তু। তোমা ছেন বঁধু হেলায় হারায়ে यूत्रिया यूत्रिया मन्त्र ॥ क्रम अवधि মায়ের সোহাগে সোহাগিনী বড় আমি। প্রেয়-সখাগণ দেখে প্রাণসম ১০ পরাণ-বঁধুয়া তুমি ॥ স্থাগণে কহে শ্যাম-সোহাগিনা शब्द खब्द (प হামারি গৌরব তুঁত বাঢ়াইলি चव पूँठोत्रव (क ॥ ভোহারি গরবে গরবিনী হাম

्गतरम् अत्रम क्रूम ।

চণ্ডীদাস কৰে : এমতি নহিলে
পীরিতি কিসের স্থুখ ॥ :
২। তোমা উপেধিয়া বে স্থুখে গোঞাইমু—পাঠান্তর।

9:00

ज्यानी।

वह पिन भरत वैधुया এলে। দেখা না হইত পক্ষাণ গেলে॥ এতেক সহিল অবলা বলে। ফাটিয়া যাইত পাষাণ হলে॥ ছখিনীর দিন ছখেতে গেল। মপুরা নগরে ছিলে ত ভাল। এ সব ছখ কিছু না গণি। ভোমার কুশলে কুশল মানি॥ এ সব ছখ গেল হে দুরে। হারাণ রতন পাইলাম কোড়ে॥ এখন কোকিল আসিয়া করুক গান। অমরা ধরুক তাহার তান। मलग्र भवन वहक मन्द्र। গগনে উদয় হউক চন্দ॥ वास्त्रनी ञारमर्ग करह हखीमारम। 10 ছ্থ দুরে গেল স্থ-বিলাসে॥

9 00

রামকেশী।

বঁধু, ছাড়িয়া না দিব ভোৱে।
মরম বেখানে রাথিব সেখানে
হেন মোর মনে করে।
লোক হাসি হউ বায় জাতি বাউ
তবু দা ছাড়িয়া দিব।

ভূমি গেলে বদি 🕴 শুন গুণনিধি অানের আনেক . আছে কত জন আর কোথা ভুয়া পাব ॥ রাধার কেবল ভূমি। ৰ্বাথি পালটিতে নাহি পরতীতে ও ছটি চরণ শীতল দেখিয়া 🦠 থুইতে সোয়ান্তি নাই। শরণ লইসু আমি।। চণ্ডীদাস বলে তন স্থনাগর এখন মরণ দশা উপজল ১০ জুড়াব কোন বা ঠাই॥ রাধারে না হও বাম। লোকমুখে শুনি ভোমার মহিমা কাহারে কহিব কেবা পিত্যাইব আমার যাতনা যত। সরল পঞ্চর নাম।। (?) ভোমার কারণে - এভেক সহিয়ে নহে পরমাদ হত॥ 36 সিম্বুড়া। রাধার বচন শুনি স্থনাগর ^কি জানি ভক্তি ভোমার পীরিতি गम गम (खना (महा। অবলা কুলের বালা। আমি সে তোমার প্রেমে আছি বশ স্থজন দেখিয়া পীরিভি করিমু মরমে বেঁধেছি লেহা॥ পরিণামে হল জালা॥ চণ্ডীদাস কয় তুঁহু এক হয় ২০ অবলা জনের দোষ না লইবে ৫ ইহার না হয় ভিমু। তিলে কত হয়ে দোষ। বিহি সে বলিয়া তু'ত মিশাইরা তুমি দয়া করি কুপা না ছাড়িছ • গড়ল একই তমু॥ মোরে না করিছ রোষ।। ১২। ,পিত্যাইব...বিশ্বাস করিবে। তুমি সে পুরুষ- ভূষণ শকভি সকল, সহিতে হয়। ১০ कारमान । কুলের কামিনী লেহ বাড়াইয়া বন্ধু, কি আর বলিব আমি। তোমা হেন ধন অমূল্য রতন ছাড়িতে উচিত নয়।। তিলেক না দেখি ७ ठाँ प्रवादन তোমার তুলনা তুমি ॥ मन्राम मनिया थाकि। ভূমি বিদগধ গুণের সাগর हरा नम्र हेह। দেশ স্থাইয়া ১৫ রূপের নাহিক সীমা। চণ্ডীদাস আছে সাধী॥ গুণে গুণবতী , বেন্ধেছ পীরিডি অথল ত্রজের রামা।। ভাতি কুল দিয়া আপনা নিছিয়া গড়া। • वैंधू, जूमि निषाक्त नाम । শরণ লইয়াছি। বে কর সে কর তোমার বড়াই ১০ তোমার কারণে এড পরমাদ এ দেহ সঁপিয়াছি।। निक्या करिनाम करत्र ॥

(बारन करिव .	কহিতে কহিতে	পরাণ হইতে	শত শত গুণে	١.	
বিশুণ উঠয়ে ছুখ।		৫ অধিক করিয়		•	
বেশন আমার	ফাটিয়া পড়য়ে	আনের আছয়ে	আন জন বঙ		
এমতি ক্লব্বয়ে বুক।।		আমার পরাণ	আমার পরাণ ভূমি।		
यपि कानथात	কান্দি লোকস্থানে	ভোমার চরণ	শীতল জানিয়া		
শাশু ড়ী ননদী তারা।			ই আমি ।।	56	
খ্যাম-নাম বলি	कारम कलिकनी >	• গুরু গরবিত	তারা বলে কত		
এমতি তাহার ধারা ।।		সে সব গৌর	সে সব গৌরব বাসি।		
	শুনি কুবচন	তোমার কারণে	• এত না সহিয়ে		
গরল ভথিয়া মরি।		ছুকুলে হইল	ছুকুলে হইল হাসি।।		
ভার নাহি দায়	শুন শ্রামরায়			၃.	
তোমারে ছ	াড়িতে নারি।। ১	৫ রাধার আর্			
তোমা হেন ধন	ছাড়িব কেমনে	পীরিতি-রসের	চূড়ামণি হয়ে		
তোমা কারে দিয়া যাব।			রসেতে রসিয়া রাখ।।		
ठ छीमांग करह	न्थन विरनामिन	৩। পতি…বন্ধু—	পাঠান্তর।		
আর কোণ	। (भटन भाव ॥	४। वहच्यनक			
১৪–১৫। মবিতে কে	ান কট্ট নাই। তবে ছঃখ	৮। • निर्धि धरन			
	রিয়া যে তোমাকে ছাড়িতে	३७। अधावकःः अधावि			
रहेर्द ।	and of out the cities	אין ניוואייייואין	_		
	MANUAL SILI	১৮। এত না সহিছে গো			
•	109	২০-২৩। চ ঙীদাস বলে রাণার মিন			
	1	শীরিভি-র সে র			
			রে থাক ।—পাঠান্তর।		
	ার বলিব আমি। জীবনে মরণে		-		
		9.91			
	হইও তুমি।।	ণাৰ			
		নাই কৰে শুন			
		e আর্ডি রসের			
ना जानि कि कर्	(मथा खर मान्, ,	আন কে বা জানে	मध्यम नायूमा		

বুঝিভে পারয়ে কেছ।। পীরিভি শাঁথরে বে জন পুরিভ ৫

किছू किছू जात्न त्नर।

তেঁই সে পরাণে মরি।।

বড় শুড়ক্ষণে ভোমা হেন নিধি ' বিধি মিলারল জানি। 🖏দের রসিক 🌎 রসে আবোপিত সেই সে জানয়ে সেহ। কোন কুলরামা পীরিতি না জানে সে জন আছয়ে ভাল। মুঁই সে পীরিতি করিয়া পশিসু এ দেহ হইল কাল॥ কায় মন চিতে ও রাঙ্গা চরণে শরণ লয়েছে রাধা। খর বাহ্মিয়াছি ১৫ এ হেন স্থাধের 🕟 তাহা কেন কর বাধা॥ পীরিতি রতন অনেক যুত্ৰে ভাঙ্গিতে তিলেক পারি। গড়িতে বিষম অভিশয় শ্রম শুনছ প্রাণের হরি॥ ২০ চণ্ডীদাস বলে এমন পীরিতি শুনিতে জগৎ বশ। দৌহে সে জানয়ে দৌহার তত্ত্ব ॰ আন কে জানয়ে রস।

> **10**৯ সৃষ্ট ।

বঁধু, কি আর বলিব আমি।
মরণে জীবনে জনমে জনমে
প্রাণনাথ হৈও তুমি ॥
ডোমার চরণে আমার পরাণে
বাঁথিল প্রেমের ফাঁসি। ৫
সব সমর্পিরা একমন হৈয়া
নিশ্চর হইলাম দাসী॥
ভাবিয়া ছিলাম এ তিন ভূবনে
আর মোর কেহ আছে।
রাধা বলি কেহ শুধাইতে নাই ১০
দাঁড়াব কাহার কাছে॥

এ কুলে ও কুলে ছুকুলে গোকুলে আপনা বলিব কায় i শীতল বলিয়া শরণ লইকু ও ছটি কমল পায় ॥ ना ठिलर इत्ल व्यवना सथतन বে হয় উচিত তোর । ভাবিয়া দেখিমু প্রাণনাথ বিনে গতি যে নাহিক মোর॥ আঁখির নিমিখে বদি নাহি দেখি ২০ ্তবে সে পরাণে মরি। ্চণ্ডীদাস কহে পরশ-রতন গলায় গাঁথিয়া পরি॥ ৬.१। জাতি কুল শীল সকল মজাঞা হইমু তোমার দাসী।—পাঠান্তর। ১৬-२०। व्यवना व्यथल मा (ठेन हत्राप क्रिव नाहिक ५व। व्यवनात कि विश्व का कि **ক্ষমিতে উচিত তোর**॥ कत्रि निर्वतम গলায় বসন শুন হে বৃদিক রায়। ক্লতীদাস কৰে অনুগত খনে 🗕 হাড়িতে উচিত নয়। —পাঠান্তর।

लार्टक कद्ध अभवन ॥ '

বদন থাকিতে না পারি বলিতে
তেঁই সে অবলা নাম।
নাম থাকিতে সদা দরশন ১০
না পোলাম নবীন শ্রাম ॥
অবলার যত ছখ প্রাণনাথ
সব থাকে মনে মনে।
চণ্ডীদাস কয় রসিক যে হয়
সেই সে বেদনা জানে॥ ১৫

183 युर्हे ।

वँधू, कि बात विनव शामि। যে মোর ভরম ध्वम क्वम সকলি জান হে তুমি॥ না জানি আপনা যে ভোর করুণা আনন্দে ভাসি বে নিতি। তোমার আদরে সবে স্নেহ করে বুঝিতে না পারি রীতি॥ মায়ের যেমন বাপার তেমন ভেমতি বরজ পুরে। मशीत जामरत भन्नाग विमरत ১० সে সব গোচর তোরে॥ সতী বা অসতী তোহে মোর মতি ভোহারি আনন্দে ভাসি। ভোহারি বচন সালকার মোর ভূষণে ভূষণ বাসি॥ 20 **इ**शीमारम वंदन শুন হে সকলে विनयं-वहन जात है বিনয় করিয়া ৰচন কছিলে ় তুলনা নাহিক ভারু॥

१ १८२ वर्रे ।

वंधू, कि स्रात्र विश्व (ভाরে। . অলপ বরুদে পীরিতি করিয়া त्रहिष्ड ना मिनि चरत ॥ কামনা করিয়া সাগরে মরিব • সাধিব মনের সাধা। মরিয়া হইব **बीनत्मत्र नम्पन** ভোমারে করিব রাধা॥ পীরিতি করিয়া ছাড়িয়া যাইব রহিব কদস্বতলে। जि**ड क्र द्वारे**या भूतनी वाकाव ১० যখন যাইবে জলে॥ মুরলী শুনিয়া সহজ কুলের বালা। চণ্ডীদাস কয় তখনি জানিবে পীরিতি কেমন স্থালা॥ 10

> १४० यहरे।

শুন স্থনাগর করি জোড় কর

এক নিবেদিয়ে বাণী।

এই কর মেনে ভাঙ্গে নাহি বেনে

নবীন পারিতিখানি॥

কুল শীল জাতি ছাড়ি নিজ পতি ৫

কালি দিয়ে ছাই কুলে।

এ নব বৌবন ' পরশ-রতন

সঁপেছি চরণতলে॥

ভিন হি আঁখর করিয়ে জাদর

শিরেতে লয়েছি আমি। >•

অবলার জাশ না কর নৈরাশ

স্দাই পুরিবে তুমি॥

তুমি রদরাজ . রসের সমাজ কি আর বলিব আমি। চণ্ডীদাস কচে জনমে জনমে কমমে ১৫ বিমুধ না হও তুমি॥

> 988 शनगी।

নিবেদন শুন শুন বিনোদ নাগর।
তোমারে জজিয়ে মোর কলক অপার॥
পর্নবত সমান কুল শীল তেয়াগিরা।
ঘনের বাহির হৈলাম তোমার লাগিয়া॥
নবরে নবরে নব নবখন-শুসাম।
কি দিব কি দিব বঁধু মনে করি আমি।
যে ধন তোমারে দিব সেই ধন তুমি।।
তুমি আমার প্রাণ-বঁধু আমি হে তোমার।
তোমার ধন তোমারে দিতে ক্ষতি কি আমার॥ ১০
বিজ্ঞ কিণ্ডাদাসে কহে শুন শ্যামধন।
কুপা, করি এ দাসীরে দেহ শ্রীচরণ॥

^{হংই।} বঁধু, তুমি সে পরশ-মণি হে

তুমি সে পরশ-মণি।
ও অঙ্গ-পরশে এ অঙ্গ আমার
সোনার বরণখানি।।
তুমি রস-শিরোমণি ছে
বঁধু, তুমি রস-শিরোমণি।
(মোরা) অবলা অথলা আহিরিণী বালা

ভো সেবা নাহি ন্সানি ॥ ভোঁছার লাগিল্লা ধাই বনে বনে

ञ्चन-राम भन्नि रहे।

(এক) ডিলে শত যুগ দুরশনে মানি
চেড়ে কি রইতে পারি হৈ।।
আঙ্গের বরণ কস্তুরী চন্দন
(আমি) হুদুরে মাখিয়ে রাখি।
ও ছুটি চরণ পরাণে ধরিয়া ১৫
নয়ান মুদিয়া থাকি ।।
চণ্ডীদাস কহে শুন রসবতি
তুঁকু সে পীরিতি জান হে।
বঁধু সে তোমার এক কলেবর
ছুঁকু সে এক প্রাণ হে।। ২০

786 यहरें।

বঁধু, ভূমি সে আমার প্রাণ। (पर मन वापि ভোহারে সঁপেছি कूल नील कांछि मान।। ভূমি হে কালিয়া অখিলের নাণ (यांशीब आंद्रांधा धन। গোপ গোয়ালিনী হাম অতি হীনা না জানি ভক্তন পূজন।। পীরিতি-রসেতে ঢালি তমু মন দিয়াছি ভোমার পায়। ভূমি মোর পত্তি ভূমি মোর গভি ১০ মন নাহি আন ভায়॥ কলন্ধী বলিয়া ডাকে সব লোকে তাহাতে নাহিক হুখ। ভোমার লাগিয়া গলায় পরিতে স্থা। ভোমাতে বিদিষ্ স্তী বা অসতী जान मन्म नाहि जानि। পাপ পুণ্য সম কহে চণ্ডীদাস

ভোহারি চরণখানি।।

শুহই।

পরাণ-বঁধুয়া অনেক সাধের नग्रांत नुकारम् (थाव। প্রেম-চিন্তামণির শোভা গাঁথিয়া হিয়ার মাঝারে লব॥ তুমি হেন ধন দিয়াছি যৌবন কিনেছি বিশাখা জানে। অধিকার কার কিনা ধনে আর এ বড় গৌরব মনে॥ বাড়িতে বাড়িতে ফল না বাড়িতে গগনে চড়ালে মোরে। গগন হইতে ভূমে না ফেলাও এই নিবেদন তোরে॥ এই निरंत्रमन গলায় বসন দিয়া কহি শ্রাম পায়। कौरन मत्ररंग ১৫ চণ্ডাদাস কয় না ঠেলিবে রাঙ্গা পায়॥

186

युर्हें।

বঁধু হে, নয়নে লুকায়ে থোব।
প্রেম-চিন্তামণি রসেতে গাঁথিয়া
কাদয়ে তুলিয়া লব॥
শিশুকাল হৈতে আন নাহি চিতে
ও পদ করেছি সার।
ধন জন মন জীবন যৌবন
তুমি সে গলার হার॥
শারনে স্থপনে নিজ্রা জাগরণে
কভু না পাসরি ভোমা।

অবলার ক্রটি : শত হয় কোটি ১০
সকলি করিবে ক্রমা ॥
না ঠেলিহ বলে অবলা অথলে
থে হয় উচিত তোর ।
ভাবিয়া দেখিলাম ভোমা বঁধু বিনে
আর কেহ নাহি মোর ॥ ১৫
তিলে আঁখি আড় করিতে না পারি
তবে যে মরি আমি ।
চণ্ডীদাস ভণে অমুগত জনে
দ্যা না ছাড়িও তুমি ॥

185

य्ह्हें।

শ্যাম-স্থন্দর শরণ আমার শ্যাম শ্যাম সদা সার। শ্যাম সে জীবন শ্রাম প্রাণ্ধন শ্যাম সে গলার হার ॥ শ্যাম বেশ মোর ৫ শ্যাম সে বেশর খ্যাম-শাড়ী পরি সদা। ভঙ্গন পূজন খাম তমু মন শ্যাম-দাসী হল রাধা ॥ শ্যাম জাতি কুল শ্চাম ধন বল শ্যাম সে স্থাপের নিধি। অমূল্য রতন শ্যাম হেন ধন ভাগ্যে মিলাইল বিধি॥ কোকিল ভ্রমর করে পঞ্চস্বর . বঁধুয়া পেয়েছি কোলে। হিয়ার মাঝারে রাখিহ শ্যামেরে ১৫ विक हजीमांग बरन ॥

20

বসিক পাইয়া থাকে ॥

রসে রস পুরি প্রেমের গার্গরি

সারুরে খুব্রিলে পাবে।. ১৩

প্রীকুষ্ণের উত্তর। ভাহার কারণে নন্দের ভবনে জনম লভিয়াছি । . . . 100 বর্ণ বর্ণ ভেদ রস চারু ুবেদ . কামোদ। ভেদ আছে নয় রস! ঈষৎ হাসিয়া বাই পানে চেয়ে চারু সে পল্লব ছয় ছয় গুণ ১০ কহে বিনোদিয়া কান। ইহা কি আনের বল। চাতুরী # * * তোমার মহিমা নবৰ্ত্তক(?) রতি আঠার প্রকার ইহা কে জানয়ে আন॥ পাঁচ গুণ তার হয়। পরম তুর্লভ আনন্দ কৈশোর ৫ তর ওম করি রসিক বুঝিলে नवीन किट्गांत्री त्रांथा। ঙ্গি সাধনে কয়॥ হিয়ায়ে হিয়ায়ে मद्राम मद्राम বুজ বুজ পুর অঞ্চের মহিমা .সদাই আছুয়ে বাঁধা॥ ভূমি সে ইহাতে রভি। ভোমার কারণে নদের ভবনে আট আট গুণ তটম্ব ইইলে রাখিয়ে ধেমুর পাল। বুঝিতে পারয়ে রীতি॥ গোলোক তেজিয়া গোকুলে বসতি এই সে মাধুরী ২০ চত্তাদাস কহে ইহাই জানিবে ভাল॥ ত্রজেশ্বরী প্রিয় রাধা। তোমার নামের মধুর মাধুরী অসীম চাতুরী দোঁহার পীরিতি . নিরবধি করি গান। প্রেমস্থধ্-রদে বাঁধা॥ রাধা বিনে সব স্থাখের বৈভব ১৫ ্ৰ মনেতে নাহিক আন। শ্যামের বচন শুনি চণ্ডীদাস न क्रमा-बड़ार्ति । আনন্দে ভাসেন কতি। এ রস-চাতুরী কি বা বুঝিব বেদে দিতে সীমা ভোমার মহিমা কেহ সে নারিয়াছে। কার লাছে এত গতি॥ २० ভব বিরিঞ্চির তার সগোচর (कश्र तम अभिग्राष्ट्र॥ কত শত শত ভাব অধুরত ৫ কু । ত্ৰ (य कन मिक्सा थारकः। রাই, তোমার মহিমা বড়ি। ্ৰোটিক গুটিক কোন একখানে গোলোক ডেঞ্জিয়া বৃহিতে নারিমু

¢

আইল তথায় ছাড়ি॥

্বুঝিতে নারিয়াছি।

রসতত্ত্বধানি আন অবতারে

নিয় গুণ বাবে লবে ॥

এ তিন তটক এ তিন বেকভ
শত গুণ যাতে বসি ।

তর তম করি বিচার করিলে ১৫

সেই এর অভিলাবী ॥

চণ্ডীদাস কহে গুণে গুণ মিশি

এ তিন বস্তু সাধে ।

আছে এক রতি তাহে নাহি গতি
এ ক্থা বুরিতে সাদে ॥ ২০

160

युक्ट ।

রাই, তুমি সে আমার গতি। ভোমার কারণে বসভত্ত লাগি গোকুলে আমার স্থিতি॥ নিশি দিশি বসি গীত আলাপনে भूत्रली लहेग्रा करत् । যমুনা-সিনানে ভোমার কারণে বসি থাকি তার:তীরে॥ মাধুরী দেখিতে তোমার রূপের কদম্ব-ভলাতে গাকি। শুনহ কিশোরি চারি দেখি ছেরি ১০ যেমত চাতক পাখী॥ তৰ রূপ গুণ मधुत्र माधुती সদাই ভাবনা মোর। করি অমুমান সদা করি গান তব প্রেমে হৈয়া ভোর॥ চণ্ডীদাস কৰে ঐছন পীরিভি সগতে আর কি হয়।

এমন পীরিভি ়ু না দেখি কখন কখন হবার নয়॥

8 । নিশি দিশি সদা বসি জালাপনে।...পাঠান্তর।

1 । বসিয়া থাকিয়ে ছলে। ... ,,

>২->৫ ৷ ভোমার সুরতি রাধা রূপথানি

হৃদরে বাদ্বিরাছি।

করে করে সদা ভোমা নিক মন্ত্র

উহাই জপিতেছি ৷ ... পাঠান্তর।

১৬-১৯ ৷ চণ্ডীদাস কহে হেন কি পীরিতি

কগতে আর কি হয় ৷

এমন আরতি নাহি দেখি কতি

ইহা না কহিলে নয় ৷ ... পাঠান্তর।

... পা

यश्हे ।

আর.এক বাণী रून विस्निष्ति मग्रा ना ছांडि ७ त्मारत । . . ভল্ন সাধন किड्डे ना जानि সদাই ভাবি হে ভোৱে॥ ভজন সাধন করে থেই জন ৫ ভাহারে সম্ম বিধি। আমার ভল্লন ভোমার চরণ তুমি রসমই নিধি॥ ধাওত পীরিতি মদন বেয়াধি তমু মন হল ভোর। সকল ছাড়িয়া *ে* ভোমারে ভ**জি**য়া এই দশা হইল মোর॥ নব সন্নিপাতি দারুণ বেয়াধি পরাণে মরিলাম আমি। ডুবায়ে আমারে ১৫ রসের সায়রে অমর করহ তুমি ।

বেবা কিছু আমি , সব জান তুমি
্তোমার আদেশ সার।
ভোমারে উজিয়া নায়ে কড়ি দিয়া
তুবে কি হইব পার॥ ২০
বিপদ পাথার না জানি সাঁতার
সম্পত্তি নাহিক মোর।
বাশুলী আদেশে কহে চণ্ডীদাসে
বে হয় উচিত তোর॥

१८८ स्रुष्टे ।

জপতে তোমার নাম বংশীধারী অনুপাম তোমার বরণের পরি বাদ। তুয়া প্রেম সাধি গোরী আইনু গোকুল পুরী বরজমশুলে পরকাশ॥

ধনি, ভোমার মহিমা জানে কে। ৫
অবিরাম যুগ শত গুণ গাই অবিরত
গাইয়া করিতে নারি শেষ॥
গঞ্জন-বচন ভোর শুনি স্থাখ নাহি ওর
স্থাময় লাগয়ে মরমে।
ভরল কমল আঁখি ভেরছ নয়নে দেখি ১০
বিকাইসু জনমে জনমে॥
ভোমা বিসু বেবা যত পাঁরিতি করিসু কত
সে শীরিতে না পুরল আশ।

100

ভোমার পীরিতি বিসু স্বতম্ব না হইল তমু

অনুভবে কৰে চণ্ডীদাস॥ ১৫

গৃহমাঝে রাধা কাননেতে রাধা সকলে রাধারে দেখি।
শয়নে ভোজনে গমনে রাধিকা
রাধিকা সদাই মতি॥

স্নেহেন্দ্রোধিকা প্রেমেতে রাধিকা রাধিকা আরতি পাশে 🖟 রাধারে ভজিয়া রাধাকান্ত নাম 🗽 : (পেয়েছি অনেক আশে॥ জ্ঞানেতে রাধিকা খ্যানেতে রাধিকা রূপেতে রাধিকা ময়। সর্ববাঙ্গে রাধিকা স্বপ্নেহ রাধিকা সর্বত্র রাধিকা ময়॥ আর্ডি ভক্তি খ্যামের বচন अनि तमगरे ताथ। এমন পীরিতি ১৫ চণ্ডীদাস বলে क्रमद्य क्रमद्य वैशि॥

> १८१ यश्हे।

উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশোরী किलाती इहेल माता। किट्गांती खबन किट्गांती शुक्रन কিশোরী নয়ানতারা॥ গৃহমাঝে রাধাু কাননেতে রাধা ৫ व्राधामग्र भव (मिष । শয়নেতে রাধা গমনেতে রাধা রাধাময় হল আঁখি॥ প্রেমেতে রাধিকা স্লেহেডে রাধিকা রাধিকা আরতি পাশে। রাধারে ভব্দিয়া রাধাবলভ নাম পেয়েছি অনেক আশে॥ माधुत्री छनित्र। শ্রামের বচন

চণ্ডীদাস কছে শোহার পীরিভি ১৫°় পরাণে পরাণে বাঁধা॥

(প্রমানদে ভাসে রাধা।

यहरे।

উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশোরী किल्गात्री गलात शत । কিশোরী ভঙ্গন কিশোরী পূজন কিশৌরী-চরণ সার॥ গমনে কিশোরী . শয়নে স্বপনে ভোজনে কিশোরী আগে। করে করে বাঁশী ফিরি দিবানিশি কিশোরীর অমুরাগে॥ কিশোরী-চরণে পরাণ সঁপেছি ভাবেতে হৃদয় ভরা। দেখো হে কিশোরি অমুগত জনে कर्त्रा ना ठत्रग-हाँछ।॥ কিশোরীর দাস আমি পীতবাস ইহাতে সন্দেহ যার। কোটি যুগ যদি আমারে ভলয়ে ১৫ বিফল জজন তার॥ কহিতে কহিতে রসিক নাগর ভিতল নয়ন কলে। চণ্ডীদাস কৰে নবীন কিশোরী वंशूरब कत्रिन काला॥ ₹•

कनानि ।

উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশোরী
কিশোরী নয়ান-তারা।
কিশোরী ভজন কিশোরী পূজন
কিশোরী গলার হারা॥
রাধে, ভিন না ভাবিহ তুমি। ৫
সব তেরাগিয়া ও রাঙ্গা চরণে
শরণ লইমু আমি।।

160

কাদি।

শুন স্থনাগরী রাই।
ভোমার মহিমা এ রস-চাত্রী
সদা মুরলীতে গাই॥

সদা মুরলীতে গাই ॥
সদা লই নাম অভি অনুপাম
করে নিশি দিশি জপি। ৫
রাধা নাম ছটি প্রেমের ক্লাকুর
আপন হৃদরে রোপি॥
উঠিতে বসিতে আন নাহি চিতে
নিরস্তর ভোমা দেখি।
বেন সে চাঁদের চকোর লালসে ১০

সদাই বসিয়া থাকি ॥
তেন মোর মন লুবধ চরিত
পরাণ ভোমার পাশে।
মনমধ হাতী অকুশ না মানে

পিও চাহে রস রোবে॥ >
চণ্ডীদাস কছে শুন স্থনাগর
আনে কি জানয়ে লেহা।
ফুঁত্ব সে জানয়ে দোঁহার মহিমা

ত্থে জানরে দোহার মাহম। আনে কি জানরে ইছা॥ गण्यः काकि।

অভি অসুপম ভোমার বরণ যে দিন না দেখি ভোয়। তুমি সে চম্পক **অ**তি মনোহর নিরখিতে আঁখি রোয়॥ ভোমার বেণীর চাঁচর চিকুর ৫ যদি বা পড়য়ে মনে। কাল জাদখানি . এলাইয়ে দেখি আপন মনের সনে॥ যবে পড়েমনে **শ্রীমুখমগুল** নির্থি গ্যন-শ্শী। ভার পানে চেয়ে ভারে নিরখিয়ে তবে নিবারণ বাসি॥ তোমার নয়ন চঞ্চল স্থন সেই সদা পড়ে মনে। তবে পুরে মন দেখি নিবারণ ১৫ • খঞ্জন পাখীর সনে॥ 😎ন রসময় কান্তু। গুই এক দেহ অভি বড় লেহ

165

তবে সে কাসনে (॰) মনে ॥

कानज़।

ভবে সে জুড়ায়ে मकल कतिया कानि॥ ভোমা হেন ধন থোব কোনখানে শুনহ স্বন্দরী রাই। নিশি দিশি ভোমা ধিয়াই অস্তরে আন কিছু মনে নাই॥ স্বপনে নিশিতে যুমাই যখন ভোমারে দেখিয়ে থাকি। **पिरिक पिरिक** ১৫ निर्प घरठ ७ न তখনি মিলয়ে সাঁখি॥ চাহিতে তখন স্থপন আপন কখন ইহাই নয়। তখনি উঠিয়া বিরলে যাইয়া অধিক ঘোষণা হয়।। চণ্ডীদাস কহে ঐছন পীরিভি জগতে পূরিত ভেল। দোঁহার পীরিতি আরতি শুনিতে मत्त बानिकड (छल ॥

রাই বিনে মনে সকলি আঁধার দেখিলে জুড়ায়ে আঁখি। তোরে রসমই যবে নাহি দেখি মরুমে মরিয়া থাকি॥

তোমার পীরিতি স্থধের জারতি '৫
তো বিনে নাহিক জান। ".
'তুরা সাধে রাধে পীডের বসন
পরিয়ে করিয়ে গান॥
তোমার মহিমা ও স্থধ গরিমা

রাধার জাঁধর ছটি।

শারি মৃত্তি ... করে কর ধরি
দিরবধি স্থাপি কোটি॥
রাধা বিনে যত সে সব নৈরাশ
আগবাস তুয়া পাশ।
ভূমি মন্ত্র তত্ত্ব তুমি স্থাকর ১৫
তুমি উপাসনা বাস॥
চণ্ডীদাস বলে বড় অদভূত
দোহার মহিমা রীত।
কেবা ইহা তত্ত্ব বুঝিব বেকত
যার আছে রসে চিত॥ ২০
১০। আশবাস আখাস।

রাগাত্মিক পদ।

168

নিত্যের আদেশে বাশুলী চলিল সহক জানাবার তরে। ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে নানুর গ্রামেতে প্রবেশ যাইয়া করে॥ চাপড় মারিয়া বাশুলী আসিয়া ठशौनारम किছु कग्र। সহজ ভজন করহ যাজন ইহা ছাড়া কিছু নয়॥ ছাড়ি ৰূপ তপ করহ আরোপ একতা করিয়া মনে। যাহা কহি আমি তাহা শুন তুমি শুনহ চৌষট্ট সনে॥ করিয়া একত্রে • • বস্থতে গ্রহেতে ভক্তৰ ভাহারে নিভি। বাণের সহিতে मनारे यूकिए७ ১৫ সহজের এই রীভি।

না যাবে কদাচিতে मिक्किन (मर्ग्गट े বাইলে প্রমাদ হবে। এই কথা মনে ভাব রাত্রি দিনে' व्यानत्म थाकिएव जरव ॥ রতি পরকীয়া যাহারে কহিয়া সেই সে আরোপ সার। ভজন তোমারি রজক-ঝিয়ারি রামিণী নাম যাহার॥ বাশুলী আদেশে কহে চণ্ডীদাসে ২৫ শুন হে দ্বিজের স্থত। এ কথা লবে না না জানে যে জনা সেই সে কলির ভূত॥

110

চণ্ডীদাস কৰে শুনহ মাতা। কহিলে আমারে সাধন-কথা ॥ o সাতাশি উপরে তিনের স্থিতি। সে তিন রহয়ে কাহার গতি॥ এ जिन प्रशास्त्र कि नीम रग्र। कि वीक शांधिया शांधक कय ॥ রতির আকৃতি বলিরে যারে। রসের প্রকার কহিব মোরে॥ कि वीक माधित माधिव त्रि । কি বীক ভজিলে রসের গতি॥ 5 मामाग्र बंजिएज वित्मव मार्थ। সামাক্ত সাধিতে বিশেষ বাধে॥ সামান্ত বিশেষ একডা রভি। এ কথা শুনিয়া সম্পেছ মতি॥ সামান্ত রভিতে কি বীক হয়। বিশেষ রভিতে কি বীজ কয়॥ '

२०

30

20

२०

সামাশ্য রসকে কি রস বাজে।
কি বীজ প্রকারে বিশেব মজে।
তিনটি ছরারে থাকরে যে।
সেই তিন জন নিড্যের কে॥
চন্দ্রীদাস করে কহবে মোরে।
বাগুলী কহিছে কহিব তোরে॥

166

বাশুলী কহিছে শুন হে বিজ। কহিব তোমারে সাধন-বীজ। প্রথম তুয়ারে মদের গতি। বিতীয় হুয়ারে আসক স্থিতি॥ তৃতীয় ছুয়ারে কন্দর্প রয়। কন্দর্প রূপেতে শ্রীকৃষ্ণ কয় ॥ আসক রূপেতে শ্রীরাধা কই। মদরূপ ধরি আমি সে হই।। সাতাশী আঁখরে সাধিবে তিনে 🕽 ্ একত্র করিয়া আপন মনে।। রতির আঞ্চতি আসক রয়। রদের আকৃতি কন্দর্প হয়॥ ভিনটি আঁখরে রভিকে যজি। পঞ্চম আঁখরে বাণকে ভঞ্জি।। দ্বিতীয় আসকে সামান্ত রতি। ভবে সে পাইবে বিশেষ শ্বিভি॥ চতুর্থ আঁখর সামান্ত রস। ভাছাতে কিশোরা কিশোরী বশ ॥ বাশুলী কছয়ে এই সে সার। এ রস-সমুদ্র বেদান্ত পার॥

161

এ দেহে সে দেহে একই রূপ। ভবে সে জানিবে রসেরই কৃপ॥ এ বীজে সে বীজে একতা হবে। তবে সে প্রেমের সন্ধান পাবে॥ त्म वीक विकास এ वीक जरकं। সেই সে প্রেমের সামরে মজে। রভিতে রসেতে একতা করি। সাধিবে সাধক বিচার করি॥ বিশুদ্ধ রতিতে বিশুদ্ধ রস। ভাছাতে কিশোরা কিশোরী বল ॥ বিশুদ্ধ রভিতে কারণ কি। সাধহ সতত রজক-ঝি॥ সাতাশী উপরে তাহার ঘর। তিনটি ছুয়ার তাহার পর॥ বাজে মিশাইয়া রামিণী যজ। 20 রসিকমগুলে সভত ভজ। বিশুদ্ধ রভিতে বিকার পাবে। সাধিতে নারিলে নরকে যাবে॥ বাশুলী কহিছে এই সে হয়। চ্ঞীদাস কহে অসুথা না হয়॥

966

রসিক নাগর ভার সরূপে অরোপ যার প্রাপ্তি হবে মদনমোহন। গ্রামা দেব বাশুলীরে কিজাস গে করকোড়ে রামী কছে শৃঙ্গার সাধন॥ वास्त्रीत शांत्र श्रत १ **ह** श्रीष्ठांभ कत्राकारण মিনতি করিয়া পুছে বাণী। বাউল হইসু অভি-শুন মাতা ধর্ম্মমতি কেমনে সুবুদ্ধি হবে প্রাণী। -শুন চণ্ডী মহাশয় হাসিয়ে বাশুলী কয় আমি থাকি রসিক নগরে। সে গ্রামে দেবতা আমি हेश जात वर्जाकरी किछोन (भ यज्य जारादा ॥ ·411

সে দেশের রক্ষকিনী হয় রসের অধিকারী
রাধিকাস্বরূপ তার প্রাণ ।

ভূমি ত রমণের শুরু সেহ রসের কল্পতরু ১৫
তার সনে দাস অভিমান ॥

চণ্ডীদাস কহে মাতা কহিলে সাধন কথা
রামী সভ্য প্রাণপ্রিয়া হৈল ।

নিশ্চয় সাধন-শুরু সেই রসের কল্পতরু
ভার প্রেমে চণ্ডীদাস মৈল ॥ ২০

145 .

শুন রঞ্জিনী রামি।

প তুটি চরণ শীতল জানিয়া

শরণ লইমু জামি॥

তুমি বেদবাদিনী হরের ঘরণী

তুমি সে নয়নের তারা। ৫

তোমার জজনে ত্রিসন্ধ্যা যাজনে

তুমি সে গলার হারা॥

রজ্জিনী-রূপ কিশোরীস্বরূপ

কামগন্ধ নাহি তায়।

রজ্জিনী-প্রেম নিক্ষিত হেম ১০

বড়ু চন্ডীদাস গায়॥

110

এক নিবেদন করি পুন: পুন:

শুন রঞ্জিনী রামি।

যুগল চরণ শীতল দেখিয়া

শরণ লইলাম আমি ॥

রক্জিনী-রূপ কিশোরী-স্বরূপ ৫৫

কামগন্ধ নাহি তায়।

না দেখিলে মন করে উচাটন

দেখিলে প্রাণ স্কুড়ায়॥

তুমি রজকিনী আমার রম্ণী তুমি হও মাতৃ **পিতৃ।** ত্ৰিসন্ধ্যা বাজন ভোমারি ভজন তুমি বেদমাভা গায়ত্রী। তুমি বাগবাদিনী रदात घत्री তুমি সে গলার হারা। তুমি শ্বৰ্গ মৰ্ত্ত পাতাল পর্ববত ১৫ তুমি দে নয়ানের ভারা॥ ভোমা বিনে মোর . সকলি আঁধার मिशित जुड़ाग्न जाँथि। रय मिरन ना रमिथ ଓ हाँ म-वमन মরমে মরিয়া থাকি॥ ও রূপমাধুরী পাসরিতে নারি कि मिर्ग्न कत्रिव वर्ग। তুমি সে তন্ত্ৰ তুমি সে মন্ত্র তুমি উপাসনা-রস ॥ ভেবে দেখ মনে এ তিন ভূবনে ২৫ কে আছে আমার আর। বাশুলী আদেশে কহে চণ্ডীদাসে ধোপানী-চরণ সার॥

পুন আর বার আসি তরাতর
বাশুলী জগতমাতা।
ধরিয়া রামিণী কহিছেন বাণী
শুনহ জামার কথা॥
বাহা কহি বাণী শুনহ রামিণী ব
এ কথা ভুবন-পার।
পরকীয়া রতি করহ আরতি

. 113

পরকীয়া রভি করহ আরভি সেই সে ভজন-সার ॥ চঞ্জীদাস নামে আছে একজন

চণ্ডীদাস নামে আছে একজন ভা্হারে আরোপ কর।

30

30

'নিত্যধামে বাবে অবশ্র করিলে আমার বচন ধর॥ ্নেত্রে বেদ দিয়া সদাই ভজিবা আনন্দে থাকিবা তবে। সমুদ্র ছাড়িয়া नत्रक याहेवा ১৫ ভল্ন নাহিক হবে॥ বেদে মিশাইয়া আর তিন দিয়া সতত তাহাই যজ। ভাব রাত্রি দিনে নিত্য একমনে . মম পদ সদা ভক্ত ॥ २० প্রাপ্তি নাহি মিলে বাভিচারী হৈলে নরকে যাইবে তবে। ভাব রাত্রি দিনে রতি স্থির মনে সহজ পাইবে তবে॥ আর এক বাণী শুনছ রামিণী ২৫ এ কথা রাখিও মনে। বাশুলী আদেশে কহে চ্জীদাসে এ কথা পাছে কেহ শুনে॥

193

কহিছে রজ্ঞকিনী রামী শুন চণ্ডীদাস তুমি निन्छ्य मत्रम कहि काटन। বাশুলী কহিছে যাহা সভ্য করি মান ভাহা বস্তু আছে দেহ বর্ত্তমানে॥ বিষয় ভোমারে কই ৫ আমি ভ আশ্রয় হই রমণকালেতে গুরু তুমি। তোমার রভি ধ্যান আমার সভাব মন তেঁই সে তোমায় গুরু করি মানি॥ त्रिक नगरत याव সহজ মানুষ হব থাকিব প্রণয়-রস-ঘরে। শ্ৰীরাধিকা হবে রাজা হইব ভাহার প্রকা ভূবিৰ রসের সরোবরে॥

সেই সরোবরে গিয়া মনপন্ম প্রকাশিরা
হংস প্রায় হইয়া রহিব ।

শ্রীরাধা-মাধব সঙ্গে আনন্দে কৌতুক রঙ্গে ২৫
জনমে মরণে তুয়া পার ॥
শুন চণ্ডীদাস প্রভু জ্জন না হয় কভু
মনের বিকার ধর্ম জানে ।
সাধন শৃক্ষার রস ইহাতে হইবে বশ
বস্তু আহে দেহ বর্তমানে ॥

চণ্ডাদাস কহে তুমি সে গুরু ।
তুমি সে আমার কলপতরু ॥
ব্য প্রেম-রতন কহিলে মোরে ।
কি ধন রতনে তুষিব তোরে ॥
ধন জন দারা সোঁপিতু তোরে ।
দরা না ছাড়িছ কখন মোরে ॥
ধরম করম কিছু না জানি ।
কেবল তোমার চরণ মানি ॥
এক নিবেদন তোমারে কব ।
মরিয়া দোঁহেতে কি রূপ হব ॥
বাশুলী কহিছে কহিব কি ।
মরিয়া হইবে রজক-ঝি ॥
পুরুষ ছাড়িয়া প্রস্কৃতি হবে ।
একদেহ হয়ে নিত্যেতে যাবে ॥
চণ্ডীদাস প্রেমে মুচ্ছিত ছইলা ।

এই সে রস নিগৃঢ় ধক্ত। ব্ৰহ্ম বিনা ইহা না কানে প্ৰক্ৰ॥ গুই রসিক হইলে কানে। সেই ধন সদা বড়নে আনে॥

বাকলী চলিয়া নিভোতে গেলা॥

> 0

নরুপে নরনে রাখিবে পীরিতি।
রাগের উদয় এই সে রীতি॥
রাগের উদয় বসতি কোখা।
মদন মাদন শোষণ যথা॥
মদন বৈসে বাম নরনে।
মাদন বৈসে দক্ষিণ কোণে॥
শোষণ বাণেতে উপানে চাই।
মোহন কুচেতে ধরয়ে ভাই।।
স্তম্ভন শুঙ্গারে সদাই স্থিতি।
চণ্ডীদাস করে রসের রতি॥

116

কাম আর মদন চুই প্রকৃতি পুরুষ। ভাহার পিতার পিতা সহত মানুষ॥ **जाहा (एथ पृत्र नटह আছ**र्म्म निकटि। ত্রকাণ্ড ভিতরে তেঁহ রহে চিত্রপটে **॥** সর্পের মস্তকে যদি রছে পঞ্চ মণি। কীটের স্বভাব-দোষে ভাহে নহে ধনী॥ গোরোচনা জন্মে দেখ গাভীর ভাগুরে। ভাহার যভেক মূল্য সে জানিতে নারে॥ স্থন্দর শরীরে হয় কৈতবের বিন্দু। কৈতব হৈলে হয় গরলের সিন্ধু॥ 30 व्यक्ति उत्तर वृक्त यमि त्रार এक ठाँर । নাড়িলের ব্লের মূল ফল নাহি পাই॥ निजात आदिए एम क्यांन भारत एट्या চিত্রপটে নৃত্য করে ভার নাম মেয়ে ॥ . নিশিযোগে শুক শারী সেই কথা কয়। . চণ্ডীদাস কহে কিছু বাশুলী স্থুপার **॥**

শৃঙ্গার রস বৃঝিবে কে। সব-রস-সার শৃক্ষার এ'॥ শৃঙ্গার রসের মরম বুঝে।
মরম বুঝিয়া ধরম বজে।
রসিক ভকত শৃঙ্গারে মরা।
সকল রসের শৃঙ্গার সারা॥
কিশোর কিশোরী তুইটি জন।
শৃঙ্গার রসের মুরতি হন।
শৃঙ্গার রসের মুরতি হন।
বৈরিঞ্জি ভবাদি সীমা না পার॥
কিশোরা কিশোরী রাহাকে ভজে।
গুরু বস্তু সেই সদা বজে॥
চণ্ডীদাস কহে না বুঝে কেই।
যে জন রসিক বুঝারে সেই॥

499

সবাই কহয়ে রসিক রসিক কেহ ত রসিক নয়। বুৰিয়া দেখিলে ভাবিয়া গণিয়া কোটিতে গোটিক হয়॥ मिं (इ. त्रिक विनव कारत । রসেতে মিশায় বিবিধ মশলা त्रिक विन एव जादत ॥ রস পরিপাটী স্থবর্ণের ঘটা সম্মুখে পুরিয়া রাখে। খাইতে খাইতে পেট না ভারিবে >• ভাহাতে ডুবিয়া থাকে ॥ तक्रमी निवरम সেই রস পান ' অঞ্চলি পুরিরা খায়। দ্বিশুণ বাড়ায়ে थत्र कतिरन উছলিয়া বহি বার # 24 শুন রসবৃত্তি क्लीमांग करह ভূমি সে রসের কৃপ।

রসিক জনা রঁসিক না পাইলে • বিশুণ বাড়য়ে ছুখ ॥

195

রসিক নাগরী রসের মরা।
রসিক জমর প্রেম পিয়ারা॥
কাবলা মূরতি রসের বাণ।
রসে ডুবুঁ করে পরাণ॥
রসবতী স্দা হৃদয়ে জাগে।
দরশ বাড়ায়া পরশ মাগে॥
দরশে পরশে রস প্রকাশ।
চণ্ডীদাস কহে রস-বিলাস॥

115

রসের কারণ রসিকা রসিক কায়াটি ঘটনে রস। রসিক কারণ রসিকা হোয়ত • যাহাতে প্রেম-বিলাস।। স্থলত পুরুষে কাম সৃক্ষ্ম গতি স্থলত প্রকৃতি রতি। मृंहक घटेरन সে রস হোরত এবে ভাহে নাহি গতি॥ বিন হি কখন দুঁছক জোটন না হয় পুরুষ নারী। প্রকৃতি পুরুষে যো কিছু হোয়ত রতি প্রেম পরচারি॥ পুরুষ অবশ 🔹 প্রকৃতি সবশ অধিক রস বে পিয়ে। রতি সুধকালে অধিক সুধহি ১৫ •

তা নাকি পুরুষে পায়ে॥

বাণ বে কামের হয়।

गै हक नव्रत

নিক্ষয়ে বাণ

্ নাছিক কখন রভিন্ন যে বাণ **उद्य क्रिक्ट्स् निक्यम् ॥** কাম দাবানল বিভিন্ন বিভিন্ন मिल धार्य-भाव। কুল কাঠ খড় প্রেম বে আধেয় পচনে পীরিতি মাত্র।। লোভ উপজিয়া ২৫ পচনে পচনে यत्व (जन खन्मत्र। বিলাসে উপকে সেই বস্তু এবে তাহারে রস যে কয়॥ বাশুলী আদেশে চণ্ডীদাস তথি রূপনারায়ণ সঙ্গে। मृंह जालिजन করল তখন ভাগল প্রেম-তরঙ্গে ॥ প্রেমের আকৃতি দেখিয়া মূর্ড মন যদি তাতে ধায়। রসিক কেমন তবে ত সে জন বুঝিতে বিষম ভার।। আপন মাধুরী দেখিতে না পাই ৫ महारे अस्त ब्राम । আপনা আপনি করুরে ভাবনি कि देश कि देश वरत ॥

আহাড় খাইয়া করে ছট্ফট্
জীয়স্তে মরিয়া বায়।।
- তাহার মরণ জানে কোন জন
কেমন মরণ সেই।
বে জনা জানয়ে সেই সে জীয়য়ে ১৫
মরণ বাঁটিয়া লেই।।

মাতুষ অভাবে মন মরিচিয়া

তরাসে আছাড় খায়।

বাঁটিলে মর্ন 🔑 শীয়ে ছই খন লোকে তাহ। নাহি জানে। প্রেমের আকৃতি করে ছট্ফটি . চতীদাস ইহা ভণে।। २० 142 শুন সর্ববন্ধন প্রেমের যাজন অতি সে নিগৃঢ় রস। যখন সাধন করিবা তখন এড়ায় টানিবা শাস॥ . তাহা হইলে মন বায়ু সে ৫ আপনি হইবে বশ। তাহা হৈলে কখন না হইবে পতন জগৎ ঘোষিবে যশ। বেদবিধি পার এমন আচার যাজন করিবে যে। ব্রঞ্জের নিত্যধন পায় সেই জন তাহার উপর কে॥ नमानम्म क्षराय नयरन रमथरय যুগল কিশোর রূপ। প্রেমের আচার নয়ন-গোচর ১৫ জানয়ে রসের কৃপ। নিত্য বিলাসময় চণ্ডীদাস কয় হৃদয় আনন্দ ভোরা। নয়নে নয়নে থাকে গুই জনে ষেন জীয়ন্তে মরা॥ শুন শুন দিদি প্রেম হুধানিধি কেমন তাহার জল। কেমন ভাহার গভীর গভীর

উপরে শেহালা দল।

কেমন ডুবারু . ডুবেছে ভাষাতে ৫ ना कानि कि नाशि पूरव। ভূবিয়া রতন চিনিতে নারিলাম ' পড়িয়া রহিলাম ভবে ॥ আমি মনে করি আছে কত ভারি मा कानि कि धन व्याटह। নন্দের নন্দন কিশোরা কিশোরী চমকি চমকি হাসে॥ সখীগণ মেলি 'দেয় করতালি खक्राप मिभारम बग्र। क्राल भिभाहेरत् ১० স্বরূপ জানিয়ে ভাবিয়ে দেখিলে হয় ॥ ভাবের ভাবনা আশ্রয় যে জনা ভূবিয়ে রহিল সে। আপনি তরিয়ে জগৎ তরায় তাহাকে তরাবে কে॥ **हिंगांग** वरन नार्थ अक मिरन कौरवत्र नांगरत्र भाग्ना। শ্রীরূপ করুণা যাহারে হইয়াছে সেই সে সহজ বাদ্ধা॥

আপনা বুঝিয়া স্কন দেখিয়।
পীরিতি করিব তার ।
পীরিতি রতন করিব যতন
যদি সমানে সমানে হয় ॥
সখি হে, পীরিতি বিষম বড় ।
যদি পরাণে পরাণে মিশাইতে পারে
তবে সে পীরিতি দঢ় ॥
শুমরা সমান আছে কত জন
মধুলোভে করে প্রীত ।

'উড়িরে পলার মধু পান করি এমতি ভাহার রীত॥ কুমুদ পীরিতি বিধুর সহিত वन्रि व्यत्नक मृद्र । পীরিতি হইলে युक्त युक्त এমতি পরাণ ঝুরে॥ 20 পীরিতি হইলে মুজনে কুজনে महारे छूटभत्र घत । বে করে পীরিতি আপন সুখেতে . তাহারে বাসিব পর ॥ कीवरन मत्रा २० मत्राम मद्राम कीयरख मित्रल यात्रा। নিতৃই নৃতন পীরিতি রতন যতনে রাখিল তারা॥ স্থজন বাঁধিতে আপন পীরিডি স্ক্রনে পীরিতে আশ। ₹ @ ও যেন মো বিনে মকল অর্থনি • এমতি দোহার ভাব॥ অনস্ত পারিতি মুজনে মুজনে শুনিতে বাডে যে কাশ।

২৮-২১। স্থজনে স্থজনে অনস্ত পীরিতি শুনিরা বে করে আশ। তাহার নিছনি দিয়ে ত পরাণী কহে বিক চণ্ডীদাস ॥ ... পাঠান্তর।

कटर चिक ठखीमांत ॥

ভাহার চরণে

নিছনি লইয়া ৩০

118

শুন গো সঞ্জনি আমার বাত। পীরিতি করবি স্কুলন সাত॥ স্কুলন পীরিতি পরাণ রেখ। পরিণামে কডুনা হবে টোট॥

166

নিজ দেহ দিয়া ভজিতে পারে।
সহজ পীরিতি বলিব তারে॥
সহজে রসিক করয়ে প্রীত।
রাগের ভজন এমন রীত॥
এখানে সেখানে এক হইলে।
সহজ পীরিতি না ছাড়ে মৈলে॥
সহজ বুঝিয়ে যে হয় রত।
তাহার মহিমা কহিব কত॥
চণ্ডীদাস কহে সহজ রাত।
বুঝিয়ে নাগরী করহ প্রীত॥

164

30

পীরিতি করিয়া ভাঙ্গয়ে যে।

সাধন অঙ্গ না পায় সে॥

প্রেমের পীরিতি মাধুরাময়।

নন্দের নন্দন কতেক কয়॥

রাগ সাধনের এমনি রীত।

কে পথী জনার তেমতি চিত।।

সকল ছাড়িল যাহার তরে।

তাহারে ছাড়িতে সাধ যে করে।।

আদি চণ্ডাদাস চারি সে বুঝান।

মূচ উঠাইল জানিল মান॥

১০

শাধ বে...সাহস—পাঠান্তর।

ভাজি উঠাইল বেষন মান॥

পাঠান্তর।

11-1		প্রেমের মাঝারে 🗽	পুলকের স্থান ৫		
প্রেমের পীরিতি	কিলে উপজিল	পুলক উপরে ধারা।			
', প্ৰেম সে বলিব	कांदत्र ।	ধারার উপরে	রসের স্থান		
কেবা কোণা প্ৰাইল 🔾	কবা সে দেখিল		য়ে যারা॥		
এ কথা বলিব কারে॥		-	কুলের বসতি		
পাতের ফুলে 🕠	क्र्लत कित्र १	তাহার উপ	রে গন্ধ। ১০		
ভাহার মাঝারে ৫			এ তিন আখর		
তাহাতে অনেক	বভনে নিঙ্গাড়ে		তে ধন্দ ॥ `		
যুবক রসিক সেই		·	় ফলের বসতি		
প্রেমের চাতুরি	চতুর হইয়।	ভাহার উপ			
তিনের কাছেতে			ঢে উর বস তি ১৫		
চারিটি আখর	হরিতে পুরিতে	এ কথা জান য়ে কেউ।।			
ভাহে যেবা বাকি			ছুয়ের বসতি		
ভাহার বাকিতে	ভাহার বাকিতে প্রেমের আখর		কেহ কেহ কিছু জানে।		
পীরিভি আখর জড়।			পীরিভি বৈসয়ে		
সকল আখর	कड़ कति एमध ३६		त्र खर्म ॥ २०		
প্রেমের আখর দ					
হয়টি আখর	মূল করি দেখ		, शाठीखर		
ভাহার ঘুচাই ছুই।		ণ-৮। (क) ধারার উপরে ধারার বসতি			
ह छोमान करह के कथा वृश्विद		এ হ্রথ বুঝরে কারা।			
	₹ 11		রবের স্থান নিয়ে যোৱা a পাঠান্তর		
🛂 । ध्यमांशास्त्र निव कास्त्र	। পাঠান্তর।	३। क्लातु…क्लात्र	,,,		
ं। भारेन-स्टेन	,,	৯। কলের…কুলের ১৭-১৮। ছুবের উপরে কেছ কি!	ছ্থের বস্তি		
৪। কারে—ভারে		কেং কি	इंश कारन ।,		
e-७। পাতের ফুলে		>>। উপরে · बाकाরে	*** *** 55		
१। ভাষাতে—क्वांति		_			
· ·		,	•		
		•	163		
াচ্চ পীরিভি উপরে পীরিভি বৈস রে		ধরণী উপরে ধরিবে ঢারি।			
ভাহার উপরে ভাব।		ভবে সে চিনিবে ছুগধ বারি ॥			
	171		বাল কথা চিনিবে পায়।		

ब्रांक क्रेश हिनित्व शांत्र।

কুটিল চিনিবে কোন উপার।

ভাবের উপরে ভা ভাহার ঈপরে লাভ ॥

ভাবের বসতি

¢

जारमण्ड करह मधुत्रं वानी। পরের হৃদয় পাতিরা আনি॥ " আপন আশা পরকে দেই। চণ্ডীদাস কৰে কুটিল সেই।

ভাবের **অন্ত**ের ভাবের উদর তাহার উপরে ভাব। ফুলের মধু • চাঁপার পাখড়ি গৰেতে দিল লাভ। বড় বড় হ্মন রসিক কছরে ৫ রসিক কেহ ভ নর। তর তম করি বিচার করিলে कांदिक श्रीक रत्र॥ রুসের উদয় কোন রসে কোন কোন হুখে কোন হুখ। পশিয়া না পিয়ে ভাহার মাধুরী ু ত বহু মনের হুখ।

তাহার উপরে কে। ও ऋभ म्बिरत मतम कतरत ১৫ রসিক কহার সে॥ মৃত্তিকা উপরে আর এক মেওয়া তাহার উপরে স্থা। স্থধার উপবে বে মিস্টতা আছে वित्र भनी शिद्य जूमा ॥ २०

স্বান্ন উপরে কি বা সে কামক্র

433

সভের সঙ্গে পীরিভি করিলে সভের বরণ হয়।

অসতের বাভাস অলেডে লাগিলে সকলি পলায়ে বায় ॥ সোনার ভিতরে তামার বস্তি ৫ (वयन वद्रण (मिष्)। রাগের ঘরেতে বৈদিগ থাকিলে রসিক নাহিকু দেবি।

রসিকের প্রাণ যেমতি করয়ে এমতি কহিব কারে। এমতি বুঝায়ে **वेनिया ना वेदन** মরম কহিব তারে॥ যাহার দেখিব এমতি করণ

ভাহার নিকটে বসি। कन्य कन्य ३० চণ্ডীদাস কয় হয়ে রব তার দাসী॥

132

স্কল আচার স্কল বিচার महक्र विलाख कांत्र। কিসের গঠন **८क्**यन वर्त्तश বিবরিয়া কহ ভায়॥ ক**হি**তে লাগিল 🛭 ৫ শুনি নন্দস্থ ত শুন বৃক্জামু-ঝি। কোণা তার শ্বিভি সহজ পীরিতি আমি না জেনেছি শুনেছি। আনলের আলস কীরোদ সায়র প্রেমবিন্দু উপজিল। ১০ গছ পভ হয়ে কামের সহিতে বেগেতে ধাইয়া গেল।। বিজুরি জিনিয়া বরণ বাহার . কুটিল স্বভাব বার।

योक्ति व्यापटम कतात छात्रं >१

লে অঞ্চ করয়ে ভার।

এমতি প্রাচার ভজন বে করে ্ শুনহ রসিক ভাই। - চ্ত্ৰীদাস কহে ইহার উপরে আর দেখ কিছু নাই॥ ₹• . 130 मरक मरक · महक कहर्य সহজ জানিবে কে। তিমির অন্ধকার যে হইয়াছে পার সহজ জেনেছে সে॥ চাঁদের কাছে অবলা আছে ৫ সেই সে পীরিতি সার। বিষে অমৃততে মিলন একত্তে কে বুঝিবে মরম ভার॥ বাহিরে ভাহার একটি ছয়ার ভিতরে তিনটি আছে। চতুর হইয়া ছুইকে ছাড়িয়া থাকিবে একের কাছে॥ যেন আম্রফল অভি সে রসাল वाश्ति कूनी छाल क्या। ইহার আস্বাদন वृत्व (यह जन ১৫ করহ তাহার আশা। অভাগিয়া কাকে স্বাত্ন নাহি জানে भक्रा निरम्बत करन। রসিক কোকিলা জ্ঞানের প্রভাবে মজয়ে চ্ত-মুকুলে॥ ২০ নবীন মদন আছে একজন . . ্ খোকুলে ভাহার থানা। कामरीक नद् खळ-वध्राग , করে তার উপাসনা॥

नश्क कथां वि मतन कत्रि ताथ २०

শুন লো রহুক-বি।

বাশুলী আদেশে আনিবে বিশেষে
আমি আর বলিব কি ॥

রূপ করুণাতে পারিবে মিলিভে
ঘুচিবে মনের ধান্দা।

কহে চণ্ডীদাস প্রিবেক আল
তবে ত খাইবে স্থধা।।

সই, সহজ মাতুষ নিত্যের দেশে।
মনের ভিতরে কেমনে আইসে ॥
ব্যাসের আচার করিবে বেই।
বিরজা উপরে যাইবে সেই॥
রাগতত্ব লইয়া যে জন ভজে।
সেই সে তাহার সন্ধান খুঁজে॥
সহজ ভজন বিষম হয়।
অমুগত বিনা কেহ না পায়॥
চণ্ডীদাস বলে এ সার কথা।
বুঝিলে পাইবে মরম-ব্যথা॥

বিশাণ্ড ব্যাপিয়া আছুয়ে যে জন
কহ না দেখয়ে তারে।
প্রেমের পীরিতি যে জন জানয়ে
সেই সে পাইতে পারে॥
পীরিতি পীরিতি তিনটি আখর
জানিবে ভজন-সার।
রাগ-মার্গে যেই 'ভজন করয়ে
প্রাপ্তি হইবে তার॥
মৃত্তিকার উপরে জলের বসতি
তাহার উপরে চেউ। ১০

তাহা কি জানয়ে কেউ॥

রুসের পীরিভি . রসিক জানয়ে রতি আশাদন স্থীর সঙ্গিনী হবে ॥ . রস উগারিল কে। দেহ রতি ক্ষয় কুপত রভি হয় **• সকল ত্যজিয়া** যুগল হইয়া ১৫ সাধক সাধন পাকে। গোলোকে রহিল সে।। পুত্র পরিজন সংসার আপন চণ্ডীদাস কয় বিনা ছঃখে নয় ১৫ কিশোরী দ্বণ দেখে। সকল ত্যজিয়া লেখ। পীরিতি করিলে তাহারে পাইবে মনেতে ভাবিয়া দেখ।। পীরিভি পীরিভি তিনটি আখর কাতরা অধিকা দেখিয়া রাধিকা পীরিতি ত্রিবিধ মত। বিশাখা কহিল ভায়। ভঞ্জিতে, ভক্জিতে নিগৃঢ় হইলে চিতে এত ধনী ব্যাকুল ছইলে হইবে একই মত॥ ধরম সরম যায়॥ সকল প্রধান ২৫ পরকীয়া ধন ধনি, কছব ভোমার ঠাঁই। যতন করিয়া লই। পরকায়া রস করিতে হে বশ নৈষ্ঠিক হইয়া ভজন করিলে অধিক চাতুরী চাই ॥ পদ্ধতি সাধক হই॥ ষাইবি দক্ষিণে থাকিবি পশ্চিমে পদ্ধতি হইয়া রস আস্থাদিয়া বলিবি পুরবমুখে। ৈ নৈষ্ঠিকে প্রবৃত্ত হয়। গোপন পারিতি গোপনে রাখিবি ১০ ভাছার চরণ হৃদয়ে ধরিয়া থাকিবি মনের স্থংখে॥ দ্বিজ চণ্ডীদাস কয়॥ গোপন প্রীরিতি গোপনে রাখিবি সাধিবি মনের কাজ। সাপের মুখেন্ডে ভেকেরে নাচাবি এ বড় কঠিন সাধন শরণ ভবে ভ রসিকরাজ। वज़्हे विषम माग्र । যে জন চতুর হুমেরু-শিখর ষদি হয় ভঙ্গ নব সাধুসক সূতায় গাঁথিতে পারে। জীবের জনম তায়। মাকসার জালে মাতক বাঁথিলে এ রস মিলয়ে ভারে । • ় • ' ভঞ্চন ক্রিয়াতে রতি। পীরিতি যা সনে আদর সে ধনে ২০ সভত না লবি হর। প্রেম গাঢ় রভি হয় দিবা রাভি হয় সে ভাহাতে প্রীতি॥ व्यस्तत भवाग वाह्मित्र (मंश्रवि আসক উকভ সবে দুরগভ বাহিরে বাচিবি পর॥ ' · সদ্**গুরু আ**গ্রায়ে হবে।

त्वम त्वमुखंब . ना कतिवि विচात না লৈবি বেদে বিরস। 20 হুইবি সভী না হবি অসতী ना इहेरि.काहांत रूप ॥ হইবি কুলটা কুল ভাজিবি ভাবিতৈ ভাবিতে দেহা। হেরি পরপতি হেমকাস্তি রতি সপতি ভাবিৰি লেহা। পিনান করিবি কলক্ষ-লাগরে এলাইয়া মাথার কেল। नीरत ना छिकिवि कन ना इहेवि সম ছুখ সুখ ক্লেশ। करह हरीमारन वास्त्री बारमरभ वास्त्रमो-हत्ररम भिष् । হইবি পিলি ব্যঞ্চন বাঁটিবি ना इं रेवि शंफि ॥

মরম কহিতে ধরম না রয় नाहि (वनविधि त्रम । সতী বে হইবে আগুনি খাইবে ना क्रव अरमात वर्ण ॥ বে জন যুবতী কুলবতী সভী স্থাল স্থমতি যার। समग्र-मायादत নায়ক লুকায়ে ভবনদী হর পার॥ ' কুলটা হইবে कून ना ছाড़िट्र ় কগছে ভাসিবে নিভি। ১০ হবে অস্তু পতি 🥕 😗 পাইয়া কাম রতি তাহাতে বলাব সতী॥ न्नान ना कतिय जन ना कृदेव

এলাইরা মাধার কেল।

সমুদ্রে পশিব নীরে না ভিতিব ১৫
নাহি স্থব হুব প্রেশ ॥
রঞ্জনী দিবসে হব প্রবশে
স্থপনে রাখিব লেহা ।
একত্র থাকিব নাহি পরশিব
ভাবিনী ভাবের দেহা ॥ ২০
অন্টের পরশে সিনান করিব
তবে সে রীতি সাজে ।
কহে চণ্ডীদাস এ বড় উল্লাস
থাকিব যুবতীমাঝে ॥

155

হইলে স্থ্ঞাতি পুরুষের রীতি
বে জাতি নায়িকা হয়।
আঞায় হইলে সিদ্ধ রতি মিলে
কখন বিফল নয়॥
তেমতি নায়িকা হইলে রসিকা ৫
হীন জাতি পুরুষেরে। °
স্থভাব লওয়ায় স্থঞাতি ধরায়
বেমন কাচ-পোকা করে॥
সহজ করণ রতি নিরূপণ
বে জন পরীক্ষা জানে। ১০
সেই ত রসিক হয় ব্যবসিক
ভিজ চণ্ডীদাস ভণে॥

মিলা অমিলা তুই রসের লক্ষণ।
নায়ক নায়িকা নাম লক্ষণ কথন॥
পূর্ববরাগ হৈতে সীমা সমৃদ্ধি মান আদি।
রসের ভঞ্জিত ক্রেমে বতেক অবধি॥
পতি উপপতি ভাবে ঘাদশ বে রস।
পুন বে বিশুণ হইরা কররে প্রকাশ॥

٥٤

কন্মার বিবাহ আর অন্তের উপপতি।
ভাব-ভেদে এই হয় চবিবশ রস-রীতি॥
পূর্ণ চারি গুণ করি হয় ছেয়ানই।
অনুকৃল দক্ষিণ ধৃষ্ট আর শঠ তাই॥
এই সব নাম-ভেদে নায়কের ভেদ।
পূন হয় তাহার লক্ষণ বিভেদ॥
এই সব গুণ কৃষ্ণচক্ষে একা বর্তে।
চত্তীদাসে কহে রস-ভেদ এক পাত্রে॥

10

প্রবর্ত্ত দেহের সাধন করিলে কোন বরণ হব।
কোন কর্ম্ম যাজন করিলে কোন বৃন্দাবনে বাব॥
নব বৃন্দাবন নব নাম হয় সকল আনন্দময়।
কোন বৃন্দাবনে ঈশ্বরে মামুষে মিলিভ হইয়া রয়॥
কোন বৃন্দাবনে বিরজা বিলাসে তরু-লভা চারি পালো। ৫
কোন বৃন্দাবনে কিলোর কিলোরা শ্রীরূপমঞ্চরী সাথো॥
কোন বৃন্দাবনে কিলোর কিলোরা শ্রীরূপমঞ্চরী সাথো॥
কোন বৃন্দাবনে বিকসিত পত্ম শুধার জনম তার।
কোন বৃন্দাবনে বিকসিত পত্ম শুমার জনম তার।
কোন বৃন্দাবনে বিকসিত পত্ম শুমার জনম তার।
কোন বৃন্দাবনে বিকসিত পত্ম শুমার জনম তার।
ভীগাসনা শ্রেদ বাহার হয়েছে সেই সে মরম জানে॥
উত্তম কুলেতে লভিয়ে জনম ছি নীচ সহ ব্যবহার॥

F03.

নারিকা-সাধন শুনহ লক্ষণ
বেরপো সাধিতে হর।
শুক্ষ কার্চ্চের সম আপনার
দেহ করিতে হর॥
সে কালে রমণ অভি নিভা করণ
ভাহাতে বে সাধন হবে।
মেশ্বের বরণ রভির পঠন

ज्यम (मथिएज भारन ॥

সে রতি-সাধন করেন বে জন
সেই সে রসিক সার । ১৫

অমর হইয়া সন্ধান পৃরিয়া

মরম বৃক্ষে তার ॥

তাহার উপর জলদ-বরণ

রতির বরণ হয় ।

সাধিতে সে রতি কাহার শক্তি ১৫

বিজ্ঞ চণ্ডীদাস কয় ॥

F03

সজনি, শুন গো মামুবের কাজ। এ তিন ভুবনে (म मन वहरू কহিতে বাসিবেক লাজ ॥ কমল উপরে জলের বসতি তাহাতে বসিল তারা। **डाहारमज डाहारमज** রসিক মান্তব পরাণে হানিছে হারা ॥ ভ্ৰমর পশিল সুমেক উপরে खमत्र धति कुल। রসিক মানুষ ১০ ভাছাদের ভাছাদের হারায়েছে জাতি কুল। ছবিণ দেখিয়া বেরাধ পলার কমল গেল লে ভূজ। ব্যের ভিতরে রা**হ**তে গিলিছে চক্র ॥ হ্মের উপরে क कथा वृक्तिर का র্নিক হটলে ेशीमांग करर বুকিডে পারিবে সে।

কুলবতী সভী সে কেমন যুবতী ্ সুন্দর সুমতি সার। ্হিয়ার মাঝারে নায়কে লুকাইয়া खवनमी श्र भार ॥ वाष्ट्रिकाती नाती । ना श्रद कांधाती ए नाग्रत्क वाहिया लाव। ভার অবছায়া পরশ করিলে পুরুষ-ধরম বাবে॥ সে কেমন পুরুষ পর্শ-রতন সেবা কোন গুণে হয়। 30 সাতের বাড়ীতে পাষাণ পড়িলে পরশ-পাষাণ হয় । সাতের বাড়ীতে ক্সীরোদ নদী নারায়ণ শুভ যোগ। সেই ধোগেতে স্থাপন করিলে ১৫ इय तकनी मनड (याग ॥ রমণ ও রমণী তার। ছুই জন काँ। भाका छूछि थारक। এক রব্জু খসিয়। পড়িলে রসিক মিলয়ে ভারে।। ২০ মনের মাপ্তন উঠিছে বিগুণ তোলা পাড়া হবে সার। চণ্ডাদাস কৰে ধশ্ব সে নারী ভলাটে নাহিক আর॥

নারীর হজন অভি সে কঠিন ক্রা সে জানিবে ভার। জানিট্ট জ্বধি নারিলেক বিধি বিশাস্তে এক্ত বয়॥ বেমন দীপিকা উজরে জ্বিকা ৫

ভিতরে জনল-শিখা।

পতক দেখিরা পড়রে ব্রিরা পড়রে ব্রিরা পড়রে মররে পাখা॥
কগং ব্রিরা ডেমভি পড়িরা
কামানলে পুড়ি মরে। ১০
রসজ্ঞ যে জন সে কররে পান
বিষ ছাড়ি অমৃতেরে॥
হংস চক্রনক ছাড়িরা উদক
মুণাল তুথ সদা খায়।
তেমভি নহিলে কোথা প্রেম মিলে ১৫
ভিজ চণ্ডীদাস কয়॥

এ তিন ভূবনে ঈশ্ব গতি।

ঈশ্ব ছাড়িতে পরে শক্তি॥

ঈশ্ব ছাড়িলে দেহ না রয়।

মামুষ ভজন কেমনে হয়॥

নাক্ষাৎ নহিলে কিছুই নয়।

মনেতে ভাবিলে শ্বরূপ হ্য়॥

কহয়ে চণ্ডাদাস বুঝয়ে কে।

ইহার অধিক পুছয়ে ধে॥

রাগের ভব্দন শুনিয়া বিষম
বেদের শাচার ছাড়ে।
রাগামুগমেতে ' লোভ বাড়ে চিতে
সে সব প্রহণ করে॥
ছাড়িতে বিষম ভাহার করণ
আচার বিষম না পারে।
মঙি শসস্তব শলীকিক সব

করিয়া প্রহণ . না করে যাজন
.সে কেন সাধনা করে। ১০

বুকিতে না পারে আনাগোনা করে
ফাঁফরে পড়িয়া মরে॥
ভার এ কুল ও কুল ছুকুল গেল
পাথারে পড়িল সে।

চণ্ডীদাস কয় সে দেব নয় ১৫

৫-৮। বজিতে বিষম করণ তাহার আচার বিষম বড়। দেকিয়া শুনিয়া মালাতে ভূলিয়া করিতে না পারে দিঢ় ৪...পাঠান্তর।

তাহারে তরাবে কে।

ত্রমন মাধুরী যাহার মনে।
তাহার মরম সেই সে জানে॥
তিনটি তুয়ারে যাহার আশ।

'আনন্দ নগরে তাহার বাস॥

'প্রেম-সরোবরে তুইটি ধারা।
অাস্বাদন করে রিসিক যারা॥
তুই ধারা যখন একত্রে থাকে।
তখন রিসিক যুগল দেখে॥
প্রেমে ভোর হয়ে করয়ে আন।
নিরবধি রিসিক করয়ে পান॥

কহে চণ্ডীদাস ইহার সাক্ষা।
এ রূপ-সাগরে ভূবিয়া থাকি॥

স্বরূপ বিহনে রূপের জনম
কখন নাহিক হয়।
অমুগত বিহনে কার্য্যসিদ্ধি
. কেমনে সাধকে কয়॥

কে বা অনুগত কাহার সহিত থা জানিব কোনে শুনে। মনে অনুগত মুঞ্জী সহিত ভাবিয়া দেখহ মনে॥ ছই চারি করি আটটা আখর তিনের জনম তার । এগার আখরে মূল বস্তু জানিলে একটি আখর হয়॥ চণ্ডাদাস কহে, শুন হে মানুষ ভাই। সবার উপর মানুষ সতা

প্রবর্ত্ত সাধিতে বস্তু অনায়াসে উঠে।
নামাইতে বস্তু সাধক বিষম সঙ্কটে ॥
নামান আনন্দ মন করিয়ে নির্দ্ধারি।
পৌষ মাঘ মাসের শিশির কুন্তে ভরি ॥
সেই পূর্ণকুস্তু বৈছে সবে পাতে ঢালি।
সর্ববাঙ্গে মস্তকে পাদ করয়ে শীভলি ॥
তৈছে সাধকের সেই সন্ধানের কার্য্য।
তারণ্যামৃতধারা তার নাম কৈল ধার্য।
লাবণ্যামৃতধারা কহি সিন্ধে সন্ধেতে।
কারুণ্যামৃত স্নান কহি প্রবর্ত্ত দশাতে ॥
সংক্রেপে কহিল ভিন স্নানের বিধান।
সম্যক্ কহিতে নারি বিদরে পরাণ॥
অটল পরেতে এই পদ গুরু মার্ম্ম।
চণ্ডীদাস লেখে ব্যক্ত আপনার ধর্মা॥

ব্ভির কারণ রবির কিরণ
থেমন জলেতে লাগে।
অন্তরে অন্তরে
আকর্ষরে উপ্রভাগে।

পুৰুৰ প্ৰকৃতি ' দোহে এক রীতি ৫ 💀 বে রতি সাধিতে হয়। নাগ্নিকার রীতে পুরুষেরই যুতে যেমতে সংযোগ পায়॥ পুরুষ-সিংহেতে পদ্মিনী নারীতে যে সাধন উপজয়। স্বন্ধতি অনুগা সোনাতে সোহাগা পাইলে গলিয়া যায়॥ বে জাতি যুবতী সাধিতে সে রভি কুজাতি পুরুষে ধরে। कलेटक रयमन পুষ্প হয় ক্ষত ১৫ क्षमग्र कांत्रिया मदत्र॥ পুরুষ ভেমতি নারী হীনজাতি রতির আশ্রয় লয়। चिव हछोमान क्य ॥

125

আমার পরাণ- পুথলি লইয়া নাগর করয়ে পূজা। পুথলি আমার নাগর পরাণ-क्षप्रमावादत त्राका।। আনে করে চুরি আনের পরাণ তিন আনে নাহি জানে। আগম নিগম তুৰ্গম স্থাম व्यवग नयन मतन ॥ এই সাত নদী অনস্ত অবধি 🔐 ় এ সাত যে দেশে নাই। সে দেশে ভাহার বসতি নগর এ দেশে কি মতে পাই।। এ সক্ষরণ্ করে ধেই জন ं रेंग कर माथात्र मित्र।

मतिरम रम का की या है रेड शास्त्र १८ অমৃত-রস আনি ॥ খ্রীং সে অক্ষর তাহার উপর • নাচে এক বাজিকর। এক কুমুদিনী ছুন্দুভি বাজায় বাঁশী জিনি তার স্বর॥ তুন্দু ভি বাঁশীটি যখন বাজিবে তা শুনে মরিবে থে। রসিক ভকত ্ৰভুবনে বেকভ त्रशेत्र त्रिक्रिनौ (त्र ॥ দেখিব যাহার ২৫ এ সব ব্যবহার তাহার চরণ সার। মন-সূতা দিয়া তাহার চরণ গাঁথিয়া পড়িব হার॥ বাশুলী আদেশে কহে চণ্ডীদাসে কাঁচা পাকা হুই ফল। (य कल लहेरव स्म कल शहरव তেমতি ভাহা বিরল।।

সদা বল তত্ত্ব তত্ত্ব শুন।
চিবিশে তত্ত্ব হয় দেহের গঠন ॥
পঞ্চ ভূত ক্ষেত্র তেজ মক্ত ব্যোম আপ।
বড় রিপু কাম ক্রোধ মদ মাৎস্থ্য দস্ত ॥
দশ ইন্দ্র ক্ষত তারা হয় ত পৃথক্।
ভ্রোনেন্দ্রিয় কর্মেন্দ্রিয় বিবিধ নামাত্মক ॥
ভ্রানেন্দ্রিয় জহবা কর্ম নাসা হক্ চক্ষু।
কর্মেন্দ্রিয় হস্ত পদ গুলু লিক্স বপু॥
মহাভূত অহক্ষার আর হয় ভ্রান।
এই ত হয় চবিবশ তত্ত্ব নিরূপণ ॥
কিবা কারিকরের আজা কারিকুরি।
ভার সধ্যে ছয় পশ্ব রাধিয়াত্বে পূরি॥

50

२ •

₹0

91

সহস্রারে হয় পদা সহস্রক দল। তার তলে মণিপূর পরমশিবের স্থল। নাসামূলে বিদল পদ্ম খঞ্চনাকি। কঠে গাঁথি যোড়শ দল পদা দিল রাখি॥ দ্বৎপদ্ম নিৰ্ম্মিত আছে শত দলে। কুলকুগুলিনী দশদল হয় নাভিমূলে ॥· নাভির নিম্নভাগে প্রেম-সরোবর। অফটদল পদ্ম হয় গ্রহার ভিতর ॥ তক্ত পরে নাড়ী ধরে সার্দ্ধ তিন কোটি। স্থল সৃক্ষ্ম বত্রিশ ভারা কিবা পরিপাটি ॥ लिक्रमृत्ल यष् प्रलाखुक निरशंकि । গুহুমূলে চতুর্দ্দল পদ্ম বিরাজিত। এই অষ্ট পদ্ম দেহমধ্যেতে আছয়। মতান্তরে হাৎপদ্ম দাদশদল কয়॥ সহস্রদল অফদল দেহমধ্যে নয়। এই চুই পদ্ম নিত্য-বস্তুর আধার হয়॥ यहेठाकुत भूल भूगोल श्यू (भक्तप्र । শির্মি পর্যান্ত সে ভেদ করি সগু॥ দওঁ তুই পার্ষেতে ঈড়া পিঙ্গলা রহে। মধ্যে স্থিত সুষুদ্ধা সদা প্রবল বহে॥ মূলচক্র হয় হংস যোগের আধাব। অফ্টদল চক্রে লীলার সঞ্চার॥ ষিদল চক্রেতে হয় অমুত নির্ভর। আর পঞ্চ চক্রে পঞ্চ বায়ুর সঞ্চার॥ প্রাণ অপান ব্যান উদান সমান। কণ্ঠামুজাবধি চতুর্দ্দলে অবস্থান॥ কণ্ঠপরে উদান হৃদিতে বহে প্রাণ। নাড়ীর ভিতরে পমান করে সমাধান॥ চতৃদ্দিলে অপান সর্ব্বস্তৃতেতে ব্যান। মুখ্য অনুলোম বিলোম সকল প্রধান ॥ অঙ্গপা নামেতে ভারা কুম্বক রেচক। অসুলোম উৰ্দ্ধরেতা বিলোম প্রবর্ত্তক।

প্রবর্ত্ত সাধক হাদ্নাভি-পদ্মের কাশ্রার।
সিদ্ধার্থ সহস্রারে কাছরে নিশ্চর।
রতি স্থির প্রেম-সরোবর অফদলে।
সাধনের মূল এই চণ্ডাদাস বলে।

U'\ 8

ম ভান্তরে যে কহরে শুনছ নিশ্চয়।
মন্তক উপরে সহজ্ঞদল পদ্ম কয়॥
ক্রমধ্যে খিদল কঠে খোলদল।
ক্রদিমধ্যে খাদশ নাভিমূলে দশদল।
লিঙ্গমূলে যড়্দল চতুর্দশ গুহুমূলে।
বস্তুভেদ আছে ভার চণ্ডাদাস বলে॥
সাধন তত্ত্বে ভার যোগ নাহি হয়।
বৈধি যোগ এই তত্ত্বে হয় ত নিশ্চয়॥

650

চৌদ্দ ভূবনে ভূবন তিন। সপ্ত আখর ভাহার চিন॥ চুইটি আখরে সদা পীরিতি: ভিনটি পরশে **ডপঞ্চে র**িড । निङ्क्रने कानरन आइरग्र धत्र । দুইটি আখর পাঁচের পর॥ কনক আসন আছয়ে ভাতে। भनिक ताका देवनाय गाउँ ॥ কর্পর চন্দন শীতল জলে। ষেমন আনন্দ লেপনকালে॥ তাপিত জনে সে আনন্দ পায়। শীতভাত জন ভয়ে পলায়। 🔪 পঞ্চরস আদি একত্তে মেলি। যে যার স্বভাব আনন্দে কেলি। অষ্ট সাধ্য একত্ ধ্বে। কনক আসন জানিবে ত্ৰি।

পঞ্চ রন্ধ অনুবাদ বে হর। আদি চণ্ডীদাস বিধেয় কয়॥

F36

বন্ধরন্ধে, সহত্যক্ষল পল্মে রূপের আশ্রয়।
ইন্টে অধিষ্ঠাতা তার স্বরূপ লক্ষণ হয়॥
সেই ইন্টে বাহার হয় গাঢ় অমুরাগ।
সেই জন লোক-ধর্মাদি সব করে ত্যাগ॥
কার-মনোবাক্যে করে গুরুর সাধন।
সেই ত কারণে উপজয়ে প্রেম ধন॥
তাতে যদি কোন বাধা মনে উপজিবে।
চণ্ডীদাস বলে সে নরকে ভূবিবে॥

639

সহজ আচার সহজ বিচার সহজ বলিব কায়। , না জানি মরম করে আচরণ এ বড় বিষম দায়॥ না জানি ধরম না জানি মরম আচরিতে করে আশ। শুনিয়া যেমন ত্রিণবের গান কাকে করে অভিলাষ॥ সুধাকর দেখি খছোত ধেমন সমতেজ হতে চায়। ১০ শত শত কোটি করয়ে উদয় · ় . ভবু ভার বোগ্য নয়॥ (मरवत इर्लंड 🖊 . পারিজাত পুস্প ্কপিতে করয়ে আশ। निवन्षा (पत्रि **ज्डग**न नोटि ३० ে দেবের সমাজে হাস ॥

এমন বে জন নিত্য সহজ ঘটায়
আচরিতে করে আশ।
বাশুলী আদেশে ভণে চণ্ডীদাসে.
নরকে হইবে বাস।

२•.

b:b

মাসুষ শাসুষ ত্রিবিধ মাসুষ মানুষ বাছিয়া লহ। সহজ মানুষ অযোনি মানুষ মানুষ সংস্কার দেই।। সংস্কার যেই ব্ৰহ্মাণ্ডেতে সেই সামাত্য তাহার নাম। মরণে জীবনে করে গতাগতি कौरताम-माग्रदत थाम ॥ অযোনি মান্তুষ গোলোক উপরে নিত্যস্থানে সদা রয়। তাহার প্রকাশ বৈকুঠের পতি लीला कांग्रा (यवा इय ।। তাহার উপরে নিত্য বুনদাবুন সহজ মানুষ জানে। খানন্দ ঘটান রহে তুই জনে ১৫ বিজ চণ্ডীদাস ভণে ॥

P22

মাসুষ মাসুষ স্বাই বলয়ে

মাসুষ কেমন জন।

মাসুষ রতন • মাসুষ জীবন

মাসুষ পরাণ ধন।।

ভুবনে ভুলয়ে এ সব লোক ৫

মরম নাহিক জানে।

মাসুষের প্রেমা নাহি জীব কে

মাসুষে সে প্রেমা জানে।

যে জন মামুৰ ্'সে জানে মামুৰ ্মাসুষে মাসুষ চিনে। >0 এ সুয়ের বল এ লোক মান্ত্ৰ मानूरव मानूव कारन।। জীয়ন্তে মরা মানুষ যারা সেই ত মানুষ সার। মহাভাগ্যবান্ ১৫ মাসুষ লক্ষণ মানুষ স্বার পর।। মানুষ নাম . বিরল ধাম বিরল ভাহার রীভি। **ह** छीमार्ग करह नकिं विज्ञ কে জানে ভাহার রীতি॥

কেবা সে প্রকৃতি পুরুষ কেবা।
কেবা সে মামুষ কার করে সেবা॥
প্রকৃতি বলিয়া বলয়ে জগতে।
প্রকৃতি কি বস্তু না জানে তত্ত্বে॥
রস্ত্রেমাধুরী সবা ছইতে ভারি ৫
বৃঝিতে শকতি কার।
এ সব বিরল অদভূত সকল
ইহাতে মামুষ অধিকার॥
চণ্ডীদাস কহে পাইতে বিরল
এইত মামুষ রস।
ব্যাহার আলাপে তুখ ভয় ভাঙ্গে

চহত বেবা জন জানে কহিছে না পারে শুমরে শুমরে সেহ। সে আপনার শুণে তরিল জাপনে ভাছারে তরাবে কেই॥

সবা হইতে প্রেম-রস।

ত্তনহ রসিক ভক্ত জন। '
জগতে জানি রাখিবে মন।
রসিক নাগরী পাইবা বধা।
রসের কোতৃক বাড়াবা তথা॥
রসিক যুবতী হইবে বে।
রসিক পাইলে না ছাড়ে সে॥
প্রকৃতি হইয়া রস না জানে।
জনমিয়া সে মৈল না কেনে॥
বে না জানে রসের রীত।
সদাই আনন্দ তাহার চিত॥
কি নারী পুরুষ দোঁহাতে একা।
১৫
কহে চণ্ডীদাসে পীরিতি লেখা॥

তিনটি আখরে না জানি কি আছে

তিনেরে করিল বশ।

তিন ভয়ে হুমু স্ঘনে কম্পিত

তিনে করে অপ্যশ॥

স্থি হে, তিনের মূল কি বটে।

যে তিন লাগিয়া ছুই বেয়াকুল

তিন গায় ঘাটে মাঠে॥

তিন সোভারিয়া তিন হি লাগিয়া

ভাহা দেখি লোক হাসে।
সে সুই কখন ভিন সদাকণ
ভাইে চণ্ডীদাস ভাসে॥

না ছিল বখন মা বাপ জনম · • আমার জনম হল। না ছিল বখন मामात्र खनम . পাকিল মাথার চুল। ना किंदा यथन ভগ্নীর জনম ভাগিনা হইল বুড়া। অনিভা কুলের এ কি বিপরীতে ন পিতা ন পিতা খুড়া ॥ না ছিল বখন খণ্ডর শাশুড়ী তখন হয়েছে বউ। >0 খরের ভিতরে বসিয়া রয়েছে ইহা না বুঝায়ে কেউ॥ মাটার জনম না ছিল বখন उथन करत्रिक हार। ना हिल यथन ३৫ पिवन तकनी তখন গণেছি মাস॥ (এখন) এ কুল ও কুল তুকুল ভূবিল পাথারে পডিল দেহ। কে আমি কে তুমি करह हखीमारम देश ना वृक्षाय कि ॥ **₹•**

বিবিধ |

ৰেহাগ।

আজু কে গো মুরলী বাজার।

এ ত কভু নহে খ্যাম রায়॥

ইহার গৌর বরণে করে আল।

চুড়াটি বান্ধিয়া কে বা দিল॥

ভাহার ইন্দ্রনীল-কান্ডি তেমু।

এ-ত নহে ব্লক্ষত কামু॥

देशत तभ एपि नवीन **आकृ**ि। नहेवर-(वण शहिल कशि॥. বনমালে গলে দোলে ভাল। এনা বেশ কোন দেশে ছিল। ١. কে বনাইল হেন রূপখানি। इंशत वाटम (पिथ ठिकनवत्री॥ नील উछालि नीलमणि। हरत द्वि हेहात सुन्हती। 24 স্থীগণ করে ঠারাঠারি॥ कु इं इल कार कमलिनी।. কোথায় গেল কিছুই না জানি॥ আজু কেন দেখি বিপরীত। **रत वृक्षि (माँशंत्र চति**छ॥ २० চণ্ডীদাস মনে মনে হাসে। এরপ হইবে কোন দেখে।

শ্রীবলরামের রূপ।

७२€

হহিনী।

দেখ বলরাম ভুবনমাঝে।
রূপ দেখি কাম মরমে লাজে॥
চাঁচর চিকুরে চামরী মজে।
নানা ফুল ভাল ভাহাতে সাজে॥
রক্ষত-মুকুরে মাজিয়ে মুখ।
তা দেখিয়া চাঁদের মরমে ছুখ॥
তিলক বলিত লালিত ভালে।
মুগ্গ ভ্রমরা অলকজালে॥
অরুণ দীঘল নয়ন দেখি।
বিক্রচ কমল কিসে বা লেখি॥

পাত সহিত কদম ফুলে। শ্রবণে মকর কুগুল দোলে॥ তিলফুল জিনি সুন্দর নাসা। নাগরী জনার মনের বাসা॥ অরুণ বরণ দশন বাস। वांधुकी कूटलत गत्रव नान ॥ कुम्म-कांत्रक किनिया विक। কি ছার ভাহাতে করক বীজ। চণ্ডীদাস কহে হাসির কাছে। আর কি জগতে অমৃত আছে।

গানার

ফটিক অঙ্গের জমু রজত-সুন্দর তমু त्राम एल एल वलताम। বিগত-কলঙ্ক চাঁদ কোটি গুঞ্চা মুগ্ৰছাদ ু মুগমদ-তিলক অনুপাম। চাঁচর চিকুরে চূড়া বনফুল-মালা বেড়া ৫ টলমল শিখিদল তায়। শিখিদল শত শত পরিমলে উনমত মধু পিবি মধুরিম গায়॥ পরিসর ভাল স্থল বিলোল অলকামাল মুখচন্দ্র অতি অপরূপ। চম্কিত অতি ভীত হেরিভে চকিত চিত কত শত মনমথ ভূপ॥ উন্নত বঙ্কিম চারু ু কন্দৰ্প-কামান উক্ত কমল পলাশ দুটি আঁখি। বারুণী অলস-ঘোরে মেলিতে না পারে জোরে ১৫ चूरम पुन् पुन् रयन रमिश ॥ नामाभूटि खलमल

ञ्जल अध्दत्र महा होनि।

বিলসে মুকুতা-কল

হেরিয়া,দশনপাতি সিন্দুর সুকুত। জাতি অমিয়া উগারে রাশি রার্শি॥ বাম কর্ণে ঝলমল মণিময় কুপ্তল पिकरणराज नवीन मञ्जाती। কণ্ঠহার পরিপাটি দেখিতে সোনার কাঁটি উরে গুঞ্জা অতি মধনাহারী॥ রঙ্গন মালতী কুন্দ कत्रवीत अत्रविम २० থরে ধরে লাগয়ে ভাহাতে। কুন্দ মল্লিকা জাতি কনক-চম্পক বৃথি রমণক তুলদীর পাতে॥ শেফালিকা সাউলাফুল মনদার অনোক ধুপ আর যত বনফুল ভালে। ভ্রমিছে ভ্রমরা ভায় মধুর মধুর গায় **छेक्र** भेत्र (मार्टन वनमारन ॥ করভ-শাবক-শুও স্বলিত ভুজদণ্ড কনক-কেয়ুর ভায় সাজে। নীল পাটের খোপনি ৩৫ অঙ্গদ বলয়ামণি মণিবন্ধ বাহুতে বিরাজে। শ্রীদাম ফুদাম গাথে চলিলা ভাণ্ডীর-পথে **ह** छीमांत्र (मृद्ध त्रकोष्ट्रक । দেখ দেখ রাম রায় ना (ठेलिंश त्रांका भाग চরণেতে রেখহ আমাকে॥

इनधत-ভরে মালা নাহি পারে দিতে। ফিরিয়া আইল সধী করিয়া সঙ্কেতে॥ হেন কালে আইল কাক খাছা দ্ৰবা বলে।

কাকমাল্য মান।

সেঁই হেতু নিল মালা ওঠে করি তুলে। व्याहात नाहिक रुग पिन (फ्लाहेग्रा । পৰনে দিলেক ভাষা ৰেগে উড়াইয়া 🖟

٥ د

আদিয়া পুড়িল ঠোলা চন্দ্রাবলীর খরে। প্রিলা দেখিল মালা অভি মনোহরে।
সংক্ষত জানিয়া এখা খুঁজে শুাম রার।
দেখিতে না পার পুন সাতলী খেলায়।
এগা সেই মালা লয়ে আনন্দে পুরিল।
চন্দ্রা বেশ করি সৈই মালা পরি এল।
রাইকে দেখিবার ভরে এল ভার পাশ।
প্রাধ্যেতে জানিল ভাল কহে চণ্ডীদাস।

পাশা-(ধলা।

rtb

রলেতে আবেশ হরে णामहाराज मूथ रहरत्र कहिरहन तमवजी त्राधा। ধর মোর বেশ ধর আপন আঁচরে ভর करत्रत्र मूत्रली त्रांथ वांथा॥ श्रांतिरम (यभन्न मिय किनित्न मुत्रनी निव १ আর নিব তোমার হাতের বাঁশী। ভোমারে জিনিয়া লব जाशन समरत्र (थाव নতুৰা হইব ভোমার দাসী ॥ শ্রাম করে হাসি হাসি আমার মোহন বাঁশী भाषां विषद्य वांत्र भारत । কড গুণের বাঁশী মোর কত ধনের বেশর ভোর সমান করহ কোন গুণে॥ রাই করে গুন খ্যাম বেশর যাহার নাম (मानएम नानिक। मुसमारक। बात्र ऋरहा मूथ जाना শাপনি ভূলেছ কালা ১৫ ছেন ধন নিন্দ কোন লাজে। ভোষার বাঁশীর গানে ৰধিল অবলা প্ৰাণে এবে সে ঠৈকেছ রাধার হাতে। क्श्रीमारमध्ये क्य বাঁশী গেলে প্রাণ রয় খল বাঁশী না দাখিহ হাতে॥

रहानि।

এ ধনি মানিনি মান নিবার। আবীরে অরুণ শ্বাম-অজ মুকুরপর নিজ প্রতিবিশ্ব নেহার॥ উন্ত এক রমণী শিরোমণি রসবতী ৈ কোন ঐছে জগমাহ। ভোহারি সমুখে শ্যাম সহ বিলস্ব কৈছন রস নিরবাছ॥ এছন সহচরী-বচন হাদয়ে ধরি ঈষৎ হাসি সনে মান তেয়াগল। क्रेनिजि हूँ हि (मांश दिति॥ পুन **गर क**न मिलि कद्राय विराम किल পিচকারি করি হাতে। দিজ চণ্ডীদাস আবীর যোগায়ত সকল স্থীগণ সাথে ॥ একা কাঁখে কুম্ব করি ৰমুনাতে জল ভুরি জলের ভিতরে শ্রাম রায়। ফুলের চুড়াটি মাথে মোহন মুরলী হাতে পুন কামু জলেতে লুকায় ॥ यम्बार्ड मिर्ड एड षात्र ना (मिश्न (कडे ए ঢেউ স্থির মাঝে পুন কামু। কভেক প্রবন্ধ করি धित्रवादत हाई इति খারে ধারে হাত বাড়াইসু। হাত ৰাড়াইয়া নাহি পাই ভূবিয়ে ধরিতে চাই কান্দিতে কান্দিতে ঘরে আইমু।

চণ্ডীদাসের বাণী শুন রাধ। বিনোদিনি

মিছে কেন ডুবেছিলে ফলে।
বুঝিতে নারিলে মারা ফলে ছিল অক্সছায়া
শুমি ছিল কল্পের ভালে॥

পরিশিষ্ট।

(本)

Бधीमाम-दक्का ।

(3)

বিভাপতিশ্চণ্ডিদাসো জয়দেবঃ ক্ৰীশ্বঃ।
লালান্ডকঃ প্ৰেম্য্কো বামানন্দত নন্দিঃ।
শ্ৰীগোবিন্দঃ ক্ৰীন্দ্ৰোহজ্ঞা সিদ্ধঃ কৃষ্ণঃ ক্ৰীন্দ্ৰকঃ।
পৃথিব্যাং ধল্ল-ধল্লান্তে বৰ্ণ্যন্তে সিদ্ধন্ধপিগা।
এভান্ বিজ্ঞবন্ধান্ বন্দে সপ্তবানিধিতুলাকান্।
ধেষাং সংখ্তিমাজেন স্ক্সিদ্ধিঃ প্ৰজায়তে॥

(?)

জন্ম জন্মদেব কবি-নূপতি-শিবোমণি,

ক্ষাপতি রসধাম।

অয়ু জয় চণ্ডীদাস রসশেশর অধিল ত্বনে অয়ুপাম॥

য়াকর রচিত মধুর রস নিরমল গছাপছাময় গীত।

প্রাকৃ মোর গৌরচন্দ্র আয়াদিলা রায় স্বরূপ সহিত॥

যবহুঁ যে ভাব উদয় ছহুঁ অস্তরে

· তব গায়ই ছহ°মেলি। শুনইতে দাৰু পাৰাণ গলি যাওত

ঐতন স্মধ্র কেলি॥ আছি**ল গো**পতে যতন করি প**ত**িমোর

আছিল পোপতে যতন করি প্র মোর জ্গতে ক্রল প্রচার।

সো রস অবংগ পরশ[্]নাহি হোমল বোমত বৈফ্যব দাস ।

(0)

জন্ম জায় চণ্ডিদাস গুণভূপ। 'বিজ্ঞাকুল-ক্ষলবন্ধু কবি-মগুল-মণ্ডিত মহীমাধুরী অপরুপ। পরম সবলহিয় প্রবল প্রেমময়

বান্তলী দেবী দেওল উপদেশ।
নিক্ষপম গোরী ভামরস শিবইতে
বাচুল নিশিদিশি উলাস অশেষ।
মরি মরি কি রীভি পীরিতি-রস শশ্ধর
ভারা সহ রস কো কক ধর।
বিরচয়ে ললিভ গীভ শুনইতে ইহ

অধিল ভ্রন-নরনারী বিভোর॥
রসিক সকল সহ সংকীর্ত্তনরত
রাধানোহন-চিত উম্ভায়।

বিদিত চবিত চিজ ভণ নরহরি পামর মন কি রহব তছু পার।

(8)

বিপ্রকৃষে ভূপ ভূবনে পূজিত যুগল-পীরিভিদাতা।
যার তহু মন রঞ্জন না জানি কি দিয়া গড়িল ধাতা।
সতত ভকতি-রদে জগমগ চরিত বুঝিবে কে।
যাহার চরিতে ঝুরে পশুপাধী পীরিতে মজিল ধে।
শ্রীরাধা-গোবিন্দ-কেলিবিলাস যে বর্ণিল বিবিধ মতে
কবিবর চার্ফ নিরুপম মন্টী ব্যাপিল যাহার গীতে।
শ্রীনন্দ-নন্দন নবছীপপতি শ্রীগৌর আনন্দ ইন্টা।
যার গীতামুত আত্মাদে অরপ রায় রামানন্দ লৈঞা।
পরম পণ্ডিত সন্ধাতে পদ্ধর্ম জিনিয়া যাহার গান।
অন্তর্ধন কীর্ত্তনানন্দে মগন পরম কর্ফণাবান্।
ক্রাধান্দেরতি যার তার সঙ্গে সভত সে স্থেপ ভোর।
রিসিক জনের প্রাণধন গুণ বর্ণিতে নাহিক গুর॥
চণ্ডীনাদ-পদে যার রভি সেই পীরিভি-মরম জানে।
শীরিভি-বিহীন জনে ধিক্ ব্রুদাস নরহরি ভণে।

· (e)

জয়ক্ষয় চণ্ডাদাস দয়াময় মণ্ডিত সকল গুণে।
অহপেম থাক যশ রসায়ন গাওত অগতজ্ঞনে ॥
'নানুর গ্রামেতে নিশা সময়েতে বাঞ্জী প্রসন্ধ হৈয়া।
রাই কাম ছহঁ নওুল চরিত কহয়ে নিকটে গিয়া॥
শুনি ভাবে মনে জানি পুন দেবী

কহে কি চিন্ত হ চিতে।
ক্রথমন্নী ভারা ধ্বনী দরণে ফুরিবে বিবিধ মতে।
ইহা ভানি নিশি প্রভাতে চলিল প্রণমি বান্তলী পায়।
ধ্বনী-দরশ-রদে ফুরে সব কি দিব তুলনা ভানা।
চণ্ডীদাস হিন্না ধূইল ধ্বনা প্রেমেডে পড়িল বাধা।
রাই কাম গুণে ঝুরে দিবানিশি ঘুচিল সকল ধাধা।
ধ্বনী মহিমা সীমা জানাইল ধ্ত সে বান্তলী দেবী:
নরহির কহে পাইল তুলহ প্রেম চণ্ডীদাস কবি।

(😉)

কবিকুলে রবি চণ্ডীনাস কবি ভাবুকে ভাবুকমণি।
রসিকে রসিক প্রেমিকে প্রেমিক সাধকে সাধক গণি॥
উজ্জ্বল কবিত্ব ভাষার লালিত্য ভূবনে নাহিক হেন।
হলে ভাব উঠে মুখে ভাষা ফুটে উভয় অধীন যেন।
সরল তরল রচনা প্রাঞ্জল প্রসাদ-গুলেতে ভরা।
বেই পশে কাণে সেই লাগে প্রাণে

শুন। মাত্র আত্মহারা। রামতারা ধনী রাধাক্ষরপিণী ইট ধাতু যার হয়। যাহার দরশে চণ্ডী রুসে ভাসে কবিতার লোত বয়।

(1)

চিণ্ডীকাস-চরণ-রঞ্জ চিস্তামণিগণ শিরে করি ভূবা। শরণাগত জনে হীন অকিঞ্নে ক্রণা করি পুরব আশা।

হরি হরি তর মরু অকুশল যাব।
. রসিক-মুক্টমণি প্রেম-ধনেটি ধনী
কুপা-নিরীধণ যব পাব।

ক্ষম শোধি মোহে ঐছে প্রবোধবি

বৈছে ঘূচয়ে আধিয়ার।
ভামর গৌরী বিলাস রস কিঞ্চিত

মরু চিতে কর পরচার।
ছহঁক চরিত বদন ভরি গাওব

রসিক ভকতগণ পাশ।
কম অপরাধ সাধ মরু পুরহ কহ দীন গোবিকা দাস॥

(b)

দ্বিজকুল-স্থত রসময় চিত জয় জয় চণ্ডীদাস।
মধ্র মধ্র শবদে গাইল। যুগল-রসের ভাষ ॥
কিবা অপরূপ কবিতা-মাধ্রী আথর পীরিতি-মাধা।
অমিয়া ছানিয়া দিলা বিতরিয়া অন্প বচন ভাথা॥
বরজ যুগল পীরিতের খনি সে মুখ শরদ-শশী।
কবিতা পঠনে হেন লয় মনে চিত যায় যেন থসি॥
বাশুলী আদেশে যুগল-পীরিতি গাইলা সে কবিচন্দ।
রস কবিকুল মত্তু মধুকর পীয়ে ঘন মকরন্দ॥
নিতাই আদেশে পরসাদ দাসে গাইবে ব্জবিলাস।
চরণ-সরোক্তে শরণ লইকু সফল করহ আশ॥

পরিশিষ্ট।

(1)

স্থান্ত প্রীষ্ক শিণরতন মিত্র কর্তৃক সংগৃহীত।
(রতন-লাইত্রেরী, পুথি নং ১০৬৬, সার্দ্ধ ছই
শতাধিক বৎসরের প্রাচীন পুথি, প্রাধিস্থান—রক্ষকবাটা, লখোদরপুর)

(>)

মেদের বিহাৎ চাদের উদিত
বাম করে যেবা ধরে।
ভোমার আমার রসের চাতৃত্তী
আভাবে ব্বিতে পারে॥

মামুব মুরতি হৈলোল আকৃতি ं व्यक्तन वजन व्यांशि। দাড়িম কুমুম বরণ স্বম ्यन मोषांभिनौ भाषी॥ জবাতর পাথী জবাপুঙ্গে থাকি किंद्र (अर नाहि स्य। একটি করয়ে প্ৰনাগ্মন সন্ধান নাহিক পায়॥ রক্তবর্ণ মর রক্ত পদ্মপর রক্তবর্ণের পঞ্চস্থী। এ স্ব লইয়া করে নিত্যলীলা হিকোল রাগের মামুষ ভজন হিকোল বাগের দেব গন্ধক কিল্লরী কিবা নরনারী किवा (मरी आंत्र (मरा॥ কিবা মুগপাখী কিবা বৃক্ষঝাকে কিবা কীট অলচর। আরোপিত হলে -হিসোল রাগেতে হিলোল বরণ তার॥ হিলোল রাগেতে কহে চণ্ডীদানে হিলোল পাথীর ঠাই। হিকোল রাগেতে যে জনা ভজিবে সে জনা মাত্র পাই। (3) প্রেমের পারিতি অতি বিপরীতি দেহ বৃতি নাহি বয়। স্বভাব রাধিবে প্রকৃতি প্রভাবে এ কথা কহিতে ভয়॥ যদি হয় স্থিত অন্লেতে ঘুত তাহার তুলনা সেই। আছ্যে এমন ক্ৰোড়ে কোন জন याजन करत्राष्ट्र (यह । পুক্ৰের রতি শৃক্ত দিয়া ভথি প্রকৃতি রদের অঙ্গ।

প্রকৃতি হইঞা পুক্ষ আচরে করিবে সে নারীর সম্ব ।
উপটাঞা রতি অতি বিপরীতি প্রেম রতি অতি নয়।
চঞীদাসে কয় দেহ রতি নয়
বিন্দুপাত নাহি,হয়।
(৩
কামের স্বরূপ নাহিক ইহাতে রাগের স্বরূপে রয়।

একাম্ব করিঞা প্রকৃতি হইঞা মামুষ জন্মাবেশ হয়। নিকামী হইঞা রাধা রতি নঞা একান্ত করিঞা রবে। ভবে দে জানিবে দেহ রতি শুক্ত প্রকৃতি জানিতে পাবে॥ স্থী গোতা ধরি করি অঙ্গীকার অন্ত গোতা নাহি ববে। প্রকৃতি সেবিঞা পুন সক হলে এ খোর নরকে যাবে॥ প্রেম রতি গুণ রাগের সাধন দেহ রতি নাহি রবে। পুন ইহা হঞি অন্য অন্য মনে তবে সে নাহিক পাবে॥ নিগৃঢ় বেণ टेह व क्रेशाव এই সে কহিলাম সার। চতীদাসে কয় কামান্তগা নয়

> ষেন সে করাত ধার ॥ (৪)

বদিকা অবন্ধিপুরে পঢ়কা পঢ়ন পড়ে।

ক্রেন কালে এক রসের নামরি দরশন দিল মোরে।
সে যে চাহিল আমার পানে
ভাম হানিল মদন-বাণে।
সেই হৈতে মন করে উন্নেটন ধ্রেম না মানে প্রাণ্
সে ধে বসের পুতলী বালা

তার মদন-মোহন লীলা।

চেত্তন সহিতে চড়ি মনোরথে করএ বিবিধ থেলা॥

পাপ ভয় করি মনে

তারে ছাড়িতে চাহি যেমনে।

বাঢ়িল মদন করিল রমণ যাপল রমণী সনে॥

সে জগতজননী উমা

রাগিতে নারিল আসা।

দেখিঞা সে রূপ নবান পীরিতি জাতিকুলে দিল সীমা॥

যত মনে করি বার।

ত ভূ রজক রমণী সার।।

চ গুণাসে বলে নবীন পীরিতে জীগতে হইলাম মরা॥

(t)

তার পর দিনে দেবী আরাধনে বসিলাম যতন করি। অই ৩ভ দিনে দেবীবার স্বর্ণ

व्यक्तिगंग्र (१४न् (शाती॥

হায় মন চলি গেল কেন। দেপিঞালে রূপ নবীন পিরীতি স্মরণ

লইলা থেন॥

শুন শুন দেবী ভোষা আমি সে বিফল হইল মোর। পুণ্য ধর্ম গেল মোক্ষাদি সকল চরণ

না পেলাম তোর॥

দেবী কৰে পুন শুনহ বচন বিবোধনা বাস তুমি। বছ ভাগোর উদএ শুভার যোগবলে জানি আমি॥ জনম সফল জরামৃত্যু গেল ঘৃচিল যতেক দায়। হরিছর ব্রহ্মা পুটা (?) দিক কথা

ধেয়ানে নাহিক পায়।

পিরীতি রতনে করিবে যতন আমার বচন মানি।
ডক্ত শুদ্ধবতি স্বরূপেতে স্থিতি প্রেম অফুসারি গণি॥
ইহাকে নাহি সারাৎসার জানিবে জগত মাঝে।
আমি হেন কত দেবী দেবা গেলে

কি করে তোমার কাজে।

চঞ্জীদাদে কয় এই সভ্য হয় স্বভাব স্বৰূপ দেহা। বাশুলি বচনে সভ্য স্বানি মন্দে

ধোবিনী সম্বৃতি লেহা।

(&)

ছরতি দ্র সে প্রেমরতি পুনে এক * * রস ভল। এমতি জানিঞা রসিক দেধিঞা করিবে সে নারী সল রসিক জানএ রসের চাত্রী সেই সে তাহার

সোণায় সোহাগা যেন।

রসের পরাণে প্রেমের পিরীতি মিশাইক্রা আঁছে তেন॥
না দেখিলে মরি দেখিলে কি করি হিয়াএ হিয়াএ থ্ব।
আপনা বেচিক্রা তাহারে কিনিব লোকাপেক্রা
নাহি নিব॥

লোক ক্ৰচন গুৰুর গঞ্জন মেল মানিলাম বিষে। চণ্ডীদাদে বলে গোপত না হলো পরকীয়া হবে কিনে

(9)

খ্যামের কিরণ শরনহি বন ছটার কিবা দে ছবি। হেন মনে হয় যদি লোক ভন্ন নয় কোলে করি চেঞা যেঞা॥

(36)

নিসেদ (?) শীলজ বনমালি।
বাধানে কি ভেটে চন্দ্ৰাবলী॥
হেম্ঘট দেখিয়া পাথারে।
সে রাধার মন সাত পাচ করে।
মাকড়ের হাতে নারিকল।
খাইতে সাধ ভাঙ্গিতে নাহি বল॥
সাপের মাথা ফ্লি জ্বে।
বড়ু কহে বাগুলির বলে॥

(2)

অথ কলহান্তরিতা।
কেন বা কাহকে আমি উপেধি আইছ।
আপনি অগপনি কেন গরল খাইছ।
হায় হায় কি মাটি গাইটা মুই এমতি করিছ।
হাতের রতন পায়ে- ফেলাইছ।
স্থা পিবইতে গেছ ডুবিলাম বিষে।
হিয়া দগদগি হইল জ্ডাইব কিলে।
চন্দন তরুর কাছে গেলাম ভালে।
অনুতের বিষক্ষল হইল দেবলে।
কি জানি ললাটে মোর এমতি আছিল।
চঙীদাস কয় সই উদয় হইল।

ধুরাং ও অপ্রচালত শব্দের ত্যালকা ও অর্থ।

भगगः था। . 4 १८० कथा विमार्ख चंक्रम। 44 र्म गर था। चर्य । ष्मकान १ घरमान। অপেয়ান আ অবক সধাই **অগাধ** আই ८७७ . बाइरम्। ৩৩নং পদে আছে,—"আচছিতে বাই আউদ্ভ ৬৩৮ বোধ হয়, পাগলিনী, আলু-পজ्नि चर्थाहे"। 'ज्याहे' भटकत দাৰিত। লিখিয়াছিলাম-'অস্থির'। আখ্যান ৩৩ व्याशाधिका ; व्याशास, व्येना । কিছ এখন দেখিতেছি, 'অস্থির' অর্থ আগম 404 (वांध हम 'क्शम', क्र्स 'क्शम।'। হইতে পারে না। রাধা ত অব্ধির আপর্ব ৬১৭ वड, भूर्ग। रहेशा शर्फन नारे, फिनि मध्या-**ভাগরি** ১৪**२, २०७ श्रम, जा**धात्र। रोना रहेशाहित्यन, -त्यहे गरका-আগল ১.6,১৮. काउत्र। रीनछ। चठीन शकीब, क्छबाः আগি विधि। 'स्थाध' व्यक्त क्रिक्त मन्त्र हर ना। আঞ্জিল ২০৬ সভাশ বাবু বলেন যে, 'আগলি' পাঠ প্ৰিৰ **प**क्रिया हहेरत, वर्ष 'भविभूब, स्निभूब'। किन्न पनिरम्भ ७८७ ज क्यांठांत्र चर्च हम ना । 'चनि-'আঞ্চলি' পাঠ রাখিয়া ভাহার অর্থ ৰোৰ' না পড়িয়া 'অভিবোৰ' ও 'ৰাটকাইয়া' করিলেও বেশ চলিডে 'ক্ৰে' না পজিয়া 'ক্রে' পজিলে शादत । अनगरक चार्डिकारेया चर्चार **उद्ध अ**कं त्रक्ष वर्ष इत्। সংখ गहेबा व्यवीर महनाकुत हहेबा। বছধন पश्यम् गर्महा । আচির ২০৭ কোন অর্থ নাই, কেবল প্রাচীরের चह्रभ्य । नत्त्र बाबहुछ हत्त्व, (वयन 'क्ल हैन'। >•७,>>१,>७०,) नविष् चित्रधारम माहे, पांक् ३८ मानि। षाठेन २८ (वरी।) क्वि न्लंडे (वांध इव ८६, **हिशान देश 'विश्वमु,' 'कडे' এই व्यर्व** चावनि ७२ (चर्य द्विए७ शांत्रनाय ना।) चौतुवा २७> अञ्चलावमव, तृक् ७ वनम উद्धितं. ব্ৰিহার করিয়াছেন। প্ৰকৃত পৰ্ব 'পদ্যাতাণ', ক্ৰিড আর্ড। এরণ পুত্রকে এ কেশে ७७३ 'अंदर्श शुक्त वरन। क राम छम् कडे वर्ष वावल्ड चान ১७२,२०৮ टावमणिक चर्व 'चल', विक्रीविक्रिय र्देशांद्ध । मर्गडाय ६६ निमा, मर्गमान। वर्ष 'वारी'।

****	. , ,	1			
***	नम्पर्शा		শব্দ	भगगरभा ' व्यव	
আনচান আননা		वित्र ।	উভরোগ	७) डेक भव	, बर्शान डेरक्श
		नन ।		ৰা ৰাপ্ৰ	
		चारवस्य ।	উভরাষ	६६३ ट्रेटिक:ब	(व)
আর/ড		শক্তি বহু ছানে নানা অর্থে ব্যব-	উন্নস	8>•,8৮३ উव्यन	1
		চ হইয়াছে। কোৰাও অৰ্থ 'প্ৰেম',			,
		াৰাও 'শোডা', কোণাও আবার	এড়ি	30 11. 431	**************************************
-464-		ান অৰ্থ নাই।	-41 P	२८,>>•, ६२>, वर्थ	
আৰ্ত্তিক	845, 85	উ, ৪৯৫, আধিকা ভিন্ন অপর		पत्रा ना । एउ कहा ।	া যাওয়া; ভ্যাগ
		অৰ্থ সকত হয় না।			•
পারন্ত্র	9 2	হরিকা।		•	
আরম্ভন	8•3	কৰ্ম।	43	३०६, ३१७, ६८३ व्या	कृत्य व्यर्थ(শर,
আলিস	₹•9	षानग्।		ৰ ছা	न ।
আসক	9	উ পবেশন-খান, चामन।		क	
		₹	কচলিয়া	369)	
ইছিয়া	२ १ •	रेक्टा कतिया।	কচালি	৩৯ } হতবারা পরিকা	র করিয়া, কাচিয়া।
		₹	কটা	১২২ অনেকটা *	ोषा ।
>c_		<u> </u>	ক্তি	৪•৪ কোৰায়।	
উকি		वित्नवा कतिरम व्यक्षिकृतिक,	কদৰ্থন	৩৪৩ কুপরামর্শ অর্থ ব	দরিলেও চলিতে
		না করিলে গুপ্তভাবে থাকিয়।			छेत्र मिटक त्रुथा
উ[∓		কং প্রকাশ হওয়া—peep।			করে, স্বভরাং
914		প্রথমটির অর্থ উপস্থিত হওয়া, নীষ্টির অর্থ উকি—peep।		यज्ञना (तम् ।	
डेव ७००	144		कत्रदव	७ किटलम, हेराक।	
উদারিয়া	৮২	(१) খুশিয়া, উদ্ঘাটন করিয়া।			ৰে অংশ জড়ান
डे ठब		•, ८२३ উक्त, परनक ।		थांदक।	
, উচল	955	डेक । ४	क्रवह)२७ क्थनहे। 	
উচাক	660	উচ্চারণ করা।	কাডা কাড়ার	৩৭১ কপ্তা।	
डे डर	643	उक्क् शन।	ক্নার ক্নার	(१)১৩০ ভীর।	
, উवा व	b1	उद्ध न ।	कृष्टेक कृष्टेक	৪২০ নির্থক। কুটিল,	A TO THE REAL PROPERTY IN
Gacata	209	उद्भा र	X++	नमख हवनहोत्र अहेर	
উত্থাগর	656	व्याभवत् ।		व्हेर्द,—स्य त्रव्रतः व	
উंचाकिया.	454	উল্টাইয়া, মুণা করিয়া, ভ্যাগ		शास्त्र, जाशंत्र ७ गर	
	,	ब्क्तिश ।	কুটি	५७७,८७० वर्षाव्यस	
केंक्ड र	. •61	म्ब कडा।	~	ष्यस्य ।	Vis.iaila

भव	পদসংখ্যা	क्षं	44	नवगरच्या	44 1)
कृषण '	4.2	কুল দিয়া পরিস্থার করিল।	হোবৰা	(8)	व्यवस्तित वश्च मध्यामः
*কুলগাবি	**	कूरनव भोवव।		Б	
কুহাৰে	b-la	क्षांविकांव ।			
কোঙৰ	•>	কুৰার।	59	,	5क्न।
কেরহাল	. 588	मंबि ।	চাৰিত্	०१२	আবাদ করিলাম।
কোপনি	655	(?) ·	চাতর		e, ७०१ हपत्र ।
••••	4		চাপটিলে		চাপিরা ধরিল।
		সামান্ত।	চালে	8 • ¢	আবরণ চর্মে।
থেদ	\$\$.	নৌকা বাহিত করা; নদীর এক	চেতনী	98	চৈতন্ত করাইতে পারে, _ব
বেরা	300	পার হইতে অপর পারে নৌক।			কোন খীলোক।
		नहेबा वाख्या।	८हटहे।	40	व्यञ्जवस्था।
	-	व्या राज्या ।	চৌরস	360	व्यवद्भुत्र ।
	প			E	
পতিক	8	মত, সমত্ব্য।	ছ ড়ি	834	व्यनहाद हहेवा।
গভরেড		(অর্থবোধ হইল না)।	इन्छ न	650	इना ।
গদি	191	(অর্থ নাই)।	eta	889	ভাষা ।
পাপরি		৪২৫, কলসী, পাত্র।	Ecg	212	ठनिया यात्र, नहे स्त्र।
গাড়ে	12	প্রোধিত করে।		জ	
গাড়ি	852	পাঢ়, পভীব।		अ	•
গৃাভ	W	অন্ত, শরীর। জন্ম	₹ Ÿ	44	निक्ष।
পাৰন	२०	গীত।		est!	এক্তা।
গারিমা	>6.	পৌরব। ভেদ ক্রিয়া।	वनि	>>	(यन ।
গাসি	469		वर्	a, 57	, ७১५ ८वन ।
FIED	>1	खर्स क्या ।	ৰাগাত	>>+	>> } चन्द्र ज्यानात्रक
গুকু বিখ		영주 I	ৰাগাতি	336	}
গেও	485 5 99.	পেল। গোপনে।	बारक	92	क्रवाह ।
গোপতে		যোগনে। মিনভি।		াভি ৬২৭) 56-1-1
পোহরি গোহারি			জাতিয়া		है টিপিয়া দেওয়া
(गारा।		- (नव प्रक्शन गा/।	कांग		oe মাথার দিবার ক্লাণ্ড।
	ঘ		भाग . वि	50b	जीवन शांत्र कति, वैकि
ৰাতে	99	च्रतित ।	, । प विदर्ग	958	ৰাহাতে।
ৰাটি	૭૭ર	चन्द्राप।	्षा जूना		৯ শীঘ, পৃথক্ও হইতে পাঢ়
८वांवना	6.0	চিন্ধা, 'বাগনা' নৰে। ঘোষা পুনঃ পুনঃ আবৃত্তি কৰা।	পুৰ। জুৱার		प्रश्र केहिक इत्र ।

•	' কা	•	अंक्	পদসং	या . चर्च
भक्	পদসংখ্যা	पथ ्	ডুৰি	610	वेक्ट्र, रक्त ।
वं व क	₹8	বাভাগন।		856	নিৰ্দয়তা।
. ৰাট-	888, 1		ছোৰি	680	मृष्ट कविशा।
ं वामव	२२२	नागांद कांत्र कुक्।	ভোর	856	रेट राजका । सम्बद्
	944	.वर्षात्र ।		. 5	
বারি	96	ভূপার।		•	
ঝাঁপে	७२१)	5 \	296	क्षा कहिवाद खगानी।
वीशदर	8, 24	ठाणिया भरत, जारतन करत।	GPI	475	विश्वन।
বিৰুট	225	ক্ত কলসী-্থও জলের উপর	ज्या क	800	व्य व्य व्यव
•		इणिया त्थना।		ত	
ঝুৰি	866	मूख थेख ।	ভক্লবি	11	কৌশলময়।
ঝুরিয়া	10)	ष्यं वर्षे कतिया।	তক্ৰিক	9.6	বিচার।
	t		उठे इ	•>	ভীত।
\$		FF	তৰি	३३, २७	ভাহার, তথার।
টাগ	•	कड्या वर्ष ना कतिरत छेशांव	তাক	٥٠٥, ١٠٠	
		नाहे, তবে কেমন করিয়া হইল,	তাকর	403	ভাহার।
টান		व्या योष ना।	তাকিয়া	468	मृष्टि कतिया।
টার	09	গন্তি।	ভাজনি	766	उर्क न।
ण। প টা ল নি	4.5	হাতের অলঙারবিশেষ।	তাড়বাল	1 85	विवरद्वत्र वामा ।
डिटक	41	(हनन।	তিখিন	>	তীকু।
गिर	9.9	হিন্ন হইয়া থাকে।	ডেনা	10	ছিন্ন বস্ত্ৰ।
টাটনি		৬ চতুর।	ভেরছ	243	किर्वाक्, वक्ष ।
টা টপ না	99	ठाजूर्या, इडोमि।	ভেঁহো	84.	टबर ।
्रेम् दर्गमा	96, 36 36		ভোড়া	२२२	ডৰ্জন, সজোধ উচ্চি।
4-1-11	£ .	रेखनान-विश्वा।	ৰোড়	809	ছিড়িয়া কেলিয়া।
ঠানি				थ	
' ঠাম	400	चस्यान क विद्या ।	ধরি	V>8 .	गाति, त्थंगै।
, ,	486	অভার কাজ।	बदम बदम	₹8	সারি সারি।
्रे गनि		र्ग, निक् ष्ठे ।	থানা		माष्टा।
	<u>e</u>	रक क्या।		11, 863	যাগন করিয়া।
'ডাকা				99 }	देशी छित्र जागत कि जर्थ हा
्, भारत	333 434	ভাৰাভি, চুৰি।	८वहा ।	se } :	(विना।
, viai	, E1	६ स्मित्रा (एख्या ।	পোগে	665	1 3036

•

	भय	পদসংখ্যা	· 	नय '	পদসংখ	n 44 ::
	ৰোৰ '	•	पड ।	• নাট	(>>6, >80	, ২৩ ং, নটামি, ছটামি ।
	•	P		410	lues	(याहन (वन.।
	क्श्रपन	48.	कहे।	নাটকা	96)	
	रफ़	28	मृष्ट्, निन्ध्य ।	নাচী	ر د ه	নাড়ী। • -
	प्रकार	7.4	मृह कारव।	নারা	9.4	(वैर्थ বুকিলাম না)।
	पत्रम	₹ 1 ₹	यज्ञना ।	নাহ	222	নাথ ।
	দরশি	8	वर्षन, षांकात्र।	নিকশে	8.5	প্ৰকাশ করিয়া।
	पत्रिया	>84	नको ।	নিৰ্ধা'ড	82	ৰাঘাত, আক্ৰমণ।
	ग णा	24	কাতর অবস্থা।	निছनि	961	ভাগে।
	शांभना .	1.	बज्या निरिश्नादिनाम, किन्द	নিছিয়া	29.	ভাগে।
			ভাহা বোধ হয় না। শৰ্থবোধ	•	8>>	বলিহারি।
			हरेन ना।	নিছু	885	লেখা।
	पिर्दर्भ	969	চন্দ্তে।	निशान	478	निर्मम ।
	मिव	45	षि वा।	नित्रदङ्	६७३	निक्रिं।
	नीयन	50	मीर्थ।	নিশান	2.62	मक ।
	ছণ্ডল	20	ৰোড়া।	নিঃখান	200	भव ।
	ছম	848	विश्वन ।	निंग	9	নিজা।
		8, 69	(पर्।	নেহালে	390,	one (Tet 1
	ধেয়াশিনী	17, 65	ৰে স্থালোক দেবভার পূজা	নোটন	85+	ह्फा।
			क्रत्र।		9	
	देशव	२७७	সাধ, অনৰ্থক।	পঞ্চর	908	(वर्ष हद ना)।
	দোহারিয়া	8 >	শেড়া ৰোড়া।	পৰা	Bre	(বিশেষ কোন অর্থ নাই)।
	दर्गा कि	٤٠٥	ৰিভীৰ।	१५ ७४	2.	भक्षो वर्ष ; कि भक्को, वन।
		थ				यात्र ना ; क्कू है कि इव ? मबूब
	पापटम	369	खरमः।			रहेटड भारतः; त्मक भवाव्य ।
	ধান্দা	₹•₹	हिंखा, सम ।	পছ্মিনি	२७३	পদ্মিনী।
	ধাৰনি	> 0	মিশ্ৰৰ।	পনস্বা	878	(वर्ष वृत्रिनाम ना) ।
	री	489	शीत ।	পরকার	.	व्यकात ।
á	ধেয়ানি	576	शानमधाः :	পর্কিত	422	প্ৰকৃত ৮
		<u>-</u>		পর্মি	9.9	পরীকা করিয়া।
	नर्ग	•••	(malemater when me) .	পর্বশা	125	স্কট অবস্থা।
,	ৰগে ৰঙি		(वर्षस्वाध हरेन ना)।	পরতেক	:•	প্রভাস।
	শা ত	bb	व्यनाम ।	ণরাভব	848	जनमान, बहुना।

		W-		
मच भग्नाम्या	वर्ष .	, শ क	পদসংখ্যা	. पर्
পৰিবাৰ্গ ২০, ৩২০ ৩২৬, ৩৩	्री निका, चशवान।	বয়ানে	89	वश्दन ।
भगाबी .b	"। 	বড়াই	224	গৌৰব, বাহাত্ৰী।
প্রারি ৬২৬	, ধ্বাকার। প্রবার করিল, ফেলিল।	বজুয়া	ŧ۰, ۵۰	বড় লোক।
भाषेत्र ्०८६		दह	•	वध् ।
शांशांनि ७२१	বৰ্ধার নৃতন ঢল। 'ধৌত করিয়া।	ৰা	9.9	ৰাতান।
পারা ১১	म्खा	বাই	€ 30	বাহিত করা।
পিছ ৪৩২	মযুৱ-পাধা।	বাউল	ં૭૨૧	উশ্বস্ত ।
পিত্যাইব ৭৩৩	প্রত্যন্ত করাইব।	বাঙৰি	و د, وې	পাপলিনী।
পুনি ৩৯৩		বা ও	8 15	বাজাও।
পুনবেরি ৩	পুনর্কার, পূর্ণিমা অর্থ হয় না। পুনর্কার।	ৰাধার	>>•	প্রকৃত অর্থ ধানের মড়াই
भूत्र श ६७०	्रम्साप्र। (व्यर्थ वृक्षिमाम ना)।			এখানে जाना।
পুরা ৭২	थिन प्राप्तान ना)।	বাগাল	>5>	রাধান।
পুরি ৫৬৭	नाव विद्या ।	বাচাইনা	641	বিভার করিলা।
শেখি ২৫	पाद्यागद्या।	বাঢ়া	126	সংবর্জনা ।
	दर्भाषा दर्भोगन ।	বারিল	8 •	वष इंडेन, यनिमन।
প্ৰবন্ধ ৩৫, ৩৮ পঁৰ ৩১	কোনগ। (বিশেষ কোন অৰ্থ নাই)।	বাসি	84•	म्या क्रि।
প্ৰিয়া ১	(। परन्य ८काम अप मार्) । श्राटिक (प्रथिया ।	বাহে	.312	বাহতে।
পিধন ৪১	াৰতেহ দোৰগা। পরিহিত।	বাহটি	4.2	वाष्ट्रंत्र ज्यमकात्रविद्ययः ।
	गाम्राह्ख ।	বাহড়িয়া	See	অগ্রসর হইয়া।
यह		বায়	२७	বাজায়।
ফার ২৯৩	ছুই অংশে বিভাগ।	».c	98	बाग् ।
क्टें क €०२	সামার ।	বাজ্যি	574	আঘাত করিয়া।
(कं.क ८०३	প্রকেপ করে।	বিকি	>•5	বিক্ৰয়।
ফোঁপান ১৫	কোরে নিখাব।	বিকে	7 • 8	जि।
ব		বিখিনি	68.	विश्व ।
		বিজুরি	78	विकार।
বন্ধিল ১৭৮	रक्शामी, इंडे।	विद्वविद्	२२७	विশुख हरेरन ।
ৰনি ১•১	(অৰ্থ বোধ হইল না)।	বিথার	२.७	ं विभृष्यम् ।
वत्न ४२	मिन रव।	বিদপ্ৰ		১৭ বেহাম্ক।
, ব্যান ২৯, ৩০, ৪১ ১ ===		বিদগধি	७३	প্ৰেমিকা।
े बननि ১७	गर्ठन ।	ৰি নি য়া	950	কাটিয়া।
	অরে অরে বিস্থাস।	विवन	978	वनहोन।
ব্যৱধন ২৩৩	वर्रन ।	বিভাৰ	101	নানা ভাৰ হইতে পাৰে
वविद्या _ः २२८	राष्ट्रक शर्क ।	বিভোল	30-4	विद्रकांत्र ।

			le/o		
শ্ব পূদ্ৰ	रश्रा .	चर्व	भक्ष • 9	।मगर् ग्रा	ष्यं
বিদ্ধ বিছ্ল	4•1	चर्वद्याथ हरेन ना ।	ভূ কেঁ	٤٥٠	विश्व इग्न ।
বিসর	413	বিশ্বত হও।		ম	
বিহি	>6	विषि ।	मञ्	>6	আমার i
वृषि	950	वृषि ।	মলতোড়ৰ	>>	পাধের এক রকম খলম
बूर्ण '	4), >0 0	सम्बन्धः ।			এখন ভোটা বলে।
বেক্ড	۲	ৰ্যু ক্ত ।	ম হটা	(60	हाँवि ।
বেয়া	>.0	ৰাহিত করিয়া।	মহল	₹8	বাটীর অংশ।
বেয়াপিত	860	ব্যাপ্ত, জ্ঞাত ।	মহাই	414	भहान् ।
বেরাইতে	>11	বাহির হইতে।	মানাইব	८२৮, ९७(া বুঝাইয়া, সমত করিয়া
বোধে শো	४ २५३	সামাতে।	म् षेट्य	રં	মাথায়।
বোলহ	255	खम् क्रा	मून न	૭ર	मृत्ति ।
বোলাইয়া	Sta	ভাকিয়া।	मूफ्	७२२	মাধা।
বৌহারি	२७१	वध् ।	মেনে	۲	কোন অৰ্থ নাই।
	ভ		মেশা	२७,86•	মিশন, সংহতি।
CT T	२৯৮	সম্ম।	মেহা	>•>	(म्ब ।
ভর্ম	296	खम्। .		•য	
" ভাগে	b-	শোভা পায়।	ধাকর	885	यादात ।
ভাঙ	eb	ख ।	যু ক তি	৩১৮	वृक्षिमाय न।।
ভা ष ाहेव	>>8	कम (मुख्या।	ৰুতে ৰুতে	83	वह मर्थाप्य।
ভাষাইয়।	520	बुविश।	८ षांगांनी	3+b p	যাহার৷ জিনিষ প্রথ
ভাঙ্গাবে	754	विष्ट्रम पढीहरव ।			८ भव ।
ভাৰ		७२ (वाथ हम।	टेग इन	218	(यक्षेत्र ।
ভাবে	483	जे ।		র	
ভারে ভুরি		চালাকি।	त्र८ ।		ना करत्र, करण्।
ভিভ ভিভ	3,03,	প্রান্ত ।		৮, ১२७ इ	
	983	ভীব।			41 1
ভিয়ান	૭૨૨		রাপি ১		গ, অনুরাগ।
ভীতে	44	ভয় ৷	রাজ ।		মন্ত্রী, কারিগর।
. ভূবণ শক	3 870	শক্তিমান্ স্নার।			कारभन।
ভেৰাতে	>8•	পাঠাইডে।		838, 666	
ভেল	•	स्ट्रेग।	८वारे व		ामन क्ति।
cotca	60	विस्त्र ।		ल •	
অগা	৮ 1	শ্ৰ ।	मिष २६७	892	লক্ষ্য করিয়া।

	be (
नंच नवत्रस्याः , चर्च	गंस शहरास्त्रा .सर्व
লখিতে ৪৯৯ বেখিতে।	ं नांची १३७ मानो ।
কছমি ৩১১ কলী।	ৰাভ ২১ সম্বে।
শভা ০৬ ' সাপ।	সান ৫৩৩, ৫৫৬ শৃষ্
ৰহনি ১৫০ (অৰ্থ বুৱিলাম না)।	नाषारेन २७७ व्यवन कविन्।
नाववान ३३०, ६१६ नक ७० उक्तन ।	नामाहेन ७) १ श्रादम क्रिन।
नारत ৮ देशप वस ।	
লে e <u>ধো</u> ষ।	(17 (144))
শেঠ। ৮৪, ৩২৭, ৪১৫ বিপদ্।	
শেহা ৩৯, ২৩৬ প্রেম।	711 1 1 0 4 4 7 A 1
লোর ১৩৭ অঞ্চ।	শারত ৬২ পীতবর্ণ (१) i
লোহ ৬১৪, ৬৯৭ অঞ্চ।	সালত্ব ৩০০ অলভার।
जार जार स्वा	সিধি ৪৯৪ (१)
4	সীট ৩২২ অসার পদার্ব।
	হুগড় ৩৯ হুগাঁঠিত। সংগ্ৰহণ
শাষাইতে ৬১৮ সম্বৰ্ণ করিতে।	স্থগড়পৰা ৩৬৮ নাগরালি। স্থগড় ৪৪ (শুর্ব বিষয়ার না)।
শিধান ৩৮৬ বালিশ।	व्यं ४०० व्यक्त । । व्यव ४०० व्यक्त ।
শিরোপা ৮ পুরস্বার।	ক্চারি seb ক্চাক, ক্ল র।
त्नांव ४०२, ४६७ (वस्ता ।	च्यो ०७, ७३ साम्।
শোষাস ৩৯ খাস।	स्पत्र १४५ (१)
ল্লৰণ প্ৰভাগ ২৬ ভনিডে ভীৰণ।	च्यापि १७) च्याणात्र कविया, विषया !
	ব্যারিতে ৮৯ সম্পন্ন করিতে। স্থেকা ২৫৩)
স্	- C Same defendable and .
শঘর ৬৫৪ (অর্থ বুরিলাম না।)	(म श्राम २८६) चर्माच श्राद्वनचाश्राद महाचा
সন্ধান ৩ সক্ষ্য করিয়া প্রেরিভ।	সেহনে ৩২৬ সে কৰে।
সন্দেহ ৪৩৯ সংবাদ, চিহ্ন।	শোৱৰি ৩১৮ শ্বৰ কৰিয়া।
गरमान २८३ गरमह।	সোদর ৩৬৬ শাখীয়।
সমাধান ৮২ অবধান।	সোড ২০০ হোড। সোৰাত্তি ২০০ শাত্তি।
সমাধি ৪, ১১, ৩১৮, ৩১৯ শেব, নিধান।	पण्डा ७३६ चारीना।
সংখাধ ৬৬২ কুৰাইয়া চু	সঁচি es> টিক, খাঁট।
गत २७ वर्ष हम ना।	₹
স্থি sta স্থাইছা, *	होना ४৮६ स्वरम् ।
" १७३ वामान कदन ।	्रांतिम ১১० जानात्र।
সভে ৫০৮, ৫১১ অৰ্থ বোৰ হয় না।	हिठ ७১৪ वर्षद्वा।
ननि २६১ जीन।	হতাশ ৩১৫ হতালার উদ্বের।
नांकवि ४३७) मर्कद्वा।	ट्राटे १८ : छटन ।
	2001

. অশুদ্ধি-শোধন।

ત્રુઃ	পদ	পংক্তি	শশ্	95
34	२৮	•	ৰুখিষ্ঠর	ब्यिष्टिय
₹•	o• (ট	का) ३२	কীৰ্ষিত	কী র্নিড।
* 85	90	•	नाव	म ा छ
ee	36	42	পরি	পত্তি
96	252	১৬ পংবি	দর পর এই চরণটি ছ	াপ। হয় নাই :—
		এবে ঘাটে ব	দি হয়েড	জাগাতি
		79	কণী আগুলি রাধ।	
44	320	b	করে	ক্ৰে
98	285	20	वारम	41(41
be	368	>	্দে খ	(मह
230	889	**	চুধের	ন্থথের
120	844	>	মাধ্ব	মাধবা
> • >	854	30	বাগিণী	বাগিশী
২ 2•		>>	季零	कृ षः
3100	485	২৩	পোপী	গোপী



